

॥ विज्ञापनम् ॥

~~~~~

इस अनादि अनंत ससार में अनादि काल से अरंभार जन्म मरण करते करते जीव पाथर योनि में रहा, किसी एक अशुभ कर्मकी लघुता से जैसे पहाड़ी नदी में पत्थर गूहते गूहते आपसे चिकना और गोठ हो जाता है, तैसे जीव भी जन्म मरण करते करते पुण्यप्रकृतिरूप यथाप्रयत्नि नाम करण से यावर पणे को छोड़ प्रसपने बेरिंद्रियादिक में उपजता है, अथवा पचेंद्रियतियत्रयोनि में, फेर किसी एक कर्मकी लघुता से मनष्ययोनि में पैदा होता है, उसमें भी शक यथन द्वेच्छ देवकी छोड़ आर्य मगधादि जो साढे पचीस देव हैं उनमें जन्म होना-आर्यदेव में जन्म होने पर भी अत्यजादि जाति को छोड़ उत्तम जाति और कुल में जन्म होना-उत्तम जाति और कुल पाने पर भी सब अगोपाग सुदर प्रमाण सहित होना-अरीर के सुदर होने पर भी दीर्घायु होना-सब अशुभकर्म के कम होजाने और शुभकर्म के बढजाने से होते हैं, नही घोडे आयुशाला पुरुष इसलोकसयध्री या परलोकसयध्री काम कुछ कर सक्ता है, इसी कारण भगवान् भीतरागने भी हे आयुष्मन् (हे बड़े आयुशाल) गीतम ऐसा कहके आयुको सब गुणों से बढा दिख लाया है, और भी अशुभकर्म क लघुता से और शुभकर्मके उदय से धर्मही रुचि, धर्म का उपदेव्य करने

वाला गुरु और उनके वचन का सुनना मिलजाने पर भी देव गुरु धर्म रूप तत्व पर सच्ची श्रद्धा होना य  
हुत दुर्लभ है, जिनोक्त तत्व पर सच्ची श्रद्धा होना यही सम्पत्क है, और सय तो मिथ्यादृष्टियो की भी होता  
है, यह सय अशुभकर्म के कम होजाने और शुभकर्म के घटने से जीयकी मिलते हैं, इस हेतु अशुभकर्म  
का क्षय और शुभकर्म के घटने से यत्न करना अवश्य है, अशुभकर्मका क्षय और शुभकी घटाने के लिये  
धर्मके सेवय और कोई भी यत्न नहीं है, इस हेतु धर्म करो २ धर्म ही का सेवन करो, जैसा के घरके कार्य सिद्ध  
करने में अनेक तरह से परिश्रम करते ही कुछ काल धर्मके वास्ते भी परिश्रम करते रहो, कारण की धर्मी  
(धर्म सेवन करने वाले पुरुष) की इन्द्र आदि देवता भी केवल प्रज्ञा, अनुमोदना और मक्ति करके अपना  
जन्म सफल करते हैं, इसनी श्रद्धि पाके भी उनको धर्मका सेवन दुर्लभ है, और भी धर्मी को त्रिभुवन  
की लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, चितामणि और कामधेनु आप से दास हो मिलते हैं, तो पुत्र, कलत्र, घर,  
सयारी और राज्य मिलजागा क्या वही चीज है, धर्म साधन करनेवालेका दो घटी का जीना भी सफल  
और कार्य कारक है, परतु धर्म हीन (अर्थात् पेय, अपेय, कृत्य, अकृत्य, गम्य, अगम्य, मद्य, औ मद्य  
इत्यादि विचार रहित) का कोटा कोटी वर्ष जीना भी निष्फल औ अकिचित्कर है, पशुवत अपना आयु  
पूर्ण कर मरता है, इन्द्रिय का नियह कराने वाला, सकल कल्याण और सुगति का कारण, भवसागर तरने  
के लिये नीका रूप तीर्थकरो का कहा हुआ क्षेत्र धर्म ही है और धर्म का मूढ दया "विना मतलब पराये

दुःख को दूर करने की दृष्टि, है दया से धर्म की प्राप्ति और धर्म से जीव मुक्त होते हैं, इसलिये दया सर्वो  
 लुप्त पदार्थ है। जैन दर्शन में दया के अनेक "स्वदया परदया द्रव्यदया नावदया निश्रयदया व्ययहारदया  
 स्वरूपदया अनुग्रहदया" भेद विस्तार से वर्णन किये हैं सर्व दर्शनी दया का उपयोग रखते हैं परन्तु सर्वाङ्ग  
 दया का उपयोग तो जैन दर्शन ही में स्वीकार है इसवास्ते जैन मत श्रेष्ठ भी कहाता है, दयाके सर्वांश  
 उपयोग होनेकी रीति यह है कि जैसे भोजन के वास्ते कोई एक पक्वान्न बनाया जाय तो घृत पिष्ट चीनी  
 इत्यादि सामग्री अग्र्य अपेक्षित होती है सामग्री होने पर मी यथाविधि यथार्थ एकठा होने से तयाविध  
 स्वादिष्ट पक्वान्न तयार होता है परन्तु हीनाधिक्यस्तु ही जाने से कदापि घैसा पक्वान्न नहीं होता तैसेही  
 यथाविधि दया पालीजाय तो तयाविध धर्मोपलब्धि होय यद्यपि सर्व दर्शनो में दयाका मान है परन्तु उस  
 के स्वरूप में फेरफार कर देने से गतप्राय (अर्थात् अकिञ्चित्कर दृष्टा) है, जय के उसका स्वरूपही ज्ञाखा  
 नुसार यथाय नहीं जानचुक्ते हैं तो पालन करना कैसे हो चकै, फेरफार घैसा के-कोई कहते हैं पशुप्राण  
 घात अर्थात् पशुजन्मसे ढोढामा दया है, कोई जिस शरीर को धारण करके जीव सुखी न होय प्रत्युत  
 दुःखित होय व्याधियस्तादि दोष युक्त होय तो घैसे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्तकरदेना भी दया ही है,  
 कोई सृष्टन अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यकी दुःख देते हैं उनका नाश करना दया है, कोई बलि यागादिक  
 में प्राणिग्रह करने से भी पुण्य मानते हैं और कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दया कहते हैं, इस तरह दया

का उपयोग अन्यदर्शनी रखते हैं लेकिन यह भ्रम है, और एकरीत से—आचारधर्म वयाधर्म क्रियाधर्म और धस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारों धर्मों के दान शील तप और भाव धार कारण हैं, जय धनग्रह होय तो दान होय, मजबूत होय तो शील पाछा जाय, शरीर बल होय तो तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो माय होय, यह भावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के भावधर्म का कारण ज्ञान नबल है “जिसे धस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहते हैं,” ज्ञानसे जैसी ध्यात्मधर्म की वृद्धि और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नहीं, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमाण, चारो अनुयोग का विचार, सप्तमगी, पद्मद्रव्यविचार, आदिक सब ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त होते हैं। दशवैकालिक में लिखा है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्लेशरूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दासी है, और मरुदेयी तथा मरत महाराज वैसी अवस्थासे मी रहके जो कर्म विमुक्त हुए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सो ही अयधचारित्र है, जो निष्काचित कर्म कोटिवपपर्यंत दानादि करनेसे भी नष्ट नहीं होता यह ज्ञानीके एकस्वासीत्स्वास में नष्ट होयका है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर और क्रियागुरु को पीपल के पान जैसा कहा है, ज्ञान विना सम्यक्त अहिंसा और सिद्धान्तोक्त समस्तक्रिया का मूल श्रद्धा नहीं होते इस कारण ज्ञानीपार्जन के लिये अवश्य यत्न करना चाहिए ज्ञानके पाच भेद—मति श्रुत अर्थात् मनप र्थ और केवल हैं परन्तु श्रुतज्ञान सबसे अधिकोप्रयोगी है क्योंकि यह पदार्थमात्र लोकालोक स्वमत

परमत का प्रकाशक अज्ञानतिमिर को दूर करने के वास्ते सूर्य और दुस्समकालरूप रात्री मे दीप सदृश है, उद्वेग समुद्वेग आज्ञा इत्यादि व्यवहार का लाम मी श्रुतज्ञान सेही होता है इस श्रुतज्ञान के सुनने से श्रुत स्वरूप विच्छेद श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है इस्से श्रुतात्माका आधरण आसेवन अनुभवन होता है और इस्से परमपदप्राप्ति होती है, यही श्रुतज्ञान से पूर्वकाल से श्रीगौतमादिक केवली हो ससार से मुक्त हुए वर्तमान मे महाधिदेह क्षेत्र से त्रिरहमान जिनेन्द्रो से सुनके जीय मुक्त होते है, आगामिकालमें पद्यनाम आदि तीर्थकरोसे सुन अनेक जीय मुक्त होंगे, इस श्रुतज्ञानकी याचना पृच्छाना परावर्षना अनुप्रेक्षा और धर्मकथा होती है, श्रीउवाई सूत्रमे धमकथा चार प्रकार की कही है—छाक्षेपिणी विक्षेपिणी निर्वेदिनी और सर्वेदिनी, जिस्से तत्व मार्ग में प्रवृत्ति होय उसको आक्षेपिणी, जिस्से मिथ्यात्व की निवृत्ति होय उसको विक्षेपिणी, जिस्से मोक्ष की अभिलाषा होय उसको निर्वेदिनी, जिस्से वैराग्य की मायना होय उसको सर्वेदिनी कहते हैं वह श्रुतज्ञान रूप कथा श्री अरिहन्त देवाधिदेव तीर्थकर परमेश्वर समवसरणमें धैठ “उप्यन्तेइवा त्रिगमेइवा ध्रुवेइवा, त्रिपदी उच्चारण पर्यंक करते हैं, और त्रिपदी से ही गणधर द्वावशाग की रचना करते हैं (उस्को सूत्र कहते हैं) इस कालमें जितने सूत्र है सय श्रुतज्ञान के नेद हैं यह श्रुतज्ञान सर्वोपकारी है इसलिये इस्की वृद्धि और सरक्षणके हेतु अथशय यत्न करना चाहिये वर्तमान कालमे जितने ज्ञानवृद्धि के उपाय है सय से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्व है इस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अति सुगम रीति को स्वीकार करना जो

का उपयोग अन्यदर्शनी रखते हैं लेकिन यह भ्रम है, और एकरीत से-आचारधर्म दयाधर्म क्रियाधर्म और  
 यस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारो धर्मो के दान शील तप और भाय चार कारण हैं,  
 जय घनयल होय तो दान होय, मनयल होय तो शील पाला जाय, शरीर बल होय तो तप होय, और  
 सम्यग्ज्ञान होय तो भाय होय, यह भावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के भायधर्म का कारण ज्ञा  
 नयल है "जिस्से वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहते हैं," ज्ञानसे जैसी आत्मधर्म की वृद्धि  
 और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नहीं, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमाण, चारो अनुयोग  
 का विचार, सप्तमगी, पदद्रव्यविचार, आदिक सर्व ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त होते हैं। दशवैकालिक  
 में लिखा है के-ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्लेशरूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानही दासी है, और मरुदेशी  
 तथा मरत महाराज वैसी अवस्थासे भी रहके जो कर्म विमुक्त हुए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो  
 तीक्ष्णता सो ही अथघचारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटियपपयत दानादि करनेसे भी नष्ट नहीं होता  
 वह ज्ञानीके एकस्वासीत्स्वासमें नष्ट होशका है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर और क्रियागुरु को पीपल के  
 पान बीसा कहा है, ज्ञान बिना सम्यक्त आहिंसा और सिद्धान्तोक्त समस्तक्रिया का मूल श्रद्धा नहीं झोते  
 इस कारण ज्ञानोपार्जन के लिये अवश्य यत्न करना चाहिए ज्ञानके पाच भेद-मति श्रुत अथधि मनप  
 र्थ और केवल हैं परन्तु श्रुतज्ञान सयसे अधिकोपयोगी है क्योंकि यह पदायमात्र लोकालोक स्वमत

गणधर ध्याय सुधर्मास्थामी ने श्रीश्रमणसच और अपनी सन्तति के लिए सूत्ररूप से सङ्कलित किया है ।  
तहा अनुयोग की प्रवृत्ति, फल योग भगल समुदायार्थ द्वारजेद निरुक्तिक्रम और प्रयोजन आदिद्वारो के निरूपण करने से होती है ।

तहा पहले बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति होने के लिये फल अत्रय्य कहना चाहिये नहीं तो वृथा कटक ज्ञास्या मदन की तरह कोई भी इस्से प्रवृत्त न होगा, फल दो प्रकार है—प्रथम अर्थ वा अत्रगम (ज्ञान) है इस्को अनन्तर फल कहत हैं, दूसरा अर्थोवगम होने के बाव तत्पूर्वक अनुष्ठान से मोक्ष प्राप्ति, यह परम्पर फल कहाता है ।

योग अर्थात् सग्रन्ध, यह कई प्रकार का होता है परन्तु इहा कौन इस्के देनेका काल और कौन इस्के देने के योग्य है औसा ष्वसर लक्षण सग्रध जानना चाहिये ।

मङ्गल जो यिघ्न निवृत्ति के हेतु ग्रय के आदि मध्य और अत मे किया जाता है ।

यिघ्राह प्रज्ञप्ति इस पदका समुदायार्थ यह है कि—आभिविधि करके कथचित्समस्तज्ञेयभ्याप्ति अथवा मर्यादा से जो पूछे हुए जीय ष्वजीय आदि अनेक पदार्थों का जुदे जुदे लक्षणो से कहना सो ब्याख्या वही सुधर्मा स्थामीने अपने त्रिप्य जयु को प्ररूपण को सो इस ग्रथमे कही है, अथवा विशेष तया जीय अजीय आदि अनक अभिलाष्य पदार्थों की वृत्ति इस्से कही है, अथवा ब्याख्यान का प्रकृष्ट ज्ञान इस ग्रथमे है, तथा



के पूर्वार्थाने बड़े परिश्रम से परोपकार के हेतु ग्रथ बनाये हैं छपवाके प्रसिद्ध करना हर एक चिद्वानोको देना हस्ते अधिक और कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है, यही सद्य कारण उचित श्रीमुर्शिदाबाद नियासी श्रीराय धन पतिसिंह बहादुर ने १५ आगम छपवाके हरेक जगे चकार स्थापन किये हैं आप लोग भी यथाशक्ति इसके फरने की प्रशुष होय के जिस्से पुन जैनमत युवायस्या को प्राप्त होय इति शम् ॥

वनारस जैनप्रभाकर

नानक चन्द्र यती

## भूमिका ।

श्रीमगवती नामक पथम अङ्गका अनुयोग समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्गानुयोग के अनन्तर क्रमसे प्राप्त हुआ है । धिवाहपथसि पथम आगानुयोग, राग और द्वेष आदि विषम भावशुद्धी की सेना के दहन करनेसे तथा त्रिभुवन के समस्त पदार्थों को हस्तामलक समान देखना और जानना तत्पूर्वक निसवाव रहित यचन होने से त्रिभुवन रूप घरके आगन में सुधासमान निर्मल जिनके यज्ञकी राशि फैल रही है ऐसे जिनेन्द्र परम करुणावन्त श्रमण मगवन्त श्रीमहावीर बर्द्धमानस्वामि चौबीसमें तीर्थंकर महाराजने जैसा कहा उनके पाचये

गणधर न्याय सुधर्मास्थामी ने श्रीश्रमणसंघ और अपनी सन्तति के लिए सूत्ररूप से सङ्कलित किया है। तहा अनुयोग की प्रवृत्ति, फल योग मगल समुदायार्थ द्वारजेद निरुक्तिक्रम और प्रयोजन आदिद्वारों के निरूपण करने से होती है।

तहा पहले बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति होने के लिये फल अग्रथ्य कहना चाहिये नहीं तो थ्या कटक शाखा मदन की तरह कीह भी इस्में प्रथम न होगा, फल दो प्रकार है—प्रथम अथ का अत्रगम (ज्ञान) है इस्को अनन्तर फल कहत हैं, दूसरा अर्थात्रगम होने के थाव तत्पूवक अनुष्ठान से मोक्ष प्राप्ति, यह परम्पर फल कहाता है।

योग अथात् सग्रन्ध, यह कई प्रकार का होता है परन्तु इहा कौन इस्के देनेका काल और कौन इस्के देने के योग्य है असा स्पधसर लक्षण सग्रध जानना चाहिये।

मङ्गल जो विघ्न निवृत्ति के हेतु ग्रय के प्राप्ति मध्य और अत में किया जाता है।

थियाह मज्ञप्ति इस पदका समुदायाथ यह है कि—अभिविधि करके कयचित्समस्तज्ञपथ्याप्ति अथवा मर्यादा से जो पूछे हुए जीव अजीव आदि अनेक पदार्थों का जुदे जुदे लक्षणो से कहना सी ब्याख्या वही सुधर्मा स्थामीने अपने त्रिप्य जयु को प्ररूपण की सी इस ग्रयमें कही है, अथवा विशेष तथा जीव अजीव आदि अनेक अभिलाष्य पदार्थों की वृत्ति इस्में कही है, अथवा ब्याख्यान का प्रकृष्ट ज्ञान इस ग्रयमें है, तथा

व्याख्या में विशेषतया बुद्धि की प्राप्ति इस ग्रन्थसे होने और विजिज्ञानप्रत्याह अर्थप्रत्याह इस ग्रन्थ में कहने से व्याख्याप्रज्ञप्ति और नाम इस्का हुष्या । जगवती, व्यावाध प्रज्ञप्ति, यह पर्याय है ।

नाम यथाय (जैसा प्रतीप) अयथार्थ (जैसा पलाज) अयथान्य (जैसा डित्य) भेद से त्रिधा होता है परन्तु शास्त्र का नाम यथार्थ ही होना चाहिये क्योंकि समुदायार्थ की समाप्ति बहाई होती है ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति यह नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्रादि भेद से १५ प्रकार का होता है सो स्थानाग के समान इहानी जानना, व्याख्याप्रज्ञप्ति इहा अङ्ग का निक्षेप द्वायोपशमिक भावरूप प्रत्यन पुरुष के अग की तरह अग होने से हुआ है इसलिये व्याख्याप्रज्ञप्ति अग ऐसा नाम हुआ । यद्यपि अग निक्षेप नाम स्थापना द्रव्य और ज्ञाय भेदसे चार तरहका होता है तथापि इहा केवल माथागहीका अधिकार है क्योंकि यह ग्रन्थ द्वायोपशमिकादि माय का कारण है ।

इस व्याख्या प्रज्ञप्ति पचम अङ्ग का तात्पर्य त्रीप्र जानने के लिए उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ अनुयोग अर्थात् सूत्र का अर्थ स सबन्ध अथवा सूत्र का अर्थ प्रतिपादनरूप अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपणरूप क्रियाविवेचन कहे हैं, यही चारों जैसे नगर में सुख से प्रवेश करने को चार द्वार होते हैं तैसे इस ग्रन्थन में प्रवेश करने को चार अनुयोगरूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं । शास्त्र को न्यासदेवा के समीप करवेना सो उपक्रम लौकिक और शास्त्रीय भेद से दो प्रकार होके क्रमसे प्रत्येक नाम स्थापना

द्रव्य क्षेत्र काल माव और आनुपूर्वी नाम प्रमाण वक्तव्यता अर्थाधिकार और समयतार भेद से छ प्रकार है, निक्षेप अथात् न्यास स्थापन, श्लोच नाम सूत्रालापक से तीन भेद हैं। तहा सूत्रालापकनिष्पन्ननिक्षेप सूत्र के छालाओ का नाम देना जैसे कि व्याख्याप्रज्ञप्ति इत्यादि। अनुगम सूत्रका स्थापनानुक्रम परिक्षेद। नय अनन्तघर्मात्मक यस्तुके एक अथका ज्ञान का कहत हैं जो उपक्रान्त नहीं है उस्का निक्षेप नामादि नहीं हो सक्ता जिस्का निक्षेप नहीं हुआ नयो से विचार भी नहीं होता है इसलिए इन अनुयोगद्वारो से एकश्रुत स्कन्ध, सातिरेक अध्ययनशतस्थमाय, ४२ शतरु १०००० उद्देश रूप व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्रकथित जीवाजीवादि पदाय ज्ञात होने से तत्तज्ज्ञानरूप परम पुरुषाय सिद्ध होता है इस कारण इसके पठने पढाने में श्रवत्रय यत्न करना चाहिये। परन्तु पठने का अधिकारी वही होगा जो के मोक्षमार्ग अभिलाषी गुरुका आज्ञाकारी शीदीक्षालिये जिस्के १५ वप व्यतीत हुआ होय। व्याख्याप्रज्ञप्ति जग सूत्रदेनेका अथसर भी वही है इति शम्।

मकसूदावाद

अजीमगज

राय धनपतसिंह बहादुर—

व्याख्या में विशेषतया युद्धि की प्राप्ति इस ग्रथसे होने और विजिष्टनयप्रथाह अर्थप्रथाह इस ग्रथ में कहने से व्याख्याप्रज्ञप्ति इसा नाम इस्का हुआ । नगवती, व्यावाध प्रज्ञप्ति, यह पर्याय हैं ।

नाम यथाय (जैसा प्रदीप) अययार्थ (जैसा पलात्र) अर्थशून्य (जैसा द्वित्य) भेद से त्रिधा होता है परन्तु शास्त्र का नाम यथार्थ ही होना चाहिये क्योंकि समुदायार्थ की समाप्ति वहां होती है ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति यह नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्रादि भेद से १५ प्रकार का होता है सो स्थानाग के समान इहानी जानना, व्याख्याप्रज्ञप्ति इहा अङ्ग का निक्षेप द्वायोपशमिक भावरूप प्रवचन पुरूप के अग की तरह अग होने से हुआ है इसलिये व्याख्याप्रज्ञप्ति अग ऐसा नाम हुआ । यद्यपि अग निक्षेप नाम स्थापना द्रव्य और जीव भेदसे चार तरहका होता है तथापि इहा केवल मायागहीका अधिकार है क्योंकि यह ग्रथ द्वायोपशमिकादि भाय का कारण है ।

इस व्याख्या प्रज्ञप्ति पचम अङ्ग का तात्पर्य शीघ्र जानने के लिए उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ अनुयोग अर्थात् सूत्र का अर्थ स सबन्ध अथवा सूत्र का अर्थ प्रतिपादनरूप अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपणरूप क्रियाविशेष कहे हैं, यही चारों जैसे नगर में सुख से प्रवेश करने को चार द्वार होते हैं तैसे इस प्रवचन में प्रवेश करने को चार अनुयोगरूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं । शास्त्र को न्यासदेव के समीप करवेना सो उपक्रम लौकिक और शास्त्रीय भेद से दो प्रकार होके क्रमसे प्रत्येक नाम स्थापना

॥ अथ भगवती सूत्र पंचमाङ्ग प्रारम्भ ॥

## ॥ शिक्षापनम् ॥

धात्रीदृक्प्रभोऽत्रपुत्रयथा श्रीवीरवासाजिपसात्पुत्रोयुषसिह्रखोजतयज्ञास्मृत्सुस्तदीयोगुणे । स्यात् श्रीलप्रतापसिह्रविविधयी मायातुरीयासुती  
 तस्यश्रीमहताजनामबिद्विताकुङ्कलादीपावन्तू ॥ १ ॥ उद्यत्भीतिरुदारपरमंदूषी सस्त्रीपतेः सोदरः श्रीमद्राययद्वादुरोषनपतिः सिरोगुणपानषी ।  
 श्रीजिनापमसङ्गसमबरोहोकोपकल्पेचिरम् टीकावातिबस्युततुल्लिपिमिःसमुद्रयित्वाशामम् ॥ २ ॥ कृत्वापम्बधतस्यत्पुत्रपुनस्तापगत्यहोपुस्तका गा  
 रास्यपुत्रपुस्तकानिसकसान्यत्वापयत्वादरम् । पुत्रस्वागमपाठनम्बपठन सरसापत्रःश्रावकाः स्थिरयेश्रीत्रिनशासमस्वचपुनविषज्ञानपरमंदूषे ॥ ३ ॥  
 ज्ञानस्तस्यचतुषकोजभवतीशूत्रामिषामोपुना नामापुस्तकपाठनेवपुलोससुप्रमादापि । तुवाप्यःसमुद्रसिवातिरुपूतपाठतयामाकनं श्रीमसूचितरा  
 मन्त्रपाठिञ्चिञ्चातत्रदुष्यामया ०४४ सशोप्यातिपरिभ्रमेग्नितरां बाबरेरुमुद्रुत स्यात्प्रज्ञापिषकिष्पिदीशकगतोम्मादावमुद्रुयदि । धाग्ल्याशोप्यमु  
 दारमुद्रिविभवैविधे रुपादृष्टिवो सिध्यारुक्कठमस्तुनधवधसासम्भापये सज्जनान् ॥ ५ ॥

धनारम्

जैनाप्रज्ञाकर

नामकवन्द यती

॥ श्रीमदाप्तय नमः ॥ श्रीचिन्नायनमः ॥ सर्वश्रीश्वरमन्त्रमङ्गलमय सार्वभौमस्मरमनीगमनीहृमिद्रुम् । सिद्धशिवशिवशिवकरकरव्यपेत श्रीमञ्जिनिजि  
 तरिपुंमयतःप्रकीर्ति ॥ १ ॥ नत्याश्रीवद्विमानाय श्रीमत्पुस्तुपमये । सर्वानुयोगवृद्धेभ्यो वास्यैसर्वेदितस्तथा ॥ २ ॥ एतहीकापूर्वो जीवानिगमाविद  
 नितसंगांय । सुयोन्मयम्माङ्गल यिषुबोमिद्विशोपताःत्रिभिः ॥ ३ ॥ व्याख्यात समवायास्य षट्पुंमङ्ग मथावसरायातस्य वियापुपणतिंति सच्छित्तस्य प  
 प्यमाङ्गस्य मनुश्रुतत्रयकुश्ररस्येव ससितपवपुठिप्रयुतुजनमनोरञ्जकस्य उपसर्गनिपाताव्यखलपस्य चनोदारक्षस्यलिङ्गविमक्तिपुक्तस्य सदास्थान  
 स्यमल्लखस्य देवतापिठितस्य सुखमविहतोद्गाकस्य नानाविबाहुतप्रवरचरितस्य पट्त्रिंशत्प्रमसहस्रप्रमावसूत्रवृहस्य पतुरनुयोगवरहस्य ज्ञानवरह  
 नयनपुगस्य द्रव्यास्तिकपयापास्तिकनयदितयदन्तमुसलस्य निषयव्यवहारनयसमुद्यतकुम्हयस्य योगसौमकययुगसस्य प्रस्तानावधवरहमाप्रकापवृश  
 वशादवहस्य नियमनयवनातुच्छपुच्छस्य कासाद्यष्टप्रकारप्रयचनोपचारारुपरिकरस्य सरसयोपवादापादसमुच्छलदतुच्छपष्टायुगसयोपस्य यगःपट्टरूप

टप्रतिरयापूर्वदिक्कृत्वात्स्य स्याद्वादविशदकुशवशीकृतस्य विविपदेतुहेतिसमूहसमन्वितस्य सिध्यात्याज्ञानाविरमयससखरिपुषलदसनाय श्रीमन्म  
 प्रागिरमन्तारात्मन नियुक्तस्य यन्मियुक्तकल्पगणनापकमतिप्रकल्पितस्य मुनियोषी रनावाच मधिगमाय पूयंमुनिश्चित्स्विकल्पितयो वंशुप्रयरणुबल्वेपि  
 प्रथमया महतामव याञ्छितवस्तुमापनसमपयां पृथिव्युचिनाक्रियो स्तदन्ययाप्य जीवानिगमादिविचिषयिवरहदवरकलेशानां सुहृदनेन वृहतरा  
 छतव्या महता मय्युपकारिणी ब्रह्मिनायमादेगाविय गुरुजनउपना त्पुवमुनिश्चिन्पिक्तुस्तोत्यन्त्रे रस्मानि नाक्रियेवय वृति रारज्यत इति शास्त्रमस्या  
 यना अप यियाहपम्पतिंति कःशादप ? उच्यते चिचिषया श्रीवात्रायादिप्रबुरतरपदापचिषया आ अचिचिषिता कथञ्चि त्रिचिषयेयव्यास्या सया  
 द्याया परस्परामङ्गुलिमलकषामिषामरूपया स्यान्नि जगवतो महावीरस्य गौतमादिविनयान् प्रति प्रमितपदार्थप्रतिपादनानि व्याख्या स्ता म  
 घाप्यन्ते प्ररूप्यन्त जगयता सुपमस्त्रामिना जन्युनामान मनि यस्याम् १ । मयवा विविचयता यिश्चदेवधा आस्थापतइति व्याख्या अत्रिस्ताप्यपदाय







कृतपक्षाः प्रज्ञाप्यन्ते यस्याम् २ । अथवा व्याख्याना मर्यप्रतिपादनाना मरुटा इत्ययो ज्ञानान्निपत्या मा व्याख्याप्रज्ञप्तिः ३ । अथवा व्याख्याया  
 अथकथनस्य प्रज्ञायाथ तद्वतनूतत्रोचस्य व्याख्यासुत्रा प्रज्ञाया भासिः प्राप्तिः अतिवा आदान यस्याः मफासा दमो व्याख्याप्रज्ञप्ति व्याख्याप्रज्ञा  
 हा प्रगवत समाज्ञा वासि रान्तिर्वा गवचरस्य यस्या सुतया ४ । अथवा विद्याया विधिषा विधिषा नयप्रयाजावा प्रज्ञाप्यन्ते प्रक  
 प्यन्ते प्रज्ञोच्यन्तेवा यस्या विवाहावा विक्रिष्टसक्ताना विद्यायावा प्रज्ञा भाप्यन्ते यस्या विद्याया वासीजा प्रज्ञप्ति प्राथमप्रज्ञया वि  
 वाहप्रज्ञप्ति विवाहप्रज्ञप्ति विंघाथप्रज्ञप्ति विवाथप्रज्ञप्तिवा ५ । इयच जगयती त्यपि पूज्यतेना मिथीयतइति इष व्याख्यातारः वाट्प्रथ्याम्याना  
 राभ फलयोगमङ्गलसुदामार्पादीनि द्वारानि वर्बयन्ति तानिषड्व्यास्याया विशेषाथयकादिभ्यो ऽवसेयानि द्वाल्फकारास्तु विप्रविनायकोपज्ञागनि  
 भित्ति विनयजनमवतनायच मिष्टजनसमयसमाचरन्त्यावा मङ्गलान्निषेयप्रयोजनसम्यन्था नुदाहरन्ति तत्रच सकलकल्याणकारकतया ऽधिकृतआरप्रस्य  
 श्रेयोभूतत्वेन विप्रः सत्सज्जीति तदुपशमनाय मङ्गलान्तरव्यापारम मावमङ्गल मुपादेयं मङ्गलान्तरस्या नैकान्तिरुत्या दनात्पल्लिकत्याप मायमङ्गल  
 स्यतु तद्विपरीततया ऽभितपितापवापनसमर्पत्वम पुन्यत्वा दाहच-किपुबतभवेगतिर्य मद्यतचणजठनिहायाइ । तद्विपरीयजाये तेषाथिसुसंयतप  
 ष ॥ १ ॥ प्रावमङ्गलरपच तप मृत्तिमद्विखत्वेमा नेवविपत्वेपि परमेष्ठिपञ्चजनमरकाररूपं विशेषेणो पादेयं परमेष्ठिना मङ्गलत्वलोकोत्तमत्वद्वार  
 स्यात्वाभिपाना दाहच-वतारिमपत्तमित्यादि ॥ तत्र समस्कारस्यच सर्वपापप्रणाशकत्वेन सवयिणीपगमहेतुत्या दाहच-एपपञ्चनमरकार सुयपा  
 पप्रथाश्रमः । मङ्गलानाचशर्वेषा प्रथममवतिमङ्गलम् ॥ १ ॥ अतएवाय समस्तयुतस्तुत्याना मादा पुपादीयते अतएवाय तेषा मन्मन्तरतया निधीयते

श्रीश्रीपरमात्मनेतम ॥ देवदेवविजयता सुखाचद्रुतवेता । पात्तिकपचमायस्य मन्नेष्टयनुमारत ॥ १ ॥ समवायनामि श्रीश्रीपंग ब्रह्मो, इषि विपाह  
 पञ्चमीनाम पचमागब्रह्मोवेष्टे ॥ ते विवाहपचतो सूक्तवाये ? विप्रककृता नामाप्रकार औवाकियन्माथ श्रीमहावीर देवे गौतमादिशिष्येषुद्या प्रज्ञपयन्  
 तं तेप्रकच्य तेविवाहपचतोवेष्टोये, यवशा विविधकृता समुहपचताप्रवाहकयता प्रवाहपचपीये जेइनेविधेतिना विवाहपचतोवेष्टोये यन्पी एच भगवतो

नो पापिता उपापीया प्यायो लाजः युतस्य येवा उपापीनां विदोषनां प्रकसा श्चोत्रमाना मायो लाजो येन्यो ऽथवा उपाधिरेय सन्नधिरेय  
 श्चामं इष्टकस्यैयत्रमित्यन आयाना मिष्टकलां सन्मू स्रदकस्यैतुस्वा श्चर्पां श्चयया श्चामीमा मम पीळाना मायो लाज आध्यायः श्चपियावा नजः  
 कुरुसाधत्या रजुयुतोना मायो ध्यायः श्च्येचिस्तायामित्यस्य चातोः प्रयोमा श्चजः कुरुस्वार्थया देय दुष्पानवा श्चध्याय उपाधतो ऽध्याय श्चाध्यायीया श्चै  
 श्चै उपाध्याया श्चत श्चौष्यो नमस्यता श्चैर्पो सुसम्प्रदायातत्रितवश्चनाध्यापनतो विमयेम प्रव्याना मुपकारिस्वादिति ॥ नमोसद्युवाङ्कति ॥ श्चाधय  
 न्ति श्चानादिस्मिन्नि नौशमिति श्चापय ममतांवा सचनूतेषु ध्यायन्तीति निकृत्तन्याया स्वाधवो यदाइ-निष्ठाश्वसाइएजोय कर्मासाहेतिसाङ्गुषो ।  
 ममायमश्वनूषु तम्हातेनायसाङ्गुषा ॥ १ ॥ साहायकया सपमकारिणा पारयन्तीति साधवो निरुक्तेरेय सयैवते सामायफादिविशेषणा ममसाधयः  
 पुनाकाट्या गिगकस्त्रियश्च प्रतिमाकस्त्रियश्च ययालवकस्त्रियश्च परिहारयिद्युद्विकस्त्रियश्च स्यविरकस्त्रियश्च स्थितास्थितकस्त्रियश्च कल्पतीतन  
 दाः प्रत्यरुपुदस्यपुपुदुयुदोषितनेदा नारतादिनदाः सुरामदु-रमगदियिज्ञयितावा साधवः सयसाधवः सवयइश्चप सर्वेषां युग्यता भविज्ञेयजम  
 नोयतामतिपादनार्थं इदवा इदादिपदेषुपि बोद्धव्यम् स्यायस्य नमानायादिति श्चयथा सर्वेभ्यो जीवेभ्यो श्चिता सायां स्तेष ते श्चाधयव सावश्य  
 या ऽहतो मतु युदादेः साधवः सायसाधयः सर्वान्या शुभयोगाम् साधयन्ति कुवन्ति सावोन्वा इतः साधयन्ति तदाश्चाकरणा दाराधयन्ति प्रतिष्ठा  
 पयन्तिवा वृजयनिराकरणादिति सर्वसाधयः सायसाधयोः श्चायसाधयोः श्चायसाधयोः श्चायसाधयोः श्चायसाधयोः श्चायसाधयोः श्चायसाधयोः श्चायसाधयोः

### णमौलाएसधसाह्ण

शोइते उपाध्याय कश्चोवि । नमाकश्चता नमस्कार इषो कश्चनेवावे । सवसाधुनेवावे जे प्राणादि ग्लेश्वरो नाचमाय साधे ते साधु, इष्ठा स  
 नग्येबरो मामाधिश्चपविगेव श्चममतादिश्च पुनाकाटिश्च विनकल्यिश्च परिहारविभिश्चिक्त्रियश्च प्रतिमाकस्त्रियश्च यवाकिगादिक्त्रियश्च प्रत्येकपुत्र श्चय  
 इव नृशशवितममुष योऽत्रापि जे गुणवदसव तेइने भविमोवेबरो नमस्कार कश्चो । ए सवसाधुनेवावे कश्चो कश्चो कश्चो । नमो कश्चो नमस्कार

अपवा यिपुसराद्वाधितिवचना रिष्यन्तिस्म निद्वितायात्रवन्तिस्म यथवा विपुत्र्गाळे माद्रुस्ये वेतिग्रन्थमा रमयन्तिस्म वागितारोऽनूयन् मङ्गल्यक  
 पता चामुनवन्तिस्मति सिद्धा अपवा सिद्धा नित्या अपपवसानस्थितिकत्या। त्रप्त्यास्मात्ताया ज्ञेयं कयलध्गुणसन्दीहत्या दाह्य-प्यातचितंपननु  
 राह्यस्म योवागतोनिर्बृतिवीचमूनि । स्यातामुगास्त्रापारिनिष्ठितार्थी यःसोऽनुसिद्धःऋतमङ्गलोमे ॥ १ ॥ अत स्त्रीस्यो नमः नमस्तरक्यापता येया म  
 विप्रवाशिञ्चानदस्यसुखवीर्षाविगुणयुक्तया स्त्रविपयप्रमोदप्रकपर्योत्पादनेन प्रध्वाना भतीत्रापकारहेतुत्यादिति ॥ नमोभ्रायरियादिति ॥ आ मयाद  
 या तद्विषयविनयरूपया अपन्ते सेव्यन्त भिनश्चासन्नार्थोपदशकृतया तद्राकाशित्ति रित्याचार्यो उक्तम्-सुतत्ययिकलवलय्य शुभोऽब्दस्समदिनूनुप ।  
 नवतन्तिविष्यमङ्को अत्यवायइभ्रायरिठिति ॥ १ ॥ अपवा आचारो ज्ञानाचारोऽति पञ्चपा आ मयादया वापारो विशार आधार सत्र माधय  
 स्वयंकरका त्रन्यापकात् प्रवर्द्धता सेत्याचार्योः आह-पञ्चविहमाधार आयरिमायातत्रापयासंता । आयारदसता आयरियातेषुप्रति ॥ १ ॥ अ  
 यत्रा आ ईयत् अपरिपूर्वाइत्यप धारा हेरिका ये ते आचारा धारकल्पाइत्यर्थी युक्तायुक्तयिज्ञागतिक्रपकमिपुत्रा यिनया अत स्त्रीयु सापवा यया  
 वञ्चाकार्योपदेशकतये त्याचार्यो अत स्त्रीस्यो नमस्यता येया साचारोपदेशकतपोपकारित्यात् ॥ नमोतवञ्जायादिति ॥ तप समीप मागत्य अशीय  
 ते इहअप्यने इतिवचना त्यटते इव्ववसावितिवचना हा अचि आचिस्वये गम्यते इत्स्सरसे इतिवचना हा स्मयते मूयतो त्रिनप्रयचन येस्य स  
 तपाप्याया यदाह-यारस्योविकल्पाठ विकलाठकश्चिठुवे । तउयइस्सतिअम्हा उवञ्जायातेषुधुर्धति ॥ १ ॥ अथवा तपाप्यान तपाधि सत्रित्पि स्ते

### णमोऽथायरियाण णमोऽवञ्जायाण

विषययो यास्या ते विषयवहीते । नमाकवता नमस्कार इषा वेहनकाज । आयरियाच आवायनेकावे किनगासनो अय उपनिग मयागदि तेवने  
 यादव दिनवाटिकरी सेत्रीते ते पाषाय लडोवे चकता प्राजाति पच आचार पोते पादरे उपदिशे पत्तावे ते आषाय । नमाकवता नमस्कार इ  
 हा वे इनेबावे । उरञ्जायाच सइतां उरञ्जापनेकावे च इत्यरिषेण पादेउपनिग इ इ भवे इ उरञ्जापनेकावे । तथा वे इने लकीवे अ



चिंसेषु सापेक्षो नियुक्तः अथवापेक्षः स्वयंसाधनोवा इति स्तज्यः नमोस्तोयसवसाङ्गमितिद्विषयः तत्र स्वयंसाधनस्य देशसर्वतायामपि दद्यात्  
 द्यपिद्वेषसक्ततापदार्थनाथ मुच्यते सोमे नमुच्यसोक्तं ननु मन्वादीये सर्वसाधनं सौन्दर्यो मम इति एषाच नमनीयता मोक्षमार्गमाप्तयत्करणेनोप  
 कारित्वात् आह-असायसहायन करितिसंबन्धमकरंतस्स । एषकारणेण ममानसवसाङ्गमिति ॥ १ ॥ ननु यद्यप्यसौपेक्षं नमस्कारं सादा चि  
 द्वासाधनमेव युक्तं सद्गुरुवे न्येया मय्यर्हदादीनां ग्रहणाद्यतो ईर्ष्यादयो न साधुत्व व्यञ्जयन्ति ? अयवित्तरेण तदा ध्ययनादिव्यक्तमनुधारय  
 ईसी वाच्यं स्यादिति ? नैव यतो न साधुमात्रमस्कारे ईर्हदादिनमस्कारेण मयाप्यते मनुष्यमात्रमस्कारे राजादिनमस्कारेण मयाप्यते कत  
 विज्ञेयतो ईसी प्रतिव्यक्तितु मासी वाच्यो शक्यत्वादेवेति । ननु यथाप्रधान्याय मन्वीर्यस्य सिद्धादि रानुपूर्वी युक्ता य सिद्धामा स्वयया कृतं  
 न सर्वप्रधानत्वा ? नैव मर्हदुपदेष्टेन सिद्धामा प्रायमानत्वा दर्हतामेवच तीयमयर्हनेमा त्यक्तोपकारित्या दित्यर्हदादिरव सा नन्वय मावा  
 ईदे सा प्राप्नोति इति काले आचार्यजः सकाशा दर्हदादीनां प्रायमानत्वादिति अतएव तेषामेव धार्यतोपकारित्या ? अथ आवायाया मुपदे  
 शानसामर्थ्यं मर्हदुपदेष्टतएव नहि स्वतन्त्रा आचार्यादय उपदेगती इत्यप्यस्य प्रतिपद्यन्त अतो ईर्हन्तएव परमार्थेन सयाप्यत्रापका सया इत्य  
 रिपदूपायवा चार्यादयो इति सा कर्मस्वतन्त्राईर्यमस्कारेण मयुक्तं उक्तं-अपकोष्टविपरिसाण पञ्चमितापदमपरणोति ॥ स्यं तात्र त्परमोष्ठिनो नम  
 रत्स्या पुमानत्रजाना भुतज्ञानस्या त्यन्तोपकारित्या तस्यच द्रव्यभावभुतत्वरुपत्वा द्वायभुतस्यच द्रव्यभततेतुकत्या त्मज्जाकारूपद्रव्यभुतनमरुद्वका  
 इ ॥ नमोब्रवीपसिबीर्यति ॥ सिद्धिः पुस्तकादा वञ्चरविन्यासः सा आष्टादशप्रकाराणि श्रीमन्मन्नेपजिनेन स्वसुताया प्राङ्गीनामिकाया वञ्जिता ततो  
 प्राङ्गी त्यञ्जिपीयत आह-सैहसिबीविज्ञाच विवेकबन्नीएवाङ्गिबरेण । इत्यतो प्राङ्गीति स्वरूपविज्ञेयण तिपेरिति नन्वधिकृतगाटरूपेयमभूत्

### पमोयनीगुलिधीए

एषावेष्टने ? यमौपनिषोप प्राप्नोतिपिने पुष्टवादिभनेविने अचरस्यापनारूपे ते अठारिपकारि अयमवेष्टे पोतानोपुनो प्राप्नोति देखाती तेमाटे प्राप्नो

त्यात्किमङ्गुलेनामवस्थाविदोपप्राप्तेः ? इत्यर्थं किंतु श्रियमतिमङ्गुलपरिरिपादानं शिशुसमयपरिपालनाय वेत्स्युस्तमेवेति अत्रिपेयादयः  
 पुनरस्य सामान्येन व्याख्याप्रसन्निरिति नार्थवोक्ताइति तेषुमनीष्येभ्यो ततएव श्राव्यमृत्युत्पादीष्टफलसिद्धे सप्तमसिद्धे इव जगयता इयं व्यास्याअत्रिपेय  
 तयोक्ता सामान्यं प्रजापना घोषोक्ता इत्यन्तरकृत परम्परकलतु मोक्ष. अथा स्या प्रवचनत्वादेव कृततया सिद्धो नष्टास साक्षात् पारस्यैयवा यत्र  
 मोक्षार्हं तदप्रतिपादयितुं मुत्सङ्गतं अनासत्वप्रसङ्गात् तथा यमेव सम्बन्धो यदुतास्य द्यात्तस्येदं प्रयोजनमिति ? तदेव मस्यद्वारस्यै कमुतस्तत्पक्षपरस्य  
 नातिरेकाध्ययनशतस्यनायस्य उद्देश्यवत्त्वस्य इच्छीप्रमादस्य पद्विंशत्प्रसवइत्यपरिमादस्य इच्छीतिसहस्राधिकलक्षद्वयप्रमादपदराशे संज्ञसादीनि  
 दक्षिणतानि अथ प्रथमे द्यातं गन्यान्तरपरिज्रापयाध्ययने दशो द्वैशक्तमवति, लक्ष्यका द्याप्ययतार्थद्वैशक्तिपायिभ्यो इध्ययमविभागाः । उद्दिश्यते अथ  
 धानविधिना श्रियस्या चार्थैव यथै तावन्त मध्ययनप्राग मधीधेवमुद्देशा स्तएवो द्वैशक्ता स्तार्थ सुखपरबस्मरकादिनिमित्त माद्यात्रिपयामिभामद्व्या  
 रेण मङ्गुलीषु निमाणाधामाह ॥ रायगिरेत्यादि ॥ अचिह्नगाधार्यो यद्यपि वक्ष्यमाखोद्देशकवस्तुकाभिगने स्वयमेवावगम्यते तथापि द्यालाना सु  
 दाययोपाय मन्निधीयते तत्र रायगिरेत्यादि सुप्रसप्तस्यैकवचनत्वा द्वाजपदेनगरे वक्ष्यमाखोद्देशकस्यार्थो जगयता श्रीमहावीरेण दर्शित इतिव्याख्ये  
 चं एष मन्यत्रापी सुधिमत्त्वमन्ता वसेया ॥ वस्तवति ॥ वस्तवतिपयः प्रथमोद्देशकः वस्तमाखेचसिए इत्याद्यर्थनिर्बंयायंइत्यथ ॥ दुस्विस्ति ॥ दुः

रायगिह चटण १ दुस्के २

निवि कहीये । पाइच सेहनिवोनिवाचं निवचवभोइटाइवचए इति । वाग्नाडिपिना स्वरूप विद्येय वाचका, शिवेपञ्जनीमानकसिखीएके, एभगव  
 तोमू११८गतकक्षे, प्रकबोममइस्रप्रमाचके, पदवेनाशुपत्वासोमइस्रप्रमाचके ॥ शिवेप्रथमगतने द्य उदेया श्रीमहावीरदे दे राजगुहनगरनेविपि क  
 द्यातेइना नाम नाबावेकरो कशैके, वनच ॥ वस्तमाखेचसिए इत्वादि । वनच विपयपवनो निवचरूप पश्चिमीउदेया तव प्रयुता जाइवो १ । दुस्केति ॥  
 हेममयत जोव प्रापना कमायादुक्कइहता कमेवेदे ? इत्वादि प्रयुता निवच पूरणा ते वीजोउदेया २ । वचप प्रायेय आधा मिषाल्मोहनौवकमनेउद



वि तेषु साधवो ग्निषुः। अथसाधवः सव्यसाधवोवा' इत सैन्यः नमोतोयसुधुमापूषमितिद्विषित्पाठ तत्र सर्वगदस्य देवमयतायामपि दक्षिणां  
 दपरिच्छेयसक्तोपदक्षनाय युञ्जते लोके मनुष्यलोके ननु गच्छादी ये सवसाधव सैन्यो नमइति' एयांच नमनीयता मोक्षमार्गसाहाय्यकरयेनो प  
 कारित्वात् साहज-प्रसहायसहायत्त कर्तित्तैर्वज्रमकरैतस्य । एयकारकेषु नमममहसुधुमाइकृति ॥ १ ॥ ननु यद्यप्य सरोपेय नमस्कार सदा सि  
 द्धापूनामेव युक्त सद्गुरुषु न्येवा मप्यर्षेवादीना प्रह्लादाद्यतो ईर्ष्यादया न साधुस्य व्यञ्जरस्ति ? अयविसरेण तदा अयननाविव्यक्तममुसाय  
 तो एषी वाच्यास्यादिति ? नैव यतो न साधुमात्रमस्कारे ईर्ष्यादिनमस्कारे मयाप्यते मनुष्यमात्रनमस्कारे राजादिनमस्कारप्रसवदिति कर्त्त  
 ब्यो विद्येयतो एषी प्रतिव्यक्तितु मासी वाच्यो ह्यस्वात्वादेवेति । ननु यथाप्रधानन्याय मङ्गीकृत्य सिद्धादि रामुपूर्वी युक्ता य सिद्धाना सवया कृतार  
 त्यत्वेन सर्वप्रधानत्वा ? कीव मर्हदुपदेशेन सिद्धाना प्रायमानत्वा दर्शनामेव तीक्ष्णवर्तनेना त्यस्तोपकारित्वा दित्यद्वादिरेव सा नन्वय माषा  
 योदेः सा प्राप्नोति क्षणित्काले वाचार्येभ्यः सकाशा दर्शवादीनां प्रायमानत्वादिति अतएव तेयानेव भारत्यतोपकारित्वा ? केव प्राषायावा मुपदे  
 अदानसामर्थ्यं मर्हदुपदेशतएव नचि स्वतन्त्रा प्राचार्योदय उपदेशतो ऽप्युपाकृत्यं प्रतिपद्यन्त अतो ईर्गतएव परमार्येन सवाप्यप्रापणा साषा ईर्हत्य  
 रियदूपायवा वायोदयो इत सा अमस्त्यार्थेकमस्करव मपुक्त उक्तव-अयकोइविपरिसाम परमिषापयममरुकोप्ति ॥ एव ताव त्परसेष्टिनो नम  
 रुस्या पुनातमत्रनानां मुतज्ञानस्या त्यस्तोपकारित्वा तस्यैव प्रव्यजावमुतरूपस्या ज्ञावमुतस्यैव प्रव्यग्रतैतुक्त्या रसञ्जकाररूपद्रव्यश्रुतममस्तुव्यत्रा  
 मोवन्नीयतिवीर्यति ॥ सिधियः पुस्तकावा वहरविन्यासः सा बाटारवमकारापि श्रीमश्रानेयजिनेन स्वसुताया प्राङ्गीनामिकाया दक्षिता ततो  
 ऽभिधीयते साहज-सैर्हसिर्वीविहासं विवेकवन्नीयदाहिबकरेव । इत्यतो प्राङ्गीति स्वरूपविद्येयव्य तियेरिति मन्वधिकृतसाहस्यैयमपूज

### गमो नजीपुलिपी

इने १ बभौयन्विचोए वाङ्गीविपिने पुष्पवादिबनेविपे अचरसापनारूप ते अठारिमकारि ऋषभदेवे योतानीपुनो वाङ्गीने देवाही तेमाटे वाङ्गी

त्यात्मनूत्तेमानवस्थाविदोपग्राप्ते ? सत्यं किन्तु शिष्यमतिमद्वुलपरिग्रहायै मद्रूपोपादानं श्रुतसमयपरिपालनाय वेत्स्युस्त्वमेवेति श्रुतिचेपादयः  
 पुनरस्य सामाम्येन व्याख्याप्रकृतिरिति भाव्येवोक्ताइति ते तु कर्तव्यमिति ततएव भावमवस्थादीष्टकसिद्धिं स्यादिति इव जगवता इयं व्याख्या श्रुतिचेय  
 तयोक्ता स्तासांच प्रज्ञापना योयोद्या जगत्तरकत्वं परस्परकत्वं प्रज्ञापना योयोद्या जगत्तरकत्वं परस्परकत्वं प्रज्ञापना योयोद्या जगत्तरकत्वं परस्परकत्वं प्रज्ञापना योयोद्या  
 मोक्षात् तदप्रतिपादयितुं मुक्तसङ्गत यनासत्यप्रसङ्गा तथा यमेव सम्बन्धो यदुतास्य श्लाघास्येदं प्रयोजनमिति ? तदेव मस्यशास्त्रस्यै कमुतस्त्वप्यस्य  
 भातिरेकाध्ययनगतस्यभावस्य उद्देशकत्वस्यै प्रमाणात् पदत्रिंशत्प्रसङ्गपरिभाष्यस्य पदत्रिंशत्प्रसङ्गपरिभाष्यस्य पदत्रिंशत्प्रसङ्गपरिभाष्यस्य पदत्रिंशत्प्रसङ्गपरिभाष्यस्य  
 दक्षिणानि अथ प्रथमे शत ग्रन्थान्तरपरिभाष्यस्यै त्रयो दैशिकभावमिति, उद्देशका व्याख्येयार्थदेखात्रिचायिनो इध्ययनविभागाः । उद्दिश्यते एव  
 पामविधित्वा शिष्यस्या चार्थेय ययै तावन्त मध्यमप्राग मधीश्वेवमुद्देशा स्ताय सुखपरबस्वरखादिनिमित्त माद्यात्रिपयाभिषागद्वा  
 रेण सङ्गृहीतुं निमांगागामाद् ॥ रायगिरेत्यादि ॥ अचिरतगाचार्यो यद्यपि धर्ममार्कोद्देशकवक्ष्यकामिगते स्वयमेवावगम्यते तथापि बालाना सु  
 गायत्रोपाय मन्त्रिधीयते तत्र रायगिरेत्यादि सुप्रसङ्गव्यवस्थामत्वा त्रजगद्देशगरे वक्ष्यमाकोद्देशकस्यार्थो जगत्प्रसा श्रीमद्वावीरेव दर्शित इतिव्याख्ये  
 पं एव मन्वशापी दृष्टिमत्त्वस्तता यद्येय ॥ वनमिति ॥ प्रथमोद्देशकः जलमाकेषलिय इत्याद्ययनिर्बयार्थइत्यथ ॥ दुर्बलिति ॥ दुः

रायगिरेह प्रलगा १ दुर्बले २

निधि बहोये । पावन सेहनिवाप्रियायं निवचनभाइडाहिनकर इति । प्राज्ञाक्षिताना स्वरूप विशेष जायना, शिविपत्यतोमानमिजोएखे, एभगव  
 तीसूत्रे १२० यतकडे, मयूकशीमसङ्कल्पमात्रे पदवेलासुपलासौमइस्रप्रमात्रे ॥ शिवे प्रथमगतके दम उद्देशा श्रीमद्वावीरेखे राजयइजगर्नेवियेक  
 व्यातेइना नाम गाबायेकरो करैवे, वनव ॥ एवमादिइखिए इत्यादि । एवम्व किपयचनो निवचनरूप पश्चिमाउद्देशा तव प्रत्युनो जायवो १ । दुर्बलेति ।  
 हेभगवतजीव चापवा कमायादुक्कइहता वसवेदे १ इत्यादि मयना निवचन पूहना ते वोवाउद्देशा २ । कंशुपपसिय आषा मिथ्यात्वमोइनीयकर्ममेउव

वि तेपु साधुः शिषुकाः श्रमसाधवः सव्यसाधवोवा' इत स्तोत्रं नमोलीयसुवमाहूबभित्तिद्विषित्पाठ' तत्र सव्यशष्टस्य देवसव्यतायामपि दशना  
 दपरिच्छेदवसंतापवर्णनार्थं सुच्यते श्लोके मनुष्यलोके ननु गच्छादी ये सर्वत्राप्य स्तोत्रो नमस्रति एषाच नमनीयता मोक्षमार्गंसाहायककरणेनो प  
 कारित्वात् आह-असहायसहायत्वं कर्तृत्वमेव सर्वत्रकर्मकरत्वं । एषकारणेन ममामहसद्यसाहूवति ॥ १ ॥ ननु यद्यप्यं सनेपेयं नमस्कारं कदाचि  
 दसाधुनामेव युक्तं सदाहरे च्याया मय्यर्थादीनां प्रहृष्टा ह्यतो ईर्ष्यायुक्तं व्यनश्चरन्ति ? अयविस्तरं तदा अयपनादिव्यक्तसमुधारण  
 तो एषो वाच्यस्यादिति ? नैव यतो न साधुमात्रमस्कारे ईर्ष्यादिनमस्कारेण मयाप्यते मनुष्यमात्रमस्कारे रागादिनमस्कारफलवदिति कस  
 व्यो विद्वेषतो एषो प्रतिव्यक्तितु नासी वाच्यो ह्यल्पत्वादेवेति । ननु ययाप्रधानन्याय मूर्धीठत्य सिद्धादि रानुपूर्वी युक्ता य सिद्धानां सवया कृतक  
 त्वात्वेन सर्वप्रधानत्वा ? कीच मर्हदुपदेशेन सिद्धानां प्रायमानत्वा दर्शनामेवच मीधप्रवर्तनेना त्पस्तोपकारित्वा दित्यहदविदेव सा नन्वव साचा  
 योरे सा प्राप्नोति ह्यचित्काले प्राचार्येण्य सक्ताया ईर्ष्यादीनां प्रायमानत्वादिदिति यतएव तेषामेव धास्तोपकारित्वा ? अतं प्राचार्योणा मुपु  
 न्ददानसामर्थ्यं मर्हदुपदेशतएव नहि स्वतन्त्रा प्राचार्योदय उपदेशतां ऽपचापकस्य प्रतिपद्यन्त यतो ईर्ष्यस्य परमार्थेन सवायपचापका कथा ऽह्य  
 रियदूपायवा चार्योदयी इत स्ता कसकृत्याईकमस्कारं मयुक्तं उक्तं-अपजोह्विपरिसाम् पक्षमिहापसमपरसोति ॥ एवं ताव त्परमंशिनो नम  
 रकृत्या पुनातजजनाता मुतजानस्या त्पस्तोपकारित्वा तस्यच ब्रह्मतावमुतरूपत्वा ज्ञायमुतस्यच ब्रह्मशतहेतुकत्वा त्पश्चात्पररूपद्रव्यश्रुतममस्तुब्रह्मा  
 इ ॥ ममोबनीपत्निवीरति ॥ सिषिः पुस्तकादा वदरविन्यास' सा आष्टावशप्रकाराणि श्रीमन्नाज्रेयजिनेन श्रुसुताया प्राश्नीनिमिकाया दविता ततो  
 प्राश्नी त्वनिधीयते आह-सेहसिषीविहाव विवेकवनीएवाहिबरेव । इत्यतो प्राश्नीति स्वरूपविशेषणं सिषेरिति मन्वथिरुतप्रायस्येवमङ्गल

गमोयनीपुलिवीए

एवमिदमे १ यमोयनिषोप प्राश्नीविपिने पुस्तकादिबनेविषे अचरसायनारूपं ते षठरिप्रकारि स्वयमदेवे पोतानोपुषो प्राश्नीने ऐशाही तेमाटे प्राश्नी

स्याद्विज्ञानवस्त्रस्यादिदोषप्राप्तेः ? सत्यं किंतु गिष्यमतिमङ्गलपरिग्रहाद्यै मङ्गलोपादानं शिष्टसमयपरिपालनाय चेत्सुखमेवेति अग्निदेयावयः  
 पुनरस्य सामान्येन व्याख्याप्रसङ्गिरिति भाञ्चैवोक्ताइति तेषुनोक्तान्ते ततएव श्रोत्रप्रवृत्तादीष्टकलविदे सथापि इह जगवता इयं व्याख्या अग्निदेये  
 तयोक्ता सामान्यं प्रज्ञापना द्योयोवा ऽन्तरफल परस्परफलतु मीढः सवा स्या प्रवचनत्वादेव फलतया सिद्धो नष्ट्याप्तः साक्षात् पारस्पर्येववा यत्र  
 मोक्षात् तत्रप्रतिपादयितुं सुरसङ्गत अनाप्तत्वप्रसङ्गा तथा यमेव सम्बन्धो यदुतास्य शास्त्रस्यैव प्रयोजनमिति ? तदेव मस्यशास्त्रस्यै कमुतरन्त्यस्तस्य  
 मानिरेषाप्यनशतस्यज्ञावस्य उद्देशकवशसङ्गीप्रमादस्य पद्विज्ञाप्रसङ्गपरिमादस्य ऽष्टाक्षीतिवृत्त्याधिकसङ्ख्यप्रमाणपदराशौ मङ्गलादीनि  
 दञ्जितानि अथ प्रथमे अत गुन्यान्तरपरिजापयाच्ययने दशौ देशकामवति उद्देशका द्याप्यपनार्थदञ्जानिवायिनो ऽध्ययनविभागाः । उद्दिश्यते तत्र  
 पानयिषिता गिष्यस्या चार्थेव यथै तावन्त मध्ययननाय मधीयेवमुद्देशा सएवो देशका साद्य सुसुखरसस्मरकादिभिर्मित्त साद्याग्निदेयामिषान्द्रा  
 देव सङ्गृहीतुं विमोंगाथासाह ॥ रापयिहेत्यादि ऽ अस्तिस्तगाथार्थो यद्यपि वक्ष्यमाकोद्देशकदञ्जकामिगने स्वपमवावगम्यते तथापि वासानां तु  
 सावयोचाय मग्निशीयते तत्र रायगिहेत्यादि सुसुखस्तम्यैकवधमत्वा द्राक्षयश्चेन्नरे वक्ष्यमाकोद्देशकस्यार्थो जगवता श्रीमहावीरेव वक्षित इतिव्याख्ये  
 यं एय मन्यत्रापी दृढिमत्त्वमत्ता ववेया ऽ वनवृत्ति ऽ वनविषयः प्रथमोद्देशकः अलमाकेवसिए इत्याद्यर्थनिश्चयावइत्ययः ॥ दुक्खिति ऽ दुः

### रायगिह चल्ग १ दुस्के २

निवि कहीये । पाइव सङ्गिनीदिहाव विवेचनमोहतादिवकए इति । द्राक्षासिपिना स्वक्य निश्रेय काववा, द्विवेपत्यलोमानमिषीएछे, एमगव  
 तीसूरे १८ गतकडे, प्रत्यक्षबोमसङ्गमसावडे, पद्मेनागु पञ्चासोसङ्गमसावडे । द्विवे प्रथमगतके द्य ववेया श्रीमहावीरएवे राजगृहजनमलेविविषे क  
 ज्ञातेइना नाम माहाविकरो कहीडे वनए । पनमाकेवसिए इत्यादि । पनए विपयपर्यन्ती निषयकप पश्चिमीउदेया तत्र प्रत्यना आषवा १ । दुक्खेति ।  
 हेमवर्धत जीव पापवा अमाशादुस्ववहता नमवेदे ? इत्यादि प्रत्यनो निषय पूकरो ते वोजाठवेया २ । अक्षयपावेय आषा मिव्यालमोहनोयकमलेउद

खविष्यो द्वितीमो सीवो ज्वल । स्वपठत दु य वेदपतीत्यादि प्रसनिर्वायाचइत्यर्थं ॥ काद्या निष्पात्यमोहनीयोदयसमुत्थो ज्ञ्या  
 स्वदर्शनपइरूपो श्रीवपरिबाम सयव प्रकृष्टो शोयो श्रीवद्वयल कांशाप्रदोय स्रद्धिपय स्मृतीयः श्रीवेन जदन्त । काजामोहनीय कल्प कृत मित्याद्य  
 र्निर्निवपाचइत्यर्थः अकार समुच्चये ॥ पगइति ॥ प्रकृतयः कर्मनेदा यतुर्वाद्दशाम्स्वार्थः कृतिमदत्त । कर्मप्रकृतय इत्याविसामो ? ॥ पुठवीडति ॥  
 रत्नप्रदादियुष्य पचमेवाच्याः कृतिजइत । युष्य इत्यादिष ? सूत्रमस्य ॥ जावतसि ॥ पायच्छेधोपलक्षित पष्ट पायतो जवता । यकाशातरा रसूयं  
 इत्यादिमूत्रघासी ॥ नेरइरति ॥ नेरयिबयधोपलक्षितः समसो नेरयिबो जवत् । निरये उत्पद्यमानइत्यादिष तत्पूत्र ॥ वालेति ॥ घालवाधोपलक्षि  
 तो इमः एकान्तदासो जवत् । मनुष्यइत्यादि सूत्रघासी ॥ गुरुइति ॥ गुठऋविषयोनयम- कय जदन्त । श्रीवागुक्कल मागच्छन्तीत्यादिष ? सूत्र मस्य  
 वावमुचपाय ॥ चलकाडति ॥ यदुवचननिर्वाहा वलनाद्या वदामोद्देशकस्याया सासूत्र घेय मन्यपूयका मदत । यवमास्यांति चलत् अचलित नि  
 त्याहीनि प्रथमयतोद्देशकसप्रइयिषापर्यः ॥ तरेव आस्त्राद्देशे कृतमयलदिकृत्योऽपि प्रथमवातरस्यादौ विशेषतो मगलमाह ॥ मसोसुयस्सति ॥ नमस्सा

कखपठसेय ३ पगइ ४ पुठवीड ५ जावते ६ येरइए ७ वाले ८ गुरुय ९ चलणाड १० ॥ गमोसुश्चस्स ॥

वे पचापय गयनपइपरिबाम तेद्विक प्रकटमाटा जपके वाय जोवदूपव तेकाशा प्रदोय हेभयवन् खांवे खांशामोहनीयकमबीधु ? इत्यादि ।  
 पर्यन्तिकपच तोका ३ । अ गश्च यमुचयमा ? पमइ प्रकृति कइती कमनमित, हेमवन् खेतसो कमप्रकृति ? इत्यादि प्रय शोका ४ । पुठवीडति । रव  
 प्रभा इक्षिणी हेमवन् खेतसोके ? इत्यादि पचनिसव पचमा ५ । जावतेति हेभयवन् खेतसे पाकार्ये अतरे सू ऊगताहीय तेजिषयरुप खडो ६ ।  
 वेरइए ? हेमवन् नरकनेविये नारको जपके किंवा अगारको जपके ? इत्यादि प्रय सातसो ७ । वासे । कश्चिदेर खांतवाच हेभयवन् मनुष्यइत्यादि ? प्रय पाठ  
 मा ८ । मुचए ? हेमवन् विषया श्रीवभारोहाव ? इत्यादि प्रयनिसय ते नवमा उद्देशो ९ । पचपापो । हेमवन् पचट्येनो इमकहे, पचमावे पचसि  
 ए इत्यादि प्रय ? निर्बन्ते इमनीउद्देशा ? । इत्यादि प्रथमयतद्विषय गाबाय । अमस्कारइषी कइमे ठुतने ? द्रुत हादगागीरुप

रोक्षु भुताय द्वादशगङ्गीरूपाया इत्यवधनाय । नन्विष्टदेयतानमस्कारोमङ्गलार्थोन्नयति नचयुतमिष्टदेवतेति रूपमयमङ्गलसाधइति ? अत्रोष्यते युतमि  
 ष्टदेयते याइतो नमस्करणीयत्वा त्रिस्तद्व्य क्रमस्तुयैतिष युत मङ्गलो मसस्तीर्थोयेति प्रब्रनात् तीर्थेष युत सवारसागरोत्तरकासाधारककारत्वात्वा स  
 दाधारत्येनेयच सप्तस्य तीर्थंशश्रुत्रिपेयत्वात् तथा चिद्वानपि मङ्गलार्थं महतो नमस्तुयैत्येय-काञ्चनममोक्षार सिद्धाद्यमनिष्पत्तुसो गिबडे । इतिव  
 यनादिति मयताय इत्यमशतीक्ष्णामिपेयायलशः प्राग्दर्शितं स्ततद्य यथोद्देशं निर्देशं इतिन्याय माश्रित्यादितः प्रथमोद्देशकार्यप्रपयोयाच्य स्त  
 स्यच गुरुपर्यक्रमलक्षणं सन्त्यत्प मुपदर्शयन् भगवान् सुप्रसस्वामी जन्म्युस्यामिन माभित्येदमाइ ॥ तेबंकालेबंतेबंसमएवमित्यादि ॥ अथ कथ भिवम्ब  
 वीयते यदुत सुप्रसस्वामी जन्म्युस्यामिन मत्रिसम्यन्थयन्त्यमुत्तवाभिति ? उच्यते सुप्रसस्वामिवाचनायाएया नुवृत्तत्वा दाइव-तित्थयन्त्यसुइमाठ निर  
 वषाणजइरायेका ॥ सुप्रसस्वामिनय जन्म्युस्याम्येव प्रथमश्चियो इत स्तमाश्रित्ये यंवाचना प्रयुतेति तथा पष्टाङ्गे उपोह्वात यद्वदुश्यते यथाकिस्त् सु  
 प्रसम्यामिनमति जयूनामा प्राइ ॥ नइवं प्रते ! पच्यमस्य अङ्गस्व धियाइपपक्यतीरसमयेवं प्रगवया मइवीरियं अयमठे पबते कठस्सबं प्रते। के अठे  
 पबतेति ॥ तत एव मिइपि सुप्रमैय जन्मूनामामं प्रत्युपोह्वात मयक्षप मप्रिश्चितवा नित्ययसीयतइति अयं धोपोह्वातयन्यो मूलटीकाकृता समस्तथा  
 त माश्रित्य व्याख्यातो प्यस्माभिः प्रथमोद्देश्य माभित्य व्याख्यायते प्रतिज्ञात मत्युद्देश्य सुपोह्वातस्यैव ज्ञात्रे नेकधाप्रिचानादिति अप्यथ्य प्राग्  
 व्याख्यातो नमस्कारादिको यन्यो वृत्तिरता न व्याख्यातः कुतोपि कारणादिति ॥ तेबंकालेबति ॥ तेइति प्राकृतज्ञीसीवज्ञा सस्मिन् यत्र तद्वगर मा  
 वीन् खं कारो न्यत्रापि वाक्यासङ्कारार्थो । यथा-इमाबं प्रते । पुठयी इत्यादिपु काले अचिकृतावसप्विंबीचतुर्यविनागतलक्षणे ॥ तेबंति ॥ तस्मिन् य  
 या सी प्रगवान् पामकथा मकरोत् ॥ समये कालस्येययिचिष्टे विप्राने अथवा ; वृत्तीयैवेयं तत स्तैम कालेन हेतुनुतेन तेन समयेन हे

### तेणकालेण तेणसमएण

पीतराम प्रवचन बहोये, हिदे भगवत श्रीमुपमास्वामी पातानाविष्य अबूपते इम ऋडेवे । तेव ज्ञासिष ॥ यथास्वास्तंकरि ते पवसपिषो कासना दुखम

तुभूतेनेव ॥ रायनिवेति ॥ एकार प्रथमैकवचनप्रजव । ऊपरैषागच्छदितसकवेइत्यादाविव-ततय राजयइनाम नगर ॥ होत्येति ॥ अजयत् मन्विवाभी  
 मपि तद्यगर मल्ली त्यतः कयमुक्त मजवदिति ? उच्यते एवंकपथात्त्रिभूतिपुक्त तवेया जय अतु सुधर्मस्थामिभो वाचनादामन्नासे इवसुच्यिषी  
 त्या एकासस्य तवीपभुजनावाभा इतिज्ञावात् ॥ वच्यते ॥ इइस्थानके नगरयसंको वाच्यः गुणगीरयजपादिइ तस्यालिरितत्वात् संबैव-रिदु  
 त्विमियसम्भि ॥ रिदु पुरजयनादिभि र्बृह सिमित स्थिर स्वच्छादिजययजितत्वात् मुसुद पनवान्याभिविभूतियुक्तत्वा ततः पदत्रयस्य कम्मधार  
 य- ॥ पमुइयत्रकमावय ॥ प्रमुदिता इष्टाः प्रमोवकारकवसूना सद्गाया ज्ञानानगरवासाध्यल्लोका ज्ञानपदाय अनपदप्रवा सदायाता सतो यत्र त  
 एप्रमुदितजनजानपदमित्यादि रीपपातिना स्वव्यास्थानो इष्टदृश्य ॥ तस्ववति ॥ पष्टाः पपम्ययत्वा तस्म द्राजयइनगरात् ॥ वक्षियति ॥ वधि  
 सात् ॥ उत्तरपुरच्छिमेति ॥ दिशिचायति ॥ दिशां जागो दियूयोवा जागो गजनमल्लस्य दिग्नाग सत्र गुणसिसकनाम ॥ वेइय  
 ति ॥ चित लैप्यादिचपनस्य प्रावः कमवेति चैत्य संघागदत्त्वा हेवविच तदाभयत्वा तद्दृइमपि चैत्यं तपइ व्यतरापतनं नतु प्रगवता मईता माय

## रायगिहेणाम गयरेहोत्या यधुन तस्सणरायगिहस्सणायरस्स दहि्या उत्तरपुरच्छिमेदिशिजाए गुणसिलुणामचेइएहोत्या

मुबमानान शीवा परानेविवे । तेषठमएच ॥ चवास्वावकारे जेसमयनेविवे भवत वावाचइ ते समवे । रायगिहेणामपवरेहोत्या ॥ राजयइ, इतेनामे  
 चरेवइता नयरहाता इको इषी यत्तमानकासे राजयइनगरखे तोयचि चथोतकासे नमदनी जेइवी वर्षकहतो तेइवो यत्तमानकासे नईी भवस रिपषी  
 कान माटे इवाकळो । वचपी । वचकतेवचनरायपेयोबी जायवा ॥ तस्सरावमिइच्छयएच्छवइया ॥ चंवास्वावकारे इमसवेजागवो तेइने राजा  
 राजगइ नमत्ते वादिर । उत्तरपुरच्छिमेदिशिभाए ॥ उत्तरपूवना दिगिगा माए विभायनेविये एतसेरियानकोपनेविये मुबगिस इधिनमे च्चरतरयच  
 ना चैजगवै विय भवना विववव धायतन ज्ञानयइ इया ॥ वत्तचसेचिएरावा ॥ तिचत्त राजयइगमरे चेषिचनगमे राजासे जेपद किचको एव यउकक

तर्न ॥ इत्यति ॥ यन्मूय इह च मय्यव्याप्यास्यते तत्रायाः सुममत्वा विस्वसेयमिति ॥ तेनकालेऽतेऽसमएवसमयेति ॥ अतपविखेदेवेतिपञ्चनात्  
 ग्राम्यति तपस्पतीति अमकाः अमवा सः श्लोत्रनेन ममवा वतंतइति समनाः श्लोत्रनेन ममवा वतंतइति समसो ध्यास्यातं सुधप्रस्तावान् मनीमात्रसत्वस्या स्या  
 त्यात् समतवा यथा प्रवत्येव भवतिप्रापते समोवा सर्वजूतेषु समस इत्यनेकांशत्वा द्वातूना प्रवतंतइति समसो निरुक्तिवशात् ॥ नगवा  
 नेयपादियुक्तः पून्यइत्यर्थः ॥ महावीरति ॥ वीरः शूरीरविकातावितियञ्चनात् रिपुभिराकरबलो विज्ञातः सच शकवर्षादिरपित्या दतो विजि  
 प्यत महा यासौ दुज्जयातररिपुतिरस्करवा द्वीरयेति महावीर एतच्च देवैः प्रंगवतो गीषनाम छतं यदाह—अश्लेप्रयजेरवाच कृतिबभेपरीसइवोवच  
 गार्थं देवेकंकल्पमहावीरति ॥ आदिकरेति ॥ आदौ प्रपमत युतभसाचारारदिग्गपात्मक करोति तदर्थंप्रकायकत्वेन प्रकथती त्वेयश्लोच आदिक  
 रः ॥ आदिकरत्वा यासौ क्विपिइत्याह ॥ तिस्रयेति ॥ तरति तेन संसारसामरमिति तीर्थं प्रवचन तद्व्यतिरेका चेह सच स्तोत्रं च तत्करवञ्जी  
 सत्या तीर्थंकरः तीर्थकरत्वच तस्य मान्योपदेशपूर्वक मित्यत्राह ॥ सः सःसद्युदेति ॥ सः आत्मैव सार्द्धं मनन्योपदेशस्तइत्यर्थः सम्पद् यथाव हु  
 द्दो वेयोपादेयापेक्षणीयवस्तुतश्च विदितयानिति सःसद्युद्दः सःसद्युद्दुत्य चास्य नमाकतस्य सतः पुरुयोत्तमत्वा वित्यतमाह ॥ पुरिसोत्तमेति ॥ पु  
 हपाणां मये तेन तेन रूपादिना तिष्ठयेतीद्दुतत्वा दूढं वतित्वा दुस्तमः पुरुवात्तमः अथ पुरुयोत्तमत्वमेवास्य विहाद्युपमानत्रयेच समर्थंयत्राह ॥ पु

तत्पथसेणिपुराया चिह्नणादेवी तेणकालेण समणेनगथमहाधीरे श्यादिगरे तित्यगरे सहसद्युधे

माचे मयो ॥ भिस्रबादेवी ॥ चसवानामे राबोदे ॥ तवबासेष ॥ प्रवसपिचोनाम शौबापारानेविवे ॥ समरुभगवमहावीरे ॥ अमत्तपक्षी येखर्वादिगुष  
 पुत्र पून्य इत्यत्र महावीर इयेनामै ॥ आदिमरे ॥ ठुतभमपाचारार्गादिसूत्री पादिना करवहार ॥ तिलगरे ॥ तरीवे खेरे तेनेतोय प्रवचन तथा सं  
 घ तेइना कर्ता ॥ मयसुभे ॥ पापशोच परठपदेश विना वियापादेशपशुकरूप जाप्यं ॥ पुरिसतने ॥ पुरुपमादि उतम रूपादिपतियवेकरो भयवा उच  
 लपबेकणे ॥ पुरिससोहे ॥ पुरुपमादिसिहनीपरं शौचगुणेकरोसहित तेनाटे पुरुपसिह ॥ पुरिसवरपुंडरीए ॥ पुरुपमादिवरकश्चिवे प्रभान येतकमसनी परे



पुत्रुत्तैव ॥ रायनिवेति ॥ एकारः प्रथमैकवचनप्रथम । अक्षरैर्भागवद्वदितस्तुर्वेद्यादाधिय-ततय राजपुत्रनाम नगरं ॥ इतीति ॥ अजवत् नन्विदानी  
 मपि तत्रपर मसी त्यतः कथमुक्त मन्त्रवदिति ? उच्यते धर्माक्षयप्राप्तविद्विन्पुत्रुत्त तदेवा जय न्तु सुधर्मस्थामिनो याचनादामकाले इवसप्यिषी  
 त्वा इजालस्य तदीयकुजनावाभा इतिनावात् ॥ यच्छेति ॥ इहस्थानके नगरवर्षको वाच्यः यथगोरपजयादिः तस्यालिखितत्वात् सचैव-रिद्र  
 त्विमियसमिदे ॥ रिद्र पुरजवनादिभि बृहं स्तिमित त्विर स्वभ्रादिव्रजयद्विकृतत्वात् समुद्र पनपान्यादिद्विज्जुतियुक्त्या ततः पदत्रयस्य कर्मपार  
 य ॥ पमुद्रयत्रजावय ॥ प्रमुदिता इष्टा प्रमोदकारव्यकुना सङ्गावा ज्ञानानगरवास्तव्यलोका ज्ञानपदाय जनपदत्रया सत्रायाता सुतो यत्र त  
 त्रमुदितजनमानपद्मित्यादि रौपयातिका त्स्वव्यास्मानो इहृदय ॥ तस्वयति ॥ पद्यग पचम्यर्थत्वा तस्म्य द्राक्ष्यइजगरात् ॥ वक्षियति ॥ यदि  
 क्षात् ॥ उत्तरपुरच्छिमेति ॥ दिशोभापति ॥ दिशा प्रायो विपुषीया प्रागो गगनमलस्य विरुनाय क्षत्र गुणखिलक्षनाम ॥ वेद्वय  
 ति ॥ शित संप्यादिचपनस्य प्रायः क्षमेवेति चैत्यं सञ्जापदत्वा द्वैवविवं तदाभयत्वा तद्दृश्यमपि चैत्यं तच्च इ व्यतरायतनं न्तु जगवता मईता माय

### रायगिहेणाम णयरेहोत्या यखुत्र तस्वणरायगिहस्सणयरस यहिया उत्तरपुरच्छिमेदिशीनाए गुणसिलगुणामचेद्गुहोत्या

मुद्रमानान शीवा परानेविये । तेचसमएव । बराकासकारे जेसमबनेविये मभवत कयाबहे ते समये । रायगिहेणामचयरेहोत्या ॥ राजपुद्र, इसेनामे  
 चरेकवृत्तामरवृता इवो इहा वतमानकाले राजपुद्रजनगरखे तोपचि पतीतकाले नरनेजेइवो बर्षकवृत्तो तेइवो बर्षमानकाले नही भवस पियषी  
 काव माटे इमाकालो । कवपी । वषकवृत्तजनरायसेवोवी वाचवा । तच्छरायभिक्षुचयरेकवृत्तिया । बंवाकासकारे इमसवैवाचवो तेइने रावा  
 राजपुद्रजनरने वाचिर । उत्तरपुरच्छिमेदिशीमाए । उत्तरपूवगा दिशिया माए विंभायनेविये एतसेइयागकोचनेविये गुणसिल इशेनामे व्यगतरस्य  
 वा चैत्ययद्ये दिव पवन दिववत प्रायतन स्तानपुद्र इया । तत्रसेवियेरावा । तिर्हा राजपुद्रजनरने येचिबननामे राजाखे जेपय निषवो एक सुप्रव

आगतान् शिला स्मृतीपद्म प्रदीपः इदं विज्ञेयं ब्रह्मलोकमाभिस्याह ॥ लोकास्य लोकापत इति लोको  
 नया व्युत्पत्त्या साक्षात्लोकस्य समस्तधनुस्त्वंनायस्या सख्यमास्य मयलसन्निव निमिलनायस्रजायायनासुसमर्धकेवलासोकापुवकाप्रवचन  
 प्रनापटसप्रवलनेनप्रद्योत प्रकाशं करोती त्येयज्ञीलौ लोकप्रद्योतकरः उत्कविद्यीययोपतय मिहिररशिरहिरस्मगजोद्विदपि तसीर्षिकमतेन प्रवती  
 ति कारययिगपः इत्याज्जुगापां तद्विज्ञेपाजिचामायाह ॥ अन्वयव्यति ॥ नन्वय दपते ददाति प्राजापहरकरविक प्युपसर्गकारिम्राशिनी त्यजयव्ययः  
 अनयायाः भवमाग्निप्रयपरिहारवती दया मुक्त्या यस्य सोऽप्रयदयो हरिहरमिहिरादयस्तु नीवभित्तिविद्ययः मकेवल भसावपकारिणां तदन्येपाया  
 प्रभयपरिहारमाय इुरोती त्यपि त्वयैप्राम्तिमपि करोतीति दशयत्याह ॥ यस्तुद्वयति ॥ यस्तुद्वयति ॥ अज्ञानार्थविजागोपदञ्जकत्वात्  
 यदाह-यस्तुनास्तप्येव येमुततान्त्रयुपा सम्बन्धैवपव्यति ज्ञायान्त्रैयतराकराः ॥ १ ॥ तद्वपतइति बहुद्वयः, यथाह-लोकै फाल्त्वारगताना ष्वी  
 रैयिस्तुपनाना स्यद्बहुपा यस्तुकहाटनेन यस्तुत्वा यान्त्रितमागदर्शननो पकारी जव त्येय मयमपि सद्यारारस्ववर्तिना रागाविरियुविसुसबन्धे  
 पनाना कुयावनाच्छादितवज्जामतीबनाना तदपनयनम श्रुतबहु द्रव्या निर्धारभागं यच्छ क्षुपत्तीति दर्शयत्याह ॥ मगवत्यति ॥ मार्गं सम्पद्  
 ज्ञानदानवारिप्राप्तक स्पर्मपदपुरपय म्प्यतइति मागदय यथाह-लोकै बहुकहाटन मागदक्षनन्व छत्या चौराविविस्तृता क्तिरुपव्रवं स्थान प्राप  
 यन् परमोपकारीनवती त्यवमयमपीति दशयत्याह ॥ सरखदयति ॥ शरख श्रावं मानाविषोपवृथोपद्रुतानां तद्द्रव्यास्थान स्तव परमार्थतो सिद्धीव

### लोगपज्जीयगरे अजयवदु चरकुदु मगगदु सरणदु

न ए इ प्र दीपममान ॥ मागपज्जाागर ॥ इहा भाव इहती गश्चर तेमते पज्जासूर्यममानहे किमसूर्यनोवाडोइइतेवरो जगसाहि सवखे छ्यातशोयतिम  
 प्तामीने उपवेइवा विममेइवा भुवेइवा एतसे विपयीने वचनेचरी वादगागो रवे । पवना, समस्तावासाइस्ररूपनेविये प्रघातकरे ॥ समयवए ॥ च  
 पमसनी करवइवारेनेपिभयनदे। पबन, दशामतेदीवेते ॥ चकुदए ॥ भुतमानरूपवचुदे तेभषी ॥ मगदए ॥ प्रानद्वयनषारिचरुप मीचमार्गना द्वा

रिसचीहेति ॥ विश्वव विश्व पुरुष द्यासीसिंहयेतिपुरुषसिंहो लोके नहि सिंहे शीर्यं मतिप्रलुट मज्जुपमत मतः शीर्यं स उपमान कृत शीर्य  
तु नमवतो वासे प्रत्यनीकरेण प्राप्यमाबसा प्यनीतत्वात् कुलिङ्गकठिनमुष्टिप्रहारप्रहतिप्रधद्मानामशरीरकुञ्जताकरणाधेति तथा ॥ पुरिसव  
रपुञ्जरीयति ॥ वरपुञ्जरीक प्रथानचलसहस्रपत्र पुरुषो वरपुञ्जरीकमिवेति पुरुषवरपुञ्जरीक चतस्य चास्य प्रगवतः सर्वाभुजमतीमसरहितत्वात्  
सर्वेय भुजानुजतैः शुद्धत्वात् अथवा पुरुषावा तल्लेक्यवीराना वरपुञ्जरीकमिव वरच्छत्रमिव यः सन्तापातपनिवारणसमर्पत्वा द्रुपाकारणत्वा  
व स पुरुषवरपुञ्जरीकमिति तथा ॥ पुरिसवरयपइत्विति ॥ पुरुषयय वरमपइस्ती पुरुषवरगपस्ती यथागघइस्तिनो गघेमापि समस्तेतरइस्सिमो ज्ञ  
न्यत तथा प्रगवत लोकेकाविहरणेन इतिपरश्वक्रदुर्भ्रिष्ठकठनरकादीनि दुरितानि नश्यतीति पुरुषवरगघइस्तीत्युच्यत इत्यत उपमाप्रया स्फुरयो  
हमो घी नचायं पुरुषोत्तमयव किंतुलोकस्या प्युत्तमो लोकनाथत्वा देतेदेवाइ ॥ लोगनाहेति ॥ लोकस्य सच्चिनय्यलोकस्य नाथः प्रजु लोकनाथो  
नाथत्वव योवसेमकारित्व योगसेमक्यापइतिवचनात् तथा स्या प्राप्तस्य लोकस्य सम्यग्दर्शनान्दे योगकरणेन सव्यस्यघ परिपात्तनेनेति लोकना  
थत्वं यथावस्थितसमसावस्तुल्लोमप्रदीपता देयेत्यथाइ ॥ सोमयपंठति ॥ लोकस्य विशिष्टतियग्नरामररूपस्या तरतिमिरनिराकरणेन प्रलुष्टप्र

पुरिसुप्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुञ्जरीए पुरिसवरगघइत्यी लोगुप्तमे लोगनाहे लोगपदीवे

प्रभावेवरां सवपसुम पापरहित तमाटे ॥ पुरिसवरगघइत्या ॥ पुरिसमाहि प्रथान गवइन्द्रोसमान त्रिमगधइस्तीगीगञ्जे पनेरा हाधो त्रिं तिम म  
भवत केवेदेयनेविये विश्वे विष्वातिहा इतिदुभिचादिपरश्वक्रनासे ॥ सीमत्तमे ॥ भव्यवीवनेमाहि समावेकरी क्तमहे ॥ सीयमाहे ॥ इहासोळगय्ये  
थासवसिद्विक मापमामी सहाइ मय्यवीव जाषवा तेइमचो नाबकहीये योगघेमनां करणइहाहे विवैपाये धमपाय्युंनधो तेइने पमाडेहे ते योग  
कहीये घनेविचे प्रागे धमकावीहे तेइने हाधावको सहाइहागवीये मननूस्किरपन् एपकावेते येमकहीये तेकेवुवागा स्वासीकरं तेमचीलोकनाथ  
कहीये ॥ इहावीव प्रदुविषचीपनिबाव तेइने रचाने करण विपवाहे ॥ लोगपदीवे ॥ इधानोवकचहीये संचीपदेहोवीच विचने प्रसंनो कणकावे तेइ





पृतः परिकरितइति ॥ पुष्पाब्जपुष्पिचरमात्रे ॥ भययानुपूर्व्यांविना ॥ गामाब्जगामदृष्टजामात्रे ॥ ग्रामप्यप्रतीतो ॥ अनुग्रामस्य तदनन्तरग्रामो ग्रामानुग्राम  
 तन्पुन्यं गच्छन् ॥ सुहृं सुहृत्वं विहरमात्रे ज्ञेयेय रायगिरे ख्यरे ज्ञेयेय गुह्यसिद्धे चइए तयेव उवागच्छइ उवागच्छिता अज्ञापयिच्छिव उगच्छं उगि  
 यइ उगिच्छिता मञ्जमेवं तयसा अप्यावं ज्ञायेमात्र विहरइति ॥ समयसरस्वत्यक्षेत्रे, समस्तम जगयत्तं अतेवासी यइये समसा जगवतो अप्येगइया  
 उगप्यइयाइत्यादि ॥ साध्यादियच्छको वाच्य, क्षया असुरकुस्माराः क्षापजवनपतयो ध्यंतरा ज्योतिष्काः येमानिका देवाद्य, मगवत समीप मागच्छन्तो  
 यत्नयित्तयाः ॥ परिसाक्षिण्ययति ॥ रात्रयथा श्राद्धादिलोको जगयतो यत्नतये निगत स्याद्विगमयेव ॥ तएव रायगिरे ख्यरे सिंघाळगतिगवठकप  
 चरयठम्मुहमज्ञापयठेमु यज्जको अथमच्छस्व यवमाइत्पइ यययत्तु देवाकुप्पिया समये जगव मद्दायीर इइ गुह्यसिद्धेय बेइए अज्ञापयिच्छिव उगच्छं  
 उगिच्छिता संभ्रमस तयसा अप्यावं सावेमात्रेविहरइ त भय यत्तु तद्वाक्यात् अरइसावं जगवतात् नामनोपस्सविस्वक्याए किमगपुत्त ववव  
 क्षमसुक्षयायसिद्धु यइयेउगगाठगपुत्ता ॥ इत्यादियाथ्यो याय द्रगवत नमस्यति पपुपावतेवेति एवं रात्रनिगमो त पुरनिगमस्य तत्पुपुपासना  
 लोपपतिकवदुवाच्या ॥ पम्सोक्छिठसि ॥ पम्सोक्छेइ जगवतो याच्या साधेय-तएव समये जगव मद्दावीरे येडियस्व रणो चिह्नबापमुद्वाव्यदेवीण ती  
 मय मद्दइमज्ञापियाय परिसाए सध्वनासाब्जुयामिबीय सरस्वइए पम्स परिकच्छेइ तत्रइया अत्यसोए अत्यिमसोए। एय। जीयाधजीया यचमोक्छे ॥ इ  
 त्यादि तथा ॥ ज्ञानरगागम्मंती ज्ञेयेरयाभायवेयवावरएसारीरमात्रसाद्दुक्साइतिरिक्खजोबीय ॥ इत्यादि ॥ पञ्जियायपरिसिद्धि ॥ लोके स्वस्थान  
 गतः प्रतिगमय तस्या एव याच्यः ॥ तएवसामइमज्ञापिया ॥ मद्दत्र परिसा ॥ मइति ॥ मइती अलपप्रत्ययस्य स्वार्थिकत्वा दत्तिस्ययातिशयगुर्वी  
 मइत्यपत् प्रज्ञसताप्रधानपपत् । मद्दायामावा सतपूजाना मद्दायांवा परियत् मद्दायंपपदिति समस्तस्य जगयत्तंमद्दावीरस्व अतिए पम्स सो

परिसाणिगगाया

याइ उपनिषत्तिम कइसा ॥ परिसाक्षिण्यया ॥ पपदा वाएइ येठो चार देवनी चारदेवीनी चतुर्विधसव ॥ धर्माकहिषा ॥ भगवतेधमकच्छो ॥ तत्रइया अतिए

अक्षिताया परिपूर्यत्वा त्पीर्षमासी बन्धुमवहलवत् मध्यात्राच परेपा मपीकाब्धारित्वाम् ॥ सिद्धिगइनामधयति ॥ विष्यन्ति निश्चितायां त्रयन्ति यस्या  
 सा सिद्धिः साक्षात्ती गम्यमानत्वा द्वितीय सिद्धिगति सादेव नामधेय म्महासनाम यस्य तत्रया ॥ ठाकृति ॥ तिष्ठति अमवस्यामनिव्यत्पनकमाज्रायेन  
 सदावस्थितो जवति यत्र तत्स्थान षीबकर्मको जीवस्य स्वरूप लोकायवा जीवस्वरूपविशेषकान्ति लोकायस्य आधयधर्माणा साधारे ऽप्यारोपा  
 इयस्यानि तदेवभूत स्थान ॥ सप्राविउक्तामति ॥ यातुमना नतु तत्प्रामसत्प्यसस्याकारत्वेन विवक्षितायाना प्ररूपआसम्भवात् प्रामुक्तामइतिव  
 यदुच्यते तदुपचारा दन्यथाहि तिरमिस्तापाएव प्रगवन्तः केयसिनो जवन्ति-मोक्षनेत्रसवत्र निरुपहोमुनिसहस्रम इतिवचनान्दिति ॥ जावसमासर  
 इति ॥ ताव जगवदुबको वाच्यो याव तसमवसरव सनवसरएषवकइति सव जगवदुर्दएव ॥ नुयमोपगजिगनेतकृञ्जयपइठजनमरगणनिद्वनिकुठय  
 निबिधयुचिपपपाहिवावतनुव्विरए ॥ नुजमोवको रवविशायो, नृङ्कः षीटविशेषेय आङ्गारविशेषोवा नैल नीलीविकारः कज्जल मयो, प्रहृष्टव्रमरगण  
 प्रतीत एतएव क्रिपः कृपञ्चयो निकुठयः समूहो येयान्ते तथा तेव ते निश्चिताय निविक्षा कुञ्चित्तय कुञ्जलीभूता प्रदक्षिणायतोय मुट्टिद्विजिरो  
 ज्ञापस्य सतपा एव क्षिरोत्रवर्षाकिः ॥ रतुप्यवपतमठयमुङ्गमालकोमलतले ॥ इति पादतलवर्षाकान्तः शरीरवर्षको जगवतो वाच्यः, पादतलवि  
 क्षेपकस्य वायमयः रव सोर्हित मुत्पसपत्रव त्कमलसलवत् सुदुकमसल्यं, सुकुमालामा मध्ये कोमल, तस पादतल यस्य स तथा तथा ॥ अठ  
 सइस्वरपुरिसलकवपरं आगासगएककैरं आगासगएककतव आगासगपाहि वामराहि आयासकलिहामएवं सपायपीठेवं सीहासयेव ॥ आ  
 कायस्सटिक मतिस्वच्छ स्सटिकविशेष कामयेन उपलभ्यतइतिगम्यं ॥ पत्मसएकपुरठकठिञ्जमायेवं ॥ देवैरितिगम्यते ॥ चतदुसहि समकषाइस्की  
 हि बानीसाए षस्त्रिपोसाइस्कीहि सदिषपरिवुले ॥ साइस्कीशय सइरूपयोयः साद् सइ तेपा विद्यमानतयापि सादृमितिस्या दत उच्यते सपरि

मप्युगरायाक्षिय सिद्धगइनामधेय ठाणसपाविउकामे जाव समोसरण

॥ ठाणसपाविउकामे ॥ साबायकाम वेकीयनाकमकवयवा ते जीवनाकाम तिकाजायानेऽब्धावत ॥ आषधमोचरएव ॥ आः, म्ममायएचमा नर्भक विजय ॥

यतः परिकरितइति ॥ पुष्यपुष्यविषयमात्रे ॥ मयदानुपूर्व्यादिना ॥ गामोपगामद्वैतमात्रे ॥ ग्राम्यप्रतीतो मनुष्यास्य तदनन्तरग्रामो ग्रामानुष्यास्य  
 तत्रैव गच्छत् ॥ सुहृ सुहृदं विहरमात्रे जेवेव रायगिरे खपरे जेवेव गुणसिद्धये वेदए तत्रेव उवागच्छइ उवागच्छिता अहापक्रिय उवागच्छे उगि  
 यइ उगिबिहता सुममेव तत्रसा अप्याण प्रावेमात्र विहरइति ॥ सुमवसरखलवकफेच, सुमस्य प्रगतं अत्रेवासी इहवे सुमसा प्रगततो अप्येगइया  
 उगपयइयाइत्यादि ॥ साध्यावियकतो वाच्य, साया अस्तुरनुमाराः प्रायजनयनपतपो व्यतरा ज्योतिषा वैमानिका देवाय, मगवत समीप मागच्छन्ता  
 वलयितव्याः ॥ परिसाङ्गिगयति ॥ रात्रयुद्धा द्राक्षादिलीतो जगयतो यन्दनाय निगत स्तब्धिगमयेव ॥ तएष रायगिरे खपरे विंचाळगतिगवउकष  
 धरवउम्मुहमहापइपइसु यजुजको अक्षमकस्त एवमाइक्का एवसलु देवाबुधिया समवे प्रगव महावीर इह गुणसिद्धये वेदए अहापक्रिय उगइ  
 उगिविहता सुममेव तत्रसा अप्याण प्रावेमात्रेविहरइ त मय सलु तत्राकुर्यायं अरइताक प्रगतताय नामगोपस्यविषयउयाए किमगपुत्र वदव  
 यमसुलपायतिरुहु यइयेउगगाउगपुता ॥ इत्यादिर्याच्यो याव प्रगतत नमस्यति पयुपासतेवेति एव राजभिगमो त पुरभिगमय तत्पयुपासना  
 नोपपातिकथद्व्याया ॥ धम्मोक्कइठिठि ॥ धम्मकपेइ प्रगतता वाच्या साधेव-तएष समवे प्रगत महावीरे सेवियस्व रको विह्वशापमुहाणयदेवीण ती  
 मय महइमइनिनाए परिसाए सुजनसायुगामिणीए धरस्सइए धम्म परिकरइइ तजहा अत्तिलीए अत्थिअलीए। एव। जीवायजीवा धयेमोक्खे ॥ इ  
 त्यादि तया ॥ अहानरगागम्मती अहेरयात्रायधेयणाअरएसारिरमात्रसाइतुरिक्खओणीए ॥ इत्यादि ॥ पळिगयापरिसति ॥ लोकाः स्वस्थान  
 गतः प्रतिगमय तस्या एव वाच्य ॥ तएषसामइमइसिया ॥ महइ परिसा ॥ महइति ॥ महती आलयप्रत्यस्य स्वार्थिकत्वा वृत्तिप्रयातिग्रयगुह्वी  
 महत्पयत् प्रकालताप्रधानपयत् । महासानावा सतपूजाना महासोवा परिपत् महासोपपदिति सुमकस्त प्रगतउमहावीरस्व अतिए धम्म सो

परिसाणिगया

याइ उपायेव तिम कइया ॥ परिसाविष्वा ॥ पयदा बारइ वेठो थार देवनी चारदेवीनी षतुविषयव ॥ धम्मोक्कइठिठि ॥ मगवतधम्मकओ ॥ तजहा अति



प्रतियोग्या परिपूज्यत्वात्पीठमासीत्पुत्रमपहलवत् भव्यावाप्य परेपा मपीठात्कारिस्वात् ॥ सिद्धिगृहनामधेयति ॥ सिध्यन्ति निधितार्थां प्रवन्ति यस्या  
 सा सिद्धिः साचासी गम्यमानत्वा द्रुतिद्य सिद्धिगति स्तदेव नामयेय म्प्रज्ञास्तनाम यस्य तत्रया ॥ टाद्यति ॥ तिष्ठति अथवस्याभनिश्चयनकर्मान्नावेन  
 सदावस्थितो प्रवति यत्र तत्स्थानम षीयर्कर्म कीर्तयत्य स्वरूप लोकायथा जीवत्यरूपविज्ञेयवानितु लोकायस्य व्यापयचार्मांका साचारे ऽप्यारोपा  
 इयस्यानि तन्वेवभूत स्थान ॥ सपाविउकामति ॥ पातुमगा ननु तत्प्रासक्त्यासस्याकारवत्त्वेन विवक्षितायाना प्ररूपव्यासमवात् प्रासुकामइतिच  
 यदुच्यत तनुपचारा दन्यथाहि निरभिलापाएव जगत्काः कवसिक्तो प्रवन्ति-मोक्षत्रयेसुसद्य निरपुहोमुनिसत्तम इतिवचनदिति ॥ जावसमासर  
 उति ॥ ताव द्रगवद्रुडका वाच्यो याव त्समवसरस्य समवसरस्यवचइति सूत्र जगवद्रुडकएव ॥ नुयमोयगजिगनेसकज्ञतपइसनमरगवनिद्रुनिकुदय  
 निश्चिपुंक्षियपयाहिवावतमुद्रुविरए ॥ नुत्रमोषको रभविशयो, नुद्रु षीटविज्ञेय भङ्गारविज्ञेयोवा नैस मीलोविकारः, कज्जल मयी, प्रवृष्टज्वमरगव  
 प्रतीत एतएव किमथः रूपव्यायो निजुडवः समुहो येपान्ते तथा तेच ते निश्चिताय निविळा कुञ्चिताय कुञ्चलीनूताः प्रदक्षिणावर्ताय मुद्रु द्विरो  
 ज्ञायस्य सतथा एव त्रिरोत्रवर्षकादिः ॥ रजुप्यतपमउपमुकुमासकोमसतले ॥ इति पादतलत्रयकास्त शरीरवसको जगवतो वाच्यः, पावतसयि  
 शपवस्य चायमयाः, रक्त लोहित मुपसपत्रव त्कमलवलवत् सुकुमलसम्भ, सुकुमलात्मा मध्ये कोमल, तलं पादतल यस्य स तथा तथा ॥ अठ  
 सइस्यरपुरिससस्त्रवपरे आगासगएवकैचं आगासगएवकैचं आगासगयाहि चामराहि आगासकसिंहामस्यं सपायपीठेय सीशसयेय ॥ आ  
 काग्रस्तटिक मतिस्त्रय स्मटिकविज्ञेय स्नानयेन सपतपयतइतिगम्य ॥ पम्सस्यरपुरठेकडिज्जमावेयं ॥ देवैरितिगम्यते ॥ चतइसहिं समकसाइस्वी  
 हि कर्तीसाय अज्जियासाइस्वीहि सदिसपरिवुळे ॥ साइस्वीगद्दः सइस्यपांयाः साइ सइ तेपा विद्यमानतयापि साइमितिस्था दत उच्यते सपरि

मप्युणरायश्रिय सिद्धगृहनामधेय टाणसपाविउकामे जाव समीसरण

॥ टाणस विउकाम ॥ आकापलान जेकोननाकमभवमया ते जीवनाकान तिहाजापानेऽप्यावत ॥ जावसमीसरण ॥ वास्तुमासरणमा वर्षेक ज्विम उ

स्पष्टनिष्पन्नानु रूपांतरमिति यन्वेत्याहु-विस्तारोत्सृष्टयो समत्वात् समचतुरस्रसंस्थान तत्र संस्थितो व्य  
 यस्थितो यः सतथा अयञ्च हीनसंज्ञनोऽपि स्यादित्यतमाह ॥ यञ्जरिसङ्खारायसपयश्चि ॥ इह सहननं अस्थिसम्बन्धविश्लेष यज्जादीना सङ्ख  
 मिद-रिसुनीपद्मोद्भवो यञ्जपुञ्जितपर्यवियान्नादि । उन्नतमङ्गुल्यो चारायतवियाकाङ्क्षिति ॥ १ ॥ तत्र यद्यञ्च तत्कीलिका कीलितकाष्ठस्युटोपम  
 मामध्ययुक्तत्वात् आयजय लोहादिमययहुकाष्ठस्युटोपमसामर्थात्त्वित्वा दृज्यर्पणः सबासी गाराचञ्च उन्नयतो मकटवन्धनियदुकाष्ठस्युटोपम  
 सामर्थापितत्वात् यज्जर्पणनाराच तत्सङ्गमन मस्थिसुवयविश्लेषो नुत्तमसामध्ययोगा द्यस्यासी यज्जपन्नाराचसङ्गमनः । अन्त्येत्तुकी लिकादिमत्य मस्या  
 मेव यज्यन्ति अयञ्च निन्द्यवर्षोऽपि स्यादित्यतमाह ॥ अय्यपुल्यमिधसपम्हगोरे ॥ कनकस्य सुवञ्चस्य ॥ पुसगति ॥ यः पुलको सव स्यास योनि  
 कपः कपपहोरगासङ्खः तथा ॥ पम्हति ॥ पटपम्हादि केसरानि तद्द्वीरो यः सतथा, दृष्टव्यास्यातु-कनकस्य न लोहावे यः पुलकः सारो य  
 कातिशय सारप्रधानो यो निकयो रेखा तस्य यत्पत्न यद्दत्तत्वं तद्द्वीरो यः सतथा अयया कनकस्य यः पुलकी कृतत्व्येसति विग्यु स्यास्य निकपो य  
 क्तः मदृशो यः सतथा ॥ पम्हति ॥ पट तस्य चेह प्रसावा स्केसरानि यद्दत्ते ततः पटवद्द्वीरो यः सतथा ततः पदद्वयस्य कमचारया, अय  
 च्च यिनिष्टपरचरचित्तपि स्यादित्यतमाह ॥ उग्र मप्रपूय तपां ऽनज्ञनादि यस्यसउग्रतपा, यदन्वेन प्राकृतपुसां भयकपते चिन्तयितु

### यञ्जरिसहनारायसद्यर्थेण कणगपुठगणिघसपम्हगोर उगगतवे

एव सन्धाने मस्थिते ॥ यञ्जरिसङ्खारायसद्यर्थे ॥ इहाङ्गनामचारविशेष तसद्यर्थे च यञ्जकाय को/कना अयभकङ्कोये पाटा नाराचकङ्कोये विहंपासे  
 मकटवञ्च एहवा यञ्जकपभनाराचनी धरचकार ॥ कणगपुठमविधमपम्हमारे ॥ सुञ्च कसोटो जिम वञ्चोङ्कोव पञ्च कमनगोपरे गौरयश्च जेहनां शरी  
 रना ॥ उन्नतवे ॥ अन्तरे विहङ्गी आयग्युदये चीतव्या नजाय तपञ्जेहनी एहवा सतप अन्तग्रनादि ॥ वित्ततवे ॥ दीप्त काञ्च यमाम कमरूपीया वनदृङ्गवा भणो  
 यम्बिसरीया जेहनां तप ॥ तत्ततवे ॥ जेहेतपेकरी कम तपावोदिते तत्ततप कथाथे ॥ महातवे ॥ आगसादिशपरिगत तेमाटातप ॥ उरासे ॥ प्रधानतये

धानिसन्महच्छासमर्थं ३ तिस्रुतो आयाद्विषययाद्विषय पदरेह २ वदइममसह २ एवंवयासी सुयस्साएवं प्रते । निगायेपावये कथियु आखेकेह  
 समवेवा माइवेवा परिसचममाइक्खित्तए एववइता आमेवदिसिं पाठभूया तामेवदिसिं पङ्गियति ॥ तेवमित्यादि ॥ तेनकालेन तेनसमयेन अम  
 बस्य प्रभवतो महावीरस्य ॥ जेठेति ॥ प्रथमः ॥ अतवासिसि ॥ अियः अमन पवहुयेन तस्य सबससङ्गनायकत्वमाह ॥ इंद्रपूयति ॥ इन्द्रपूयतिरि  
 ति मावुपिठुत नामयेय ॥ नामति ॥ विप्रक्तिपरिणोमात् मायेत्यर्थः अमेवासी क्खि विवसुया आवकोऽपि स्यादित्यतआह ॥ अरुगारेति ॥ अ  
 नासागारं विद्यत इत्यनगरः, अयन्वा १ वगीतगोत्रोऽपि स्यादित्यतआह ॥ गीतमसगोत्रइत्यर्थः, अयन्वा तत्कालोचितदेइमा  
 नायेचयान्पुनाषिकवेधोपि स्यादित्यतआह ॥ सतुस्सेहेति ॥ सतइसोऽप्युयः अयन्वा सतइहीनोपि स्यादित्यतआह ॥ समचउरससठाकसठिण्यति ॥  
 समं नात्रे रुपरि अचय सक्खपुठपसचकोपेतावयवतपातुस्य तच्च तच्चतुरखन्व प्रथान समचतुरस्र अथवा समा अरीरससखोक्कप्रमावायिसवा  
 दिस्य द्यतखोमयो यस्य तत्समचतुरस्रं अग्रयस्त्विह चतुद्वि ग्रागोपसठिताः अरीराययवाइति, अन्येत्वाहुः—समा अन्युनायिका द्यतखो प्यमयो  
 पच्च तत्समचतुरस्रं अग्रयय पर्येकासोनोपविष्टस्य आहुनो रत्तर आसनस्य सलाटोपरिभागस्य चान्तर दक्षिणस्त्वस्य वामवानुम आन्तर वामस्कन्ध

धम्मोकिहिटं परिखापठिगया । तेणकालेणं तेणसमएण समणस्सजगवन्नमहावीरस्स  
 जेठेस्यतेवासी इवभूतीणाम ध्यणगारे गीयमगोत्तेण सत्तुरसेहे समचउरससठाणसठिए

वीय एवंकोवा अन्तोवा अथमोखे इत्यादि ॥ परिखापठिमया ॥ पपदासवधोसाच्च अयदेवदेवो पीतानां खानजनेविये गया ॥ तेवकासेष ॥ तेवकासेविये  
 ॥ तेषंसमर्थं ॥ तेसमभनेविये ॥ समचकमगवधो महावीरस्य ॥ अमचतपस्यो ऐश्वर्यीदिमुचयुत्त महावीरसामोनी ॥ जेठेधतेवासी ॥ वडो समीपने वियेरेह  
 चारो प्रथमसिष्य ॥ इंद्रमूतीणाम ॥ इन्द्रमूति एहं मातापितानं दीधोनामहेजेइनी घररहित एतावतासाधु ॥ गीयमगोत्तेणं अरुगारे ॥ गीतमनामा गोचनी  
 अरुचचार ॥ सत्तुरसेहे ॥ सातवाचवधो मरीरहे जेइनी ॥ समचउरससठाकसठिए ॥ समचउरससठिण्यत्त सम टण्य चारि अंसखे जेइनी एहचे अमचउ

तत्या दम्नी चतुर्दशापूर्वां क्षमेन तस्य मृतकैर्बलितामाह सुपावपिञ्जानादिविकल्तोपि स्यावतभाह ॥ अथनाथोवगयति ॥ अथसत्रानयञ्जानचतुष्पु  
 ममथ्यतइत्ययः उक्तविज्ञापकद्वयपुस्तोर्गपि कथि अ समप्रयुतयियव्यापिञ्जानो प्रयति चतुर्दशपूर्वधियां पदस्यानकपतितत्वेन अथकावित्यसथा  
 इ ॥ अक्षररसत्रियावृत्ति ॥ सर्वेषु ते अक्षरसन्धिपाताय तत्संयोगाः सर्वेषां धातराणां सन्धिपाताः सर्वोक्षरसन्धिपाताः सौयस्य श्रेयतया सन्ति स च  
 याक्षरसन्धिपाती, अद्याधिया अयचतुर्दशरीचि धातराणि सायस्येन नितरां वदितुं श्रीलसस्येति अद्याक्षरसन्धिपाती सच यवजुसन्धिपातेो जगद्यान् वि  
 अयरागिरिय साक्षावितिरुत्था स्त्रियाधारत्याच समकस्रजगठमहायीरस्य । अक्षरसामसे विहरतीति योग सात्र दूरं च यिप्रकृतं सामन्तः सच्चि  
 कृतं ताप्येषावदूरसामन्तं तत्र नातिदूरे नातिनिकट इत्यर्थं, किञ्चिपः ससाथ विहरतीत्यत्राह ५ अक्षरं आनुमी यस्या सावृद्धंजानु शु  
 तुपचिष्यासनयजना दीपप्रद्विकनिपद्याया अन्नाद्या शोक्तुदुष्कासहत्पयः ५ अक्षरीचिरेति ५ अक्षरीचिरेति ५ अक्षरीचिरेति किन्तु नित्यतनु  
 प्रागनियमितदृष्टिरितिनायः ५ अक्षरकोषोवमयति ५ ध्यानं धर्मं श्रुत्वा तदेव कोष्ठः कुसुलो ध्यानकोष्ठस्त मुपगत सात्र प्रयिष्टो ध्यानकोष्ठोपगतो  
 यथाहि-कोष्ठक धान्य प्रक्षिप्त मविमसतं तय त्वेवं सन्नमवान् ध्यानतो रधिकप्रकीर्णप्रियाक्तः करणवृत्तिरिति ॥ संयरेच ॥ तयवृत्ति ॥ अथअभा

चउणाणोयगणु ससृकरसखिधाती समणस्सजगत्रनुमहावीरस्स  
 अक्षरसामते उहुजाणु अक्षरीचिरे ज्जाणकोठोवगणु सजमेणतवसा

यमर ॥ अथसत्रानयञ्जान चारशाननाधरचकार ॥ मन्वस्ररमणिशार् ॥ मन्वस्ररनां सुयाम तेदनां आचले । यथा, यथयमस्रकारी यथरनी सगावे  
 करीने चरशाननागोनच अहना समचले । समयस्रमभगवधामहावीरस्रु । यमन भगवत योमहावीरस्वामीने । अक्षरसामते । अक्षरीचिरेणोनी अति  
 उहुजाणो । उहुजाणु । अथा जानुषे अहना एतमे अक्षरसामनेउले । अक्षरीचिरे । अथाहि अक्षरीचिरे । अथाचकोशावगण । धमय्याग यज्जया  
 न रूपो काठा तेइनेविषे उपगत पैठा अिम कोठाभाकिषाम्भो धाम चरशोपरदी वीचरेनेही तिम ध्यानसाक्षिरहतां इन्द्रियमननापिक्कार पमरेनेही ।

मपि तद्विषयेन तपसा युक्त इत्यर्थः ॥ विज्ञतवेषि ॥ दीप्त जातवस्त्वमानदहन इव कर्मवमगहनदहनमवमपतया श्वलित तपो घर्मभ्यानादि यस्य सुत  
 या ॥ तप्ततवेति ॥ तप्त तपो यनासी तप्ततया एवञ्चि तन तप्तपक्षस येन कर्मोचि सत्ताप्यन्ते न तपसा स्वात्मापि तपो रूप सत्तापितो  
 यतो ऽप्यस्यास्पृश्यमिव जातमिति ॥ महातवेति ॥ आश्रसा दीपरहितत्वात् प्रशस्ततयाः ॥ उरासेति ॥ श्रीम उयादिविधिपक्षविशिष्टतप करसा  
 त्याद्यस्थाना मस्यसत्त्वानां जयानक इत्यप्य अयत्वात् ॥ उरासेति ॥ उदारः प्रधानः ॥ घोरति ॥ घोरो निर्पृथः परीपदेन्त्रियाविरियुगबवित्ताय  
 माभित्य निद्रुप इत्यर्थः ॥ यन्ते स्वात्मनिरेषे घोरमायुः ॥ घोरगुबति ॥ घोरा अन्तर्दुरमुबरा गुया मूलगुणादयो यस्य सतया ॥ घोरतवस्त्विति ॥  
 घोरे सपोनि क्षपस्वीत्यर्थ ॥ घोरबंजनेरवाधिति ॥ घोर दासक मस्यकत्वे दुरगुभरत्वा द्यद्वरुभय तत्र वस्तुं शील यस्य सतया ॥ उच्छूठसरीरेति ॥  
 उच्छूठं उच्छिन्न मिबोच्छिन्न शरीरं यन तत्स्वस्कारस्यागा रसतया ॥ उच्छिन्ना शरीरान्तलीनत्वेन प्रस्वतागता वि  
 पुसा विसीर्षां अनेक्योजनप्रमाद्येनाभितवस्तुदहनसमर्थत्वा तत्रोलेशया विशिष्टतपोअन्यसम्भिविवापप्रजवा तेजोश्याला यस्य सतया मूमदो  
 काकृतात् ॥ उच्छूठसरीरसञ्चितविपुसनेपलेसेति ॥ कर्मणारय कत्वा व्यास्यातमिति ॥ उच्छूठसपूर्वाचि विद्यन्ते यस्य तेनेव तेषा रधि

## विस्रतये तप्ततये महातये उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्वी घो रथजधेरवासी उच्छूठसरीरे सखित्तवितलतेउलेस्से घउदसपुष्ठी

वासत्वादि अन्वजीवने मयउपले ॥ घोरे ॥ निर्देष परीषद इन्द्रियादिरियुविनायनामर्षो निवृष ते वोरकधीडे ॥ घोरगुणे ॥ अनेरेसीव घाटरी मसके ए  
 ववा घाघारना मूमगुणदे वेडना ॥ घोरतवस्वी ॥ भारतपैकरी तपस्वीडे ॥ धोरकमचेरवासी ॥ घोरदानपथनेरे पक्षसल बोवे घाघरता डंश्चिओ एडवा  
 वप्रचनेविवे बसशाना यीस ॥ उच्छूठसरीरे ॥ शरीरनेो योमारहित द्योबोछे देडनो उयूया खिणे ॥ सखित्तवितलतेयसेषे ॥ शरीरमादिसकोबोछे अने  
 कथावनपमाथ चेशानितकमुदहनममव ते शान्तियाजिचे एभिमिततपबो उपले ॥ उच्छूठसपुष्ठी ॥ उच्छूठसपुष्ठी ॥ उच्छूठसपुष्ठी ॥ उच्छूठसपुष्ठी ॥

उच्यते यत उपपन्नमदुर्इति हेतुत्वप्रवर्त्सनं चोचितमेव वाक्यासङ्कारथा तस्य यदापु - प्रवृत्तदीपामप्रवृत्तप्रारुकरा अकाशचन्द्राम्बुवुधेविजावरीम् ।  
 इह यद्यपि प्रवृत्तदीपत्वादेवा प्रवृत्तजास्वरत्व मवयत तथापि अमप्रवृत्तजास्वरत्व प्रवृत्तदीपत्वादे हेतुतयो पन्यस्तमिति ॥ उपपन्नसंसर्ग उपपन्नकोउह  
 नेतिप्राग्वत् तथा सजायसङ्घइत्यादि पदपदक प्राग्वत् नयर निश्च समुदाहः प्रकपर्णविवचनी यथा-सञ्जातकामोपसञ्चिद्विभूत्यां मानात्प्रजाभिः  
 प्रतिमानमाह । ऐन्द्रैर्ग्रहप्रकर्षेण जातेष्वाः कासंवेर्यइति अन्येतु-आयसङ्घेइत्यादिविशेषकृदादसक मव व्याख्याति जातासङ्घायास्य प्रदु स जातस्य  
 दुः किमिति जातमदुइत्यतमाह यस्माज्जातसंसर्ग इद वस्त्वर्थस्या देववेति अथ जातसंसर्गोऽपि कथमित्यतमाह यस्मा ज्जातकुलूल कथना  
 मा ह्याय मवन्नोरस्ये इत्यभिप्रायवानिति, यत्तच्च विशेषकृदाय मवयइापक्षया वृष्टव्यमेव, मुत्पन्नसञ्जातसमुत्पन्नशुक्लत्वादय ईहापायचारकाजदेम  
 याच्चाः, अन्येत्वाहुः-जातमदुत्वाद्यप्ययो त्यक्तमदुत्वादायः समामार्चा विद्यद्वितायंस्य प्रकथप्रवृत्तिप्रतिपादनाय सुतिमुखेन ग्रन्थकृतोक्ता, नचैव  
 पुनरुक्तदीपाय यदाह-यत्काइप्रयादिनि राक्षितमनाःसुवसथानिन्दन् । यत्पदमसङ्घृते तत्पुनरुक्तनदीपायेति, ॥ १ ॥ उच्यतेउठेति ॥ उ  
 त्थाम मुत्वा उदं वतनं तथा उत्थया उतिष्ठति उदूं मयति, उठेइइत्युक्ते क्रियारम्भमाश्रमपि प्रतीयते, यथा वक्तु मुतिष्ठतइति, तत साद्वयच्छे  
 दायो क्त मृत्यायेति, ॥ उच्यतेउठेइति ॥ उपागच्छती त्युत्तरक्रियापेक्षया उत्थानक्रियाया पूर्वकासतान्निषामाय उत्थायोत्यायेति, काप्रत्ययेन नि

उपपन्नसंसर्ग उपपन्नकोउहसं सजायसंसर्ग सजायकोउहसं उठाएउठेति उठाएउठेता

विशेष जेइने ॥ उपपन्नकाउहसे ॥ उपपन्नाखेकोतूहसविषयजेइने ॥ सजायसंसर्ग ॥ सजातकक्षिये विशेषयो प्रवर्त्नी यदा बाह्या जेइने ॥ सजायसंसर्ग ॥ सजात  
 विशेषी प्रवर्त्तीहे संदेइजेइने ॥ सजावकाउहसे ॥ विशेषयो प्रवर्त्तीहे कोतूहसजेइने ॥ समुपसंसर्गे ॥ विशेषी उपनीखे यथा जेइने ॥ समुपसंसर्ग ॥  
 विशेषी उपपन्नाखे सजायजेइने ॥ समुपसंसर्गकोउहसे ॥ विशेषी उपपन्ना कोतूहस जेइने तिबेकारसे ॥ उठाएउठेति ॥ सामकवको उठे जठोने अभा  
 धया ॥ उठेउठेता ॥ जठोने अभावांने ॥ जेविसमसेभगवमभावेरे ॥ जिई यमचमवत योमहाधोरसामीखे ॥ तेषेवतयानच्छेउठवागच्छइता ॥ ति

दिना षष्ठः समुद्रपार्थी सुप्तो ऽत्रद्रष्टव्यः सुयमतपोग्रहं चानयो प्रधानमोक्षाङ्गत्वस्यापनार्थं प्रधानत्वञ्च समयस्य नवकर्मोमुपादानहेतुत्वेन त  
 पस्य पुरावकल्पतिज्ज्वरइत्येव प्रवृत्तिवाञ्छितवकर्मार्तनुपादानात् पुरावकर्मव्यपबाध सुखसकर्मव्यपलक्षकामोक्षइति ॥ अप्यावजायेमावेविहरइति  
 ध्यात्मान वासयं सिद्धतीत्यर्थः ॥ ततश्चवेति ॥ ततो ध्यानकोट्योपगतविहरजनानरं कमितिवाक्यालङ्कारार्थः ॥ प्रसूतपरामर्शाप सस्यतु सा  
 मान्योक्तस्य विद्योपायपरस्वार्थमाह ॥ प्रगवगोपमति ॥ किमित्याह ॥ जायसद्इत्यादि ॥ आतमद्वादिविद्यापथः सन्नुत्तिष्ठतीतिपयोग सत्र जाता प्रवृत्ता  
 यद्वा इच्छा वश्यमाचार्यत्वज्ञानम्रति यस्यासौबातमद्ः तथा आतः सद्वाया यस्य स आतसद्वाय सद्वायस्त्वमयधारितापज्ञान सुखेवं तस्य प्रगवती  
 आतो जगत्ताडि महावीरेव जनमावेचनियइत्यादौ सूत्रे चत्तकर्म यत्तितोनिर्मिष्ट सत्रत्र यएव चलन् सएवचसितइत्युक्त स्ततद्येकाधविपया वे  
 तो निर्देगी चसन्निधि वर्तमानकालविषयः चलितइतिवा ततिकासविषयः अतोऽत्र सद्वायः कथञ्चाम यएवाधोवाचनमामः सएया तीतो जयतीति? यि  
 रुदत्वा वनयाः कासयोरिति तथा ॥ आयकावइति ॥ आत कुतूहलं यस्य सजातकुतूहलो जातोत्सुक्यइत्यर्थः कथ मेतान् पदार्थान् जगवा  
 न् प्रयापयिष्यतीति तथा ॥ उष्यन्वसुच्छति ॥ उष्यन्वा मागजूतासती वृता म्वायस्य सुउत्पन्नमद्ः, अय जातमद् इत्यतावदेवाकु किमर्थं मुत्पन्न  
 मद् इत्यभिधीयते प्रवृत्तग्रहत्वेनै वोत्पन्नमद्त्वस्य सम्भवा कस्मिन्सुखा मद्वा प्रवर्ततइति? अत्रोच्यते हेतुत्वप्रवृत्तनाथं तथाहि—कथ प्रवृत्तमद्

**अप्यापनायेमाणे विहरइ तपुण सेजगवगोयमे जायसहे जायससये 'संजायकोउहसै उष्यसहे**

॥ सवमेव ॥ संबंकेरी तथाकमठपाजैवइ ॥ तवथा ॥ तयेकरी पुपतनकम निजरे एइवा अगोतमसामो ॥ अप्यावभावेमावेविहरइ ॥ ध्यात्मानिभावताय  
 का विपरे ॥ तएवसेमगभेमायम ॥ तिबारे ते भयवत सीतम ॥ आबसहे ॥ प्रवर्तीदि यथा तत्वकायवानी वाका जेइने ॥ जायससए ॥ प्रवर्तीदि सुसय  
 त्रीमकाबोरदेवे ॥ जनमावेचसिए इहां यत्तमानकाव यने यतोतकाम सरीकोकिमवाप्या पसमय ॥ सकावकाउइने ॥ प्रवर्तीदि उरमुक्तपथो जेइने ध्यामी  
 एषवचिचपपियवासये एइवाउतापथो ॥ उष्यन्वसुच्छ ॥ तव्यामत्रपतोसे यदाजेइने विचकारण अपनीविनायपरमेजरी ॥ उष्यन्वससए ॥ अपनीजे जवेव

उच्यते यत उपपन्नमनुहति हेतुत्वप्रदज्ञान श्लोचितमेव वाक्पालङ्कारत्वा तस्य यदाहुः—प्रवृत्तदीपानमप्रवृत्तज्ञास्तरा स्मकायषम्राशुदुषेविजावरीम् । इह मद्यपि प्रवृत्तदीपत्वादेवा प्रवृत्तज्ञास्कारत्व मयनत सयापि अमप्रवृत्तज्ञास्कारत्व प्रवृत्तदीपत्वादे हेतुतयो पल्पस्तमिति । उपपन्नसंसर्ग उपपन्नस्योत्पत्ति श्लेतिप्रगावत् तथा सजायसकृत्स्यादि पदपदक प्राग्वत्, नवर निश्च समृग्दः प्रकपर्यादिवचनो यथा—सञ्जातकामोवत्सिद्धिभूत्या माभात्प्रजात्रि प्रतिमाननाथ । येनैवैयं प्रकपर्येव ज्ञातेष्वः कासंवीर्येति अन्येसु—आयसकृत्स्यादिविधोपकृष्टवशक मेव व्याख्याति ज्ञातामनुवायस्य प्रदु स ज्ञातमनु वाः किमिति ज्ञातमनु इत्यतमाह यस्मान्ज्ञातसंसर्ग इद यस्त्येवस्या देववेति अथ ज्ञातसंज्ञयोऽपि कथमित्यतमाह यस्मा ज्ञातदुस्तूलः कथना सा स्याय मयनोरस्ये इत्यत्रिप्रायवानिति, यतश्च विशेषकत्रय मयपश्चात्पश्या ब्रह्मयमेव, मुत्पन्नसञ्जातसमुत्पन्नकथुत्वाद्य ईशापायधारणानेदेन याच्याः, अन्येत्याहुः—ज्ञातमनुत्वाद्यपेक्षयो त्वकमनुत्वाद्यः समानार्थो विधायिताथस्य प्रकप्रवृत्तिप्रतिपादनाय सुतिमुलेन ग्रन्थरतोक्ता, मर्षेव पुनरुक्तदोषाय यदाह—यथाइत्यत्रयपदित्रि राक्षितमना सुवक्ष्ययानिन्दन् । यत्पदमसङ्गते तत्पुनरुक्तमदोषायोपति, तत सादृश्यत्वे त्वान मुत्या ऊदै यत्तनं तथा उत्पया उत्तिष्ठति ऊर्ध्वो मयति, उठेइत्युक्ते क्रियारम्भमात्रमपि प्रतीयते, यथा वस्तु मुत्तिष्ठतइति, तत सादृश्यत्वे दायो त्त मुत्यापेति, ॥ उठाएउठेइति ॥ उपागच्छती त्युत्तरक्रियापेक्षया उत्पन्नक्रियायाः पूर्वकासतात्रिभागाय उत्पयोत्पापेति, कामत्ययेन नि

उपपन्नसंसर्ग उपपन्नकोउहसे सजायसहे सजायससए उठाएउठेति उठाएउठेत्ता

विशेष जेहन । उपपन्नकोउहसे । सजायसहे । सजायसहे । सजातकद्विये विशेषयो प्रवर्त्तो अहा बाह्य जेहन । सजायससए । सजात विशेषयो प्रवर्त्तो अहे संदेशजेहने । सजातकोउहसे । विशेषयो प्रवर्त्तो अहे कोतूइसजेहने । समुपससहे । विशेषयो प्रवर्त्तो अहे सजायसससए । विशेषयो प्रवर्त्तो अहे सजायसकोउहसे ॥ समुपससकोउहसे ॥ विशेषयो प्रवर्त्तो अहे सजायसकोउहसे ॥ विशेषयो प्रवर्त्तो अहे सजायसकोउहसे ॥ विशेषयो प्रवर्त्तो अहे सजायसकोउहसे ॥ उठाएउठेत्ता । उठाएउठेत्ता । जेवसमयेभगवतेश्चारी ॥ विश्वी यमसभगवत श्रीमहावीरजामीहे ॥ तेवेषववागच्छइउवागच्छइसा ॥ ति



दिना चन्द्रः मनुष्याणां सुतोऽभद्रष्टव्यः समयतपोयश्च ज्ञानयो प्रधानमोक्षाङ्गत्वस्यापनार्थे प्रधानत्वञ्च समयस्य भयकमानुपादानहेतुत्वेन त  
 पस्य पुराणकर्मनिर्धारणहेतुत्वेन प्रवृत्तिनिमित्तकमानुपादानात् पुराणकर्मस्यैवैवमोक्षाङ्गत्वमिति ॥ अप्याहजावेमावेयिश्चरइति  
 आत्मानं वासय सिद्धतीत्यर्थः ॥ ततश्चेति ॥ ततो ध्यानकोटोपगतविहरणानन्तरं अभितियाख्यालङ्काराद्यः ॥ सेइति ॥ प्रकृतपरामर्शाद्यं स्वस्यनु सा  
 मान्योक्तस्य विशेषावधारणार्थमाह ॥ प्रगवगोयमेति ॥ किमिस्याह ॥ आतमदुर्गादिविषयश्च सन्निवृत्तितियागं सन्नं ज्ञाता प्रयुसा  
 अद्वा इच्छा वश्यमाचार्यतत्त्वज्ञानभ्रति यस्यासीजातमद्दुः तथा ज्ञातं मुद्राया यस्य स आतसज्ञाय सग्रयस्वमयपरित्यागज्ञान सर्वैवं तस्य प्रगयतो  
 ज्ञातो प्रगवताश्चि न्नावीरेव चनमायेवसिइत्यादी सूत्रे चसक्यं यस्मिन्निद्विष्टं सन्नं यम्य चतन् सयुवचसितइत्युक्तं सन्नतयेकायविषया य  
 ती निर्दुशी चसन्निति वर्तमानाकासविषयः चसितइतिचा तीतकासविषयः अताऽत्र सन्नं यः क्यक्रमं यएवायोक्तमानं समुवा तीतो जयतीति? वि  
 सइत्वा इत्यो कासयोरिति तथा ॥ जायकोकइति ॥ ज्ञातं कुतूहलं यस्य सजातकुतूहलो ज्ञातीत्सुखइत्यर्थः कथं मेताम् पदार्थान् प्रगवा  
 म् प्रज्ञापयिष्यतीति तथा ॥ उष्यकसकृति ॥ उष्यत्वा प्रागनुतासती प्रुता अज्ञाप्यस्य सउत्पन्नमद्दुः, अथ ज्ञातमद्दु इत्यतायदेवासु किमर्थं मुत्पन्न  
 मद्दु इत्यत्रिधीयते प्रवृत्तमद्वलेनै वीत्यकमद्वत्त्वस्य साध्यात्वा अद्यमुत्पन्ना अद्या प्रवर्ततइति? अत्रोष्यते हेतुत्वप्रवृत्तमाथं तथाहि—अयं प्रवृत्तमद्दु

**अप्यापन्नविमाणे विहरइ ताण सेजगवगोयमे जायसहे जायसहे उप्यणसहे**

॥ सवमेव ॥ सवमेवैवमद्वलेनैव ॥ तबसा ॥ तपेवैवै पुपतनकम निर्धरे एववा योगीतमसामो ॥ अथार्थमावेमावेविहरइ ॥ धामानिमावताय  
 वा विधरे ॥ तएवसेमयवमायम ॥ तिबारे ते भगवत गीतम ॥ जायमद्दु ॥ प्रवर्त्तइ यथा तलजायवानी वाका जेइने ॥ जायससए ॥ प्रवर्त्तइ ससय  
 श्रीमहावीरदेवे ॥ अमावेचनिए ॥ इहा यत्तमानकास यने धतीतकाय सरोकीकिमभावा एमयय ॥ भजावकीरइइ ॥ प्रवर्त्तइ उरमकपयो जेइने ध्यानी  
 एपयचिचपनिएवामये एववाइताकनी ॥ उष्यकसकृ ॥ तल्लान्त्रयनोये चइइने त्रिचकारणं ज्ञाननिमित्तकपय ॥ अयमेवैव जेइने

दिदृशन्ना ह्यत्रान्निहताः ॥ पञ्चब्रह्मसंसाधेति ॥ पशुपासीन सेवमानो ज्ञेनप विज्ञोपलक्षकस्वकीम धयंयिचि उपदक्षित आश्च-किद्वयिगशापरि  
 य जिपयिभुतत्रिपञ्चनिकरि । नसिभुमायपुष उवतत्तदिसुखेयवृति ॥ १ ॥ एयययाचि ॥ एय यशयमाशप्रकार यस्तु श्रवादी दुक्तयान् ॥ से  
 इति ॥ तत् यदुक्त पून्ये यत्तत्तमित्यादि ॥ गूढति ॥ एय नर्पे तत्र तत्रा श्येवथ्यास्यातत्वात्, अथया' से इति श्रयो मागभवेष्टीप्रसिद्धो ऽथत्रा  
 द्वार्पे परंत अयश्रद्धा धान्यापन्यासाधः, परिमन्नार्याया ; यदाह-अथप्रक्रियाप्रदान्तपञ्चसोपन्यासप्रतिवचनसमुच्चयपु, ॥ नूनमिति निश्चित  
 प्रंतति ॥ गुरो रामान्तर्धं ततद्य हेमदन्त । कस्यान्कूप सुरस्यस्येतिवा प्रविकस्याखेसुखचेतिवचमा ह्यप्रकृतशेस्यावा भवस्य सुसारस्य प्रयस्यवा मी  
 त रन्तधतुत्या इयानो भयानोषा तस्यामन्तर्धं, हेमयान्त । हेमयान्त । ज्ञान् । या आनारिदीप्यमान ज्ञादीसावितिवचनात्, ध्याजमाना याा दी  
 प्यमान ध्याज्जुदीसावितिवचनात्, अथश्च आदित आरस्य प्रतेति पयग्नो ग्रन्थो प्रगवता सुपमस्वामिना पञ्चमाङ्गस्य प्रथमज्ञातस्य प्रथमोद्देशक  
 स्य मश्रथाय मन्निहितः अथा नेनसम्बन्धना यातस्य पञ्चमाङ्गप्रथमज्ञातप्रथमोद्देशकस्ये र्वमादिसूत्रम् ॥ चक्षमाखेवलिरुहत्यादि ॥ अथ केनामिमा  
 येच प्रगयता सुधर्मस्थामिमा पञ्चमाङ्गप्रथमश्रतप्रथमोद्देशकस्या धांशुकथनं कुर्यते यमथवाचक सूत्र मुपन्यस्य नाम्यामीति ? अत्रोच्यते इह धतुपुं  
 पुरुषार्थेषु मोक्षास्य-पुरुषार्थो मुख्यः सवातिज्ञापित्वात् तस्यच भोक्षरथसाध्यस्य साधनानां च सम्यग्दर्शनादीना साधनत्वेना व्यजिषारिणा मुज

पञ्चब्रह्मसंसाधेति सेवमाणे चतुर्माणे चलिणु 9

हे। गतन् कथाचरुप सुत्ररूप एहवा गहना चामन्त्र भवन काशवा, अथ परासको यासुधर्मसाधामोये "पञ्चमाखेवनिण" एहवागद्य सूत्रो पादि पा  
 प्यापनेरागद कारित्यास्वा इमपुष्ठा ? उत्तर, पुरुषाथ विदुर्मादि मुख्य मोच, तेहनी साधवा सार तेतो कमभेवसे लयले ते कर्मनाचयनामनुकर्मक  
 शिवाभवी एधर्मकाग्वा तेवहेछे ' चममाखेवनिण पञ्चमाखेकहिचे ज्ञानमपायको स्थितिको पञ्चवामाबा भागवा सगुखयया तेकमपखिएकहिचे  
 उदेपायात्र श्रयोधे।ते विम चसुतकाश्रवको भागवदकास पसस्यतासमयसगेछे तिहाज पहिछो पञ्चनसमय तेहनेविधे चसधामाबा तेषव्याकशोये वि

विंशतीति ॥ जेवेवेत्यादि ० इह प्राकृतप्रयोगा इव्ययस्वाहा ॥ येनेति ॥ यस्मिंश्वेव विंशतमे अक्षरे प्रगवान् महावीरो यत्तंते ॥ तेखेवति ॥ तस्मिंश्वेव  
 दिग्नाये उपगच्छति, तत्कालायेकया वर्तमानत्या वागसमक्षियाया यत्तंमानविजलत्यानिर्देशा इत, उपगतवानित्यर्थ, उपागस्यच यमण ३ कर्म  
 तापञ्च ० तिक्कुतोति ० श्रीन् वारान् शिःकल्पः ॥ आयाद्विषयपयाद्विबंकरेइति ॥ आद्विषया दृष्टिब्रह्मा दारभ्य प्रदक्षिणः परितो ब्राम्यतो इति  
 कण्य आदक्षिणप्रदक्षिणो इत संकरोतीति ॥ वदइति ० वन्दते वाचा स्तीति ॥ ममसइति ॥ ममस्यति कायेन प्रथमति ॥ मवाचयेति ॥ न नीच  
 प्रत्यासक्तो इतिनिक्तः अवयवपरिहारा कात्यासक्तेवा स्थाने वर्तमानइति गम्यम् ॥ नाद्वूरेति ० न नीवा तिवूरो इतिविमग्दो नीचित्यपरिहा  
 रात् नातिदूरेवा स्थाने ० सुस्तूसमाहेति ० घणववृषनानि श्रोतु निष्यन् ० अग्निमुहेति ॥ अग्नि प्रगवन्त सचीकृत्य मुउमस्ये त्यजिमुयः, तथा ॥  
 विषएइति ० विमयेन हेतुना ॥ पञ्जतिठेति ० प्रकृष्टः प्रथानो ससाटटपटितत्वेन अञ्जलि ईसन्वाचविष्टेय इतो विञ्चितो येन सो गन्याइतिता

जेणैवसमणेन्नगवमहावीरे तणेयउयागच्छइ उवागच्छिहा समणन्नगवमहावीरे  
 तिक्कुस्रोस्थायार्हाणपयाहिण करेइ करेइत्ता वदइ णमसइ यदिहा णमसिहा  
 णञ्जासक्खे णातिदूरे सुस्तूसमाणे णमसमाणे अग्निमुहे विणएण पजलिउठे

हांघावे विहांपावीने ॥ समचममममहावीर ॥ अमच भगवत श्रीमहावीर सामोपते ॥ तिक्कुतापायाद्विषयद्विषयकरेइत्ता ॥ तीनवार हादि  
 वे हावववी पारमो प्रदक्षिणा षड्वेर करे करीमे ॥ वंदइ ॥ सुतिकरे वचनेकरे ॥ नममइ ॥ कायायेकरो नमस्कारकरे ॥ वदीने ॥ वसंति  
 ता ॥ नमस्कारकरीने ॥ बचावचे ॥ अतिपासवर्तकानची ॥ नातिदूरे ॥ अतिदूर वेगसापचि नही ॥ सुस्तूसमाहे ॥ भगवत श्रीमहावीरसामीनां व  
 चनमाववा बाबता ॥ वमसमाचे ॥ नमस्कारकरता ॥ अग्निमुहे ॥ भगवतदिसे मुषकरे ॥ विषएयं ॥ विजयवो आयातनाटाकताबका ॥ पञ्जलि  
 इते ॥ हावववीमामाची ॥ पञ्जुवाचमाचे ॥ सेवाकरताबका एमिमेवपवेधामबकानो विधिक्को ॥ एरंनहाची ॥ इमकणवाइवा । सेपुभंति ॥ तेभिचे

येन प्रथममये नवसित सुप्तरेपु चलतीति ? अतः सर्वदेया पसनाप्रसङ्गः अस्ति चान्त्ये समये चलन स्थितिपरिमितत्वेन कर्माप्राधान्युपगमात्  
 चल यायासिक्काकालादि धमय्यय किञ्चिदसित यच्च तस्मि द्यस्तित तत्रोत्तरेपु समयेपु चलति यदिसु तेष्वपि तदेवाद्य चलन सत्वे तदा तस्मि  
 क्षेत्रे चान्ते सर्व्या मुद्रपायसिक्काचलनसमयामां क्षय स्यात् यदिसि तत् समयचलननिरपेक्षावप्यसमयचलनाति प्रवृत्ति तदो त्तरचलनानुक्रम्य  
 पुन्येन मान्यया तदेयं चलदपि तत्कर्मचलितस्त्वतीति ॥ १ ॥ तथा ॥ उदीरिज्जमाखउदीरियति ॥ उदीरिज्जमाख अनुदयप्राप्त चिरेवा धामिमा  
 प्राप्तेन पट्टेदित्य क्कमदसिक्क नत्स्य विगिष्टा ध्यवसायसचलन करणेना कृष्योदयेप्रक्षेपच , साधा सङ्केपसमयवर्तिनी तथाच पुनउदीरक्या उदीर  
 वा प्रथमसमययो दीपमाख कम्म पूर्वोक्तपठवृष्टान्तेनो दीरित सत्वतीति ॥ २ ॥ तथा ॥ वेद्विज्जमाखेवेद्वियति ॥ वेदन कम्मको प्रोगो ऽनुप्रय  
 इत्यय, काव येदन स्थितिचया हुदयप्राप्तस्य कम्मच उदीरवाकरणेन चोदय मुपनीतस्य प्रवृत्ति, तस्यच वेदनाकालस्या सङ्केपसमयत्वा दाद्यसमये  
 वेदान्तमेय वेदित स्यतीति ॥ ३ ॥ तथा ॥ पदेज्जमाखेपदीरियति ॥ प्रज्ञाचंतु जीवप्रवेक्षीः सच्च सञ्चितस्य कर्मच सोप्यः पतनं, एतदप्यसत्येयसमय  
 परिमाकमेय तस्यतु प्रज्ञाचस्य विषमये प्रज्ञीयमाख कम्मं प्रज्ञीच स्यादिति ॥ ४ ॥ तथा ॥ विज्जमाखेखियेति ॥ खेदन तु कर्मको दीर्यकालाना

उदीरिज्जमाणे उदीरिए २ वेदिव्ज्जमाणेवेदिए ३ पदेज्जमाणे पहीणे ४

म कपठा सुपते जे गिधि ततु बुष्ठा तेनुष्ठाज्जबहीये पदिसाततनीपपेचाये एपिचखाव्व ॥ १ ॥ उदीरिज्जमाखे उदीरिए ॥ जेकम उदयपाथानवो पचे धा  
 गानो खाने वेद्वे तेइज्जाने शुमाध्यवसायचवविकरो पाकर्पो उदेपाचीये तेउदीरवाकहीये ते प्रसख्यातिसमये पत्ते ते तिचे उदीरवावेकरो प्रथमसम  
 य जे उदीरवामाथा कम्म ते उदीरवाकहवाव तेप्रथमसमयनीपपेचाये पूर्वकक्षा यञ्जनादृष्टात तिचनीपरे जावो ॥ २ ॥ वेदिव्ज्जमाखेवेदिए ॥ तवाकम्मनो  
 भोगवा पनुभवइत्थव ते पम्भ्यातसमयसीमवत्ते तिवा प्रथमसमये वेदवामाथो जेइम तेवेखीच कहीये प्रथमसमयनीपपेचाये पूर्वकक्षी यञ्जना दृष्टात ते  
 इतीपरे ॥ पदेज्जमाखे पहीचे ॥ ३ ॥ तथा जीवप्रवेद्यसहितमिच्चो कम्म तेहनो जीवप्रवेद्यचको पतनते पुच प्रसभ्यातसमवेवत्ते तिवा प्रथमसमये प्रज्ञीयमा

यमियमस्य शासनाच्छास्य सद्भि रियते उन्नयनियमसत्येव सम्यग्दर्शमादीनि मोक्षस्यैव साध्यस्य साधनानि नान्यस्या घस्य मोक्षय तेषामेषवा  
 धनानां साध्यो नाभ्येपामिति, सच मोक्षो विपद्यया तद्विपद्यया तद्विपद्यय धन्य सधमुस्य कर्मभि रात्मनः सुस्यत्य सौपातु फम्मना प्रहये यमनुक्रम उक्ता,  
 बलमावेइत्यादि ॥ तत्र ॥ यत्तमावेति ॥ यत्तत् स्थितिकया वुरय भागच्छत्, विपाकाग्निमुखीभव द्यतर्कमेति प्रकररुगस्यम्, तद्यनित मुदितमिति  
 व्यपदित्रमते चत्तनकासो द्वादयावसिक्ता तस्यच कासस्या सङ्केयसमयत्वा दादिमध्यान्तयोगित्व कमपुद्गलाना मप्यनन्ताः सञ्ज्या अनन्तप्रवेज्ञा  
 क्षतय ते क्रमेण प्रतिसमयमेव चलन्ति तत्र योसा वाद्यपत्तनसमय कास्मिं यलदेय तद्यसित मुख्यत कषपुन सङ्कर्तमानस्य वतीतं प्रवर्ती ?  
 त्यथोच्यत - यथा-प० उत्पद्यमानकास प्रपमतन्मुप्रवेक्षे उत्पद्यमानएवो त्यथोन्नयतीति, उत्पद्यमानत्वव तस्य प्रथमतत्प्रवेक्षकासा दारज्य  
 पट उत्पद्यत इत्येवं व्यपदेशरक्षणं तप्रधिदुमेवो त्यक्तव तूपपस्याप्रसाध्यते तथाहि-उत्पतिक्रियाकालएव प्रथमतस्तुप्रवेक्षो ऽसावुत्पन्नो यदि पुन

नोत्पन्नोन्नविय तदा तस्याः क्रियाया वैयर्थ्यमन्नविय्य क्लिक्कलता दुत्पाद्योत्पादनाद्योहि क्रियाप्रवृत्ति, यथाच प्रथमेक्रियाद्ये मासायुत्यत्र स्तयो  
 तरेयपि एवे धनुस्त्यक्शवावी प्राप्नोति, कीदृत्तररुखक्रियाबा मात्मनि रूपविक्षेपा येन प्रथमसमये नोत्पन्न सद्दुत्तरात्रिसूत्याद्यते यतः सर्वदेवा  
 नुत्पत्तिप्रसङ्गः दृष्टाचोत्यति रत्यतन्मुप्रवेक्षे पटस्य दर्शनात् अतः प्रथमतन्मुप्रवेक्षकासएव किञ्चिदुत्पन्न पटस्य याथयोत्यथ नतदुत्तरक्रिययोत्या  
 द्यते यदि पुनरुत्पाद्येत तदा तदेकवेक्षो त्यादनएव क्रियाबां फासानाच्च क्षयः स्यात्, यद्विहि तवञ्चोत्पादननिरपेक्षा स्याः क्रिया प्रवृत्ति  
 तदोत्तरांगानुक्रमकं पुन्येत नान्यथा, तरेव यथा पट उत्पद्यमान एवोत्पन्न्य सस्येया सत्येयसमपपरिमाद्यत्वा दुदयाधसिकाया आदिसम  
 या त्प्रवृत्ति चत्तरेव कर्मफलित, कथ यतो यदिहि-तत्कर्मफलनानिमुखीजुत मुदयायसिकाया आदिसमयएव भवसितं स्या तदा तस्या द्यस्य  
 चत्तनसमयस्य वैयर्थ्येसा हात्रा चसितत्वात् यथाच तस्मिन् समये नचसित तथा द्वितीयादिसमयेयपि नचसत् कीचि तेषा मात्मनि रूपविक्षेपो

यत्र प्रथमसमये नपसित मुतारेषु चलतीति ? अतः सर्वदेवा चलनप्रसङ्गः अस्ति आन्त्ये समये चलन स्थितिपरिमितत्वेन कर्मान्नावाप्त्युपपन्नात्  
 अत आयनितान्नालादि समयेव क्रिञ्चिदस्ति यच्च तस्मि दलित तलोत्तरेषु समयेषु चलति यदितु तेद्यपि तदेवाद्य चलन आवे तदा तस्मि  
 क्षेत्रे चलने मर्यादा मुद्र्यावलिकाचलनसमयात् एव स्यात्, यदिहि तत् समयचलननिरपेक्षात्मन्यसमयचलनानि प्रवर्तन्ति तदो तरजसगानुक्रमेण  
 पुन्येत मान्यथा तदेवं चलदपि तत्कामचलितभावतीति ॥ १ ॥ तथा ॥ उदीरिज्जमाबउदीरिएति ॥ उदीरिज्जानाम अनुदयप्राप्त चिरेषा गामिना  
 कालेन यदुदितत्थं कर्मवृत्तिश्च तस्य विप्रिष्टा ध्यवसायतल्लहन करणेना कृष्योद्येप्रक्षेपश्च, साधा सङ्क्षेपसमयवर्तिनी तथाच पुनरुदीरक्या उदीर  
 का प्रथमसमयपूर्वो दीर्घमात्रं कर्म पूर्वाक्कपटवृष्टान्तेनो दीरित आवतीति ॥ २ ॥ तथा ॥ वेद्विज्जमाबेवेद्विएति ॥ वेद्वनं कर्मन्बो ज्ञोयो ऽनुप्रय  
 इत्यथ, काच येदन स्थितिषया बुद्धयप्राप्तस्य कर्मन्ब उदीरयाकरेण षोदय मुपनीतस्य प्रवति, तस्यच वेद्वनाकालस्या सङ्क्षेपसमयत्वा दाधसमये  
 वेद्वानामेव धेदित भवतीति ॥ ३ ॥ तथा ॥ पद्विज्जमाबेपद्विएति ॥ प्रप्राचतु जीवप्रवेगोः सश्च सश्लिष्टस्य कर्मन्ब स्तोत्र्यः पतनं, एतदप्यसत्येयसमय  
 परिमाणमेव तस्यतु प्रप्राचस्या विसमये प्रहीयमात्र कर्मन्ब प्रहीय स्यादिति ॥ ४ ॥ तथा ॥ विज्जमाबेविज्जेति ॥ वेदन तु कर्मन्बो दीर्घकालाना

### उदीरिज्जमाणे उदीरिए २ वेद्विज्जमाणेवेद्विए ३ पद्विज्जमाणे पद्विए ४

म कपटा पुषते जे-विचे ततु बुद्ध्या तेजुस्मान्कहीये पञ्चिजाततनीपपेचाये एपिचजाणम् ॥ १ ॥ उदीरिज्जमाबे उदीरिए ॥ जेकम उदयपाथ्यानबो घये चा  
 गामो काखे वेद्वे तेहकमने एभाध्वासायसचषिबरो घाबयी उदेघाबीये तेउदीरणाकहीये ते प्रपञ्जातेसमये वत्ते ते तिचे उदीरबायेकरो प्रथमसम  
 य जे उदीरवानाया कर्म ते उदीरणाकहवाव तेप्रथमसमयनीपपेचाये पूर्वकथा वखनोहटांत तिचनीपरे जाबयो ॥ २ ॥ वेद्विज्जमाबेवेद्विए ॥ तदाकर्मनो  
 भायनो चमुभत्रइत्थं ते पमप्यातसमयसोमवत्ते तिर्वा प्रथमसमये वेद्वामाची जेकम तेवेगोच कहीये प्रथमसमयनीपपेचाये पूर्वकथी वखनो हटांत ते  
 इनीपरे ॥ पद्विज्जमाबे पद्विए ॥ ३ ॥ तथा जीवप्रवेगसञ्चितमिन्बो कर्म तेहनो जीवप्रवेगवको पतनते पुत्र प्रसस्यातसमयेवत्ते तिचा प्रथमसमये प्रहीयना

स्थितीनां प्रकृताकारं तदापवर्तनात्रिपानेन करबविद्येयैक करोति तदपिष छेदन असत्येयसमयमेव तस्य त्यादिसमये स्थितित्थिद्यमान क्रम  
 विद्यमिति ॥ ५ ॥ तथा ॥ विज्यमाबेधिकेति ॥ जेदसु क्रमवः पुनस्या पुनस्याः तीत्ररसुस्या पवतनाकरणेन मन्दाकारण मन्दाय चोद्वहना  
 करणेन तीव्रता करबे सो, पिबा अस्येयसमयप्यथ, ततप तदाद्यमय रसता त्रिद्यमान क्रमविक्रमिति ॥ ४ ॥ तथा ॥ रुक्ममणेदन्ति ॥ दाह  
 सु कनेदलिकदाकृता ध्यानाग्निना तद्रूपापनपन क्रममस्यजननमित्यथ तथाहि—बाहुरया गिना दरस्य बाहुरूपापनयन प्रसालनाब नव  
 न दाह सुया क्रमवोऽपीति, तस्या प्यक्तमुद्गर्तधित्वेना अस्येयसमयस्यादिसमये दस्यपाजदव्यमिति ॥ ३ ॥ तथा ॥ मिज्यमाणेमेकंति ॥ त्रिय  
 माब मायुःक्रम मृतमित्यपविद्यते, नरब ह्मायुःपुद्गलाबाह्यप साबा अस्येयसमयवर्तते प्रवति तस्यच जन्मना प्रपमसमया दारज्यावीथिकमरगे  
 ना नुषणं मरुत्सनावा न्यियमाब सुतमिति ॥ ८ ॥ तथा ॥ विज्यरिज्यमाकेधिकेति ॥ मिज्यमायुःपुद्गमनिज्यो

### विज्यमाणेबिसे ५ त्रिज्यमाणेबिसे ७ मिज्यमाणेदहे ७ मिज्यमाणेमठे ८ गिज्यरिज्यमाणेगिज्यासे ९

यक्रम ते प्रहोष कर्ता प्रवेप्याबरीके पूर्वोक्त बन्धदृष्टात तेहनीपरे ॥४॥ विज्यमाबेबिसे ॥ तथा छेदनकृता दीपकाल्प्रतिकर्तमानो क्लवकामकरिवो  
 ते पपवतनामकरवियेयेकरो करे ते पबिखेहन पर्सव्यातेसमयेवर्ते तेहनेयदिने समयेस्प्रतिकर्तको खेद्यमान खेयाकहोये ॥ ५ ॥ मिज्यमाणेबिसे ॥ तथा  
 भेदबिसे सुमना चबबा चयम खर्तना भेदको तीत्ररसन पपवतनाकरबेकरी मंदपबे करवो मंदरमेने छेदनाकरबेकरो तीत्ररसकरवो ते पणि पसंख्या  
 तसमने वरुंविहां पडिसे समये रसको मियमानक्रम भेयोबिसे ॥ ६ ॥ क्लवमाबेदहे ॥ तथा दाहकहिजे क्रमकपियाकाठनो ध्यानाग्नियेकरो तद्रूप पपमयन  
 पबमरबीकरिबा क्रिम बाहुरपमिकरो बाबा तमकरप तिम क्रमने पणि ते पणि पसव्यातसमये वर्ते दीपदिने समये बालना मोषा क्रमतेवायो कर्को  
 वे पूर्वपट्ट इटीत ॥ ७ ॥ मिज्यमाणेमठे ॥ तथा मरुत्कहिजे पाजकापडनना चय ले मरवावायो ते मयोबहोये तेपधि पसंख्यातसमयेवर्ते तेहना  
 कृपना पवमसमयको चारमी प्रावेधिमरुत्करो प्रतिपचमरुत्पमा भायको मरवामाया ते मूया पूर्वोक्त पट्टइटीत ॥ ८ ॥ विज्यरिज्यमाबेबिसे ॥

स्त्रीणमिति व्यपदिश्यते निःशरण्या सस्येयसमप्रजावित्सेन तत्प्रथमसमयएव पटनिष्यत्तिदृष्टान्तेन निष्क्रीडंतस्वस्यो पपद्यमानत्वादिति, पटवृष्टाश्रय  
 समयपदपु सुम्भावनिःकाशाब्धः ५८ ॥ तदेव मैताक्यप्रसाम् गीतमेनजगवता जगयान् महावीरः पृष्ठःसु सुधाच ॥ इत्येत्यादि ॥ अथकस्सा इगवन्त गीतमः  
 पृच्छति? यिरचितद्वादयाङ्कतया विदितसुकस्रुतधिययस्वेन निखिलसक्यातीतत्वेनच सर्वेकस्त्वपथा तस्य, आइच-सुसाइएतनवे साइइलेयाप  
 रीउपुच्छेआ । कयकभवाइसथी वियाइएसबउमत्याति? ॥ १ ॥ नैव मुक्तगुबत्वपि छदस्त्वतया नाजोगसम्भवात् यदाइ--नहिनामानामोगः छ  
 द्वास्वस्येइकरपच्छिआसि । यस्मागजानावरणे ज्ञानावरणप्रकृतिःकर्मति ॥ १ ॥ अथवा जानतएय तस्यप्रसः सुम्भवति, सुखीयवोचसुवादनार्थं मच्छलो  
 कजोपनाय छिय्याबावा स्ववचसि प्रत्यपोरुपादनार्थं सूत्ररचनाकल्पसुम्पादनार्थेवेति, तत्र ॥ इतइति सोमलामप्रथार्थो दीर्घत्वंच  
 मागपदेशीप्रजय मुन्नयथापि, बसमाडेइत्यादेः प्रत्युधारयन्मु बलदय घसित मित्यादीनां स्त्रापुमत्त्वप्रदर्शनार्थं, यद्वाः पुनराहुः--इतागोयमाइत्य  
 य इतइति, य्वमेतदि त्यनुपगमवचने यदनुमत तत्प्रदर्शनाय अलमाडेइत्यादि प्रत्युधारितमिति, इइ यावत्करबलस्यानि पदानि सुप्रती  
 ताभ्येय एव मैतानि मयपदानि कर्मापिछस्य वर्तमानातीतकासधामानापिकरण्यजिज्ञासया पृथानि मिषीतानिच, अथै तान्येय चलनादीनि प  
 ररपरतः त्रि तुत्यार्थानि त्रिक्रायानि वेति ० पूष्ठा निष्पयच वक्ष्यितुमाइ ॥ एणबभन्ते ॥ इत्यादित्यक्त नवरम् ॥ एणठति ॥ एकार्थां न्यनस्यवि

### हतागोयमा चलमाणेचछिपुजायणिज्जिग्घे एणजनेनवपवाकिएगठा

तथा श्रीश्रमदीगयओ कम निजरवामाद्या वेमनाकरवामाद्या ते कमजिअरा यगसाकोधा बइये तेपवि असव्यातसमयभावीडे, प्रथमसमयनो अपेचाये  
 वेना पूर्वोक्तपट इदति ए बअडटांत भवेइपरे कोचवा ॥ ८ ॥ इसे गीतमेपष्ठा १ भमवते वाळा ॥ इतायायमा ॥ बसमाडेवसिए जावपिख्वरिज्जमाणे  
 विज्जिने ॥ इत इमा खोममानचवे, अथवा इत बइता हेगीतम वे अथ इमसोअ बभमादिबसिए, यानवामाओ ते वाओओकइये यावत् निजरवामां  
 धाते निजरवाचइहीये, वनीगीतमकडे एभमवतभत्रकमप्रधिकाऐने वतमानपतीतकासधामाधिकारवेपूष्ठा तेनिचयओधा पस्वि ॥ एणबभनेनवपवाकिं



यथाचि एकप्रयोजनानिवा ऽ नावायोसति ॥ इह घोषा उदात्तादयः ॥ नावावक्ष्येति ऽ इह व्यञ्जना व्यञ्जराचि ऽ उदात्तुति ऽ उताहो निपातो  
 विकल्पार्थः ऽ नावठति ॥ त्रिकाचिचैयानि इहच वतुप्रभूमीपदेसु हृष्टा, तत्रच फानिचि देकार्थां न्येकव्यञ्जनानि यथा क्षीरक्षीरमित्यादीनि ऽ १ ॥  
 तथा स्यानि एकार्थानि नामाव्यञ्जनानि यथाक्षीर पय इत्यादीनि ॥ २ ऽ तथा नेकार्थां न्येक्यञ्जनानि, यथा कंग्यमार्थिपाचि क्षीराचि ऽ ३ ॥  
 तथा स्यानि नाकार्थानि नामाव्यञ्जनानि यथा घटपटसकुटादीनि ॥ ४ ॥ तदेय वतुप्रभूषमवेपि द्वितीयवतुचजङ्गुको प्रश्नसूत्रे गृहीतो, परिदृश्य  
 माननामाव्यञ्जनतया तदस्ययो रसमवाप्, निर्वचनसूत्रे तु बलनादीनि चत्वारिपदा स्याप्रित्य द्वितीयः, बिद्यमानादीनितु पञ्चपदान्याश्रित्य वतुय  
 इति, ननु बलित्वादीना मर्मांना व्यक्तनेदत्वा त्क्य माथ्यानि चत्वारि पदा संकायानी ? त्याशास्याह ऽ उव्यखुपफास्सति ॥ उत्पन्न मुत्पादो प्रावे

### पाणाधीसा पाणावजगा उदात्त पागाठा

एयथा वावापीसा ॥ वेभगवन् एनवयदक्ष्ण एहना एक पवळे, एकप्रयोवतळे पायग्य इहाठदात पगुदात स्वरित एय्यद मानोत्त जागवा उधारण  
 रूपतेवदावशब्दे, वावा तेहनी जुदा२ वजवा व्यञ्जने ॥ उदात्त निपात त्रिकर्षायेते एतले पववा पापशा मानामकारना पवळे ॥ वावा० ना  
 नामकारना या उवार, वा मानामकारना ॥ व्यञ्जनपचर इहा वठमंती आचवी के एकग्य एकव्यञ्जन त्रिसवीरखोर इत्वादि १ तथा  
 एकपच पनेव्यञ्जन ववा चौरपव इत्वादि २ तथा पनेव एवव्यञ्जन यथा प्रक गाव सक्षिदीना चौर २ तथामाना पच नामान्यञ्जन यथा पट  
 पटादि ॥ इहा वठमंतीनो वृत्तवळे तोपचि वीळो चौबीमांगो पद्या, वीळादीयभांगाना पसभयवकी एमूनैविदै वननादि चारपट प्रात्री वीजोभांगो  
 पनेविद्विखमावे इत्वाठि पचपदपायी चौबीमांयो आचवी ॥ भगवंतळे वेगौतम व वद्यवामाचुंतेकम वचुंवाइये एपदिनां १ ॥ उ उदीत्या मां  
 पु तेकम उदीरिवीचरीये एनीवी २ ॥ तथा वे वेदवामाचो तेकम वेचुंवाइये एनीवी ॥ कर्महीनवावामाचुं तेकम प हीनययु कदीके एनीवी  
 ॥ १ ए एह व० चारिपह ए एवावकाचवा ॥ एनीवी एकपचवे वा प्रनेव मकारना घी० घोप उदात्तादिक तथा वा मानामकारना व व्यञ्जन

कप्रत्ययविधानात्, तस्य पञ्चः परिग्रहो ऽङ्गीकारः पञ्चपरिग्रह इति पातुपाठादिति उत्पन्नः पञ्च इत्यपि पठ्मा स्मृतीयार्यस्या दुस्त्यञ्चपण्डेव उत्था  
 दाङ्गीकारस्य उत्थादास्य पर्यायं परिग्रहो काया न्यता न्युच्यन्ते अथवा उत्थादास्यवस्तुविद्वत्स्यसा जिषायकाङ्गी तिशोप, सर्वथा मे  
 पा मुत्थाद् माङ्गित्ये कार्यकारित्वा देकान्तमुद्धृतं म्यन्नावित्वन तुस्त्यञ्जासत्त्वा वैक्यायिकत्वे भित्तिभावः, स पुन उत्थादास्यः पर्यायो विश्लिष्टः कोष  
 मोत्थादस्य, यतः कामचित्तायाङ्गुर्मेघः प्रहास्य फसद्वयं कवलक्षणमनोत्प्रभासी, तत्रैतानि पदानि केवलसोरपादविषयात्वा देकायांभ्युक्ताणि, यस्मात्  
 कयसप्तानपर्यायो जीवेन न कदाचिदपि प्राप्तपूर्वो यस्मात् प्रचलनसत सादर्थ्ययव पुरुषप्रयास सस्मा त्सएव केवलसन्नाभोरपत्तिपर्यायो भ्युपगत, एषा  
 च पदानामेकार्थानामपि सता नयमर्थः सामर्थ्यं प्रापितजनमो यदुत पूर्व स्तदसति त्वेतीत्यर्थः उदितञ्च वेद्यते अनुभूयत इत्यथ तत्र द्विधा  
 स्थितिषया बुद्धयमास मुदीरत्तया बोद्धयमुपनीतं ततश्चा नुप्रवानकार तत्प्रहीयते दत्तफलत्वा ङ्गीत्वा दपपातीत्यर्थं एतच्च टीकाकारमतन व्याख्या  
 त मध्येन व्याख्यान्ति स्थितियथायविज्ञापितसामान्यकस्मांभ्यत्वा देकार्थिका म्येतानि केवलसोरपादपञ्चस्यच सापञ्जानीति बत्वारि बत्सादीनि प  
 वा म्येकार्थिकानी त्युक्ते शोया स्यनेकार्थिकानीति सामर्थ्यादेवमतमपि सुखायबोधाय साक्षा त्प्रतिपादयितुमाह ॥ शिङ्गमाभेइत्यादि ॥ व्यक्तं नव

णाणाधोसा णाणावजणा । गीयमा । चलमाणेचलि ए उदी  
 रिज्जमाणेउदीरि ए वेह्ज्जमाणेवेह्ज्ज ए पहेज्जमाणेपहीणे एणुण  
 चत्तारिपया एगठा णाणाधोसा णाणावजणा उव्यसुपस्कस्स

ते पञ्च बलनाटिका पठने थव भ्यक्तभेदवको चिन पश्चिन्ना चारिपद् एकावकञ्जा ह्यो प्रायश्याये कहेत्वे । उत्पन्नपण्डसंश्लिप्त बत्साचित्तिए इत्यादि  
 चारिपण्ट उत्थादास्ये पत्ते जिबकारेण इति विनाग्रनको तेत्तत्याङ्गनामपयायविशेष केवलसत्त्वाद् होव केकारत्तौ कमचित्तानिविदे बसने षड्यद्वये फल  
 भाव एवञ्जेनसप्तान शोत्रामाच, निरुद्धाचारिपद् नोक्तत्त्वाद्द्विवचनको एकाच चत्तारि, केचारेणे केवलसप्तान पर्यायत्वोपे पश्चिन्नेकिवारि पाञ्चाननो च

२॥ साकठति ॥ मानार्थानि नानार्थत्वं त्वेव द्वियमान द्विकमित्येत त्वद स्थितिव्याघ्रं यतः सयोगिकेवली अन्तःकाले योगनिरोप क्तुः कामो धे  
 दनीयनामगोत्रक्याना त्तिवृथां प्रकृतीना दीर्घकालस्थितिकाना सर्वोपयसूनया त्तर्मीदृष्टिक स्थितिपरिमाण करोति तथा त्रिद्यमानत्रियमित्येत  
 त्वद समुन्नायवन्धाग्रं तत्रच यस्मिन् काले स्थितिपात करोति तस्मिन्नाय काले रसपातमपि करोति कथन रसपातः स्थितियच्छक्रेभ्यः क्रमप्रद  
 तेज्यो भ्रमन्मुखाज्यचिह्नो इति । नेत्र रसपातकरणेन पूर्वस्मा दिव्यायपदं प्रवति तथा दक्षमान दग्धमित्यत त्वद प्रवेद्यव्याप्यं, प्रवेद्ययत्न इत्वम  
 क्षामामन्तप्रवेद्यामास्त्वानां कर्मत्वापादन तत्स्य प्रदग्धव्यक्तमः सत्कामा पञ्चस्वाशरोषारकालपरिमाणया । सद्गुणतसमया शुद्धयेरिचनया  
 पूर्वरेचिताना कालेऽपवस्थानाविसुच्छिद्यत्रियध्यानानिना प्रथमसमयादारभ्ययावदत्यसमय क्षाय त्प्रतिसमय क्रमेण सङ्ख्यगुणवृद्धामा क्रमपुद्ग  
 लाना इहर्न दाहो । नेत्र दक्षिणार्थेनैवं पूर्वस्मा त्वदा द्विव्यायपदं प्रवति, दाह द्याभ्यश्चा न्यथाकृतापी इ मोक्षचिन्तापिकारा म्मोक्षसाधन उपल्लक्ष  
 कर्मविषय एव प्राप्तइति तथा विषयार्थं सृतमित्येतत्त्वद मायु कर्मविषय यत आयुष्यपुद्गलानां प्रतिसमयं क्षयोमरण मनेनच मरणार्थेन पूर्वपदे  
 त्यो निजायत्वा द्विव्यायपदं प्रवति तथा विषयार्थं सृतमित्यनेना युः कर्मवोक्त यतः कर्मव सिद्ध जीवती तुच्यते कर्मैयच जीयादपगच्छ न्वियत  
 इत्युच्यते, तत्रमर च सामान्येनो क्षमपि विस्मिदमेवा न्युपगन्तव्य यतः सुसारवर्तीनि मरणा न्यनेकतो । ननुतानि दुःखरूपाविचेति किन्तिमंरुचिरिष पुनः

### त्रिज्जमाणेन्द्रिये दृक्जमाणेदहे मिज्जमाणेमए णिज्जरिज्जामा

नेत्रेऽपत्रान प्रधान बहो जीवन्तो प्रयासपदि केवसप्रानमिमित्तेष्वे तेकारबहो तेद्विज केवसप्रानात्पति पर्वायकश्चो । अेकमपद्विहो तेऽसे अेचन्वो ते  
 छदगपवे धने उदयपात्वा ते वेदीये यतुमद्विये इत्वय । तेऽेवस्थितिधयबन्तो उदीरपायैवो उदयशाब्बा ते यतुमथापत्ते प्रचीरताय, तेमाटे उत्पाव  
 पचे एषारिपदएवावच्छाया । यत्रवा त्वित्तिवभादि यद्वियेयित सामान्यकम पायवधन्तो एकाप्ये केऽन्तोत्पावपत्ता साधक्ये ते उदयवपचे कर्मचिंता  
 ये तेऽहर्न पचोऽपत्त्वं तेऽहो ॥ इ एपदनेद्विये त्वित्तित्तोऽविगमकश्चो । तथा भि० इहा रसजो विगमकश्चा । द र्हाकस दाहकूप विगमकश्चो । मि

पदे पुनत्रयं मरुच सयकमनपसहचरित मपवगहेतुद्रुतमिति वियञ्चितमिति । तथा निज्जीयमाणं निज्जीयमित्येतत्पर मवकर्मोत्राववियप य  
 तः सयकमनिज्जरुचं न कदाचिद् व्यनुजुतपूय अधिनति यतो ऽनेम सयं कर्मोत्रावकपनिज्जरुचार्थेन पूर्यपदेभ्यो मित्राद्यत्वा द्वित्रिवाच पदं प्रवति च  
 यैतानि पदानि विश्लेषतो नामार्थोन्वयि सन्ति सामान्यतः कस्यपक्षस्या त्रिषायकतया प्रवृत्तानी ? तस्या माशङ्कयामाह ॥ यियगपपक्वस्वसि ॥  
 विगतं विगमो वस्तुनो ऽवस्थान्तरापक्षपाविनाशः । सएव पक्षो वस्तुपक्षं कस्यथापक्षः परिपक्षो यिनतपक्ष कस्य विगतपक्षस्य वाचकानीति श्लेषेय विगत  
 स्थिवा शेषकर्मोत्रावो निमतो जीवेन तस्या प्राप्तपूर्वतया त्यक्तमुपादेयत्वा तदपत्वाच्च पुरुषप्रयासस्येति यतानि चैव विगमार्थानि प्रवन्ति, चिद्य  
 मानपदेऽपि स्थितिपक्षे विगम उक्तो, निद्यमानपदे त्वनुज्ञावनेदो विगमो, वस्तुमानपदे त्वकर्मतात्रवन विगमो, वियमात्रपदे पुन रापु कर्मोत्रावो  
 विगमो, निज्जीयमात्रपदे त्वश्लेषकर्मोत्रावो विगमउक्त, सदेव नेतानि विगतपक्षस्य प्रतिपादकानी तुच्यन्ते एवञ्च यत्पक्वमाङ्गादिसूत्रोपन्यासे प्रेरित  
 यदुत नेतानिप्रयायेदं सूत्र मुपन्यस्तमिति ? तत्त्वैवसञ्चानोत्पादसकम्भविगमाभिधानरूपसूत्राभिप्रायव्याप्त्यानेन निर्योतमिति, यतत्सूत्रस्यैवादि  
 विदुसेनाचार्योप्याह-उप्यञ्जमाशुबास उप्यञ्चविगयपयवियञ्जतं । इविपपसुवयंतो तिकासविषयविसेसेइति ॥ १ ॥ उत्पद्यमानकालमित्यनेन आद्य  
 समयो वारज्यो त्पन्तसमयं याद्य दुत्पद्यमानत्यस्ये इत्या इत्तमाननविव्यत्कालविषयं द्रव्य मुक्त, मुत्पन्न मित्यनेन तु कालीतकालविषय, मेवं वि  
 गत विगच्छदि त्यनेनापीति, ततयो त्पद्यमानादिप्रज्ञापयन् सन्नगवान् द्रव्य विशेषयति कथं त्रिकालविषय यथा भवतीति सवादगाथायः अन्येतु

### गंणिज्जाये पृणपचपदा पाणठा पाणाधोसा पाणाथजणा विगयपस्कस्व

रदो प्रायुजमना प्रभावएविगम ॥ तथा चिञ्चित्त्वभाषे इहासवकमना विगमकज्ञा ईषेकार्ये विगतपक्षे एकज्ञा ॥ ए एह यं पाये इ पदने  
 वाचहा नागापचपचुंहाह ॥ वाचा नामाप्रकारना धोसा वापउदात्तादिह ॥ वाचा नामाप्रकारना ब्रंजया स्वधनपचर ॥ विगवपक्वस्य ॥ वि  
 गतवस्तुनो प्रवस्वोतरा पेचाये यिनाय तेइनाईषपक्ष परिगृह्य ते विगतपक्षकहोये इपक्षपद विगतपक्षनो वाचकहे ए नवपदेने विदे आयपकोहे ॥

कर्मविवेकस्य सूत्रे मन्त्रिणाणां बलनादियदानीं सामान्येन ध्यास्यान्ति न कस्मापेक्षयेव तथाहि ॥ बलमाखेधलियति ॥ इह बलम मस्तिरस्यपयायेव  
 बलान्तरात् ॥ वेङ्कटनाखेधलियति ॥ व्युत्पन्नान् कस्यमान व्यञ्जित कस्मितं व्युत्पन्नान् इतिवचभात् व्यञ्जितमपि तद्रूपान्पेक्षयो र्पादप्य ॥ उदीरि  
 ज्जनाखेधलीरियति ॥ इहो दीरखं स्थिरस्य सतः प्ररख तदपि बलनमेव ॥ परंजनाखेधलीखेसि ॥ प्रदीपमाखं प्रच्यइयन् परिपतदित्यप्य , प्रदीप  
 प्रच्यइ परिपतितमित्यप्य इहोपि प्रदीप बलनमेव बलनादीनां कैकापत्यं सर्वेषां गत्यपत्त्यात् ॥ उप्यणुपकउररुसि ॥ बलस्यादिमा पयायको र्प्यस्य  
 त्वस्यबलपक्षाप्रिषायका न्येतामीति तथा ब्रह्मददाहरमरुमिञ्जरुणा न्यक्रमाधान्यपि व्याख्येयानि , तद्यारत्यानञ्च प्रतीतमेव, चिक्राधता पुन  
 रेषामव-कुठारारिना सतादिविषयञ्चद, सोमरादिमा क्षरीरविषयो ज्ञेने, इम्बिना दाबादिविषययो दाडा , मरुतस्तु प्रागत्पानो, निञ्जरा त्वत्तिपु  
 राबीनयनमिति ॥ विगणपञ्चस्वसि ॥ जिजायोान्यपि सामान्यता विनागानिषायका न्यतामीर्यप्य , नञ्च वक्तव्य किमते बलनादिति रिइनिरुपिते  
 रतत्वरुपाधेयामिति अतत्वरूपस्याचिदुत्थात् तदचिद्विषय निदयनयमतेन यस्तुस्वरूपस्य प्रजापयितु मारुथस्य-तथाहि-ध्ययद्धारनय यत्तित  
 मेव बलितमितिमम्यते, निदययतु बलदपि चतितम् मय वयुवक्तव्य तच्च विद्योपावश्यका दिहिया निषारयमानजमालिषरितायायसेयमिति , इहा  
 इ प्रज्ञोत्तरपूत्रण्ये मोक्षत्वत्व चिन्तित, मोक्षः पुन ज्ञोत्रस्य, जीवाय नारकाय धतुविज्ञातिविषया, यदाह-नेरइयाम्भुराह पुत्रयाहरे दिपादुत्रेय  
 पद्विदियतिरितर वतरजोइयिययोमाको ४४ ॥ १ ॥ तत्र नारकां स्तावत् स्थिरस्यादिति चिन्तयन्नाह ॥ नेरइयाखमित्यादि ॥ निगत मयमित्युक्त्वा  
 कर्म येज्य से मिरया सापुत्रवा नैरयिक्वा नारकां स्ताया नैरयिक्वाया ॥ प्रतेति ॥ प्रदत्त ॥ फेधइयंक्वात्तिति ॥ क्रियायासी क्वात्तयेति कियत्काल

णैरइयाणन्तेकेवइयकाउठिड घणुत्ता । गीयमा । जहणेणदसत्राससहस्साडिठिंइ

पादे माचनो वातांजलो तेमाच तो ज्ञानेहाच वावते नारको पादिसेहे चउमोमवउक वतदे तेचउचाम इउडका नाम ॥ नारको घमरादि ११ पृथि  
 नोपादि १९ वेरुडीपादि १८ पंचेनी तिर्वच २ मनुष २१ चतर २२ ग्वात्तियो २३ वैमानिक २४ इति ॥ द्विवे नारकोमो स्थितियूखेहे ? वेरुयाच

लं कियत्कामपायत् ॥ ठिइति ॥ स्थितिरायुःकामवशाद्यरके ऽयस्थानं ॥ पणसति ॥ प्रसृता प्रकृपिता प्रगवद्धि रन्वतीर्षकरेद्योत प्रस ॥ १५५५  
 त्सादि ॥ निवर्त्तनं व्यक्तमेव नवर ॥ दसबाससःस्थाइति ॥ प्रथमपृथिवीप्रथमप्रसृतापेक्षया ॥ तत्तीससागरोवसाइति ॥ सप्तमपृथिव्यपेक्षेति ॥ मध्य  
 मात् अथन्यापेक्षया समयाद्यपिका सामध्य गम्येति अनन्तर भारकाया स्थितिरुक्ता तेषोऽङ्कासादिमत्त इत्युक्त्वासाधिनिरूपणायाइ ॥ केरइया  
 कमित्यादि ॥ व्यक्तं नवरं ॥ केवइकासस्थिति ॥ प्रकृतशैल्या कियत् कालात् कियता कालेनेत्यर्थ ॥ आकमतिरिति ॥ आकमति प्रमप्राकनेइतिपातुपाठा  
 न् मकारस्यागमिन्त्वात् ॥ पाकमतिरिति ॥ प्राकमिन्ति वासादी समुद्रपार्श्वे ॥ एतदेवपदद्वय कमेयापतः स्पष्टयकाइ ॥ अससतिवा शीससतिवेति ॥  
 यद्वोक्त मानगिततद्वोक्त मुञ्चुसन्तीति तथा यद्वोक्त प्राकमिन्तिइत्योक्त नि द्यसन्तीति अथवा आकमन्तिप्राकमन्तीति बहुमुद्रुत्वे इत्यस्या ने  
 कापत्वेन द्यसनार्थस्यात् अन्येत्याहुः-आकमिन्तिवा प्राकमिन्तिवेत्यनना ध्यात्मक्रिया परिगृह्यते उक्त्वासमिन्तिवाः द्यसमिन्तिवेत्यनेन वाइयेति ॥ अइ  
 असासपत्यति । यतस्य प्रमस्य निर्वचन पयोऽङ्कासपदे प्रकापमायाः सप्तमपदे तपावाच्य तत्रेइ ॥ नोयमा सयपसुतपामेव आकमतिवा पाकम

पयज्ञा । उक्त्वासंगतश्रीससागरोवसाइ ठिई पयज्ञा । णेरुयाणन्तेकेवइयका  
 छरसश्याणमतिथा पाणमतिवा अससतिवा ॥ अहाउस्सासपदे

नारकीना । भंते । हेभगवन् केवइयकाम केतवाकान्ती । द्विरे । म्विति । पयज्ञा । कही स्थिति ते मर्यादाकास मयाइ यभवाभगा फस तेइने नारकीक  
 दोरे दपियत्र १ उत्तर, हेगोतम । अथन्यको दसवासमकसाइ । द्यससससपमो द्विरेपयज्ञा स्थितिकही । एव रत्नम १ द्विविना मबम प्रता  
 र पान्त्रीम्वितिकान्वी ॥ उक्त्वासेव । उक्त्वासेव । तेतोस । तेतोस ॥ सागरोवसाइ । स्थिति । कही ते सातमो द्विविनी अपेव  
 वे जान्वी ॥ ते पाठगो सासोस्त्रानि पुत्रे ते भनीपूर्वरे १ केरइवाच । नारकीने । मते । हेभगवन् ! केवइयकास । केतवेकसे । आकमतिवा पाकमति  
 वा । अन्तर साससेवी । असमविवानीससतिवा । वाइरजसाससे । अथवा पाकमतिवा अससतिवा अनेपाकमतिवा एइमो पर्याय भोसस

तिवा अससतिवा भीससतिवा इति ॥ तत्र सुततं अनवरतं अतिदुःखितादि ते इतिदुःखव्याप्तस्य निरन्तरमेवो प्लासनि द्यावो हृष्येते सतत  
 स्वच प्रायो सृत्पायि स्यादित्यतश्चाह ॥ संसयामेवसि ॥ संस्तमेव नैकसमयोपि सद्दिरो स्रीतिमायः दीपेल्पन्नेह प्राहृतत्वात् आणमन्तीत्यादे  
 पुनरुच्चारणं श्रिय्यवचने आदरोपदर्शनार्थं बुद्धिं राष्ट्रियमावबन्तादि श्रियाः सुस्तोपयन्तो प्रवसि तपाच पीन पुन्येन प्रसन्नवशाचमिषया  
 विपु पठन्ते लोके चादेयवचना प्रवसि तपाच प्रव्योपकार स्तीर्थाभियुद्धियति अथ सेवामेवाहारप्रदयन्नाह ॥ येरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्त न  
 वरम् ॥ आहारमिति ॥ आहार अर्घयन्त प्रार्थयन्ता इत्येवशीला अर्थावा प्रयोजनमेवामस्री त्यचिन आहारेण प्रोजने माचिन आहारस्य प्रोजन  
 स्या धीन आहारमिति ॥ अहारही इत्येतत्पदमभ्रति यथा प्रणायनाया यतुर्गोपाङ्गस्य ॥ यदमगति ॥ आद्ये ॥ आहार  
 इत्यसि ॥ आहारपदस्या टावियतितमस्य उद्देशकः पदस्यस्योपा दाहारोद्देशक सत्र मखितम् ॥ तदज्ञापियवृत्ति ॥ तेन प्रस्तारेण वाच्यमिति  
 तत्र नारआहारवच्यताया बहूनि द्वाराणि भवसि तत्सङ्ख्याय पूर्वोक्तमित्युक्त्वाससणङ्कारद्वयवदानपूर्विका गायामाह ॥ टिङ्गाहा ॥ व्या  
 क्त्वा स्थितिनोरवाकां वाच्या षड्भाषयतीषोक्तावेव तथा ॥ आहारेति ॥ आहारविषयो विचिबोध्यः सचेयम् ॥ येरइयाण प्रते। आहारही इ  
 ताव्याहारही ३ येरइयाणं प्रते। केवइ कालस्स आहारठे समुप्यज्जइ १ ॥ आहारार्थं आहारप्रयोजन माहारयित्स्वमित्यर्थः ५ गोयमा। येरइयाणं

येरइयाणज्जेस्साहारही । जहापन्मवणाए पठमसए श्याहारइंसए तहान्नाणियसु ॥ गाहा ॥  
 ठित्तिउस्सासाहारे किवाहारेइंससुत्तंवावि । कइजागससुणिव कोसयन्नुज्जीपरिणमति ॥ १ ॥

तिवा जहाजप्यासपदे । एभिपपचववा माहि सातमेपदे कञ्जाहे तिमजाववा, ते इम । सुततं सतथा ॥ निरितर समयमावतां विरइ विनामे चर्वा  
 इषमाटे ॥ येरइयाणं। नारवीने। भते । हेममवन् । आहारही। आहारलापबीजे, आहारना बीवकहे ॥ अहा । जिन पचववाए । पचववानो पडाबीस  
 मा पदना । पठमसए । पडिवा मतवना। आहारपेसए । आहार उद्देश्यार्थादि विमकञ्जाहे । तहामाभियल । तिमजाववी ॥ गाहाइति । स्थितिनारवो

प्रतिपत्ति ॥ तथा भोगो ऽत्रिसन्धि स्नेन निर्वर्तितः कृत आभोगो  
 ष्वा मन्तरेषापि प्रावृद्भासे प्रपुरतरपल्लववाद्यमित्यग्य

शीतपद्-

आहारणे समुप्यज्जह ॥ अनुसमये प्रतिष्वखं समस्तातितीप्रपुद्देव  
 आसितन्यायावपि न विरहितः अथवा; प्रदीपकासोपनोग्याहारस्य सठडइसे  
 वि प्रोगो सुसमयंस्या वतो प्रइकस्यापि सातत्यमात  
 विरहितमित्याह ॥ तस्य ख जेसे आभोगमिवृत्ति ए सेष अससेज्जसमइए अंतोमु  
 बुत्ति ए आहारणे समुप्यज्जह ॥ अर्धस्यातसामयिकः पस्योपमाविपरिमायोपि स्यादतमाह ॥ अंतोमुबुत्ति ए ॥ इदमुल्लंभवति आहारयामी त्यन्नि  
 माय यतयो यहीताहारद्रव्यपरिखामतीश्रितरदुःखजनमपुरस्सर मन्तमुंभूतो त्रिवर्तंतइति ॥ किंवाहारैरिति ॥ किंश्चरूपंवा वसु मारका आहारय

तीति वाच्यं ? वागएः समुच्चये तत्रैर्दं प्रसन्ननिवचनमुत्र ॥ खेरइयाव नन्ते । किमाहारमाहारैति ? गोयमा । वयुष्ठे अर्धंतपएवियाइं ॥ अमग्तप्रवेइयन्ति  
 पुद्गनद्रव्याबीत्यय , स्रदन्त्या मयोग्यत्वात् ॥ येसठे असखेअपएवावागाठाह ॥ म्यूनतरमदेखावागाठानिहि न यइकप्रायोग्यानि अनन्ताप्रदेखावागाठा  
 नितु न प्रवत्येय सकतसोकस्या प्यसङ्क्षेपप्रदयप्रमाखत्वात् ॥ कासठे अकतरठियाह ॥ अपन्यमप्यमोत्कष्टस्थितिज्ञानीत्यथः, स्थितिष आहारयोग्य  
 रकथः परिखामेधवस्थानमिति ॥ प्रावठे वस्यमताइं यथमताइ रथमताइ कासमताइ आहारैरिति ५ । काइं प्रावठे वस्यमताइ आहारैरिति किं ताइं एगय  
 खाइ आहारैरिति जाव किंयंभवत्साइ आह रैति ? गोयमा । ठाखमगख पलुष एगवखाइपि आहारैरिति जाव पववखाइपि आहारैरिति विहायमगणं  
 पलुष कासप्रस्थाइपि आहारैरिति जावसुक्किलाइपि आहारैरिति ॥ तत्र ॥ ठाखमगखं पलुषति ॥ तिष्ठत्यस्मि खितित्यानं सामाग्य यथा - एकवसं द्वि  
 यर्धमित्यादि ॥ विहाखमगखं पलुषति ॥ विषाम विज्ञेयः कासादिरिति ६ । आह वखठे फालवसाइ आहारैरिति ताइकिं एगनुककासाइ आहारै



तिवा क्वसतिवा भविष्यतिवा इति ॥ तत्र सततं अमवरतं अतिदुःखितादि ते इतिदुःख्यासस्य निरस्तरमेवो ष्ठान्वनिःशायी हृदयेते सतत  
 त्वं प्रायो वृत्त्यापि स्यादित्यतश्चाह ॥ सततमेव नैकमुमयोपि तद्विरहो स्त्रीतिमायः दीर्घस्यम्बेह प्राकृतत्वात् प्राग्गमस्तीत्यादेः  
 पुनरुच्चारणं श्लिष्यवचने आदरोपदञ्जनाद्यै गुठन्ति राष्ट्रियसखबन्नादि श्रियाः सुस्तोपवस्तो प्रयन्ति तथाच योमःपुन्येन प्रसन्नयशार्थनिसया  
 दिपु पठन्ते स्त्रीषु आदेयवचना प्रवन्ति तथाच प्रब्योक्कार स्त्रीर्थांमियद्विद्वति अथ तोपामेवाहारप्रसयश्चाह ॥ केरइयावमित्यादि ॥ व्यक्त न  
 वरन् ॥ आहारवृत्ति ॥ आहार अर्थयन्ते प्राचयन्त इत्येवकीला अर्थोवा प्रयोअममेयामस्त्री त्वर्चने माघिन आहारस्य प्रोजन  
 स्या र्चिन आहारार्थिनः ॥ अहापक्षवकायति ॥ आहारठी इत्येतत्पदप्रवृत्ति यथा प्रहापनाया द्यतुर्योपाङ्गस्य ॥ पदमसति ॥ आद्ये ॥ आहारठ  
 हेस्यति ॥ आहारपदस्या दाविद्यतितमस्य अद्देशकः पदशश्लोपा दाहारोद्युक्त सत्र सचितम् ॥ तज्ज्ञानाश्रियवृत्ति ॥ तेन प्रकारेण वाच्यमिति  
 तत्र नारकाहारवक्ष्यतापो वदूनि द्वारदि भवन्ति तत्सङ्ग्राहार्थं पूर्वाक्त्विस्त्युष्णसलशङ्खारहृदयवसन्नपूर्विका मायामाह ॥ ठिइगाहा ॥ व्या  
 स्या स्थितिनारकावा वाच्या सङ्ग्राहयतीपोक्तावेव तथा ॥ आहारंति ॥ आहारविययो विचिकीष्यः सखेयम् ॥ केरइयावं प्रते। आहारठो इ  
 ताथाहारठी ॥ केरइयावं प्रते। केवइ कासस आहारठे समुप्यज्जह ॥ आहारार्थे आहारप्रयोजन माहारार्थिस्त्वमित्यर्थः ॥ गोपमा। केरइयावं

णेरइयाणनतेश्चाहारठी । अहापन्ववणाए पठमसए आहारुद्देशए तहानाणियह्व ॥ गाहा ॥  
 ठितितिरससासहारे किवाहारेइससहृष्टंवावि । कठनागसहृष्टाणिय कोसवज्जुओपरिणमति ॥ १ ॥

तिवा अहाअष्टासपदे । एविमपक्षववा मादि मातमेपदे अष्टावे तिमशोषवा, ते इम । सततं सतया ॥ केनितर समयमाजना विरह विनाशे घना  
 दुःखनाटे ॥ केरइयाच । नारकीने भते । हेममवन् । आहारठी । आहारनापधीवे, आहारना बाहकवे ॥ अहा । अिम पक्षववाए । पक्षववानां अहावीस  
 मी पहा । पठमसए । पडिका मतकना । आहारठेसए । आहार अहेयामादि विमकश्यावे । तहानाश्रिय ॥ तिमअश्रिय ॥ तिमअश्रिय । स्वतिनारकी

बुद्धिश्चैव आहारे पक्वते ॥ अन्नवहारक्रियेत्ययः ॥ तत्रैवा आभोगनिवृत्तिए अन्नाभोगनिवृत्तिए ॥ तथा भीमो अत्रिसन्धि खोन निर्वर्तितः कृत आभोग  
 गनिवृत्तित आहारयामीती आपूर्वकृत्ययं अनाभोगनिवृत्तित याहारयामीती विधिदृष्ट्या मन्तरपरस्ववद्याद्यभिव्यग्य  
 गीतपुद्गलाद्याहारवत् ॥ तत्रैव जेसे अन्नाभोगनिवृत्तिए सेवं अयुसयमविरदिए आहारठे समुप्यज्जइ ॥ अनुसमय प्रतिषणं सन्ततातितीप्रसुद्वेव  
 नीपत्र्मीदयत ठप्रथाहारादिना प्रकारेति ॥ अविरदिएति ॥ बुकस्ससित्तन्पापादपि न विरदितः अयथा; प्रदीपकालोपजोग्याहारस्य सरुद्रइके  
 पि जगो मुममयस्या दतो यहइस्यापि सातत्यप्रतिपादनायं मविरदितमित्याइ ॥ तत्रैव जेसे आभोगनिवृत्तिए सेवं अससेज्जसमइए अंतोमु  
 बुत्तिए आहारठे समुप्यज्जइ ॥ असस्यातसामयिका; पस्योपमादिपरिमावोपि स्यादतथाइ ॥ अंतोमुबुत्तिएति ॥ इदमुत्तंभवति आहारयामी त्यसि  
 नाय यतया गृहीताहारद्रव्यपरिखामतीप्रतरदुःखवमनपुरस्सर मन्तमुंभूतो अत्रिवाहारेति ॥ किंत्वरूपंवा वस्तु नारका आहारय

न्तीति वाच्यं ? याशयः समुदये तत्रेवं प्रसन्नियवमसूत्र ॥ येरइपाव जते । किमाहारमाहारेति ? गोयमा । दधुठं अखंतपएसियाइ ॥ अन्नस्तप्रदेवावन्ति  
 पुत्तनद्रव्याबीत्यप, सवस्येया मयोग्यत्वात् ॥ येतठं असंखेऊपएसावनाडाइ ॥ म्यूनतरप्रदेवावगाडानिद्वि न यइअप्रयोग्यामि अन्नस्तप्रदेवावगाडा  
 नित् न प्रयत्नेव सन्नतलोक्तस्या प्यसङ्गेपमवयप्रमाणत्वात् ॥ कालठं अखतरठियाइ ॥ अपन्यमच्यमोत्कृष्टस्थितिकानीत्ययः, स्थितिय आहारयोग्य  
 रज्ज्यः परिखामेधत्वाभिमिति ॥ प्रावठे वखमताइ गंचमताइ रसमताइ कासमताइ आहारेति ५ । जाइं जखठं वखमताइ आहारेति कि ताए एगय  
 गाइ आहारेति आव किंवंवदसाइ आहारेति ? गोयमा । ठाबमगणं पदुइ एगवखाइपि आहारेति आव पववखाइपि आहारेति विहावमगणव  
 पदुइ कासवखाइपि आहारेति जायसुक्किलाइपि आहारेति ॥ तत्र ॥ ठाबमगणं पदुइति ॥ तिष्ठत्यस्मि क्कितिस्यान सामान्य यथा - एखवखं द्वि  
 यवमित्यादि ॥ विहावमगणं पदुइति ॥ विधानं विधेयः कासादिरिति ६ । जाइ वखठं फासवखाइ आहारेति ताइकिं एगगुक्कालाइ आहारे

वि जाय दसगुणकालाह आहारैति खेलेज्जगुणकालाह अखलेज्जगुणकालाह आहारैति ? गोयमा । एकगुणकालाहपि आहारैति  
 जाय अखतगुणकालाहपि आहारैति ७ । एव आबद्धकिताह ११ । एव गपनुवि १३ । एव प्रावतु फासमसाह ताह ठायमगण पपुत्र नोए  
 मफासाह आहारैति नोदुकासाह आहारैति नोतिफासाह आहारैति ॥ एकदयद्याना मसजवा दन्पेयां आत्मप्रदेशिकतावृक्षमपरिखामान्या वृक्षया  
 योग्यत्वात् ॥ अठफासाह आहारैति जाय अठफासाह आहारैति ॥ वृक्षप्रदेशिकतायादपरिखामान्या वृक्षयोग्यत्ववदिति ॥ यिहाखमगण पपु  
 व कलठारहपि आहारति ॥ जाय सुक्काहपि आहारैति १६ । आह फासठे कलठाराह आहारति ताहकि एगगुणकलठाराह आहारैति जाय अण  
 तगुणकलठाराह आहारैति ? गोयमा । एगगुणकलठाराहपि आहारैति जाय अखतगुणकलठाराहपि आहारैति २० । एव अठवि फासा प्राविपद्या  
 अखतगुणकलठाराहपि आहारैति २१ आहजते । अखतगुणकलठाराह आहारैति ताहकि पुठाराह आहारैति ? गोयमा । पुठाराह फासा

रैति नो अपुठाराह आहारैति २८ । पुठाराहति ॥ आत्मप्रदेशपर्यञ्चन्ति तदपुम राल्मप्रदेशपर्यञ्चन मधगाहवेष्टा इहिरपि जयति अत उप्यते ॥ आह  
 जते ! पुठाराह आहारैति ताह कि ठंभाराह आहारैति अयोगाढाराह ? गोयमा । ठंभाराह नो अयोगाढाराह ॥ अयोगाढानीति आत्मप्रदेशे  
 एवै कथेभावगाढानीत्ययः २६ ॥ आह जते । ठंभाराह आहारैति ताह कि अखतरागाढाराह आहारैति परपरोगाढाराह आहारैति ? गोयमा । अ  
 खतरोगाढाराह नो परपरोगाढाराह आहारैति ॥ अखतरोवगाढानीति येपु प्रवेशे आत्मावगाढ खेयेव यान्यवगाढानि तान्यनस्तरावगाढानि अन्तरा  
 प्रवेशेनावगाढत्वात्, यानिच-तद्व्याख्यानि ताप्यवगाढसम्बन्धात् परस्पररावगाढसम्बन्धात् ३० ॥ आह जते । अखतरोवगाढाराह आहारैति ताहकि  
 अखूरे आहारैति वापरारं आहारैति ? गोयमा । अखूरेपि आहारैति वापरारंपि आहारैति ॥ तन्नात्युत्प दादरत्व वायेयिब तेयानेवा हारयो  
 म्यानां स्वरूपाना प्रवेशेनया वृद्धाना मबवेय ३१ । आह जते । अखूरेपि आहारैति वापरारपि आहारैति ताह किं अण आहारैति एव अहेवि

तिरियपि ? गोयमा ! उक्तपि आहारंति एवं अहेवि तिरियपि ३२ । आहं प्रते । उक्तपि आहारंति अहवि तिरियपि आहारंति ताः कि आहंमाहा  
रंति मञ्जे आहारंति पञ्चदशत्वे आहारति ? गोयमा । तिहावि न अपमप मात्रोगमियसितरया हारस्या स्तमोभूतिं कस्या विमप्यायसामेपु स  
यया हारपत्तीति ३३ न जाह प्रते । आहं मञ्जे अयमाहवि आहारंति ताह कि सयिसए आहारंति ? गोयमा । सयिसए मो  
अयिसए आहारंति ॥ तत्र स्था स्थयीयो विषयः स्पृष्टावगगानतरायगाढास्याः स्वविषय स्तसि आहारयन्ति ३४ न जाह प्रते । सयिसए आरा  
रति ताहकि आहुपुधिं आहारंति यथाहुपुधिं आहारंति ? गोयमा । आहुपुधिं आहारंति नोअहाहुपुधिं आहारंति ॥ तत्रा तुपुव्यो यथासख न  
तिकस्य ३५ ॥ आहं प्रते । आहुपुधिं आहारंति ताहकि तिरिवि आहारंति जाव अह्विं आहारंति ? गोयमा । मियसा अह्विं आहारंति ॥  
इह भारकावां लोकमप्ययतिंलेन पसा मप्युदुं विविगा मलोकेना मायतत्वात् पदसु विस्वाहारप्रश्नमक्ति तत उक्तं नियमात् पद्विचि दि

कूप्यादिविक्रम्यास्तु लोकातयतिपु पृथिवीक्राविकादिपु विद्या इयस्य ह्यस्य एकस्या दालोकेना वरवे नवस्तीति यद्यपि वरुतः पञ्चयसोनी त्या  
द्युक्तं तथापि प्रासुर्येव यद्वक्तव्यपरियुक्तानि द्रव्या स्याद्धारयस्ति, तानि दर्शयति ॥ दृश्यकारणं पशुवति ॥ द्वाभुस्वसत्तदकारण माप्रित्य तत्र  
प्रकृत्यनुभानुभ्रायस्य कारकमिति ॥ वसुं कालनीसाहं गत्यं दुस्त्रिगंधाह रसुं तितकमुयराह कासठं ककभगकयसीयलुक्काहं ॥ एनामिष प्रा  
पो विप्याहृष्टप एया धारयन्ति ननु प्रयिप्यतीयकरावयति अप तानि यथास्वरूपास्येव नारका आहारय स्तन्यथावे ? तस्या मात्राङ्काया म  
त्रिपीयत न तेचि पोरारचे यसुगुचे गणगुचे रसगुचे कासगुचे विप्यरिखामयिता परिसाकृता परियिद्वसहता न विपरिखामादयो  
विनागायत्वे नैत्रायोएय प्यत्रयः ॥ अक्षेय अयुधे वसुगुचे गणगुचे रसगुचे कासगुचे उप्याहता आयसरीरोगाडे पोगले सधुप्यययाए आहार  
माहारंति सधुप्यययाएति ॥ सर्वोत्समा सर्वे रालमवक्षे रित्यपः ३६ व्यास्यात सूत्रे, सङ्ग्रहायायाः क्वियाहारंतीतिपद मय सवृत्तवावीति ध्या



आहारंति कोस्ये आहारंति ? गोयसा । सर्वे अपरिचेषिष्य आहारंति ॥ इर विशिष्टप्रत्ययपरीता आहारपरिचामयोम्याएव यास्या ठञ्जितश्रेया  
 इत्यथः अन्यथा पूयापरसूत्रयो धिरोपःस्यात् इष्टाचैव व्यास्या । यदाह अत्रसुतेजसिप तथेवप्रतंविद्याख्यानस्य । किंकासियासुतंगो दिठो  
 दिठिष्यदावेहिं ३८ ॥ १ ॥ कीसत्रनुज्जोपरिचमसि ॥ द्वारगाथापत् तत्र ॥ कीसति ॥ पदावपवे पवसमुदायोपचारात् ॥ कीसताएति ॥ दृश्य  
 किं स्वतया किं स्वजावतया कीषुशतयावा केनप्रसारेब किंथरूपतयेत्यर्थः वाञ्छदः समुच्चये ॥ जुञ्जोति ॥ प्रयोच्युः पुनःपुनः परिचमसि  
 आहारद्रव्याचीति प्रकृतं इत्येत द्रव्याच्च तसैव ॥ नरइयाच तसैव ॥ जेपोमसे आहारताय गवर्हति तेब तेसि योगसा कीसताय जुञ्जोनुज्जो  
 परिचमति ? गोयसा । सोइदियताए जाव चासिंदिपता अचिठताए अकतताए अपियताए अमकुवताए अमबामताए अचिठिष्यताए अचि  
 ञ्जियताए अइताए मोठकताए दुक्कताए नोसुइताए एयसि जुञ्जोनुज्जो परिचमेति ॥ तत्रा निटतया सदैव तेया सामाम्येना बल्लजतया  
 तथा - ङ्कान्ततया सदैव तद्गावना कमनीयतया , तथा - ङ्मिप्रतया सर्वेयामेव द्वेष्यतया , तथा - ङ्मनोद्धतया कथया प्यमनोरमतया , तथा - ङ्म  
 भोम्यतया चिम्सयापि अमभोगम्यतया तथा - ङ्नीष्विततया आसुमनिटतया , एकार्या वैतेअध्याः ॥ अचिठिष्यताएति ॥ अचिठ्येयतया वसेरमुत्पा  
 दकत्वेम पुनरप्यजिलापनिसिततया , अइद्यत्वे नेत्यन्वे अजुमत्वेनेत्ययः ॥ अइताएति ॥ नुरुपरिचामतया ॥ नोठकताएति ॥ मोलपुपरिचामत  
 येति सङ्ग्रहायापः , इत्थ सङ्ग्रहकिगायाविवरबसूत्रं क्वचित्पुत्रपुलकएथ दृश्यतइति , एथ नेरयिकाहारापिकारा तद्विययमव प्रमचतुटुयमाइ ॥  
 नेरइयाचमित्यादि ॥ सुवाहारियति ॥ ये पूर्वमाइताः पूर्वकाले एकीकृताः सङ्गृहीता इतिपावत् , अन्यवइतावा ॥ योगसति ॥ स्वल्पाः ॥ परिच

य पाइरे घनता भाग साक्षादे । अथाचिवा । सगला आहारनां द्रव्य आहारि पाहारपरिचाम जाग पुइकजाचवा ॥ कोसव । किसमवारिबरोने । सुज्योमु  
 व्या । यमोबमो । परिचमंति । १ परिचमे इतिशपले दुःखपदे परिचमे एवमो विस्वारपवववा मांदिनो जायवो ॥ इतिनेरकीनां भाषाराधिवारबको

यति ॥ ते परिचिताः पूर्वकाले शरीरेकस्य सम्पुष्काः परिरिति कृता इत्यप इतिप्रथम प्रश्न १ । इह च—सद्यः प्रसृत्यं काकुपाता दुर्बल्यते, तथा ॥ या  
 अहारियति ॥ पूर्वकाले आहृता सकृदेता अव्यवहृताया ॥ आहारिण्यमाया ॥ येन वतमानकाले आत्रियमाया सकृदप्रमाया अन्यवत्रियमा  
 याया पुद्गलाः ॥ परिरिचयति ॥ ते परिचिता इतिद्वितीया २ । तथा ॥ अयाहारियति ॥ ये शरीतकाले अयाहृता ॥ आहारिण्यस्समायति ॥ ये  
 वामानतेकाले आहारिण्यमायाः पुद्गला स्तेपरिचिता इतिवृत्तीया ३ । तथा ॥ अयाहारिया अयाहारिण्यस्समायेत्यदि ॥ अतीतानागताहरकजि  
 याजियेया वतुय ४ । इह च यद्यपि अत्वारएव प्रमा उक्ता, सया व्येते त्रियपिः सम्भवन्ति, यतः पूर्वाहृता आत्रियमाया आहारियमाया या  
 पुद्गला अयात्रियमाया अयाहारियमायायेति यद् यदाभीह सूचितानि, तेयुच एकैकपदाअपयेन पशुद्विकयोमे पम्बदय, त्रिकयोगे विद्यति, य

येरहृयाफनेतेपुद्गाहारियापोगलापरिणया १ श्याहारियाश्याहारिजामाणापोगलापरिणया २ श्युणा  
 हारियाश्याहारिजस्समाणापोगलापरिणया ३ श्युणाहारियाश्याहारिजस्समाणापोगलापरिणया ४

आहारिण्यव प्रत्युहारि कथेहे १-चेररबाच । नारकोने मते । इमयवत् । काइ पुनाहारियापायसापरिचया । जेपूर्वकाले यरोर सघाते एकीकोषा सं  
 पन्ना अरुना आहारा जेपुद्गल यदे स्सवते परिचाम्बा एपदिखोप्रत्य १ तथा आहारिया अयाहारिण्यमाया । पूर्वकाले आहारा सपन्ना या ० व  
 तमानकाले आहारकरेहे अरुना सपनेहे ते पोम्बसा । पद्मव परिचया यरिचाम्बा ए बोकी प्रत्य १ २ तथा ॥ आयाहारिया । अतीतकाले सगद्गान  
 ही आहारयानही आहारिण्यमाया । अनागतकाले आहारले सपद्मलेत पोम्बसा । पुद्मव परिचया एकीजोप्रत्य १ २ तथा ॥ अयाहा  
 रिचया । अतीतकाले आहारयानही सकृदप्रानही अनागतकाले आहारिण्यमाया । अनागतकाले पयि आहारयानही संयुद्धलेनही ते य  
 इहपरिचम्बा एकीकोषप्रत्य १ २ इही सूपने प्रत्युहारिचम्बा तथा चेरठिमाया एइनाभायते देखाचिहे अतीतकाले अयाहारा । अतमानकाले आहारले  
 २ आयाजिकाले आहारले १ इम अनाहारा ४ अनाहारले १ ए ६ पदअन्ना । तेइनेविये सयामी ६ इिकोमी १३ चिकसयोगी २

तुफयोगे पञ्चदशा, पञ्चकयोगे षट् पङ्कयोगे एकद्वि, छत्रोत्तरमाह ॥ अर्धं नवर ये पूर्वमाहता से पूर्वकालस्य परिबता य  
 इवानन्तरमेव परिगामनावात् १ । ये पुन राहता आश्रियमावाय ते परिबता, आश्रयता परिबामनावादेव परिबमग्नित्वा, आश्रियमावाता  
 परिगामनावस्य यत्नमानत्वादिति २ । वृत्तिरुतातु द्वितीयः प्रलोत्तरविकल्प एयंविधो वृष्टो, यदुत आहता आश्रियमावा पुद्गलः परिबताः य  
 दिर्यस्यन्ते च यतो यं तेनैवं व्याख्यातो यदुत येपुन राहता आश्रियन्ते, पुन सेषां क्षित्परिबताः परिबताय ये सम्पूजाः शरीरेषु सह  
 येतु मतायत् सम्पूष्यन्ते, बालान्तरेतु सम्पूष्यन्ते, तेपरिबस्यन्तइति, येपुन रमाहता आश्रियन्ते, पुन से शोपरिबता, अनाहतामा सम्प  
 खानायेन परिगामनावायात् यस्मा त्वाश्रियन्ते, ततः परिबस्यन्ते, आहतास्या वश्यंपरिबामनावाविति, ३ चतुर्थे स्वतीतत्रवियदाहरवत्रि  
 पाया अमायेन परिगामनावा दयसेयइति यत्तदमसारेणैव प्राग्भित्तविकल्पाना मुत्तरसूत्रादि वाच्यानीति, अप्य शरीरसम्पूष्यन्तपरिबामा

गोयमा षोडश्याणपुष्पाहारियापोग्गलापरिणया १ श्याहारियाश्याहारिज्जस्समाणापोग्गला परिगयापरिणम  
 तिय २ श्यागाहारियाश्याहारिज्जस्समाणापोग्गला जोपरिणयापरिणमिस्सति ३ श्यागाहारियाश्यागाहारिज्ज

चतुष्यसभाषो १३ पंचस १ इमसव १३ इवां भगवत उत्तरकवेहे - हेगोतम । चेरइसाच । नारकाने । पुम्बाहारिया । पूर्वकासेप्राकारा सपद्मा  
 पावसापरिषया । पुद्गलरी परिषया पद्गलातेव परिबामना भाववको १ । अने प्राहारिया । से पूर्वकासे प्राकारासे । प्राहारिक्खसुमाथा पोम्बसा  
 अने वतमानकासे प्राकारेते ते पुद्गल । परिषया । परिषया अने परिबमेहे । परिबमतिव । २ आश्रियमावने परिबमभावना वत्तमागहे २ तथा  
 पवाहारिबा । अतोतकासे प्राकारागही सग्रघानही अने वतागतकासे । प्राहारिक्खसुमाथा । प्राकारे सयइस्से । पोम्बसा । तेपुद्गल । शोपरिषया । प  
 रिबम्यागहीहे पूर्व पञ्चमुद्गावो अने । परिषमिअति । परिषमसे गुद्गाने अतरे ३ । अवाकाराया तथा अतोतकासे प्राकारागही सगुद्विवागही अने  
 पवाहारिक्खसुमाथा । अनायतकासे पचि प्राकारे गही । पोम्बसा । तेपुद्गल । शोपरिषया । परिषम्यागही । वापरिषमिस्सति । परिषमसे पचि



त् पुद्गलानां व्याप्यो जलम्भीति, तद्वर्द्धनायै प्रसयम्बाह ॥ नेरहायामित्यादि ॥ अपादिसूत्रादि परिक्रामसूत्रसमानीति कृत्वा तिदेश्यतो ऽधीता  
 नीति तथाहि ० अत्रापरिक्रया तथा चियावीत्यादि ॥ इहव पुसकेषु वाचनान्नेदो दृश्यते, तत्र न सम्मोहः कार्यं, सर्वत्राभिषेयस्य तुस्यत्वात्  
 केवल स्मरितकतसूत्रानुसारेण प्रससूत्रादि व्याकरणाभिष मतिमता च्यानीति, तत्र चिताः शरीरे अपंगता, उपचिता पुन यद्गुणः प्रदेरासामीप्येन  
 छरीरेचिताएवेति, उदीरितासु स्वभावतो ऽभुवितान् पुद्गलान् उदयमसि कर्मदेसिके करणविशेषेण प्रसिष्य या न्येदपते, उदीरणात्तत्र च्यद  
 चकरकेबाबोध्य उर्यदिज्जठरीरबायसा ॥ तथा वेदिताः स्वन रसविषाकेन प्रतिसमय मनुजनयमाना अपरिसमासा क्षेपानुनावाइति, तथा  
 मिर्जाबाः बाह्यस्वैना नुसमयमद्येपतद्विपाकवामितुक्ताएति ० ग्राहति ० परिणतादिसूत्राणां सङ्ग्रहाय ग्राया प्रयति, सासेयं परिणतपत्यादि  
 व्याख्यातार्था, तत्र एकैकस्मिन् पदे परिकृतचितोपचितादीं चतुष्पिषा आहता १ । आहताः आह्रियमावाय, २ । अनाहता आहरिप्यमा

स्वमाणापोमालाणीपरिणया जोपरिणामिस्सति ४ णेरुधयाणन्नतेपुष्पाहारियापोमालाचिया ॥ पुच्छा ॥ जहा  
 परिणया तथा चियायि एव चिया उद्यचिया उदीरिया घेइया णिज्जराणा ॥ गाहा ॥ परिणतचियायउद्यचिया

शरी ४ चिने यतेर सपककचच परिक्रामकचां पदसतो ययादिक इवे त देवाकवामी प्रयुचरेहे—वेरयायभते । नारकोने हेभगतन् । पुग्वा  
 वारिया । पूर्वपावाटिया । योयवाटिया । जेपुइस तेचियाकरीते चयपपूपाय्म्वेके शरीरकेपियेचिया । पुच्छा ॥ ए प्रत्र पूयो चिने उतर कचेहे—  
 चया । विम । परिचवा । परिचम्वा । तथा । तिर्वातिम । चियादि । चयपाम्वा । एवं । इन । चिया । चयपाम्वा । उवचिया । गाढाचिया । चयंनुदि  
 याम्वा । उदीरिका । जमाने उवचनहीयाया पनेते उदयपाच्छा । देइया । पीताने रवविपाने मतिसमये भोग्या । चिच्छिवा । रसपरिचामेकरो मिज  
 या जोवपदेयवी चवाबीवा । गाहा । परिचवा । मावा । विमपरिचामे परिचम्वा । चिया । चयपाम्वा । उवचिया । चयंनुदिचियाम्वा । उदीरिया । भावेकरो उवी  
 रिका । देदिवाव । भावेकरोवेदिया । चिच्छिवा । इनचयबीवा तेइनी वामिठदि कपोने । एचिक्कमिपदंमि । एवेचापवनेपि चारि चारिमेपुप्रमककचवा

षाड् ३ । अनाहता अनाहरियमाबाधे ४ । त्येय चतुरूप्याः पुद्गला प्रवृत्तिः, प्रसन्ननिर्वचनविषयाः स्युरिति, पुद्गलाधिकारादेवेमा सष्टावधसू-  
 त्रीमाह ॥ नेरहपाब् प्रते । अहविहा योगसाभिज्जतीत्यादि ॥ व्यक्तं नवरं ॥ निष्कृतिरिति ॥ तीव्रमन्मथ्यमतया नुप्रागभेदेन भेदवन्तो प्रवन्ति  
 उद्गतनकरापवर्तनकराण्यो मन्दरसा क्षीररसा, क्षीररसास्तु मन्दरसा प्रवन्तीत्यर्थे, उत्तरं ॥ कर्मवद्वग्यावमधिक्येति ॥ समानजातीयद्र-  
 व्याणां राशि द्रव्यवर्गणा साचीदारिकादिद्रव्याणां मयसती त्यतश्चाह—कर्मरूपा द्रव्यवर्गणा कर्मद्रव्याणांवा वर्गणा कर्मद्रव्यवर्गणा तामधिकृत्य  
 तामामित्य कर्मद्रव्यवर्गणासत्क्ताइत्यर्थः कर्मद्रव्याणामेव च मध्येतरानुप्रायपिस्तासि न द्रव्यान्तराणां मितिरुक्त्वा कर्मद्रव्यवर्गणा अधिकृत्येत्युक्तं  
 ॥ अणुवेवयापरपेवति ॥ चैवक्षुण्ड्य समुद्रपार्थे सतय अद्यवय वादराय' सूक्ष्मत्वं सूक्ष्मत्वं तेषां कर्मद्रव्यापेक्षयेवा वग  
 न्तव्यं मान्यापेक्षया, यत श्रीदारिकादिद्रव्याणां मय कर्मद्रव्यास्येव सूक्ष्मातीति, एव अप्योपचयोदीरबावेवमनिष्कराः क्षुब्धार्थभेदेन वाक्याः

उदीरितायेहयायणिजात्या । एक्षिक्रमिमपदमि चउद्धिहापोगलार्होति ॥ १ ॥ जेरहयाणजते कतिथिहा  
 पोगलानिज्जाति गीयमा कम्मद्वद्ववन्माणमहिगिञ्च दुयिहापोगलानिज्जाति तजहा स्थणूचेव वायराधेव १

तेकिम । बठमिद्रहापीक्ताहोति । पाहारा १ पाहारे २ पाहारे ३ पाहारे ४ एषारक्ता ५ हिवे पुद्गलना अधिकारवदो ए पठार  
 इमचकेले—चेरबाचमते । मारकीमे हेभयवन् । अहविहापोयसा । केतनापुद्गल किसेप्रकारे करोने ? भिज्जति । अणुमान भेदेकरो ने भेदाबधे तीव्रम  
 दमध्यभेदेकरो भेदपामे पुद्गलभेदवाव इत्यर्थ, उद्गतं मयवत्तन करवदो मन्दरस तीव्रसवाय इतिप्रय ? गीयमा । जेगोतम । समान  
 जातीय द्रव्यानी एमिते इत्यवगवावहीये तिका योदारिकादि द्रव्यनेपिचले तेमाटे कहेले—कम्मद्ववममममिनिचदुविहा । कर्मरूप द्रव्यवर्गणा प्रवणा  
 कम्मद्रव्यनी वमवा ते पायोने कर्मद्रव्यनेव मद्तरानुभावचित्ते पिचिद्रव्यान्तरनेनवी तेमाटे कम्मद्रव्यवर्गणा अधिकरोने इमकळी ए विधु प्रकारिकरोने । पो  
 यसाभिज्जति । पुद्गलभेदपामे । तंजहा । तेकिम । प्रचूचेव । प्रकृते सूक्ष्मपुद्गल । वादराधेव । वादरते सूक्ष्मपुद्गलकहीये सूक्ष्मपुं ए शोते कर्मद्रव्य अपेया

किन्तु अथर्ववे उपपद्यते ॥ माहारद्वयव्यवहारीकित्तिविति यदुक्तं तत्राय मन्त्रिप्राय, शरीर माश्रित्य अथर्ववे प्रोच्यते, तोषा शरका  
 द्वयेत्ययं प्रथमो नात्यतो अत्रमाहारद्वयवर्गणा मपिकृत्ये स्युक्तमिति, उदीरवापस्तु कर्मद्रव्याद्यामेव प्रव, अस्य उक्तस्यै पूर्वं कर्मद्रव्यव्यव  
 मपिकृत्येति ॥ उक्तमिति ॥ अथर्ववेति तत्र, इत्यर्थवर्तनं कर्मणा स्थित्वावरण्यवस्थापविशेषेण हीनताकरण, अथर्ववेतत्रत्वा दुः

परद्वयाणञ्जनेकतिथिहापोमालाचिञ्जति गीयमा स्याहारद्वयमगगामहिकिञ्च दुयिहापोमालाचिञ्जति तजहा  
 स्थणुचेत्र थायराचेव २ एव उयाचिञ्जति ३ णेरद्वयाणञ्जनेकतिथिहापोमालाउदीरति गीयमा कम्मवद्वयग  
 णमाहिकिञ्च दुयिहापोमालाउदीरति तजहा स्थणुचेत्र थायराचेव ४ सेसायिण्यचेत्र जाणियहा । वेदति ५  
 णिञ्जरति ६ उयाहिंसु ७ उयाहिति ८ उयाहिस्सति ९ सकामिसु १० सकामति ११ सकामिस्सति १२ नि

ये वाचवापबोवा। अथर्ववेति तत्र, इत्यर्थवर्तनं कर्मणा स्थित्वावरण्यवस्थापविशेषेण हीनताकरण, अथर्ववेतत्रत्वा दुः  
 पोषकाचिञ्जति । पुण्ड्र विवे इति मन्त्र १ गीयमा । हेनौयम । इहाए अमिमाव शरीरपायवोनेनय उपपद्य पूर्ववशाण्यादे ते यव उपपद्य पाहारद्वयव्यवहारीक  
 वे, यन्ववागद्वे तेषीव अवेहे—माहारद्वयमवचमहिगिष। पाहारद्वयमवचमहिगिष । पाहारद्वयमवचमहिगिष । पाहारद्वयमवचमहिगिष । पाहारद्वयमवचमहिगिष ।  
 तजहा । तजहेहे—अपूर्वेव । अथर्ववेतत्रत्वा दुः  
 से मपिकृत्ये १। अथर्ववेतत्रत्वा दुः  
 तन । उदीरवापस्तु कर्मद्रव्याद्यामेव प्रव । अस्य उक्तस्यै पूर्वं कर्मद्रव्यव्यव  
 तेकवेहे—अपूर्वेव । अथर्ववेतत्रत्वा दुः  
 ति । कर्मकित्तिन् हीन अर्थं ते निजवरुणवेहे १ । उक्तमिति १ । अथर्ववेतत्रत्वा दुः

पातमपीड दूर्य, तच्च स्थित्यादेर्दृष्टिकरकच्छक्यं ॥ सकामेसुति ॥ सकमितवन्त, साच्च सक्रमणं मूलप्रकृत्यत्रिजाना मुत्तरप्रकृतीना मुत्तरप्रकृत्याप्यवसायविक्रि  
 वेच परस्परं सम्भारं, तथाचाह—मूलप्रकृत्यत्रिका सक्रमयतिगुणवत्तराःप्रकृतीः तत्वात्सामूह्या दृष्यवसायप्रयोगेण ॥ १ ॥ अपररत्वाह  
 मोन्नूकपाठपरानु दसकमोहचरितमोहं च । सेसाहंपगइह उत्तरविशिसकमोनफिठं ॥ १ ॥ एतदेव निदिश्यते यथा कस्यचि त्स्वदेष मनुभवतो ऽधुन  
 कल्पपरिचयि रेवविषया जाता, येन तद्वय सद्देश्य मसद्देश्यतया सकामती त्यव मन्यत्रायि योस्यम् ॥ निषत्तान् कृतवन्त, इहप यि  
 सिध्दानां परस्परतः पुद्गलानां निषय कृत्या धारय कृषिसृष्ट्येन निषयत मुच्यते उद्गर्तनापवर्तमव्यतिरिक्तकरणाना मविषयत्वेन कर्मणो वस्या  
 तमिति ॥ निष्ठासुति ॥ निष्ठाचितवन्तो भितरां यदुक्तइत्यर्थः, निष्ठाचनच्च तपामेव पुद्गलानां परस्परविशिसिष्टाना मेकीकरय मन्योम्यावगाहि  
 ता, अग्निप्रतप्तमितिहन्यमानमूर्ध्वीकृतापरयेव सकसकरबासा मविषयतया कर्मणो व्यवस्थापनमिति यावत् ॥ निष्कृतीत्यादि ॥ पदानां सङ्ख्या

हृत्तिसु १३ निहृत्तति १४ निहृत्तिससति १५ निकाइसु १६ निकायति १७ निकाइस्सति १८ । सधेसुधि

पयइत्तनां उपनयवबन्धो उगतन पबिसेषू उगतनते क्षित्वादिवन् वधारवू।उयदिसु।क्षित्वादिवन् प्रतीतवासे। उवोदिति । क्षित्वादिह ई  
 नन्दे वर्तमानवासे २। उयदिससति । क्षित्वादिवर्तीन करसे पनागतवासे ३। सन्नामिति । मूलप्रकृति भूमिच उत्तरप्रकृति योनि भूम्यवसायविशेषिकरो मां  
 षी मांदि संभारिवो संभामच कधीये संज्ञमाओ पवीतवासे । १ संज्ञमावे वत्तमानवासे । संज्ञमावणे पनागतवासे ११ । विहृत्तिसु।बोधया पुहसकमे  
 ने माओ मांदि निषय कर्ततां एकठा धारवो तेहने कठियण्डे निधत्तकधीये प्रतीतवासे एकठावाप्या १२ विहृत्तिति । २ वत्तमानवासे एकठायापेदे  
 विहृत्तिससति १। ११ पनागतवासे एकठा यापणे । निकायसु ४। १४ निकायितकर्म जिम सईना गुण्या पन्निमादि तपावीजे ठयीजे तिवारे गाठा  
 कठिनशीय निष्ठाया प्रतीतवासे । निष्ठावति । निष्ठाये वत्तमान वासे । निष्ठाइरसति १। १८ निष्ठापणे पनागतवासे । सन्नेसुधिकप्रदम्भवम्यवमनिदि  
 निषय । एवं सुवचमद्रज्वरगणा प्रगीकार कटीने कइवो । गाथा । माथा । मेदिस । भेदिस । चिन्ता । चिन्ता । उवपिवा । पुहकीधा । उवोरिवा । उदीरि

पया ॥ प्रेक्षयइत्यादि ॥ नाथा यत्तार्थो नवर अथवर्तमसंस्कमिपह्निकाचनपदेपु त्रियिच फालो निर्देष्ट्य , अतीतवतमानाऽभागतकालनिर्देशेन  
 तानि वाच्यानीत्यर्थः इहच अथवर्तमाहीमामिव जेदादीमामपि त्रिकालता युक्ता न्यापस्य समानत्वात् ' केवल मवियतया अ तकिर्देशः सूये  
 क्तवइति अच पुद्गलाचिकारा दिवं सूत्रबहुष्टप माइ ॥ नेरइयाकमित्यादि व्यक्त अवर्त ॥ तेषाकल्पसाएति ॥ तेजः फार्मसंघ अरीरतया तद्रूपतये  
 त्ययः ॥ अतीतकालसमएति ॥ कालरूपः समयां मनु समाचाररूपः फालोपि समयरूपो , ननु यथादिष्टरूपइति, परस्परेश यिहोयया रकास  
 समयः ' अतीत कालसमयो ऽतीतकालस्य चोत्सर्पिंस्यादेः समय परमनिरुष्टौ शो तीतकालसमय सत्र ॥ पशुप्यथति ॥ प्रत्युत्पत्तौ वर्तमानो , नो

कश्चिद्वृत्तमगणमहिक्लि ॥ गाहा ॥ चेदियचिताउवचिता उदीरितावेदियायणिज्जिगा ॥ उद्यहणसक्रामण  
 णिहस्रपिकायणेतिबिहकालो ॥ १ ॥ नेरुद्वयाणनतेजेयोगला तेषा कश्चिद्व्याणगिरहति तेकि तीतकालसमए  
 गिरहति पशुप्यथकालसमएगिरहति स्थणागयकालसमएगिरहति गीयमा णोतीतकालसमएगिरहति पशु

यादे। दिवावेदिया । विजिजा । निवटा । उववट । होनकरा । सकामब । संकमाका । विरसप । सुसुइकरा । चिवायथ । जिवाथा पशवपदे ति  
 भिरवाको । । अतीतपनामतवर्तमानकप चिकिवकासकदू । दिवे पुइसनी अथिबारको एवारसूकवेवे— येरपासंभते । नारको हेममबन् । जे  
 पुवकातेवाकथपाए । जेपुइठ तेवस यटीर तथा कामबभरीर तथा कामबभरीर करोने यवेवे यतापता तेससकामब गरीररूप पुइस । गिरहति ।  
 पशेइ । तेज्ज् अतीतवाकथकप समसपथि समाचाररूप नहीं वाकनो समय ते परमपथि समयरूपपथि यर्षादिकपनही तेनाहीमाहि वि  
 येववको वाकथमयइति अतीतकाल जे कश्चिंकादिवनो समब ते परमनिष्ठपथ ते अतीतकाल समयकश्चिदे तेपतीतकाल समयेपइवे । पशुप्यथ  
 काथ समय निरर्थति । नुइवे । अथावबकाससमए यिच्छति । अथागतवाकथसमये नुइवे इतिमत्र ? । गीयमा । हेमीतम । अतीतकालसमए ।  
 अतीतवाकथसमये । निरर्थति । अरिगरी १ । पशुप्यथवाकथसमए । अतमानकाथ समये करीने । गिरहति । नुइ । अथावबकाससमए । अतमानकाथ

तातज्ञानेत्यादी प्रतीतानागतकामाविवययदप्रसतिदेसो विपयातीतत्वा द्विपयातीतत्वा तयो विनेष्टानुत्पन्नत्वेना सत्त्वाविति , प्रस्युत्पन्नत्वे  
 व्यभिमुगाम् यज्ञानि नाम्याम् ॥ गङ्गसमयपुरस्त्रहेति ॥ गङ्गसमयः पुरस्त्रतोवर्तमानसमयस्य पुरोवर्ती येपागते ग्रहसमयपुरस्त्रताः प्राकृतत्वा  
 दवं निर्देसो इत्यथा पुरस्त्रतयङ्गसमया इति स्यात् यथीयमाकाइत्यथः उदीरबाच पूर्वकालयथीतानामेव ज्ञवति यङ्गपूर्वत्वा बुवीरबायाः  
 यतउक्त प्रतीतकासमययथीता बुवीरयत्नीति यज्ञमाबातां यथीयमाकासां चायथीतत्वा बुवीरबाजाय सातउक्त ॥ गोपद्रुप्यकेत्यादि ॥ यद

प्ययुक्कालसमएगिरहति १ णेरइयाणन्नतेजेपोगला तेयाकम्भज्ञाएगहिएउदी  
 रति तेकिं तीतकालसमयगहिएपोगलेउदीरति पद्रुप्यकालसमयधिप्यमाणेपोगले उदीरति गहणसमय  
 पुरस्त्रकपोगले उदीरति गोयमा तीतकालसमयगहिएपोगले उदीरति गोपद्रुप्यकालसमयधिप्यमाणेपो  
 गलेउदीरति णोगहृणसमयपुरस्त्रकणेपोगलेउदीरति २ एव वेदति ३ णिज्जरति ४ णेरइयाणन्नतेजीवान्किच

मये करोने । गिरहति । गृहेजरी । चेररवाचं भते । नारकीने जेभगवन् । जेपाभसा । जेपुदगल । तेबाभयत्ताए । तेजस कामचपये । उदीरति ।  
 उदीरे । तेकितोयद्यानमसयगङ्गोए । तेचूं प्रतीतकासमये गुणा । पोभन्ने । यदस । उदीरेति । उदीरे । पद्रुप्यकालसमय । वत्तमानकाससमये । जे  
 यमाचे । नेतावळा । पागने । पुदगल । उदीरेति । उदीरे । यङ्गसमय पुरस्त्रहे । गुङ्गसमयबकी भागजसमये । पागले उदीरेति । पुदगलनी उ  
 दीरबाचरे इतिप्रत्य उतरं । गावसा । जेगौतम । तीबकाससमय गङ्गोए । प्रतीतकाससमय गङ्गो । पोगले । पुदगलप्रते । उदीरेति । उदीरे । पोपद्रुप्य  
 यज्ञानसमय येषमाचे । वत्तमानकाससमये यथीयमाच कङ्कर्ता यथीता । पागले । पुदगल तेजनी । उदीरेति । उदीरपाचरेजरी । पागङ्गसमय  
 पुरस्त्रहे पागने । जेगुङ्गसमयबकी पुदगल यानन्व जेममय तेजनेधिये गुहले जेपदगल तेजनी । उदीरेति । उदीरबाजकरे । एवं । वेवेति ।  
 वेहे । निज्जरति । प्रमज्जिजरे वेदनाभिजरा संवेपदि उत्पत्तिएथोव जाचबो ॥ चिबे कामधिक्कारवकी एचण्मूनीचहे—चिरइयाचभते । नारकी जेभ

पया ॥ श्रेयश्वत्यादि ॥ गाया तथापि सवरं अथर्वतमसंक्रमनिचतनिकाचनपदेपु त्रिविधः कासो निर्देष्टव्यः, अतीतवर्तमानाभिनगतास्तनिर्दिष्टीन  
 तानि वाच्यामीत्यर्थः इह अथर्वतमसदीनमित्त्वं जेदाहीनामित्त्वं त्रिकालता युक्ता न्यायस्य समानत्वात्, केवल मयियशया च तत्रिर्विद्युः सूत्रे  
 क्तवति अथ पुद्गलाधिकारा दिव ब्रह्मचतुष्टय माह ॥ मेरुश्यासमित्यादि व्यक्त सवरं ॥ तेजः क्षाम्नेष अरीरतया तद्रूपतये  
 त्ययः ॥ अतीतकालसमयस्य ॥ कालरूपः समयो ननु समाचाररूपः कासोपि समयरूपो ननु यथावित्स्वरूपइति, परस्परेश्वर यिदोपया काल  
 समयः अतीतः काससमयो (तीतकालस्य बीस्वर्षिंस्वादे समयः परमनिकटो ह्यो तीतकालसमय' सत्र ॥ पञ्चम्यस्य ॥ प्रत्युत्पन्नो वर्तमानो, नो

कम्मवसुमग्गणमहिक्किञ्च ॥ गाहा ॥ त्रैदिव्यचिताउवचिता उदीरितावेदियायणिज्जाया । उसुहणसकामण  
 णिइसुणिक्कायणेतिथिहकालो ॥ १ ॥ णेरइयाणत्तजेपोगळा तेया कम्मत्ताणुगिरहति तेकि तीतकालसमण  
 गिरहति पञ्चम्यकालसमणुगिरहति स्थुणागयकालसमणुगिरहति गोयमा णोतीतकालसमणुगिरहति पञ्च

यावे दिवावदेहिया । विचिखा । विजया । उयइव । होमकरा । सकाम । संकमाव्या । विजय । समइकरा । पिबायव । तिकाया एसवपदे ति  
 विचालो ॥ अतीतकालतवर्तमानरूप विविधकाशकश्च ॥ द्विवे पुद्गलानां अधिकाररूपको एषारसूक्ष्मकेशे—चरयाणते । नारको हेमगवन् । त्रै  
 पुष्पातेकाशचत्ताय । वेपुइव तेषस्य शरीर तथा कामशरीरं करोति पेशेवे एतावता तैलसकामं च शरीररूप पुद्गल । गिरहति ।  
 पेशेव । तेन । तेषु अतीतकाशरूप समयपदि समाचाररूप महीं काशनो समय ते परमपदि समयरूपपदि वर्षादिकपतनीं तेषांशोमाहिवि वि  
 मेववबी काशसमयइति अतीतकाश चै उच्चपिच्छादिकनो समव ते परमनिष्ठपथ्य ते अतीतकाश समवकश्चिचे तेषतीतकाश समयेपेशेवे । पञ्चम्य  
 काश समय पिरहति । गृहेवे । अचानरकाशसमय पिरहति । अचानरकाशसमय गृहेवे इतिप्रत्यय १ । मोयमा । हेवोतम । अतीतकाशसमय ।  
 अतीतकाशसमये । पिरहति । अचानरी २ । पञ्चम्यकाशसमय । अतमानकाश समये करोति । गिरहति । गृहे । अचानरकाशसमय । अतमानकाश

न्यः गगतम भाव नियमा वनितस्य कम्मणो नावसितस्येति इह सङ्गृहीतगणा वन्धोदये त्यादि प्रोवितायां कयल मुदयशब्दे मोदीरका  
 गृहीतति उक्ता नारकयत्तव्यता अप चतुर्विंशतिदशककमागता मधुसुमारयत्तव्यतामाह ॥ अष्टकुमारारुमित्यादि ॥ तत्रासुरकुमारवत्तव्यता  
 नारकयत्तव्यताव श्रया यतः ॥ ठिइजसासाहारेत्यादि ॥ पापोक्तानि सूत्राणि ४० ॥ परिचयवित्यादि ॥ गाथायुक्तीत्यादि ६ ॥ जेइयवित्यादि ४  
 गाथा यहीतानि १८ ॥ यथोदयेत्यादि ॥ गाथायुक्तीत्यादि ८ ॥ तदव द्विसप्तति सूत्राणि नारकप्रकरबोक्तानि प्रयोविशता असुरादिप्रकरबेषु समानि

णिज्जारेति ८ ॥ गाहा ॥ यथोदयवेदोवह सकमणिहस्रणिकाएसु । अघलियकम्मतुनवे चालियजीवाउणि  
 ज्जारए ॥ १ ॥ असुरकुमारानन्ते केवइयंकाल ठिई पयससा गोयमा जहयेणदसवाससहस्साइठिई पयससा

निजरी पवि । चापचमियकव्य । अपवसितकम्म । चिज्जारेति । निजरेनेही एधाठसूचकत्ता ॥ इहीमाहा । समुहबोगाथाकहेइ—वर्धति । नवाकमना गृह  
 व १ । उइय । उटयतेविपाक वेदनकम्म उन्वेनवो पाम्मो ते पाक्की उटयेपाचीये नेठवीरवा २ । वेड । तथा वेदवो ३ । प्रवह । धमनामित्यादि पय्यव  
 माय वियेणवतीशोचकएव ते पयवत्तन ४ । सकमे । सइसवमते धमवेणपणे सकमावे ते सज्जामचकहीवे ३ । तह । तथा । चिहत्त । बोखरा पुदग  
 पना मोहामोहि समककरो धारवू ते निधत्त ५ । चिवाए । बोखराखे पुदमस तेमोहीमोहि एत्थिभाषकरवे एत्थिभाषन ज्जिमसूरुनो समइ प्रम्पिसू त  
 पावे झटो एवोभाविकाले तिम ए सातने विणे ७ । अचलियकव्यतभवे । अपवसितकर्मसोक्ते पने पाठमो सूच निजरा । वसिय । वसितकम्म । जीवापो  
 जोत्रप्रदेगवो । चिज्जए । निजरावरे ८ एमारकीमो वत्तव्यताकही ॥ इवि वठवीस दइव कमागत असुरकुमारनो वत्तव्यता कहेइ—असुरकुमारा  
 व । धमरनिकायने निवे अपना पने कुमारनो परेखसे तेइना देव त धमरकुमारदेव कहीये, धमरकुमारनो । भति । हेभगवन् । जेवइयकास । केत  
 पाकावनी इइ पयससा । चि्विति कही इतिप्रत्त, उतर । मायमा । हेमोतम । कइसेवं । कइयन्ता । एसवाससइक्यां । उयसइसवपमी । इइ पयससा ।  
 चि्विति कही । ठकासेर्नमातिरेगसागराजम । उरउठवकीवो एक्कमामरोपम भाभेरो चि्वितिकही ते उतरयेरोमा वसोन्ने ने पायीने, चापवो । वसी मो



नातिव्याप्त्युपपत्तिरिति अथ कर्माधिकारादेवेय मष्टयुग्मी ॥ नेरइयायमित्यादि ॥ व्यक्ताथ नवर ॥ औयावद्विषलियति ॥ औयप्र  
 वेधेभ्य वनितं मेघनवस्थानशील तदितर च्चलित तदेव यथाति यदाह-रुद्रैर्देवीं म्यरुदे शस्परगादिवरिग्रतोयोग्य । यथातियोग्येतोः क  
 र्मेष्टेहाच्यवचन ॥ १ ॥ एव मुदीरबावेदनापवर्तनासकमभनिपत्तिकापनानि ज्ञाव्यानि निभरतु पुद्गलानां निरसुनत्वीकृताना मात्मप्रदेवो

लियकमग्रधति शुचलियकमग्रधति गोयमा गोचलियकमग्रधति शुचलियकमग्रधति १ णेरइयाणन्नतेजी  
 याठिकिचलियकमग्रधति शुचलियकमग्रधति गोयमा गोचलियकमग्रधति शुचलियकमग्रधति २  
 एव वेदति ३ उपहति ४ सकामति ५ निवृत्तति ६ णिकायति ७ सखेसुशुचलियगोचलिय ॥ णेरइयाणन्नते  
 जीयाठ कि चलियकमग्रधति शुचलियकमग्रधति गोयमा चलियकमग्रधति णीशुचलियकमग्र

मग्र । ओवाथा । ओवप्रदेयवको । विषलियकम । पूरवृत्तम ते । वधति । वधे पवथा । पवनिगकम । ओवप्रदेययो चर्चनयो तेकम । वधति । वा  
 रे । इतिप्रय उत्तर । गोयमा । हेगोतम । श्चलियकम । तेवसकमने सगिबरी चक्षितकम । वधति । वधिनो । पवसियकम । पवनिगतकम । वधति  
 वधि । एषुपविकीकणो १ । शेररबावमते । गारवो हेमवन् । जीवापो । जीवप्रदेयवो । विषलियकम । वधति । वधिनो । पवनिगतकम । वधति  
 पवविचकम । पवथा । ओवप्रदेयवो पवक्षितकमनो । उदरैरिति । उदोरथावरे इतिप्रय, उत्तर । गोयमा । हेगोतम । श्चलियकम । उदरैरिति । उदोरथावरे  
 नो उदोरथा वरेवकी । पवक्षितकम । पवनिगतकमनो । उदरैरिति । उदोरथावरे इतिप्रय, उत्तर । गोयमा । हेगोतम । श्चलियकम । उदरैरिति । उदोरथावरे  
 ति ३ । हीनकरया । सकामति ४ । संकामति ५ । धारवो । विषलियेति ६ । धारवो । सखेसु । पवनिगकम । पवनिगतकम । वधति । वधिनो । पवनिगतकम  
 चाक्षितं । प्रकीचक्षितकम ७ । द्वि पाठमो मृचकहेवे-शेररथापं भत । गारवो हेमवन् । जीवापो । जीवप्रदेयवो । विषलियकम । पवनिगतकम । वधति  
 कम । विष्कैरिति । निवृत्त । पवनिगकम । वापचक्षितकम ८ । विष्कैरिति । निवृत्त । हेगोतम । पवनिगतकम । वधति । वधिनो । पवनिगतकम । वधति ।

गणिष्टिसिप्य । तत्यण जेसेष्णान्नागणिष्टिसिपु सेष्णुसमयंश्चथिरहिण्थाहारठेसमुप्यज्जइ । तत्यणजेसेष्था  
 न्नीगणिष्टिसिपु सेजहयोगवउत्यन्नत्तस्स उक्कीसेणसाइरेगस्सवाससहस्सस्सथाहारठसमुप्यज्जइ । अ्यसुरकुमा  
 राणनतेफिमाहारमाहारिंति गोयमा दधुंअणतपणुसियाइवइइ खेत्तकाउजावपखवागमेण सेसजहाणेरइ  
 याण जाय तेणतेसिपोगलाकीसत्ताजुजापरिणमति गोयमा सोइठियत्ताए सुरुधत्ताए सुत्रखत्ताए इठ

निवर्तितकरीवे से प्रभागनिवर्तित कहीने । प्रथामीग । प्रजापता पाहार ते प्रनाभागबकी । विवर्तितिय । विवर्तौ ते प्रनाभीगनिवर्तित कश्चिये ।  
 तत्य । तिङ्गिणे पाहरमहि, वामे वाक्कावकारि । अहेपवाभाजिचिन्तियसे । जेजीव प्रजाभीग प्रजापता पाहारजकरे ते प्रनाभीगनिवर्तित  
 पाहार । नेपणुसमय । ते जीव समयसमय प्रते । प्रविरदिण । प्रविरदितावका करे तेइने समवे २ प्रनाभीगनिवर्तित । पाहारो । पाहारोनुं प्रवे  
 समुप्यज्जइ । उपजे । तत्तर्षजेने । तिङ्गिणे । प्रामीगिचिन्तिय । प्रामीं जपिता पाहारो—निवर्तितकरे । सेवइसेव । ते जघन्वयवकीतो । एतत्तभण  
 क । प्रत्यभन्ते एव उपवासभो सत्तावे एकदिनेपाहारकरो पवे वीजादिज प्रतिक्रमो बोवेदिनवसो पाहारकरे । उक्कीसेव । उट्ठववकीतो । वारि  
 गम् । सातिरेज्जार्इ प्रविक् । वासमइसक्क । वयसइसे । पाहारो । पाहारोनुं पाहारो । उपजे एतत्तभन्ते जघन्वयवकिति प्रायवीवे प्रनेसा  
 थिखर्ष सइस ते उट्ठववकितियायो जाववो, वसी गीतम पूरुवे—प्रसरकमारपमते । प्रसुरकुमार हेमगवन् ! बिमाहार । काइ पाहारमण  
 पाहारिंति । पाहारिणुणे इतिपण, उत्तर । गोयमा । हेगौतम । द्रव्यो । प्रवत्तपणसिवाइठव्याइ । प्रनतप्रदियावक द्रव्यप्रते पाहारि । एतत्तकाव  
 भावपणवागमेण । पुंनकाव भाववो विम यीम्मानाणार्थवत्त पवववा वीजाउपगमावे कइवे— तिम विचारवा । सेस । येव वावता । जहा । जि  
 म । वेरएयाव । नारकीने पूवकत्ता विचार तिम इहापिचि करवो । जाम । वावत् । तेषं । तेकारववको । तेसिं । तेप्रसुरकुमारदेवताने । पीगगता । पुद  
 गव । प्रवापचयभम कीमता । मुखोर । विधीतरे वारवार । परिचमति । परिचमे पुट्ठवाव । इमपुष्पां, उत्तर । मीयमा । हेगौतम । सोइदिक्कताए

भवरं विन्दे योगं ॥ उक्तीसेव साहरेण सागरोयममिति ॥ यदुक्तं नैहलिसल्लं मसुरकुमारराजं मांश्रित्योक्तं यदाह - बभर १ वलि २ सार १ मंश्रियं १  
 तिसप्तवद्दपोवाकति ॥ सप्तानां स्थाकानां नुपरी तिग्यते सोक्त्सल्लं केव मावकते - इठस्सप्रकवगङ्गस्स निरुवकिठस्सगजुको ॥ गंगेकसासकी  
 साव यथासुत्तिवुयइ १ १ इतपावूचिसपोवे सप्तपोवाकिसेलेवे । लावावसत्तइतरिए एसमुहुत्तविपाइएत्ति ॥ २ ॥ इत्त कपत्त मूङ्कासादि त  
 ज्वपन्यस्वित्तानां भित्त्वा वगल्लव्य मुत्तुठ सोत्तुटस्सित्तिकाणां भित्त्वेपि ॥ पठत्तयत्तस्यत्ति ॥ पठत्तयत्तस्यत्ति ॥ ततः सास्यो

उक्तीसेवसाहरेणसागरोयम ॥ अशुरकुमारराजते केवइयकालस्सस्थाणमतिवा पाणमतिवा ऊससत्तिवा नी  
 ससत्तिवा । पुच्छा । गोयमा जह्मेणसत्तइयोयाण उक्तीसेणसाहरेणस्सपरकस्सस्थाणमतिवा पाणमतिवा  
 ऊससत्तिवा नीससत्तिवा । अशुरकुमारराजतेसाहारेणी हता साहारेणी । अशुरकुमारराजते केवइयकाल  
 स्ससाहारेणसमुप्यज्ज गोयमा अशुरकुमारराजदुयिहे साहारे परसंसे तजहा साजागणिधुत्तिपुय स्थणानो

तमपूजे । पशुकुमाराव मते । पशुरकुमार ईमववन् । वेवइयकावस ॥ वेतसेकासे । पावमतिवा । सासासास केमूके १ । पुष्वा । इतीप्रयत्तकी  
 वा तिवारे मयवंतकडे । गोयमा । ईगोतम । जइकेव । जवन्वककी । सत्तपं योवाच । सांसेकोवे एजवव्यस्यति पाववीकम् ॥ रोगरहित पुठवते सा  
 ते सासासासे एव साव कइरीवे । उक्तीसेव । उक्तीसेव । साहरेणसुपसल्ल । एवपचभाक्तेरे । पावमतिवा । सासोत्थाससाव उरकटस्सिति पा  
 वी वाववा १ । पशुकुमाराव मते । पशुरकुमारेदेवता ईमववन् । पाववो । साहारेणी मोजववावकडे साहारेणी पवकइसे प्रयोजनके जीइमेत  
 साहारेणी कइरीवे । इतिप्रयत्त, चत्तर । साकोले इता । ईमववन् । साहारेणी । साहारेणी मोजववावकडे, वकी गीतमपूजेहे - पशुरकुमारावमते ।  
 पशुरकुमारने ईमववन् । केवइयकावस । वेतसेकासे । साहारेणी । साहारेणी । ममुप्यज्ज । अपवेतिवारे भगवत्तवावा - गावमा । ईगोतम ! पशुर  
 कुमाराव । पशुरकुमार देवतानि । दुभिये । ईमववन् । साहारे । साहारे । तजहा । तजहा । तजहा । तजहा - पाभामनिधुत्तिपुय । जावता जेपाहावकरी

तत्रापि म श्रित्या यमयं यदाह - दादिबदिगन्धगलियं शीटमुपुत्तरिष्ठाभिमिति ॥ मुहुत्त उक्तं नवद्वयं प्रयत्नानु द्विप्रचति रा

यमा जहयाणसप्तहयोत्राण उक्तीसेणमुक्तात्तपुक्तात्तस्वश्र्याणमतिवा पाणमतिवा ऊससतिवा नीससतिवा ।

णागकुमाराणजतस्याहारठी हता श्याहारठी । णागकुमाराणजतेकेवइयकालस्वश्याहारठेसमुप्यज्जइ गोयमा

णागकुमाराणदुयिहेश्याहारपयते तजहा श्याज्ञोगिण्णुत्तिण्य श्र्याज्ञोगिण्णुत्तिण्य । तत्थणजेसेश्र्याणाञ्चोग

भागजमाराणभते । नागकुमारदेवने हेमयवन् । केवइयकाण्णसुभाणमतिवा ४ । केतसेकावे सासासास पुवे इतिप्रय , उतर । गायमा । हेगोतम । अइ  
नवमत्तपुक्तावाच । अथत्वे माते म्माके सामासास जाण्णवा अवस्वस्विति पात्रयोने । उक्तासेषमुहुत्तपुक्तासुभाणमतिवा ४ । उरकटयको ती सेभोससे  
तिइत्तर मासायाम एकमुत्त ते प्रयत्नवे सेवको मणी नवताए सख्याविद्येवनी सिद्धिमाहे प्रबल्ल सप्रावे ए उरकट स्मिदिनाघयोने पुवे , यली योत  
म पडेले - नागकुमाराणभते । नागकुमारने हेमयवन् । पाहारठी । पाहारली वाखावे । वंता । विमत्तु कचे ते तिमज इसे पवे वंता इठी कहीयेवे  
पाहारठी । पाहारलीवाहा यली योतम पूवेले - नागकुमाराणभते । नागकुमारने हेमयवन् ! केवइयकालसुभाण्णइ । केतसेकाले पाहारली इष्ठा  
समुप्यज्जइ । अथे इमे पूव्यायका उतर । गायमा हेमोतम ! नागकुमाराण दुयिहे पाहारे पससे । नागकुमारने विहुमेरे पाहार काणी । तजहा । ते  
कवेले - पाभागनिवर्तियेय । पर्याता वस्साये तइवावस्सावे जाणता पाहारकरे ते पाभागनिवर्तित । पन्नाभोननिव्वत्तिण्य । अणववने समवे अ  
पर्याना वस्साये प्रबवा जाणता पाहारकरे ते पन्नाभोननिवर्तित । तत्त्वमेपन्नाभागनिव्वत्तिण्य । तिर्णा के पन्नाभागनिवर्तित पाहारकरे । सेपस  
ममयद्विद्विण्ण । तेजोव ममव समय प्रते पविरद्वितयका करे निरंतरकरे । पाहारठे । ते भविस्ववपणे निरतर पाहाराभिसाप । समुप्यज्जइ । अण  
ज । तत्त्व अने पाभागनिवर्तियेय । तिर्णा के पाभागनिवर्तित पाहार करे । सेवइसेव वदत्वभत्तसु । ते अणव वतुवभत्त एवातिरे पाहारली इष्ठा  
अपवे । उक्तासेव दिवसपुक्तासु । उरकटयकीती दिवसपुक्तासे वेवीमांणी नवतार प्रबल्ल कहीये ते नसे । पाहारठे समुप्यज्जइ । पाहारली इष्ठा ज

परि यच्च दिने नृजा शीराय आतिक्रम्य पत्नीं नृजतइतिभावः नागकुमारवक्तव्यताया ॥ उक्तीषेण देवुणाइ दीपसिठवमाइति ॥ यदुक्तं तदु

त्ताए इच्छियत्ताए अन्निज्जियत्ताए उहत्ताए णोअहत्ताए सुहत्ताए णोअहत्ताए नृजोअजोपरिणमति । असुरकुमारानन्तेपुत्राहारियापोगलापरिणया असुरकुमारान्निलावेण जहाणेरइयाण जावचालियकम्मणिज्जारेतिर

पाणिकुमारानन्ते केवइयकालठिठपयत्ता गीयमा जहयेणवसथासहस्वाइठिठपयत्ता उक्तीसेणदेसूणाइदो पलिउयमाइ । नागकुमारानन्ते केवइयकालस्वअणमतिवा पाणमतिवा जससतिवा नोससतिवा । गो

त्रान्ते करामिणेव एनाहिकयच्च सोमस्त्रिवा । सुइवत्ताए । सर्वोत्तमए । सर्वोत्तम मनाइररबनेकरो । इइत्ताए । सबभगा पावसुबबारि पत्नीवकी । इच्छिवत्ताए । ईषितेकरो बध्द सखदायीपत्नी । अमिन्निवत्ताए । वारवारसोइवयाय तोभसाइसीवाइये । उहत्ताए । जहगवे जइइव प्रथमइवी । सोपइत्ताए । नहोपथोवाइपये मारकीनीपयेवावे । मुइत्ताए । सबभाये मनुष्यनी पयेवाये । सोइइत्ताए । मुइत्ताए । सुबभाये मनुष्यनी पयेवाये । सोइइत्ताए । नही सुखकरो सबमनावकपत्नीवकी । सुखीमुखीपरिणमति । वारवार परिणसे प्रयागावे ममो नवे वकी योपमपूजे--प्रसरकमारावन्ते । प्रसुरकुमारने इमयवन् । पुष्पाइरियापोगलापरिणया । पूर्वपद्मा पुदमम पुट प्रपुटरूप ते परिणया उदवथाया । प्रसुरकुमारामिहावेवं । प्रसुरकुमारनां पाठावनेदिये । जहावेरइवाच । जिन मारकीने पाठावे पूर्वकथं तिम प्रसुरकुमारने विये पच्चि कथं जाव नावत् सोषप्रदेयनी । वसियवच्चिक्खरेति । वसितकर्म निज्जरे वयवरे इत्थं, ए प्रसुरकुमारनी वत्थयता वकी । इवि नागकुमारनी वत्थयता पूजे--पायवमाराव मते । नायकुमारदेवने । इमयवन् । वेवरथं वार्धद्वितीपयत्ता । वेतने वामनी व्विति वकी ? एसे मयुकींसे उतर मनवान सोचा इयोतम । उहवेवइववावसइसाइ । अवत्तवकी दम सहस्र वपनी । द्विपयत्ता । क्विति वकी ए सामान्यदेवनी पयेवाये । उक्तीषेव देवुणाइ दापधिपोवसाइ । उरत्तवत्तवकी देयेवथा इव पत्नीपमनीक्विति एव उरत्तवत्तवकी इत्तदेवनीना इत्तपानवी वकी पनी सोतम पूजे--

गरपुङ्गवी २२ । पूर्णपारमबोधम मोलमसहारगयोसति ॥ १ ॥ वमायासति ॥ वियमा विविपावा मात्रा कानविमागो विमात्रा तथा इवमुक्त  
 प्रयति त्रियमकाला पृथिवीकायिताना मुञ्चामादिक्रिया इत्यतः ॥ अज्ञानेन इयाकमित्यतिवेद्यात् ॥ ऐतच्छे प्रसखे  
 ज्ञानमो गच्छाहं कानठे अक्षररठिंयाइ इत्यादि ॥ इत्यथ ॥ निवापाएयं छद्विमिति ॥ व्यापात आहारस्य लोकात्मनिफुटेपु सम्भवति मान्यत्र  
 ततो निफुटन्त्यो इत्यत्र पदसु विषु कथ पतसपु पुत्रांदिविपु कद्रु मपय पुद्गनयइवं करोति तस्य स्थापना ॥ याचापयपुवृषति ॥ व्यापात म्यती  
 त्यश्रयातम निफुटेनु तत्रप ॥ विपतिविमिति ॥ स्मरप्रवाकितिसुपु विषु माहारयइव स्भवति, कथ यथा पृथिवीकायिको इत्यतने उपरितनेवा

ससतिया नीससतिवा गोयमा धेमायाएश्याणमतिवापाणमतिवा ऊससतियानीससतिया । पुढयिकाइयाण  
 नतेश्याहारठी हतागोयमा आहारठी । पुढविकाइयाणनतेकेयइयकालस्वस्थाहारठेसमुप्यज्जइ गोयमा अ  
 णसमयश्रुथिरहिएश्याहारठेसमुप्यज्जइ । पुढविकाइयाणनतेकिमाहारतेति गोयमा वृष्टठजहाणेरइयाणं

पृथिवीकाइयाणे एतन्निजाने सामाधान एइवा कश्चो सकोये नशी ४ वमी गीतम पूजेहे । पुढविकाइयाणभते पाहारठी । पृथिवीकावना जोवने हेम  
 गवन् । पाहारठीएश्याहे १ भगवत कहेहे—इंतगोयमा पाहारठी । इंतगोयमा पृथिवीकाइया पाहारती पर्वीहे । पुढविकाइयाचं भते केवइय । ए  
 थिवी काइया आशने हेमगवन् । फेतस । कासस पाशाएडे समुप्यज्जइ । कास पाहारतीएश्या जपजे इतिप्रय उत्तर । गोयमा पञ्चसमयं पविररिप  
 पञ्चममये सातल्पने पविररिइत निरुते । पाशाएडे समुप्यज्जइ । पाशाराभिमाय जपजे । पुढविकाइयाचं भते । पृथिवीकाइया आश हेमगवन् ।  
 क्रिमाहार माहारतेति । एवं पाहार पाहाररे न्ने इत्यं इतिप्रय उत्तर । यायमा दृष्यथोववा वेरइयाच । हेगोतम । प्रथवी क्रिम नारकीने पूर्वकञ्चो  
 तिम इशीपनि ज्ञापना । विम्यापाएव छद्विमिजावायपठव । दाघात पाहारती लोकांतित्कटनेकिये संभवे लोकेस्मानखे नशी तेमाटे लोकाता निष्क  
 टटानो बोजेन्यागरे छद्विगिना पाहारपुतेते क्रिम पूर्वादि ४ उइ ५ यथा ६ एव छद्विगिनो पञ्चमगइव करे व्याघातपात्रो लोकांतने सूहे । सिय

पवन्यः सङ्घविजोः समयेप्रविद्ध ॥ एव सुवृक्षकुमारावति ॥ नागकुमाराकामिव सुपुत्रकुमारायात्मपि स्थित्यादि याच्य । इवच क्रियदुर यावद्वाच्य  
 मित्या ॥ आवयवियदुमारावति ॥ यावत्स्वरवात् विद्युत्कुमारादिपरिय ॥ यथां चेषापक्रमो यसेप - प्रसुरा १ नाग २ सुवक्षा ३ विज्यू ४ अग्नी  
 य ५ टीथि ६ त्वरीय ७ । विसि ८ वाक ९ यदियाविय १० दसनेपात्रवधामी ११ ॥ ११ ॥ अथ प्रवतपतिवक्तप्रयतानन्तर द्रवकफमादेय पृथिव्यादीना  
 स्थित्यादि निरूपयन्ना ० पुत्रवोत्यादि ॥ अथ मावनस्पतिमूत्रा अवर ॥ अतोमुद्रति ॥ मुद्रतस्या न रत्नमुद्रत निष्कमुद्रतमित्यथः ॥ उक्तो  
 सेव बाभिसि वाससहसाङ्गति ॥ यदुक्त तत् सरपृथिवी माथित्या वगत्तव्य यदाङ्ग - मृशाय १ सुद्र १२ धानुय १४ मणोविला १६ सफराय १८

णिहृत्सिण्णु संश्रुणुसमयश्चविरहिण्णुआहारठेसमुप्यज्जइ तत्यणजेसेश्यान्नोगणिहृत्सिण्णु सेजहस्येणचउत्यन्नत्तस्स  
 उक्तोसेअविद्यतपुज्जत्तस्सश्याहारठेसमुप्यज्जइ सेसजहा अ्यसुरकुमाराण जाव अलियकम्मणिज्जरेति ॥ एव सु  
 वय्यकुमाराणवि जाव यणियकुमाराणति ॥ पुढविकाइयाणमते केयइयकालिठिईपयात्ता गोयमा जहस्येणश्च  
 तोमज्जत्त उक्तोनेणयाधीसवाससहसाङ्ग । पुढविकाइयाणजतेकेयइयकालस्सश्याणमतिवा पागामत्तिया ऊ

पत्ते । मम जहा । आकता सर्वं जिन । अत्तदुमाराव । अमुत्तमारने अन्ना गिनसवकइवो । जाव अलिय कम्म । यावत् अमितकम । विज्जरेति । नि  
 जरे अयकरे इत्थ । एव सस्यकुमाराववि । इम सुवत्तुमारनेपवि कइवा । जावअभियकमारारवति । यावत् अत्रितकमार तांइ कइवो । ए सुवत्त  
 पत्तोनी अत्तवत्ताजही १ त्तिरे द्रवकफमात्त एविजोनी अत्तवत्ता कइसे - पुढविकाइयाण मते । एविजोवायनी अभागवन् । अेतसाकाननीस्थिति कधी  
 इतिमत्त । उत्तर । मायमा अत्तसेव अत्तासुइत्त । जेगोतम । अत्तवत्तको अत्तमुद्रत । अत्तसेवपावावीस वाससहसाङ्ग । अत्तद्वयको मावीससहसाङ्ग  
 अत्तद्विजोकात्तयासी अत्तो । अत्तविकाइयावमते । एविजोवाय अभागवन् । अत्तवत्तको पाचमत्तिया । अेतनेकाने सामीच्याम अ्ते मुक्के इसे गीतम  
 पूज्जाइवा ममवत्त उत्तर कइसे - मायमा अेतान्वाए आत्तमत्तिया ४ । जेनेतम । जेइगां सासीव्वासनी अथावाअनी विविध माथा काय विभाग एतके

गरपुत्रयी २२ । मृगशारसर्पदस मौसमप्रचारत्राघीघृति ॥ १ ॥ वेमापाएति ॥ विपमा विविपाया मात्रा कात्रविमागो विमात्रा तथा इवमुक्तं  
 प्रयति विपमरूला पृथिवीक्रापिकाना मुष्कामात्रिक्रिया इयत्कृसा विति न निरूपयपितु शक्यत ॥ जहानेरइयाखमित्यतिदेयात् ॥ रोसठ प्रसखे  
 ज्ञानपसो गात्राई कालसुं अखपरठिईयाई इत्यादि ॥ दृश्य ॥ निवापाएण खद्विभिति ॥ व्यापात आहारस्य लोकात्तनिफुटेपु सम्भवति नान्यत्र  
 ततो निष्कटस्यो ज्यब पदसु दिशु कय पतसपु पृशोदिविषु कपु मपय पुद्गलप्रवृत्त करोति तस्य स्थापना ॥ यापायंपपुयति ॥ व्यापात म्रती  
 त्यत्रापातम निष्कृन्नु तत्रष ॥ नियतिदिमिति ॥ स्माहृदावितिसुपु दिशु आहारपद्वत्त भवति, कथं यदा पृथिवीक्रापिको ऽपस्तने उपरितनेवा

ससतिवा नीससतिवा गोयमा वेमायाएश्याणमतिवापाणमतिवा कससतिवानीससतिवा । पुठविकाइयाण  
 न्तेश्याहारठी हतागोयमा आहारठी । पुठविकाइयाणनतेकेवइयकालस्सस्थाहारठेसमुप्यजाइ गोयमा अ  
 णुसमयश्रिविरहिपुश्याहारठेसमुप्यजाइ । पुठविकाइयाणनतेकिमाहारमहारैति गोयमा दसुठजहाणेरइयाणं

प्रविबोकाइयाने पतवेकाम सामाषाम पइवा कइो सकोवे गर्हो ४ बसो मौतम पूखेसे । पुठविकाइयाणभते प्राचाराडो । पुठवोकाइया षोवमे इम  
 यवन् । प्राचारलोइच्छावे १ भगयत कइेसे—सुतागोबमा प्राचारडो । इगोतम प्रविबोकाइया प्राचारना पर्वीसे । पुठविकाइयाणं भते केवइव । पु  
 विबो काइया ओहने जेमगवन् । केतव । काससु प्राचारे समुप्यज्ज । वासे प्राचारलोइच्छा छपजे इतिप्रय उत्तर । मोवमा प्रसुसमयं प्रविरदिए  
 प्रसुसमये सातत्वपने प्रविरदित नित्तरे । प्राचारे समुप्यज्ज । प्राचाराभिन्नाय छपजे । पुठविकाइया जाव जेमगवन् ।  
 जिमाहार माचारेति । स्य प्राचार प्राचारे न्ने इत्यथ इतिप्रय उत्तर । मायमा दस्यपोत्रवा वेरइयाणं । जेमोतम । द्रव्यवो जिम नारकोने पूर्वकओ  
 तिम इवोपनि आबवा । बिन्नायाएव खदिमिवाचयपहस्य । व्यापात प्राचारना मात्वातनिष्कटनेविये संभवे लोकेस्मान्ने नही तेमाटे भोक्कना निष्क  
 टटासो प्रोक्केस्मान्ने खदिगिना प्राचारइते जिम पूर्वोदि ४ अत्र ५ पधा १ एय खदिगिनो पुद्गलप्रवृत्त करे व्यापातपायो लोकातने सूबे । विय



लोके वस्ति स्या तदा एषसा इलोकः पूवदक्षिणयो धालोक इत्येव तिसृषा मलीकेना वृत्तत्वाः तदन्य सु तिसृषु पुद्गलप्रद्वय मेधमुपरितनकोने  
 पि वाच्य यदा पुन एव उपरि बालोको भवति तदा ततस्यु दिशु यदातु पूर्वोदीना पक्षां दिगा मन्तरस्या मलीकोभवति तदा पञ्चस्थि  
 ति ॥ फासठेकम्पकाइति ॥ इह ककडादयो कृष्णान्ताः स्यया दृश्यमाः ॥ सुमतइत्यति ॥ शप जखितावस्यपं तथय, यया नारकाया तया युधिवी  
 बायिकानामपि तथइ ॥ जइ प्रत सुक्काइं आइरेंति ताइ कि पुठाइ अपुठाइ अइ पुठाइ किं ठंगाडाइ इत्यादि ॥ माणतति ॥ नामास्य  
 वेदः पूम पुथिवीकायिकाना नारकापेठया इर प्रतीद यमा ॥ कइजागमित्यादि ॥ तत्र ॥ फासाइतिति ॥ स्पष्ट कुवन्ति स्पत्रापन्ति स्पत्रैन्त्रि

णिष्वाधाण्डदिसिधायापमृञ्च सियतदिसि सियचउदिसि वणञ्च कालनीलपीञ्चलीहियहा  
 लिइसुक्किलाण गधञ्च सुक्किगधतुरजिगधाइ रसठ तित्ताइ फासठ कखकाइ ८ । सेसतहेत्र गाणस कइजाग

तित्तिदिचिं । कडाषित् तांन दयिना पाइराखे विचारखिवारे पूविनीकारया जीव नीचस तवात्रपरखेसूष छपले तिवारे नीचे पसाक पूर्वादि विदि  
 मिये पसाक इवे तिवारे तीजठियिनी पाइराखे तथा । सिवखखद्विस्त्रिययचक्रिमि । जपरे तथा नीचे पनीक मूवे तिवारे वारिदिमिनो पाइरा  
 खे तथापि बठिमिमिहिलो पनेरी एकाद्विं पसाकइवे तिवारे पंचदिमिना पाइराखे किडी शाकांत मिष्कुटपुवे तिडी विवारी मज्जनाकरवो । पष  
 पात्राकनीकपौपमाडिबडाविइसडिवाच । पूविनी कारवा पषवे तेकडेय - बर्बोकाया पाकायतुय १ नीसा नीककमससरोया २ योना मन्व  
 मरीया ३ नाडित जमपाकमन सिससरोया ४ यज्जम्पटिक रजाठिक सरोया ए पषप्रकारे पइलआइरि । मधपासुभिगंध २ । गववकी संगंध १ ड  
 र्द २ वेइप्रकारे पाइरि । रसभातित्ताइ ३ । रमवो तित्तादि पयि संठ पादिइर तेनीपरे । जामपाककडाइ ८ । मयवो इडी ककयो पादिदे  
 कचपवत पाठेइगुइया । सेसतहेत्र पाचत । कक्यावो गेप नारकोनीपरे कांजवा एततादियेप पाइराखावो एइ । कइभाग पाइरेंति । खेतभागाग  
 पाइरि । इरभाय फासाइ ति । खेतका भाग मासावे इतिमञ्च उतर । मोबसा । सेगोतम । पसखेअभोग पाइरेंति । पषमनी पसम्यातमो भा

वेवाहरपुद्गलाना कतिनामं स्पृच्छन्तीत्यर्थः, अथवा स्वर्गेना स्यादयन्ति, प्राकृतज्ञीत्या प्रासायन्ति स्वर्गेनवा चावदति गृह्य म्मुपलभन्तहात  
 फासाइति ॥ इदं मुक्त भवति यथा स्वर्गेन्द्रियप्रसिपयासका स्वर्गेन्द्रियद्वारेणा शरमुपनुकृताना प्रासादयन्तीतिव्यपिश्रयते, एवं मेते स्वर्गोने  
 न्द्रियद्वारेणति ॥ स्वर्गज्ञानेनैव्याकृति ॥ तथैव ॥ पुढविकाइयाकृतत ! पुढाशरियायोग्यता परिक्रया इत्यादि ॥ प्राग्वथ व्याख्येयमिति ॥ एवं जाव  
 वाकरइकाइयाकृति ॥ अनेन पृथिवीकायिकसूत्रमिवा क्क्याकृतिदि अस्वार्दि सूत्रादि समानी स्युक्त, स्थिती पुन विद्येयो तपवाइ मवर ॥ ठिई  
 वकयथा आजस्सति ॥ तत्र लपन्त्या सर्वेया मन्तमुद्भूत मुक्तता त्वयो संसर्पसइस्त्रादि, तेजसा महोरात्रत्रय धायुनां श्रीषि वर्यंसइस्त्रादि वनस्पतीना

श्याहारेति कइजागफासाइति गीयमा अ्यसखेज्जाइजागथाहारेति अणतत्रागफासाइति । जाव तेणपीग्गला  
 कीसत्ताएनुज्जीनुज्जीपरिमति । गीयमा फासिदियेवमायाएनुज्जीनुज्जीपरिणमति सेसजहाणेरइयाण जाव  
 गोशुचालयकम्मणिज्जारेति एधजात्रयणस्सइकाइयाण णवर ठितीयखेतथा आजस्स उस्सासोवेमायाए अइ

ग एतावता पतिसूत्र स्याक पाशरे । अर्धतभाग फासाइति । अर्धतभाग असख्यातावयो पश्चि पतिसूत्रतर समयत पुद्गलाप्रत पाहारेकरे । जाव  
 तेण तेमियोग्यता कौमत्ताए भुम्मा २ परिचमति । यावत् तेपृथिवीकायिक जीवाने पइल किसीरीते बार बार परिचमे अणेकाये इतिप्रत्य । उत्तर । गां  
 यमा । हेमौतम । फामिटिय । अयनेन्द्रिये पहिनेये । वेमायाएमुज्जा २ परिचमति । वियममाथा अरवा विविधमाथा काकविभाम तिचेकरी एत  
 ने मर्यादा कइोनजाव हम बारवार परिचमे । सेसत्रहायेरेखा ॥ कइायी वाकता किम नारकीने कइता तिम आबवं तेइम । पुढविकाइयाच भते  
 पुषाशरिया पायना परिचया । इत्यादि किहाताए । जाव या अचक्षिअचक्ष बिळ्ळरेति । यावत् नही जीवथी अचक्षितअम भिजरे अयकरे एतवातां  
 र कइवा । एवंजाइअचक्षइकाइयाच अवरं द्वितीयलेतव्या । हम पृथिवी सूत्रोपरे अण्णायादिक चारिसूत्र सुरीणा कइवा वावत् वनअतीकाय  
 अने एतवाभियेव स्थितिने विये भेइकइवा तेअवेवे—तिहा अचक्षता सवने पतनुद्भूतनी स्थितिअ अने उत्तरीतो अण्णावनी सातसइस्त्रवयं ते

दत्तेति, उन्नाथेय पृथिव्यादिक्रमेण - वाधीशाहस्रस्वा १ सप्तसहस्रस्वा २ त्रिचिह्नोरता ३। द्वायतिथिसहस्रस्वा ४ दसवाससहस्रियादयत्पति ५ ॥ १ ॥  
 वेददियाण्डिजत्रिखडकसासोवेमायाएति ॥ यत्राप्य इतिद्वेषः स्थितिय द्वीन्द्रियाणा द्वावयययोषि द्वीन्द्रियाणा माहारसूत्रे, यदुक्त - तत्पुत्रज  
 से आनोवनिवृत्तिर ५ सेष अययेकसमहए आतोमुत्तिर वेमायाए आहारठे समुप्यज्जइति ॥ तस्या यमर्थः, अयद्गुणतमामपिअ आहारकालो प्र  
 वति, सुखा वसप्यिस्वादिक्रपो प्यस्ती त्यत उच्यते, आन्तर्भौवृत्तिं क सत्रापि विमात्रयान्तमुद्गतवमयासङ्कतलथस्या सङ्घेयनेदत्त्वा दिति ॥ येद

दियाणठितीनाणियद्वा ऊसासीवेमायाए । वेददियाणश्चाहारेपुच्छा अणान्नीगणिष्ठित्तिएतहेव । तत्यणजेसे  
 अणान्नीगणिष्ठित्तिर सैणस्यसखेज्जसमहए अतोमुक्कसिण्वेमायाए अहारठेसमुप्यज्जइ सेसतहेव जाव अणत  
 नागश्चासायति । वेददियाणज्जेजोपोगलेश्चाहारत्ताएगिरहति तेकिसव्वेश्चाहारेति णोसव्वेश्चाहारेति गोयमा

उक्तावन्तो तोन अहारपि वाकवावन्तो तोनमहस्रस्रवय वमप्यतौकायन्तो उगसहस्रवय पबिषीपादिदेर पविरेणो भेषी स्मिति ववेहे - वावीमाहमह  
 स्वा १ सप्तसहस्राह २ त्रिचिह्नोरता ३ द्वायतिथिसहस्रा ४ दसवाससहस्रिवाहस्रा । वेद दिवाबंदितीमावियथा । पंचवावरन्तो वसव्यतावहो ५ इ  
 दे वेद दिवादिकवेहे - वेदोन्नो स्मिति वारेवरमन्तो कवन्तो । उ नामावेमात्राए । सासी सामपचि सर्वादा रचित्तोव । वेद दिवानं पाहारे पुच्छा ।  
 यवादिने पाहारन्तो पुच्छा पाहारन्तो पत्रकोभो । पचामोगचिअत्तिर तत्रेय । अर्वायता पाहार करेते सोमाहारन्तो अपिचोयैकसू अंगयथा षोषा  
 हार तो सनमाहेने तावन्तो कवन्तो । तत्रव जेमे पामोगचिअत्तिर सेगपसवेअसमए । तिअवि के पाहारपवे तेपसख्यातसमयिअ पाहारका  
 वपुनेतेवा अशमपि रोकावन्दि अमप्यात समचिकवे तेमठेकवेहे - अतोमुद्गतिरवेमायाए आहारठेयसुप्यज्जइ । तिअपचि वेमात्रये अंतर्मुक्कसिणि वि  
 ये समए अंतप्यात पवेकरी । सेसतहेव । अयवावन्तो तिमहोवकवन्तो । आकपचतभानं वासावति । याए पूर्वोवसवकवन्तो पजतमान आप्यवेतांअ  
 ने कवन्तो । वेद दिवावन्ते जेपोप्यमे पाहारत्ताए चिअवति । वेद विप जेमगवन् । जेपुअसव पाहारपवे सवे काव । तेचि अग्नेपावति । तेज्ज कवे

दियात् दुग्धे पाहारे पक्षते सोमाहारे पक्षेवाहारेयति ॥ तत्र सोमाहारं खल्वोपतो वर्षोविपु यः पुद्गलप्रवेशः समुद्रादवगम्यतइति , प्रथया  
 हारसु कावसिक सत्र प्रसेपाहारे बहवो ऽस्पृष्टाएव क्षरोरा इत्यत्रद्विय विषयसन्ते स्वीत्यसीत्याभ्यां , अतएवाह ॥ ले पीप्लते पक्षेवाहार  
 तास्य गेवईतीत्यादि ॥ अवेगादहर्षं मागसहस्रहति ॥ अशङ्क्यामाना इत्यर्थे ॥ अक्षासाहज्जमाकाठति ॥ रत्नेन्द्रियतः ॥ अक्षासाहज्जमाकाठति  
 स्यगामन्द्रियता ॥ अयरेत्यादि ॥ यत्पदं तदेवं दृश्यम् ॥ अपरक्षयरेति तो अय्यावा बहुयावा पुष्पावा विसेसाहियावति ॥ व्यक्तम् ॥ चतुर्थोपायो

येइंदियाणवुयिहेस्याहारेपक्षते तजहा लोमाहारेयपस्केयाहारेय जेपोगलेलोमाहारस्राणगिरहंति तेसवेथ्यप  
 रिसेसिएस्याहारेति जेपोगलेपस्केवाहारस्राणगिरहति तेसिणपोगलाणस्यसखेज्जडजागस्याहारति थ्यणेगाइव  
 णज्जागसहस्राइथ्यणासाइज्जमाणाइ स्थफसाइज्जमाणाइ एएसिणंजतेपोगलाणस्यणासाइज्ज

पुद्गल पाहारे । आस्यवापाहारेति । किंवा सवपाहारेतरी इत्यत्रोपा उतर । मावना । वेद द्विबाध इति पाहारे पक्षते तजहा । ये  
 र द्विने स्यदन रसमवने येमकारे पाहार कक्षा तेकश्चे--सामाहारेय पक्षेपाहारे । लोमाहार प्रसेपाहार तिर्षाकामाहार निचे ओषधको वर्षोवि  
 जानने शिचे जेपुद्गलमयेय हार तेसुबन्त्ये प्रसेपाहारेते कसकप तिर्षा प्रसेवाहारेनेति घषा अखरत्नाबन्धा जेयतोरत्तको माहि तथा पाहारे  
 विषंमयमे सूत्र सुझावको यतएव पाह--जेपायखे इत्यादि । जेपदगम नामाहारेवे पक्षे । तेसमेपपरिसिंसेिए पाहारेति । तेसव भपरियेग पाहारे  
 ममस्यता मउरकरे । जेयोमलेपस्केपाहारेताए गिरहति । प्रसेपाहारेते कबनाहार जेपुद्गल प्रथपाहारपरये पक्षे । तेसिंथं योज्ज्जाय असखेत्तरभाग  
 पाहारेति । तेह पुद्गलमते अयय अययस्येकरी अस्य्यातमीभागमते पाहारेपरये । अवेगाहस्रभासहस्राह । पनेव घषा भागसइत्त । अथा  
 माहज्जमाकाह । अनास्यायमानरसेनेद्विसेकरो आसादिवानहीं । अक्षासाहज्जमापाह । अस्तमानअयनेद्विसेकरो अस्मानहीं । विहंसमावत्त । वि  
 अमवतेयाने । एयनिबभते पायनाथ अथासाहज्जमाकाह । एवाने जेभगमन् पुद्गलाने रसेनेद्विचे अनास्यायमानाने । अक्षासाहज्जमापायम । अयने

वदन्ति, उन्नाथेयं पृथियादित्रमेव - धार्मीसाइसइस्वा ? सुससइस्वाइ ? तित्तिहोरता ३ । वायुतित्तिस्सइस्वा ४ दसवाससइस्सियाफउत्तिति ५ ॥ १ ॥  
 वेइदियावठिइन्निक्कडडसासोवेमायाएत्ति ६ वक्कव्य इतिश्लेष स्थितिय ह्रीन्त्रियाया हाइशययाधि ह्रीन्त्रियाया माहारमूत्रे, यदुक्क - तत्त्वज्ज  
 से धानोन्नतिइत्ति ७ वेइ असक्कज्जसइए छतोमुत्तिइ वेमायाए धाहारठे समुप्पज्जइत्ति ८ तस्या यमयः, असङ्गतसामयिक धाहारकालो ज  
 वत्ति, सुवा वसप्पिस्साविरूपो प्पत्ती त्यत उच्यते धाम्ममौहत्तिक सत्रयपि विमात्रपाल्लमुत्तमयासह्हातत्त्वस्या सइएनेदत्त्वा इति ॥ यइ

दियाणठितीनाणियह्वा ऊसासोवेमायाए । वेइदियापअथाहारेपुच्छा अणान्नोगणिह्वत्तिएतहेव । तत्त्यणजेसे  
 अणान्नोगणिह्वत्तिए सेणअसखेज्जसमइए अतोमुत्तिएवेमायाए अथाहारठेसमुप्पज्जइ सेसतहेव जाय अणत  
 न्नागअथासायति । वेइदियाणनतेजेपोग्गलेअथाहारत्ताएगिरहत्ति तेकिसह्वेअथाहारेति णोसह्वेअथाहारेति गीयमा

अथावन्नो तोन धाहारपि वाज्जवायनो तोनसइस्सवय वन्यतोवायनो उगसइस्सवय पबिषीपादिदेरं पचिरनो भेनो स्थिति वइहे - वादीसाइसइ  
 स्वा १ उगसइस्वा २ तिक्किहोरता ३ वायुतित्तिस्सइस्वा ४ उगवाससइस्सियावक्का । वेइ दिसावट्टितोभाविश्या । वंशवात्रनो वल्लयतावही ५ इ  
 वे वेइ द्विइवादिक्कहे - वेइ दोनो क्किति वारेइस्सनो क्करो । उ मासावेमायाए । सासो स्यामयपि सर्वादा रइतइंवा । वेइ दिगण धाहारि पच्छा ।  
 यथादिने धाहारनो पूष्णा धाहारनो प्रक्कवी । पयाभीनविअत्तिए तइए । पक्कवता धाहार करेते भोमाहारनो अयेवायेक्कसुं पंगयया षोळा  
 धार तो उगवाइनेहे तावत्तोक्क क्कवी । तत्तवं अवे धामोयविअत्तिए सेणपमएक्कसमइए । तिक्कवे जे धाहारपइ तेपसअ्यातमयिक धाहारका  
 न्नुवे तेवा धरसप्पिरोवायनवि असंय्यात समविक्कहे तेमाटेक्कहे - अतोमुत्तिएवेमायाए धाहारठेममुप्पइ । तिक्कपनि वेमायाए अंतमुत्तने वि  
 वे समय असंय्यात पयेक्करो । सेमंतइव । सेपक्कवतो तिमक्कीजक्कइवो । वावअवंतमागंघामायति । याएए पूर्वोक्कमवक्कइवो अन्तमाय धाज्जदितां  
 ने क्कवा । वेइ दिइवावभते जेपोक्कसे धाहारत्ताए निक्कइति । वेइ इिय जेममवन् । जेपुक्कव धाहारपवे पइे काय । तेमिं यइवेधावरिति । तेन्नुं पवे

रिपार्थं बुद्धिश्चैवाहारं पक्वते सोमाहारः सुखीपतो वपादियु यः पुद्गलप्रवेष्टं सुभूनादवनम्यतइति, प्रसेपा  
 हारलु कावसिञ्ज कञ्च प्रसेपाहारं यद्भवो ऽस्पृष्टाएव शरीरा वृत्तयर्थेष्विय विष्वंसगत स्वीत्यसीश्याज्यो, अतएवाह ॥ जे पोभसे पक्वोवाहार  
 ताप नेबइतीत्यादि ॥ अर्थेगाहक्यं मामसहसराइति ॥ असङ्केयामागा इत्यर्थः ॥ अकासाहज्जमाकाइति ॥ रसनेन्द्रियतः ॥ अकासाहज्जमाकाइति  
 रसज्ञानन्द्रियतः ॥ अवरत्यादि ॥ यत्पदं तदेवं बुद्धयम् ॥ अवरंकारेणितो अप्यावा बुद्ध्यावा विवेसाधियावति ॥ व्यक्तञ्च ॥ चतुस्रोवापो

येइदियाणबुद्धिश्चाहारेपसहे तजहा लोमाहारस्येवाहारं जेपोगलेलोमाहारस्येवाहइति तेसहेस्यप  
 रिसेसिएस्युहाहारेति जेपोगलेपस्केयाहारस्येवाहइति तेसिणपोगलाणस्यसखेज्जडजागस्युहाहारेति स्युणेगाहच  
 णजागसहसइस्युणासाइज्जमाणाइं स्युफासाइज्जमाणाइं विरुसमावज्जइं पुणसिणंजतेपोगलाणस्युणासाइज्ज

पुद्गल आहारं । आसन्नमाहाउति । विना सवपाहारनहीं एतन्नदीया उत्तर । मायना । जेमोतम । बेरदियाच बुद्धिश्चैवाहारं पक्वते तजहा । ३  
 र द्वियने स्यपन रजनबन्धने वेदकारे पाहार कञ्चा तेकइहे—सामाहारं पक्वोवाहारं तिहासामाहार तिचे पाषण्णकी वर्यादि  
 कानने दिजे जेपुदमसुभेयं ज्ञाप तेसुभगस्ये प्रसेपाहारेते कञ्चइय तिहा प्रसेपाहारनेरिये वना अरपरज्जावका जेगरीरज्जाकी माहि तथा वाहिर  
 विष्वंसपाने सूत्र सुख्खकी पतएव पाह—जेपावसे इत्थादि । जेपदगल सामाहारपये पइहे । तेसग्गेपपरिसेसिए पाहारंति । येसव अपरिवेय भाहार  
 समसना भाचचकरे । जेपावसेपक्वोवाहारताए गिरइति । प्रसेपाहारते कवमाहार जेपुदगल प्रसेपाहारपये पइहे । तेसिचं पोमसाचं अरंसेज्जभाग  
 पाहउति । तेह पुद्गलमते पपचय उपचयइवेकरी असस्य्यातमोभागमते पाहारपहे । अवेगाहक्यभागसहस्राइ । अनेक वर्या भागसहस्र । अथा  
 माइज्जमावाह । अनास्वाद्यामानरसनेन्द्रियकरी साम्यादिवागहीं । अस्तुज्जमानअग्रनेन्द्रियकरी अस्मान्नी । विहसमावज्जइ । वि  
 अतमतेपाने । एरभिवंभते पावनाच अशासाहज्जमाकाइ । एहाने जेभगम् पक्वाने रसनेन्द्रिये अनास्वाद्यमानाने । अकासाहज्जमाकाचय । अयने

गता अथासाएवमावेत्यादि ॥ ये अनास्थाग्रामाः केवल रसनेन्द्रियविषया स्ते स्तोत्रा अरुपप्रपमाद्याना मनस्तनागवर्तिम इत्यथा, ये स्वररुप्य  
 माया केवलं स्पष्टान्विषया लोकात्तगुणाः रसनन्द्रिययियेज्यः सशशक्ति ॥ तेइदियवठरिदियाय मायस विर्ययति ॥ तसेव ॥ अइत्यं अ  
 तीमुत्तं उक्तोवेव तइदियाय एगुं पलासराइदियायइवठरिदियाय कम्मासा ॥ तथा आहारेपि सामास्यं तत्रष ॥ तेइदियाय प्रते । उपयोग

माणाण अफासाइजामाणाणय कयरेरहितोअप्यावा थ डालावा तुझावा विसेसाहिवावा गोयमा समुत्योवा  
 पोगलाअप्यासाइजामाणा अफासाइजामाणाअप्याणतगुणा वेइदियाणजेपोगलाअ्याहारसाएगिरहति तेण  
 तेसिपोगलाकीससाएनुज्जोनुज्जोपरिणमति गोयमा जिझ्जिदियफासिदियवेमायाएनुज्जोनुज्जोपरिणमति ।  
 वेइदियाणजेनेपुनुहुरियापोगलापरिणयातहेव जाव थलियकम्मणिज्जेरंति । तेइदियचउरिदियाणाणत्त

न्दिय अरुसुखमानाने यन्निज्जमावे । कवरे र हिता अयावा । कव २ कको वाळाहाय । बडनाथा । वडावा । सरोखाइय । विसेसाहिवा  
 वा । विसेसाहिवाय इतिप्रय उतर । गायमा । हेगोतम । सखत्तीवापोसथा अवासाइव्यमावा । सबबो याडा पइस ले केवण रसनेन्द्रियने त्रियवले  
 ते अरुसुखमान परबने पत्तमायवत्तीवे तेमाटे तेइयो । अवासाइव्यमावा अयतगुणा । अरुसुखमान केवल अयनविषयले ते पत्तंगुणा रसनेन्द्रिय  
 विषय यइतबबो । वेर दिवाचं भंते पाववा । बडो योतम पूइवे -- वेर द्विबजोव हेमगवन् । पइसापते । पाहारतायगिबइति । पाहारपने अरुपये  
 पडे । तेवतेसिपोवसाबोसताय । ते ते पत्तमवेर द्विबजोवने थिसोतेरे । सुखासुखापरिणमति । आरवार परिणमेए प्रय । उतर भयवत्तवइवे -- गो  
 दमा । हेगोतम । विमिदिव फासिदियवेमावाए । रसनेन्द्रिये अर्धनेद्रिये विमाचवे पनेअयचार कासविभागपये । भुज्जो २ परिणमति । आरवा  
 रपरिणमे । वेर दिवाचं मते । वेर द्विबजोवने हेमगवन् । पुला इरिवा योववा परिणया तसेव । पूवपाचारायाप्यापयन परिणमे इत्यादिठ पूवे अ  
 णावे तिमबडडयो । वावपखिवं बचं थिखेरेति । वावए थवितकम निज्जेरे अयवरे । तेइदियवठरिदियाय आरपत्तं थिरे । तेइदिव अउरिदिवने

ते साधारण्ये गेहवृत्ति इत्येत आरज्य तावत् सूक्ष्मं वाच्यं यावत् ॥ अथेवाहवच मागसहस्राहं व्यापारोऽह्वमाकारं इत्यादि ॥ इह ७ द्वीप्त्रि  
 यमूयपेक्षया ज्ञानप्राप्यमाहात्म्यं प्रतिरिक्तं सतो नानात्वं एय मस्यऽनुत्वंमूत्रे परिबामसूत्रे चतुरिन्त्रिपसूत्रेषु पुत्रु परिबामसूत्रे ॥ चत्विष्टद्विप  
 साय पात्रिद्विपसाय ॥ इत्युत्पिबमिति नागात्त्वमिति पञ्चत्रिपतिपसूत्रे ॥ ठिह प्रथिक्तइति अहमेव अतोमुद्रुत उक्तावेव त्रिपतिपसूत्रेयमाह

ठिईए जाय श्युणेगाइचणनागसहस्राइ श्युगासाइज्जमाणाइ श्युगासाइज्जमाणाइ श्युफासाइज्जमाणाइ यिउ  
 समायज्जाति । एएसिणन्नतेपांगलाणश्युगाथाइज्जमाणाण श्युगासाइज्जमाणाण श्युफासाइज्जमाणाणयपुच्छा  
 गोयमा सध्वत्योथापोगलाश्युगाथाइज्जमाणा श्युगासाइज्जमाणाणश्युणतगुणा श्युफासाइज्जमाणाणश्युणतगुणा ते  
 इद्वियाणंघाणैद्विय जिस्सुद्वियफासिंदिय वेमायसाए च्जुज्जोनुज्जोपरिणमति । अउरिद्वियाणचत्विष्टद्वियघाणि

नानात्वं इति ते एत अहमेव संतासुदुर्त उक्तीयेव इ दिगाव अथापसद्विषाह ४८ दिनचरिद्विषाच अथासाधारणैरिपेपि नानात्वं जाय अथेवाह  
 अथागसहस्राह । यावत् अनेह एतावता अथा भावसहस्र । अथाधारत्त्वमाचार । अनाशायमान ते प्राचेद्विये । अथासाहत्त्वमाचार । अनाशाच  
 मानते एतेद्विये । अथासाहत्त्वमाचार । अस्तुश्रमानते अगनेद्विये । विष्वसमावज्जाति । किंश्चविनागयामि । एएसिचं मते । एइने हेभगवत् । पीग  
 साच अथासाहत्त्वमाचार । अस्तुश्रमान अतत्रापमानान । अथासाहत्त्वमाचार । अनाशाचमानाने । अथासाहत्त्वमाचार पुच्छा । अस्तुश्रमानाने मा  
 हासाहि पच अहत्त्व इत्यादिपय उतर । गाबमा । हेमोतम । अथत्वासा पावगता अथासाहत्त्वमाचार । सवथी बाडा पुदस अनाशायमान प्राचेद्वि  
 ये । अथासाहत्त्वमाचार अलगुणा । अनाशाचमान एतेद्विये ते अतंतगुणा । अथासाहत्त्वमाचार अतंतगुणा । अस्तुश्रमान पुदस अगनेद्विये ते अतंत  
 यथा । तेरद्वियाच । तेरिद्रोने । वाचेद्विह । प्राचेद्विगने । जिभिंद्विय फासिद्विह । जिनेद्विये अगनेद्विये । वेमायसाए । अनेकविध आहविभागपये । मु  
 खो २ परिचमति । आरवार परिचमे । अरिद्वियाच । अरिद्वियने । अस्तिद्विय । अरिद्विये । अरिद्विय । अरिद्विये । जिभिंद्विय । जिभिंद्विये ।



भवता अथासाएज्जमाबोत्यादि ॥ ये अनासाद्यमामाः केवल एतेन्द्रियवियया स्ते स्त्रीका अरुपुइयमाबाना मनस्तनागवर्तिन इत्ययाः, ये स्वरपुश्य  
 माबाः केवले स्पष्टनविपया स्तेनत्तगुणाः रसुनन्दिप्रयियेय्यः सकाशदिति ॥ तेइदियवठारिदियाळ माअस विईयति ॥ तयेव ॥ अइकेय वं  
 तोमुहुत उळोवेव तइदियाळ एयुव पत्तासराइदियाळउरिदियाळ कत्तासा ॥ तथा आइररेपि मामात्व तयष ॥ तेइदियाळ व्रते । जेवोग

माणाप अथासाइज्जमाणाणय कयरेरहितोस्यप्पावा व ज्जालाया तुहाया विसेसाहियात्रा गोयमा सवृत्योवा  
 पोगलास्युप्पासाइज्जमाणा अथासाइज्जमाणाअणतगुणा वेइदियाणजेतेपोगलाअथाहारत्ताएगिरहति तेण  
 तेसिपोगलाकीसत्ताएनुज्जोपरिणमति गोयमा जिम्भिदियफासिदियेमायाएनुज्जोपरिणमति ।  
 वेइदियाणजनपुवाहारियापोगलापरिणयातेहेव जाव अलिथकम्मणिज्जरेंति । तेइदियचउरिदियाणयागस

त्तिव अरुपुइयमाना एदिइमाजे । कयरे र हिता अयावा । कव २ वको बाणाअव । वइत्तावा । सरोवाअव । विमेसादिया  
 वा । दियेसादिविचोव इतिप्रय उतर । गावमा । हेगोतम । सवत्तोवापोयवा अथासाइज्जमाबा । सबो याहा एइल जे केवण एतेन्द्रियने विययवे  
 ते अरुपुइयमान पइवने अतभावकत्तीवे तेमाटे तेइवी । अथासाइज्जमाबा अएतगुणा । अरुपुइयमान केवण अरुपुइयविययवे ते अतगवती एतेन्द्रिय  
 वियव पइववको । वेइ दिवाचं भंते पोयवा । वको योवम पूइवे — वेइ दिवत्रोव हेमगवत् । पुइसापते । पाइरत्ताणगिरहति । पाइरत्तपवे अरुपुइय  
 पडे । तेकतेरियाअवाकोसत्ताए । ते ते पुइववेइ दिवकोवने विसोतेरे । सुअनुज्जोपरिणमति । आरवार परिणमए प्रय । उतर अयवंतवइवे — गो  
 वना । हेयोतम । जिम्भिदिव अरुपुइयवेमाबाए । एतेन्द्रिये अरुपुइयवे विसावते अनेअप्रचार काशविभागपवे । भुळो र परिणमति । आरवा  
 एपरिणमे । वेइ दिवाच मते । वेइ दिवत्रोवने हेमगवत् । पुवा अरुपुइय पोयवा परिणया तयेव । पूवपाशारातापत्तापदन परिणमे इत्यादिक पूवे व  
 वावे तिमवइवी । जावपत्तिव वचं वियरेति । वावत् वचितकम निजरे अयवरे । तेइदियवउरिदियाळ आरुपुइय वियरे । तेइदिव अरुपुइयने

मित्यादि ॥ याचकतराकां स्थितौ नानार्थ ॥ अथसेवति ॥ स्थितेरवशीय मापुष्कळं भित्पर्या, प्राणुत्त माहाराविवसु मया - नागकुमारार्थेना तथा इत्थं व्यंतराकां नागकुमाराद्यान्व प्रायः समानपत्नत्वा, एष व्यन्तराका स्थिति र्नेपथ्येन दशवर्षसहस्रादि, उत्कर्षेण तु पत्न्योपममिति ॥ ओष्ठियार्थपीत्यादि ॥ ज्योतिष्काया मपि स्थिते रवशायं तथैव, यथा - नागकुमाराद्या, तत्र ज्योतिष्काया स्थिति र्नेपथ्येन पत्न्योपमासुजाग मरुत्पर्येव पत्न्योपम वयसशापिकनिति, नवर ॥ उरसासति ॥ केवल मुष्कास सायां न नागकुमारसमानः, किंतु वक्ष्यमाह सायासाह ॥ जह्वेव मुष्कपुष्कसेत्यादि ॥ पूषन् विह्वमवति रानवन्व, एत यज्यपण्यं मुष्कपण्यं न्नादिवा मुष्कां, यथोक्तं तदृष्टी भवति प्राहारापि

मगिञ्जरेति यागमतराणठिर्द्वैगुणाणसु अथसेसजहाणागकुमाराण एधजोइसियाणवि णवर उस्सासोजह्वो यामुष्कपुष्कससउष्कोसेगत्रिमुष्कपुष्कससु अहाहरोजह्वेणवित्रसपुष्कतसु उष्कोसेणवित्रसपुष्कतसु से

निखरेचककरे । बाधमतराच द्विदशशत । बाधव्यतरने पातु कथ पत्न्यां सव सरोचु स्मितिने विष नागालभेर जावो । अथसेस जहा यागकुमा राच । येव याद्यादित्र वसु त्रिम ना-न-गाने इद्व िनत्र जावना व्यतरने नागवमराने प्राये समानभमव् यने किंति अथस्य व्यतरने इयसव स्रयव उत्कट एकपत्न्यापमनोहे । एवञ्च िगादि । एतनाम इमारनो परे ग्वातिवो जावना किंति अथये पत्न्यापमनो पाठनो भाग उत्कट एक पत्न्यापम साधे वरये चदित्र । वरर एखासा जावेव सुशतपुष्कस । एतसो विधेव उत्सास अथयेपवि सुशत पूषन् वेवकोमाको नवतारि न पूषन् नत्रावे परिदहा अदक सु ( न यांता । उत्रासेचविमुत्पुष्कस । उत्कटइको पपि सुशत पूषन्ने सासा स्सासधे इहा उत्कटेमुत्पुष्क पूषन्ने पाठ तबानव मुत्पुष्क जावना । याद्या उरयेव दिवसपुष्कस । याद्यारवि अथस्य दिवस पूषन् वेयो माको नवतारि पूषन्संघाधे तेवसन्ने ये तथा तोनदिवस जावो । उत्रासदि टिन पशुनस उत्कटइपवि दिवसपुष्क ते पाठ तथा नवदिन जावना । संसतयेव । येवधाकवी ति मत्र पुठिसोपरे । येमादिवाचदिरे भादिबधा आदिया । येमानिकनो किंति अहनी प्रौधिक एतसे सामान्ये सर्वं याचो तेइम अथययो एकपत्न्योपम

इत्येतदुपां स्वितिं ज्ञित्वा ॥ उखासोति ॥ उखासो विमात्रया वाच्यइति तथा तियङ्प्रत्ययान्त्रिपाद्या माहात्वात्प्रथमं प्रति यदुक्त ॥ उक्तोसेष खञ्जस  
स्वति ॥ तद्वैवकुलवत्पुनरतिर्यङ्गु सत्यत मनुष्यसूत्रे यदुक्त मष्टमजस्येति तद्वैवकुलवदिभिपुनरुक्तरा भाषित्य समवसयमिति, ॥ वाच्यमताराण  
द्वियजिप्तिद्वियफासिद्वियसाए जुञ्जीनुञ्जीपरिणमति । पचिद्वियतिरिखजोगियाणठिईनणिऊण ऊसासोवे  
तठनतस्स सेसजहाचउरिद्वियाण जाव खलियकमणिऊरैति एवमणुस्साणव्वि गय्यर अ्यानोगनिष्पित्तं जहखेणअतोमुऊत उक्तोसेण  
खेणअतोमुऊत उक्तोसेणअठमजसस्स सोइद्विय ५ वेमायाएनुञ्जीनुञ्जीपरिणमति सेसतहेय जात्रचलियक  
पासिदिक्ताए । अयमेद्विरे । भुञ्जासुखापरिचर्मणि । बार २ परिचमे । पचिद्वियतिरिखजोखिबाव । पचिद्विबतिर्येपवोमिक्त्तमे । व्हिई भविज्य । ख्य  
तिमते कइवो ते कइवेपथोमुपुत उखासिब विधिपथिपोरमाइ एइवोक्खिति कइवे । उखासोवेमाबाए । उरत्तास विमात्रावे मयादाइरहित कइवो । ख्य  
पाहाएपखामोसविमतिए । पाहाएते मख ते पनामोप पखापवे कइता । पखुसमइव पविरइया । पनुसमव प्रतिमय तेसातत्वणपायवाभेपवे  
विरइ विना ते निरतरकइरे । आमोसि खापवे कइरे ते आमोमनिवत्तित कइवे । अइखेबं पंतामुपुत्त । अखखयी पंतमुपुत्त करे  
उखोसेबं कइ मत्तळ । उरत्ताइवो वटमळ ते देवकुलउत्तकुणना तियेपथायी खापवो । मेसंजहा पउरिद्वियाबं । येए कइवावो भावो ते किम पउरि  
द्विब कइ तिम खापवुं । खापवत्तिब कव्वं विक्खेति । यावत् ओपवेयवो पवितकमनो निक्खेरे सवकइरे । एवं मणुखापदि । इमखीव तियेपथोपरे  
मनुखनेपदि खापवो । पवर आमोसविमतिए । एतथा विमेन खापता पाहाएभिइत्त कइरे । अइखेय पतामुपुत्तं । ते अवन्ये पंतमुपुत्तं । उखो सेवप  
इम मत्तळ खाइ दिव । उरत्ताटा पअमत्ते एयवि देवकुल उरत्तइव मनुखपायोखापवा कुगन्ने इवे पांभमा ओप खाज तेखोव इइवीव । वेपत्ता  
मुखा २ परिचर्मति । वेमाबाइ बार २ परिचमयरोर पुटकइरे । सेसंनवेव । वेपत्ताखापवा विमति । वेपत्ताखापवा विमति । वेपत्ताखापवा विमति ।

यस्य। नृयमेयेति, उक्ता नारकादिपञ्चमस्कृत्यते पञ्चारम्भरूपविकेति धारम्भनिरूपकायाश्च ॥ श्रीवाचस्पते । किं प्रायारंनेत्यादि ॥ धारम्भो जीवोपपात  
 उपन्यबभित्यगः सामान्येनवा प्रवृत्तारप्रकृति स्तय सामान मारजसो मालनावा स्वय मारजन्ते इत्यात्मारम्भा स्तथा परमारजन्ते परेऽव्या  
 रम्भपन्नाति परारम्भा स्तदुत्तय मालपररूप तदुत्तयेनवा रनन्तइति तदुत्तयारम्भा आत्मपरोत्तयारम्भवज्जिता इत्यमारम्भा इतिप्रश्नः अत्रोत्तर  
 ररूपुत्तमव मवर अस्ति वाऽस्याव्ययत्वेन यदुत्वाय स्वादस्ति विद्यन्ते सन्तीत्यर्थः अथवा; अस्ति अय म्यसो यदुत्त ॥ एतन्ना एके केचने  
 त्ययः जीया आत्मारम्भा अपीत्यादा यपिस्रष्ट् उत्तरपदायेनया समुच्चय स आत्मारम्भत्वादिपमांवा मेकाग्रयतामतिपादनार्थः जिज्ञासयतामिति  
 पादनाथीया। पञ्चपत्त्रव्य साप्तलेवेना यगसम्बन्धं तथाहि-कदाचि त्परारम्भाः कदाचि तदुत्तयारम्भा अतएव सो अमारम्भा

**श्याहारुद्दसप्तहाजानायध्यां, पृष्ठास्थानेणरुडयागजतेश्याहारठी जायदुस्कक्षाएनुज्जीनुज्जीपरिणमति जीवा  
 गजतक्रिश्यायारना परारना तदुत्तयारना श्रुणारना गीयमा श्रुत्येगइयाजीयाश्रुयायारनाविपरारनायितदुत्त**

क । चेदस्याचभति आशारा। मारकी वैभवम् । आशारना नशी छे । जाव दुक्त्ताए सुम्भा २ परित्त्वमति । यावत् दु रूपचे अमतिपचे मार २ परि  
 अने पदिना नारकोनो ब्रह्मताऽङ्गा ते पारभ पूर्वकछे तेमाटि धारभनिरूपव करेछे । जीवाच मते नि आचारभा । जीवा पं इवे आत्माऽकारे छे  
 भभवम् । स्वकीयना घात आपवपे करे ते आत्मारभी छे । परारभा । अनेरापाम जीवघातकरावे ते परारभीछे । तदुभयारभा । आपवपेपयि जीव  
 घातके अनेरापासेपयि करारवे ते तदुभयारभी छे । अचारभा । जीवनाघात मकरे न करारवे न अनुमार्वे ते अचारभीछे इतिप्रत्य उचर । गोवमा । छे  
 गीतम । अथ गइया जीवा आचारभावि । केइएक जीव पातने अर्ध आत्मारभी पयि छ आपवपव यकन्योने जीवनी घातकरे छे । परारभावि । प  
 परारभीपयि जीवपात करारवेछ । तदुभयारभावि । तदुभयारभीपयिछे आपवपे जीवघातकरे अनेरापासपयि जीवघात करारवे । आ अचारभा । प  
 वि अचारभी नशी । अत्येगइयाजीवा । छे केइएक जीव । आयायारभा । नशी आत्मारभी आपवपे जीवना घातनकरे । आपरारभा । नशी परार

विशेषयित्वा तपाचारः ॥ आहारोहत्यादि ॥ वेमाख्यांठिर्नानाखियद्वाठिश्चियति ॥ श्रीपिकी सामान्या साषपत्योपमादिका, प्रयत्नशास्त्रामरो  
 पमान्ता, तत्र अपत्या सौच्यमाभित्यो ठठ्टा आभुतरदिमान्तातीति, उच्छ्वासप्रमाणं तु अपत्यं जपन्यस्थितिक्रदेवा नाभित्ये तरतु उरुठ्टस्थिति  
 का नाभित्येत्यर्थं अत्रगाथा - अस्मद्भसागराश्च तस्वठिर्नानाखियद्वाठिश्चियति ॥ असासोदेवाश्च वाससहस्वादिं आशरोति ॥ १ ॥ तदेतावता  
 प्रत्येगोष्ठा अनुचिंशतिद्वहवत्प्रमता इत्यन्व केपुदित् सूत्रमुक्तेषु ॥ एठठिर्नानाखियद्वाठिश्चियति ॥ अतिदेवाधान्येन दर्शिता सावेतो यिवरक

सतचेय वेमाणियाणठिर्नानाखियद्वाठिर्हिया उस्सासोजहखेणमुज्जतपुज्जसस्स उक्कोसेणतेहीसाएपस्काण झ्या  
 हारोस्थानोराणिस्सिठि जहखेणदिवसपुज्जसस्स उक्कोसेणतेहीसाएवाससहस्ताणसेसतचेन जावणिज्जरेति ए  
 वठितीस्थ्याहारोयजाणियध्वो ठितीजहाठितीपेदेतहाजाणियध्वो सव्वजीयाण थ्याहारोयजहापन्तनाणाएपठमे

आदिदेर उरुठ्टवो तेपोव सानरायम परेते ते अत्थ सौच्यमाभित्यो उरुठ्ट पदुतरनिमान आत्रोने आभवा । उच्छ्वासाजहल्लेषेण मुद्धतपहुत्तक । उ  
 त्पास अवग्ने सुद्धतपुज्ज ते अत्थ सौच्यमाभित्यो आत्रोने आभवा । उरुठ्टे तेतोसाएपस्काय । उरुठ्टो तेपोवपव ते उरुठ्टस्थिति अनुज  
 रदेन आत्रोने आभवा । आहाराधामानिचल्लिपो अहल्लेषेण दिनसपुद्धतक । इम आहारपणि आभवा निवणित अवग्ने दिवय पुवत्तं इण्य ते  
 अवग्ग स्थिति भावो आभवा । उच्छ्वासे च तेतोसाएगामनहस्काय । उरुठ्टवो तेपोसमहस्काय ए उच्छ्वाट स्थितिभायो आगवो इहा गाय अण्णअइसाय  
 रार द्विहतकतित्ठिपक्खेदि । असासोदेवाश्च वाससहस्वादिं पाशरोइति ॥ १ ॥ सेसतचेन । गेयसव विमज्ज आभवा । आवणिक्खरेति यावत् अकि  
 तत्तम निर्वट् । एवठिती आहाराव माभियथा । इम स्थिति आहारपणि आभवा । द्वितीकहाठितीपेदे तथा माभियथा । अिति अिम क्खितिपव  
 अिम पववचामादि अण्णवे तिम अहव । सव्वजीयाण । सयत्रोवने । आहारोव अहा पववणाएपठमे आहाराइसए तथा मावेमव्वो । आहार अिम  
 पववचामासे रीवा उपांगनेदिने पडिणे आहारने उरुठ्टे अिमअण्णवे तिम इहापणि अहवो । एतोपाठतो । इहाअने आभवा

न्यया दयमयति, उक्त्वा नारकादिपमवस्तुयते पञ्चारम्भपूर्विकेति प्रारम्भनिरूपणमाह ॥ श्रीवाचसत ॥ श्रीवाचसत ॥ प्रारम्भो जीवोपपात उपश्रयवमित्यगः सामाग्येनवा; अत्रद्वारमवृत्ति सत्र आत्मान मारजस इत्यात्मारम्भा, सत्या परमारजसो परेषवा रम्भयन्तीति परारम्भा लदुत्तप मात्सपररूप तदुत्तमेमवा रन्तस्तस्मिन् तदुत्तपरारम्भा स्त्वनारम्भा इतिप्रसङ्गः अत्रोत्तर रक्तमव नवरं अस्ति श्रद्धस्याप्यस्येन धनुस्त्याय स्वादस्ति विद्यन्ते सन्तोत्ययः अपवा; अस्ति अय स्पृशो यदुत ॥ एगयति ॥ एकका एके केकेने त्ययः श्रीया आत्मारम्भा अपीत्यावा वपिशब्द उत्तरपवायेवया समुद्युय स आत्मारम्भस्त्वाविचर्मका मेकाअयताप्रतिपादनायः त्रिक्राअयताप्रति पादमार्षीया; यत्पल्लव्य कासनेना वगल्लव्य तथादि-इदचि वात्मारम्भाः कदाचि तदुत्तपरारम्भा अतएव नो अनारम्भा

**आहारुद्सप्तहाजाणयज्ञो, पुष्टोस्थानेणरुडयागजनेत्याहारठी जायदुरकहाएनुज्जोनुज्जोपरिणमति जीवा गजनेक्रिश्चयायारजा परारजा तदुत्तपरारजा शृणारजा गोयमा श्रुत्येगइयाजीवाश्यायारजाविवरारजायितदुञ्ज**

क । बेरइयाचभते प्राहारठी । गारकी वैभवम् । प्राकारना अर्धी है । जाय दुक्खणाए सुज्जा २ परिषमणि । यावत् पु खपके अमातिपये नार २ परि जमे पहिना नारकीनो बलव्यताअरुते ते आरम पूर्ववहे तेनाटे आरभनिरूपण करेहे । जीवाच भते कि आयारभा । जीवाच इसे वाक्काषंकरे हे भनयम् । स्वश्रीयना घात पापवये करे ते आत्मारभी है । परारभा । अनेरायाम जीवघातकरावे ते परारभीहे । तदुभयारभा । पापवयेपपि जीव घातकरे अनेरापासेपपि करवे ते तदुभयारभी है । पचारभा । जीवनाघात अकरे न करावे न अगुमादे ते अयारभीहे इतिप्रय उत्तर । गोबमा । हे गौतम ! अत्ये गरया जीवा प्रायारभावि । केइएक जीव पोताने पर्व आत्मारभी पणि छ पापवयेक सकस्थीने जीवभी घातकरे है । परारभावि । परारभीपनि जीवघात करावेछ । तदुभयारभावि । तदुभयारभीपनिछे पापवये जीवघातकरे अनेरायासपपि जीवघात करावे । वा अचारभा । प नि अचारभी नश्री । अत्येगरयाजीवा । है केइएक जीव । आयावारभा । नश्री आत्मारभी पापवये जीवना घातनकरे । श्रीपरारभा । नश्री परार

विशेषितयव, तथासाह ॥ आहारोहत्यादि ॥ देमाक्षियाकठिर्हनाखियव्वाठिश्चियत्ति ॥ श्रीपिकी सामान्या साधपत्योपमाक्षिका, प्रपक्षिंशतसागरी  
 पमास्ता तत्र अपत्या सीपम माभित्यो रकटा शानुतरविमानानीति, उच्छ्वासप्रमाकतु अपम्य अपत्यस्थितिक्रदेवा माभित्ये तरतु उरकष्टस्थिति  
 का माभित्येत्पर्य, यत्रभाषा-अस्वइसागराह तस्वठिहत्तित्तिरिपक्खदि ॥ असासीदेवाण धामसहस्वदि आहारोत्ति ॥ १ ॥ तदेतावता  
 पन्येतोवा श्लुभित्तिहहकक्यता इयन्व सेपुवित् सुत्रपुकाक्षेपु ॥ एवठिर्हआहारोहत्यादिना ॥ अतिदेवप्रयाप्तेन दर्शिता साचेतो यिवरण

सतचेय देमाणियाणठिर्हनाणियव्वाठिह्या उस्सासीजहखेणमुजसपुकाक्षेस्व उक्तीसेणतेहीसाएपस्काण ह्या  
 हारोस्थानोगणिह्वसिठ जहखेणदिवसपुकाक्षेस्व उक्तीसेणतेहीसाएवासहस्साणसेसतचेव जावणिज्जरेत्ति ए  
 वठितीश्चाहारोयनाणियव्वा ठितीजहाठितीपेटतहाजाणियव्वा सहजीयाण आहारोयजहापन्तनाणाएपठमे

आदिदेह अकट्टवो तेपोस सामरापम पर्यंत ते अथ्य सीमसाको उरकट्ट अगुतरविमान आयाने आशवा । उच्छ्वासाजहएव मुद्गतपहुत्तसु । उ  
 त्वास अपत्ये मुद्गत पूबक ते अथ्य सीपमसीक्खिति आयाने आशवो । उक्तीसेव तेतोसाएपक्काव । उरकट्टो तेपोसपथ ते उरकट्टस्थिति अगुत्त  
 रदेव आययाने आशवा । आहारापामाभियत्तिपो अइवेव दिवसपुत्तसु । इम आहारएपि आशवाति भिवत्तित अत्रग्ये दिवय्य पुवत्त इय ते  
 अत्रम भित्ति आयो आशवो । उक्तीसेव तेतोसाणगासहस्साण । उरकट्टवो तेपोसमहस्साण ए उरकट्ट स्थितिपात्री आशवो इहा गावा अप्पअइसाग  
 एव ठित्तसततिरिपक्खेदि । असासीदेवाच धामसहस्वदिपाहारोहत्ति ॥ १ ॥ सेवतचेव । येपसव तिमक आशवा । आशवित्तेरति यावत्त चत्ति  
 तथम निर्वरे । एवठितो आहारोव माभियव्वा । इम क्खिति आहारएपि आशवो । ठित्तोव्वाठित्तोपदे तथा माभियव्वा । भित्ति अिम क्खित्तिपय  
 अिम पयवचामादि कक्कावे तिम अइव । सव्वकोवाच । सर्वत्रोवने । आहारोय अहा पयवचणपठमे आहारइसए तथा माभियव्वा । आहार अिम  
 पयवचानामे नीवा उवायमेदिने पदिवे पाहारने उरेये अिमअक्कावे तिम इशीपिच अइवो । एतोपकन्तो । इशीकने आशवो अइव

तथा ॥ सुजनमीर्गपुरुषति ॥ सुजनयोगउपपुस्तकतया प्रत्युपसङ्गादिकरुं मसुजनयोगस्तु तदेवानुपपुस्तकतया आइव - पुठयीआठकाए तेकवाकवयस्सव  
 तमायं । पक्तिसेइवापमत्तो ययंप्पिविराइथीइर ॥ १ ॥ तथा - सव्वीपमत्तजोगी समसस्सठइरभारमोत्ति ॥ अतः शुजावुज्जी योगाधात्मारजावि

तदुचिहा पखुप्पा तजहा पमत्तसजयाय अणमत्तसजयाय तत्यणजेतेअणमत्तसजया तेषणीअ्यायारजा णीप  
 रारजा जाव अणारजा । तत्यणजेतेपमत्तसजया तेसुहजोगपहुच्च णीअ्यायारजा णीपरारजा जावअणारजा ।  
 असुहजोगपहुच्च अ्यायारजाविजायणीअणारजा तत्यण जेते अ्यसजया ते अ्यविरत्ति पहुच्च अ्यायारजावि

वचगा । तिहा अततरेकथा, वेपच तेमहि जे सकार अटुगति कपच तेइनेविये रक्काओव । तेदुविहा प त । तेविपकारे वेभेइ कथा तेअइवे—सणका  
 य पमत्तयाव । एकओव सयता कइता संयमी बोआओव चारिव रहित पइहे गुणठये वत्ते ते । तत्तय जेतिसवया तेदुविहा प त । तिहा सयती  
 पस यती महि जे सयती चारिववंतजे ते वेपकारे कथा तेकइहे—पमत्तसजयाय । प्रमत्तसंघत कथागुणठापनिविये वत्ते ते । अपमत्तसजयाय । अपमत्त  
 मयत्तप्रमाट रहित चाधु सातमा चारियेरे अक्कठाअनिविये वत्ते । तत्तयअजेते अपमत्तसजया । तिहा प्रमत्त अपमत्तवेखं माहेजेते अपमत्तसयमी सम  
 मादिगक्कठये वत्ते तेमाधु । तेवंचीपासाएभा । ते चाधु नही पाआरमो पीते चारंभ नकरे अपमाठी पचीव । चो परारंभा । ते परारंभी पयि नही  
 जाव चकारभा । चावत् तदभयारभोपयि नही एतावता पनारभौहे । तत्तयअजेतेपमत्तसजया । ते विहुंपचमाहि जे प्रमत्तसवती ते युम अयुम वियोग  
 णीय तिहा । तेमुअवागएकव । ते पइसिइव चादि साबधानपये करे ते षंगीकार करीने । चा पायारभा चोपरारंसा आवअणारभा । नही पाआर  
 भी नही परारंभी नही तठमबारंभी सब चारमरहितजे एतावता चकारमौहे । असइओमंपहुच भायारंभावि आव पापचारभा । पइनिइव चा  
 टि उपथाग रहित पसावधान पचेकरे यहा—पुठवीपात्रकाए तेखवाकवस्सरतसाथ । पइसिइवापमत्ती अयंप्पिविराइवाओर ॥ १ ॥ तथा सव्वी  
 पमत्तवागा समसन्धइएारभाति । तेपचो चामारमो क परारमो जे तदुनयारमो जे पचि चारारमो नही एतये युम अयुम योग तेइओ चारंभ



जिज्ञास्यत्व त्वेव एके जीवा असुयताइत्यर्थं आत्मारम्भावापरारम्भावेत्यादि अर्थैकत्वनायत्वात् जीवानां ज्ञेयं मनुष्यायपत्याह ॥ यत्केणहेतुति ॥  
 अथ केन कारणेनत्वर्थं ॥ त्रुविहापकृताति ॥ मया शर्म्ययं केवलिति रमेन समस्तसवयिदा मताजेदमाह मतत्वेदेतु विरोधिवचनतया सेया मसत्य  
 वचनतापत्ति पाटन्निपुत्रस्वरूपान्निपायकविक्रुधचनपुरुषपदम्बकविति प्रमत्तसत्यतस्यद्विज्ञो भ्रुमद्य योग स्या त्वयतत्वात् प्रमादपरत्वा हेत्य

यारजायि गोश्रृगारजा श्रुत्येगइयाजीवा गोश्रृयारजा गोपरारजा गोतदुन्नयारजा श्रृणारजा । संक्रेणठेण  
 नतेएवमुसुठ श्रुत्येगइयाजीवाश्रृयारजायि एवपठिउच्चरियसु गोयमा जीयादुविहा पशुहा तजहा ससार  
 समावखुगाय श्रुससारसमावखुगाय तत्यणजेतेश्रुससारसमावखुगाय तेणसिद्धा सिद्धान्णोश्रृयारजाजाय  
 श्रृणारजा । तत्यणजेतेससारसमावखुगा तेदुविहा पशुहा तजहा सजयायश्रुसजयाय । तत्यणजेतेसजया

भो धनरापाम जोकषात नकरादे । आतदुमयारभा । नही तदुमयारभा । पापजोवषात नकरे प्रमेरापासपि नकराये । पवारभा । एतस्वामाठे पना  
 रलीके । संक्रेणठेपभते एववषर । मौतम पूढेके तेके एवै हेमयवत् । इमकणू । पटवेगइयाजीवा प्रायोरभादि । वेतसाएव औपपत्तो प्राकारंभो पणिके  
 पावानी एवै धारमकरे । एकपठिठकारेयत् । इमसव पूर्वकक्षा तिमपाकिसुं कइवुं इममय प्रागकपयि कइवुं उतर । गोयमा । हेमौतम ! औ  
 वादुविहापवता तजहा । औष वेमकारता कक्षा मे पवता एव वेवसीये एतके समस्त तौर्ककरना मतने विदे मदकहीं इमकथुं तेकहेसि—सवारसमा  
 वखगान । एवजोव देव १ मनुष्य २ तिसैव ३ नारकी ४ रूप धारिनतिने विदे सुसरबकरे तेससारसमापककहिये । प्रससारसमावखुगाय । बी जा  
 जीव धारिवतिस वेमसाके एतके मुक्तिवया त धमसारसमापक कइये । ततय ए जेते प्रससारसमावखुगा । तिहां च इले वाक्यामंकारे जेजीव धारि  
 मति रूप ससार तिहां एवजोवार भमीभमीने समस्त कसवकप कानक पाव्या । तेवसिहा । ते पकरेभेदे विह बडा । सिधाव यो पायारभा जाय  
 पवारभा । तेमिह पाव्यारभो नही एतने परारभो एव नही तदप्रवणभो पयि नही एतावता विह सर्वथा पारस्य रकिरके गमनं जेते ॥१॥

मृत्युसंस्कारप्रमाणनैव पूर्वोक्ताः सन्ति तत स्ते यथाजीवा स्वया ऽभ्येतव्या किन्तु संसारसमापना इतरेष ते न वाच्या प्रवर्तितव्या देव  
 तेया भित्येतद्याह ऽ सिद्धविरहित्यादि ऽ व्यन्तरादयो यया नारकास्ताया ज्येया अस्यतत्वसाधर्म्यादिति, आत्मारत्मकत्वाविधि चेर्मे जीवा  
 निरूपिता सोष संसेत्रया घालेशयाय प्रवर्तन्तीति, संसेत्रया स्ता स्तरेव निरूपयन्नाह ॥ संसेत्राववाठश्रियति ऽ लेत्रया रुद्रादिद्रव्यसाक्षिष्यजनितो  
 जीवपरिबानो यदाह - रुद्रादिद्रव्यसाविष्या त्परिबानोयग्रात्मन । स्मृतिरस्येवतत्राय लेत्रयायाब्धः प्रपुन्यते ऽ १ ॥ तत्र संसेत्रया लेत्रयावतो जीवाः  
 ऽ अज्ञातुश्रियति ऽ यया नारकादिविज्ञेयव्यवकिता जीवाऽधीताः ॥ जीवाऽऽनते । किं आयातन्मा परारन्मेत्यादिना ॥ दशकलेन तथा संसेत्रया  
 जीया अपि याच्या, संसेत्रयाना भवसंसारसमापकत्वस्या सम्भवेना संसारसमाप्यके त्यादिविज्ञेयव्यवज्जितानां ज्ञायाया सयतादिविज्ञेयव्याना तेद्यपि  
 पुन्यमानत्वा तत्राय पाठकमः ॥ संसेत्राव नते । जीवा किं आयातन्त्यादि ऽ तदेव सव भवर जीवस्थाने संसेत्रयाइति वाच्यमिति, अयमेवो

वाणधरसिद्धिरहितानाणयद्वा वाणमतराजावयेमाणिया जहाणेरद्वया संसेत्राजहातुहििया किराहलेसस्स  
 नीललेसस्स काउलेसस्स जहातुहिियाजीवा णधरपमसुश्रपमत्ताणजाणियद्वा तेउलेसस्सपमहलेसस्ससुक्कालेस

चारथा । तेदेकाए बावत्तमडे एभाव व विरतितव ते पचारभा इवे अने व परिवरतो ते अगारभोगही इत्थव । एवंजाव पचिदिव तिरिक्कजोषिया ।  
 इम यावत्त मडे पमरत्तमार चादिदेइ पंचेद्विइ तियव यातिव वग जाववो चविरति पचावो आत्मारभो परारभो तदुभयारभो इव पचि अचारभो  
 मही इमकइवो । मनुस्सा ववाजीया चवर सिद्धविरहिवा भासेयव्या । मनुवनेजिये सवतासगत प्रमत्तापमत्त ए चारभेइ पूर्वे कइयाए - तेमाटे विमसग  
 सु जीवघायीकइया तिममनुच जाववा चारेभागे एतत्तावियेव सिद्धचारेभागे इहित तेमाटे सिद्धविभा कइवा । वायमतरा जाय वेमाविवा ववाचिरेइ  
 या मनेस्सा ववा पोडिया विववलेससु मीमलेससु । वागव्यतराचिदेइ यावत्त वेमानिकताइ तिम कइवा विम गारकीकइया तिमव जाववा एस  
 व पचिरतिपचे साधम्ये तेमाटे आत्मारभयववरे जीवकइया तिके संसेयो इवे तेमाटे संसेयो कइये - सेव्वासहित तेविमपोषे सामाग्येवरो

कारकमिति ॥ अविद्वेषपुषति ॥ इहा यस्माको यद्य प्यस्यतानां सूक्ष्मेन्द्रियादीनां नास्मारम्भकादित्य साक्षादस्ति तथा प्यविरसि स्मृती त्येत  
 दक्षितेया नञि ते ततो निवृत्ता अतो स्यताना मविरति क्षत्र कारकमिति निवृत्तामांतु कपञ्चि दास्माद्यारम्भकाल्ये प्यमारम्भकत्वं यदाष्ट - जा  
 त्रयास्त्रजवे विराहबाहुतविद्विसम्पत्स ॥ साहोद्विज्जरणला अद्भ्यत्विवीरिजुत्समिति ॥ १ ॥ सेतकठेवति ॥ अय तन कारकनेत्यय , अय  
 आस्मारम्भकत्वा दिव्यमव मारकावि षतुर्विंशतिदशकै निरूपयन्नाह ॥ नेरहपाकमित्यादि ॥ व्यक्त खवर ॥ मधुसुखेत्यादी ॥ अयमथः मनुष्येषु

जाव गोश्चणारजा सेतेणठेणगीयमा एवयुञ्जइ स्यत्येगइयाजीवा जाव स्यणारजा ॥ णेरइयाणनतेकिश्च्यार्या  
 रजा परारजा तदुन्नयारजा स्यणारजा गीयमा णेरइया स्यारजाविजावणीश्चणारजा सेकेणठेणनंतएवयु  
 ष्टइ गीयमा स्यविरतिपनुञ्च सेतेणठेणजावणीश्चणारजा एवजावपचिदियतिरिक्कजोणिया मणुस्साजंहाजी

ना कारकत्वात्वा । तत्रच जेते षसकमाने अविरति पणुच । तिर्षां पवे कक्षा जे वेपचमासे अस्यती जे ते अविरति आयोने एतावता अविरतीहे ते  
 पाबारभावि जाव वा अचारमा । आकारमीहे जावतुमये तदुमवारमी जे पवि अचारमी नहीं । सेतेपणुच । तेदे कारके करो । गायमा । हेगीतम ।  
 एवंबहद । इवे प्रकारे कञ्च । अत्वेमइयाजीवा जाव अचारमा । सेतस्याएव जीव आकारमी आदिवेइ जावत् मये अारभरहितसे एतन्नाताइ कइवा  
 वेररवाचभते विपाबारमा परारमा तदमवारमा अचारमा । इवे आकारमकादि पण तेहीज आरकादि षड्बोसदकके कइसे—आरकी हेमगवन् ।  
 खं पाकाने पवे आरमपायकरे अचवा परारमीहे पारकेवासे सावय्यवायकरे वेखने पवे पापकायकरे अयवा अचारमीहे आरभरहितसे इतिप्रय  
 भमवत वइसे—आयमा । हेमातम । वेररवा आयारभावि जाव आचचारमा । आरकी आकारपवि आरभवतके इम जावत् परारमीपविहे तदुम  
 वारभीपवि जे पवि आरभरहित नहींइ एतावता अचारमी नहीं । सेकेबहुअभते एवयुचइ । तेकिते षस हेमगवन् । इमपाक इतिप्रय भगवतकज्जे—  
 आयमा । हेगीतम । नहीं विरति जेकने ते अनिरती कइवे अविरति अचामी आकारमी पाकामेइहे पवि अचारमीनही जेतेवेररवाच भ अचिच

श्रीमन्मिननरप्रसादलब्धशुद्धिप्रकाशितपत्ररजेंपु श्री ५ रायभन  
पतिविश्वेश्वरपुरपु सविनयमावदनम् ।

आगे, जेने सुनाई आप को एसी इच्छाई कि पेंतासिखों जेनागन  
की पुस्तकें मून टोका और भायाटीका सदित पांच २ सौ कापी बपें और  
सापु आयकों के पठन पाठन के लिय पांच सौ स्थानमें पुस्तकालय  
स्थापित हों तो यह अति ध्यानंदकी बातहै, परंतु जिन महाशयों  
का द्रव्य देक पुस्तक सने की इच्छा हो उन लोगों क निमित्त त्री यदि  
आप को आशा हो तो येषन क यासे पाचसौ कापी जैन युक्त सुसाइटी  
की चार से त्री कपका ली कार्ये यह पुस्तकें में अजीमगन से मकाय  
करुगा अये अनुमन, सबत् । १८३३ । सि० । चि० । सु० । ११

२० जैन युक्त सुसाइटी

कायसम्पादक

प्रमुद्रिसद्व

गहर मुरसीदाबाद

अजीमगन

श्रीविचिपविद्याधिभारतत्परेपु जैन युक्त सुसाइटीकायंसम्पादक  
महाशयेपु प्रतिनिवेदनम् ।

को कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेयासे लोगों के लिये सुसाइटी  
की और स पेंतासिखों जेनागन की पाचसौ पुस्तक कपका लेने की  
आशा के विषय में आया सो मैं स्वीकार करता हूं कि आप जैन युक्त  
सुसाइटी की तरफ से, आगन की प्रत्येक पाच २ सौ पुस्तकें येषने के  
वास्तु कपका लवें, परंतु पाचसौ से अधिक कपमकी आशा मैं नहीं  
दता, यदि और कोइ कपकामा चाहे तो उचित है कि पहले मुज  
से आशा लसेवे क्योंकि इन ग्रन्थों पर खरठरी बुद्धि, अये अनुमन  
सबत् । १८३३ । सि० । चि० । सु० । १३

२० रायभनपतिविश्वेश्वर

गहर मुरसीदाबाद

अजीमगन

द्रव्यकः कृष्णादिसेव्याजीवात् तदस्यैपदं, तदेव मेते सप्त, तत्र ॥ क्रियसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥  
 यथोपि कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥  
 कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥  
 रजा ? ४ गोयमा आचारजाति आच नो अकारजा से केकेहेवं जते । एयवुद्ध ? गोयमा आचारजा ? गोयमा आचारजा ? गोयमा आचारजा ?  
 पीति तथा तेजोसेवयाद ३ जीवराजे वेदका यथोपि कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥  
 जते । जीवा किं आचारजा ? ४ गोयमा आचारजा ? गोयमा आचारजा ? गोयमा आचारजा ? गोयमा आचारजा ? गोयमा आचारजा ?  
 अकारजा से केकेहेवं जते । एयवुद्ध ? गोयमा आचारजा ? गोयमा आचारजा ? गोयमा आचारजा ? गोयमा आचारजा ? गोयमा आचारजा ?  
 हेतुभूत आचारजाति आच नो अकारजा से केकेहेवं जते । एयवुद्ध ? गोयमा आचारजा ? गोयमा आचारजा ? गोयमा आचारजा ? गोयमा आचारजा ?  
 काकुपाठा से प्रसतावसेया तेन किंसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥ कृष्णसेवसेत्यादि ॥

स्स जहाउहियाजीवा गवरसिद्धान्तानि यथा इह न विपुञ्जते गाने पर न विपुञ्जते गाने तदु न यज्ञ विपुञ्जते गाने गोयमा

कथा सूक्तिमवाचो कथसेयो जीवसेयोने जापातसेयोने । कथा पादिकाजीवा कवरं पमत्त अपमत्ताय मापियथा । किम योविक समुपये जीव  
 का तिम जांषवा पवि एतथा विगेष प्रमत्त अपमत्त वजितकथा कथपादि तीग अपमत्ताभाव सेभ्याने विपे सवतपयूं नयो जने के कथं पुष्यपडिब  
 यपापुष पववरतितसेयो इति । ते द्रव्यसेवया धायो कथं । तेजसेसस्य पदनेसस्य सुबसेसस्य । तेजसेयोने पदसेयोने यज्ञसेयोने । कथापादिकाजीवा ।  
 किम योविक सामान्यसूषे जीव कथा तिमकथा । कवर विदावभाषियथा । एतकोविशेष चिह्न नकथा चिह्नसेव्यारश्चितके तेमाटे । इह न विपुञ्जते  
 च परमविपुञ्जते । मरुतेतुमूल धारय कधीने भवपमावहेतुमूल आनादि कथसे -- प्रसमानसनेविपे सेभामत्त । केजापयोग ते इह न विपुञ्जते कथसे ४४

श्रीविश्वविद्याविचारतत्त्वरेपु जैन बुक सुसाइटीकायंसम्पादक  
महाशय्येपु प्रतिनिधेदमम् ।

जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी की ओर से पेंतासिखी जैनगम की पाचसी पुस्तकें खपवा लेने की आशा के विषय में आया ही मैं स्वीकार करता हूं कि आप जैन बुक सुसाइटी की तरफ से, आगम की प्रत्येक पाच २ की पुस्तके यचने के वास्ते खपवा लवें परंतु पांचसी से अधिक खपनकी आशा मैं नहीं दता यदि और कोई खपवाना चाहे तो उचित है कि पहले मुझ से आशा लसेवे क्योंकि इन ग्रन्थों पर रजस्टरी हुई है, अथे अनुमत् ।  
सवत् । १८३३ । मि० । से० । सु० । १३

द० रायपनपतिसिंह बहादुर

अहर मुरसीदाबाद

अजीमगम

श्रीमज्जनवरप्रसादसम्पादकदुहितकाशितबमरनेपु श्री ५ रायपन  
पतिसिंहयशदुरेपु सविनयभावदमम् ।

आने मैंने सुनाई आप की ऐसी इच्छा है कि पेंतासिखी जैनगम की पुस्तकें मूल टोका और प्रापाटीका सहित पाच २ की कापी खपें और मापु आठवीं के पठन पाठन के लिय पांच सी स्थानमें पुस्तकासय स्थापित हों सो यह कति खानदकी बात है परंतु जिन महाशयों का द्रव्य एक पुस्तक लने की इच्छा हो उन लोगों क निमित्त श्री यदि आप की आशा हो तो दक्षम क वास्ते पाचसी कापी जैन बुक सुसाइटी की आर स नी खपवा ली जावें यह पुस्तकें में अजीमगम से प्रकाश  
करुणा अथे अनुमत्, सवत् । १८३३ । मि० । से० । सु० । ११

द० जैन बुक सुसाइटी

कायसम्पादक

अनुदितुषदु

अहर मुरसीदाबाद

अजीमगम

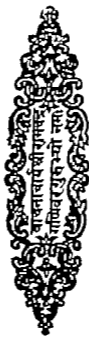


वाचनाचार्यश्रीरामकृष्ण  
गणिवरगुरुभ्यो नमः









कं चाहोश्चित् ॥ तदुज्जपनप्रियति ॥ तदुभयपुरुषयो रिह परलगतयो प्रथयो यदनुनामितया वतते तदुभयपनविकं इदं नपारमविका द्विद्यत  
 इति परतरजवेपि यदनुपातितत्प्राप्त्य इह प्रयव्यतिरिक्तत्वेन परतरमथस्यापि परमवत्यात् इत्यतानिर्देशा येषु संवत्प्र प्राकृतात्वादिति, प्रसन्निय  
 चमपि सुगण अक्षरं न इह जवियविति ॥ एहजविकं यद्विद्या भीतं नागतरसवे अनुयाति, पारजविक यदमन्तरजवे अनुयाति, तदुभयपनविकं तु य  
 द्विजापीत म्परजवे परतरजवेपानुवत्तइति ॥ इत्यसंयि एवमेवति ॥ यज्ञान मिह सम्यक् मवसेप मोक्षमार्गापिचारत्, यदाह - सम्यग्द्वामप्राप्तान  
 चारित्रादि मोक्षमाग यत्र ज्ञानवृक्षनयोरेय यद्वहस्या तत्र दर्शन सामान्यावबोधरूप मवसेपमिति ॥ एवमेवेति ॥ ज्ञानव रममनियवनाभ्या समवसेप  
 चारित्र्यमूय निवचने विज्ञाय क्षपाहि, चारित्र्य मीहमविकमेव मन्त्रि चारित्र्या मिह मूल्या तेनैव चारित्र्येण पुन द्यारित्री प्रवति यावल्कीवतावपि  
 क्त्वा तस्य क्रिय चारित्र्येण ससारे सर्वविरतस्य देसविरतस्य देवेवोत्पादा, तत्रच विरते रत्यन्त मन्नावा न्मोक्षगतावपि चारित्र्यसम्भवाजावा

इह जत्रियुत्रिणाणे परजवियवियुत्रिणाणेय । दसर्णापि एवामेव । इह जत्रियुत्रिणाणे चरिते परजविय  
 एचरिते गीयमा इह जत्रियुत्रिणाणे चरिते चोतदुभयत्रियुत्रिणाणे चरिते । एवतवेसजमे । अ्यसबुद्धेण

मान यजतर भवे जेप्रात ते पारमविकज्ञानकहाये । तदुभयमवियुत्रिणाणे । इत्यसवपरस्य वेकनेद्विमे ज्ञान ते तदुभयमविकज्ञानकहाये । उतर । गीयमा  
 जेगोतम । इहमदे भल्लं परमेये साव नचाय ते इहमविकज्ञानपबिहाय । परमवियुत्रिणाणे । जेपनतरभवे ज्ञानहोय तेपयि ज्ञानहोय । तदुभयमवियुत्रिणाणे  
 जरद्वी भल्लं तेपरमेये परतरभवेपयि यनकत्ते तेपयि ज्ञानहोये । दस्यपिण्णामव । जिमप्राजकत्तम द्दगनपयि ज्ञानहोये । इहम  
 विक जेभगवत् । चारित्र्यहाव प्रज्ञया । परमविक चारित्र्यहाय इतिप्रय उतर । गावमा । जगोतम । इहमविकहोय चारित्र्य हाय या  
 यल्कीवपबिपयावल्की । पापरमवियुत्रिणाणे । महीपरमविक चारित्र्यहाव चारित्र्यवतमरो वलो परमेये तेहाव चारित्र्यवतमहाय । चातदुभयमवियुत्रि  
 रिने एवतवेसजमे । मही तदुभयमविक चारित्र्यहाय एचारित्र्यकक्षा ते तपसवम मेद्वी जेप्रचरिते तेमाटे इम तप इमहोय सयमपबि ज्ञानहोय । यलो

धारित्रीं किं धर्मद्वयभाषा नुष्ठीपते मोक्षे च तस्या किञ्चिद् दृशत्वात् यावज्जीवमिति प्रतिपाद्यमाने सत्वस्य सायापइत्यात्, अनुष्ठानरूपत्यासु धा  
 रित्रस्य शरीरामात्रे च तदयोगा दत्तबोध्यते ॥ सिद्धे बोधरित्तो मोक्षधरित्री ॥ मोक्षधरित्रीति च धरिते रत्नावाहिति, समन्तर ध्वारिप्रमुख इत्  
 च द्विधा तपः संयमनशक्तिरिति तयोर्निष्ठपक्षपायतिदेशमाह ॥ यवतवेवधमेति च प्रसन्नित्ववनाज्यां धारित्रवत्तप संयमो पाथ्यो धारित्ररूपत्या  
 तयोरिति ननु सन्धिय आनादेर्नीहरेतत्वे दर्शयत्व यस्मिन् यस्मिन् तस्ये प्रमोक्षइत्युत्वा अत्राह - प्रठेवधरिस्ताठ सुदुपरवसंभंगयेषु ॥ सिद्धतिपर  
 धरिष्या दंसंभरिष्यावकिञ्चनीति ॥ १ ॥ यो मयेत तन्निशयितुं प्रसज्जाह ॥ असंभुलेति ॥ असंभुलेति ॥ असंभुतो ऽनिसदु  
 यवधार ॥ अहगारेति ॥ अविद्यामानपक्षः साधुरित्यर्थः ॥ सिद्धइति च सिध्यति आवाप्तवरमसगतया सिद्धिगमनयोग्यो प्रवति ॥ बुद्धइति च सु एव  
 पदा समस्यवेत्तज्ञानतया स्वपरपर्यायोपता किञ्चितान् आवादिपदायोन् जानाति तदा बुध्यतइति व्यपदिश्यत ॥ मुचइति ॥ सय्य सुज्जात  
 केवलमोषो तत्रोपपत्तिरिक्तमिति प्रतिषमयं विमुच्यमानो मुच्यतइत्युच्यते ॥ परिनिश्चयइति च सय्य तथा क्लमपुद्गलात्ता मनुसमयं यथा यथा स्य  
 माप्नोति तयातथा श्रीतीत्यन् परिनिश्चयतीति प्रोच्यते ॥ सय्य चरमनवायुयोन्मितसमये क्षपिताशोपकल्पात्ताः सयदुःखाना  
 मर्त्तं चरतीति प्रस्यत इतिप्रकाः उत्तरस्तु कठ्य कठर ॥ मोक्षे च इच्छंति ॥ अयं मनमरोक्तत्वेन प्रत्यक्षोर्धो प्रायः, समर्थो

नतेश्यणगारे सिद्धति बुद्धति परिणिश्चयति सध्वदुस्काणमतकरेति गोयमा णोद्धणद्वैसमठे संकेणठेण

पूछे ? एवमुक्तमते पचमारि । असात वेदे पायबहार कथा नथो वेमयपन् । एवमो धाह । विच्यति बुद्धति मुच्यति मुच्यति परिचिच्यति । सिद्धगमन  
 शायहाव वेवसज्जाभेकरी क्षीयादिपवार्धकादे भवकमचरो वृटे कमपुत्रसकयकरो योतबोभूत पूछे । सध्वदुस्काणमतकरेति । पाञ्चकाने वेदेवे वेवक  
 मीयमा पन्त करे इम योतम पूञ्जा यको कतर भगवत चवेदे - योयमा । वेतोतम । पाएवममठे । एयम समकनधी कचतत नथी । वेवेवेवेवे भति  
 आवधेत्तकरेति । वेवेवेवे वेमवमन् । वाकपुमये अतनकरे भगतकरे । एवमुक्तमते पचमारि । एवमुक्तमते वेवे वेवसज्जाभेकरी कचतत

यतयान् ब्रह्ममाद्यपूर्वभुद्रप्रहारब्रजरितत्वात् ॥ अउपयञ्जठिति ॥ यस्मा देकत्र प्रथयइवे सहेदेवात्मैर्भूतमात्रकालपयायुयोक्त्य क्षत उत्तमा  
 पुयञ्जाइति ॥ विहितवचनयदुगठिति ॥ सपबन्धनं स्पृष्टतावा ; मनुतावा ; निपततावा ; तेन धनु आत्मप्रश्लेषु सम्वन्धिताः पूर्वा वस्य या मधुनतर  
 परिचामस्य क्यञ्चि दवावदिति विधितबन्धनधनु एता यात्रुजाएव द्रष्टव्याः असवुनमाधस्य निम्बामस्तावात् ताः किमित्याइ ॥ यद्विपद्यपयव  
 द्वाठुपकरेइति ॥ गाढतरयन्धमा यद्भावस्थावा ; निपतावस्थावा निःकाचितावा प्रकरोति मध्यस्यादिकामोपत्वा दक्तुमारुद्र्यते अशंवृतत्वस्या  
 मुनयोगरूपयत्र गाढतरप्रकृतिप्रत्यङ्केतुत्या दाइइ - लोगापपक्रियसति ॥ पीनः पुम्यजावेत्स्ववृत्तत्वस्य ता करोतीत्यवति तथा द्रक्ष्यकालस्थि  
 तिना हीपकालस्थितियाः प्रकरोति तत्र स्थितिक्रयस्य कालतो भवस्थान ता मह्यकालान्कतो करोतीत्यर्थं ' असवृतत्वस्य कयायरूपत्वेन स्थिति  
 वय्यइतुत्या दाइइ - सिद्धमपुनरायकसायष्टकुडइति ॥ तथा ॥ मवायुमावत्यादि ॥ इशुमनावो विषाको रश्चिवोपइत्यर्थं , ततय मन्दानुजावाः  
 परिवेतवरसाः शती नाडरसाः प्रकरोति असवृतत्वस्य कयायरूपत्वा देवा मुनागत्रथस्य न कयायप्रत्यपत्वादिति ॥ अप्यनएकेत्यादि ॥ अल्प इत्योक्त

जते जाय स्युतनकरेति गीयमा स्यस्युकेस्यगगारे स्याउययज्जाठसप्तकम्मपगकीठसिठिलयधगणत्रधाउ धाणिय  
 यधगणयद्वाठुपकरेड हस्सकालठितीयाठु मदानुजावाठु तिस्रानुजावाठुपकरेइ स्य

ही एइबामाधु । पाचयबज्जाया सप्तकम्मपगकीठा निठलबधयवइशाया पकरेइ इच्छकालठितीयाया वीइवास इतीयाया पकरेइ । पादुक्रमटाशेने  
 मातकम्मनी प्रलतिबाधीइवे जेमाठे एकमनेविवे एकवार भतमुइतक्यासने विपेइीक पाखकानोबधइ तमाटे पाखबु वज्जुं तेकेइयो बाधीके सिद्धि  
 रंपपेइरीने बाधीइवे ते गाढा यइया निजाचितबधन करे वली इइसकास कहती बीकःकासनी क्कितिइती तेइको हीयकाठ यवाकासनी क्कितिकरे  
 पतावता पशोक्किति बगरे । मडाएमावायातिल्याप्पमावापापकरेइ । कम्मना जेमठ यनुभावकर्म मटटरसकम्मनी इवे ते तोवप्रनुभाव तेकम्मनी तोवरसक  
 रे । यचपदेसगाभोइपदेसगापापकरेइ । यम्मनाको प्रदेम माग कम्मद्विक परमांयं इती ते यवांपदेमभाजकरे कम्मवधारे इत्यय । पाठयचंपक्यंसि

परिच्छिन्नं कर्मण्यप्याया बुद्धीयते मोक्षे च तस्या विच्छिन्नं तद्वत्त्वात् पापञ्जीयमिति प्रतिष्ठासमाप्तेः स्वद्वयस्या द्वापहृणात्, यमुद्योगरूपत्वाच्च वा  
 रिक्तस्य स्त्रीरामावेच तदयोगा इत्येवाच्यते ॥ सिद्धे मोक्षरित्तो मोक्षपरित्तो ॥ नोपपरिच्छिन्नसिद्धिश्च विदिते रजायाविति, अतस्त्वर आरिग्रमुक्तं गत  
 च द्विधा तपः संयमजवदिति तयोनिरूपव्यापित्वात् ॥ एवतवेसंजमेति ॥ प्रसन्नमित्तवनाभ्यां चारिग्रवत्तपः सयमी वाच्यो चारिग्ररूपत्वा  
 त्तयोरिति, यनु सच्यदि ज्ञानादेर्नीचरेतुत्वे तद्वैतएव पतितव्य तस्यैऽमोक्षइतुत्वा द्वादाह—अठेहचरित्ताठ सुदुपरतसकगइयव ॥ सिद्धकतिचर  
 चरद्विधा संवचरद्विधाचिच्छिन्नीति ॥ १ ॥ योमयेत तमिच्छिन्नुं मस्यज्याह ॥ अस्यज्जेभमित्यादि ॥ व्यक्त अत्र ॥ अस्युच्छेदति ॥ अस्यवतो निच्छिन्नु  
 प्रवद्वारः ॥ अहगादेति ॥ अविद्यमानयुः सापुरित्स्वये ॥ सिद्धइति ॥ सिध्यति सवासपरमस्यतया सिद्धिगमनयोग्यो ज्ञवति ॥ बुद्धइति ॥ स य  
 यदा समुत्पन्नवेससज्ञानतया स्वपरपयोयोयेता विद्यित्तान् जावादिपदायाम् जानति तदा बुध्यतइति व्यपदिश्यत ॥ मुचरति ॥ सयय सञ्जात  
 केवसचीपो प्रवोपयाद्विच्छिन्नीति ॥ प्रतिस्वमयं विमुच्यमानो मुच्यतइत्युच्यते ॥ परिनिष्ठाइति ॥ स एव तेया कुम्सुद्रलाना मनुसमयं यया यया स्य  
 माप्नोति तथातथा श्रीतीनवन् परिनिष्ठातीति प्रोच्यते ॥ स एव चरमनवापुयोन्निमसमये क्षपिताशोककल्पाः स्यदुःखाना  
 मन्त करोतीति नस्त्य इतिप्रश्नः उत्तरस्तु कच्छत सचर ॥ नोइच्छेदसमच्छति ॥ मोक्षेव ॥ इच्छति ॥ एय मन्तरोक्त्येन प्रत्यक्षोर्षो प्रायः समर्षो

नतिश्च्यपगारे सिद्धकति युक्तति सुच्यति परिनिष्ठाति सधुक्काणमतकर्त्तति गोयमा णोहृणदिसमठे संकेगठेण

पूढे ? एयदुच्छेदमते पचगारे । अचंइत वेदे पायवहार कंष्या भवो चभायन् । एहवो साह । सिद्धकति युच्यति सुचति परिनिष्ठाति । सिद्धगमन  
 बाप्यथाय जेपसप्रानिकरी वीशदियवार्वावे भवकसकरी छुटे खमपुससचयकरी मोतखीभूत इये । मन्तदुक्काचयमतकर्त्तति । पाककानि छेदये शिवक  
 मीयना यत्न करे इम योतम पूजां सखां उत्तर भगवत कइये—गोयमा । जेगोतम । आइच्छेदममठे । एयम सुसचरणीं चकर्मत भवो । जेजेचइवे भति  
 जाचपतेनकरेति । ते जेकारवे जेसतकन् । दाबलुगये यतनकरे भगवतकइ उत्तर । गोयमा । जेगोतम । असकृच्छेदकगारे । एहंइत जेदे चारिचरार कल्याण

नगरः प्रमत्तमयतादिः, सब बरमयरीरः स्या दबरमयरीरोया, तत्र य दबरमयरीर सदापेणैव सूच, य स्ववर्ममयरीर सदापेणैव सूच्यते ॥ ५९ ॥  
 मयार्यो वसेयो मनु पारस्यैर्यथा संबृतस्यापि सूत्रोच्चार्यस्या वदपनावो यत सुलुपाधिकस्यापि मोषोवच्यं प्राची, तदेवं सवृतासवृतायोः कस्य  
 तो वेदानावयेति ? अत्रोच्यते सत्यं किन्तु परसवृतास्य पारस्यय तदुत्तर्यत ससासुप्रवममात्रं यतो वदयति ॥ अत्रोच्यते ॥ अत्रोच्यते ॥

अथस्युनेश्वणगारेणोसिञ्जइ सधुनेण नतेश्वणगारेसिञ्जइ हतासिञ्जइ जाय अतंकरेइ । सेकेणठेणअतेएववु  
 झइ गौयमा सधुनेणश्वणगारे आउयवजाउ सप्तकम्मपगानीउ धणियथयणयदाउ सिठिलयधणयथाउपक  
 रेइ दीहकालठितीयाउ हस्सकालठितीयाउपकरेइ तिष्णुणायाउमवणुणायाउपकरेइ यज्ञापदेसगाउ श्यप्य  
 पदेसगाउपकरेइ आउयधणकम्मनवधइ श्यसायावेयणिजाचणकम्मणोनुजोनुजोउवाचिणइ श्यणादीयचण

यमा यमपुत्रे यवसारेणामिस्सइ । ते तेवैपत्ते वेमोत्तम । अथे मययवहार उच्चारणौ तेष्वनार साधु सोमोत्तम इत्थादि पूववत् षडवा यावत् अतन्वर  
 नदी वनी गीतम पूवेवे—मपुत्रेवर्तति यवगारेकिञ्चइ । वेवे प्रायवहार उच्चारणे वसिन्धीधावे पाठमा वेवे वेमगवन् ! एडवी वररचित अणगार साधु  
 सोमो इत्थादि मवक्कवा इतिमय उत्तर । इतामिअइ जाय अंतकरेइ । इगोतम सवत यणगार सोमो यावत् अतकरे इम सर्वकइवो । सेवेयइव भले  
 एववुवइ । तेवामाटे वेमगवन् इम कम्म सवत यणगार सोमो । गायमा । वेगोतम । सवत यणगार वसिन्धीधावे पाठमाअवे एडवासाधु पाठकर्म माचि  
 ओ पावनी पायुक्कम टावो यात कम्मप्रवृत्ति ते । धवियवधवापासिठिमवधववाभा पकरेइ । अत्रिउ सोमो वेधवे धापीवे तेमते सिविसवधनकरे  
 तेवमठोनाअरे इत्थइ । दोइकालठितोयापा । दाघकाल वदुक्काले वेयस्सितिइ ते । इत्थवासठितोयापो पकरेइ । अथ माडाकाकवेय स्सितिअरे ।  
 तिन्वाणुभाषापा महाणुभाषापा पकरेइ । तोत्ररथइ वेमदरसकरे । वपुवदसनाया अणपदेसगापा पकरेइ । यवामदेय पुवे ते यवामदेय करे शुभ  
 पयुम प्रदेगवत प्रते यवामदेगवतकरे । पाउयएवं कम्म नववधइ । प्रवृत्तिपरिवत पायुक्कम तेवने नववधि । पसायावियविज्जववधया धोमुज्जोभुज्जो उव



परततः पापब्रह्मज्ञानाघरणाद्यमुक्तं कर्म येन स तथा ॥ इति ॥ एत प्रत्यापन्नप्रत्यक्षा तिर्यग्मथा त्मनुय्यन्नग्राहा व्युत्तो मृत ॥ पञ्चासौ ॥ कन्माभ्त  
 रे द्वयः स्यादिति प्रसः ॥ अत्रेमेत्रीवृत्ति ॥ य इम प्रत्यक्षासन्नाः पञ्चद्विपत्तियम्बी मनुयावाः ॥ गामेत्यादि ॥ यामादि वधिकरकणतपु, तत्र ग्रामी  
 ग्रमपदमायजनाभितस्थानविद्येय, आकरो लोहाद्युत्पत्तित्वान, नकरं कररहितं, निक्मी वपिगुणमचानं स्थानं, राजधानी यत्र राजा स्वय  
 वसति गृहं पूनीप्रकारं, कर्षटं कुमरं, मरुत्वं सवती दूरयति सुक्तिवद्वान्तरं द्रोक्षमुसं अलपयस्वत्पयोपेतं पत्तन विविचयेद्यागतपस्य  
 स्थानं, तष द्विधा, अलपत्तन स्थानपत्तनं चेति रक्षन्मिति रित्यन्वे, आग्रम स्नापसावित्थानं, सुक्तिवेद्यो पोपादि रेपा दृष्ट्वा स्नात स्तोपु, अथवा

इण्ड्रेत्रेसिया अत्येगडणुणोवैवेसिया संकेणठेण जाय इतोचुते पेञ्चाअत्येगडणुवैवेसिया अत्येगडणुणोवैवेसिया  
 गोयमा जेहमेजीया गामागरनगरनिगमरायहाणिस्वेडकछरुमरुयदोणमुहपट्टणासमसत्त्रिवेसेसु अकामतरहा

अतमागवदवहाय । परवेगेइवा चवेवेमिवा । केतमाएक देवता नहाय । सेकेषडडआवराताचते । ते च्चेपवे हभगमन् । इमकम्पू यायत् इहायको चवो  
 मराने । पेसापरवेगेएवेवेसिया । पख कलाएक कोर देवताबाय देयतापचेअपडे । परवेमेइएपादेवेमिया । केतसाएअ औव देवता नहाय । गोयमा  
 वेधोतम । जामत्रोवा । अ ए प्रत्तचओर पचेदो तिर्येव मनुव । नामपाकएलगरनिमसरावडासिसेडअवडमडवडाचमुहपट्टणासमसत्त्रिवेसेसु । अ ए प्र  
 त्यचआव पचेदो तिर्येव मनुव गामरुग्मे पामरअन यायितहाय अिवा एसा पृथाडिगन ते गाम साहाडि सातघातुना उत्पच स्नातक तेपामर कर  
 रदिततेनगर अिवा वाचिया प्रधान तेनिगम अिवा स्वयमेव गात्रावसे काठसन्धित तेराजधानी अिवा धूनिना वाचाकाट तेसेटक कुक्षितनगर तेक  
 अडवमनीषो दूरहाकनगरया कामचडाइ तथा तोन मराय हाय तेमडड अमसागती नगरे अलषको यलु पावेवे श्रावमुथ पट्टव ते नामाप्रकारना  
 इयधो किरिवाया पाव तवेप्रकारे एकजकपत्तन बीआखनपत्तन एइने काइएक रवभूमिपव कसेवे—आयम तापसावित्थान हीरादिकनी ग्राम ते  
 इतदिये । पञ्चामतवहाएचकामचडाए । चकागनिअरा मनचगिनापनिगा तथा खुमे मनचभिसापनिना सुधाखमे भूखेपौडाता कामइतुयापठे । अका



विना सततजन्मइच्छेति चिच्छति ॥ यथा संवृतस्य पारम्पर्यं तदुक्तपतोपायं पुद्गलपरावातनाममपि स्या द्विरापनाफलत्वा तस्येति ॥ वीक्ष्यय  
 इति ॥ व्यतिव्रजति व्यतिजामतीत्यर्थः, अतनारः संवृतत्वा त्स्वप्नतीत्युक्तं, यस्तु तव्यः स विद्विष्टगुणविक्रमः सन्, किन्वेगः स्या खजेति ; प्रज्ञ  
 यथाह ॥ वीक्ष्यमित्यादि ॥ अथ क्वर ॥ असञ्जयति ॥ असाजुः समयरहितोवा ॥ अखिरयति । प्राणतिपातादिविरतिरहितः, विसोयेयया त  
 पसिरतो यो न मवति सो विरतः ॥ अप्यक्रियत्यपि ॥ प्रतिहत निराकृत मतीतकासकृत निन्द्यादिकरकृत प्रत्याख्यातञ्च यस्मिन् अनागत  
 कासविषयं पापकर्म प्राणतिपातादि येन स प्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा, तस्मिन्नेषा दमतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा अनेना तीतानागतपापञ्च  
 मानिवेषसकः असयतो विरतये त्वमन वर्तमानपापासवरञ्च समिहितं, अथवा न नैव प्रतिहतं तपोविधानेन मरुत्कालादारात् षण्पित प्र  
 त्याख्यातञ्च मरुत्काले व्याकृन्निरोधेन पापकर्म येन सतथा, अथवा न नैव प्रतिहतं सम्यग्ब्रह्मप्रतिपत्तितं, प्रत्याख्यातञ्च, सबविरत्यङ्गी

शृणवद्गवीहमदु चाउरतससारकतारवीर्द्वयइ संतेणठेण गोयमा एवसवुंरुशृणुगारेसिज्जइ जाव श्यत  
 करेइ । जीधेपनतेस्यसजसुखिरसुख्यपिहयपञ्चकायपायकम्मे इतोचुते पेच्चा देवेसिया गोयमा सुत्येग

विबह । अनाता वेदोब्रह्ममते नशो बारवार पुटकरे । अबावोयवञ्च अयद्वय दोहमई चाउरतससारकतार वातोवयति । इमवेइतो पाधि  
 नशो वेइना पारनशो एइमा दोष चातमतिक मसारबातामते व्यतिकमे एइवो षे समार ते अमकरे इतिभाव मोचजायदत्यर्थ । सेतेइव गोयमा  
 एवमपुञ्च अचमार विक्रमइ वावयंतकरेइ । ते तेरेकारेवे हेगौतम । एषेप्रकारे संवरादे इ दोखेवे एइवो अचमार साधु अरमयतौरो सोणमे मोचय  
 ते चाइ इत्यञ्च बावत् सवुंरुशृणुगारे अचमार ते सउतपबावो सोमरे इसोअमो तेइवो वीवो तेविमिटमञ्च विक्कसयका च्छ । वीवेपंभते अमए अ  
 विरएअप्यक्रियपञ्चकायपायकञ्चे । देवदुवे अथवा नपुवे इसो अमकरेवे—इमगवम् असाधु सबमरहित प्राणतिपातादि विरतिरहित नशोइक्या  
 आय भिदायेकरो तथा पयक्कायेकरो पापकम जेवे । इतोचुते । इइवी मज्जतिअं ॥ १० ॥ वा देवेकिवा

तस्मिन्नेषु देवानामप्यु ॥ देवतामण्डयवतारोन्नवतिष्ठति ॥ ब्रह्मैतत्प्र यच्छशोपादाना ते दद्यतयोपपत्तारो ज्ञान्यन्तीति द्रष्टव्यं ॥ तच्चिन्ति ॥ य  
 दयलोके द्युनामनिष्कारायन्तो वेंयतयो त्पद्यन्त तेषामिति ॥ सेति ॥ अथ यथा येनप्रकारेण ॥ नामेति ॥ संज्ञावने वाक्यालङ्का  
 रेया ॥ यद्वृत्ति ॥ ग्रामन्यप्रायः शलङ्कारार्थयववा ॥ इदंति ॥ इह मत्पसोके ॥ असोयवसेइयति ॥ अशोक्वन, इतिशब्द उपप्रदक्ष्मे, शुभ्रार  
 मोपः वंधिय प्रास्तात्वात् याइति विरुप्यार्थः, अपवा असोगवइत्यत्र प्रथमैक्यथमकत एकार, इवशब्दस्तु वाक्यालङ्कारे, अयोकादपस्तु  
 प्रसिद्धाप्य मयर ॥ सप्तयसति ॥ सप्तपञ्चः सप्तशब्दइत्यर्थः ॥ कुसुमियति ॥ सजातकुसुम ॥ माइयति ॥ मयूरित, सञ्जातपुष्पविशेषमित्यर्थः ॥

एसुदेयत्ताएववस्यारोन्नयति । केरिसाणजते तेसिद्याणमतराणदेवाणदेवडोगा पसुत्ता गीयमा सेजहानामए  
 इहमणुस्सडोगमि अ्सोगवणेइवा सप्तयस्ययणेइवा चयययणेइया तिलगवणेइवा लाउयवणेइ  
 या निग्गीहवणेइवा ठसोहवणेइवा अ्यसणवणेइवा सणवणेइवा अ्यसिवणेइवा कुसुनवणेइवा सिध्त्त्यत्रणे

तर कश्चोये त अतरनेकिये देवतापंचे अपकषणार हाय अप्लेइत्यय । केरिसाण भते तेसि वाचमतराण देवाच देवकात्ता पयता । केइवाळे वेभगवम् ।  
 ते यकामनिष्कारायन्तो व्यतरदेवता मांइ अपना ते वानव्यतरदेवतागा देवमाव कश्चा एतच्च अतरीकदेवतागा भवन केइवाळे इतिप्रय ॥ गीयमा ।  
 देवोत्तम । संभ्रहानामए । ते यकानामेति कामसात्मन्वे । इहमसुअमागमि । एह मनुष्यशाकनेविये । असागवसेइवा ॥ अगीकउचना वने इवाक्यासकारे  
 वा पकवा । सप्तपञ्चवसेइवा । मसपञ्च माटो पुष्यजातिविगिये तेइना वन अकवा । अपयवसेइवा । चपकवन अकना । पूवयसेइवा । अमवन । तिसग  
 वसेइवा । तिसककहचजायन । माउयवसेइवा । हुचविगीय तेइना बन पाठीतरे सोगवन । निप्याइवसेइवा । वडहचना वगनेविये । अतोइवसेइवा ।  
 अवाइवन । अमवपयइवा । अगनहुचविगीय तेइना वन । मयवसेइवा । अकहचनावन । अयतिवसेइवा । अकमीकचनानवन । कुममवसेइवा । कुसुभव  
 त । निहववसेइवा । धीनामरमन तेइनावन । कधुओइवसेइवा । वापइतिवापून् विगिये तेइनावन । निष्कुसुमिय । सदैव वरिमास पूनायका । मा

सवरहसि ॥ सवकितं सञ्जातपद्मवलय, अक्षुरयदित्यथः ॥ यथहरयति ॥ सञ्जातपुष्पस्रवकभित्तय ॥ मुलुहरयति ॥ सञ्जातगुहमुक, गु  
 स्फुक्क सतासगूहः ॥ युञ्जियति ॥ सञ्जातपुष्प गुण्यय पत्र समूहः यद्यपिच साबकगुण्ययो रविलेपो नाम श्लोत्र पीत सायापीह पुष्पपत्रक  
 तो विद्येया मावनीयः ॥ जन्मस्त्रियति ॥ यमलतया समभेदितया तातुका व्यवस्थितया रसञ्जातयमसत्वम यमसित ॥ जुवसियति ॥ युगलतया  
 तातुकां सञ्जातात्वेन युगलित ॥ विद्विमियति ॥ विद्येयेषु पुष्पकलपत्रेषु नमित मितिरुत्था विनमित ॥ पत्रमियति ॥ तेनैव ममयितु मारुष्य  
 त्वा त्यक्तमित प्रसङ्गस्या विद्वर्मापंथा विति तथा सुविनक्ता अतिविनक्ता सुनिप्यक्तया पिवरुगो सुख्यो मन्त्रपद्य प्रतीता ताएवा वतसुक्ताः  
 शेषरका सान् धारयति य ॥ त्सुविनक्तपित्रीमअयवतसुक्तर, तत सुसुमितारीना कर्मधारयइति ॥ धिया वनलक्ष्या ॥ ठव

इवा यधुजीववणेइवा निम्बकुसुमियमाइयलवइयथवइयगुलुइयगोच्छियजमलियजुवलयिविण मियपणमिय  
 सुधिनक्षपिणिमजरिवकिगधरे सिरीए अतीवअतीवउवसोन्नमाने उवसोन्नमाने थिठइ । एवामिवतेसिवाण  
 मतराणदेवाषदेवलीया अहखेण दसवाससहस्रठिईगुह उक्तीसेण पलिउंयमठिईगुह यज्जाह वाणमतरैह

इवववय । मरुटा पूरुवपना पदव । बवव । निवव पूरुवजाति । मुद्रय । वतासमूह । माच्छिय । पत्रसमूह । अनलिव । समयेवौषधरत्ना । व  
 वनिठ । टावटाववय पवठावे । विवमिव । पूरुवववने भारेनम्वा । मरिभत । पतिप्रसट । पिच्छिमजखिवकिगधरे  
 सुविवा मत्रगा मववपमनी धरववहार पवतस मुकुट तेवप्रते धरे । विरोए पतीव २ उवसोन्नमाने २ थिइर । वनसमोन्नारी अतिही पतिही र  
 हादिवरमह ते पवववे एतसेववा सदृगवे रहे । एवामिवतेसिवापमतराण देवाष देवलीया । समज निये तेइना वानल्यतर देवताना देवलीया पवे  
 वया तेइवात्र वापवा । बववेव वसत्रासववव द्विनोएथि । अयल्यको दृगसइस । अपगौ स्त्रितिवाचवो स्त्रितिकहीये । उवसोन्नमाने पस्त्रियाव  
 मदिनीएथि । गात्रया उल्लूटत्रकी पन्थापमनौ स्त्रिति जाववो । बववे वानल्यतर । देवेदिव । देवकरी । देवोदिव । देवीय

शानेमायेति ॥ इह द्विवचन मानीश्वर्य प्रशस्ते इत्ययः ॥ आइकृति ॥ क्वचित्प्रदेशे देवता देवीनाम्न एवै रास्मीयास्मीयावाचसमयोदानुलङ्घनेन व्या  
 सा आशुशशोत्र मयादायुतिः, तथा क्वचित् ॥ विहसृति ॥ तैरेव वृन्नेभिजायासुसीमोद्गङ्गेन व्यासा, विश्वदो विज्ञेयधात्री, ॥ उवत्यसृति ॥  
 उपस्तीक्षा उपशश्रः सामीप्यार्थं सुशुच आच्छादनाय, सातय उवत्यसृति स्त्रियतज्ञिया नवर्तकीकासर्के सपर्युपरिष्यादिताः ॥ सयकृति ॥ सुस्ती  
 काः सशश्रः परस्परसंशेषाय सातय क्वचि तैरेव कीकृतानै रन्योन्यस्यदया समन्तत यलङ्गि राष्कादिताइति ॥ फुठति ॥ स्पृष्टा आसुतनययमरस  
 य पररिभोगद्वारेण परिपुष्काः स्फुटाया समकाया समकाला व्यन्तद्वुरनिकरिक्विस्तरिनाशतान्यकारतया ॥ अयगाढगाढति ॥ गाढ याढ नवगाढा कीरे  
 य सकसतीतास्यामपरिभोगनिश्चितमनोनि रपोपि व्यासा, गाढावगाढा इतिवाच्ये प्राकृतत्वर दकगाढगाढा, इहच देवत्वयोग्यस्य जीवत्याजि  
 धानेन तदपायः सामर्थ्यां दवसीयतएवेति ॥ अत्यगए मीश्वेसिए इपतस्यादा युक्तस्य पक्षस्य निवचन कृत इष्टव्यमिति, अपो द्वैशकनिगयसा

**द्वैतहिय देवीहिय श्रुतिस्था चितिस्था उवत्यना सयना फुढा श्रुयगाढगाढसिरीए अतीवश्रुतीत्रउयसीजेमा**  
**णा उयसोनेमाणा चिठति । एरिसगाण गीयमा तेसिवाणमतराण देवाणदेयलोगा परसुहा संतेणठेणगोय**  
 कराने । पातिष्ठा वितिष्ठा उवत्यना सयना यदा यवगाठानिरोए यतोव २ उवसोनेमाणा २ चिठति । पायसो मरजादासुगो देव देवोने वृहकरोने  
 व्याप्या पापशोभुमिका मरजादायदा व्याप्या आडादेवदेवो अमरप्राकाया परस्पर यवो इत्यगो रमता सधारानो परे पायरा प्रस्था पासन  
 कवच रनच भागदारेकरो भागवता तथा यववार उव्यात सवकश्रीका अभिनाया देवता मोषासुगे व्याप्या गाढ प्रहस्ययैरका सकोइकरो यतीव २  
 माभता २ यदा एवेवे । एरिबमाच । एहवा मेममर्यानाय क्वचि । मायमा । गीतम । तेसिवाणमतराच देवाच देयलोगा यवता । तेहना वागव्यतर  
 देवता देवताक भवन क्वद्या । सेतेकवृक गायमा एवजुवर । ते तेदेवारवे हेगीतम इम इपेप्रकारे कसु । जीवेच यसखए । जीव यसवती । आयदेवेसि  
 या । वावगु देवतापेअपजे । सेवमते २ तिमभव च गीयमे । आमे एषुं साभगवतेकवृं रकी इमवच यवया नवी । एतसे भगवतना कइमीन देखाया

र्थमाह ॥ सेवं प्रते ! सेवप्रतेति ॥ यन्माया पटं तद्गणयद्भिः प्रतिपादितं तत् एव मित्यमेव प्रवृत्त ! नाम्नाया, अनेन प्रगच्छन्ने यद्गुमानं दत्तं  
 यति द्विवचनम् एव कृत्वा प्रथमान् गौतमः अत्र प्रगवत् महावीरं यन्ते तन्मस्यतिवेति ॥ प्रथमयते प्रथमोद्देशकत्विव  
 ममासमिति ॥ १ ॥ ध्यास्यातः प्रथमोद्देशको ऽथ द्वितीय आरभ्यते, अस्य चैव सम्बन्धः प्रथमोद्देशके चलनादिपत्त्यर्थं कल्प  
 तदेव निरूप्यते तयो वेगकार्यसङ्ग्रहस्या ॥ दुष्करोयति ॥ यदुक्तं तद्विद्योष्यते तत्प्रकाशकार्येषु पूर्वोक्तमेव ग्रन्थ स्मरयन्नाह ॥ राय  
 यादि ॥ पूर्ववत् ॥ श्रीवेदमित्यादि ॥ तत्र ॥ सयककंदुष्कंति ॥ यत्परकृत तत्त्ववेदयतीति प्रतीतमेवातः स्वयकृतमिति पूष्यतिस्य ॥ दुष्क  
 बांसारिक सुवनपि यस्ततो दुःखमिति दुःखकहेतुत्वा दुःखस्य कर्म वेदयतीति काकुपाठा एतस्यः निर्वचनतु यदुदीर्घं तद्वेदयति अनुदी

त्रुच्चैः जीवेणस्यसज्जजाथवेदिसिधा सेवन्तेनतेतिनयवगोयमे । समणजगवमहावीरवदह गमसइ व  
 गमसिन्हा सजमेणतवसा स्थ्याणनाथिमाणेविहरह पठमसएपठमोउद्देशोसम्प्रप्तो ॥ १ ॥

। भागहृणयरेसमोसरण परिसाणिगगया जायएववयासी जीवेणनते सयककंदुष्क वेदेइ गोयमा स्थ्येगइ  
 समकरो समवत नीतम । समच भगव महावीरवदह । यमच भगवत श्रीमहावीरस्वामीने वाहे । बर्मसर गमस्कारकरे बदिता । बादीने । समदिता ।  
 गमस्कारकरोने । मजमेच तवसाप्याच भाविभावे विहरह । सयमेकरो नबाकमठपार्जेनचो तपेकरो पुगतनकम निवरे एषवा योगीनमस्वामी धा  
 रमाने भावतायका विचरे । पठमसए पठमाठेयो सद्यता । १ । प्रथमयते प्रथमउद्देश्येनो विवरवा समासमिति । १ । बसना  
 दिव बद्धा तेकम दुःपुना हेतुमचो दुःखनो अधिकार कहेहे—तथा उद्देश्याच संपरिधि गाबानिविदे । दुष्क्रेति । इवाधिकारो तेकहेहे—रायगिनेच  
 रे समोसरचं । राजयइ नमरे श्रीमहावीरस्वामी समोसरया । परिसाणिगगया आकएववयासी । परिसया वाधिने भापसापचे वरेगया पूर्वकोपरि गो  
 तमस्वामि श्रीमहावीरस्वामीने वादीने भावत् इम कहे तानगे कहेवी । श्रीवेदमते सयककंदुष्क वेदेइ गोयमा । श्रीव हेभगवन् । जेने जे श्रीवो कमत

कस्यपि नरामन्त्रो वेदममेय नास्ति तस्मा दुर्दीक्ष्येत्यसि नानुदीक्षे, नपञ्चथाननारमेवादेति अतो वक्ष्यं वेद्यामपि यत्नं वेदयति, एक मन्त्रव्य  
 ती त्वय व्यपदिश्यते अयमयं यद्यमेव च फलम् - कशाग्रकृत्वात् नमोऽस्यो अस्तीतिवचनादिति ॥ एव जाय वेमादि ए इत्यमन अतुर्विंशतिदशकः  
 मन्त्रिताः मन्त्रेव ॥ नेरहमक जत । मयकममित्यादि ॥ मय मेकरवेन दककष साया अतुल्ये मान्यः, सर्वेव ॥ जीवाक जंते सपकठ तुक्लं वेयतीत्या  
 दि ॥ तथा भरहमाणं जत । मयंकरु दुकरमित्यादि ॥ नत्येकत्वे योर्पो यतुल्येपि सएवेति कि षडुत्सप्रममति ? अत्राच्यते अचि षसु न्येकत्वायतु

ययेदइ अत्येगइयनोवेदेइ सेकेणठेणजतेएवबुच्चइ अत्येगइययेदेति अत्येगइयनोवेदेति गीयमा उदिखुवेदे  
 ति गोश्चणुद्विणवेदेति । संतणठेणएवबुच्चइ गीयमा अत्येगइयवेदेइ अत्येगइयनोवेदेइ एवचउयीसदरुण  
 जायवेमाणिए । जीनाणजतेसयकरुदुस्करवेदेति गीयमा अत्येगइयवेदेति अत्येगइयनोवेदेति । सेकेणठेण  
 जतेएययुच्चइ गीयमा उदिणयेदेति गोश्चणुद्विणवेदेति एव जाय वेमाणियाजीधिण जतेसयकरुस्याउयवेदेति

नवेदे रमाता मफिबद्धे पवि पातेकीधा तुक्ल नवेदे इतिमत्र । हेगोतम ! अत्येगइयववेदे । केतनाएकजोव स्रकृतकमवेदे । अतेशाएक  
 जीव स्रकृतकम तुष् नवेदे । सेकेणठेणजते एवबुच्चइ । गीतम पूछेदे - ते स्यामटे हेमगवन् ! इम कइ । अत्येगइयवेदेति । केतनाएक वेदे । अत्येग  
 इयनोवेदेति । केतनाएक स्रकृतदुष् मवेदे । गीयमा । मगवतकवेइ - हेगोतम ! अत्येगइयवेदेति । अत्येगइयनोवेदेति । गो  
 उदर पाथा तेजम वेदेनहीं । मनेबइइ एवबुच्चइ । तेपकारे इमकइ । गीयमा । हेगोतम ! अत्येगइय वेदेर । केतनाएक जीव स्रकृतदुक्ल वेदे । अ  
 त्येगइयनोवेदेर । केतनाएकजीव स्रकृतदुष् नवेदे अटय नाथा तेमाटे । एवचउयीसदरुणवेदे । इम अत्येगइयनोवेदे कइमी । अय वेमाणिए । यय  
 त् वेमाणिअयमे जायवा ए एकरवचनपानी कइ । द्विचे यकरवचनप्रायो कइहे - जोवाअभतेसयकरुदुक्लवेदेति । जीव हेमगवन् । पांते कृतदस्करवेदे इ  
 तिमत्र भगवतकवेदे - गावमा । हेगोतम । अत्येगइयवेदेति । केतनाएक जीव स्रकृतकम वेदे । अत्येगइयनोवेदेति । केतनाएक जीव स्रकृतदुक्ल

स्वयो रयंविश्वेयो वृष्टो, यथा-सम्यक्तादरेक जीव माभित्य पदयष्टिसानरोयमादि साभिकानि स्थितिकाल तस्मै नानाजीवा नाभित्य पुनः सर्वा द्वेति, एय मत्रापि समवे दितिक्षुगाया स्वधुत्वमसो नदुष्टः, अत्यन्ताभ्युत्पन्नमतिश्रियभ्युत्पादनायेत्वा द्वेति अथा यु प्रभानत्वा आरकादिव्यप दस्यया पुराभित्य दशदशह्यम् ५ जीवेशमित्यादि ॥ एतस्य जेय दृष्टोऽज्ञावना यदा सप्तमश्रिता घायुर्बद पुनश्च कालान्तरे परिकामविज्ञेया नृ तीपयरीप्राप्तोप्य निर्वाहता वासुदेवेनेय तत्तादृश मङ्गीकृत्योच्यते पूर्ववद कथि अवेदय त्यनुवीकृत्वा तस्य, यदापुन यज्ञेवद तत्रैको त्वय ते तथा वेदयतीत्युच्यते, तथैव तस्यो दितत्वादिति मय धनुर्वैश्रान्तिदण्ड माहारादिति शिंक्षयप्याह ॥ नेरइयत्त्यादि ॥ व्यास अवर ॥ म

गीयमा श्रुत्येगह्यवेदति जहादुस्केणदीदृगा तहाश्याएणयि एगस पोद्वत्तिया एगसेण जात्र वेमाणिया पुञ्जसेणवितहेत्र । गेरइयाण जते सध्वंसमाहारा सध्वंसमुस्सासणिस्सासा गो

नवदे । मेवेचमुच्यते एवपुत्र । गीतमन्त्रैश्च— ते स्त्रीमटे हेमगवन् इमकधु ! गीयमा । हेगीतम । ठटिर्भवदेति । उच्यथाख्या ते वेदे । बोधस्त्वष्टिश्च वेदेति । नञी उदयपाख्या ते नवेदे । एवंवाववेमाभिया । इम उठवीस दृक्क यावत् वैमानिकजगं । जोविषमते सयकच पाठव वेदेति । द्विवे नार वाठिचने पावु वम प्रथानवे तेमाटे पाठया पात्री दृक्कविवे कश्चै— जीव हेमगवन् सर्वकृत पायुर्मते वेदे मगगत कश्चै— हेगीतम । अरवेगार य वेदेति । केतताएक वेदे उदय शान्ते वेदे इत्यत्र । अरवेगारवंचो वेदेति । केतताएक नवेदे उदयपाख्यां विका नवेदे । अहादुस्केचं दोदृक्कया । किम अ-पुनेविये वेददृक्कवामा एकवचने बहुवचने उदयपाख्यं वेदे उदयनाख्यो ते वेदेनञी । तथा पाठएचविदीदंरणा । तिम पाठएणनेवियवि दीय दृक्क कश्च । एयत् । एकवचनपात्री एकजीव । पीडसिना । बहुवचनपात्री यथा जीव । एयतेचं चाव वैमानिया । एकवचने एकजीव पात्री याव त् वैमानिकताई जाचका । पुञ्जसेचवि तत्रेव । प्रवञ्जे यथा जीव पात्री यच्च तिमञीच एतच्छे वैमानिकताई कश्चका । अरइयापमते सध्वंसमाहारा । द्विवे अठोमदृक्क पाथाएदिकते कश्चै— नारञी हेममन् । मगवा सरोषा पाशारवतश्चे । सध्वंसमसरीरा । मगवा सरोचे परिरिहोय । सध्वंसस

हाशरीरायप्रप्यसरीरायेत्यादि ॥ इहास्पत्य महाधन्वा वैशिके तत्र अपन्यमस्पत्य यगुलायह्येभ्यजागमात्रत्वं सुरकहस्तु महात्वं म्यम्बपनु अतमा  
 मत्वं मतए प्रवधारबीयशरीरापेक्षया उत्तरकीकियापनयातु अपन्यमनुमयह्लाताजागसायत्वं नितरनु धनुःसङ्घमात्मत्वमिति एतेनच किसुमस  
 रीरा इत्यत्र प्रस उत्तरमुक्त शरीरियमताप्रिपानेसति प्राधारोष्कासयो र्थेयस्य सुगप्रतिपाद्य प्रयतीति शरीरप्रभरय द्वितीयस्थानोक्तस्यापि प्र  
 यमं नियचन मुक्त धया हारोष्कासप्रयो निर्वयनमाह ॥ तत्त्वत्वमित्यादि ॥ ये यतो महाशरीरा स्ते तदपेक्षया बाहुतरा श्युद्रला नाहारयन्ति  
 महाशरीरस्थादेव वृक्षयतीति लोके एहच्छरीरो यद्वा इत्यल्पशरीरया ह्यप्रोणी इतिवाक्यकयत् बाहुस्थापेत् वेदमुष्यते अल्पया एहच्छरीरोपि

यमा णोद्गण्ठसमठे सेकेण्ठेण जते एवबुद्धेह णेरद्धाणोसध्वेसमाहारा णोसध्वेसमसरीरा णोसध्वेसमुस्सासणि  
 स्सासा गोयमा णेरद्वयादुविहा पयाज्ञा तजहा महाशरीरायश्व्यसरीराय तत्यणजेतेमहाशरीरातेयञ्जतराए

प्यामक्षिणामा । सगनाने सरीषा जमास नोषासहीय एहवे प्रश्रुतीया भगवत कहे—गोदमा । जेयौतम । बोरचिउसमठे । एपर्य समवर्तनी बुतनवी  
 इत्त्वच । सेजेशुनभते एवबुधद । ते निसेवारय हेभयवन् । इमकम् । बेरवाबासजीसमाहारा । नारकी सवं सपदा सरीषा प्राहारवंत नहीं । बो  
 पक्षेममसरीरा । सगना सरीषे शरीरे तहाव । बासवेसकुसासिणामा । समसा सरीषे जमास नोषासे नहीय इसेपूवां भयवंत कहे । गोयमा ।  
 जेनौतम । बेरवा बुषिहा पकसा तखेडा महाशरीराय पयसरीएय । नारकी देपकारे कडा ते कहेवे—इहा अल्पपू तबा मफलपपू अपेसा स  
 दित्तव तिहा प्रध्वय पचयच पनुन पसञ्जातमो भाग शरीर जे श्वुड महलपपू पोचसे धनुयमाच ए भकधारबीव शरीरनौ अपेसापे कडा उत्तर वे  
 क्रिप शरीरनौ पवेपायं जगन्ध पगुनने पसञ्जातमे भाग शरीर उरडड महलपपुय इवे तेसाटे नारकी महाशरीरवतहे बीआ पक्ष्यशरीरवतहे एव  
 वेभेटे । तत्यन जेनेमहाशरीरा तेबइतरए याम्बने पाहरेति । तिहा पूर्वोक्तपचमाह जे महाशरीरोहे ते पलतपचो पुत्रवनी प्राहारकरे लीकनोदि  
 पदि हीमेहे माटागटोर्वा धवो पचा पुत्रननो प्राहारकरे हावीभोपरे ते नारकी पसातवेदनीय कससहितहे तेखिम सीटायापरे



क्वपि दस्य मग्नाति अल्पशरीरोपि क्वपिम् नूरि सुंक्ते तथाक्विसमनुष्यवत् सपुनरेवमिह वाहुष्यपहस्यैवा भयवात् ते च नारकाठपपाताविषष्टेया  
 नुनवा दन्यथा सष्टेद्योदययत्तत्वेनै कालेन यथा - महाशरीरा दुःखिता स्त्रीत्राहारान्निशापाय प्रवन्तीति ॥ बहुतराएयोगलेपरिचामेति ॥  
 धाहारपुद्गलानुसारिखात् परिचामस्य बहुतरा नित्युक्त परिचाम धापष्टो व्याहारकाय मितिक्तत्वोक्तः तथा ॥ बहुतराएयोगलेउससति ॥  
 उष्णसतया यद्गति ॥ निस्ससति ॥ निःश्यासतया विमुञ्चन्ति महाशरीरत्वा देव वृश्यतेहि - दुःखशरीर सज्जातीयेतरापेक्षया यद्दुष्कासनिः  
 श्यासति, दुःखितोपि तथैव दुःखिताय नारकाइति, बहुतरा स्तानुष्णसतीति तथा शरस्यैव कालकृतं वैयम्यमाह ॥ अमिक्खुवधाहारति  
 ति ॥ आत्मीइस्य पीनःपुम्पन यतो महाशरीरः स तदपेक्षया शीघ्रशीघ्रतराहारप्रह्वइत्यर्थः ॥ अमिक्खुवजससतिअप्रिक्खुवजनीससति ॥ एतेहि  
 महाशरीरत्वन दुःखिततरत्वा वनीत्स मजवरतमुष्णसादि कुर्वन्तीति तथा ॥ जेतैइत्यादि ॥ येते इह ये इत्येतावतै धार्येचिद्वी यतेइत्युष्यते  
 तद्वापामात्रमेवति, ॥ अप्यसरीराअप्यतराएयोमनेधाहारति ॥ ये यतो श्यशरीरा से तदाहारबीमिपुद्गलसारेषया श्यतरान् पुद्गला नाहार

पोगगलेस्थाहारेति यज्जतराएपोगगलेपरिणामेति यज्जतराएपोगगलेजससति यज्जतराएपोगगलेणीससति श्यन्नि  
 स्कणस्थाहारेति श्यन्निस्कणपरिणामेति श्यन्निस्कणजससति तत्यणजेतेश्युष्यसरीरा तेण

रतां धवीशाय तेमहादुषोदका तीव्रपाहारता अभिष्ठापीड्वे । बहुतराए पाण्डेपरिचामेति । मोटाशरीरतां नारकीने वषापुद्गल यरीरे परिचमे चा  
 हापुद्गले अनुसारवको परिचामने बहुतरापुद्गलं । इम नारकी धर्णापुद्गल वारवार । जससति । जससे उसासक्ये गइ । बहु  
 तराए पाण्डे पीससति । यत्नत धर्णापुद्गल वारवार नोससै निस्सासक्येधरे तथा धाहारलाज कासज्जतवैक्य कइहे । अमिक्खुवधाहारति । वारवार  
 धाहारपइ । अमिक्खुव परिचामेति । एमाटाशरीरता धको अने अतिदुक्खियका वारवार परिचमे । अमिक्खुवजससति । वकी अतिदुःखवकी वार  
 वार उसासके । अमिक्खुवपीससति । वारवार नोसासादिक्करे । तत्त्वज्जेतेप्यवरीरा । तिम पूर्वोक्त वैयचमाइ जे असायरीरलांधवी से

यन्ति अस्पृशीरस्या देवः । पादपद्मयाहारतितिः ॥ कदाचि दाहारयन्ति कदाचि आहारयन्तीति, महाशरीराहारपद्मयान्तरालापेक्षया वदुतरका  
 नान्तरानतयेत्यर्थः ॥ पादपद्मं जससति आहव भीससति ॥ एत इत्यप्यशरीरस्वेनैव महाशरीरापेक्षया इत्यन्तरतु-सत्त्वा दाहस्य कदाचि स्थातर  
 मित्यर्थः, उच्छ्वासादिक्रुवन्ति, यद्य नारकाः सुस्ततमे वोच्छ्वासादिक्रुवन्तीति, प्रागुक्तं तन्महाशरीरापेक्षये त्यवगन्तव्यमिति, अथवा अपय्यांसका  
 से इत्यशरीराः संतो सोमाहारापेक्षया मा हारयन्ति उच्छ्वासापर्याप्तकालेनच मोच्छ्वस त्यन्यदा स्वाहारयत्युच्छ्वसन्तिचे त्यत आहत्याहारयत्या  
 इत्योच्छ्वसतीत्युक्तं ॥ सेतेकहेकगयमा । एवमुक्त्वा नरहया सर्वमोसमाहारत्यादि ॥ नियममिति, समकालसूत्रे ॥ पुर्वोववसगायपञ्चोववसगा  
 यति ॥ पूर्वोत्ययाः प्रथमतःरमुत्यया साहयेतु यथादुत्यया सान्न पूर्वोत्यया मापुय सान्नकामसहाच्च वदुतरवेदना इत्यन्तर्गत्, यथा दुत्यया

अप्यतराण्योगले आहारेति अप्यतराण्योगले परिणामेति अप्यतराण्योगले जससति अप्यतराण्योग  
 ले पीससति आहरेति आहरे परिणामेति आहरे जससति आहरे परिणामेति अप्यतराण्योग

नारकोद्वाय । तेजप्यतराण्य पावने पाहारेति । तेनारको य इय वास्वाहाकार प्रथपतर आटापुद्मकनी पाहारेकर तेहाटा गरोरमाठ महागरोरको य  
 वेसवि याहा दुगुनी धवीहे तेमाटेज इम तेनारकोने । अप्यतराण्यपावसे परिहमेति । प्रथपतर वाहापुद्मक परिहमे बोहा पाहारमाटे तेनारको । य  
 व्यतराण्य पावसे जससति । प्रथपतर वोडापुद्मक प्रसासपवे पहे । अप्यतराण्यपावसेपीससति । प्रथपतर याहा पुद्मक मोसासपवे घरे । पादपद्म पाहारे  
 ति । रदो २ पाहारेकरै व्यतरामहित पाहारेकरे । पादपद्म परिहमेति । व्यतरासहित परिहमे रदो २ परिहमे । पादपद्मकससति । व्यतरासहितक  
 सने व्यसामपहे । पादपद्मपीससति । व्यतरासहित मोसासपहे । सेतेकहेक गयमा । ते तेजप्यवार्जेन हेगीतम । एवंमुक्त्वा । वेरवावीसवे स  
 माहारा । नारको सगमा सरोमा पाहारेकर हीयनही । आववीसवेसुखासपीसासा । वावपुमप्ये समका समगरोरनही सगदा समकसास मोसास  
 वतनही । द्विवे नारकोन समककरूप पूखे । वेरवावभते सवेसमकत्वा । नारको वेममपन्न । ययवा सरीया कमवतसे सतर । मोवमा । हेगीत

मात्र नारदाका मायुकादीना मन्वतराणा वेदितत्वा न्नाहाकम्मत्स्य एतच्च सूत्र समानस्थित्वा ये नारका स्तानङ्गीहृत्य प्रसीत, मन्यपाहि रत्नम  
 माया मुक्तस्थिते नारकस्य यद्गु म्यापुपि क्षयमिति पत्न्योपमावद्येयेष तिष्ठति तस्यामेव रत्नप्रज्ञायां व्यवर्षसहस्रस्थिति नारको इत्येकपि दुस्त्य  
 च इतिहत्वा प्राणुत्पन्न पत्न्योपमापुप नारक मपेदप क्विचसुं ज्ञान्य महाकर्ममिति, एव वर्त्तसूत्रे पूर्वोत्पन्नस्या एव कर्म तत सप्तस्य विद्युद्वी वस्य

एव युञ्जद् गेरइयाणोसर्वेसमाहारा जाय णोसर्वेसमुस्त्वासणीसासा । गेरइयाण ऋते सर्वेसमकम्मा गोयमा  
 णोइण्ठेसमठे सेक्रेण्ठेण ऋते एव युञ्जद् गोयमा गेरइयादुविहा पसुम्मा तज्जहा पुञ्जीयवसुगाय पच्छीवव  
 सुगाय तत्थणज्जेपुञ्जीयवसुगा तेण सुप्पकम्मतरागा तत्थणज्जेपच्छीववसुगा तेणमहाकम्मतरा सेतेण्ठेण

म । नारकेसमत्त । एवञ्च समवतर्णी । मेकेवइवतते । ते खेपवे हेममवन् इमकम्मा । एववत्तर । सव नारको मरोषा कर्मवत नर्णी उत्तर । मायमा । हे  
 गीतम । गेरइया दविहा पवता तज्जहा । नारको वेभेदे कम्मा तेकवेहे—पुञ्जीयवसुगाय । एक पूरे पच्छिहा उपत्ता ते पूर्वोपपन्न कर्णीये । पच्छाववस्य  
 गाव । जेनारको पवे उपत्ता एवोका भेद २ । तत्थ च्छेतेपञ्जीववसुगा तेच । जेपूर्वोत्पन्न वेपचमाहे तेपूर्व उपत्ता तेनारको पसप बोधा कम्मवतहे ते किम  
 वेपे उपत्ता तेहेने भादु कम्म तथा बोजाकम्म तथा वेयाहे बोद्धारहे तेमाटे । पत्थकत्तराया तत्थचलते पच्छीववसुगा तेचमहाकम्मतरा । पसपकम्पी  
 कम्मा तिर्णी पूरकम्मा चे वेपचमाहे जे एवे उपत्ता तेनारको महाकम्मना वचो कम्मा तेकिम एवे नारकोने पात्राक्षा यादिदेर कर्मे बोधा वेयाहे पचा  
 र्हे तेमाटेमहाकर्मो कम्मा एवञ्च सरोखो स्थितिना धरो जेतारको ते भणोवारकोने कम्पीवे पत्थबा रत्नप्रज्ञा प्रविषीनेविपे बोध एक नारक जीवनी  
 रत्तव्हे एवसुगाउपपन्नो स्थितिहे तेमाहे वचोस्थिति भागवो येर एवपत्न्योपमरत्तोहे एतत्ते तेहीव रत्नप्रज्ञा नारकोनेविपे व्यसहस्रपन्नो स्थिति बो  
 धाजीव उपत्ता ते पूरे उपत्तापत्थापमयेपपादुक्कनारकोनी पपचयिं स्मं महाकर्मो क्विसुक्खिसे एतायता क्वीनमक्खिसे इम वससूनेविपे पचि क्ववो  
 सेतेव्हेव गवना एवंवत्तर । ते तेवेवत्तरहे हेमीतम इमकम्मा । वचो गीतमपूजेहे—चेरत्तरावभते सुखेवमवसुगा । नारको हेमववन् । सुगत्ता सरोखेववे

पयादुत्पन्नस्य च यदुक्तमस्या दविशुद्धतरायच्छास्त्रेति यद्यं सेरगासुर्वपि, इहैव सेरयाशुद्धेन प्रायतेस्यायासा माशुद्धव्यलेयातु वर्णहारौ चो  
 पति ॥ समयपत्रासि ॥ समयदनाः समासपीलाः ॥ सद्यिनूपति ॥ सख्या सम्पदार्थान्, तद्वन् सज्जिते, सखिनोभूता सखित्वप्रज्ञा, सखी

गोयमा एधवुच्चह णेरइयाणनतेसहेसमययागा गोयमा णोइणठिसमठे सेकेणठेणतहचंच गोयमा जेतपुष्पेय  
 ययागा तेणयिसुधुनयातरागा तहेय संतेणठेण गोयमा णेरइयाण नते सहेसमलेस्सा गोयमा णोइणठेस  
 मठे सेकेणठेण जाय णोसहेसमलेस्सा गोयमा णेरइयादुधिहा पयसा तजहा पुष्पेयवययागाय पच्छीववय  
 गाय तत्यणजेतेपुष्पेयवयागा तेणयिसुधुलेसतरागा तत्यणजेतेपच्छीववययागा तेणयिसुधुलेसतरागा सेतेय

श्रीर उतर । गोयमा । हेगातम । बाइएहेसमठ । एपय समवनदा दुसकरी । सकइए तइषय गायमा । ते लकारे हेभगवन् । इमकण्ड इत्वादि सय  
 पूठिभीपरै कइवा हेमोतम । जेने पुष्यावजएयतेणिसहसकतपया । जेपूव उपना ते तेइस एण्डन बाकोरणाहे तेमाटे भखावणके ल पहे उपना ते  
 इत सबाजमइ तेमाटे त्रियुइवणक तहेते । तहेते । एमय तिमयकइवा । सनेइएण गोवमा । त तेवकारेण हेगोतम । नारकी सय समवण नहीं । हेर  
 इयाबंमते मयेसमनेष्ठा । नारका हेभगवन् । मतना मराको नेष्ठाभा भषाहे लयायदे भावसेष्ठा कइयो । गायमा । हेगोतम । योइएहेसमठे । एपय  
 मसकतरी कुलकरी । सेकण्डण । ते सेकारण उभयवन् । इमकण्ड । यावत् नारका समसाहि मभोष्ठातरी । गोवमा । हेगोतम ।  
 हेरइयादुधिहा पयसा तजहा । नारका हे प्रकारना कया ते कहेदे - पुष्पाववययाग । उत नारका पूर्व उपनाहे । पच्छाववययाग । बीजा नारकी  
 पहे उपनाहे । तत्यणजेते पयाववयया । तिहां येपवसाहि ल नारका पूष उपनाहे । तथयिसुधुलेसतरागा । ते नारकी विपुखेष्ठाभा भषी त्रेय एण्य  
 कसमठे तिसननेष्ठावतकणा । तत्यवजतपच्छाजयसगा । तिहां येपवसाहे जेत पहे उपनाहे । तेच यविसुधुलेसतरागा । ते नारका यविसुधुलेसीहे  
 वषीकसमठे तिसननयाववतकी । येतेपइण मसमा । तेमाट हेगोतम । नारका मय सयने गोनही । हेरइयाएभते सजेसमवेदथा । नारकी हे

पूता, अथवा असिद्धिग सख्छिनीपूताः सख्छिनीपूता विमत्यययोगात् मिथ्यावद्वान् मपशाय सम्यक्दर्शनजन्यमा समुत्पन्नाहतिपावत् तेषां पूर्वकृतकर्मविपाक मनुस्मरता मद्योमह दुःखसकटमिद मकस्मा दस्माक मापतित, म कृतो मगवदहंत् प्रकीर्त सकलदुःखस्यकरो विपयवि पमविपपरिजोगविमतअवेतोनि र्चर्म, इत्यतो मह दुःख मानस मुपजायते, इतो महावेदना स्ते ऽसख्छिनीपूतासु मिथ्यावृषय स्तेतु सकलकर्मकसमिदि मित्येव मजानन्तो ऽनुपपत्तमानसा अत्यवदना स्युरिस्पेक्षे अन्येत्याहुः सख्छिन्मः सख्छिपबन्ध्निप्रायः सन्तो मूता मारकस्य गताः सख्छिनीपूता स्ते महावदना स्तीत्राशुभाप्यवसाये नाशुन्नतरकर्ममध्यमेन महागरअपूरपादात् असख्छिनीपूतासु अनुपपत्पूर्वासख्छिन्नवा स्रवा सख्छिन्वा

ठेण गीयमा । णेरइयाण न्त सहेसमयेदणा गीयमा णोडुण्ठेसमंठं सेकेण्ठण न्तं गीयमा णेरइयादुविहा पसुप्ता तजहा सख्छिनीयाय अ्सख्छिनीयाय तत्यणजेतेसख्छिनीयानेणमहावेदणा तत्यणजेतेसख्छिनीया तंण

मगवन् । सगहासरीया वेदनावत पोहावत णाय । उत्तर । गावमा । हेगोतम । आरएहे ममहे । ए एव समवन्तहो वृत्तनहो । सेवेवहे चमते । ते षे कारचे हेमगवन् इमकक उत्तर । मावमा । हेगोतम । चेरयादुविहा पवता तववा । मारको वेभेदे वया तेकहेहे—सख्छिनीयाय । सम्यग्दष्टो मारको तथा सवो । असख्छिनीयाय । मिथ्यादष्टो मारको तथा सवो । तत्ववजेतेसख्छिनीया तेष मजावेदना । तिहा वेपचमादि जेनारको मिथ्याअग्रजकीहो सम्यग्दर्शन उपपना तेवने पूर्वकृत कर्मविपाक सभरवावो महादुख ते । किमन् । अकआप् सकटमाहे पया तेरम पवातापवरं मे परिहवप्रकखो धम नपायो तो मियकारचे सम्यग्दष्टीने मानसो दुखवषा । तत्ववजेते असख्छिनीया तेष अप्यवेदनावतकया अथवा केरएव इमकहेहे—सख्छिनी पवेद्रिय ववा मिथ्यादष्टो ते पोताना बोहाअम एरमा अलावता मानसोपोहा बोहोवेदे तेमाटे अरपवेदनावतकया अथवा केरएव इमकहेहे—सख्छिनी पवेद्रिय ववा मते मारकपन् पाप्मां ते मज्झीमूत वहीवे ते महावेदनावत कया तेकिम तीव्रपशुभअखवसाये वषू पशुमकमनी सधकीधो तेवेकरो नरकनेविये उप ना न्ने पसंजोभूत जे उपपना तेये पडिना पसंजोपना मागयो तेमाटे पव्यत पशुभअखवसाय नइता ते रजममाने विये उपजे तेमाटे पसंजोनी प

देवा स्वस्ताङ्गानाथवसायाजावा द्रुजमजाया मनतितीप्रवेदनरक्षेयू त्याहा दल्पवेदना अथवा सम्यङ्ज्ञानता अस्वञ्जनरस्यपयासका लोच क्रमेश महावेदना इतरच प्रवक्ष्मीति प्रतीयतप्यति ॥ समकिरियति ॥ समा स्तुत्याः क्रियाः कर्मकथनियन्त्रजुता आरम्भियपादिका येवान्ते समक्रियाः ॥ आरम्भियति ॥ आरम्भः एषिय्याद्युपमर्दुः स प्रयोजन कारक यस्याः सा आरम्भिनी ॥ पारिगर्हियति ॥ पारियहोपर्मपकरणवज्जवस्तु स्तीकारो पर्मपकरकर्मकार्ण, स प्रयोजन यस्याः सा पारियहिकी ॥ मायावत्तियति ॥ माया अनाज्जव मुपसङ्गत्वात् क्रोधादिरपिच सा प्रत्ययः

अथयेयणतरागा संतेणठेण गीयमा । णेरइयाण जते सहेसमकिरिया गीयमा णोइणठेसमठे संकेणठेण जते गीयमा णेरइयातियिहा पणत्ता तजहा सम्मादिठीय मिच्छदिठीय सम्मामिच्छदिठीय तत्यणजेतेसम्म दिठी तेसिण अत्तारिकिरियात्त पणत्तात्तजहा आरम्भिया पारिगर्हिया मायावत्तिया अथपञ्चकाणकिरिया

वेदाये पञ्चवेदनायत शीघ्र प्रवशा समोभूत जेपर्यासा तेइने महावेदना ज्ञाय धने प्रसन्नोने पर्यासा तेइने पञ्चवेदनाशीघ्र ते तेवेपच हेगोतम । इम कर्म्म नारकी समयना सरोखा वेदनावतनशी । नेतेकृच गीयमा । बसो गीतम पूछेहे—नारकी हेमयवन् सुगहा सरोखी क्रिया कर्मबधनहेतु आरम्भिकी पादिदेई ज्ञाय । उत्तर । गीयमा । हेमीतम । वेदरखेहेसमहे । एपवं समकलहो सुवनही । सेकेवहेअभते ते जेअपठे हेमयवन् इमकम्मु नारकी समकि यनही उत्तर । गीयमा । हेमीतम । वेदरयातिबिहापवणा । नारकी तोनेअकारे कक्षा । तत्रहा सथादिठीय । तेवहेहे—सम्बग्दही समकि ठावे वत्ते ती । मिच्छदिठीय । मिप्यादही पद्विहे गुणठावे ते । सम्मामिच्छदिठीय । सम्मामिप्यादही मियभावे वत्ते । तत्रयजेतेसम्यदिष्टो । तेषुवत्त तीनप सर्मादिअनारकी सन्यग्दहीहेसमकितीहे । तमिचवत्तादिबित्त्वाप्यापचत्तापोतत्रहा आरम्भिया । तेइण तेनारकोने आरम्भिया कर्मवधनहेतु कक्षा तेव हेहे—एषिय्यादिबने उपपन्न तेइोज कारकहे जेइमो तेआरम्भिकी । पारिगर्हिया । पारिगर्ह त धर्मोपकर षयक्रिय वलुमो प्रगोकारकरया प्रववा धर्मो पवरणनेविणे मूज्या ते पारिगर्हिकी क्रिया । मायावत्तिया । अनाज्जवपचा उपसङ्गपथो क्राधादिकपपि तेइीण प्रस्ययकरीये कारकहे जेइने तेमायाव

फारस यस्या सामायाप्रत्यया ॥ छप्यइकछाडकिरियासि ॥ अप्रत्यास्यामेम निवृत्त्यजावेन क्रियाफम्भयथाविकरव भप्रत्यास्यामक्रियति पचकिरियाउ  
 कञ्जति ॥ क्रियते कर्मकतरिमयोगेयं तननचस्तीत्यथः ॥ मिच्छादंसकवत्तिपत्ति ॥ मिच्छादधान प्रत्ययो हेतु यस्या सा मिच्छादधानप्रत्यया ननु  
 मिच्छात्वाधिरतिकपाययोगाः कम्मयव्यहेतव इति प्रसिद्धि रिरहेतु आरम्भादयस्तेमिद्धिता इति कथनधिराथ? उच्यते' आरम्भपरिपइशब्दाभ्या  
 योगपरिपइो योगानां तद्रूपस्या अत्रययहेतुपरिग्रहः प्रतीयतएवति तत्र सम्यग्दृष्टीना चतस्त्रएव मिच्छात्वाजावात्, श्लेषाशान्तु पश्चा  
 वि सम्यग्मिच्छात्स्य मिच्छात्वेने वइ विवक्षितत्वाविति ॥ सर्वेसमाठयाइत्यादि ॥ प्रसस्य निर्येचनचतुजगया प्रावमाञ्जियस निषदुदस्रवपसइस्र

तत्यणजेतेमिच्छद्विठी तेसिणपचकिरियाठंकञ्जति तजइ। स्यारजिया जाव मिच्छादसणव्यसिधिया एवसम्भामि  
 च्छद्विठीणपि सेतणठेण गीयमा । णेइयाणनतेसहेसमाउया सहेसमोवयसुगा गीयमा णोइणठेसमठे सेके

खविबो क्रिया बहोदे । पपयच्छाडकिरिया । पपयच्छाड निहतान समान क्रिया कर्मवधाधिकारथ पप्रत्यास्यानकोविद्या ४ । तत्रचवेते मिच्छद्विठी  
 तिहा पूर्वोक्त लोच पचमादि वेमिच्छात्वोदे । तेसिचपचकिरियाथाकञ्जति तच्चहा पारंभिया जावमिच्छादसचवत्तिया । तेइने पांचकिबुबासाये तेकहेछे  
 पारमकोबिया इत्याविक चारलो एव पृठिवोपरे कथया यावत् जाइने मिच्छादघन चारबहे जेइनो ते मिच्छादघनप्रलब्धिको कहिये ५ । एवं संधामि  
 च्छद्विठीपि । इम सम्यग्दृष्टीनेपि पांध इहा मियदृष्टीने मिच्छात्वैजरीन विवचा कोचीहे । सेतेणइइगावमा । तेमाटे हेगौतम मारको सगहा समक  
 बापतनही । वसो भौतमपुबेहे—चेरइयाअभतेससमाठया । मारको हेभगवन् । मयमा करोवर पाउछावंतहे । सर्वेसमोवयसुगा । सगहा सरोखा जप  
 नाइ एकेने जपनाहे भयवत्त कहेहे—गायमा । हेगौतम चारपुसमइ । एथय समबनही युतनही । सेकेकहे संभतेएवबुइइ । ते लामाटे हेमयवन्  
 इमचचु मारको ममहा समाठया ममावचसयाजनी उतर । गोवमा । हेगौतम । चेरइयावठमिच्छापवत्तार्तअहा । मारको चारिमचारे कइया तेकहेहे—  
 पारवेइइवामनाठयासमावचसुगा । केगहाएक मारको सरोखे पाउछाहे जिय बेजोन इमसइस्रयने पाउछेहे धनेउपनापिचि वेअ जोन एकेसने ज





रापठया, अपन्यतोनुसावङ्गुयप्रायसानन्व, महाद्वारीरत्वम् त्कर्पत यत्तद्वत्प्रमादत्त्व मुत्तरवैद्वियापयया त्वरपशरीरस्य अथयतो ऽगुलधङ्गुयप्राग  
 मानत्वं, महाद्वारीरत्वम् त्कर्पतो योत्रमसवमानत्वमिति तत्रैते महाद्वारीरा बहुतराम् पुद्गला नाहारयन्ति मनोमसवसलसहाहारोपेक्षया देवा  
 ना इषीस्थात्प्रधानद प्रधानापेक्षयाच ग्राह्येनिर्देशो वस्तुना विधीयत ततो भ्रपशरीरयासाहारपुद्गलापेक्षया बहुतरां सो ता नाहारगतीत्या  
 विधायत् प्रमीत्वा नाहारयन्ति प्रमीत्वा मुष्कसन्तिचे त्यत्र ये चतुर्थादे रूप योहारयन्ति सोकधसत्कादे योपरि उष्कसन्ति तानामित्या प्रीएव  
 मित्युच्यते, उत्कर्पतो ये सातिरेकवपसवसवसो परिधाहारयन्ति सातिरेकवपसवसवोप्युष्कसन्ति ता प्रमीकृत्यै तेषामरपकालीनाहारोष्कसवत्वेन  
 पुनः पुन राहारयन्तीत्यादि अपरेद्विधिययत्वाविति तथा अरपशरीरा अरपतरा पुद्गला नाहारय त्पुष्कसन्तिचा एषशरित्वादेव यत्पुन सो  
 या काशचित्वात् साहारोष्कासयो सत्तद्वा द्वारीराहारोष्कासास्तरालापेक्षया बहुतरामास्तरालत्वा तत्र सास्तरासे तेन हारगि कुर्वन्ति, तत्र

यथोस्साठपरिवक्षीयश्चाठ पुषीववसगा महाकम्तरा स्थिसुष्ठयसतरा स्थिसुष्ठयसतरा पष्ठीववसगाप  
 सत्या संसर्तहेय एवजावपणियकुमारण पुढाविकाइथाण जतेससिसमवेदणा इतासमवेदणा सेकेणठेणजतेससि

मवपद् कडवा । अहाचेररवा तथा भावियत्वा । जिम तेनारकीना प्रकरचनेविये कडवा पचि एवसाग्निशेय प्रसुरकुमारने गतोरनी अन्वपथी ते मव  
 धारथीव गतोर अवसथी संयुक्तनो संसंकावमो भाग मान पने महागरीरपुं अस्तवो सातहाय प्रमाच सनरवैकियगरीरनी पपेचयि अस्तपवू अ  
 वसथी संयुक्तना प्रसंकातमाभाय महागरीरपुं अस्तवो सचवावन मान तिहा ये महागरीरवत ते ववापुढकपते साहारे मनीसचच साहारनी  
 पपेचये । अमित्तव साहारेति । इहा चतुववादिदेरे साहारे । अमित्तव अवसति । ते सातफोक्त वादिदेरे साहारे अस्तवो ये साधिकवपसव  
 से साहारे तेसाधिकवपसे वसासन्ने इत्यादिब नारकीनी पपेचये अमरकुमारने विपरीतकडवा तथाहि नारकी जेपूवे उपनां तेरपपकमक गुडतरजव  
 अमतरकोयी कडवा पने प्रसुरकुमार जेपूवे उपनति । महाकसतरा अविबुद्धसतरा पष्ठीववसगापसत्या । महाकनी अगुडवर्षे अ

न्यत्र न्युक्तोत्येव विवक्ष्यते इति, महाशरीराया मयाशरीरायायो रत्नरासमसि, किंतु तदस्य मित्यविवक्ष्यते मीरु मित्युक्त चिद्वच  
महाशरीराया तेया माहारीशुसयोस्पास्तरत्न अरुपशरीरायानु महाशरत्न 'यथा-श्रीपर्मदेवानां सुसहस्रमागतया महाशरीराया तयोस्तर  
अनेव वयमहत्तुयं पशुपत्य, अनुतरशुराकाच इतमानतया शेषशरीराया शेषशरीराया शेषशरीराया पशुपति, यथाच महा  
शरीराया महीरुवाशरीराया मयसीमते इतरेपानु विपययो वैमानिकवेवति, अथवा ; सोमाशरीरायेषया अनीरु  
अनुक्रमय माहारयन्ति महाशरीराः पर्याप्तकावत्याया उच्छ्रासस्तु मयोक्तमानेनापि मवपरिपूर्वमवापशया पुनः पुन रित्युच्यते, अथपर्याप्तका  
त्यायां त्वरपशरीरा सोमाशरीरा माहारय मयोक्तमाहारत्या इरुवाविति कदाचि न आशरपत्नी रपुच्यते, उच्छ्रासापर्याप्तकावत्यायाच मो  
च्छ्रास मय्यदातु च्छ्रासतीत्यतउच्यते आहत्योच्छ्रासतीति ॥ कर्मवकलेसाठपरिवक्षेयवृत्ति ॥ कर्मादीनि मारकायेषयाविपयेकवाच्यमि तथाचि  
मारका य पूर्वोत्यया सोऽल्पकर्मशुभतरयर्षुभतरलेत्रया उक्ता अहुरास्तु य पूर्वोत्यया सो महाकर्माको अशुभतरलेत्रयादिति  
कर्म येचि पूर्वोत्यया अहुरा सो इतिकर्मशुभतरयर्षुभतरलेत्रया उक्ता अहुरास्तु य पूर्वोत्यया सो महाकर्माको अशुभतरलेत्रया ते पूर्वो  
त्रिपीयत्न ते महाकर्मावः अथवा ये यदुपायुप सो तितपनादिप्रयोगकर्मप्रकृतियन्तया आकाशान् अनेप्रकारया यातनया यातयत्तः प्रभूत मशुभ  
त्यक्तानो इति लोच्यते अशुभकर्मवः श्रुजो कर्को लदयाच इत्येतीति, यथादुपया स्त्ववृत्तयुयो इत्यकर्माको यशुभतरकर्मणा मवन्थात् श्रुजकर्मवदाम

शुभतरलेत्रयापतते तेविम उ पूर्वे उपना त घर्षा अशुभकर्म संवेदे तेमटे महाशरीरायेषया तियत्र प्रसुषणा प्रायु वाशो तेमश  
कर्मवत तथा अशुभवत्त अयमसिम्भया ते पदिना उपना गुभवत्त सोभवत्त मटी पक्षेउपनां तेचे तिर्दिवदिना प्रायु वाशोनवो अथवा शुभवत्तमवोभववा  
मवो तेमटे अर्षोदिशुभगुभवेदना मूनेत्रिवै मारकोनो परे असरकृमारुहे तथापि भावनात्रिवै विगेववे ते तरेवे—विनेसमीभूत ते महाशरीरायातये

तद्भवथेव । अहोन्मत्तज्ञवतो प्रकृतकालोऽसंभवश्च ॥ १ ॥ कस्मादिति चे ? दुष्यते येवातमानिका नारका से स्वायुष्कासस्यान्त उद्भवंतो अ  
सङ्घातमेव च तदायु रत उत्कृष्टतोद्वावक्षामीदृशिकाधून्यकालासापेक्षया मित्रकामस्या नन्तगुब्धत्वाप्राथम्यसङ्गतिरिति आह्वय - किकारकमादिष्टा नेरश्च  
यावेहमस्मिसमयस्मि । तेऽपिहकालस्वते जन्मसर्वेषु कविष्मति ॥ १ ॥ सत्त्वत्योवेऽसुखकालसि ॥ नारकाया मुत्पादेद्वृत्तं भाविरहकासस्यो र्कृपतोपि  
द्वादशमुपूर्त्तमाहत्वात् ॥ मीसकालेऽखत्तगुणेति ॥ मित्रास्यो विद्यशितनारकजीवनिर्लेपमाकासो धून्यकालासापेक्षया भन्तगुब्धो प्रवति, यतो से  
नारकेतरे प्रागमगममकालः, स च प्रसवत्तपस्यादिस्थितिकालमिश्रितः सकलन्तगुब्धोऽप्रवति प्रसवत्तपस्यादियमनागमनाना मन्तत्वात्वा त्स्व  
नारकनिर्लेपमाकासो वनस्पतिकायस्थिते रगन्तप्रागेवर्ततइति उक्तम् - घोवोऽसुखकालो सोऽकालसेऽववारसमुत्पत्तो । ततोयप्रथमतुब्धो मीसोनि  
लेपमाकासो ॥ १ ॥ आगमकमककालो तथाइतकमीसिष्ठेऽखत्तगुब्धो । अहनिष्ठेऽखत्तगुब्धो ॥ २ ॥ सुखकालेऽखत्तगुब्धोऽति ॥ सर्वेषां  
विवक्षितनारकजीवाना प्रायो वनस्पति घनन्तानन्तकाल मवस्थापात् यतदेव वनस्पति घनन्तानन्तकालासावस्थान जीवाना नारकप्रवान्तरकाल  
उक्तो हेमिः समयेइति उक्तम् - सुखोयप्रथमतुब्धो सोऽपुणपायवत्सुखययाव । एवथययकारय नवतरदेऽवियवेऽति ॥ १ ॥ तिरिक्खजोऽति

काउस्स कयरेकरेहिंतोऽप्येवा थक्काएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सधत्थोवा अयुसुखकाले, मी

वा केवा केवाऽवो बोकाऽय । वदुएवा । घर्षाऽवो । तल्लेवा । सरीऽवो । विसेसाहिएवा । वियेयाधिकर्षोय इतिप्रय उत्तर । गोयमा । हेयोत  
म ! मवयाया थमुषथासे । सबो बाओ थमूष्कासुनारकोभा जीवना उत्पात्तकाल उद्भत्तनाकासो विरह उत्पत्ती वार सुसुखनाहे तेमाटे तेइवो ।  
मोऽवथापेऽखत्तगुब्धे । मियकाल थनतमुब्धे मियनामविषयित नारकजीवनिर्लेपनाकास ते थमूष्कासुनो थपेऽवो थनतमुब्धोऽति जेमाटे नारकोवो  
मीसोऽगतिनिर्विषे जाव्धु पाव्वुं ते कास वसवगसकादि स्थितिकास मियित बवो थनतगुब्धो पुवे ते मियकासवो । सुखनाहेऽपथतगुब्धे । सुख  
कास थनतगुब्धो ते विम सवने विवक्षितनारकजीवाने प्राये वनस्पतिकायनेऽविये थनतकामरहवाओ तेहीच वनस्पतीनेऽविये थनतकासरहवुं ते

याश्च सर्वस्याये प्रसुप्तकालइति । स चान्तमुद्रुतमात्रः, अप्यत्र यद्यपि सामान्येनतिरहा मुक्त, साद्यपि विकसेन्द्रियसम्बन्धिंमामामेवा वसेया, ते  
 पामेया त्तमुद्रुतमात्रस्य विरहकालस्योक्तत्वात् यदाह-मिन्द्रमुद्रुतोविगति दिशस्तुसम्बन्धमेवुविसृष्टव । एकेन्द्रियाणात् दूर्तनीपपातविरहाभावे  
 न शून्यकालमात्रायग्व आह-एगोक्षसंभ्रमागौ बहवत्ववृद्धोद्यवायमि । एगमिगोएषिर्षं एवसेसुविसृष्टव ॥ १ ॥ यद्यिक्वावियु पुनः ॥ प्रयुसमय  
 यस्यसंज्ञति ॥ यद्यत्ता द्विरहाजायइति, ॥ मिसकालेप्रपतगुणेति ॥ भारक्त्वत् शून्यकालस्तु तिरया भास्त्येव यतो वार्तेमानिकसाधारणवचनस्पती  
 मां ततउद्रुतानां स्वामम्यव्याप्ति ॥ मनुस्सदेवावं जहापरहरयाकति ॥ प्रवून्यकालस्यापि हादममुद्रुतंप्रमात्वा वत्रगाथा - एयनरामराखवि  
 त्तिरियाकनयदिगित्तिसुखदा । वंनिग्याखतेसि प्रायकमकठकस्मि ॥ १ ॥ एयसेत्यापि व्यक्त किससारयवा वस्थानं जीवस्य स्या दुत मोक्षेपीति

सकालेच्छ्यणतगुणे , सुग्यकालेच्छ्यणतगुणे , तिरिक्कजोपियाणसञ्चत्योवे श्यसुखकाले , मीसकालेच्छ्यणतगुणे ,  
 मणुस्साणयदेयाणयजहाणेरुडयाण , एयस्सण जते येरुडयससारसंचिठणकालस्स जावदेवससारसंचिठणका

मारव भवता चनतकामररुप् ते नारकभवता चनतकास छलुटो कक्षा । तिरिक्कजाडियायसथत्वावे । तिय व्वानिकने सप्तोक्क प्रयुक्तवास ते  
 विमपतमुक्त माचै इमूत्र यस्यपि सामाग्ये तिय चने कम्मोक्कं तत्वापि विगसेदो चने सम्बन्धिमाने काचयो एवोमेव प्रंतमुक्तमात्र विरहकासकम्मो  
 चे तथा एवेद्वेजितो उदरत्तन उपपात विरहने प्रभावेकरो । प्रसुप्तकाले । प्रयुक्तकालो प्रभावहीवळे पुषिम्मादिवनेवियैवसोपसुसमयम सखेज्याइ  
 तिवचनयो विरहनापभाज्जै । मोक्षकालेपचतगुणे । नारकीनीपरै युग्यकालो तिय चने नहीवळे चेमाटे चतमान समय साधारण चनश्चतोना  
 जोवने तिरावो च्चाने योजा खानक चार्हनोहे । मद्युक्काच देवाचय जहा चेरयाच । मनुच तथा देवने विम नारकीनिकम्भू तिमजाचयो एवने  
 यच्च प्रयुक्तकाल वारमुक्तगोहे । एयस्य चमते चेरयसमारसचिठणकासस्र जावविसेसाहिपवा । एवने हेमभवत् ।  
 नारकी ससारसचिठणकाचने यामत्तयेदं तिय चससारसचिठणकाचने मनुचससारसचिठणकाचने देवससारसचिठणकाचने चेहा चेहा चकी योजाहीय

तद्भवयेव । अद्भुततद्भवतो भवतकासोऽसंभवश्च ॥ १ ॥ कस्मादिति चे ? दुष्यते येवातमानिका नारका स्ते श्यायुष्कालस्याप्त उद्भवेति च  
सङ्घातमेव च तदायु एत उदरूपतोद्गाइक्षमीभूतिकाभून्यकालायेकया मित्रकालस्या नक्तयुक्तत्वाप्रायप्रवृत्तिरिति आश्चर्य - किंकारणमाविष्टा नैरश्च  
याकीर्म्मिसमपन्नि । तेऽपिश्कालस्वन्ते जन्मासवेकविक्रमति ॥ १ ॥ सद्भृत्योवेऽसुखकालमिति ऽ नारकाका मुत्पादोद्भुतनाविरहकालस्यो ह्युक्ततोपि  
द्वारादगमुद्भूतंमावस्थात् ॥ मीसकालेऽप्यवगतगुणेति ॥ मित्रास्यो विवक्षितभारकवीथिनिर्लेपनाकालो ऽभ्युपकासायेकया ऽनक्तयुक्तो प्रवृत्ति, यतो सौ  
नारकतेरे प्रागमनममकालः, स च प्रसवव्यपत्यादिस्थितिकालमिच्छितः सक्तमन्तुक्तोऽप्रवृत्ति, प्रसवव्यपत्यादिमभागममाना मनन्तत्या ह्यस्य  
नारकनिर्लेपनाकालो यस्यस्पतिकायस्थिते रनन्तप्रागेवर्ततइति, उक्तञ्च - धोयोऽसुखकालो सौवकासेऽववारसमुद्भुतो । ततोयद्यद्यत्तनुक्तो मीसोनि  
क्षेपकाकालो ॥ १ ॥ आनमनममकालो तथाइतकमीच्छितमवगतगुक्तो ! अद्भुतनिर्वेदकालो अद्यतप्रागेवकदाएति ॥ २ ॥ सुखकालेऽवगतगुक्तेति ऽ सर्वेषां  
विवक्षितनारकजीवानां प्रायो वनरपति धनस्तानन्तकाल सवस्थानात् एतदेव वनरपति धनस्तानन्तकालावस्थान जीवाना नारकनवास्तरकाल  
सकृष्टो हेगितः समयेइति उक्तञ्च - सुक्तोयप्रवृत्तमुक्तो सोपुत्रपायववस्वइगयाचं । एवचवयववारय प्रवतरदेवियवेऽति ॥ १ ॥ तिरिक्त्वबोधि

## कालस्व कपरेकरोर्हिंतीस्यप्येवा यज्ञाएवा तुज्ञेवा विसेसाहिंएवा ? गोयमा ! सद्भृत्योवा अ्यसुखकाले, मी

वा केवा केवावको सोऽवाच । ननुपवा । यथाऽहोव । तुज्ञेवा । सरोऽवाहोव । विसेसाहिंएवा । वियेमाविक्रयोय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगोत  
म ! मन्ववावा यमुक्तवाधि । सवयो योको अयुष्कालानारकोना जीवना उत्पादकास उद्यतनाकालो विरह सकृष्टो वार सुद्भुतनाचे तेमाटे तेऽवो ।  
सोऽवामप्रवृत्तगुणे । मियवाक प्रगतगुक्तो मियनामविवक्षित नारकवीथिनिर्लेपनाकाल ते अयुष्कालको अपेचावे प्रगतगुक्तो जेमाटे नारकोको  
सोऽगोतिनेविये वाक्च पाचन् ते काच अमनममकालि च्चितिकास मिश्रित बको प्रगतमुक्तो पुवे ते मियकासको । सुखकालेऽवगतगुणे । गूय  
आम प्रगतमुक्तो ते किम सवने विवक्षितनारकजीवाने प्राये वनमनोऽवायनेविये प्रगतवाऽववायो तेऽहोव वनमनोऽवेविये प्रगतवाऽववायु ते

ति ॥ १ ॥ सोऽस्ति येषा तेनवा चरति य ते मियोगिका आग्नियोगिकावा ते च अथ भारत दरुवतएव मंत्रादिप्रयोगीकारो यदाह—ओठयद्रूईक  
 म पयिबापयिचिनिमित्तमाजीवी । इन्द्रिससायणकुं अष्टिगंभायकुंइति ॥ १ ॥ कौतुक सोऽप्याद्यर्थे अपनक प्रूतिक्त्स इवरिसाविभूतिदा  
 न प्रमाप्रत्रं चप्रविद्यादि ॥ सलिमावति ॥ राजाहरबादिसापुसिद्धयता क्विचिपाना नित्याह ॥ वसुधावावगावति ॥ दक्षम सम्यक्का व्यापक  
 त्वाह येषांत तथा तेयो मिद्रुवानामित्यय ॥ एएसिब देयलोएनु उववज्जमावावति ॥ अनेन देवस्वा दम्यत्रापि केचि दुत्यद्यत्ताइति प्रतिपादित ॥  
 विराड्विसज्जमाच अश्वेव प्रयवपरंस्तु उक्कोसेवं सोइस्मे कप्य ॥ इह कचि दाह—विराड्विसज्जमाना मुत्कर्षेव सोऽर्धे कस्य इति यदुक्त त त्क्य  
 एतत्ते द्वीपद्याः मुद्रुपालिक्त्मात्रे विराड्विसज्जमाया इंगानतत्पादमवषा ? दित्यत्रोच्यते, तस्याः सवमविराड्विनोत्तरगुणवियपया बहुशत्वमात्रकारिणी

श्यानिर्दिश्याण सलिगीदसणवावश्याण एगसिणदेवलोएस्तु उववज्जामाणार्णकस्सकहिउथवाए पसत्ते ? गो  
 यमा ! श्वसजयन्निधियदसुदेवाण जहणोणज्जवणवासीसु उक्कोसेण उवरिमगेवेजाएसुं, श्वविराड्विहयसज्जमाण  
 जहणोणसोइममेकप्पे उक्कोसेणससुठसिधेयिमाण, विराड्विहयसज्जमाण जहणोणज्जवणवासीसु उक्कोसेणसोह

वि सम्यक्त्वो भटके एतसे निज्जय तेइज १४ । एएमुचदेवोएसउववज्जमायाचकसुक्कविठवाए पसत्ते । एइने वेमगवम् । देवसोअनेविदे उववज्जता  
 ने केइने जिव्यास्यानकनेविपे उववज्जोक्त्तो ? एतसै देवगति टाळो बीजास्यानकनेविपे पचि केइएकउपवै इथो अथायो इतिप्रय मगवतकइहे—गो  
 यमा । वेमोतम । असज्जयमविषदक्त्तवेवाच । समवतो मविकद्रव्यदेवने । अइसेवंभवववासीसु । अउववज्जको भवनपतीने विपे उववज्जोक्त्ता । उ  
 वासेवंउवविरिमयेअएनु । उउउउउउको लपरिसे गोवेयके एतसे मवसे देवेयकेउपवै । अवरिड्वियसज्जमाच । अवरिड्विधित साधुने । अइसेवसोइको  
 कये । अउववज्जको सोऽपमामा देवस्वावै उववज्जोक्त्ता इव । उवासेवमव्यइमिडेविमाने । उउउउउउको सर्वाथसिध विमाननेविधियाय उववज्जै । विराड्विय  
 रंज्जमाच । विराड्वित साधुने वाट्टिविराडे तेइने । अइउवेवं भवववासीसु । अउववज्जो भवनपतीनेविपे उववज्जोक्त्ता इव । उउउउउउको

द्विपुत्रमासुवमाकति ॥ उक्तव्यतिरेकिता ॥ मनोलक्षिरहिताना मन्नामनिर्धरतां, तथा ॥ तावसायति ॥ पतितपत्राद्युपभोग  
 वतां वासतपस्त्रिणा तथा ॥ कदप्यियायति ॥ कल्प्यः परिहासः स ययामसि तेमवा ये भरति ते कल्प्यिष्वाः कल्प्यिकाया व्यवहारत  
 यरवन्तएव कल्प्यकीकुष्पादिकारकाः तथाहि माथा—कहकहकहसहसह कदप्येथविद्युयापतझावा कदप्यकहाकहय कदप्युवयससंसाय १ ॥  
 प्रुमनयववयवदसव च्चदहिंकरपायकनमार्हेहिं । ततकरेहजहहह हसहपरोभतयाप्रहसं ॥ २ ॥ वायाकुण्डुहठुण तवपहजेहस्सएपको । माका  
 विहबीवठय कुवइमुहनुएरवेत्यादि ॥ ३ ॥ जोठचठुयिएया सुधप्यसत्यासुभावर्यकुणह । सोतविहैसुनच्छह सुरैसुनहठवरकबीबोति ॥ ४ ॥ प्रतलो  
 पाकल्प्यिकाया ॥ वरगपरिहायगायति ॥ वरगपरिहायका प्राटिनेश्योपभीविन खिव्दिन, भयवा; हरकाः कृच्छोटकादयः परित्रावकासु क  
 यिसमुनिसूत्रो ऽसनेया ॥ क्विचिसियायति ॥ क्विचिपं पाप तदसि येया ते क्विचिपिका सख व्यवहारत यरवन्तोपि ज्ञानाद्यवर्षेवाविभो य  
 योर्क—नाकस्वकेवतीच यन्मायरियस्ससङ्कसाङ्कं । मार्हेभवक्यवर्ने क्विचिसियमाथङ्कुणहति ॥ १ ॥ प्रत सेपों तथा ॥ तिरिच्छियायति ॥ तिरया  
 गवाद्वादीनां देसुविरतिजासां ॥ आलीवियायति ॥ पाकुरिठविद्येयावां नान्यवारिवां गोसालकशियावा मित्यन्ये ॥ आलीवति वा ये अविदे  
 क्विसोक्तो सन्वियूजास्यात्याविभि सपयदकादीनि ते आलीविकासिात्तना जीविका प्रतसेपों, तथा ॥ आत्रिष्ठुगियायति ॥ अत्रियोजन विद्या  
 मंत्रादिनि परेपावभीकरवादि अत्रियागः सच द्विषा, यदाह—सुविहोक्तुसुप्रमिष्ठयो दवेप्रावेपहोयमायवो । दक्खिहोइभोगा विज्जामंतायनायमि

### जमाण अस्सखीण तावसाय कदप्यियाण वरगपरहायगाणं क्विचिसियाणं तिरिच्छियाणं आजीयियाण

सेवतो वासो मसकरो कटपववाणा कहकहारने ८ । वरमपरिवापसाय । विरंठिया कपिससुतिना सवानीवाने ८ । क्विचिसिवाय । आनादिना  
 प्रवववाटवाडे तेहने १ । त्तिरेच्छिवाय । तिरीर गाव यथादि यावकप्रमपासे तेहने ११ । आजीवियाय । पाणहोविशेय यपवा योगासाना श्रिय  
 तेहने १२ । आभियागिवाय । व्यवहारे वात्तिवत कका मंद यथादिकना करवहार १३ । सखिगीदसववावकगाय । रवीहरवादि साय वेपवे प

ति ॥ १ ॥ अथोऽस्ति येषां तेनवा चरति य ते नियोगिका आग्नियोगिकाया ते च व्यवहारत शरपवतएव मन्त्राविप्रयोक्तारो यदाह-कोऽयम्युर्हो  
 म्ने पसिञ्चापसिञ्चनिमित्तमाजीवी । इन्द्रिससायपयसुष्ठु अष्टिगभ्रावबहुबुद्धिः ॥ १ ॥ कोऽतुक्त सौम्याग्याद्यर्थे रूपनख, प्रुतिकल्प इवरिताविभ्रुतिरा  
 नं प्रमाप्रप्रच रूपप्रपिद्यादि ॥ सलिंगाकृति ॥ रजाहरादिसापुसिद्धवतां किविपाना मित्याह ॥ दसबावजगाकृति ॥ दसन सम्यक् व्यापक  
 त्रष्ट येषांते तथा तेषां निद्रुयाभामित्ययः ॥ एयसिचं देवलोपसु उबवज्जस्तावाकृति ॥ धमेन देवत्वा दन्यथापि क्ंवि दुल्यद्यत्तइति प्रतिसपादित ॥  
 विराड्वियमजमारं अइयेच प्रवचबर्हसु उक्कोसेचं सोऽस्मे कप्ये ॥ इह कचि दाह-विराधितसपमाना मुत्कर्षेच सोऽस्मे कप्ये इति यदुक्त त त्वय्य  
 पठते श्रीपद्याः मुक्तपालिकात्रये विराधितसपमाया इयानवत्यावमथषा ? दित्यत्रोच्यते, तस्याः सबमविराधमोत्तरगुणवियया यदुत्तात्वमाप्रकारिबी

श्यान्निठगियाण सलिगीदसणवाचणगण एणसिणंवेवडोएसु उववज्जामाणकस्सकाहिउदयवाए पयसुं ? गो  
 यमा ! स्युत्तजयत्तवियद्वेववाण जहणेणन्नवणवासीसु उक्कोसेणं उवरिमगेवेज्जाएसुं, स्युविराहियसजमाण  
 जहणेणसीहम्मेकप्ये उक्कोसेणसव्वुठसिंहेविमाण, विराहियसजमाण जहणेणन्नवणवासीसु उक्कोसेणसोह

वि सव्यज्ञवो भटके एतसि निम्न तेइने १४ । एणमुच्चदेवनीएससववज्जनावाचकस्यवडिठववाए पयसुं । एइने वेमगयन् । देवसोऽस्मेविदे सपज्जता  
 ने सेइने विस्वाम्याननेनिये अपज्जवोक्को ? एतसि देवसति टाळी बीआस्सानकनेनिये पवि केइएकअवले इसी जपयो इतिप्रश्न मगयतकइहे-यो  
 यमा । हेगोतम । एसजयभविपदब्बदेवाचं । एसयतो मविबद्धवदेवने । अइसेचंभवववाभीस । अचस्यबकी भवनपतोने विदे अपज्जवोक्का । उ  
 चासेचंठयिप्रमगेवेज्जपन् । उरउट्टककी अपरिसे गेवेवके एतसि नवमे पैवेवकेअपले । पविराड्विससंजमाचं । पविराधित साधुने । अइसेचंसीहप्ये  
 थपे । अचस्यवकी सीचमनामा देरुवावै अपज्जवा इव । उक्कासेचमस्युसिंहेविमाचं । उरउट्टककी सर्वावसिच विमाननेविदेवाव अपले । विराड्विय  
 र्मज्जमाच । विराधित साधुने चारिपविराधै तेइने । अइसेचं भवववाभीसु । अचस्यवो भवनपतोनेनिये अपज्जवोक्कोवापे । उरउट्ट



द्विपञ्चमसम्बन्धति ॥ उच्छ्रयतिरेच्छिका ॥ प्रसूतीवति ॥ मनोसञ्चिरहिताना मन्नामनिर्द्धरावतां, तथा ॥ सावसायंति ॥ पतितपत्राद्युपमोग  
 यता नाततपस्त्रिनां तथा ॥ कंदप्यियावति ॥ कल्प्यः परिचासः स ययामसि तेनवा ये वरन्ति ते कल्प्यिकाः कान्त्वप्यिकाः कान्त्वप्यिकाया व्यवहारत  
 धरबवन्तएव कल्प्यंकीत्कुष्यादिकारकाः तथाहि गाथा-कहकहकहस्वहसुबं कदप्योप्रकिरुयापत्रावा कंदप्यकहाकहए कदप्युवएसवंसाय १ ॥  
 पुममपबवयबदसब च्चेरेकिंकरपापकमसाइहिं । ततकरेइभचमए इवइयोप्रतदाभइस ॥ २ ॥ वायाजुफुइठेपुय तवपइमइहस्वसएचसो । माका  
 विइजीवइए जुवइमुइतूरएचवेत्यादि ॥ ३ ॥ जोसजठविण्या सुधप्यसत्यासुमावबजुबइ । सोतविइमुगच्यइ सुरेसुनइठेवरकहीशोति ॥ ४ ॥ भतसो  
 याकल्प्यिकाबा ॥ चरगपरिहायमावति ॥ चरकपरिहायका धाटिनेइयोपत्रीकिन खिवंकिन, अथवा चरकाः कच्छोटकादयः परिघ्राजकास्तु क  
 यिसमुमिपूगको ऽतसोपां ॥ किञ्चिदियावति ॥ किस्विय पाप तदसि येषां ते किश्चिपिका स्वेच ध्यवहारत धरचवन्तोपि प्रामाद्यवर्षेवादिनो य  
 योच-नाबस्वेवतीच पन्नापरियस्वसङ्घातूबं । नार्थेभवसवार्थे किञ्चिसिपमावकपुसइति ॥ १ ॥ अत सौपां तथा ॥ तिरिच्छियावति ॥ तिरयां  
 नवाद्यादीनां देहविरतिनावां ॥ चाचीवियावति ॥ पाककिचिद्योपाबां नाम्यपादिषां गोसासकगियाया गोसासकगियाया मित्यन्ये ॥ चाचीवति धा ये इविवे  
 किलोकतो सञ्चिपूकाभ्यात्यादिनि सप्यरफारीनि ते चात्रीविभासित्वना जीविका अतसोपां, तथा ॥ चात्रिष्ठगियावति ॥ अत्रियोजन विद्या  
 मत्रादिनि परेपावशीकरबादि अत्रियोकः सब विद्या, यवाइ-रुविहोबजुअत्रिष्ठो गो वध्नावेपरोपनायद्यो । वध्मिहोइभोग विज्नामंतायनायनि

जमाण स्यसखीप्र सावसाण कंदप्यियाण चरगपरस्त्रायगाण किञ्चिसियाण तिरिच्छियाण स्याजीवियाण

चत्रतो चाची समवरो बटपकयाना कइकइराले ८ । चरगपरिष्वाइगाब । विदंइबा कपिममुनिना सतामोयाने ८ । किञ्चिदियाब । प्रगादिना  
 परचैवाटबासै तेइने १ । तिरिच्छिबाब । तिरिच माय अय्यति यावकधमपासै तेइने ११ । चाचीवियाब । पाखडोविगेप पववा योगाधाना शिव्य  
 तेइने १२ । धामिशागियाब । अयइरि वारिवत बका मत्र यनादिकना करचइर ११ । सचिगोदंशबवावपुगाब । रजोइरबादि सात्रु बेयवे प

ति ॥ १ ॥ सोऽस्ति चेपां, तेमवा; परति य ते मियोगिवा आनियोगिकाया, तेव व्यवहारत धरववतएव मत्रादिप्रयोगारो यवाह—कोठयजुरेक  
 मे पविबापसिचेनिमित्तमात्रीधी । इन्द्रिससायणकञ्चु अदिसृगजावकुण्डइति ॥ १ ॥ कीतुव सौजाप्याद्यपे रूपनक भूतिकाम ध्वरितादिभूतिदा  
 नं प्रप्राप्तमथ स्वप्रविव्यादि ॥ सक्तिगायति ॥ रजाइरबादिसापुसिद्रयता क्विधिपाना मित्याइ ॥ इसुववावकायति ॥ वसन सम्यक् व्यापव  
 ल्पट चेपांत तथा तेपां निद्रुवाभामित्यर्थः ॥ यएविय देवसोयनु उवतल्लमावाकति ॥ छनेन देवत्वा दम्यत्रापि केचि दुत्पद्यन्तइति प्रतिपादित ॥  
 विराडिपसत्रमाथ अहमेव प्रवयवइसु उक्तीसेव सोइत्ने कप्ये ॥ इइ कवि दाइ-विराधितसयमाना मुक्तपैठ सोपमे कप्ये इति यदुक्त त स्क्य  
 पटते त्रीपद्याः मुक्तमालिकानवे विराधितसयमाया ईयाभतवत्यादयका ? दित्यत्रोच्यते, तस्याः सवमविराधनीतरगुणविविपया यकुवात्वमात्रकारिणी

आचिन्तगियाण सतिगीदसणवावसुगाण एणसिणंदेवलोणु उवयजामाणाणकस्सकाहिउयथाए पयसुत्ते ? गो  
 यमा ! असजयनयियदधुदेवाण जहणेणनयणयासीसु उक्तीसेण उयरिमगेवेजाणुं, अयिराहियसजमाण  
 जहणेणसोहम्मेकप्ये उक्तीसेणससुठसिद्धेविमाण, विराहियसजमाण जहणेणनयणयासीसु उक्तीसेणसोह

वि सम्यक्को भटके एतसे निम्नर तेइने १४ । एणमुवदेवमाएवववव्वमाचाइकसुअहिठववाए पवत्ते । एइने हेभननन् । देवसोकेविदे उपवता  
 ने केइने किक्षाप्यानअनेविपे उपववाकको ? एतसे देयसति टासो बीजास्यानकनेविपे पथि केइएवकपवे प्रसो अवासी इतिप्रय भगवंतकइहे—गी  
 यमा । हेनोतम । पसवमभविददवदेवाथं । पसयतो भविअद्वदेवने । अइसेभभववासीसु । अवनवकी भवनपतीने विदे उपववोववाणी । उ  
 वासेवठवरिमगेवएणु । अउठयकी अपरत्ति गेवेयके एतसे नवमे पैवेयकेउपवे । अविराहियसजमाणं । अविराधित साहुने । अइसेवंसोइपे  
 कप्ये । अथअवकी सोधमनामा देयसत्ते उवववा होय । उक्तीसेवससुठसिद्धेविमाणं । अउठयकी सवमवविपेववाय कपवे । विराहिय  
 नत्रमाथ । विराधित साहुने चारिवविराधे तेइने । अइसेवं भवपवासीसु । अथअवकी भवनपतीनेविपे उपववोवोव । अउठय

प्रविष्टारजाशताकरस्य दक्षिणैति कृतस्यच कर्मच यथादयो प्रयत्नैति ॥ तान दशोपभा ॥ एवचिप्यत्वादि ॥ अथक क्रवर चय प्रदेशानुजागादे  
 वेदन्त मुपचय सवेय पीन पुन्येन अन्त्यत्वाः - चयन कर्म पुद्रसोपादानमात्र उपचयनस्तु चित्तस्या वाचाकाल मुक्ता वेदनाय नियेक- सचे  
 य-प्रथमस्वित्ती बहुतर कर्मवसिक्त निपिच्यति ततो द्वितीयाया विज्ञेयहीन एव यापदुररुट्टायां विज्ञेयहीन निपिच्यति उक्तम् - मोलूकसय  
 मवाहं पठमाहठिइइबुतरदव । सचविसेसहीक कायुक्तासतिसव्यासि ॥ १ ॥ उदीरय मनुवितस्य करकविदोपा दुदयप्रवेक्षण यदन मनुजनयन, नि  
 खरचं जीवप्रदोस्य कर्मप्रदक्षानायातनमिति इइए सूत्रसङ्ग्रहाया मयति साचगाहा ॥ कळचिएइत्यादि ॥ ज्ञावितार्थाच नवर ॥ याइतिएलि ॥

वेमाणियाण , एवकरिस्सति , एत्यथिदरुठं जाय वेमाणियाण , एव चिए चिणिसु चिणति चिणिस्सति,  
 उयचिए उयचिणिसु उयधिणति उयचिणिस्सति , उदीरंसु उदीरति उदीरिस्सति , वेदंसु वेदति वेदिस्स  
 ति , णिज्जारेसु णिज्जारेति णिज्जारिस्सति , गाहा ॥ कळचिएउयचिए उदीरियावेदिपायणिज्जाया । स्या

करिस्सति । इहापिचि वत्तमानकासेपि इमज्जानारोपीपदि जावत् वैमानिकपयत्तदुक्क कइया, इम पागामिकासेपि करले । एत्वदिदुपोजावेमा  
 थिवाच । इहापिचि पनागतकासे नारकोपादिदेई जावत् वैमानिकताई दुक्ककइवी । एवचिए । इम चयते प्रदेशे पद्रुमागादिकवो यधारवो १ । चिचिसु ।  
 वे पतीतकासे पिष्सा २ । चिचति । वत्तमानकासे चिचोसे ३ । चिचिस्सति । पनागतकासे चिचले । उपचय तेसोच बारवार पुट्ठकत्वो १  
 उपचियिम् । पतीतकासे उपचय कोवो २ । उपचिचति । वत्तमानकासे उपचय करेसे ३ । उवचिचिस्सति । पनागतकासे उपचय करसे ४ । उदीरेव  
 उदीरवा ते पचउठपयाव्याजमने करएवियेये उठय पाचोसे उठोरा १ । उदीरेति । उदीरिस्सति । उदीरस्से २ । वेदंसु वेदति वेदिस्सति ।  
 वेदन्त पद्रुमचय भावयम् इवयं पतीतकासे वेदो २ वत्तमानकासे वेदोसे ३ । चिचारेसु चिचारेति चिचरिस्सति । चिचरवो ते  
 चोवप्रदेगवो कर्मप्रदेग दूरकरे, वा पतीतकासे चिचरे २ वत्तमानकासे चिचरे ३ । गाहा ॥ चिचे पूर्वोच सगइचोमाया

कृतचित्तापचित्ततच्छे ॥ ७३ उपपत्ति ॥ सामान्यक्रियाकालप्रयत्नक्रियाभेदात् ॥ त्रियनेयति ॥ सामान्यक्रियाविरहात् ॥ पञ्चमति ॥ त्वरीरितवेदितनिष्ठा  
 र्णा माहपुद्गनाहतिशयः ॥ तिष्ठति ॥ त्रय खिविधा इत्यप मन्वाद्ये यूपश्रय कृतचित्तोपचितानुष्ठा न्युत्तरेषु कस्मात्त्रोदीरितवेदितनिष्ठास्वांती  
 ति ? उच्यते कृत चित्त सुपचित कर्म विरमप्यवतिष्ठत इति करवादीनां त्रिकासत्रियामाश्रितिरिक्त चिरावस्थानलक्षण कृतत्वाद्यमित्य कृता  
 दी न्युष्ठा सुदीरवादीनांतु मचिरावस्थानमस्तीति त्रिकासत्रियाना क्रियामायेर्बैव तान्यमिच्छित्तानीति जीवा काङ्क्षामोहनीयं काणवेदयन्तात्सु  
 क्त मय तद्दहनकारणप्रतिपादनाय प्रस्तावयथा ॥ जीवाकृततेइत्यादि ॥ व्यक्त अथर ननु जीवा काङ्क्षामोहनीयकर्मवेदयन्तीति प्ररत्निर्कृतं किं  
 पुनः प्रस्तु ? उच्यते यदेवमोपायप्रतिपादनाये उक्तम् - पुनश्चिययिपय्या अत्राहृत्यकारयप्रस्यि । पश्चिसेहोपपद्युषा हेउविसेवोवलमनोति ॥ १ ॥  
 सेद्वित्ति ॥ तैस्ते दमनात्तरस्रवकुलीर्यस्रसर्गादिभि र्भिद्वप्रसिद्धे द्विवचन चेइ वीप्याया कारणेः अङ्गादिइतुक्तिः किमित्यप्य सङ्कि

दितिएवउन्नेया त्रियनेयापच्छिमातिशु ॥ १ ॥ जीवाणजते ! कस्वामोहणिजाकम्न वेदेति ? हतायेदेति ।  
 कहणजते ! जीवाकस्वामोहणिजाकम्नवेदेति ? गोयमा ! तेहिंतेहिंकारणेहि सकियाकस्विया वितिगिच्छि

बरेइ -- पर्ये पूर्वकथा तद्वोत्र छे । कइयिउचनचिवाव उदीरियावेदियावचिच्छिवा । पादितिपचमेवा त्रियनेयापच्छिमातिशु ॥ १ ॥ कोचो विच्छो  
 २ उपचय कोचा १ उदीरिया ४ वेद्यु ५ निजरा ६ पइसा कृत चित्त उपचित सचयचिक्वने धारभेइ तोनकाहपाचो एक समुचये एववार ते स्तो वि  
 येय एइने चिरयान पस्थानछे उदीरित वेदित भिजरित ए तोनभेदे तोनकाहहोत्र कइवा, एइने चिरकाहचवस्थानतरी पयियेय जीवकाचामोहनी  
 यकम्न वेदे इमाकथा ॥ द्विदे शिइना वेदनाकारणकइवानेकात्रे । जीवाणभते कस्वामोहचिच्छं कच वेदेति । जीव हेमगवन् ! माचामोहनीयकम्न वेदे इ  
 तिप्रय । हतायेदेति । उतर इमोतस । वेदे । कइरभते । बिसेमकारे हेमगवन् ! जीवाकस्वामोहचिच्छं कच वेदेति । जीव माचामोहनीयकम्न वेदे  
 इतिप्रय उतर । गायमा । जेयोतम । तेहिंतेचिकारयेहि सन्दिवाकस्विउवावितिचिच्छिवा । तिचेतिचैकारयेकरो मिष्वास्वोमी संगतिवचो तथा परदय

अविपरकालताकरस्य दर्शितेति कृतस्य च कर्म च यथादयो जयन्तीति तान वज्ञायन्नाह ॥ एवचिन्मत्यादि ॥ व्यक्त खयर षयः प्रवेशानुजागावे  
 वेदेन मुपपद्य स्तवेय पीनाः पुष्येन अन्यत्याहुः - ययन कर्म पुद्रतोपादानमात्र उपपपनन्तु चित्तसा याचाकाल मुक्ता वेदनाये नियम सचे  
 व-प्रथमस्वित्ती धनुतर कर्मदक्षिक नियिन्वति ततो द्वितीयाया विशेषहीन एव याधदुरकष्टया विशेषहीन नियिन्वति उक्तम् - मीलूकसग  
 मवाहं पठमाष्टिइइवपुतरवध । ससखिसेसहीन आहुकोसतिसद्यसि ॥ १ ॥ उदीरव मनुदितस्य करवविशेषा दुदयप्रवेशन वदन मनुजनन नि  
 करव जीवमदसोभ्यः कर्ममदज्ञानांशातनमिति इह च सूत्रसङ्ग्रहाया मवति सावभाहा ॥ कारुचिएइत्यादि ॥ प्राथितायांच नवर ॥ आस्तित्ति ॥

वेमाणियाण , एवकरिस्सति , एत्यथिवदुरुज जाव वेमाणियाण , एव चिए चिणिसु चिणति चिणिरस्सति ,  
 उवचिए उवचिणिसु उवचिणति उवचिणिरस्सति , उदीरिसु उदीरति उदीरिस्सति , वेदंसु वेदति वेदिस्स  
 ति , णिज्जरेसु णिज्जरेति णिज्जारिस्सति , गाहा ॥ कणेचिएयउयचिए उदीरियायेदियायणिज्जिक्खा । ह्या

करिस्सति । इहापि वतमानकासेपि इमअरलीपादि भावत् वेमानिकपर्यन्तसुक्क कहवा, इम पागामिकासेपि करस्से । एत्वयिइइपोकाववेमा  
 पिबाह । इहापि वतनागतकासे नारकीपादिदेइं भावत् वेमानिकतादि सुक्क कहवो । एवपिए । इम षयते प्रवेशे चनुभागादिकवी वधारवो । चिणिसु ।  
 वे पतीतकासे चिक्खा २ । चिचति । वतमानकासे चिचसे ३ । विचिस्सति । वतनागतकासे चिचसे । उपपय तेहीन वारवार पुटकरवो १  
 उवचिणिसु । पतीतकासे उपपय बीधी २ । उवचिचति । वतमानकासे उपपय करसे ३ । उवचिचिस्सति । वतनागतकासे उपपय करसे ४ । उदीरेसु  
 उदीरया ते पठउदययाच्याकमे करवविशेषे उदय पाबीवे उदीरया १ । उदीरेति । उदीरिस्सति । उदीरसे २ । वेदंसु वेदति वेदिस्सति ।  
 वेदंसु चनुमवम भावतवु इत्वई पतीतकासे वेदसे २ वतमानकासे वेदसे ३ । चिक्खरेसु चिक्खरेति चिक्खरिस्सति । निजरेवो ते  
 जीवमदयवो कर्मप्रदेशे दुरकरे, वा पतीतकासे निजरे १ वतमानकासे निजरे २ वतनागतकासे निजरे ३ । गाहा ॥ चिचि पूर्वोक्त सगइओगाया

कर्मचितोपचितसकले ॥ वजनपति ॥ सामान्यक्रियाकाशयक्रियाजेदात् ॥ तियजेयति ॥ सामान्यक्रियाविरहात् ॥ पच्छिमसति ॥ उदीरितवेदेतनिष्ठा  
 र्णा मोहपुद्गलादितिहायः ॥ तिक्रिति ॥ इय त्रिविधा इत्यथः सन्वाद्य यूयत्रय कृतचितोपचितान्युक्ता न्युत्तरेयु कस्माकोदीरितवेदितनिष्ठायां  
 ति ? उच्यते कृत चित मुपचित कर्म चिरमप्यवतिष्ठत इति करवादीनां त्रिकालक्रियामाश्रितिरिच्छ चिरावस्थानलक्षणं कृत्वाद्यागमित्य कृता  
 ही न्युक्ता न्युदीरवादीनां तु कश्चिरावस्थानमस्तीति त्रिकालयतिना क्रियामाश्रयेय तान्यमिहितानीति भीवाः काङ्क्षामोहनीय कस्मवेदयन्तीत्यु  
 त्त मय लक्ष्मणकारणप्रतिपादनाय प्रस्तावयताश्च ॥ जीवाकृजतेइत्यादि ॥ व्यक्त अवतं मनु जीवा काङ्क्षामोहनीयकर्मवदयन्तीति प्रागिक्तस्यैत कि  
 पुनः प्रसा ? उच्यते येदनीपायप्रतिपादनाय उक्तस्य - पुत्रजवियवियपथा समकृतत्वसारवसत्वि । पक्षिवेद्योपपत्तुषुषा हेतुविसेसोवसतोपि ॥ १ ॥  
 तैरहितइति ॥ तैस्ते उशान्कारणयफुलीर्चिसुवसर्गाविभि विद्वत्प्रसिद्धे द्विवचनं चैव दीप्याया कारणेः अङ्गादिद्वतुजि किमित्याह अङ्कि

वितिपुचउर्जेया तियजेयापच्छिमातिस्म ॥ ३ ॥ जीवाणजते ! कस्वामोहणिज्जाकर्म वेदेति ? हतावेदेति ।  
 कहणजन्ते ! जीवाकस्वामोहणिज्जाकर्मवेदेति ? गोयमा ! तेहेतेहिंकारयोहि सकियाकस्त्रिया वितिगच्छि

कहेह - पर्यं पूर्वकथा तदोक्तं चै । कश्चित्कवविभाग उदीरिवावेदिवावचिच्छिवा । पादितिपुचउर्जेया तियजेयापच्छिमातिस्मि ॥ १ ॥ कौधी चिच्छो  
 २ उपचय कोषा २ उदीरिवा ३ वेपू ४ निवृत्ता ५ पश्चिमा अत चित उपचित कचचनिकने चार्येद तौनकाशपायो एक समुच्चये एवधार ते स्त्री वि  
 मेय एवमे चिरकाल पस्थानत्वे उदीरित वेदित निवृत्त एतौनभेदे तौनकाशहीन कडवा, एवमे चिरवाप्यवस्थानही एवियेव जीवकांशामोहनी  
 यत्रय वेदे इमाकथा ३ द्वियं तेहना वेदनाकारककडवानेकाले । कोषाचभते कस्वामोहपिच्छं कर्म वेदेति । जीव हेमयवन् । माचामोहनीयकर्म वेदे इ  
 तिमय । हतावेदति । उत्तर इतिगोतम । वेदे । कश्चभते । क्विसेपकार हेमयवन् । जीवाकस्वामोहपिच्छ कर्म वेदेति । जीव कांशामोहनीयकर्म वेदे इ  
 इतिप्रय उत्तर । गायमा । हेमोतम । तेहितेहिंकार्येहि सञ्चिवाकस्त्रियावितिगच्छिया । तिसैविबैचार्येवरो मियालीनो संगतिवकी तथा परद्वयो

पावसिकाया प्रवेशायति तथा ॥ गरइइति ॥ आत्मैव गच्छेति भिदती त्यातीतआसकृत काम स्वरूपत सत्कारणगर्भद्वारेणवा सातविजोपबोध  
 स्वप्न तथा ॥ संघरइति ॥ सवृक्षोति नकरेति वसाममकासिक कुर्मस्वरूपत सदेतुसवरसद्वारेणवेति गर्हावीच यद्यपि गुर्वावीनामपि सङ्का  
 रिस्वमस्ति तथापि न तेया स्मापान्य णीववीर्यस्यैय तत्रकारणत्वा दुर्वावीनाम्ब वीर्योष्ठासममाश्रय वेतुत्वाविति अयोदीरखामेवा भित्त्वाइ ॥  
 जतंजनेइत्यादि ॥ व्यञ्जकचरं अयो दीरयतीत्यादि पदत्रयोद्देश्यकपि कस्मात् तन्किउदिसउदीरेइइत्यादिना अापदस्यैव निर्देयः क्साः ? उच्यते उदी  
 र्णादिभे कर्मविशेष्यकचतुष्टये उदीरखामेवा भित्त्य विशेष्यकस्य अङ्गावावितरयो स्तु तदभावा देव तद्गुह्यसूत्रेगर्भते सवृक्षोती स्येतत्पदद्वयं कस्मा  
 दुपातं उत्तरश्रनिर्देश्यमात्रत्वात्स्येति ? उच्यते कम्मउठदीरखाया गर्हासवरणे प्रायठपाया वित्त्यनिषामाय यद्यमुत्तरत्रापिवाप्यमिति प्रश्नाय  
 यद्दी तरणव्याख्यामा द्वोद्वयः तत्र ॥ नोठदिसउदीरेइति ॥ उदीरखामेव उदीरखामेव ॥ नोच्युदिसउदीरेइति ॥

उच्चारेयइ । जतजने ! स्युप्यणाचेवउदीरेइ स्युप्यणाचेवगारइइ स्युप्यणाचेवसवरइ, तकिउदिसउदीरेइ ? स्युणु  
 दिसउदीरेइ २ स्युणुदिन्नउदीरणान्तवियकम्मउदीरेइ ३ उदयाणतरपच्छाककम्मउदीरेइ ४ ? गोयमा ! नोउ

प्रापणीज यतीतकाचे कसकोवा तगरइ; बार निंदाते मरहा । पप्यबावेसवरइ । प्रापणीज संवरे, पतमानकावे कर्म नकरे । इतामोयमा । इमित्तम ।  
 पप्यबाचेवतवेतुत्वारिवत्त । धाव्यविकरीज कर्मपयकरे इम पूर्वपूर्वे कञ्चो, तिमज कइवू । जंतमतेपप्यबा । जेते वेमगबन् । प्रापयपेव । वेवठदीरे ।  
 निवेउदीरे । पप्यबाचेवगारइइ । प्रापयपेव निवे गरइ । अथबाचेवसवरइ । प्रापयपेव निवे संवरे । तंकिउदिसउदीरेइ । तो एउदबधाम्पू उदीरे ।  
 पबना । पच्छदिसउदीरेइ । पच्छदबधाम्पू ते उदीरे । पबना । पच्छदिसउदीरेइ । उदयनबीधाम्पू उदीरवायोप्ये उदययामबाने उ  
 जनास वर एसावे तेकम उदीरे । उठबापतरपच्छाककम्मउदीरेइ । जेकर्म उदयने अनंतरसमब तेजनिबिये पयात्तत यतीतपयामते पहुंती तेकर्म उ  
 दीरे । नोयमा । वेभोतम । नोठदिसउदीरेइ । उदबधाम्पू ते उदीरे नहो, उदयववामाठे उदयधायान् उदीरेवू ते नहुवे । बोपणदिसउदीरे

इहा मुनीषं चिरेषु त्रिविध्यदुदीरख्य तन्नो दीरयति तद्विषयादीरखायाः सम्प्रत्यगागतत्वात्सेवाभावात् ॥ अयुर्विषं उदीरखान्नयिष्य  
 कम्मउदीरइति ॥ अनुदीक सखयेषु किं स्वभक्तसमयेषु यदुदीरखामयिषु तदुदीरयति विधिद्वययोग्यताप्राप्तत्वात् तत्र प्रविष्यतीति प्रथा सेवज्ञ  
 विज्ञा उदीरखान्निकास्येति प्राकृत्या पुदीरखान्नयिषु मस्यथा प्रविज्ञोदीरखमिति स्या दुदीरखायां वा मय्य योग्य मुदीरखान्नयिषुमिति ॥ नोउ

दिगाउदीरेइ १ नोअणुदिन्नउदीरेइ २ अणुदिन्नउदीरणाअविषकम्मउदीरेइ ३ नोउदयाणतरपच्छाककम्मउ  
 दीरेइ ४ ॥ जतजते ! अणुदिन्न उदीरणाअविषकम्म उदीरेइ तकिउठाणेण कम्मणेण थलेण थीरिणुण पुरिस  
 क्कारपरक्कमेण अणुदिन्नउदीरणाअविषकम्मउदीरेइ , उदञ्जतअणुठाणेण अ्यथलेण अथीरिणुण

इ । उदकानाण्यं तेपि उदीरे गही, घबेकासे उदवपावसे तेइनेविये उदोरखानं सांप्रतिषमावसे । अइदिखउदीरखाभयिष्यकथउदीरेइ । अरूपे अइव  
 पायं गबो किण अततरममयनेविये अे उदीरखाण्णे तेकमं उदीरे, विधिउदीरयो नो प्राप्तिबो, अइवा उदीरखाने मअ अइता बोय्य ते उदीरखामय्य अ  
 बोये उदीरखा मावे कम्मउदीरे । अउदकाअतरपच्छाअइकथउदीरेइ । अेकमने उदवने अततरसमय तेइनेविये यदात्ततकम पतोतपयामते पणुतो अे  
 तेपि उदीरेनही तेइने अतोतपयामको अतोत ते गयूं, अइते अणुदीरखोय अको, इहा अअपि उदीरखादिवनेविये आसअमावाइकनो आरअवे,  
 तवापि माभाअयै पुरपवीर्येअ आरअपयो देयाइवे—अतभतेअइदिखउदीरखाभयिष्यकथउदीरेइ । अे ते अेअणयं गबो अततरसमये  
 ते अम उदीरखे तेकमउदीरे । तंकिउठाणेचं । तेअं अभाआइवो । अयेचं । अमयसतादि । असेअ । अरीरनोअमअर्वाइ । बोरिअ । बोय ते जीवतो अइवा  
 अ । अरिमआरपरअमेअ । पुअयाआर अभिमानवियेप पुरपक्कियानेवियेहीअ बोपयाअी पंतानावियअ । अइदिखउदीरखामयिष्यकथउदीरेइ । एतसे  
 अउरेकरो अणुदयअे अने उदीरखान् भूतअे अेकम ते उदीरे अत्तंअ—अताकताविकतावा । इतिअणयाणु, उदाइतअइठाअेचं । अअवा ते अत्तानवि  
 ना । अअमेचं । अमविना । अयसेचं । अठविना । अणोरिअण । वीर्यविना । अणुरिसआरपरअमेअ । पुअयाआर पराअमविना । अणुदिखउदीरखामयि



पायसिकाया प्रवेद्यति तथा ॥ गरुडइति ॥ घाम्ममैव गृहते निवृत्ती त्यतीतकालकृत क्षम स्वरूपत सात्कारणव्यहारेणवा जातविधेयव्रीप  
 स्वन् तथा ॥ संवरइति ॥ संवरोति नकराति वसामामनासिक्त कुर्मस्वरूपत सादेतुसवरव्यहारेणवेति सर्वादीच यद्यपि गुर्वादीनामपि स्रष्टा  
 रित्त्वमस्ति तथापि न तेषा म्नाथास्य जीवधीर्यस्यैय तत्रकारणत्वा गुर्वादीनाम्न वीर्योद्भासमाश्रय्य हेतुत्वमिति अयोदीरकामेवा मित्याह ॥  
 वतन्नतेइत्यादि ॥ व्यक्तश्वर अयो दीर्यतीत्यादि पदप्रयोद्देशकेपि कस्मात् तकिउद्विखडदीरेइत्यादिना व्यपवस्यैव निर्देवा इतः ? उच्यते उदी  
 र्खादिषु कर्मविधेयवस्तुषु उदीरकामेवा चित्य विशेषस्य स्रष्टावावितरयो सु तदनावा देव तस्युद्भववृत्तेणैव सवृत्तोती स्येतत्पदद्वय फल्सा  
 दुपार्त उत्तरप्रानिर्देश्यमाकत्वात्स्येति ? उच्यते कस्मत्तदीरकायां गर्वांसवरणे प्रायठपाया वित्यभिधानायं स्यमुत्तरत्रापिवाच्यमिति प्रमाप  
 येदो तरप्रव्याख्याना द्वेदुष्यः तत्र ॥ नोठद्विखडदीरेइति ॥ उदीरकाविरामप्रसङ्गात् ॥ नोषडुद्विखडदीरेइति ॥

उच्चारेयम् । अतन्ते ! स्युष्पणाचेवउदीरेइ स्युष्पणाचेवगरुहइ स्युष्पणाचेवसवरइ, तकिउद्विखडदीरेइ १ स्युष्णु  
 दिखडदीरेइ २ स्युष्णुदिखडदीरेणान्त्रियकम्मउदीरेइ ३ उदयाणतरपच्छाककम्मउदीरेइ ४ ? गोयमा ! नोउ

पापशोच प्रतीतकालेकमबोवातगरुहै, बार २ निर्दानेयरुहा । पय्याचेवसवरइ । पापशोच संवरे, वसमानवासे कर्म नखरे । इतागोयमा । इगोतम ।  
 पय्याचेवतवेइउरारियम् । पापशोचोच कर्मसवरइ इम पूवपूर्वे कश्चो, निमज खड्युं । अंतमतेपय्या । वेते हेममन् । पापशोच । वेवउदीरेइ ।  
 निवेउदीरे । पय्याचेवसवरइ । पापशोच निवे यरुहै । पय्याचेवसवरइ । पापशोच निवे संवरे । तकिउद्विखडदीरेइ । तो अ उद्वयथाब्धु उदीरे ।  
 प्रववा । पच्छदिखडदीरेइ । पच्छउद्वयथाब्धु ते उदीरे । प्रववा । पच्छदिखडदीरेणामविवकथंउदीरेइ । उद्वयनीथाब्धु उदीरकावोप्युहै उद्वयमवाने छ  
 कनाह नो रमाहै तेकम उदीरे । उद्वयसवरं पच्छाककम्मउदीरेइ । केकम उद्वयने अततरसमय तेइनेविये पचात्कृत प्रतीतपचाप्रते पशुतो तेकर्म उ  
 दीरे । नोवमा । वेनोतम । पाच्छदिखडदीरेइ । उद्वयथाब्धु ते उदीरे नोहो, उद्वययथामाटे उद्वयथाब्दान् उदीरुं ते नखरे । वीपच्छदिखडदीरे

इहा मुदीवं बिरेव प्रविष्यदुदीरए मन्विष्यदुदीरएच तस्मी दीरपति तद्विषयादीरखायाः सम्प्रत्यतागतकालेवामावात् ॥ अद्बुदिकुठवीरयात्रविषयं  
 कम्मउदीरइति ॥ अनुदीए स्वप्नपेव विं त्वन्तरसमयेएव यदुदीरखामविक तदुदीरपति, विधिष्टयोम्यताप्रासत्वात् तत्र प्रविष्यतीति प्रया सेवन्न  
 यिता उदीरखानविज्ञास्येति प्राकृतत्वा दुदीरखानविक मन्यया प्राविकोदीरखमिति स्या दुदीरखायावा मव्य योग्य मुदीरखानप्रयमिति ॥ नोउ

दिणउदीरेइ १ नोश्चुणुदिकउदीरेइ २ च्चुणुदिकउदीरणान्नविषयकम्मउदीरेइ ३ नोउदयाणतरपच्छाककम्मउ  
 दीरेइ ४ ॥ जतजते ! च्चुणुदिन्नं उदीरणान्नविषयकम्म उदीरेइ तकिउठाणेण कम्मेण वलेण वीरिण पुंसि  
 क्कारपरक्कमेण च्चुणुदिन्नउदीरणान्नविषयकम्मउदीरेइ, उवाकितश्चुणुठाणेण च्चुक्कमेण च्चुणुलेण अयीरिण

१ । उदयताम् तेपवि उदीरे मही, पक्काले उदयपावले तेइनेविये उदीरखानं उप्रतिप्रभाववे । अद्बुदिकुठवीरखामवियेकथउदीरे । सकवे उव्व  
 पायं मबी कित पनतरसमयेविये वे उदीरपाइसें तेकम उदीरे, विधिष्टवीरयो प्राप्तिवो, प्रववा उदीरखाने मव्व कइता योम्य ते उदीरखामव्य क  
 वीने उदीरपा भावे कम्मउदीरे । नोउदयाणतरपच्छाककम्मउदीरे । जेकम्मने उदयने पनतरसमय तेइनेविये पयातएतकम अतौतपपापते पपुतो वे  
 तेपवि उदीरेमही तेइने अतौतपपावकी यतौत ते मम्, गयते अउदीरखीय मबी, इहां ययपि उदीरखादिवनेविये काससमावाधिकनो कारववे,  
 तकापि पाधाअपवे पुरववीरियेण कारवपकी देवाइवे—कतभतेअद्बुदिकुठवीरखामवियेकथउदीरे । जे ते वेमगवन् । उदयपावल् मबी अमंतरसमये  
 ते कम उदीरेवें तेकमउदीरे । तकिउठावेचं । तेम् उभावाइवो । कथेचं । कम्ममनाधि । वसेच । अरीरनीसमवीइ । नीरिएच । मीय ते जीवनी उक्का  
 इ । पुरितकारपरएमेच । पुरववाकार अमिमानवियेप पुरवविजानेवियेवीज नीपकाओ पोतानोवियव । अद्बुदिकुठवीरखामवियेकथउदीरे । एतवे  
 प्रकारेवो अनुदववे, पने उदीरखान् भूतवे जेकमे ते उदीरे उक्कव—पत्ताकताविकतावा । इतिववनात्, उवाइतपपुठायेच । अथवा ते उत्वानवि  
 ना । अक्कवेचं । कम्मधिता । वसवेचं । वसविना । पवीरिएच । वीयविना । अपुरिसकारपरइमिच । पुरववाकार पराक्कमविना । अणुदिचंउदीरखाभि

यावत्सिद्धायां प्रवेष्टयति तथा ॥ नरवदिति ॥ आत्मनैव महते निवृत्ती त्यागीसत्त्वासक्तस्य कम स्वरूपत आत्कारकगर्हद्वारेणवा आतविधोयवोच  
 स्वप्न तथा ॥ संवरइति ॥ सर्ववोति नक्ररोति वत्तमामासिक्त कुर्मस्वरूपत सद्देतुसवरकद्वारेणवोति गर्हादीष यद्यपि गुर्वोदीनामपि सद्वा  
 रिस्वमसि तथापि न तोया आरास्य जीववीर्यस्यैव तस्कारकत्वा गुर्वोदीनाम्न यीर्योद्भासनमात्रयव हेतुत्वादिति अयोदीरखामेवा अित्याह ॥  
 अंतजतेइत्यादि ॥ अत्र कबर अयो दीरयतीत्यादि पदत्रयोद्देशकेपि कस्मात् तच्छिउविश्वठवीरेइत्यादिना अपवस्यैव निर्देश क्तः ? उच्यते उदी  
 र्शोदिके कर्मविद्युपचतुष्टये उदीरखामेवा अित्य विशेषकस्य सद्भावावितरयो स्तु तदभावा देव तद्गुह्यवृत्तेर्गर्भते सर्ववोती त्येतत्पदद्वयं कला  
 गुपातं एतदशानिर्देश्यमाकत्वाहस्येति ? उच्यते कस्मत्तदीरखायां गर्होसंवरये प्रायतपाया वित्यनिभावाय सधमुत्तरत्रापिवाच्यमिति प्रसाचं  
 यद्गो तरत्रय्यास्याना द्वोटुच्य तत्र ॥ नोउविश्वठवीरेइति ॥ उदीरखत्वादेव उदीशस्य प्युदीरखे उदीरखाविरामप्रसङ्गात् ॥ मोचबुदिसंठवीरेइति ॥

उच्चारेयध्व । अतजते ! ध्यप्यणाचेवउदीरेइ ध्यप्यणाचेवसवरइ, तकिउविश्वउदीरेइ १ ध्युणु  
 दिश्वउदीरेइ २ ध्युणुदिन्तउदीरणान्नाथियकस्मउदीरेइ ३ उदयाणतरपच्छाककस्मउदीरेइ ४ ? गोयमा ! नोउ

पापशौच शतीतकाठेकमबोबातयरी; बार२ निर्दितातगरहा । प्यषाचेवसवरइ । पापशौच संभरे, वत्तमानकाठे कम मकरे । इतामोयमा । इगोतम ।  
 प्यषाचेवतचेवठवारियव । पाव्याविन्दोच कर्मसयकरे इम पूर्वपूर्वे कश्चो, तिमज कश्चू । अंतभतेषपषा । अते इममवन् । पापशौच । चेवठवीरे ।  
 निवेठवीरे । ध्यप्यणाचेवपपरइ । पापशौच निवे नरु । ध्यप्यणाचेवसवरइ । पापशौच निवे सवरे । तच्छिउविश्वठवीरे । तो स्तु उदयथायू उदीरे ।  
 प्रबना । यच्छिउठवीरे । यच्छठदयथायू ते उदीरे । पववा । यच्छिउठवीरखाभविशंखच्छठीरे । उदयनबोषायू उदीरखायोग्यवै उदयपामवाने उ  
 कनास अं रखाठे तेकम उदीरे । उदयाणतरपच्छाककच्छठवीरे । जेकम उदयने अगतसमव तेइनिवे पवातुलत अतोतपषाप्रते पशुतो तेकमं उ  
 दीरे । मोयमा । जेगोतम । योउदिश्वठवीरे । उदयथायू ते उदीरे नरु, उदयवथामाठे उदयथायू उदीरवू ते नरुवे । योपसुदिसंठवीरे

सुपुण्ड्रं दुर्पादित्यर्थः ॥ वीरियताएति ॥ वीरिययोगा वीर्यं प्राप्ती, तद्ग्राह्यो वीर्यता, अथवा वीर्यमेव स्वार्थिकमत्स्यया द्वीपता वीर्योक्तावा प्रावो वीर्ये  
 ता तथा ॥ अवीरियताएति ॥ अविद्यामगधीयतया वीर्यानावेनेत्यर्थः ॥ वीर्यहेतुकत्वा दुपस्थानमस्मेति ॥ बालवीरियताएति ॥  
 यासः सुस्यगयानवयोषा, एतद्गोचकायविरत्यन्नावाह मिष्यावृष्टि सास्य या वीर्यता परिकृतिविष्टेप सा तथा तथा ॥ पठियवीरियताएति ॥  
 पविद्धतः सुम्सायद्ययत्रं क सादस्यस्य परमार्यतो निद्यामत्येना परिकृतावा द्वादह - तद्गानमेयमजवति यस्मिन्नुदितेविजाति रागगण ॥ तमसः  
 शुगालिशक्ति विमकरकिरकाप्रतःस्यातुमिति ॥ १ ॥ सर्वविरतइत्यर्थः ॥ बालो वेष्येविरत्यन्नावा त्पचिकृतो वेशयव  
 यिरतिमद्गाया दिति यासपचिकृतो वृगविरत इष्व मिष्यात्वे उदिते मिष्यावृष्टिवा वीरियस्य यासवीर्ये वीरियस्यान स्या अतरान्या नेतदेवा

सेनते गोयमा ! कि वीरियताए उवठाएजा उवठाएजा ? गोयमा ! वीरियताए उवठाए  
 जा, नोश्चवीरियताए उवठाएजा, जइ वीरियताए उवठाएजा, किबालवीरियताए उवठाएजा, पक्रित  
 भयवन् । मिष्यात्वमीश्वरीव वीर्या । अश्वेत्तवृष्टेव । कर्मने उदयेकरो । उवठाएजा । परस्वाकक्रिया अंगोकारकरे, अश्वदयगोहीय । इता गोबमा । अ  
 गौतम । उवठाएजा । परसोबक्रिया अंगोकारकरे रहे । अमतेनिवीरिबताए उवठाएजा । ते हेमगवन् । अ वीर्यसहित अंगोकारकरे रहे, अथवा ।  
 पवीरियताए उवठाएजा । पवीर्यपवै वीर्यमेपमवि अंगोकारकरे इतिप्रथ, गोयमा वीरियताए उवठाएजा । हेयौतम । वीर्यपवे परसोबक्रिया अंगो  
 कारकरे पवि । आपवीरियताए उवठाएजा । पवीर्यपवै परसोबक्रिया अंगोकार करे, असी गौतम पूखेवै—अपवीरियताए उवठाएजा । अ वीर्यसहित  
 पवावीर्य अंगोकारकरे वाय । किबालवीरियताए उवठाएजा । तो अ भसापर्वनी ज्ञानगर्ही अथवा विरतिरहित मियादृष्टि तेइगी विजा वीर्यता  
 पत्वितिवियेप तेइकरी अंगोकारकरे । पठियवीरिबताए उवठाएजा । पठित खेवे समस्तवाच्यवाच्यो तेइवी वीर्याने परमावबकी अमानपचू अही  
 वे, अथवा । बालवृद्धियवीरिबताए उवठाएजा । देयै अविरतिपवावी बालव कहीये, देयैहीव विरतिपवावी पठितकहीये, तेमाटे बालवपठितकइता

किङ्करीचरति ॥ द्वार निर्वर्त्तनं—कहूच प्रते । जीवे अठकम्मपगणीठे यंपइ गोयमा ? नासावरकिञ्जस्स कम्मरसउदएक दससावरकिञ्ज कम्मं नि  
 गच्छइ ॥ विस्मिष्टोदयावत्स जीव हा वासादयतीत्यर्थं वरिसकाधरपिञ्जस्स कम्मस्स उदएक दसखमोइकिञ्ज कम्म निगच्छइ ॥ विपाकाऽयस्य  
 करोतीत्यर्थः ॥ इसकमोइकिञ्जस्स कम्मस्स उदएकं मिच्छत विगच्छइ मिच्छतेव उदिस्य एवं खसु जीवे अठकम्मपगणीठे वचइ ॥ इत्यादि नबेव  
 निवेतरतराअपदोयः कम्मबन्धमवाइस्या भावित्वादिति ॥ कहूचिं च ठाकडिति ॥ द्वार तथैव—जीवेव प्रते । नासावरकिञ्ज कम्म कहूचिं ठाकेचिं  
 वचइ ? गोयमा ! दोचिं ठाकेचिं तवहा रागेअय दोसअये त्यादि ॥ कहूचेणइवति ॥ द्वार निर्वर्त्तनं—जीवेव प्रते । अइ कम्मपगणीठे वेएइ ? गोय  
 मा । अत्वेणइए वेएइ अस्सेनइए बोवएइ ले वएइ से अठ इत्यादि ॥ जीवेवं प्रते । नासावरकिञ्ज कम्मयेएइ ? गोयमा । अत्वेणइए वएइ अत्ये  
 वइए नीवेएइ ॥ केवस्सित्तो अत्वेवनात् ॥ नेरइएवं प्रते । नासावरकिञ्ज कम्मं वएइ ? गोयमा । नियमा वेएइ इत्यादि ॥ अजुजानो कहूचिं  
 कस्सति ॥ कस्य कम्मंअः कतिविप्यो रसइति द्वार इत्थैव—नासावरकिञ्ज कम्मं वएइ ? गोयमा । नियमा वेएइ इत्यादि ॥ अजुजानो कहूचिं  
 पसते तवहा सोयावरके सोपविखाकावरके इत्यादि ॥ व्रथेन्नियावरको प्रावेन्नियावरकेत्यर्थः अय कम्मधिन्नाधिकारा न्नेइनीय माभित्याइ  
 ॥ जीवेवभित्यादि ॥ मोइखिजेवति ॥ भिम्म्यास्वमोइनीयेन ॥ उचितेन ॥ उवठाएज्जति ॥ उपस्यान म्परसोकफिया स्य

गोसम्मसो ॥ गाहा ॥ कतिपगणीकहिचधइ कतिहिंठाणेहिचधएगढी । कहूचेठेइधपगणी अणुजागोकति  
 विहांकस्स ॥ १ ॥ जीवेणअते ! मोइणिजेण कळेण कम्मणेण उदिसेणउथठाएज्जा ? इतागोयमा ! उवठाएज्जा ।

पयनी संयइगाबाहे तेकवेहे—माहा । कतिपगहाकहूचइइति । केतसो कयमकतिना केतसा भेउ १, प्रकति खेम वाधे, ए भौवो इार २, कतिचि  
 इाकेइइवएगढी । जीव केतवे कानके अधि कर्मप्रकति १, कतिवेदेइइएगढी । जीवे केतसो प्रकति वेओये ४, अणुभायोकतिविशोकस्य ॥ १ ॥  
 पननाय कथतो रस ते केतसाप्रकारो किसाकसो चिचे कसथिताअधिबारवकी मोइनीवपायो कहूचै । जीवेअतेमोइपिञ्जेवकडेवं । जीव हे

प्रपुण्ड्रः ॥ वीरियताएति ॥ वीर्ययोगा द्वीयः प्राची, तद्भावो वीर्यता, अथवा वीर्यमेव स्वाधिकप्रत्यया द्वीयता वीर्योक्तावा प्रावो वीर्यं  
 ता तथा ॥ अवीरियताएति ॥ अविद्यमानवीर्यताया वीर्याभावमेत्यर्थः ॥ मोक्षवीरियताएति ॥ वीर्यहेतुकत्वा बुपस्थानस्येति ॥ बालवीरियताएति ॥  
 यालः मस्यगयामयोप्या, रघुद्वीपकायविरत्यनावाह मिष्यादृष्टि सास्य या वीर्यता परिश्रुतिविशेषः सा तथा तथा ॥ पंक्रियवीरियताएति ॥  
 पविशतः सस्तायद्ययत्रं स दस्यस्य परमार्यतो मिच्छामस्येना पयिकतत्वा द्यदाइ - तदज्ञानमेव न भवति यस्मिन्नुचिते विज्ञाति रागगणः । तमसः  
 बुनोस्तिगच्छि दिमकरकिरघायताः स्यातुमिति ॥ १ ॥ सवविरतइत्यर्थः ॥ बालो देष्टेविरत्यनावा स्वचिकतो देनाएव  
 विरतिमद्राया दिति बालपचिकतो दयविरत इइच मिष्यादृष्टिवा ज्मीवस्य यातवीर्येष्टे वीपस्थान स्या श्रेतराप्या मेतदेवा

सेनते गोयमा ! कि वीरियताए उयठाएजा अवीरियताए उयठाएजा ? गोयमा ! वीरियताए उयठाए उयठाए  
 जा, नोश्च्यवीरियताए उयठाएजा, जइ वीरियताए उयठाएजा, किबालवीरियताए उयठाएजा, पक्रित

भयवन् । मिष्यालमोहनोय क्रीडा । बभौषउश्लेष । कर्मने उदयेकरो । उवहाएव्या । परसाकक्रिया प्रगोकारकरे, अश्वयनीश्रीब । इता गोयमा । इने  
 गीतम । उवहाएव्या । परसोबक्रिया प्रगोकारकरे रहे । सेभतेकिवोविरताए उवहाएव्या । ते हेमगवन् ! पूं वीर्यरुहित प्रगोकारकरे रहे, अथवा ।  
 पवीरियताए उवहाएव्या । प्रवीर्यपचै वीर्यैप्रभावे प्रगोकारकरे इतिमत्र, गायमा वीरिवताए उवहाएव्या । सेगीतम । वीर्यपचै परसोबक्रिया प्रगो  
 कारकरे पचि । आशवीरिवताए उवहाएव्या । प्रवीर्यपचै परसोबक्रिया प्रगोकार करे, बली मीतम पूष्टेवे - अश्वीरियताए उवहाएव्या । वो वीर्यहेत  
 पचावीर्य प्रगोकारकरवा वाव । किबासवीरियताए उवहाएव्या । ता पूं भक्षापर्वनो ज्ञाननहीं अथवा विरतिरहित मिष्यादृष्टि तेइनी जिका वीर्यता  
 परिश्रुतिविशेष तेइकरी प्रगोकारकरे । पक्रियवीरिवताए उवहाएव्या । पक्रित जेचें समस्तसापषांशो तेइवी वीवाने परमार्यवकी अज्ञानपचूं कइते  
 रे, अथवा । बाहपक्रियवीरियताए उवहाएव्या । देयै अविरतिपचाधी बाहक कइते, देयैश्रीब विरतिपचाधी पक्रितकइते, तेमाटे बाहपक्रितकइता

किहवयति ॥ द्वार मिद्वैव-कह्य प्रते । जीवे कठकम्पगणीठ वषय गोयमा ? नावावरखिज्जस्स कम्मस्सउदएव वंसवावरखिज्जं कम्म नि  
 पण्ण ॥ विधिपुद्दयावस्य जीव स दासाइतीत्यर्थः । दरिसवावरखिज्जस्स कम्मस्स उवएव वंसवमोइखिज्ज कम्म निगण्ण ॥ विपाकाधिस्य  
 करोतीत्यर्थः ॥ वसकमोइखिज्जस्स कम्मस्स उवएव मिण्णत विगण्ण इ मिण्णसेव उदिस्य एव ससु जीवे अठकम्मपगणीउ वषय ॥ इत्यादि मवेव  
 मिण्णरेतराअपवोपः कम्मवत्यप्रवाइस्या नादित्वादिति ॥ कहिं व ठावेइति ॥ द्वारं तवैव-जीवेण प्रते । नावावरखिज्ज कम्मं कहिं ठावेइं  
 वषय ? गोयमा । दोहि ठावेइ तअइरा रागेवय दोसेयये त्यादि ॥ ववयेइइवति ॥ द्वार मिदं वैव-जीवेण प्रते । कइ कम्मपगणीठ वेइ ? गोय  
 मा । अत्येवइय वेइ अत्येवइए कोवइए जे वषय से षठ इत्यादि ॥ जीवेण प्रते । नावावरखिज्ज कम्मवेइए ? गोयमा । अत्येवइए ठेएइ अत्ये  
 वए नोवेइए ॥ केवस्सिनो अवेदनाए ॥ नेरइएव प्रते । नावावरखिज्ज कम्म वएइ ? गोयमा । नियामा वेइ इत्यादि ॥ अयुप्रामो कहविहो  
 कस्सति ॥ अस्य कर्मणः कतिविधो रसइति द्वार इइअंठ-नावावरखिज्जस्सव प्रते । कम्मस्स कहविहे अयुप्रामो पयत्ते ? गोयमा । दसविहे  
 पयत्ते तंअइ कोयावरवे सोपविष्णाकावरवे इत्यादि ॥ इव्वेन्निपावरवो प्रावेन्निपावरवयेत्यथ अय कम्मपिन्तापिक्कारा म्पोइनीय माथित्याए  
 ॥ अथेवमित्यादि ॥ मोइखिजेकति ॥ मिण्णाल्लमोइनीयेण ॥ उदिसेयंति ॥ उवठाएज्जति ॥ उवठानेत्तु उवस्थान म्परलोक्किया स्य

गोसम्मसो ॥ गाहा ॥ कतिपगणीकहिंधइ कतिहिंठाणेहिद्यधएपगणी स्युण्णजागोकति  
 विहोक्कस्स ॥ १ ॥ जीवेणजंते ! मोइणिज्जेण कंठेण कम्मोण उदिसेणउवठाएज्जा ? हतागोयमा ! उवठाएज्जा ।

पयत्तो सपइयापाइ तेकवेइ-गाहा । कतिपमहाकइवअइइति । केतमो कम्मपकतिना केतवा भेद १, प्रकृति केम वाइ, ए बीजो इर २, कतिहिं  
 इअेहिइवअएयजो । जीव केतसे सानके वाइे कम्मंपकति ३, कतिवेदेइवअमजो । जीवे केतमो प्रकृति वेदीये ४, अयुप्रामो कतिविधीकण्ण ॥ १ ॥  
 यनमाय कहती एव ते केतवाप्रकारो विषाअमनो इति अमपिन्तापिक्कारवधी मोइनीयपात्रो कवेइ । जीवेअमतेमोइखिजेवअउव । जीव जे

प्राप्ति ॥ विद्वत्ति ॥ मूर्खता द्रव्यमिति न्यायात् स्थितिस्थानानि वाच्यानीतिद्वयः ॥ एवउगगइवति ॥ अतगाइनास्थानानि, शरीराविपवर्गान्तु  
 व्याक्यामेव एकारान्तात् पद प्रथमैक्यवचनान्तरद्वयं इत्येव मतानि स्थितिस्थानादीनि दयवस्तूनि इहो द्वैतमे विचारयितव्यानीति गायातुमा  
 सार्थः यिस्तरार्थन्तु सूत्रकारः स्वयमेव पश्यतीति तत्र रत्नप्रानापुषिष्यां स्थितिस्थानानि तावत्प्ररूपपवाइ ॥ इमीवेवमित्यादि ॥ व्यक्त मवरं ॥  
 एगमेर्गमिनिरयावामंसिति ॥ प्रतिनरत्वावात्ममित्यथः ॥ ठिइठावति ॥ आयुषो विनागाः ॥ असंखल्वन्ति ॥ सङ्कातीतानि कथं प्रथमपुषिव्यपेण  
 या अपन्या स्थिति दशार्थसइस्त्राणि उत्कृष्टान्तु सागरोपम मेतस्या श्वेकेकसमयवृथा श्रुङ्केयानि स्थितिस्थानानि प्रवन्ति असङ्केयत्वात् सागरो

३ ॥ पुठयिठिइत्तगाहग सरीरसद्ययगमेयसठाणे । छेस्वाविठीगणे जोगुवर्गेगीयदसठाणा ॥ ४ ॥ इमीसेण  
 जते ! रयणप्यन्नाएपुठयीए तीसाए निरयायाससयसहस्सेसु एगमेगसिनिरयायाससि नेख्थण कवइया ठि

नेमिनी एकमाविमान, पदत्तरविमान पदचौअहे पूर्वादि विन्न १ वैजयत २ अयत ३ अपराजित ४ विभने सर्वोदविब ५, एखर्वमिखो खर्वसाके ८४८  
 ० ११ विमानववा । पुठविठितिवगाइय मरोरखवचमेरसाहे । सेखादिदोबावे जोगुवयोगिवदसठाणे ॥ ४ ॥ इयि उरेयकाय सपइनेबावे इररागा  
 वरेहे—पुषियादिकत्रोवना बासने विदे स्थितिस्थान कइवा २, यरोर कइवा ३ सद्ययस कइवा ४ मिवै सुखान कइवा ५ लेखा ६ कइवी, इटी २  
 कइवी ०, घान ते कइवा ८, योम ३ ते कइवा ८ उपवीग २ ते कइवा १, व पादपूर्वे ए दयस्थान इर कइवा, पुषिवी भादिदेष्ट सर्वनेधिवे । इ  
 मोनेर्गमेरववप्यमापपठवीए । मोतमपूहेवे—एवने इमगवन् । रत्नप्रभा पुषिवीनेविदे । तोमाए निरयावाससयसहस्सेसु । जीसखाख नरखावासागेवि  
 पे । एगमेर्गमिनिरवाकामसि । एकेवा एतमे मत्तेजे २ नरखावासनेविदे । नेरयावनेवदगाठिइशावा पयणा । नारखीना खेतखा स्थितिकवती खात्  
 दाना खान कइती विभागकइवा इतिप्रय । गायमा परमेखेजाठिइशावा पयता तइवा । जेभोतम । सुख्यावो पतिक्रम्या उइखा तेमाटे प्रसंख्याता  
 पालपाना सानवविभाग कइता तेजिम १ पविनी पुषिवीनी पपेवाये लवन्त्य दय सहस्त्रवर्षेनो स्थितिहे ते एख समय वधारतो उरइव एक सागरो



कार्यसङ्ग्रहण गणना ॥ पुढीलप्रमाणे ॥ तत्र पुढीलप्रमाणे ॥ अथ पुढीलप्रमाणे ॥ अथ पुढीलप्रमाणे ॥

इत्थियिमाणावासासयसहस्वा पञ्चस्रा । सोहमेणञ्जंते ! कइविमाणायाससयसहस्वा पञ्चस्रा ? गोयमा !  
यत्तीसविमाणावासासयसहस्वा पञ्चस्रा , एव , यत्तीसठावीसा थारसथ्युठचउरोसयसहस्वा । पञ्चाचत्वाली  
सा लञ्चसहस्वासहस्वारे ॥ १ ॥ थ्याणयपाणयकप्ये चत्तारिसयारगञ्जुएतिथि । सत्तविमागसयाइ चउत्तुवि  
एएसुकप्येसु ॥ २ ॥ एक्कारसुत्तरहे ठिमएसुत्तरचमज्जिमए । सयमेयउत्तरिमए पचेययथ्युणुत्तरजिमाणा ॥

ससयसहस्वा पञ्चस्रा । यावत् पचपञ्चारणा थ्यानिना चइ सूरे पच नचप तारा तेइजा विमान पायासमान पसत्वाता साखकणा, मी प्रथवा चगत  
तोयचरे वसोनोतम थारदेवसाक नचपेवयक पच पुनत्तरविमान पायोने पूजे । साइसपभतेकइविमायावासासयसहस्वा पञ्चस्रा । सोवसदेवसाके हे  
मजवत् ! वेतसाविमानावासमानना सास कणा इतिप्रय । गायमा वत्तीसविमायावासासयसहस्वा पञ्चस्रा । ज्योतम । वत्तीसमाथ विमान तेरेप्रत  
हे मत्तरे मत्तरे भिवविमानहे तेपूर्वे वेवसोए पजे कणा इम सुवप नावाकवी जाववा, । माहा । वत्तीसठावीसा थारसपठचउरोसयसहस्वा । प  
जाववाठोसा इवसहस्वायसहस्वारे ॥ १ ॥ सोवमे वत्तीससाथ विमान इयाने २८ साथ विमान, सगतकुमार १२ साथ विमान, माहेद्रे पाठसाथ वि  
मान, महेद्रे थारसाथ विमान, ए रंय देवसाके वर ८ थार बवा, सातके पचासहस्व, मुने वासीय सहस्व, इवसहस्व थाठमे देवसाके विमानजाव  
वा । पाचयपाचकप्ये चत्तारिसयारपचएतिथि । सत्तविमापचसाइ चउमथिरपचकप्ये २ ॥ पागत नचमोदेवसाके पाचत थयमोदेवसाके एवेअ  
मिसी ॥ विमानके, थारच ११ मे देवसाके पचत ११ मेदेवसाके एवेअ मिसी १ विमानके, एसातसे विमान थारदेवसाके मिसीने थया २, चेठि  
वे मेवेवचनैविये एतसे पचके बीजे बीजे वेवेवचमिसी । एकारसत्तरे हेठिमएपचत्तरचमज्जिमए । मजमेनेठचरिमए पचेवचत्तरविमाणा ॥ २ ॥  
एवधोरएयारे विमानके मजम वेवेवके एतसे बीजे पचमे वजे एतोनेमिसी एकसासात विमानके, जपरसे मेवेवच चिजे एतसे सातमे साठमे नचमे एतो

व्यपिति ॥ ठिइति ॥ सूचना स्मृतिमिति न्यायात् स्थितिस्थानानि वाच्यानीतिशेषः ॥ एवठगणप्यसि ॥ अथगाहनास्थानानि सरीराविषदानितु  
व्यक्तान्येय एकारान्ताच्च परं प्रथमैकवचनान्तवृद्धय इत्येव मतानि स्थितिस्थानादीनि दृश्यन्तुमि इहो हेराणे विचारयितव्यानीति गाथासमा  
सार्थः विलारार्थं तु मूत्रकारः स्यमेव वस्त्यतीति तत्र रत्नप्रनाप्यिर्था स्थितिस्थानानि तावत्प्ररूपयन्ताइ ॥ इमीवेजमित्यादि ॥ व्यक्त नवर ४  
एगमेर्मिनिरपावामंसिति ॥ प्रतिमरकावासमित्यर्थः ॥ ठिइठावति ॥ चापुपो विनागाः ॥ असंज्ञकति ॥ सङ्कतीतामि कथ प्रथमपृथिव्यपेप  
या अपस्या स्थिति दशवर्षसङ्ख्या चि उत्कण्ठानु सागरोपम मेतस्या व्येकैकसमपवृथा षड्कृत्यानि स्थितिस्थानानि प्रवन्ति असङ्केयत्वात् सागरो

३ ॥ पुढायिठिइठगाहण सरीरसघयगमेवसठाणे । छेस्साविठीगणे जोगुवठगेयदसठाणा ॥ ४ ॥ इमीसेण  
जते ! रथणव्यजाएपुठवीए तीसाए निरथाथाससयसहस्सेसु एगमेगसिनिरयाथाससि नेरइयाण केवइया ठि

नेमिमी एकमाविमान पदुत्तरविमान पचडोअडे पूर्वादि विषय १ वैषयत २ अयत ३ अपराजित ४ विषमै सर्वावसिठ ५, एसर्वमिसी अवसोके ८४८  
० २१ विमानमवा । पुठविठितठगाइ मरोरसघयचमेसंशाचे । छेष्ठाविठोबाचे जोगुवठगेवदसठाणे १ ४ । इविये उदेयवार्च अपइनेकाचे इारगाबा  
इडेछे—पृथिव्यादिकत्रोबना वासने विपे स्मित्कान कइवा २, गरीर कइवा ३ सघयव कइवा ४ निचै संखान कइवा ५ सेक्षा ६ कइवी, इटी ३  
कइवी ०, प्रात ते कइवा ८, योय ३ ते कइवा ८ उपयोग २ ते कइवा १, च पादपूर्वे ए एयखान इार कइवा, पृथिवी पाठिदेई सवनेविपे । इ  
नीनेर्भनेरचकप्यभापठवीए । योतमपूर्वेछे—पइने इमनवत् । रत्नप्रभा पृथिवीनेविपे । तीसाए निरवावाससयसहस्सेसु । नोसकाळ भरवाबासानेवि  
पे । एगमेर्मिनिरवाबासमि । एकेबा एतसे प्रत्येके २ मरकावासनेविपे । चेरइयासवेवदयाठिइशाया पच्छता । गारकोभा जेतसा क्कितिवइती पाछ  
पाना खान कइती विभागकइवा इतिमत्त । गायमा चर्मछेष्ठाठिइशाया पच्छता तअइवा । जेगोतम । सख्यायो अतिप्रमत्ता उल्लख्या तेमाटे असख्याता  
पाळफाणा सागकविभाग कइया तेकिम ? पडिमी पृथिवीभी अपेवाये अचर्य दय सहस्रवर्षनी स्मितिछे ते एक समय पधारती उरकट एक सागरो

कार्यसङ्ग्रहण गणपत ॥ पुढवीत्यादि ॥ तत्र पुढवीति तुसविनिष्क्रित्वा विद्देशस्य पृथिवीपु उपसद्यत्वा चास्य पृथिव्यादिपु श्रीवावासेधिति प्रट

इत्थियथिमाणावाससयसहस्वा पक्ष्मा । सीहम्नेणजते ! कइविमाणात्राससयसहस्वा पक्ष्मा ? गोयमा !  
यक्षीसधिमाणावाससयसहस्वा पक्ष्मा , एव , यक्षीसठावीसा धारसञ्चठचउरोसयसहस्वा । पक्षाचक्षाली  
सा लक्षसहस्वासहस्वारे ॥ १ ॥ श्याणयपाणयकप्पे यत्तारिसयारणमुत्तिथि । सप्तविमाणसयाइ चउसुचि  
एएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ एकूारसुत्तरहे ठिमएसुत्तरचमप्पिमए । सयमेयउत्रिमए पचेवयस्युणसुरविमाणा ॥

सद्यसहस्वा पक्ष्मा । बावत् पक्षप्रकारना ज्ञानिपो यद्र सूय पक्ष नपच तादा तेइगा विमान पावासक्षान पक्षज्जाता साखक्षणा, से पक्षवा पनत  
तोर्षकरे बळीगोतम चारदेवकोक नवपक्षेयक पच यदुत्तरविमान आयोने पूबेहे । साइअबभतेकइविमाणावावाससयसहस्वा पक्ष्मा । सीधमदेवकोके हे  
मगवत् । केतवाविमानावासक्षाना साक कक्षा इतिमय । नायमा बलीसविमाणावाससयसहस्वा पक्ष्मा । इगीतम ! बलीसमाच विमान तेरेमतर  
हे, मतरै मतरै मितविमानहे तेपूर्व केवकोए पम्पे कक्षा इम सवप गाबाबळी साचवा, । माहा । बलीसडाबोसा चारसपठपठरोसयसहस्वा । प  
चाचतासोसा अयसहस्वाठइच्छारे ॥ १ ॥ सीधमे बलीसकाच विमान, इयाने २८ साख विमान, सगएकुमारै १२ साख विमान, माहेद्रे पाठलाय चि  
मान, महेद्रे चारकाच विमान ए पच देवकोके वरै ८४ साख बडा, सातके पणसहस्वा, युत्ते बळीस सख, अयसहस्वा याठमे देवकोके विमानकाच  
वा । पाचवपाचबळप्ये बत्तारिसवारचवृत्तिचि । सप्तविमाचसडाई चठभिरएसुअप्पेसु ॥ २ ॥ धानत नवमेदेवकोक प्राचत दयमेदेवकोक एवेज  
मिषी ४ विमानहे चारच ११ मेदेवकोके सयुत ११ मेदेवकोके एवेज मिषी १ विमानहे एसातसे विमान चारदेवकोके मिषीज यया २, चिठि  
ने मेदेवकोकेचिने एतसे पचिसे बीजे बीजे मेवेवकमिषी । चारसमतर हेइमएउपुत्तरचमप्पिमए । मवमेगउवदिमए पचेवपक्षप्रविमाणा ॥ २ ॥  
एवकोइप्पारे विमानहे मजम मेवेवके एतसे बीजे पक्षमे वीजे एतीनेमिषी एवकोसात विमानके, अपरसे गेवेयक चिके एतसे सातसे पाठसे मवमे एतो

इति ॥ श्रीयः किमप्यान्तरमन्त्रं सप्तशतं चिन्तयित्वा साधिकाया वसमान उदये दृश्यते अस्तमसु  
 यप्य, एष प्रतिमसकम वदने विद्योपोसि सब स्यात्कारावसेय ॥ सवर्तं समन्तति ॥ सवत् सूर्यानु विषु समन्तात् विदिषु एकार्पावेती ॥ इन्द्रावद  
 त्वादि ॥ अत्रमसपति इतरप्रकाशायति यथा - स्यूनतरमेव वस्तु दृश्यते उद्योतपति प्रथमकाशपति, यथा - स्यूनमेव दृश्यते तपति अपनीत  
 नीत दूरोति यथावा मूकम पिपीलिकादि दृश्यत, तथा करोति प्रजासपति अतित्तापयोषा द्विजोपतोपनीतशीत विचते, यथावा सूरुमातर  
 वस्तु दृश्यते तथाकरोतीति एतत्तेश्वमेवा चित्या ॥ संप्रतेइत्यादि ॥ एतेश्वेय मयत्रामयति सद्योतयति तपति प्रमासपतिष तशेषे च कि जदन्त ।

चेत्र उत्रासतरानु चरकुफासं हस्तमागच्छेइ ? हता गीयमा ! जावइयाउण उवासतरानु उदयतेसुरिए  
 चरकुफास हस्तमागच्छेइ, अत्यमतेत्रि जाय हस्तमागच्छेइ, जावइयाण जते ! खेत्त उदयते सूरिए अ्याय  
 येण सद्युत्समता उहासेइ, उज्जोएइ तवेइ पन्नासेइ, अत्यमतेवियणसूरिए तावइयचेव खेत्त अ्यायवेण  
 सद्युत्समता उन्नासेइ उज्जोएइ तवेइ पन्नासेइ ? हता गीयमा ! जावइयाण खेत्त जाय पन्नासेइ तजते

तम । अत्र परिमाचथो पक्काप्रतिरबको खगता मूय इदि स्य मीष पावे ४०२६१ राजन २१ मास । पत्तमतेविजावडव्यमागच्छेइ । पाबमता  
 पदि इमत्र यावत् उताववा वसुस्य पावे ४०२६१ राजन २१ मास । आवतिगापायमतेखत । जेतसु वेभमपन् । चेत्र । उदयतेसुरिएपाववेचसव्यथो  
 समतापामोसेइ । अयता मूय पातयेकरी सूयमे तेजेकरी समन्तो दिग्गिनेदियै विदिग्गिनेदियै बाबासा प्रकाशं किमपसु इदिपावे । उज्जोवेइ तवेइ पमा  
 सेइ । पथा उद्यातकरै गीतदूरकरै किम मूक्य बीटकादि एतेमै विप्रयोगीतदूरकरै अिम मूक्यवगु पधि इदिपावे । पत्तमतेविषवमूरिए । पायमतापधि  
 मू । तात्रतिपचेवपुत्त । तेतथात्र निपे चेवपते । पातवेचसव्यथोसामतापोभासेइ । मूयमे तेजेकरी सबदिग्गिनेदियै विदिग्गिनेदियै बोधोसो प्रकाश करै  
 उज्जोवेइ तवेइ पमासेइ । पत्तम प्रकाशे उद्यातकरै गीतदूरकरै जावइयाण तपे इतिप्रय उतर । हता गीयमा । हां गीतम । जावतिवचखेत्त ।

श्रीविद्याना न्ययानानिचेति वेमागिकसूत्रादिबैवमथ्येयानि ॥ संखेन्द्रेषुब्र प्रते । येमाखियावाचसपसइस्वेसु एगमेगसि वेमाखिया वाचसि केवइया  
 ठिइठावा पक्ता । इत्येवमादीनि ॥ इति प्रथमसूते पञ्चम उद्देशः ॥ ५ ॥ अथ पद्यो व्याख्यायते तस्य भाय मजिसस्य  
 न्यो नत्तरोद्देशके लिससूत्रेषु ॥ अतंकेन्द्रेषुब्र नते बोइसियविमावावायेसु ॥ तथा ॥ सखेन्द्रेषुब्र प्रते । वेमाखियावाचसय सइस्वेसु इत्येतद्वपीतं  
 तेषुब्र स्योतिखविमानावासाः मत्यशाएवेति, तद्वतदर्शनं अतीत्य तथा जावगते इतियदुक्त मादिगापायां तच्च दर्शयितु माइ ॥ जाव इयाठेइत्या  
 दि ॥ जावइयाठेति ॥ यत्परिमाणात् ॥ उवाचंततराठेति ॥ अक्वांवात्तरात् आकाशविद्येया इवबाध्ठपान्तरात्वाद्वा याव त्यक्वाशागान्तरेस्वित इ  
 त्यर्थः ॥ उदयतेति ॥ उदय सुद्रब्धन् ॥ अक्षुप्कासति ॥ अक्षुपो वृष्टेः इयंइव स्पर्शां नतु स्पर्शेएव अक्षुपो प्रासकारित्यादिति अक्षुः स्पर्शां स ॥

स्थियथिइए आहारपुय अ्यसीइजगा, वाणमतरजोइसवेमाणिया जहा नयगवासी, नवर नाणस्र जाणियह  
 जंजस्व, जाव अ्यणुत्तरा, सेवन्तते जतेसि ॥ पढमसए पचमोउद्देशो सम्प्रप्तो ॥ ५ ॥ जाय  
 इयाउप्य नते ! उवाचतराठ उदयते सूरिए अक्षुप्कास हस्रमागच्छइ अ्यत्यमतेयियण सूरिए तावतियाठ

पढमसब्रह्मपचमो १ ए पडिवा यतकना पाचमा छेय्यागा टक्वाब सिक्को । १ इति छदो छेयो अशेदे - तेइनो ए संबंध  
 पादिसै छेये पंतसूत्रेविवै व्योतियोना विमानकळा ॥ इति तेइनो प्रत्यक्षमति अशेदे - आवतियापोचमंते । विच परिमाच्यो वेमभवन् । प्रवकाया  
 तरबको प्रवकायस्य पातराठबको । उवाचंतरापाठदंतसूरिएअक्षुप्कासअजमागच्छइ । अगतो सूई इदिस्यय मीप्रपावे सोबिस विवारे सूर्यं सर्वं अ  
 व्यतरमइहे इय तिबारे ४०२६१ योजन बीसठीया २१ माय अमता सूव इदियावै । पचमंतेविवर्धसूरिए । पाचमवां पवि इमज सूव । ताविवाचो  
 वेववाचंतराभोअक्षुप्कासअजमागच्छइ । ततकाहोजन बीजन ४०२६१ बीसठीया २१ माग प्रवकायांतराठबको पचमय अतावखोहोज पावे तवा बी  
 प्रांसठबनो विमतिपनेरा सूवबको वाचको इतिपत्र उतर । इता गीयमा । आवतियापोचउवाचंतराभोउदयतेसूरिएअक्षुप्कासअजमानच्छइ । इति

श्रुति ॥ श्रीप्र क्रिमयाप्यन्तरमरुत्ले सप्तबल्यारिगतियोजनाना सहस्रेषु द्वयोः गतयो खिपटीष साधिक्याया वक्तमान उदये दृश्यते प्रसासम  
 प्येय स्यं प्रतिपबलन दत्रामे विशेयादि सप्त स्थानानरारदवसेय ॥ सप्तशं समतति ॥ सवत सर्बानु दिशु समत्तात् विदिशु एकायावेतो ॥ उत्रासद्व  
 त्यादि ॥ प्रमामयति पपटप्रकाशयति यथा - स्पूत्तरमेव वृश्यते उद्योतयति प्रदाम्नाभायति यथा - स्पूत्तरमेव वृश्यते, तपति अपनीत  
 शीत दूरति यथावा मूर्त्न चिपीस्त्रिबादि दृश्यत, तथा करोति प्रनासयति प्रतितापयोग द्विज्येयोपनीतक्षीत विपसे, यथावा सूक्ष्मतर  
 यत्न दृश्यते तथाकरालीति एतच्छेत्रमेवा मित्या ॥ तन्नतेहत्यादि ॥ यच्छेत्र मयनासपति उद्योतयति तपति प्रमासयतिष' तच्छेत्र कि प्रदत्ता ।

येय उयासतरानु चक्रुफ्फासं हह्रुमागच्छइ ? हता गोयमा ! जावइयाउण उधासतराउ उदयतेसुरिए  
 चश्रुफ्फाम हह्रुमागच्छइ, अत्यमतेत्रि जाय हह्रुमागच्छइ, जावइयाण जते ! खेत्त उदयते सुरिए श्याय  
 येण सइत्तंसमता उंहासेइ, उज्जोएइ तयेइ पनासेइ, अत्यमतेवियणसूरिए तावइयचेय खेत्त श्याययेण  
 सइत्तंसमता उंहासेइ उज्जोएइ तयेइ पनासेइ ? हता गोयमा ! जावइयाण खेत्त जाव पनासेइ तज्जते

तम ! त्रिव परिमाणो पञ्चाम्रोतरबुको जयता मूय इदि स्यां गीव पावे ४०२११ याजन २१ भाग । अत्यमतेविषावइव्यमागच्छइ । पावमता  
 पवि इमत्र याउत् उताइया चसुस्य पावे ४०२११ याजन २१ भाग । आवतियापावमतेखत्त । जेतम् वेभागवत् । सेप । उदयतेसुरिएपातविषसव्यधी  
 ममतापभासेइ । अमता मूव पातयेकरी मूवने तेजेकरी सगन्तो टिमिनैविये विदिशिनैत्रिये प्राडामा प्रकायो, विमवसु इदिपावे । उज्जोवेइ तवेइ पमा  
 मइ । पवा उद्यातकरै शीतदूरकरै किम मूख कोटकादि होसे वियेयोतदूरकरै किम मूखवसु पचि इदिपावे । अत्यमतेवियणसूरिए । पावमतापवि  
 मूर । तावतियचेत्रपत्त । तेतवीत्र निचे चिपते । पातवेबसवधीममतापभासेइ । मूवने तेजेकरी सवदिशिनैविये विदिशिनैविये बाडोसो प्रकाय करे  
 उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ । अत्यत प्रकाये उद्यातकरै शीतदूरकरै आव्वायमान तपे इतिपय उतर । उंहा गायमा । श्री गीतम । आवतिसवयेत्त ।



ना तपव्यास्या यत् तस्यापं इति प्रष्टुं तथैव ॥ कुसुमायकालसमपसिद्धि ॥ स्पृश्यमानाद्ये ऽथवा ; स्पृश्यतः गुणस्य स्पृश्यतायाः कालसमपः स्पृ  
 गारकान्तममय स्य शान्तयेनेति गम्यत, यावत्स्येयं स्पृश्यति मूपइति प्रकृतं नायत्स्य स्पृश्यमान स्पृश्यमिति वक्तव्यं स्यादिति प्रश्नः ॥ इतेत्याद्युत्तर  
 म् स्पृश्यमानस्पर्शयो येन स्य अप्रमसूया स्वगतव्यमिति स्पृश्यतामेवा चिरुत्याह ॥ नोय ते प्रत ! अलोप्यतमित्यादि ॥ लोकात् सर्वतोलीकाय  
 मानं यन्तोकात्सु तदनन्तरएवति इति स्पृश्यतुसहृत्वादि सूत्रप्रपञ्चो दृश्यो ज्ञेयकोक्तः ॥ जायनिपमाकद्विसिद्धि ॥ एतद्भावनायैव स्पृष्ट मलोका  
 र्त्तं स्पृगति स्पृष्टस्य व्यवहारतो दूरस्वस्वापि दृष्टं यथा-बहुः स्पृश्य इत्यत उच्यते अथगाढल्यञ्च्य अतिमात्रमपि स्या  
 दत उच्यते अन्तरायमाह मध्ययथानम सन्धेद नतु परस्पररायगाढं शून्याकटिकाश्च परस्परसम्बद्ध तस्यां तु स्पृश्यति अलोकात्तस्य कृषिद्वि  
 पपणा प्रदेप्रमात्रस्य मूलत्वात् यादरमपि स्पृश्यति क्वचि द्विवर्षेयं यद्दुप्रदेवाथेन यादरत्यात् त एवं मय सिपञ्च स्पृश्यति कर्तुर्विविदिशु  
 मीकान्तास्या लोकात्स्य सायात् तन्वादी मध्येनेच स्पृश्यति कय मपस्त्रियंगुदुसोक्तान्ताः मादिमभ्यामाकल्पनात् तस्य स्वयियये स्पृश्यति

हंता गीयमा ! सञ्चति जाय यत्सञ्चसिया । तजते ! किं पुठ फुसह जाय नियमा वद्विसि । छीयतेजते ! छीयतेजते !  
 छ्युछीयतं फुसह छ्युछीयतेयि छीयतं फुसह ? हता गीयमा ! छीयते छ्युछीयत फुसह छ्युछीयतेवि छीयत

च्युतिवमार्त्तनिया । तेतना सेच परसा कदीये इम कडवा शय इतिप्रय उतर । हता गीयमा । हां गीयमा । सवतिजायवत्सञ्चसिया । सवपी सगली  
 द्विप्रिनेवि यावत् परस्यो इयाकडवापीय । तंभतेकिपुसह । ते हेमगवन् । छू फरसा फरसेवे ? आवचियमाहद्विसिं । यावत् निपेव् कद्विसि फरसे  
 जायते भतेपनीपतपमद । साकना छेइडी सवपी लोकात् अथमान हे भभवन् । पलोकात्ना यतमं फरसे पलोकात्नी यतते तेइने यतरपीजडे । यभीपते  
 रिमार्थतपमद । यमाकांत यमाकना छेइडा तेयनि काकनायंनप्रते फरसे इतिप्रय उतर । हता गीयमा । इगीयमा । छीयतेयसायतपमद । लोकात्ना  
 येत यसाकना यनपते फरसे । यभीयंतदिनागंतपमद । यसाकना यंतपसि लोकात्ना यतप्रते फरसे तंभतेकिपुसह । ते हेमगवन् । छू फरसा ? यर



स्पष्टावगाढादौ भाविपये अस्पष्टाहाविति तच्चा मुपूर्व्यां स्पृशति ध्यानपूर्वो वेद प्रथमे स्थाने लोकात् स्ततो नन्तर द्वितीये स्थाने अलोकान्ताइत्ये  
 व मयस्थानतया स्पृशति अन्यथातु स्पृशन्नेव न स्या तच्च पटसु दिशु स्पृशति लोकात्स्य पाश्र्चतः सवतो लोकात्स्य नावात् इहष विदि  
 शु न स्पृशन्नास्ति विद्या लोकविष्णुप्रमाणात्वा द्विविद्यात् तत्परिहारेण नावात् एव द्वीपान्तसागरान्ताविभूयुः स्पष्टाविपवत्रायनाकार्यो  
 भवर द्वीपसागरान्तादिसूत्रे षड्विधित्यस्यै व स्मावना योजनसहस्रावसाढा द्वीपाय समुद्राय प्रयन्ति - तत योपरितना नपञ्जना य द्वीपसमुद्रा  
 प्रवेद्या नाभित्यो द्वीपो दिग्दृश्यस्य स्पृशना वाच्या पूर्वोदिदिक्षास्तु मतीनिव समन्तत स्तेया मवस्थानात् ऽ उदयंतपोपतति ऽ नद्याद्युदकालः पो  
 तास्तं नीपयंवसान निहा पुञ्ज्यापेक्षया अर्द्धविकृस्पृशना वाच्या जलनिम्जानेवति ॥ विद्वतेदूसतति ऽ विद्वान्तोदृष्या त यच्छान्त स्पृशति  
 इहापि पद्दिविद्वस्पृशना भावना वक्रोञ्ज्यापेक्षया ऽथवा; कम्यलरूपवत्पौष्टविकाया तन्मच्यात्यद्वीकजलशुणेन तन्मध्यरग्न्यापेक्षया लोकात्  
 भूयवत पद्दिविद्वस्पृशना भावयितव्या ऽ द्वायंतभायवतति ऽ इह ध्यायान्देन पद्विग्भावनेव भातये व्योमवर्तिपशिप्रवृत्तिद्रव्यस्य या ध्याया  
 तदन्तमातपान्तम्भवस्यु विद्व स्पृशति तथा तस्याएव ध्यायाया नूनेः सकाशा तद्भुवं याव बुद्धयोस्ति ततश्च क्षायान्तमातपान्तमुद्गमपयस्पृश

फुसइ । तजते ! किं पुठ फुसइ अणुठफुसइ ? जाव नियमा षड्विंशति फुसइ । दीवते जते ! सागरत फुसइ  
 सागरतेयि दीवत फुसइ ? हता जाव नियमा षड्विंशति फुसइ, एव एगुण अञ्जिलावेण उदयंतपोपयत,  
 विद्वतेदूसत ; त्वायंतस्थायवत, जाव नियमा षड्विंशति फुसइ अस्थियण जते ! जीवाण पाणाइवाएण किं

से । पण्डितुसइ । पञ्चवा पञ्चपरस्था परसे । आबधियमा षड्विंशतिमात्र ओवतंतमेसागरतफुसइ । यावत् नियमसू अस्थियि परसे वहीगोतम पूहेहे - वी  
 पंत होयना अत हेभयवन् ! सामरणा अतप्रतं परसे । सागरतेविद्यावतफुसइ । सागरतो अतपवि होपनापतप्रतं परसे इतिप्रय उत्तर । इता गोयमा ।  
 ही गोतम ! आबधियम षड्विंशतिफुसइ । यावत् नियमै षड्विंशति परसे ते सखलवोजन होप ससुद्र अढाहे तिथिबन्धो अठद्वियि पञ्चोद्वियि पूर्वोपि ॥

ति अथवा प्रामादयरकिन्नादे याटाया तस्या नित रवतरत्या धारोङ्गत्याया अन्तमातपाल् मूढ मधय स्पृगतीति प्रायनीय अथया तयारय आयातपयोः पुद्रवाना मसङ्केप्रदेगाधगादिस्या दुष्प्रयसङ्गाव सारसङ्गावा सोद्ग्रापोविजागस्तय आयात् आतपाल् मूढ मधय स्पृगती ति स्पृगमापिनारादय प्राणातिपातादिपापस्थानप्रवक्तस्सस्पृगाना मथिरुत्याः ॥ अत्यीत्यादि ॥ अत्यियाङ्गम् इति ॥

रिया कज्जइ ? हुता अत्यि । सान्ते ! कि पुठा कज्जइ अ्युठा कज्जइ ? जाय निहाधाएण उद्विसि वाघा य पनुच्च सियतिदिसि सियधउद्विसि । सान्ते ! किंकाकज्जइ अ्यककाकज्जइ ? गोयमा ! ककाकज्जइ नोअ्यककाकज्जइ । सान्ते ! कि अ्यकका कज्जइ परककाकज्जइ तदुजयककाकज्जइ ? गोयमा !

दिसि इम अदिगिनो अ्यगना कज्जवी । एवंएवंअभिजावेचउर्यतेपापत् । इम इवेप्रकारेवरौ पाचोनो अंत नावनाअंतमत्तं फरसे । अहितेद्रुसंतं । अवे नां अतते अयङ्गाना अंतमत्तं फरसे । अावतपातवतंवाववियमाअदिसिपुसइ । आयानंअत धूपनाअंतमत्तं फरसे एवं अंधो प्रामाद भौतनेविपे धूप अठतो अतरतो आबवी यावत् त्रिवे अदिगि अ्यगनाधुवे अ्यगनाना अधिचार वकीळ प्राचातिपात पादिदंइ अठार पापस्वानव वकी अयनो वस अर्यना तेअमत्तं अधिचरौ कफेले—अत्तिअंतकोबाअपाआइआएअकिरिवा कज्जइ । अत्ति अइतावे अइति वाक्कासंकारे एपच अेमसवम । अीव प्राचातिपा ति नो अिया पापअपे जेकोले साकिया कइये, कमअरौ अिवाकोय इतिअत्र । उतर । हुता अत्ति । अंगौतमत्तं ! सामतेकिपुडाकज्जइ । तिका अेमग अत्तं । म् अरवीअकी होय । अयङ्गकज्जइ । अथवा अचअरकी इय । आवअिस्वाधाएअइदि सि । यावत् अिअी अखीळ नेडानकी तिअं अदिगिने फरसी अियाअमे । वाधातपअय मियतिदिसि अियअठदिसि सिअरंअदिसि । आधात आयो अखीळ नेडोले तिअं अिअी एअ तोनदिसि अेपदिसि अखीळमाटे अधुवे, अिअारेले आरदिसि अिअारेले अचअरनो अरे विचारीने कइवी । सामतेअिअकाकज्जइ । ते अेमसवत् । अं प्राचातिपातिको अिवाकोधी धुवे अथवा । अककाकज्जइ । अचकोधी धुवे प्राचातिपातिको अिया इतिअत्र उतर । गोवमा ककाकज्जइ अीअककाकज्जइ । अंगौतम । अी

स्पष्टावगाढादौ नाविष्ये अस्पष्टाविविति तन्वा नुपूर्वा स्पृष्टति आनपूर्वा) चेह प्रथमे स्थाने लोकात्त स्तौ नन्तर द्वितीये स्थाने अतीकान्तइत्ये  
 व मवस्थानतया स्पृष्टति अन्यथातु स्पृष्टनैव न स्या तन्व पठसु दिशु स्पृष्टति लोकात्तस्य पाद्यतः सद्योऽलोकान्तस्य प्रायात् इहव विवि  
 शु न स्पृष्टनादि विद्या लोकविरुद्धप्रमादत्वा द्विविद्यान्व तत्परिचारेण प्रायात् एव द्वीपान्तसागरान्तादिभूत्रपु स्पृष्टादिपदप्रावनाकाया  
 नवरं द्वीपसागरान्तादिसुत्रे अद्विविद्यइत्यस्यै व न्मावमा योजनसहस्रावगाढा द्वीपाय समुद्राय प्रवन्ति तत योपरितमा मस्यजना य द्वीपसमुद्रा  
 प्ररक्षा नामित्यो द्वांशो विद्वयस्य स्पृष्टना वाच्या पूर्वाविद्विद्यान्तु प्रतीतिव समन्तत स्तोपा मवस्थानात् ॥ उदयतयोग्यतति ॥ नद्याद्युदकान्त पो  
 तान्तं नीपयद्यसाम मिहा पुष्प्यापेक्षया ऊर्द्धेदिरूपक्षना वाच्या अलनिमज्जनेषति ॥ विद्वतेदूसतति ॥ विद्राक्तोदूष्यान्त यत्नान्त स्पृष्टति  
 इहापि पृष्टिरिरूपक्षना भावना वक्षोष्प्यापेक्षया ऽथवा कथ्यतस्त्वपवत्तपोहलिकाया तन्मध्योत्पद्यमीवजशयेन तन्मध्यरूपपेक्षया लोकान्त  
 सूत्रवत् पृष्टिरिरूपक्षना प्रावयितव्या ॥ ज्ञायतप्रापयवतति ॥ इह ज्ञायाजदन् पन्दिग्मावर्गेव ज्ञातये व्योमवर्तिपणिमन्त्रित्त्रव्यस्य या च्वाया  
 तदन्तमातपान्तान्तस्यपु दिष्ट स्पृष्टति तथा तस्याएव ज्ञायाया भूमे सकाशा तद्रव्य याव दुष्प्रयोस्ति ततश्च ज्ञायान्तथातपान्तमूहमथयरूपग

फुसइ । तन्नते ! किं पुठ फुसइ अपुठफुसइ ? जाव नियमा ढादिसि फुसइ । दीवते नते ! सागरत फुसइ  
 सागरतेवि दीवत फुसइ ? इता जात्र नियमा ढादिसि फुसइ, एव एरण अत्रिलावेण उदयतेपीययतं ,  
 विद्वतेदूमत , ज्ञायतेश्चायवत , जात्र णियमा ढादिसि फुसइ अत्यिण नते ! जीवाण पाणाइवाएण किं

चे । पयइभुसइ । पदना पदपरत्वा परत्ते । जावविद्यमाअद्विविद्यमए दीवतंभतेसागरतकसइ । यावत् नियमस्य अद्विगि फरसे वहीगोतम पूदेवे -- बी  
 पोत होपना अत वेभयन्न ! सागरत्वा अतमते परसे । सागरलेविषोबतफुसइ । सागरतो अतपवि होपनाअतमते परसे इतिमय उन्नर । इता गीयमा ।  
 ही गीतम ! जावविद्यम अद्विविद्यमसइ । यावत् नियम अद्विगि परसे ते सइसयोवन होप समुद्र अकाहे तिबिषको अठद्विगि पयोद्विगि पूषादि ॥

ति, अथवा प्रामादपरिष्कारे माठाय तस्या निप रवतरन्त्या आरोहन्त्याया अन्तघातपाल्ता मूढं मधय स्पृशतीति जावनीय अथवा तयोरय आयातपयोः पुद्गलाना मधुमेयप्रदेयावगारित्वा दुष्पुसद्गाव सात्सद्गावा दौर्दुर्गोधिनागसतस्य आयात्त घातपाल्ता मूढं मधय स्पृशतीति स्वयानाभिभारादव प्राणातिपाताविपापस्थानमवकम्पस्पन्नना मधिरुत्याश्च ॥ अत्योत्यादि ॥ अत्योपम्यशः ॥ क्रिरियाकञ्जइति ॥

रिया कजाइ ? हुता श्यत्सि । सान्ते ! कि पुठा कजाइ अ्युपुठा कजाइ ? जाय निष्ठाघाएण ठादिसि थाघा य पढुच्च सियतिदिसि सियचउदिसि । सान्ते ! किककाकजाइ अ्यककाकजाइ ? गोयमा ! ककाकजाइ नोअ्यककाकजाइ । सान्ते ! कि अ्यसकका कजाइ परककाकजाइ तदुजयककाकजाइ ? गोयमा !

दिसि इस छदियिनी अयना कहवो । एवंएवंअभिसावेसवस्तेपाचत । इस हवैएकारेकरो पाबोनी अंत नावनाअंतप्रते परसे । किरितेदूसंतं । छेद ना अतते अयनाया अंतप्रते परसे । कावतेपातवतंजावबियमाहदिसिपुसर । कायानअंत धूपनाअंतप्रते परसे खं अंधो प्रामाद भौतमेविये धूप अठतो अतलो जावनी यावत् मिये छदिसि अयनापुवे अयनाया अधिकार वकील प्राणातिपात आदिदेई अठार यापखानव बबी अयनी कम अयना तेअंतते अधिकारी कहवै—अतिअभतेनीबाबपाबाहवाएअकिरिया कज्जइ । अदि कइताहै अइति वाक्याअंकारे एपच हेअगवम । जीव प्राणातिपा तिनी अिया पापअपे जेओवै सोकिया कहोये, कमअरो कृवाहोअ इतिप्रय । उतर । हुता अति । अगोतमवै ! सामतेकिपुहावज्जइ । तिका हेअग अ । ग अरनीबकी होय । अयनाकज्जइ । अबना अचअरनी ह्य । जावबिवावाएअअदिसि । यावत् किका असीव नेअानबी तिअं छदियिने अरनी अयनामे । वाघातपठम मियतिदिसि सियचउदिसि सियचउदिसि । आघात पात्री असाक नेअावै तिअं किका एक तोनदिसि अयदिसि असीवमाटे नहुवै, दिवारैवे अरदिसि जिगारैवे पपदिसि एसव आहारनी परे विपारीने कहवो । सामतेकिंअठवाकज्जइ । ते हेअगवत् । अं प्राणातिपातिकी अियाबोधी हुवे अयवा । अठवाकज्जइ । अचबोधी हुवे प्राणातिपातिकी अिया इतिप्रय उतर । मीयमा अठवाकज्जइ योअकठाकज्जइ । हेगोवम । को

किपतइतिविद्या बन्धे साक्षियते प्रवृत्ति, पुठेत्यारे ध्यास्यापूर्ववत् ॥ कलाकञ्जइति ॥ कलाजव त्यक्तस्यकम्मणो ज्ञावात् ॥ अतककलाकञ्जइति ॥  
आत्मकतमेव बन्धमवति नाम्पथा ॥ अत्राबुपुष्टिकलाकञ्जइति ॥ पूर्वपथा द्विमाणा पयनास्ति तदनामुपूर्वी कश्चेनोच्यतइति ॥ अत्रानेरइयातइ

असकलाकञ्जइ णोपरकलाकञ्जइ णोतदुभयकलाकञ्जइ । सान्ते ! किं श्याणुपुष्टिकला कञ्जइ श्याणुपुष्टि  
कला कञ्जइ ? गोयमा ! श्याणुपुष्टिकलाकञ्जइ नोश्याणुपुष्टिकलाकञ्जइ । जायकला जायकञ्जइ जायक  
जिस्वइ सदासा श्याणुपुष्टिकला नोश्याणुपुष्टिकलातिवसवसिया । अत्यिणजते ! नेरइयाण पाणाइवाय

वो विद्या णो पचबोधा बन्धना सभावमाटे, पचि पचबोधो प्राचातिपातको विद्या भवति । सान्तेविप्रतकटाकञ्जइ । तिका हेमगवन् । अं प्रापयो  
को विद्या सागे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पतकटाकञ्जइ । हेमोतम। प्रापयो बोधो प्राचातिपातको विद्या माय पचि । बोपरकटाकञ्जइ । पारकीबोधी  
को विद्या सागे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पतकटाकञ्जइ । हेमोतम। प्रापयो बोधो प्राचातिपातको विद्या माय पचि । तदुभयकटाकञ्जइ । प्राकपर ते वेज छत प्राचातिपाति  
प्राचातिपातको विद्या भवति । षोतदुभयकटाकञ्जइ । देखमिखो विद्याबोधी ते एकने दुखटायक नहीव लेइनी मन अधिको तेइने धरो । सामंतेकि  
पादपुष्टीकटाकञ्जइ अत्राबुपुष्टीकटाकञ्जइ । तिका हेमगवन् । अं प्रागुपूर्वीय अत्रकमेकोधी साने पचिसाबोधे पडे प्रापमागे पयवा अनानुपूर्वीय  
बोधी ते विद्यासागे अपचिने प्रापसाने पडेविद्यासाने इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा प्रागुपूर्वीकटाकञ्जइ । हेमोतम ! प्रागुपूर्वीयेकोधी विद्यानागे पचि  
बोपचापुष्पीकटाकञ्जइ । अनानुपूर्वीकृतविद्या भवति । आरकजा । विद्या क्रिया पूर्वबोधी अतोतकाले विद्याबोधी । आरकञ्जइ । विद्या अनामान  
बाहे बरते । आरकञ्जइ । विद्या प्रागामिबाहे बरते । अनानाप्रागुपचिबडा । तेसगळो प्रागुपूर्वीय अत्रकमेकोधी पचि । विद्या अनामान  
तिवतविद्या । अत्रकमरहित अनानुपूर्वी तेकोधी इत्य बोधोये पलोनीतमपूर्वेहे—अत्रिबन्धनेकेरइयाव । ते अत्राकालकारे तेमगवन् । आरकोने । पा  
आरकावचिदियाकञ्जइ । प्राचातिपातकप बोधविंसाकप विद्या कथना बन्धनाने इतिप्रश्न उत्तर । अत्राचिनि । अं गोतम हे । सान्तेविप्रतकटाकञ्जइ ।

पुनर्दिपयज्जानाबिप्यति ॥ मारुत दतुरावयोपियाथा एकेन्द्रियवजो सोत्यन्या देवादि दिक्षुपदे - निष्वापाएव छविषिं वापायं पठुषु  
 नियतिदिमिहत्यादे विद्योपानिसापस्य धीवपदोक्तस्य प्रायादतएवाह ॥ एगिदिया जहाजीवातहाभाबिप्यति ॥ आव मिथ्यादसवसने ॥ इह्या  
 यददरात् ॥ साहमायासोजयेज्जे, अमिथ्यत्वा मायासोपस्रमाय मजिवङ्गुमाक्रमम दीये, अतजिव्यत्त्रोचमानस्वरूप समीतिमात्रद्वेषः कस्तहो  
 राटिः, अद्रज्जाबे असरोपाविफरब पेसुल मच्छत्त मसरोपाविफरब परपरिवाए विप्रकीबं परेयाहुवयोपवचन, अरदरब अरति

किरिया कज्जइ ? हता ! स्य्त्यि । सानते ! किं पुठ्ठाकज्जइ स्युपुठ्ठाकज्जइ जाव नियमात्तद्विसि कज्जइ सा  
 नते ! किं कफाकज्जइ स्युक्काकज्जइ तच्चैवजाय नो स्युणाणुपुष्ठिककातिवत्तस्यिसिया । जहनिरइया तहाएुगि  
 द्वियथज्जा चाणियहा जाव वेमाणिया । एगिदिया जहा जीवा तहाजाणियहा, तहापाणाइवाए तहामुसा  
 वाए, तहास्यदिने, मंजणे, परिग्गहे, कोहे, जाव मिच्छादसणसहे । एव एणुण स्युठारससघउष्ठीस दऊगा

तिथा ऐ भयवन् । अं सुदयको सामे ? प्रपणावज्जइ । प्रववा प्रसुद सामे । आवबियमाहदिसिज्जइ । यावत् तिये अं पट्ठिगिय प्रते सागे । सामते  
 विड्ढाकम्मर । तिथा बिग्ग ऐ भयवन् । अं कोधी सागे । प्रववा प्रवकोधी सागे । तच्चैव । तिमज सव कइवो । जावचोपवाह्वपव्वि  
 क्कानित्तम्भधिया । यावत् प्रगतपत्तीसे नकोधी एह्वं कइवू । जहायेरसा तहा एगिडिक्कत्ताभाबिप्यत्ताजाववेसाधिया । तिम मारकोक्कत्ता तिम  
 ऐओ वज्जे पनुरवुमारटिक्क यावत् वैमानिक पवेत सव कइवा एक्कोवज्जे तिमट्टे एक्कोवज्जे दिग्गिपेदे । निष्वापाएव छदिसिवापायं पठुषुसियतिदि  
 मि इत्यादि । एगिदियक्कत्ताजीवातहाभाबियत्त्वा अहापाचाएवाए । एक्को तिम औक्कत्तो तिम कइवा, अिम प्राब दय तेज्जो विवोय तेइने प्राथा  
 तिपात्त कइवे बीज्जुताम चिममाबइये चिमपाचातिपात्त । तहामुसावाए । तिम चपावाट आरवा । प्रवापरिवादावे नेइवे परिक्कहे कोचे । तिमज  
 पदत्तादान प्रववोभी वसुतो चेवा, इमव मेसुत्त स्त्रीनाभोग, परिपइ मूर्च्छा, कोष वीरुखेद । आवमिथ्यादसपसहेएव एएअहाएवपठुक्कीसदइगाभाबिप्यत्ता

मोक्षणीयोव्याधिभोगे तत्पन्ना रति विषयेषु मोक्षणीयोदयात् चित्ताभिरतिः परतिरति मायामोक्षे सुतीयकृपापद्वितीयाध्ययोः सद्योगो  
नेमश्च सूर्यउयोमाउपपत्तिसिन्धु प्रथया वेपान्तरप्रायान्तरकरण यत्परवच्चन तन्मायासुपति मिथ्याद्वयान द्रस्यमित्थ विविपव्यपाप्निर्यन्थनत्वा  
निम्प्यादर्शमध्यासमिति एव ताव द्वीतमहारेण कर्मं प्रकृष्यत तत्रप्रवाहः श्वास्त मिथ्यतः शाश्वतानेव लोकादिप्रायाम् रोडकान्निषाम मुनि  
पुणवहारेण प्रकृष्यति स्मस्तावयकाह ॥ तेवकारोडकमित्यादि ॥ पण्डितप्रदृष्टि ॥ स्वभावतएव परोपकारकरणीय ॥ पण्डितप्रदृष्टि ॥ स्वभावत  
एव प्रावमादृष्टिको इत्येव ॥ पण्डितप्रदृष्टि ॥ तया ॥ पण्डितप्रदृष्टि ॥ क्रोयोदयान्नावात् ॥ पण्डितप्रदृष्टि ॥ क्रोयोदयान्नावात् ॥ सत्यपि कृपायोदये  
प्रतनुकोपावित्राकाः ॥ प्रितमद्वयप्रदृष्टि ॥ सनु यन्माएव श्वास्त्ययं महकृतिव्य सुत्सुस्यकः प्राप्तो गुरुपदेशेन ॥ श्वास्तीकेंति ॥ गुरुसमा

**ज्ञानियज्ञा । सेवचते २ । जगवं गोयमे समण जाव विहरद् ॥ तेणकालेण तेणसमणेण समणस्स जगत्रजं म  
हाधीरस्स श्वास्तीकेंति रोहिणामशुणगारं पण्डितप्रदृष्टि पण्डितप्रदृष्टि पण्डितप्रदृष्टि पण्डितप्रदृष्टि**

इहा वाच्यं यत्ने नाम सावा काम राग द्वेष बहव पन्माब्धान पैसूच परपरवाद् परतिरति सावाभास मिथ्यादयान्नावात् इत्येव चठार पापपान्नाजव  
पशुडीयउडके कइवा । सेवचते भतेति । तद्वृत्ति, जे मयत् । तद्वृत्तते ते सबसखे पन्नावाकौ एसाकइौ । मगधगीयमे समणमममहागोरवदरत्रावपि  
इत् । भवकत गीतम त्रमभ मयवत श्रीमहाबीरेने बीही यावत् विपरवानाया इम पश्चिमा गीतमने पधिकारं कम प्रकृषया कीडी ते कम प्रवाह्यो  
यास्तोडै एतथा भटिकयासता हावादिक्का भाव रोडकनामा साधु तेइने प्रयोगरक्केडे—तेवकाधिचं । तेकालेनेविदे । तेवममएव । ते समर्थने  
विदे समणसमणपामहागोरव । समण तपको मयवंत प्रागवंत पिच्छर्पाविवंत श्रीमहाबीरेने । एतेवामी रोहिणामशुणगारि । यिच्च रोहिणामै साधु  
पवरभइए । समारै पर उपजीरी । पण्डितप्रदृष्टि । समणको श्रीमन्मभाव । पण्डितप्रदृष्टि । समारै विजयवंत । पण्डितप्रदृष्टि । समारै श्रीमन्मभावको । पण  
इत्येवकइहासावाकीडे । समारै पातका कइवा कोणवाच सागा कोणडे । मिच्छमसदकइएके पकीधि भइए विच्छेप । सधु जे साहेब सखेडे — २००

णमायालीने मिडमद्वयसपन्ने झुलीणे नद्वए विणीए समणस्सजगवउंमहावीरस्स झुदूरसामते उहु जाणू  
 झुहोसिरे ज्जाणकोठोयगए सजमेण तयसा झुप्याणजायेमाणे विहरइ। तएणसे रोहे झुणगारं जायसहुं जाय  
 पज्जुयासमाणे एयवयासी पुड्डिजते ! छोए पच्छाझुलोए पुड्डिझुलोए पच्छाओए ? रोहा ! छोएय झुलोए  
 य पुड्डिपेते पच्छापेते दोयेएससयाजाया झुणाणुपुड्डीए सारोहा ! पुड्डिजते ! जीवा पच्छा झुजीया

य मयव गुणउपवगघी गुरुममोपरत्ता, पबवा उमोने गबन्त ततारावव नफ सवा गुणपंते। समबभुमगबभामहावीरस। तमव भयवत श्रीमहा  
 नीरप्यामीने। यदूरगामते। प्रतिवियसोमही प्रति ठूळकोनही। उहुवाडूपहीसिरे। जवा हीरव मोशो मायो। ज्जापकोठोवगए। ज्जामरुप कोठामे  
 विवे भमप्यान विवे खिरचित्तवका। सवमेरुतवसा प्रप्याजभावेमाणेविहरइ। सतरेमेदे सवम तेचे नवा पावता कमवारीवे तेचेबरी तथा तय वारे  
 भेदे तिचे मूयमा कम भिळतिये तेच करी पाआा जीव ते प्रते मही भावनाचे भावनायका विचरे। तएचसेरोचिभामपचयारे जायसहुं। तिवारे तेरोहा  
 नामे माउउपनी तहा एतसे पाम्बाये सहित। जावपज्जवायेमाचे। बावपू गळे सेवा करताबका एववं गीतमनीपरे कइयो। एवववासी। इम वक्कमा  
 व कइता इया। प्रतिवभतेमाए। पड्डिमे हेभयवन्। मोकडे। पच्छापमोण। पळे पसीकडे। पुखियसीए। पववा पूवे पसीकडे। पच्छासीए। पळेसी  
 कडे इतिप्रय उत्तर। रोहा माएय पखोए। हेरोहा सोळ वपुन पखोळ। पड्डियेते पच्छायेते। पूवे पड्डिये पळेपड्डिये। दोविएससयाभावा।  
 पबनाक तथा पमाक हेरं मासताभावडे इहा सदेव नही। पनाउपुवीएसारोहा। पड्डिमे पाळे जिहा एतर मही एतसे दोनूवरावरडे एहमाचे  
 पड्डिमा पाळे कोर कइयाय नही। पड्डिभतेसीवा। वनीराहोपूडेडे—पड्डिसा हेमगवन्। जीवडे। पच्छापजीवा। पळे पजीवळ भववा। पुगियपजी  
 वा। पूवे पजीवडे। पच्छापजीवा जइव माएव पसीएव। पळे जीवडे इतिप्रय उत्तर कइडे—जिमहोअ सोळ प्रने पमीक पड्डिमा पळे नवका। तइव  
 जीवायपजीवाए। तिमहीअ जीव पजीव एदीनू मावतामावडे एहोनेकिये पूर्वपरविभागप्राणी पड्डि करी नसने। एवमवमिडियाय। इमपूखे सि



मीहनीयोदयान्निद्रेकः तत्प्रसा रति विषयैयु मीहनीयोदयात् चिन्तामिरतिः धरतिरतिः सायामोचे घृतीयकपायद्वितीयाश्रवयो- मयुगो  
 ज्ञेयः सर्वधयोगाठपलषिता अथवा वेपान्तरप्रापात्तरक्षेण यत्परध्वनं तन्मायाश्रुयति भिष्याद्वचन शस्यमिव विविधव्यायानिर्यन्त्यत्वा  
 निष्पादलंनभस्यमिति एव तात्र द्वीतमद्वारेण कर्म प्रकृपित तद्यमवाहृतः शास्त्रत नित्यतः शास्त्रतानेव लीकादिनाथान् रोहकात्रिचान मुनि  
 पुणवद्वारेण प्रकृपयितु असावयवाश्च ॥ तेकालेकमित्यादि ॥ पणइजद्वरति ॥ स्वमावतएव परोपकारकरखगीति ॥ पणइमठएति ॥ स्वजावत  
 एव प्रावसार्धुविको णएव ॥ पणइविष्यति ॥ तथा ॥ पणइठवसपत्नति ॥ क्रोपोदयात्रावात् ॥ पणइपयकुकोइमाकमायातोइ ॥ सत्यपि कपायोदये  
 प्रतनुकोषादिजाव ॥ मितमद्ववसपत्नेति ॥ यदु यन्मादं व अत्यम महकतिअय सास्वम्पकाः प्राप्ता गुरुपदेण च। सतथा ॥ अहीकिंति ॥ गुरुसमा

नापियथा । संवत्तै २ । जगव गीयमे समण जाव विहरद् ॥ तेणकाउेण तेणसमण समणस्स जगवन्नु म  
 हावीरस्स स्यतेवासीरोहेणामस्यणगारे पणइमद्वए पणइमद्वए पणइमद्वए पणइमद्वए पणइमद्वए पणइमद्वए

इहा बावत् यन्ने मात्र सावा काम रोग वेव अस्व पम्बाब्बान पैसूय परपरवाद धरतिरति सायामाव भियादमनग्रन्थ इमएव पठार पापस्मानक  
 चठवीसठठे कइवा । सेवभते भतेति । तइति, हे भयवन् ! ठठेकइते स्वसख्ये पय्यवानहो एसाकहो । भयवत्तिसये समचभगवमहावोएवटइआएवि  
 इरर । भयवत योतम यमच भयवत श्रीमहावीरने वदो वावत् विचरवाभागा, इत यइषिणा गीतमने अधिकारे अम प्रकपवा कीषी ते कम प्रवाइधी  
 यासताइ इतवा मंटेवयासता बाणादिकवा माव रोइकजामा वाइ तेइने प्रयोत्तरकइइहे—तेचंकाविण । तेव्वाजनिधिये । तेचमएच । ते समचने  
 विये समचअमगएमहावोरएव । समच तपस्वी भगवत ज्ञानवत सिख्योदिकवा श्रीमहावीरनी । अंतिवासी रोहेकामचचमरि । अथ रोहकामे वाइ  
 पणइमद्वए । जमानै पर उपजीती । पणइमठए । जमानको श्रीमहसाव । पणइविषीय । जमाने विजवचं । पणइउवकते । जमाने कुंउवउवचकी । पण  
 इपवइबाइभाषमावकीमे । जमाने पाएवका वावा कोइसाव मावा नीपणे । भिअयइउवउवके पकीइ अउउ विनीय अउ अे भाईव अउउ अउउ अउउ

द्वि निमृति र्व्याग्ने भवसिद्धिर्वा प्रव्या इत्यय ॥ सप्तमे उवाच संतरति ॥ सप्तमपुत्रिय्या यथोवर्षो वाञ्छामिति सप्तसङ्खरुणाये ॥ उवासेत्यादिके, तत्र ॥  
 उवासेति ॥ महापद्मागालराणि ॥ धाम्यति ॥ तनुवाता पनवाताः ॥ पञ्चदशिति ॥ पनोवपयः ॥ सप्तपुत्रविति ॥ नरकपुत्रिय्य सप्तैव ॥ वीवापयति ॥  
 त्रय्युद्गीपारयो भङ्ग्याः स्य धारता सवबादयः ॥ धासति ॥ वर्षीवि नरसारीमि सप्तैव ॥ उेरइयाइयति ॥ तनुपुत्रिय्यति ॥ सप्तिययति ॥

यत्त पच्छालोयंते ? रोहा ! लोयंतय श्रुलोयंतय जाव श्रुणाणुपुष्पीए सारोहा । पुष्पिनते ! लोयते पच्छा सप्त  
 मेउयासतरे पुच्छा , रोहा ! लोयंतय सप्तमेय उयासतरे पुष्पिपेते जाव श्रुणाणुपुष्पीए सारोहा , एव लो  
 यतय सप्तमेय तणुत्राए एषघणत्राए घणोदहिस्तमापुठवी , एव लोयते एक्केक्केणसजोएयधे , इमेहिंठाणेहि  
 तजहा—उयासथायघणउदहि पुठवीदीवायसगरावासा नेरइयादीश्रुत्यय समयकम्माइलेस्साउ ॥ १ ॥ दि

राहामापतेवसप्तमउवासतररुपस्त्रियेतेकावपवाकुपुत्रोपसाराहा । हे राहा ! भाकन भते पने सातमो प्रविनीना १ पाकायने माइोमाचि पहिखा  
 पचि एक्के पचि यावत् पनुकमरहित पहिखा पसे एक्को कबोतमकोये पहिखा पसे एक्को इका पव पवातुना पनुकम नही हेरोहा । एव लो  
 यंतैव । इस लोकापत पने । सप्तमेयतपवाए । सातमो प्रविनीना तनुवात एहनी मरुन तथा उतर कइवा । एवकववाएववाइदि । इस लोकात प  
 ने मातमो प्रविनीना पनवात घनाइधि कइवा इस लोकांमो भत पने । सप्तमापठवो । सातमो प्रविनी जाकवो । एवकोपते । इस साकनापतप  
 एक्केकमत्राएगवे । एक्केकमानक जाकवा । इमेहिंठावेदि । तजहा । एह ज्ञानकना नामहे तेकहेहे — गावायेकरी । उवासवातपएउदहि । भा  
 काय पतरा १ तनुवात लोका पनवात घनोदहि पांचो सात । पुठवीदीवायसगराववासा । नरकमो प्रविनी सात ऊरुहोय भादिदेह पसख्याता होय  
 पमस्याता ममुद्र मयचममुद्र भादिदेहे भरतवेवादिवास । बेररवादी पत्तिय । नारको भादि कठवोसदक पवास्त्रिकाय वपुन । समयकाक्याइ से  
 ग्वायो १ १ ॥ कामविभाय पाठ निम्ना ए १ १ शिरोदेशवशाचे सप्तसरीएकलोगठवधेगे इमपएसापज्जव चढाकिपुत्रियवापते ॥ २ ॥ इदि १ दयन ४



कपदायप्रमाया दय गीतममुयेन लोचस्वितिप्रमापनाया ॥ कश्चिद्वाकमित्यादि ॥ आशास्रप्रतिष्ठिती वामु स्तनुवातपनधातरूप स्तस्या यज्ञा  
 ष्णान्तरीपरिस्थितयान् आकाशान् स्यप्रतिष्ठितमेवेति नतप्रतिष्ठितचित्ताकृतति तथा यातप्रतिष्ठित उव्पिच्यनोदधि स्तनुपनवालोपरिस्थित  
 त्यात् २ तथा उव्पिच्यप्रतिष्ठिता पृथिवी पनोदधीना सुपरिस्थितत्वात् ३ रव्यप्रज्ञादीना वायुस्वापेक्षया वेदमुक्त मन्वये पटप्राम्भारापृथिवी

य तेणं जीजोहेठिषी ततवन्नेतेण नेयस्य, जाय स्यतीयश्चुणागयन्ता पच्छा सध्ठा, जाय श्युणाणुपुधीए सा  
 रोहा, सेयजतेर जाय थिहरह् । नतेसि जगयं गीयमे समण जाव एवययासी, कइथिहाण नते ! लीय  
 ठिड्ड पयास्ता ? गीयमा ! श्युथिहा लीयठिई पयास्ता ? तंजहा ! श्यागासपइठिइयाए १, वायपइठि

पदे भातना यतयातय प्रयथा पडिक्कासातमा प्रजवातये पदे सातमा तनुवावसे ? भगवतकथेयै—एवपित्तयेवसेयव । एपचि तिमज्ज आसवा पचिक्का  
 पये न कइथा । जावसयथा । यावत् सबपथा एतली कइवी । एवठवरिक्कयइकसुक्काव । इम कपरिणो एवेक्काडवा मेसवा । तेवलीजोहेठिक्को । तेइवी  
 जेजे हेठिनो । ततंखडेएवसेयव । तेते कोठवो परइमिसवो, इम विचारो सेवा, ताखगेकइवा । जाव पतीतपचागयथा । यावत् पडिना भतीत भडा पख  
 पनागतपथा, पयवा पडिना पनागतपथा पदे भतीतपथा । पखासवथा । इम पडिना पनागतपथा पदे सर्वाणा, पयवा पडिना सर्वाहा पखे पनागतपथा  
 आवपचाकुपुनोएसारीका । यावत् पयव पनानुपूर्वीक हेरोहा समवेने पडिनापखे कइममन्नाये, सदा ग्रायता मावडे हेरोहा । सेवमतिभित्तिजाव  
 विहरइ । राहा कइये—तइति । इमयवत् तमेक्कमु ते सबसय्ये पन्वसान्नी एसोक्को यावत् विचरे । भतेतिभगवगायमे समसमयमइवीर जावण्वव  
 यामो । भाजांतादि भाजपदार्थ मस्तानवो कइथा । इमे गीतम सुकइरै नाकम्बितिना स्वरूपक्याये कइये—इ भगवन् ! एइवा प्रानवत गीतम, यमए  
 भगवत यीमइवीरवामो मतेजायो यावत् इमकथे । कइविहाथमतेनापडिपयत्ता । कितसेमिदे हेभगवन् कोकनोस्सिति कइी इतिमय्य सत्तर । गीयमा  
 पाविहाओपडिई पयताताजहा । हेगीतम पाठिभेदइअइराजकाकनो स्सिति रइवा कइथा तेकथेयै—प्रागासपरिष्ठिइयाए १ । आकाशकपर तनुवात

प्राणिकायाः पञ्च ॥ समयति ॥ कालविनागाः कर्मास्पृष्टी, नेत्रया पद् वृष्टयोभिष्यावृष्ट्यादय स्तिकाः दद्यानानिवल्धारि, घानानिपञ्च, सञ्चा  
 बतसः अरीराखिपञ्च योनाख्य उपयोगीद्वी वृष्याखिपद् प्रदेशा अन्ताः पर्यवा अमन्ताएव ॥ अद्भुति ॥ अतीतादा अनागतादा सर्वाद्वा  
 वेति ॥ किंपुष्टिलोयतेति ॥ अयं सूत्राभिलापनिर्देश सखीव पयिमसूत्राभिलाप दर्शयन्नाह ॥ पुष्टिन्नतेलोयतेपञ्चासद्वेति ॥ यतानिष सूत्राणि  
 न्युष्टानादिकाव्निरासेन विचित्रवासाप्यास्मिन्नवस्तुसत्ताभिधानार्थाणि ईश्वरादिकृतत्वनिरासेन ज्ञानादित्वाभिधानार्थांगीति लोकान्तादिलो

ठीदसणणाणा समसरीरायजोगउवर्तुगे दष्टपुसापजाव अष्टाकिपुष्टिलोयते ॥ २ ॥ पुष्टिन्नते ! लोयते प  
 ष्टासद्वहा ? जहालोयतेण सजोवया सधेठाणा, एते एव अलोयतेणवि सजोएयद्वा सधे, पुष्टिन्नते ! स  
 त्तमे उवासतरे पच्छा सप्तमेतणुवाए एव सप्तम उवासतरसधेहिं सम सजोएयधे, जाव सद्वहाए पुष्टिन्न  
 ते ! सत्तमेतणुवाए पच्छासत्तमेघणयाए, एवपि तहेत्र नेयधं, जाय सद्वहा, एव उवरिह एक्कोक्क सजो

ग्राम १ संज्ञा १ शरीर १ पपन बाग १ उपबाग २ द्रव्य १ प्रदेय प्रकता पर्याव प्रकता अतीतपदा अनागतपदा सञ्चहा एतथा आनक पूषवा खूं ?  
 पश्चिमा लोकाव २ पश्चवा । पश्चिमलोपते । अष्टौव नियम द्वेद्वीसूत्र देखाइहे—पूर्वे हे भगवन् ! लोकाव । पच्छामञ्चहा । पछे सबपदा इत्यादि स  
 र्वं खड्की । अष्टानापतेरंखड्कीइयामखेठाबा । जिन लोकनापत खूं मेवा खीया समयत आनक सातमा अष्टकार्यातरादिक तिम । एतेपवपयोपतेव  
 विसर्जोएयवा । ए इतज अष्टौकना अतवको पयि मनोपरेविचारीने जोडवा मेववा बन्नीराडो पूवेहे—सेपुष्टिभतेमत्तमेउवासतरेपच्छासत्तमेतणुवाए ।  
 ते पश्चिमा हे मयवन् सातमीपविवीनी आवायांतरहे पछे सातनीपविवीनी तनवात अथवा पश्चिमा सातमी आवायांतर इमपूवा भगवत खेहे—इ  
 हा पश्चिमा पछे अष्टौ नखकोये । एवसत्तमंठवासंतर । इम सातमी आवायांतर । सवेदिसमसरीएयवअवापवखवाय । सगले ठामे जोडवो अर्कये म  
 न्वा तांहे अडवा खडीराडोपूवेहे—पुष्टिभतिसत्तमेतणुवाए । पश्चिमा हेमगवन् सातमी पुष्टिको अथवा सातमी तणुवातहे । पच्छासत्तमंठवाए ।

कपदापमश्याया दय गौतममुद्येन सोऽस्मिन्निप्रप्रापनायाह ॥ कश्चिद्वाक्यमित्यादि ॥ आक्रान्ताप्रतिष्ठितो वायु स्तनुवातपनधातुरूप सस्या वसा गाल्लरोपरिस्थितायात्, आकागन्तु स्वप्रतिष्ठितमयेति मतप्रतिष्ठाधिष्ठाकृतमिति तथा धातुप्रतिष्ठित उक्त्विपंतीवचि स्तनुपनधातोपरिस्थित स्यात् २, तथा उक्त्विपंतिष्ठिता पृथिवी, पनोद्वशीना मुपरिस्थितत्वात् ३ रवप्रज्ञादीना यादुस्व्यापेक्षया श्वेदमुक्त मन्मये पटप्रगभारापृथिवी

य तेर्ण जीजोहेठिसो ततवल्केतेण नेयह्व, जाय अथीयश्च्युणागायथा पच्छा सध्वठा, जाय अथ्याणुपुधीए सा रोहा, सेयन्तेर जाव थिहरइ । जतेसि जगव गोयमे समण जाय एवययासी, कह्विहाण जते ! लोय छिइ पणत्ता ? गोयमा ! अथ्विहा लोयछिइ पणत्ता ? तंजहा ! अथागासपइठिएवाए १, वायपइठि

पथे भातमा पननातह पक्षथा पश्चिन्नासातमा घनवातथे पथे सातमा तनुवातथे—एवंपितश्वेवसेवव । एवचि तिमज जावथा पश्चिन्ना पथे न कश्चवा । जावसथठा । यावत् सवप्रथा एतसो कश्चवा । एतवपरिक्लएकेइसलोये । इम अपरिणा एवेककाइवा मेसवो । तेषलोवोइठिलो । तेषलो जेठिनो । तंतवल्केएकथेयथ्व । तेते लोहवो परहोमिसवो, इन विशारी सेधा, तावगेइइवा । जावत् पश्चिन्ना पनोत थगा पछ जनामतपथा, पक्षवा पश्चिन्ना पनागतपथा पथे पनोतपथा । पच्छासथठा । इम पश्चिन्ना पनामतपथा पथे सर्वांथा, पक्षवा पश्चिन्ना सर्वांथा पथे पनागतपथा आत्रपयाणुपुधीएसारोका । यावत् एसव पनाणुपुधीइ जेरोहा एसवने पश्चिन्नापथे कडोनसकोये, सवा यावत्ता भावथे जेरोहा । सेवभतेभेतिसिजाव दिवत्त । एता कश्चवे—तइति । इमयवत् तुक्केसु ते सवसथवे पन्थवानही इसाकहो यावत् विशरै । भतेतिभगवगीयमे समबंभगवमइवोर आवपवव यामी । धाकांतादि नाकपदार्थ प्रस्तावको कथा । इवे सौतम सुखारै माकस्मिन्निना स्वरूपप्रकाये कश्चवे—इ भगवन् । एइवा ज्ञानवंत सौतम, जमव भवत योमइवाओर्यामी प्रतैत्रादो यावत् इमकश्चै । कश्चिद्वाक्यभतेनापइठिपच्छता । केतवेमेदे हेमयवत् काकनोस्मिति कश्चो इतिप्रय उतर । गीयमा पश्चिन्नावापइठि पच्छतातइहा । जेगोतम पठिभेद इइइरावलोकनो स्मिति इइवा कथा तेकश्चै—भागासपरइएवाए १ । आथायउपर तनुवात

यस्मिन्नायाः पञ्च ॥ समपत्तिः ॥ कासविजायाः क्षमास्वष्टीः, लेइयाः पद्, वृष्टयोमिष्यावृष्ट्यादय स्तिस्रः, दर्शानानिषत्वारि घानानिषत्, सुञ्चा  
यत्स्रः गरीरादिपञ्च योगाख्य उपयोनीद्वी इव्यादिपद् प्रदेशा व्यनन्ता पर्यवा घनन्ताय ॥ अदिति ॥ अतीतादा अनागतादा सर्वाद्वा  
चेति ॥ किंपुत्रिलोयतेति ॥ अय सूत्रानिषापरिद्वेष सार्थेय पश्चिमसूत्रानिषाय दर्शयन्नाह ॥ पुष्टिन्नतेतोयतेपञ्चासवहेति ॥ एतानिष सूत्राणि  
भूय्यणानादिवावभिरासन विपित्रबाद्याप्यास्मिन्नस्तुसत्तानिषानार्थानि ईश्वरादिरुतत्वभिरासन आनादिस्वाभिपानार्थानि लोकात्तादिलो

ठीवसणगाणा समसरीरायजोगउयर्तगे वक्ष्पएसापजाय अश्चाकिपुष्टिलोयते ॥ २ ॥ पुष्टिन्नते ! लोयते प  
च्छासवृथा ? जहालीयतेण सजोयया सवृथाणा, एते एव अलोयतेणयि सजोएयथा सवे, पुष्टिन्नते ! स  
त्तमे उवासतरे पच्छा सत्तमेतणुयाए एव सत्तम उवासतरसवेहिं सम सजोएयवे, जाय सवृथाए पुष्टिन्न  
ते ! सत्तमेतणुयाए पच्छासत्तमेघणवाए, एवपि तहेव नेयव्व, जाय सवृथा, एव उवरिस्स एक्कोक्क सजो

ब्रान १ सत्रा १ यरोर १ अपन बाम १ अपसाम २ द्रव्य १ प्रदेश अनता पर्याय अनता अतोतपदा अनागतपदा सगदा एतथा आनख पूरवा खं ?  
पश्चिमा लोकाव २ अर्वा । पुष्टिन्नतेवापते । एकोण विषय वेइलीमूत्र देखावेइ—पूर्वे वे भगवन् । लोकाव । पञ्चामन्त्रा । एवे सवपदा इत्यादि स  
१ वइवी । अनापतेअसोइवासवेठाया । विम लोकापत खं मेवा लोका सगदा आनख सातमा अदकायांतरादिक तिम । एतेपवपनीयतेच  
विसत्राएवथा । ए इमज अनोइना अतयन्तो पदि मलीपरैविषारोने लोइवा मेमवा, वलीरोही पूजेइ—सेपश्चिन्नतेसत्तमेउवासतरेपच्छासत्तमेतणुयाए ।  
ते पश्चिमा वे मगवन् सातमीपविवीनी आकायांतरवे एवे सातमीपविवीनी तनत्रात अथवा पश्चिमा सातमी आकायांतर इमपूणा भगवत वइवे—इ  
हां पश्चिमा एवे वही मसकीये । एवसत्तमेउवासतर । इम सातमी आकायांतर । सवेइविमसकोएअर्वाणायसववाय । सगसे ठामे लोइवा लोकावे म  
अवा तीवमे वइवा वलीरोहीपूजेइ—पुष्टिन्नतेसत्तमेतणुयाए । पश्चिमा वेमगवन् सातमी पुष्टिने अथवा सातमी तणुयावे । पञ्चापनमपववाए ।

यो प्युत्तरवाक्ये दृश्यइति ७ तथा श्रीवाः कर्मसङ्गुहीताः सवारित्रीवाना मुदयमासकर्मव्ययतिथ्यात् येन यहव्या स्तेतग्रमतिथिता मया-पटे  
 रूपारूप इत्येय विद्याप्यापारापयता दृश्यति ॥ सेज्जानाममकेइति ७ न यथानामको यत्प्रकारनामा देववत्तादिनामेत्यर्थः अथवा ७ सेइति ७  
 न यथेति दृष्टान्तायः मामेति सम्भावनायां स इतिवाक्यास्तदुपरे ७ वस्यति ७ वस्यति ७ वस्यति ७ वस्यति ७ वस्यति ७ वस्यति ७ वस्यति ७ वस्यति ७  
 यथयइति ७ उपरिमितं पितृव्यन इतिवचनात् कर्मप्रत्ययस्य च प्रावापत्वा एकमर्थत्वाद्वा धन्यङ्गुचिमित्यर्थः वस्यति करोतीत्यर्थं अथवा ॥  
 उप्यमिपति ७ उपरि तमिति वसति ७ सेज्जाठयाइति ७ सो ऽप्याय सस्यवायुकायस्य ॥ उप्यति ॥ उप्युपरिजावय व्यवहारतोपिस्था दित्यत  
 प्राइ ॥ उपरितसे सर्वापरिस्त्ययः यथा-यायु राचारो जलस्य वृष्ट म्ब माभारासेयप्रावो प्रवति आकाशपनवासादीनामितिप्रावः प्राचा

विहा जाय जीथाकम्मसगहिया ? गीयमा ! सेज्जानामए केडपुरिसे वलियमानोवेइ २ हाउप्यिसिद्धयधइ २ ता  
 मज्जेगंठियधइ २ ता उथरिखंठिमुयइ २ ता उवरिखंदेसयामेइ २ हाउवरिखंदेस स्याउयायस्सपूरेइ २ हा उप्यि  
 सिययधइ २ तामज्जिखंठिगंठिमुयइ । सेणुण गीयमा ! सेज्जाउयाए तस्सवाउयायस्स उप्यि उथरितले चिठइ ?

कथो वावत् त्रीयकमे सपञ्चाहे योतम इमे पूज्जाबका भगवव कवेहे-उत्तर । गावमा सेज्जानामए । हेमोतम ते ववा इहाते नामइति कामखामंभ  
 ने । केडपुरिसेइतिमाहावेइ । कोई देवदत्तनामे पुबप दीवडोवायेकरो पूजेकरो पूरे । वलियमानोवेता । दीवडोवायेकरो पूरीने पखे । उप्यिखिवंभवइ २ ता  
 उपरसो तेइतासुग वधि मुखे यंखवाधे वाधीने । मज्जेगंठिबंधइ २ ता । मख गाठि दीवडीने विचे वधि वाधीने । उवरिखमठिमुयइ २ ता । पखे मुखको  
 उपरिनी गठ म्बे भाठिपाने खानोने । उवरिखंदेसवामेइ २ ता । अपरिखा देगको वायरोकाठे खाठीने पखे । उवरिखंदेसवाख्याएसपूरेइ २ ता । ख  
 परिमादेअनेबिये अइनेबिये पाचोसू मरेपाचोसू मरीने । उप्यिमितवधइ २ ता । उपरसो मुखको गाठिपधि वाधीने तिवारे पखे । मज्जिखंठिमुयइ ।  
 विषयोगाठि पाने खहे । सेणुण माबमा । ते निदे हेयोतम । मेपाठयाए । ते भपकाव । तस्सवाउयायअठप्पिउवरिमतसेविइइ । तेइने वाउकायने





वो पुनरयाप्ते दृश्यति ७ तथा श्रीयाः कर्मसङ्गहीताः ससरित्रीवामा मुदयमासकर्मयद्यवतित्यात् येन यहशा स्तप्रप्रतिष्ठिता यथा-घटे  
 प्रपादय इत्येव विद्याप्यापारापपता दृश्येति ॥ सेजानामयकेइति ॥ स यथानामको यत्प्रकारनामा देवदत्तादिनामेत्यर्थः, अथवा ॥ सेइति ॥  
 न यथेति दृष्टान्तायः नामेति सम्भावनाया, ए इतिवास्यालङ्कारे ॥ वल्यंति ॥ वल्यंति ॥ वल्यंति ॥ वल्यंति ॥ वल्यंति ॥ वल्यंति ॥ वल्यंति ॥  
 यर्थयइति ॥ उपरिमित पिटृबन्धन इतिवचनात् कर्मत्वपस्य च प्रावार्यत्वा रत्नसौर्यत्वाद्वा यत्पुष्पिमित्यर्थः यन्नाति करोतीत्यर्थे अथवा ॥  
 उप्यमियति ॥ उपरि तमिति वल्यंति ॥ सेआठयाइति ॥ सो ऽप्याय सस्यवायुबायस्य ॥ उप्यिति ॥ उप्युपरिजायस्य व्यवहारतोपिस्या दित्यत  
 आइ ॥ उपरितले सर्वापरीत्ययः यथा-यापु राचारो जसस्य दृष्ट, एव मापारापेयप्रावो प्रवति आकाशपनवातादीनाभितिप्रावः प्राया

विहा जाय जीथाकर्मसगहिया ? गीयमा । सेजानामए केइपुरिसे वल्यमानोवेइ २ हाउप्यिसिइयधइ २ ता  
 मज्जेगठिग्रधइ २ ता उवरिसंठिमुयइ २ ता उवरिसंठिसवामेइ २ हाउयारिसंठिस स्याउयायस्सपूरैइ २ हा उप्यि  
 सियग्रधइ २ तामज्जिसंठिमुयइ । सेणुण गीयमा ! सेस्याउयाए तस्सवाउयायस्स उप्यि उयरितले चिठइ ?

क्वो यावत् त्रीवर्त्म मन्त्राखे योतम इवे पूयाइत्वा भगवत कवेइ-उत्तर । गायमा सेजानामए । सेगौतम ते यथा इहाते नामरति कोमन्नामं  
 ने । वेएपुइवेविसिमाकावेइ । काई देवदत्तनामै पुबय दीवडोवायेकरो फूजेकरी पूरे । वल्यमानोवेता । दीवडोवायेकरी पूरीने पळे । उप्यिसियंक्वइ २ ता  
 उपरको तेइनासुगु वधि मुखे पक्वधि वधीने । मज्जेगठिसंठिंक्वइ २ ता । मज्ज माठि दीवडोने विचे वधि वधीने । उवरिसंठिमुयइ २ ता । पळे मुखको  
 उपरिनी गठि मूळे गठिणोले यानीने । उवरिसंठिसवामेइ २ ता । उपरिना सेगकी वायरीकाठे काठीने पळे । उवरिसंठिसवाउवाएसपूरै २ ता । उ  
 परिनासेगनेविचे पक्वनेविचे पाचीवू भरीपाचीवू मरीने । उप्यिसितवंक्वइ २ ता । उपरको मुखनी गठिवधि वधीने तिवारे पळे । मज्जिसंठिमुयइ ।  
 विवनीगठि णोने छे । सेणुण गायमा । ते न्निचे सेगौतम । सेपाठयाए । ते भपकाय । तस्सवाउयायस्सउप्यिसितलेचिठइ । तेइने वाउकायने

आकाशप्रतिष्ठितैव तथा पृथिवीप्रतिष्ठिता आकाशवाराः प्राजा इदमपि प्रायिकमेवा न्यथा आकाशपर्यतयिमागप्रतिष्ठितामपि ते सन्तीति ४  
 तथा अग्नीवाः अरीरारिपुद्गलरूपा अग्निप्रतिष्ठिता अग्निपुतेयास्थितत्वात् ५ तथा ज्जीवाः कर्मप्रतिष्ठिताः कर्मसु अनूदयावस्यऋत्तपुद्गलसमुदाय  
 रूपेषु ससारिज्जीवानामाश्रितत्वात् प्रत्येत्वाङ्गुः - ज्जीवाः कर्मन्निः प्रतिष्ठिता मारकादिजावेना वस्वापिताः ६ तथा अग्नीया अग्निवसुहृतीता मनो  
 भाषादिपुद्गलाणा अग्नीवैः सुहृतीतत्वात् अग्नीवाग्नीवसुहृतीता इत्येतयो-कोजेद ? उच्यते पूर्वस्मिन् यान्ये आचारारथे  
 यनावठञ्च उचरन्तु सुहृत्सुसङ्गाङ्गमाव इतिमेवः यत्र यत्सुसङ्गाङ्ग ततस्या चेषम प्यर्थापन्नितः स्या दया - अपूपस्य तैल मित्याधारारथेयाना

एउदही २, उदहिपइठियापुठयी ३, पुठयीपइठियातसाथावरापाणा ४, अग्नीयाज्जीवपइठिया ५, जी  
 वाकम्मपइठिया ६, अग्नीवाज्जीवसगहििया ७, जीवाकम्मसगहििया ८, सेकेणठेणजते ! एवयुच्चइ अ्युठ

यनवात रञ्जाहे आकाशपतेञ्च प्रतिष्ठितहे तेमाटे आकाशप्रतिष्ठितमो पिता नञ्चोधो आकाशकिञ्चही अपर रञ्जा नञ्चो। वातपरइठिणठइञ्चो २ । तनव  
 त यनवात अपर अग्नीदधि प्रतिष्ठित अइता रञ्जाहे २ अग्नीदधि अपर रत्नममादि अदिवोरहोहे । उदहिपइठिएपुठयो । तेमाटे उदधि प्रतिष्ठित अदिवो  
 अग्नी एरत्नममादिक सात अदिवोपावमोने कञ्च इपुणपञ्चामाटे अयथा इयवमामारा अदिवो आकाश प्रतिष्ठितहे ३। पुठयोपइठियातसाथावरापाणा ४  
 अदिवो अपरिरञ्जा अस्कावरज्जीव ए यदि मायवचने कञ्चुहे अयथा आकाशपर्यत विमाननेविये पथिरहेहे ४ । अजोवा अजोवपइठिया ५ । यरौरादि  
 पुठसरूप अजोव ते अजोवनेविये प्रतिष्ठित रञ्जाहे अजोवचितहे तेमाटे । अजोवा अजोवपइठिया ६ । अजोव संसारो कम्म पुठसरूपनेविये प्रतिष्ठितरञ्जा, अजोवा  
 अजोवम प्रतिष्ठित नारको आदिभावैरञ्जा ६ । अजोवाअजोवसगहििया ७ । मत्त भावादि पुठरूप अजोव अजोवहे पूर्वकञ्चा अजोवाअजोव पइठिया तिम अजो  
 ववावे अजोवा ७ । अजोवाअजोवसगहििया ८ । ससारोअजोव कम्मसपञ्चा उदयपाम्या अग्नीवैकसे प्रवत्तेहे अजोवनेविये तेतिष्ठा प्रतिष्ठित अजोवो कियम अटने  
 विये रुप्यादिअजोव ८ मीतम अहेहे - अजोवनेविये अजोव ८ । ते अजोव अजोवनेविये अजोव ८ । अजोव अजोवनेविये अजोव ८ । अजोव अजोवनेविये अजोव ८ ।

यदुति ॥ अन्वोन्य त्रीणाः पुद्गलाना पुद्गलाय वीथाना सम्यद्वाइत्यथः कथं वद्वाइत्याह ॥ अथमण्यपुठा ॥ पूर्वं स्वर्जानामात्रेणा न्योन्य स्पृष्टा स्त  
तां ऽन्योन्य यद्वा गाउत्तर सम्यद्वाइत्यर्थः ॥ अथमण्यमोगाठति ॥ परस्परं लोलीनायगता अन्वोन्य खेडमतिवदुता इत्यत्र रागादिरूप खेडः यदाह  
त्रेडान्यत्रगरीर स्वर्जुनामिष्यतेपयागात्र । रागद्वेषात्त्रिष्व स्वकामयथोन्नयत्येवमिति ॥ १ ॥ अतएव ॥ अथमण्यचक्रतायसि ॥ अन्वोन्य घटासमुदायो

याय वीगलाय अथमण्यथवा अथमण्यपुठा अथमण्यसिणहपक्रियथा अथमण्यचक्रता  
ए चिठंति ? हताथ्यल्यि । सेकेणठेगन्नते ! जाव चिठति , गीयमा ! सेजहानामए हरेवसिया पुखे पुखण्य

पाथनायपथमण्यवह ॥ से वंवास्वाम्यकार हेभगवन् । जीव घने कम गरीरदिपइत्त यपन् माहामाहि वीथा जीव पइसने पुइस्य जीवन् । अथमण्यपुठा ।  
माहामाहि स्ययनामाचकरी करणा, तिवार पळे । अथमण्यमामाठा अथमण्यसिनेइपडिबहा । माहोमाहि पागाठा बोलीमावे मिळा चौर भोरनी  
परे माहामाहि खेडे रामादिके वंधाचा जिन गरीर चोपद्या रेण दिव्यै तिम । अथमण्यचक्रतायचिठति । माहामाहि समुदायभावे करो रसे इतिम  
य उत्तर । हताथयि । ही भोतम मव तिमहीचळे । सेकेवकुभतेजावचिठति । भोतम कसे—तेजे कारे हेमयवन् । जीव घने पुइससमुदायभावे करो  
करीररे यावत् एतलाकगे कइवी इतिपत्र उत्तर । मायमा सेजहानामएइरेसिवापुले । सेभोतम । ते वळाहटति, मामए इतिवाक्याशकारे, जिन कोरे  
इइपांभो भरा । पुखण्यमाचेडोसइमाचे । पूरो भरां सयार खडोमकी पाचीनी सरता जसटतन उदासपामती तखी खेडनी । वीसइमाए । जळना यइ  
न पचांभो विकसताळे । समभरचक्रतायचिठति । विपमनकी घडीपरे जस समुदाय जिर्णा चिठ्ठियि पाची पसरता तेमाटे प्रमाणे दीसतो रसेळे । अरे  
बइरपरिमतिसइरइसि । पय कइता ॥ इति वधास्वाम्यकारे, ते भरा इइने अन्तर काइएक पुखय तेइनेविये । एगमण्यचक्रतायसव । एक मण्यती  
माटो माह, पवि ते केडगोळे मादे सरकडेडेद पांकी पावचने ते सहितळे । सतहिइठक्याइव्या । माटाळ्ये तिचेसहित एइवी गवेकरी तेषांची प  
वभाचे प्रवेयकरै । सेपुंयं मोवमा साचाया । तेनिये हेगोतम । तेनावा । तेहिशासवदारैइ । तिचे पायवहार चिठ्ठेकरी । आपूरमाची पुखा २ । जळे

राधयन्नाय प्रागेव सर्वपदेषु व्यञ्जितवति ॥ अस्या इतरामपोकसियंसिति ॥ अस्याप सविद्यामानस्याप सगाचमित्यर्थः अस्यापोषा निरस्ताप  
 स्तलमित्यर्थः अतएवाऽतार तरीतु मद्यस्य पाठान्तरेण अपारं पारवञ्जिनं पुष्टय प्रमाद्यमस्येति पौष्टयेय तत्प्रतिदेवा दपौष्टयेय तत  
 कम्मपारयो इत एतन्न मकार येहासासुकिक् एव वाइत्यत्र वागब्दो वृष्टान्तान्तरतासूचनाय लोकास्वित्यपिकारा देवेदमाह ॥ अत्यिबमित्यादि ॥  
 अन्यत्वाहुः - अत्रीवात्रीवपइठियाइत्यादि पदेषुतुपस्य ज्ञावनार्थं मिदमाह ॥ अस्त्रिबमित्यादि ॥ योग्यसति ॥ कल्लसरीराविपुद्गलाः ॥ अक्षमस

हताचिठइ । संतेणठेणजाव जीवा कम्मसगहिद्या , सेजहावा केडपुरिसे वल्लिमाम्मोवेइ २ ता कणीएउअथइ स्थ  
 त्याहमत्तारमपोरिसिय उदगंसिठंगहेज्जा । सेणुण गोयमा ! सेपुरिसे तस्स आउयायस्स उवारिमतले चि  
 ठइ ? हता चिठइ । एववा अठयिहा लोयठिई पयत्ता , जाव जीवा कम्मसगहिद्या । अत्यिणअते ! जी

अपर कपरसेतसे पाषी रसे रसे योमहाबौरदेवे कम्मो गौतमकहे । हताचिठइ । हां मगवन् रसे, तिवारे भगवतकहे---संतेबट्टेण जावजीवाकम्मसगहि  
 या । हे गौतम ! किम वासुदे पाषारै अउनेरसुं दीठ्ठिं तिम पाधारावेमामै पाकाय धनवातादिक पचिककवा वाबत् जीवकमे सपन्ना तासने कइव  
 षकी बोवो हटांत कहेहे-संजहावावेइपरिसे । ते पिम कोइ पुबप देवकत्तादि नामै । बल्लिमाम्मोवेइ । दीवडी वासैकरीपूरे पळे ते दीवडी । कइएव  
 थइ । अडिनेतौवधि पळे । पत्ताइ सत्तार । उठायोषी पयाच तरान्नाय पाठोतरे अयार पाररइत । मपोरिसियसिउदगसि । पुबपममापवी प  
 विक् पाबोमैविदे ते पइय । उप्पाहेज्जा । अथगारै पाबोमसिपेसे । सेबूवगायमासिपुरिसे । भगवतकहे तेनिये हेगौतम । ते पुबप । तस्सपाउयाससुउ  
 वरिमतसेचिठइ । तेइ पाषीने अपर रसे पाषी अयगाइना रसे अंवा रसे इवा भगवतेकम्मो तिवार गौतमकहे । हता चिठइ । हांमवन् तेपुबप पां  
 बी अपररसे । एववापइविहावावइइ पयत्ता । तिवारे भगवतकहे इम वा मय्य हटांतां तर सूजाराइ, इम इसेवकारे पाठोभेदे लोकास्विति कही । जा  
 वत्रीवाक्यअसनहिद्या । याबत् पाकाय पदइएवाते इत्थादि जीवकमे सपन्ना । एतथा सगे अइवो, हांअस्विति अधिक्कारोअ कहेहे-अस्वियमतेजीवा

वदुति ॥ अन्वोम्यं श्रीवाः पुद्गलागा पुद्गलाय जीवाना सम्यद्ग्राह्यर्थः कथं वदुद्ग्राह्यत्वाद् ॥ अखमणपुठा ॥ पूर्वं स्पष्टोमामात्रेणा न्योन्य स्पृष्टा स्त  
 ता न्योन्य यद्वा गाढतर मन्वद्ग्राह्यत्वाः ॥ अखमणमोगाढति ॥ परस्परं लोनीनावगता अन्वोन्य खेद्गप्रतिपद्युता इत्यत्र रागाविरूपः खेद्गः यद्ग्राह  
 नेद्गान्यलक्षरीर स्वरेणुनाभियत्येयसागात्र । रागद्वेषक्रिय स्वकामदशोनयत्येर्गमिति ॥ १ ॥ अतएव ॥ अखमणपठताएसि ॥ अन्वोन्य यदासमुदायो

वाय पौगलाय अयामखयदा अयामखपुठा अयामखसिणेहपक्रियदा अयामखयक्रुता  
 ए चिठति ? हतास्थित्यि । सेकेणठेगजते ! जाय चिठति , गोयमा ! सेजहानामए हरेदसिया पुष्णे पुसुप्य

पौवनावपमणमठ।।हे संभामानकार हेभगवन् । औव अने काम गरीरादिपुद्गल वपन माहामाहि बाभा औव पद्गलने पुद्गल औबल । पखमणपुठा ।  
 माहामाहि लयनामावचरौ परथा, तिवार पळे । पखमणमगागठा अखमणसिनेहपक्रियदा । माहोमाहि पागाठा खोहोभावे सिन्वा चौर नीरभी  
 परे माहामाहि खेरे रागादिके शधानां जिन गरीर चोपद्या रेख बिसमै तिस । पखमणवडताएचिठति । माहामाहि ससुदावभावे करो ररे इतिप  
 य उतर । हतापत्ति । हा नौतम मव तिमहीजळे । सेकेणठेगजतेजावचिठति । गौतम कहे—तेजे कारणे हेभगवन् ! औव अने पुद्गलसमुदायभावे करो  
 करोरे सायत् एतलानने कइवी इतिप्रय उतर । गायमा सेद्गनामएहरेदसियापणे । सेगौतम ! ते यदाहटति, नामए इतिवाक्याशकारे, जिन जोर्दे  
 इइपांको भरा । पुण्यभायेनामहभावे । पूरी भरा सभार खबोमही पाचोभी सरता अतटतख उक्तासपामती तळी खेइलो । वीसहमाष । जसना यद्ग  
 न पनांको बिक्रमतीळे । समभरयठताएचिठति । विपमनही वळोपरै जल समुदाय जिहां चिइदिगि पाचो पसरौ तेमाटे प्रमाचे दीसती ररेळे । असे  
 अहयरेसितमिइरदसि । पब कइतां ॥ इविये बनाक्याशकारे, ते भरा द्रइने अनतर काइएख पुण्य तेइनेविये । एयमणपावसदासव । एक महती  
 माटो नाब, पबि ते खेइलोळे नाने सर्वकडेदेइ पांकी पावचने ते सहितळे । सतबिइउपाइक्या । माटाळिद तिखेसहित एहवी नावेवरी तेपांकी प  
 वगचे प्रवेमकरे । सेजुबं गायमा साणावा । तेजिये हेनौतम । तेनावा । तेधिभासवदारेचि । तिचे प्रायवकार खिद्रेकरी । पापूरमाचो पुषा २ । असे

तावच्चरति ॥ तावत्तं बाल ॥ ब्राह्मण्येति ॥ गमनादिकाय ब्रह्मरूपेण निर्वृता या सा तथा तथा ॥  
 पाठसिध्यायति ॥ प्रद्वेषो मनेषु दुष्टनाशेन निर्वृता प्रद्वेषिणी तथा ॥ तिरिक्किरियादिति ॥ क्रियन्तइति क्रिया श्रेष्ठविशेषा ॥ पारिताययि  
 यायति ॥ पारितापनप्रयोजना पारिताययिणी साच बद्धे सति मने प्रवति प्राणातिपातक्रियाय पातितेइति ॥ उत्सव्यं ॥ उत्सविकिं

पारियावणियाए चउर्हिंकिरियाहि पुठे जेनायाए उम्भवनयाएवि यधनयाएवि मारणयाएवि तावचणसे पु  
 रिसे काडयाए जाव पाणाइवायकिरियाए पचाहि किरियाहि पुठे । सेतेणठेण जाय पंचकिरिए । पुरिसेण  
 नते ! कच्छसिधा जाव यणधिदुग्मासिधा तणाइ जसविच २ छुगणिकायसि निसिरइ तावचण नते ! से  
 पुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सियत्तिकरिए सियचउकिरिए । सेकेणठेण गोयमा ! जेन

बाएवि । जेमज्जयाय्यकत्ता इटपाय करवने पचि कत्ता । बंधवयाएवि । बवनने पचि कत्ता । मारवयाएवि । मारवने पचि कत्ता । तावचणसेपुरिसे  
 काइयाए । तेतखोकास ते पुषव कायिकी क्रिया पादिदेहं । जावपाचाइवायकिरियाएपचइकिरियाइपुठे । यावत् प्राणातिपातिकी क्रिया मृगवच  
 योत्ताने प्राणेने वातवीधे एपचक्रिया करवा, एतावता तेइने पचक्रियात्ताने । सेतेबद्धे गोयमा । ते तेवे चरे देवोत्तम । जावपंचकिरिए । सियचउ  
 क्रिरिएसिचपंचकिरिए इमज्जुं, बखीनोत्तम पूजेइ - पुरिसेबंमतेकच्छसिधा । पुठप जेमगवन् ! नदी कठ वोखा वचवत प्रदेयजेविंये । जावबचविदु  
 यविधा । यावत् नानाप्रकार वचनसमूहेनेविंये इवपएतांइं समस कइवो । तचार उत्सविय २ । चिवाप्रत छाया करी २ ने । चपयिकायनिधिरइ ।  
 पयिक्कावप्रते नाइवाइ । तावचणसेपुरिसेबइकिरिए । तेतखावावतांइं वपुन बंवाक्कासंकारि जेमगवन् । ते पुषवने खेतकीक्रियात्ताने इतिमत्र उ  
 त्तर । गोयमा सियत्तिकरिए । देवोत्तम । कदाचित् तोमक्रियात्ताने । सियचउकिरिए । कदाचित् चार क्रियात्ताने । सियचउकिरिए । क्विचारेणे पा  
 च क्रियात्ताने । सेवेचदेवमते । तेज्जामटे जेमगवन् ! इमज्जुं । गोयमा जेमधिएउत्सवययाए । देवोत्तम । जेमज्जोत्तम कत्ता इत्तं - खेतखोकास कइव

पुमिणुसिक्ताड शुन्तयस्सामियस्स यद्वाण उसुनिंसिरइ, ततोण नते ! सेपुस्सिसे कइकिरिणु ? गोयमा ! सिथ  
 त्तिकिरिणु सिथचउकिरिणु, सेकेणठिण गोयमा ! जेन्विणु निंसिरणयाणु तेहि जेन्विणु निंसि  
 रणयाणुधि विद्धसणयाणुधि नोमारणयाणु धउहि जेन्विणु निंसिरणयाणुधि विद्धसणयाणुधि मारणयाणुधि  
 तावचण सेपुस्सिसे जाय पचाहिकिरियाहि पुठे सेतेणठिण गोयमा ! सिथत्तिकिरिणु सिथचउकिरिणु सिथप  
 चाकिरिणु । पुस्सिसेण नते ! कच्छुस्सिवा जाय शुन्तयस्सामियस्स यद्वाणु श्याययकसायय उसु श्यायमिंसा चि

धरत्थमिंशयवहाए । यनेरा काहं एक भूगणा यथमन्तो भूयने मारयामन्तो । उक्कनिंसिरइ । तीरपते काठे प्रथया सेल । पताअमतेसेपरिसे । तिबरिइ  
 भमरन् । तेपइव । अइकिरिणु । सेतन्तोक्कियानो अरत्थवार अहीये इतिप्रथ । भावमा सिथत्तिकिरिणु । जेगोतम । किवारिके तीनक्कियाना अरत्थवार  
 अहीये । सिथचउकिरिणु । किवारि चारिक्कियाणा अरत्थवार । सिथपचकिरिणु । किवारि पांच कियाना करत्थवार, गोतम अइहे—सेकेणुइभते । तेका  
 माठे इममरन् । इमअणु । गावमा अमविपनिंसिरयथाएविधि । जेगोतम । जेमन्थअर्त्ता बायव्वाठेहे तहनै काथिक्कादि तीनक्कियाये फरत्था अहीये । के  
 मयिपनिंसिरयथाएवि । जेमन्थ अर्त्ता पांचकाठे परिचै सुवाच बन्तो । विवसअवाएवि । यने विवस पमाउ बोवाइवानेकाथे । योमारयथाएचउदि ।  
 पचिसारि अहीहे तेतवाकायवन्तो तेहने काथिक्कादि चारिक्कियालाये । जेमविपनिंसिरयथाएवि । जेमन्थअर्त्ता तीरपचि काठे । विवसअवाएवि । विवस  
 वास पमाउहे । मारत्थवाएवि । यने मारै परिचहे । कायवचसेपुस्सिसे । तेतवाकास से पुइय । काअपंचविक्किययाहिपुठे । यावत् काथिक्कादि पंचक्किया  
 संफरका तेहने पचक्किया लाये । सेतेचउेच गोवमा । ते तेहे पचं जेगोतम । इमअणु । सिथत्तिकिरिणु । किवारि तीनक्किया लाये । सिथचउकिरिणु ।  
 अवाचिणु चारिक्कियालाये । सिथपचकिरिणु । अउचिणु पांचक्कियालाये, बन्तोतीतम पुक्खे— । परिसेकमतेक्कअहंसिवा । पुइय जेममरन् । फयादिक्कनेवि  
 ये । काअपचअरत्थमिंशयवहाए । यावत् यनेरा कार एक भूगणा इवमन्तो सुगमाएवानेनाये । पायवक्कयाचततसुपायासेना । दीष क्कानतीर ते तीर



मनुष्यगतमेवाय भुक्त्वा तया प्राक् क्रियमाणं चतुःकारणादिक्रममिति व्यपदिशयते । यत्किञ्चु प्राक्चत् तया सन्धीयमानं व्यत्यज्ज्ञायां भाराप्यमात्रं  
 काकं श्युष्मा रोप्यमात्रप्रत्यन्त्रं सन्धितकतसन्धानं प्रयति । तया नियुक्त्यमानं मितरा वस्तुसीक्रियमाणं प्रत्यज्ज्ञाकपक्षेन निवृत्तितं दृष्टीकृतं मयः  
 साकारं कृतं प्रयति । तथा नियुक्त्यमानं भिक्षिप्यमाणं दूराद्वनिसुष्टं भवति । यदा च निसुक्त्यमानं मिसुष्टं तदा निसुक्त्यमानंसायां यन्तुद्वैरेकं कृतं  
 त्या तत्र कारनिषुष्टं प्रयति । कारकनिषमात्रं मया सन्धीयं भारितं सतं यीष्यते ॥ अस्मिन्मसारत्यादीति ॥ इत्यत्र क्रिया प्रक्रान्ता सायां नन्तं

---

ठिज्जा श्युक्त्यपरंपुरिसं मगनं श्यागमस्यपाणिणा श्युसिणा सीसतिदेज्जा सेयजसूताएचैव पश्चायामणयाए त  
 मियविधेज्जा । सेणजते । पुरिसं किं मियवेरेणयपुठि पुरिसवेरेणपुठि ? गोयमा ! जेमियमारोइ सेमियवेरे  
 णपुठि , जेपुरिसमारोइ सेपुरिसवेरेणपुठि । सेकेणठेणजते ! एववुसुइ जाव सेपुरिसवेरेण पुठि । सेणुण गो

मते पाथीने पाक्कपिने । श्वेइज्जा । चकोरई एतथे । यत्तवेरेपुरिसेमय्यथां । यन्तेरा कांरं एव पुरुय पृठाधी । पागण्य । पाथीने । सयपाण्डिशाथसिञ्जा ।  
 पापथे श्यापैकरी तरवारंजरो । सोसद्धिरेज्जा । तेज्जा मय्यकपते वेदे तिचारे । सेठसूताथेव पुष्पायामस्ययाए । तैतीर वेसयनेठेमीने पूर्वं पाक्कपीं व  
 नी ते पुरंरनाहावथा सुंरा तिचारे मिये । तामियविधेज्जा सेवन्तेपुरिसं क्रिमियवेरेषपुठे । ते सयमते वीथी ते श्याक्कासंकारे विभयवन् पुरुयभायानी वेद  
 चकारा श्यु सयनारोही इहा वेरते वैरनाहेतुं भयो यथक्करीये यत्तवा पाप ते फरकां यत्तवा । पुरिसवेरेषपुठे । पुरुयने वैर पापेकरी फरकां इतिप्रय्य सत्  
 र । यावमा जमियमारोइ । वेगोनसं जिये पुरये स्या यथयनेक्कासं तीर सायाज्जा । सेमियवेरेषपुठे । ते पुर्य सयनेवैर पाप तिचैकरी फरकां । सेपु  
 रिसं मारोइ सेपरिसवेरेषपुठे । यन्ते जेवे पुरुय पर्य मारया तेपुर्प पर्यपनेवेरेकरी फरकां तेज्जे पर्य वैरकां । सेकेणठेणमते एववुसुइ । तेज्जासाटे जेमस  
 यन् । रसक्कं सयना मारचकारने सयना पापकागो । जावसेपरिसवेरेषपुठे । यावत् पुरुयना मारचकारने पुरयना पापकागो इतिप्रय्य सत्तर । सेषु  
 योपमा ज्ञयसावेकं । ते मिये वेसात्स सन्तुपतीर करकासायां तेकायाञ्जीये । सद्विज्जसावेसिणिए । यन्तुयनेविधे तीर सयकासायां तेसायां कञ्जीये

रोम्ने शुभादिबधे यावत्सो यत्र यत्र काश्विनामे मवन्ति तावती स्थात्र दर्शयन्नाह ३ अतोवहवमिन्त्यादि ३ पञ्चमासान् यावत्प्रहारहेतुम् भरुव  
 परतसु परिक्रामान्तरापादितमिक्तत्वा परमासा इदुं स्थात्तितपातक्रिया न स्यादिति इदम् मतञ्च अत्रप्रारणपापेक्षया प्राञ्जातिपालक्रियाय  
 यमा ! कज्जमाणेकने सधेज्जमाणेसाधिणु निस्सहिज्जमाणेनिस्सहिणु निस्सिरिज्जमाणेनिस्सिठेहि यत्तस्सिसिया ।  
 हत्ता न्नाय । कज्जमाणेकने जाय निस्सठेहि यत्तस्सिसिया सेतेणठेण गोयमा ! जेमियमारुइ सेमियधरेणपु  
 ठे, जेपुरिसमारुइ सेपुरिसधरेणपुठे, अतोवहवमासाणमरुइ, काइयाणु जाय पञ्चाहि किरियाहि पुठे,

पाशाया कथावे तथा । निष्पत्तिव्यमासेनिष्पत्तिर । धनुषमधिपे जेपञ्च तेजासीने धनुषमोहसाधार करथा माथा ते वीथाकहीये । निस्सिरिज्जमा  
 धेनिस्सिठेतिरत्तत्त्वसिधा । धनुषयवकीनीसरत्तामाथो धीञ्च ते नोक्कत्ता कहीये एवधी यत्तत्त्वता कथवा शुवे, इसा मगावव गौतमनेकज्जुं तिवारे गौतम  
 इहे—एता भयत् । वीभयवत् । कज्जमाणे कज्ज । धनुषतोर करत्तामाथो तेकीथा कहीये । जायनिस्सिठेसिधत्तत्त्वसिधा । यावत् धनुषको तीरनीसरत्ता मी  
 था ते नोसरत्ता कहीये, ते नोसरत्तामी क्षुत्तागा करत्तवार धनरुइ तेमाटे क्काटजा मीसरत्तामी सुग तेहेहीकपुण्डं माया । सेतेञ्च योवमा जेमिय  
 मारेर । तेमाटे हेगौवम । इत्तत्त्वत्तवेममारु तेपुरम् । सेमिक्कवेरेणपुठे । तेमूयने वरेवरी पापेक्कये करत्ता । जेपुरिसमारुइ । धने जेपुण्डं यत्तवत तेञ्च  
 यणु धनवर मारा । सेपरिसवरेणपुठे । तेवने पुण्डं पापसाया तेमाटे पुण्डंवेरुक्की करत्ता । यतोक्कत्तमासाणमरुइकारयाए जाणपचविच्चिरि  
 यधिणु । इत्तत्त्वमाधि जाणुममारु तो तेवने वाणु पचक्रियासामे इत्तत्त्वताहे मूयने प्रहार हेतुक्क मरुक्कये, तिवारपण्डे परिसामाणवेरुक्की मरुक्क इसा  
 करी इत्तत्त्वयो उपरत प्राञ्जातिपालकी क्षुत्ताते धनुर्हेरुण्डंने नही एपरमाय कीववा, एपचि अत्रप्रारणी धपेकामे प्राञ्जातिपालकीक्षुत्ता अपहेय  
 मात्र देखाडयाने अथा, यत्तत्त्व विवारेही प्रहार इत्तत्त्व मरुक्कये तिवारही प्राञ्जातिपालकी क्षुत्ता काते वाणु क्काविकी यादिदेहे पचक्रिया म् पु  
 रत्ता कहीये । वादिक्क इत्तत्त्वताणमरुइकारयाए जाणपत्तिव्याधिव्याए चउत्तिक्कियाविणुइ । आ वादिर इत्तत्त्वतामे मरुता तेणुक्कये क्काविकी यादि

परशुमाधापरशुनाथ मुख, मन्यथा यदाकदा प्यधिकराप्रहारहेतुंश्च मरुच्च प्रवति तदैव प्रायतिपातक्रियति ॥ सतीएति ॥ अन्त्या प्ररुच्चविशेषे  
 च ॥ समनिधसेज्जति ॥ इत्यात् ॥ सपाक्षिणति ॥ स्वकहसीन ॥ सेति ॥ तस्य ॥ काइयाएति ॥ कायिक्या मारीरपत्न्यरूपया कायिकरक्षिक्या म  
 त्रियुगुल्यापाररूपया प्राद्विष्या मनोदुःमाक्षिणान्न पारिभाषनिक्या परितापनरूपया प्राञ्जातिपातक्रियया भारुच्चरूपया वासवेतिइत्यादि, ॥

धाहि तरुहमासाण मरुद्ध, काइयाए जाव पारियावणियाए चडाहिकेरियाहि पुठे । पुरिसेण जते । पुरिस  
 सत्तीए समनिधसेज्जा सयपाणिणाया से श्यसिणा सीसालिदेज्जा । तवणजते । सेपुरिसे कक्षिकेरिए ? गोय  
 मा । जावचण सेपुरिसे तपुरिस ससीए समनिधसेइ, सयपाणिणाया सेश्यसिणा सीसालिदेइ । तावचण  
 से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइयाए पथाहिकेरियाहि पुठे । श्यासस्यवहणय श्यणवकस्ववसीएण पुरिस

इदं पाठ्यं ० गतितापनकी क्रिया तर्हि चारुक्रियासीं फरुं वससेकीभाज एमावपदे मरैता तेमूयवाचकी मूयानही तेमाट प्राञ्जातिपातकी क्रिया  
 सादेनही वसीं गीतमपूजेहे—पुरिसेवमतेपुरिस सतीं वसमभिधसेज्जा । पुरव हेमयवत् । पुरवपते यति भासी तिये इत्थे चववा यति प्ररुच्चविशेषेकरी इ  
 त् । सवपाक्षिणाया । यववा पाताने जावत् । सेयसिवासीसहिरैव्या । तेपुरव तरवारैकरी भाषो हेइ । तयोवमतेपुरिसेकरुक्रिये । तिवारे चंवाका  
 सकारे हेमयवत् । तेपुरवने केतसी किवाकासी इतिप्रथम एतर । मायमा जाववत्सेपुरिसे । वीं वस । केतसांकास तेपुरव । तपुरिसं सतीए चमिमसेइ ।  
 तेपुरवपते यति प्ररुच्च विशेषकरी इत्थे । सवपाक्षिणा । यववा पाताने जावत् । सेयसिवासीसहिरुइ । तेपुरव तरवारसववाते । तावचणसेपुरिसे । ते  
 नवाकास ते पुरव । काइयाए । काइिकीक्रिया । चरियारुचियाए । यदिकरुचकीक्रिया । जावपाचारवासक्रिययाए । यावत् प्राञ्जातिपातकी क्रि  
 या । पथक्किरियाविपुडे । पथक्क्रिया संघाते फरुवाचकीये तेवने पथक्क्रियासांगे । पाठयवइएय पथक्कंजनीएचंपुरिसवेरुचपुडे । यासय रुइकी  
 पथक्के केवपथक् एतसे तन्नाखइया केकीव तथा के पुपुरयो वधकोषेहे तेवक्की भाषी के पापटासिवातेदिये निरपेवठति थापवा पराया पावनी

मां रक्षन्नाकचनान्प्रावेना ननुभ्यामना अत एवा विद्यातानां विप्रिष्ठधोपाधिपयीकृतानां स्तनदेव इत्याहत्याह ॥ अर्धोक्ताहत्याहति ॥ अद्याकृताना विधि  
 पतो गुरुनिरनाक्याताना ॥ अर्धोच्छिष्टाहति ॥ विपद्यादव्ययच्छदितानां ॥ अग्निज्वालाहति ॥ महतीयन्मात् सुखावधोपाय सधुपनिमित्त मनुष्य  
 परसुखाने रनुदूतामा अतएवा स्मानिरनुपचारिताना मन्त्रवधारितानां ॥ एयमर्धेति ॥ एवमकारोर्धो ऽथवा ; इयमर्धो ॥ सोसर्द्धिएति ॥ नअर्द्धि  
 त ॥ सोपहितिएति ॥ सो नैव ॥ परित्यति ॥ प्रीति कथते तद्योगा त्यतिएति ॥ प्रीतिः प्रीतियिपयीकृतो ऽथवा न प्रतीतो न प्रत्ययितोवा हे  
 सुतिः ॥ नीराएरति ॥ न चिक्वीयतः ॥ एयमपसज्जपेपुस्रदयएति ॥ अथ यथा स्तद्वसु मूय धव्य एवसेव तद्वृत्तिवतिनाथः ॥ धाउज्जामावृत्ति ॥

णोसर्द्धिए णोपत्तिहए णीरोहए, इयाणिनते ! एणसिणपयाण जाणणयाए सुवणयाए वोहियाए सुत्तिगामेण  
 विठ्ठाण रसुयाण सुयाण विष्ठायाण वीगणाण वाच्छिष्ठाण णिज्जाहाण उयधारियाण एयमठ सद्धहामि पाहि  
 यामि रोणमि एयमेय सेजहेय तुझे धयह । तएण तंथेरा जगवतो काळासवेसियपुत्त सुणगार एवययासी ,  
 सद्धहाहि सुज्जा , पाहियाहि सुज्जा , रोएहि सुज्जा , सेजहेय सुन्हेययामो । तएणसेकाळासवेसियपुत्ते

रद्यादि वेदुयेवरा पूर्व साचात् पाते यवधो कथानहो । यथायाव प्रसुयाव धविशयावाव यज्जानहाव । निश्चयेन समीपे सुखानहो इयम याकथन  
 यमाहैकरो पतसामाटीव विप्रिट वाधरहिते विप्रोपधो गुरे कथानहो । यज्जानिष्ठायाव धविष्ठाहाव । माटान्यवधो सुखाव बोधमधो गुरे कथानहो । य  
 कथधारियाव । एतथा भयोव यजे पूर्व एयय यवधारोतहो । एयमगुहोसर्द्धिए धोपत्तियए । इत्थे प्रकारे अथ यधवा एयव सद्धहामहो प्रीति विपय न  
 दोषा । आरोए रदाश्चिते एयसिधयएवाव यावथाए । कथानहो ॥ विदे वेमयवन् एव परनाथव काळा ज्ञानेकरी । सद्धयाए बोहियाए यभि  
 समेव दिहाव रसथाव सुथाव दिवायाव गारमाव वाच्छिष्टाव । सुखा यवसे करी वाधियायो सम्यक्पणे विद्यारनाथ यथा यधधो सद्धा सुखा धर्ध  
 एयम याकथन यधया विप्रये काळा विप्रयधो गुरेकथाना विपयाहि सदेव हेया । चिच्छटाव उवधारियाव एयमगुहएवामि पत्तियामि रोएमि । सोटा

जन्मदात्रताम् पाहनापन्निस्य हि जस्यारि मशात्रतानि ना परिणहीता क्रीमुन्मत इति मेधुमस्य परिपहं सर्वावादिदि ॥ सपत्तिक्रमवति ॥ पा  
 यनापयर्मादि अयतिक्रमव्य कारवएव प्रतिक्रमकवरका दम्याया स्वकरका मशावीरखिनस्य नु स प्रतिक्रमकाः कारव विना प्यवयप प्रतिक्रमक  
 अणगारे धैरेजगवतो वदह नमसह व० सा णमसहत्ता एववयासी, इच्छामिण जते ! तुझे अतिरु चाउजामात  
 धम्मातं पचमहसुहयं सपत्तिक्रमण धम्म उवसपाजिशा णयिहरितरु अहासुह देवाणुणिया मापाक्रियव करेह,  
 तरुणसे काठासवोसिरुपुसे अणगारे धैरेजगवते वदह नमसह व० ता नमसहत्ता चाउजामातं धम्मातं पचम  
 हसुहय सपत्तिक्रमण धम्म उवसपाजिशाण विहरह, तरुणसे काठासवोसियपुसे अणगारे दह्मणिवासाणि सा

पदवी सयाव वाववया एवय ववधारा एवव वरवहं प्रीति विपय करुं रावेह । एवमेते सेववेस रुमेवह तरुणतेवेतामयवती । अवाविम एवत  
 तव कदाहो तेवव निमज्जे इतिभाव निवारि ते क्वरि भगवत । कासायवेदिययुत्तपवगार । कासासवेसित पुव साधुपते । एववयासी सहवहिपवकी  
 पतिवा । वेपका रोखिपका । एम कवता मयतं । सहवहि । यदावत वापी वेपाय प्रतिविपय क्वरि वेपाय वधिक्वरि वेपाय । सेववेयपमेवदासी ।  
 एवय पसे क्वहं निम । तएवसेवासासवेसिययुत्तपवमारि । निवारि तेकासासवेसितपुव अयगारसाधु । वेरे भमवतेवदर वमसर २ ता । क्वरि भमव  
 तपमे वदि भमवसारवरे वादीने भमववार करीने । एवववासी । एम कवता जया । एवमिणमते रुमयतिय वाववकाभायां ववायां पचमहसुहयं सुप  
 डिहमवववववववववववव विवरियाए । वाह्वु वेभगवन् । तुम्हारे समीपे वारि मजावत वकीवेमाट्टे पावमनाव कासीने वार मजावपहं, मेधुमनो प  
 रिपवनेविपे यतर्मावके तेववी पवमजावतकप यीपायनाव कासीना साधुनेकारव अयना पडिहमयो क्व्यां यने त्रीमशावीरकासीना साधुनेकारव  
 वता पदि अवरये पडिहमका करया ते यादीने विहारकक । अथासहदेवाक्यिया । विम सुख अयवे निमक्वरी वेरेवगुपिय । मापडिहवतएवसेका  
 नासवेसिययुत्तपवमारि । प्रतिवध व्यावत मक्वरे निवारि तेकासासवेसितपुव साधु । वेरेभगवते वदर वमसर २ ता । क्वरि भमवतपते वादै भम

रथादिति ॥ देवाङ्घ्रिपति ॥ प्रियामस्रव ॥ मापकिमपति ॥ माध्यापान इरुवे तियस्य ॥ भुक्तानोति ॥ भुक्तानो दीक्षितस्यै ॥ फलगासज्जति ॥  
 प्रतलापतिषकमवत्काष्टरुपा ॥ फलसज्जति ॥ अयस्काकाष्टमयम कष्टस्यप्यावा ॥ अमनाका वसति ॥ सद्भावस्यैति ॥ सद्भाव सान्भो एपसक्तिप्रा  
 साना ॥ परिपूष्णानोवा सभ्यापसक्तिः ॥ उद्यावपति ॥ उद्याववा अणुपूष्णप्रतिपूलाः ॥ असंजसावा ॥ गामकटयति ॥ घामस्येन्द्रियसमूरस्य कट  
 का रय कटका वापकाः ॥ अश्वो घामकटका कथनस्त्याह ॥ वादीसंपरीसहोवसगति ॥ परीपहाः ॥ सुपायय सप्यो पसर्गा ॥ अयज्जना इमंअस्य

मयापरिपाना पाउणइ पाउणइहा जस्सठाए कीरइ नगानावे भुक्तानावे अज्ञाणाय अदंतधुवणाय अच्कत्तय  
 अणोवाहणय नूमिसंजा फलहसेजा कठसेजा केसलोत्त वनचेरवासो परवरप्यवेसो लडावलरुही उञ्जायया  
 गामकटया वावीसपरीसहोवसगगा अहिथा सिज्जइ , तमठ अाराहेइ अाराहेइहा चरमेहि उस्सासनीसा  
 सेहि सिद्धे सुद्धे सुक्खे परिनिमुए सद्धदुक्कप्यहीणे ॥ जतेहि जगव गोयमे समणजगवमहावीर वदइ नमसइ  
 व०त्ता णमसइहा एववयासी , सेणुण जते ! सेठिस्सयतणुपस्स किवणस्सय स्वहियस्सय समाधेय अुपसुस्काण

स्काएकरे वादीने नमस्कार करीने । वाधज्जामाथाध्यापा पयमहज्जइव । वा मजावतकप धमो पयमहावतकप धमं । सपडिदमज्जधम । पडिदम  
 वाधइत धम । अयसपडिदमाधिविइर । वादीने दिवरे । तएवसेसासासवेधियपुत्त धज्जति । तिपारे तेकासासवेसितपुत्र साधु । अइविवासाधि ।  
 यथा वरस । घामस्यपरियमपरावहर र जा । साधुतो दीवानो यथाव पावै पाथीने । असाहाएकीर । वेइने पयं करे । पयभावे । यस्सइव पथी  
 भुवनोपवसावव । दीवापथी गरीर प्रयाज्जनाइ । पयज्जव यथावापयय भूमिसंजा । इव नराअवा उपानव रइत यमे सधुवायो डिरे भूमि म  
 रथा । अइमसेजा । अइसेजा केसलोत्तमचेरवासा । अजय पाटीवे सुदया काटसेज्जवे सुवा कोयमो सोचइरिवा नइधवेयं यसावा पाठयो । परवरपय  
 वा अहावहो अवाव गामकटया । पाहारते पयं परवर प्रयेयकीधे कामे यधवा मसामे यज्जना परिपूष्णमसामे यज्जव प्रतिपूष्ण यधवा ययमवस इहीव

भा स्वीयव्यापसगा कपसा ; इतिवितिः परीयवा स्थाया उपसगा दिव्याद्य कानास्य वैशिकगुण प्रत्याख्यानक्रियया सिद्धवति सद्विषयपनुसा  
 प्रत्याख्यानक्रिया निरूपणमूर्ध ॥ एतद्व्यापि ॥ तत्र ॥ एतेति ॥ हेनदन्ववति एव मामभ्येतिक्षेप शयवा एतन्त इतिकस्या गुक रितिकवत्त्यर्थः ॥  
 सठिस्वसि ॥ श्रीदवताप्यासितशोवकपद्विद्विपितशिशोयेधनोपतपीरजमनायकस्य ॥ तनुपस्वसि ॥ दरिद्रस्य ॥ क्रिययस्वसि ॥ रदुस्य ॥ यल्लिपस्व

किरियाकज्जह ? हता गोयमा ! सेठियस्स जाव झुपञ्चुरकाणकिरिया कज्जह, सेकेणठेण ! तते ? गोयमा !  
 झुपिरइ पडुस, सेतेणठेण ? गोयमा ! एव बुद्धेइ, सेठिस्सय तणु जाव कज्जह । झुहाकम्मि ण नुजमा  
 णे समणे निग्गये कि यथइ किपकरेइ किचिणाह किउपाचिणाह ? गोयमा ! झुहाकम्मि णनुजमाणे झुाउ  
 यथज्जाउं सत्तकम्मपगानीउं सिद्धित्तयथणयदाउं धाणिययथणयदाउं पकरेइ, जाव झुणुपरियहइ । केसेण

मभूदनेनाटा ीपरे बापक विवा तेकवई—बाबोसपरीसहाइसरगायधियासिक्कर । बाबोसपरीसह सुभादिज तेवीज धम अगवो परीसहापसुन्य  
 यववा बाबोस परीसह तवा उपसम देवादिक्कना वीधा ते उपपना बळा समेसई । तमडुपाटाहेर २ ना । ते पाकाने पबे धाराधै धाराधीने । अदि  
 सेडिक्कवाव बोसासेडि सिंहे बुवे सुजे परिदिपुय । देवसे उवास गोसासैकरोने सिठवरेने तल्लना जाववरेने कम्मो रद्धितयरेने यीतवीभाववरेने ।  
 । सप्यडुकापयोवे भलेल्लिममवमवसे । सब दु'सुयो रद्धितवया भाय पहतादल्लव हेमगवण इसा धामगव यथवा भदत इसा यूपने कज्जापकारो व  
 वनकरो भववत योतम । समज्जभयमवमववागीरं । वमय भववत योमववागीरसासी मते । एतद वमसर २ ना एववयासी । वादे नमककारकरै वादीने न  
 नमककार करीने इम कववती इया । सव्वज्जभतेसेडिपसववतणुयस्य किरवस्यव स्रुतियस्य । ते नित्थे हेमगवण । वीदेवीनीसुत्तनना पाटा येइने न  
 एते तेयेठ तेइने तवा रट्टिने कि रक्कन राकाने । समानेव यपयाववाक्किरियाक्कज्जह । सरोची नित्थे यमज्जाक्कनकिवा भा यमाव यववा य  
 स।प्यातयो कपना कम्मज ते कपदियाकरै । जता गोयमा सडिपस्य । धीपीतम । येडिने । जाव यपयस्यवाक्किरियाक्कज्जह । यावण यपव्याख्यान कि

रक्षादिति ॥ देवाङ्गुलिपयति ॥ प्रियामर्षवत् ॥ माधकिषपति ॥ माध्यापत कुर्वे तिस्र्य ॥ मुद्रनाथो दीक्षितस्वर्ण कलगास्वजति ॥  
 प्रमसापतिवक्रभयान्काष्टरूपा ॥ कठसज्जति ॥ असुस्फुलकाष्टोपपन्न कष्टस्यथावा ॥ अमनोका वसति ॥ सद्गुणसद्गुणोति ॥ सत्त्वान्ध क्षामो ऽपसत्त्वियाया  
 क्षामो ऽपरिपूकसानोवा सत्त्वान्धस्त्रियः ॥ कृष्णवयसि ॥ वध्याववा अगुस्त्रुप्रतिवृत्ता ॥ असंभवावा ॥ यामकटयति ॥ यामस्त्रिप्रयसभूदस्य कट  
 का इव कटका यापकाः शाल्वो यामकटका कल्पतत्याह ॥ वायीसपरीशुदोषसन्निधि ॥ परीपद्वा सुपादय स्यदो पसर्गा उपसज्जना दुर्मन्त्रसु

मयापरिपाना पाउण्ड्र पाउण्ड्रसा जस्सठाणु कीरुइ नभात्रावे मुद्रनाथे अज्ञाणय अदत्तधुयणय अच्छत्तय  
 अणोपाइणप न्नुमिसेज्जा फलहसेज्जा कठसेज्जा केसलोउ यन्नचेरवासो परवरप्यवेसो छट्टावल्लही उञ्जायया  
 गामकटया वायीसपरीसहोवसणा अहिया सिज्जइ, तमठ अराराहेइ अराराहेइसा वरमेहि उस्सासनीसा  
 सेहि सिद्धे सुद्धे मुक्के परिनिशुणु सधुदुस्सकप्यहीणे ॥ नतेहि नगव गोयमे समणन्नगवमहाधीर वदइ नमसइ  
 यंसा पमसइसा पुववयासी, सेणुण नते! सेठस्सपतणुयस्स किवणस्सय स्वासियस्सय समानेव अणुपञ्चस्काण

एताकरे सोओन यमस्यार करीने। वाठज्जामावाववाया पन्नमवज्जइय। वार मज्जावतकप यमसो पन्नमज्जावतकप यमो। सपदिहमवज्जइय। पदिहम  
 वावहित यम। उरसपज्जि तावदिहइर। यारोने विवरे। तएववेज्जासववेसियपुत्ते यवयारे। विवारे तेज्जासासवेसितपुत्त साधु। यइविवासासि।  
 यथं वरव। सापकपरियाणावावइर २ ता। साधुतो दीयानो यथाय पाहै पावीने। जज्जाएवोर। जेवने यवे करै। जस्यमावे। यइरहित यथी  
 मुदनाथपरवावय। दोयायथो यतीर प्रवज्जकान्धी। यज्जकान्ध यथावावइय भूमिसेज्जा। ज्व नराएवो उपानव र्विहत यमे उणुपाका पिरे भूमि न  
 रता। यवयसेज्जा। कट्टुसेज्जा जेठकाउरमभेरेयासा। यवता पाटीये सरया काटसेज्जावे सुवो जेगानो सोववतिरो यवयवे यसवो पाववो। परवरपव  
 सा एवराउठी उवाव २। कट्टया। पावाने यवे परवर प्रमेयजोवे सामे यवया नसासै यवया परिपूव नसासै यनपूव प्रतिपूव यवया यवयवस इदीव





ति ॥ राक्षः ॥ अपवृत्तव्यक्तिरिति ॥ प्रत्यास्थानक्रियाया अनायो । प्रत्यास्थानजन्यो वा कर्मवन्ध ॥ अथिरइति ॥ इच्छाया अतिवृत्तिः साहि स  
 र्वापु समवेति, अपत्यास्थानक्रियाप्रसाधा दिदमाह ॥ आशाकर्ममित्यादि ॥ आशाय शापुप्रविधानेन यत्सुखेन सन्नेतन क्रियते अन्नेतनया पश्य  
 ते शीघरेण गृहादिकं व्युत्पन्नेवा वक्ष्यादिकं त दायाकर्म ॥ क्रियवइति ॥ प्रकृतिवन्धमाभित्य स्पृष्टावस्थापेक्षया वा ॥ क्रियकरइति ॥ स्थितिव

ठेण जाय आशाकर्मणे नुजमाणे जाय व्युत्पत्तिरियइह ? गोयमा ! आशाकर्म पानुजमाणे आशापु धम्म  
 अइकमइ आशापु धम्म अइकममाणे पुढाविकाय पावकस्वइ , जाय तसकाय पावकस्वइ , जेसिपियण  
 जीवाण सरीराइ आहारमाहारइ तेथिजीवे नावकस्वइ सेतेणठेण गोयमा ! एव दुस्सइ आशाकर्म पानुज

सा कर गानम कहैदे—येववइइइभते । त अ पदे वममवन् । इमकअइ इतिपत्र, उत्तर । मायमा यविरइ पशुव । जोगीतम ! इच्छामी निवृत्तिते सर्वनेक  
 ते यविरति भायो । सेतेवइइ यावमा एव पुइइ । ते तेरे पदे जेगीतम ! इमकअ । सेइइवस्य तइइयय जगवकअइ आशाकर्मोपभुजमासे । येइनेद  
 रिदीने यावपु पयवलास्थान क्रियाकरे अपमलास्थानक्रिया प्रस्तावधी एकहैदे—सचित्त फेडीने यचित्तकरेनेदेइ ते जीमतायको । समवेत्तिमाधि कइव  
 र । साधु भाशाभ्यतर गंकरइति प्रकृतिवध यायदीने वृत्तये । क्रियकरेइ । क्रियतिवधनी अपेचासे वृत्तरे । क्रियिथाइ क्रियवचित्थाइ । अनुभागावधनी  
 पदेचये तवा निवत्त सुइ जेपदीवपु परमावधनी पदेचयेइ इतिपत्र उत्तर । गोयमा आशाकर्मोपभुजमासे । जोगीतम ! आशा कर्मीपाइतर जीमतायको  
 पावकवलाया । पावकया कर्मवर्त्तने । सलकअपयगोधासिठियवधवत्तवायो । सान कर्मनी प्रकृति सिधिव वधसे वीघाशुया । अथियवधवत्तवायोपक  
 रेइ । इउवदन धीये इइइवा कर्मने सुधा तावैवीधे जिन रिगमनी योठ वीधीये । आवपशुपरियइइ । यावपु ससारनेविधे यमतीवार भनै । सेकेवइइ च जा  
 वधावाकअसे भुजमासे जावपशुपरियइइ । ते से पदे जेभयवन् इमकअु नावपु आशाकर्मो आहार जीमतायको साधु यावपु अतुमत्तिव ससारनेविधे  
 पमतीवारभनै इतिपत्र, उत्तर । गोयमा आशाकर्मोपभुजमासेपाताएवसेपावकमइ । जोगीतम । आशाकर्मो आहार जीमतायकोसाधु आशाकर्मोपकरी चारि



न्ययव्या पाद्मव्याप्येवपात्रा ॥ किञ्चिद्वाहति ॥ अनुजागम्यापव्या निचलावस्थापेवपात्रा ॥ किञ्चिद्विचिद्वाहति ॥ प्रदेयवत्यापेवपात्रा निचलावन्ता  
 पव्यापयति ॥ आयापयति ॥ आत्मना पम्भवारिचपम्भ श्रुतवम्भेवा ॥ पुढविकायमावकवहति ॥ मा येकते मा पुकम्भत इत्ययः आयाकम्भं विपय  
 य मासुकेपयीपमिति, मासुकेपयीपसुत्र अगन्तरसुत्रे ससारव्यतिव्रजनसुत्रे तत्र कम्भंको स्थिरतया प्रसोदने सति जयती त्यस्थिरसुत्रे तत्र ॥ अ  
 पिरति ॥ अस्यासु त्रय सोषादि प्रसोदति परिचर्तते, अस्यास्त्रिजलाया भस्तिर कम्भं तस्य वीचप्रदेयेभ्यः प्रतिवमयवसनेना स्थिरत्वात् प्रसोद  
 मइ, आयापु वम्भ श्रुण्डकमभाणे पुढविकाय श्रुयकवइ, जाव तसकाय श्रुयकवइ, जोसिपियणजी  
 वाण सरीराइ आहारइ तेविजीवे श्रुयकवइ सेतेणठेणजाववीडंवयइ । सेणुण जत ! श्रुथिरे पलोहइ नो  
 थिरेपलोहइ श्रुथिरेजजइ नोथिरेजजइ सासणु धालणु धालियस श्रुसासय सासणु पणिणु पणियत्त श्रुसा  
 सय ? इता गोयमा ! श्रुथिरेपलोहइ जाव पणियत्त श्रुसासय सेव जते जतेहि जाव विहरइ ॥ पढुम  
 तरे । भावमा आसुरसच्चिच्चमूत्रभावे । दिगतम । आसुरवयोध पाहाराकरता जोगतावका साणु । समयेच्चिच्चये । यमज नियम । आयापयव्यनाइइम  
 र । आयापयेकरे पम्भवारिच श्रुतवम वडवेनेही । आयापयव्यपयवडवेनेही । आयापये श्रुतवारिचकपयम यमुज्जवन करतोवको,  
 इविधीकायनी वयापासै वोवनीरयाकरै । आगतवयापयवडवेनेही । आयापये श्रुतवारिचकपयम यमुज्जवन करतोवको,  
 शारेर तेविजीवेपवडवेनेही । आयापयव्यपयवडवेनेही । आयापये श्रुतवारिचकपयम यमुज्जवन करतोवको,  
 इववति । ते तेव यमे देमातम । इमज्जपु भावणु ससार पाटयामे मोयव्याव इवव । सेवूभतेथिथिरेपलोहइ वोकिरेपलोहइ पथिरेभज्जइ । पाहै सं  
 पार सपनकमा ते कम्मने थिथिरे पवैवाय तेकवैवै—ते निवे देमयवणु । थिथिरेइव सोषादि प्रपत्ते पवटे च्छावासुधायाय तत्रा अथाज्ज चित्तानेविपे  
 थिथिरे कम्मवीच प्रदेयको समवे २ एवे पाहारेनो गिथादि एवेमको अथारमथितानेविपे कम्मएवव जोवना उपयाप एवेमको थिथिरे थिथिरेभाज्जव

नरे । भावमा आसुरसच्चिच्चमूत्रभावे । दिगतम । आसुरवयोध पाहाराकरता जोगतावका साणु । समयेच्चिच्चये । यमज नियम । आयापयव्यनाइइम  
 र । आयापयेकरे पम्भवारिच श्रुतवम वडवेनेही । आयापयव्यपयवडवेनेही । आयापये श्रुतवारिचकपयम यमुज्जवन करतोवको,  
 इविधीकायनी वयापासै वोवनीरयाकरै । आगतवयापयवडवेनेही । आयापये श्रुतवारिचकपयम यमुज्जवन करतोवको,  
 शारेर तेविजीवेपवडवेनेही । आयापयव्यपयवडवेनेही । आयापये श्रुतवारिचकपयम यमुज्जवन करतोवको,  
 इववति । ते तेव यमे देमातम । इमज्जपु भावणु ससार पाटयामे मोयव्याव इवव । सेवूभतेथिथिरेपलोहइ वोकिरेपलोहइ पथिरेभज्जइ । पाहै सं  
 पार सपनकमा ते कम्मने थिथिरे पवैवाय तेकवैवै—ते निवे देमयवणु । थिथिरेइव सोषादि प्रपत्ते पवटे च्छावासुधायाय तत्रा अथाज्ज चित्तानेविपे  
 थिथिरे कम्मवीच प्रदेयको समवे २ एवे पाहारेनो गिथादि एवेमको अथारमथितानेविपे कम्मएवव जोवना उपयाप एवेमको थिथिरे थिथिरेभाज्जव

ति १ ध्यात्परान्तरात्कारिपरिष्कारैः परिवर्तते स्थिर विलासिप्रसन्नोदति कृपात्मचिन्तापात्रु स्थिरोन्मीलः कर्मसंशयेति तस्य धवस्थिततया क्वासी  
 प्रसादति, उपपापसकलस्यद्रावा अपरिद्वर्तते तथा कश्चिन्त मङ्गुरस्वभाव यथावि मन्वते विदत्सपति कृपात्मचिन्ताया मस्थिर कर्म तद्गन्तते व्यपति  
 तथा स्थिर ममगुर मय शासात्कारि म दन्वत कृपात्मचिन्ताया स्थिरोन्मीलः सुख न दन्वते क्षाद्यत्सत्त्वाविति वीथप्रस्तावा दिदमाह म सास्यदास्य  
 ति ॥ पालना ध्यात्परतः किमु निययता इत्यतो वीथ सुख आद्यतो द्रव्यात्वात् ॥ वासियसति ॥ इहे कृत्यस्यस्य स्थापिकत्वा द्वास्तस्य ध्यात्परतः  
 किमु निययत सत्यस्यतस्य तथा क्षाद्यत पर्यायत्वाविति एव पकितसूत्रमपि नयत् पकितो व्यवहारश्च क्षाद्यतो वीथः निययतसु सुमत ॥  
 इति प्रथमशतसधमः ॥ ६ ॥ धमन्तरीदेण्डे गस्थिर कर्मसुख क्मादिदुःख पुत्रीपिका विप्रतिपद्यते, धत स्तद्विप्रतिपतिनिरासप्रति

सपु नयमो उद्देशो समस्तो ॥ १ ॥ धृष्टाउत्थियाण जते । एव माइस्काति जाय परवति ,  
 एव सलु चलमाणे धृचलिपु जाय निज्कारिज्जमाणे धृनिज्जिसे , दीपरमाणुपोग्गला एणयत् न साहणति ,  
 कन्हा दीपरमाणुपोग्गलाण णत्थि सिणेहिकाए तन्हा दीपरमाणुपोग्गला एणयत् न साहणति , तिथिपर

भाव द्वादिनेभावे, पञ्चात्मचिन्तामविधे कश्चिद्व्यक्तभावात्, यमजन स्वभाव साइमर्क प्रासादादिक तेनभावे, पञ्चात्मचिन्तामविधे वीथमाधैतदी शास्त्र  
 यथापो । सास्यदास्य कश्चिद्व्यक्तपसायथं सास्यपद्विप पकितयत्ससायव । ध्यात्परतदी पासक शास्त्रता तथा निययती शास्त्रतावीव द्रव्यवी वासकभावा  
 यथासाग निययती सस्यतभावा यथास्त्रतो ध्यात्परतदी पकितमास्त्रता जाय शास्त्रता निवयती संयतोवोव शास्त्रता प्रव्यती पकितभावा यथास्त्रतो नि  
 ययती ययतभावा यथास्त्रता इतिप्रथ जलत् । इता गायमा कश्चिद्व्यक्तपसायथं पकितयत् ससायथं । इतीतम । कश्चिद्व्यक्तपसायथं पकितयत् प्रशास्त्र  
 त द्वात्सकलस्य । येवमेते इ ति क्वात्किद्वत् । तद्वति इतिभावात् । तुक्केण तेसर्ष सज्जये पञ्चायतदी शास्त्रत् कश्चिद्व्यक्तपसायथं पकितयत् प्रशास्त्र  
 त द्वात्सकलस्य । एवस्थित गतज्जना भवमो उद्देशो द्वात्सको विधायो १ ८ १ यत्सकलस्यपञ्चायतपञ्चायतमाइस्काति । नयमे उद्देशे य

पादिप्रमविबधया भूतादिशास्त्रपन्थवाप्यता तस्य ज्ञानसंदेन व्याख्येया, यदा सूक्ष्मासादिरभ्यं युगप वसीं धियजते सदा प्राज्ञो पूतो जीव स  
 लो विद्या वेदयिताइति एत सप्रति वाच्य स्या वयथा नियमने वाच्यसंदेद मतो म युगपत्यस्यव्याख्याकार्यति ॥ अन्हावीवेदत्यादि ॥ यस्मा ज्ञी  
 व वात्सा सी जीवति प्राज्ञान् धारयति तथा जीवत्य भुययोगसंज्ञा सायुक्त्व कर्म उपवीवति यानुजयति सस्मा ज्ञीवइति वस्तव्य स्यादिति ॥  
 अन्हासभुजासुतदिक्रमाइति य सख धारयत्त ज्ञानोवा समर्थः सुन्दरा र सुवेष्टासु यथावा सख सखटुः शुभाशुभैः कर्मणि रिति यानकरो

या , जम्हा जीवे जीयइ जीयसै स्याउयव कम उवजीयइ तम्हाजीवेतिवससिसिया , जम्हासत्ते सुहासुहे  
 हि कर्मोहि तम्हा सत्तेयिवत्तसिसिया , जम्हा तित्तकटुकसायस्यविलमज्जरसेजाणइ तम्हा विसूसुत्तिवससि  
 सिया , वेदइय सुहदुस्क तम्हा वेदातिवससिसिया , संतेणठिण जाव पाणोतिवत्तसिसिया , जाव वेदाति  
 वससिसिया । मकाइण जते ! नियटे निरुत्तये निरुत्तयवयसे जाय निठियठकरणिज्जे , णापुण रविइ  
 क्खस हस्र मागक्खइ ? हता गोयमा ! मकाइण नियठ जाय नोपुणरयिहस्यस हस्र स्यागक्खइ सेण जते

जपाउववववववववव । तथा जीवस उपशान वयव यपुन यानुक्रमेण उपशोवति यनुभवे । तस्माजोवेतिवत्तव्यसिया । तेमाटे ओव एवम् तेवने क  
 वे । ज्ञानसत्तेसमासुभेदिकथोवि । वे माटे यत्र पायत्र यवथा समग्रसै सत्त यमत्तरे वेदानेविपै शुभाशुभजन्म स्रवंससै । तस्मासत्तेतिवत्तव्यसिया ।  
 ते माटे यत्र एवम् तेवने ज्ञहीये । ज्ञानानिगतकृत्वायवयवित्तमपुत्तसे जायत । केमाटे तित्त कृत्वा ज्ञानो ज्ञानो यत्र मयुर ए पांवरस जाये । तस्मा  
 विकृतिवत्तव्यसिया । तेमाटे यत्र एवम् तेवने ज्ञहीये । ज्ञानानिदेवयपुत्तव्य । जकारवधी वेदे यनुभवे सुख मते तवादुखमते । तस्मावेदातिवत्तव्यसिया ।  
 तेमाटे वेद एवम् तेवने ज्ञहीये । संतेषु ज्ञानावपावेतिवत्तव्यसिया । ते तेषु यत्र यावत् प्राय एवम् तेवने ज्ञहीये । जाववेदातिवत्तव्यसिया । यावत्  
 वेद एवम् तेवने ज्ञहीये पूर्वज्ञानो जेयव तेवना विपरीतयवती ज्ञहीये—मकारव्यमतेविपरीतेतिवत्तव्यसिया । यायुक्तमोषो जेयवत्तव्यसिया । जिन्येयसा

कस्ये पापस्य विषयंपमाह ॥ मनाहत्यादि ३ पारमपुत्ति ३ पारगताः सत्सारसापरस्य प्राविनि प्रूतयदुपचारानादिति ॥ परंपरया  
 मियादुष्यादिदुष्टस्थानकालाना मनुष्यादिसुमतीनावाः पारंपर्येण गताः प्रवाप्तोधिपारं प्राप्त परम्यरायव, इहा भन्तरसंपन्नस्य सत्सारवृद्धिधामी च  
 किं वसवृत्तिया ? गोयमा ! सिद्धेतिवसवृत्तिया , बुद्धेतिवसवृत्तिया , मुत्तिसि वसवृत्तिया , पारगापुत्ति  
 वसवृत्तिया , परपरगापुत्ति वसवृत्तिया , सिद्धे बुद्धे मुत्तिसे पारनिष्ठुने स्युतकले सवृदुस्कप्यहीणे सिवसवृत्तिसि  
 या संव नतं नतोसि , नगव गोयमे समण नगव महावीर वदइ नमसइ नमसइहा सजमेण तवसा स्युप्याण

५ ५ भाष्ये पाणिना कथ ५ भाष्ये भगना विस्तार क्षेत्रे । जावधिपुष्टकरिचिजे । यावत् निष्ठिताव करणी प्रकीर्णनने करणी पूरकोधी । चापुष्टरविह  
 कदाकदासायच्छर । नदी वधी मनुष्यादि भगमते जलावधा पावे पामे इतिप्रय उल्लर । जला मोयमा । ज्योतीतम । महाद्विचरिचिजे । स्युतादि प्रासुज  
 भाष्यो निर्यावसायु । जावचापुष्टरविह कदाकदासायच्छर सेवभतेक्षियवसावसिया । यावत् नदीवधी मनुष्यादि भगमते जलावधा पावे पामे, तिष्ठा ते  
 निर्वहजोव च याकाथंकरि, हेमगवन् । स्याकदायाव इतिप्रय उल्लर । मोयना सिद्धेतिवसावसिया । ज्योतीतम सिद्ध एवम् तेजने क्वहीये । बहोभिवल्लवसि  
 या । बुद्ध एवम् तेजने क्वहीये । मतेक्षियवसावसिया । मज्ज एवम् तेजने क्वहीये । पारमपुत्तिय तव्यसिया । सत्सार सत्तरेनेपारै पञ्चता ० इवम् तेजने क्वही  
 ये । परपरगापुत्तिवसावसिया । मियात्त्यादि गुक्कानकने तदा मनुष्यादि गतिने परपरग्ये गवा एवम् तेजने क्वहीये । सिद्धे र बुद्धे २ मुत्तिसे ३ । सिद्ध  
 बुद्ध मज्ज । परनिष्ठुनवतकरे । परि निर्वह कदा ४ संसारमा चतकोधा । सज्जदुक्कप्यहीवेतिवसावसिया सेवभते २ ति । सगवा दुष्ट प्रचीवसावसाह  
 वने एवम् तेजने क्वहीये योतम वाया तवति वममवन् तुम्हे कर्तुं तेवसाह्ये यन्वागतही । भगव गावसे । भगवत गौतम । समज्ज मगव महावीर । यमव  
 भगवत योमवावीरत्तामी प्रते । वदइ वममव २ ता । यदि नमसरत्तकरै वादीने भमसरवार करीने । सज्जनेवतवसावसावसावसावे विहर । नवा चा  
 वता वममवारीसे क्वहीये ते सवम क्वहीये मज्जगा वममवेदिये क्वहीयेते ते तपक्वहीये ते सवम उपसवाते । एवमसवेमगवमवादीरे । याकाने भावता

मादिपमविवक्षया भूतादिशाएपञ्चकवाच्यता सस्य क्वासवेदेन व्याख्येया यदा सूञ्जासादिपस्यै सुंगप दसौ विवक्षते तदा प्राची पुरीो जीव स  
 त्या विद्यो देरधितारति एत तमति वाच्यं स्या दपवा निपमने वाक्यमवेद मतो न युगपत्यञ्चव्यास्याकार्येति ॥ अन्हाजीवेहत्यादि ॥ यस्मा क्धी  
 व कास्य सौ कीधति प्राञ्चान् पारयति तथा कीधत्य भुपयोपलक्ष्य प्राणुक्च क्म सपजीयति अनुभवति तस्मा क्जीवति वक्तव्य स्यादिति ॥  
 अन्हासहस्रुपासुजिह्वत्सदिति ॥ सक्त आसक्तः एकमेवाः समर्थः सुन्दरा २ सुवेद्यासु आधवा सक्तः सधुः क्षुत्रासुभिः कर्मणि रिति आमन्तरो

या , जम्हा जीवे जीयइ जीयसु ष्याउयंच कम्म उवजीयइ तम्हाजीवेतिवससुसििया , जम्हासन्ते सुहासुहे  
 हिं कम्मोहि तम्हा सत्तेयिवत्तसुंसिया , जम्हा तित्तकट्टकसायस्यायिउमज्जरसेजाणइ तम्हा यिसुसुसिवससु  
 सििया , वेदेइय सुहदुस्क तम्हा वेदातिवससुसििया , संतेणठिण जाव पाणेतिवत्तसुसििया , जाव वेदाति  
 यससुसििया । मन्हाईण ज्जे ! नियठे निरुत्तन्नये निरुत्तन्नयपवचे जाय निठियठकरणिज्जे , णोपुण रविइ  
 च्छस हसु मागच्छुं ? हता गोयमा ! मन्हाईण नियठ जाव नोपुणरविइत्तसुसु हसु ष्यागच्छुं सेण ज्जेते

तथाउपचक्ष्मववजोवेद । तथा कीधत्य अपवांस सपच वपुन प्राहुक्म सपचोवति यजुभवे । तस्याजोवेतिवत्तसुसििया । तेमाटे जोव एइव तेइने क्ही  
 वे । अन्हासतेममासुभेहिइत्तसुसििया । वे माटे मास प्रायास यववा समसहै सदर यमंदर वेडानेविधै यमायुमज्जमसु ससंधै । तस्यासतेतिवत्तसुसििया ।  
 तेमाटे सस एइव तेइने क्हीवे । अन्हातिताकुकुसयापयविजमहरसे जाचइ । वेमाटे तिह क्कडुवो क्कसासुं यविव मधुर ए पावरस आरि । तम्हा  
 विपुतिररायसििया । तेमाटे पिच एइव तेइने क्हीवे । अन्हापिरेदसुसुइत्तसुसु । अकारयधी वेदै यजुसवे सुक् प्रति तत्तादुक्कप्रते । तस्यावेदातिवत्तसुसििया ।  
 तेमाटे वेद एइव तेइने क्हीवे । सेतेवेइत्तसुसुसििया । ते तेवे यवे यावत् प्राच एइव तेइने क्हीवे । जाववेदातिवत्तसुसििया । यावत्  
 वेद एइव तेइने क्हीवे पूरकत्ता वेपय तेइना विपरीतपत्तो क्हीवे—मन्हाइत्तसुसुसििया । पासुकर्मोचो विमगावत् । निठेयसा



परिष्कारकस्य ऽ रिशयेपञ्चगुणेषामभेदप्रथमप्रथमं पति ॥ इह पटीमनुभवानलोपदधानात् अर्थेदप्यनुर्भेदासामभेदाप्ययवेदाभासिमितिबुधय प्रतिष्कारः  
पुराण समन्वयमा यथास तथा तेषा ऽ षडहहवेपायति ऽ विज्ञेयपद निषदुल्लोकायति ऽ निषेधदो नामकोशः ऽ सगोत्रगायति ॥ अङ्गानि त्रिषोढी  
सि पद, अथाङ्गानि सद्रूपप्रथमपरः प्रथमा ऽ सरस्सायति ऽ सद्रपर्यमुच्छान्ता ॥ सारस्यति ॥ सारको व्यापनद्वारक प्रथमकः सारको वा  
न्यथा विस्मृतस्य सूत्रार्थः सारसात् ॥ वारस्यति ॥ वारको ऽशुभपाठनिषेधात् ॥ वारस्यति ॥ अत्रि स्याठ सार वारको ऽशीताभा सया वारसा  
त् ऽ वारस्यति ॥ वारसामी पङ्गविदिति पङ्गानि शिष्यादीनि कस्यसाद्यानि साङ्गापाङ्गानामिति ययुक्त न हेदपरिकरजापनार्थं मयवा पङ्ग  
विदि स्य सद्रिचारकस्य ऋषीन विदयिचारकविविधवतादिति न पुनरुक्तत्वमिति ॥ सठिततविषारस्यति ॥ कापिषीपयाय्यपरिगतः अथा ॥ स

खदणुनाम कञ्जायणसगोत्रे परिहायगे परिवसड, रिउक्षिय जजुक्षिय सामवेय छहक्षणावेय इतिहासप  
वमाण निषदुल्लोकाय चडहहवेपाण सगोत्रगाण सरहस्साण सारु वारु वारु पारु सङ्गाकी सठित  
तयिसारु सरवाणे सिरकाकप्ये वागरणे उदे निरुत्ते जोहसामयणे अस्मैसुय यङ्गसु यनयासु परिहायसु

नेदिव । गहभासिदुधतेनासो । गहभासो इतेनामे परिष्कारक तापसना शिष्य । सुत्रएवामकसावस्यसगोत्रे । खदण इसे नामे कात्यायनगोत्रे अहने  
परिष्कारकेपरिष्कार । परिष्कारक वसैवे । रिउत्तेय । परगरेटना । अउक्तेय । यजुर्वेदना । सामवेय । सामवेदना । यमवयववेय । यमवय वेदना । इति  
इसपवसमाय । इतिहासनामै परावहै पोषमा अहने ते । विदुल्लोकाय । मास सयव अङ्ग अहने । अउक्तेयवाय । चारि वेदना । सगोत्रगाय करह  
काय । शिष्यादि यन तथा नहनेविदे अमयव कात्यायै तेहने सुनि । सारए वारए धारए पारए । तेहने वार २ समरै ययुहपाठ निषेधकरिसे शीये  
धरै पारसामी । सङ्गाको सठितविषारए । अयगता काय कापिषीय शास्त्रना काय । सदावे सिक्साकप्ये वागरणे अट्टितिरुत्ते । कश्चित्तगायना का  
न यपरसक्य यासना काय यद्वना काय पदसक्य यासना काय यद्वनी उत्यसिना यासना काय । जातिसामयवे अस्मैसुयवङ्गसु यमयासु परि

ये विदुषा बन्धुभानु तेषा मध्येषां भार्याना ध्युत्पादनाय स्कन्धकथरित विवशुरिदमाह ॥ तेषं कालेषु मित्यादि उपपन्नान्कृत्यस्यधरे ॥ इह मायते  
 पर्यात् ॥ परदा जिह कयती सधुवु सधवरिषी प्राणाशरणं कसेव मित्यादि ॥ समभवतरक्षान्तंवाप्यमिति ॥ गदुमासस्वामि ॥ गदुमासनिधाम  
 त्राये माणे विहरइ , तणुण समणे तगाव महावीरे रायगिहाहं नयराहं गुणासिहाहं चेहयाहं पन्निनिरकम  
 इ पन्निनिरकमइहा धहिधा जणवधायहार विहरइ , तेणकालेण तेणसमणुण कयगलाणाम नयरीहोत्या , व  
 षाहं , तीसेण कयगलाणु नयरीणु दाहिया उतरपुरकिंमे दिसीनाणु उत्तपलासाणु णाम चेहणुहोत्या , वयुहं  
 तणुण समणे तगावमहायीरे उपपत्तणाणदुसणधरे जाव समोसरण परिसा निग्गया , तीसेण कयगलाणु  
 नयरीणु धुदुरसामते सायत्थीणाम नयरी होत्या , वयुहं , तत्थण सायत्थीणु णयरीणु गदुनालिस्स धुतेवासी

ब्रह्मा दीधरे दिहारे वसव भगवत योमहावीरत्त्वानी । रायसिहायाधराया गुणसिहायाधराया । रायसिहायासा भगवती गुणयाजकनामे यज  
 ना येसववती । पदिहिवज्जसद ९ का पदिहियाज्जसवदिहारादिहरे । नोक्खे नोक्खणेन भादिर हेमलोक्कनिधिये विहराहरे । तेयकासेव तेयससएव । ते  
 कासमदिधे तेयमयनेधिये । कयमसनामं वयुतेहासा वयुधा । कयगलाणामं नगरीह्वने वयव उवाहणे परेक्कवा । दीसेवज्जवमलाएवधरोए । तेइ व  
 दाकासवारे कययथा भमतीने धिये । बदिवाणनारपुरकिंमेदिसीभाए । भादिर उतर पूवनादिधिय विभाग्ये एतसे हेमानसुसं । कतापलासाएचेहएवहात्या  
 वयुधा । कययजाय रसैनामे वयना येसु ज्जसा तेहना ववउ उवाहियो क्कामा । तएवसमंभे भमवमजावीरे । निणारे यमवमभायत यीमहावीरकाम्नी ।  
 वयुधावाहरेसधरे । धएना कययदान धने केरवदर्यंन तेहना भरववहार । कावसमाधरव । यावत् समाधरव नादि क्कवसो । पदिसाधिज्जया । पदि  
 यदा वादया नोक्कती । तीसेयं कयमलाएवधरोए धुदुरसामते । तेइ व दाकासवारे क्कवगवा नयरीणी एवु धुदुमज्जणी क्कवं निक्कटपयजवहीरे । भावन्ती  
 धामनयरोहोत्तासधया । दिहा साववतीनामे नयरो क्क इ ते नयरोमा ववउ उवाह उयोमणीधरे क्कववा । तकावंधावत्थीएवधरो ॥ १ ॥

पापइति ॥ मागपत्रमपदज्ञातस्यात् मागव सत्सा मन्त्रं हेमागव । ॥ यत्कदाचित् ॥ सधारववृत्तात् ॥ हायइति ॥ सधारपरिहास्येति , यत्तावतावेत्या  
 दि ॥ यत्तावतावप्रसक्तत तावदाख्यादि , उच्यमान पुत्र्यमान एव मनेन प्रकारेण एवस्ति आख्याते , पुनरन्य रामस्यामीतिइत्य ॥ सक्त्विइत्यादि ॥  
 क्त्विभिर निशोचर निवचति सञ्जातशङ्कः इदं निशोचर सायु इदं न सायु फलः कथ मन्त्रोत्तर सत्ये इत्युत्तरलाज्याकाहुत्वात् क्त्विभिसो स्ति च्  
 सरं दत्ते क्लमस्य प्रतीति कल्पस्यते भवे ; त्येव विचिकित्सितो नेत्र समापयो मते मंत्रं किङ्कर्तव्यताव्याजुस्तत्पलशब्द भापय कस्युप भापयो नाह  
 निह क्त्विभि व्यागामी त्येवं सक्त्विपयं कासुप्य समापयकारिति ॥ भोसवायति ॥ न क्त्विभोति ॥ एमीकथमकथाइति ॥ प्रमुच्यते पर्यनुयोगवत्पत्ना दने

सस्यतेजीवे स्यणतेजीवे सस्यतासिद्धी स्यणतासिद्धी सस्यतेसिद्धे स्यणतेसिद्धे केणवामरणेण मरमाणे जीवे  
 यहुइया हायइया एतावताव स्याइस्याहि बुद्धमाणो एव तणुण से स्वदपु कञ्जापणसगोत्ते पिंगालपुण निय  
 टेण वेसाडीसायपुण क्षण मस्कैव पुच्छिपु समाणे सकिपु करिपु विताणिदिपु नेदसमावस्ये कलुससमावस्ये  
 णोसयापुइ , पिंगलयस्स नियठरस्स वेसाडियसावयस्स किञ्चित्पियमोस्क मरकाइत्तुसिणीपु सचिठइ , तेपुण

तत्तै यत्तया योव यत्तरहितवै । यत्तयासिद्धी यत्तयासिद्धी सस्यतसिद्धे यत्तयासिद्धे । सदि यिथा यत्तयासिद्धतवै यत्तया सिरदिगिथा यत्तरहितवै सिद्धना  
 योव यत्तयासिद्धतवै यत्तया सिरदिगिथोव यत्तरहितवै । क्वेदेमामरवेत्थं । क्वेदे मरवेत्थरी । मरमावेत्थोवे । मरमा वेत्थु । यत्तया । सधारव्वरी इति  
 यामे । यत्तया । सधारव्व इति यामे । एतावेत्ताव यत्तयासिद्धिविबुधमायो । यत्तया मन्त्र पूजां ते पहिथा क्वेथी पत्ते दीवो मन्त्र पूज्यत्वं पूज्यमान । न  
 एवसेयदए कथायत्तयास्ये । निवारि तेकदक काल्यायन योयोव । यिमतएवविबठेत्थं । यिमासनामे साधु । वेसाडियसावएव । योमहावीरना वचन सु  
 विधाने रसिद्ध । इत्यमस्तेदपुच्छिपुसमाये । इत्य यत्तये पूजा यका । सक्षिप क्त्विपु विवित्तिदिपु । एवमां उतर कोर रसोयका कपयो एवमां सधार  
 विम यामिने एवमा उतर दोर्ष इत्यने प्रतीत कपयत्थे । भेदसमावस्य कसुससमावस्ये । मतिभेदपाप्या मतिभंगपाप्या इ इवो क्वेथी क्वेथी नखायु ? इत्य

यावन्ति ॥ गच्छितस्त्वन्पुपरिनिष्ठित इति शीघ्रं , पदद्वयेदकत्वमेव ध्वनक्ति ॥ सिद्धशाब्दयोति ॥ त्रिधा ध्वनस्तकपनिकरपदं शाब्दं कल्पय्य तथा  
 विपसनाचारमिदरपदं शाब्दमव ततः सभाहारद्वन्धा च्छिशाकल्पे ॥ वापरवेति ॥ शार्दशाब्दे ॥ ऋदेति ॥ पद्यालक्षणाभावे ॥ निरवधीति ॥ शर्दश्रुत्य  
 तिजान्दशाब्दे ॥ शोर्दशामययति ॥ ज्योतिःशाब्दे ॥ धनस्यसुति ॥ प्राकृत्यसम्बन्धिपु । परिहायसुयति ॥ परिहायत्वकसत्केपु ॥ भयेपु भीतिपु र  
 धानेधित्यर्थः ॥ नियतति ॥ निर्धेयः भ्रमकल्प्यर्थः ॥ वेसासिपसावयति ॥ विज्ञाता मन्वावीरजननी तस्या अपत्यमिति , वैद्यासिद्धो नमवास्त  
 स्य पवन यद्योति शर्दसिकत्वा इति वैशासिकः शाब्दः ' स्वद्वन्धाभयसपाननिररत्त्यर्थं ॥ इत्यमरयेवति ॥ एत भाष्येय प्रस ॥ पुच्छेति ॥ पृष्ठभाषु ॥

नपुसु सुपरिनिष्ठिपु याविहीत्या , तस्यप सावत्यापु नपरीपु पिगालपु नाम नियटे वेसासिपसावपु परिव  
 सइ , तपुण से पिगालपु नाम नियटे वेसासिसावपु श्रुत्याया कयाइ जेणेय स्वदपु कस्त्रायणसगोत्ते तेणेव  
 उवागच्छइ उवागच्छइसा स्वदय कस्त्रायणसगोस इप मरकेय पुच्छे , मागाहा ! कि सस्यतेलीपु श्रुणतेलीपु

यापसुस नपसु । आदिय माझना जाव बोकार्नेविधे चपुन घर्षाहूनविधे माझाव सवधोनेविधे परिमाधक सवधोनेविधे श्रीतनेविधे । सुपरिनिष्ठिएषा  
 दिशाळा तत्रावधायकीएकरपीए । भक्षोपरि निशवाकना जाव एहयो च्छर्दपतिमाधक इया तेहनोविधे च वाक्यावकारे , सावली नामै नपरीवे । पिमक  
 एवार्निषधेठे वेसासिपसावए परिवधर । पिगळ भासे निधं व साहु यमच हळक दियाशा श्रीमन्वावीरजो माया तेहनोपुच श्रीमन्वावीर तेहनो वचन  
 या रसिककडे । नएव्होपियमवएवामिषधेठे । तिघारे तेपिगळनासे निधेव साधु । वेसासिपसावए । श्रीमन्वावीरना वचन सुधिवामे रसिक । यवयाकवा  
 रं जेहेउपुए । एकरा पसादि शिवादेवे शिवा च्छर्द परिवमाक । कथावचसगोत्ते । तेहेवउवागच्छर २ या । आस्त्रायनगोष्ठीय तिहा धावे ति  
 हा पाशोने । च्छर्दयकवायवचनो । छर्दक आस्त्रायनगोष्ठीय मते एवमल्लीवपुच्छा । एव धावेवे मन्नुपुछे । मागाहा । मगाधयेमनो जपनो ते मायव ।  
 शिवापरेशाए यवनेशाए सपतेवीरे यवनेवीये । एव्होका भत सधित एतावदाळाकना यावे यवना यवतळाकडे काकना यवतको वीव भत वदि

धर्म २ मूर्धं पुष्क इत्यथ शीला व्यावृत्तनाथी प्रतिदिननीचीत्यर्थं ॥ ठंरासंति ॥ प्रथम ॥ सिंगारति ॥ अङ्गारो उत्कृष्टारादिकता श्रीमा तद्योग्या  
 व्युत्कार अङ्गारसिख शङ्गार मतिशायसोनावदित्यर्थः कस्याश्च श्रेय श्रेय समुपद्रव कर्तुपद्रवहेतुर्याः पथ्य पत्न्यवमसत्क्यु सथया सायु सदा र्दति  
 मङ्गल्य मङ्गले दित्तायद्रापके सायु मङ्गल्यं कस्यदुव मुकुटादिसि विनूपित वक्ष्यादिति सास्त्रियेया दूनसङ्कतविनूपित ॥ सत्सङ्कतवचमुकोपयेयति ॥  
 सद्यथ मानोन्मातादि तत्र मानं कस्यदोक्तमानता कस्यनतकुठिकायादि मासक्याः पुरुष प्रवदयते सत्प्रवेद्येय य कस्य सतो निस्सरति त यादि श्री  
 कमानं भयति सदा सो भानोपव कथ्यते, कन्मान स्वर्द्धनारमानता सातक्यपुरुषोहि तुलारोपितो यदाद्वनारमानोपवति सरो भ्यानीयेतो सायुष्य  
 त, प्रमाचं पुन स्यादुत्तेना दानरादुत्सदातोक्ष्युयता यदाह-असदीकमद्वनार समुदाहसमूचित्वकोनवठं । माकीमाद्यपमाद्य तिधिहसशुलभयवच्य  
 यं ॥ १ ॥ अथान्न भयतित्तिकादिक, मयया सहज सद्यर्थ, यथादुयं अथान्नमिति, गुणाः सीनाययोदयो सद्यथक्यकनाना या ये गुणाः सौ कथ  
 यत य त जया उपपद्यह इत्येतस्य स्वामे निष्किक्रियशा रुपयेत यवतीति ॥ सिरीयति ॥ सारया शोतयाता ॥ इहनुठचित्तमाद्यदिसि ॥ इहनु

सिंगार कक्षाण सिख धन्व मगास्य सृणलकिकियन्नसिय लरकणयजणगुणोषवेय सिरीपु सृतीय सृतीय त्रव  
 सोंत्रंमाणे चिठह, तृण सुसदपु कक्षायणसगोसि समणस्सनायवठंमहाधीरस्स विषयहेनोइस्स सरीरय उरा

परहित धन्य जितपाप्मि । यथसच्चिद्विभूमिसिध कस्यहवकावगुणावयेय । धामरहस्यरहितगामे यथरहितगामे सद्यश्मान उमानसहित भसतिव पसुख  
 गुवयाभायादिव्व तिसिंसहित । सिरीयधर्तन २ उपयाभेमाच २ चिठह । यामायोकरी यच्चू २ यत्नत उपयाभेमायमानवचो र्दहै । तएयसिधवए कथाव  
 वसगासि । तिसरिरे तेषुद्व कालावदसोषनोषयो । समवसुभमनथा महावीरस्य । यमव भगवंत योमहावीरस्यामीना । विषयधीर्दयव्यासरीरयधारास्य  
 निम्नभाजाना यरीरपते प्रथाममते । आनधरय २ कस्यसोमाच २ पासर २ ना । यावत् यत्नत २ यच्चू २ योभायमान २ वेरुं देवीने । इहनुठचित्त  
 माद्यदि ए पोदसाधे । इयदाया संतापयाम्ना विषयवेदना यान्दित्तवयो मनवेदना प्रीतिवधीवै वेदना मननेविद्यै । परमसोमचसिध । परम उरकह

एषुसृष्टे तत्रताव रहस्सकठे हसु मरुकाए, जठेण सुह जाणामि स्वदया ! तणुणे से खंदपु कसुयाणसगोसि  
 जगय गोयम एषययासी, गच्छुमोण गोयमा ! तवधममायरिय धम्मोवदंसय समण जगय महावीर वदा  
 मां नमसामो जाव पडुवासामो, सुहासुह देवाणुण्णिया ! मापण्डियध, तणुण जगव गोयमे स्वदणुण कसुयाय  
 णसगोत्तेण साकु जेणेय समणे जगव महावीरे तेणेव पहारेच्छुगमणाए, तेणकालेण तेणसमणुण समणे न  
 गव महावीरे विषयुज्जोजी याविहोत्या, तणुण समणस्स जगवत्तं महावीरस्स विषयुज्जोइस्स सुरीरय उराल

एष । यतीव यत्तमान यनागत एणिविज्जावता विघासक आण । सवणुं सवणुरिसी । सुवभावनाकाव सवभावना देसनहार । खिन्नमएएसणु । विचि सु  
 भने एषव । तदतावरहसुवहमस्यए । एषुवरे तावत् पहिसा मननेविद्यैहोव कोधा एहवो यत्तं कण्णो । यथावपहजाजामिसुदधा । जेमाटे इ पाणु ।  
 देवहस । तएवसेषुए । विघारे तेवदव । कथायवसमोत्ते । काल्यायनमाधीव । भयवनीयम । भयवत यीतम । एवंवदासी मरुकासीव गोवमा । एह  
 कटावदा वारहे यत्तं यतीतम । तवधममायरिय । तुम्हारा वसीवास मते । यथावएसय । धमना उपदेयक मते । समत्तंमवमहावीर वदासो यमसामी  
 यमव भयवत योमहावीरसामीमते भादेसि नमस्कार करोसे । जाव पणुवासामी । यावत् सेवावरिये हसे वचन सुदव कथायका । यथासुवदिवाव  
 यिया । यीतम वाषया विम सव कपणे तिमकरा देवयानुविद्य तुम्हने । मापण्डियधं । पण्डि विद्यवमाकरुयो । तएवसेमगवत्तंमोयसे सुदएवकथायवसगोसि  
 वदव । तिवारे तेमवत्तं यीतम वदव कथायान योमनीवधी ते सवतेकरे । कवेरसमत्तंमगवमहावीरे । विघां यमव भगवत यीमहावीरसामीके ।  
 तेदेवववारे यममवाए तेवकसिच तेवधमवध । तिवी सकसकोधी काएवनेकाव तेकावनेविद्ये तेसमत्तंमविद्ये । समत्तंमगवत्तंमहावीरे । यमवभगवत्तं यी  
 महावीरसामी । विघमार्त्तवाविजाव । तिवयभायो प्रमिदिन भोकीहे । तएवममवधुमगवत्तंमहावीरसु । तिवारे यमव भगवत यीमहावीरसामी  
 गा । विघमार्त्तवाविजाव सिघारं कथाव सिध वध मयव । तिवयमीत्रीना यरीर केववावे तेवकेहे—मयान अविषय योभावन यीवकासी कपव

एते २ मूय पुष्क इत्यत्र श्रीना व्यायुहोत्री प्रसिद्धिर्नामीत्यर्थं ॥ धरासति ॥ प्रधानं ॥ चिन्तारति ॥ शङ्करो ऽन्तर्द्वारादिक्स्ता शोभा तद्योया  
 व्युत्पत्तौ शङ्करसिद्धिः शङ्कार मतिप्रपयोणावदित्यर्थः कल्याण प्रेयः त्विष मनुपद्वय व्युत्पद्वयहेतुवा ; यस्य यस्मात्तस्यु सत्रवा ; सायु सदा र्ति  
 मङ्गल्य मङ्गले विनायकप्रापके सायु मङ्गल्यं कालकृत मुक्तादिभि विनूयित वस्त्रादिभि स्थायिषेया कृमसङ्कलविनूयित ॥ सप्तशयवज्जगुणोपवेपति ॥  
 सल्ल मानीन्मनादि तत्र मानं कलत्रोत्समाभता कलत्रतुक्रिकायादि भातव्य पुत्रयः प्रथमपते सत्प्रयोजेच य ज्मल ततो निस्सरति त द्यदि श्री  
 कृपान भवति तदा श्री भागोपत उच्यते , तन्मान स्वर्णारमानता मातव्यपुत्रयोर्हि गुणारोपितो मयाहजारमानोभवति तयो भागोपेतो सायुष्य  
 त प्रमाहं पुनः स्थापुलता एतारारुसकलोच्युपता यदाह-कलदीक्षमद्वजार समुदाहसमूचिष्ठंत्वोभवत् । माशोभाकृपमाहं तिथिपुत्रसुसकृप  
 यं ३ १ ॥ अथानमं मपतितकामिक, मयथा ; सुहृद सख्यं यथाद्वेषं धरुज्जगति त गुणा सीतायोदयो सख्यव्याञ्जनाना वा ये गुणा स्ते कप  
 यत य त तथा उपवपह इत्येतस्य स्थाने निरुक्तिवशा दुपपेत जवतीति ॥ सिरीयति ३ सप्त्या शोभयावा ॥ इतनुचिन्तमाशुदिरति ३ इत्यु

सिंगार कक्षाण सिव धन मगाह सृणोकिपयिन्सिय लयकणवज्जगुणोपवेय सिरीप सृतीष सृतीष तत्र  
 शोत्रंमाणे चिठइ, तण्ण सेसदण कक्षायणसगोहे समणस्सन्नगवत्तमहाधीरस्स विपट्टेनोइस्स सरिरय उरा

शरित्त यस्य इतिप्रामि । यश्चसिद्धिर्पविभूसिद्ध सख्यवदंजयगुणावयेय । यामरररहितगामे वरररहितगामे चयश्चमान उभामसहित मसतिल प्रसुच  
 गुणयोभायादिक निश्चसहित । सिरीयधरत्न २ धवयोभेमाह २ चिठइ । शोभायेकरो ष २ यत्तत धवयोभायमानवका र्थे । तण्णसेसदण कषाय  
 यममाले । तिलारे तेषुइह कात्यायनमोक्षोदयो । समस्यसमयथा सदादीरस्य । यस्य भयवत् योमहाधीरस्थामिना । विवहभोर्दयस्यसरीरयधोरस्य  
 निजभाजोना यरोरपते प्रधानमते । कायधरत्न २ उपसभेमाह २ पासह २ ना । शोभय च्यात २ प्रसू २ योभायमान २ देवे देवीने । इहगुहचित  
 माशुदिए योरमावे । इयथाया सतापयास्यो चित्तसेवना । यानदितययो मनसेवनी योतिवयोखे वेवना मननेवियै । परमसोमस्यिए । परस उरकड

एषश्चठि तवताव रहस्सकठि हह्व मरकाए, जठण झ्हं जाणामि स्वदया ! तणुणसे स्वंदणु कञ्जायणसगोसे  
 जगव गोयम एवययासी, गच्छामिण गोयमा ! तवधम्मयारिय धम्मोवदसय समण जगव महावीर वदा  
 मां नमसामो जाव पज्जुयासामो, झ्हहासुह देवाणुणियया ! मापण्ठियध, तणुण जगव गोयमे स्वदणुण कञ्जाय  
 णसगोत्तेण साद्धं जेणिय समणे जगव महावीरे तेणिय पहारेच्छगमणाए, तेणकालेण तेणसमणुण समणे ज  
 गव महावीरे थियदुत्तोजी याथिहोत्या, तणुण समणस्स जगवठं महावीरस्स थियदुत्तोइस्स सुरीरिय उराळ

वय । यतौव वसपान यनायत एणिविवावना विप्रायव जाव । सल्लसू सल्लदरिसा । सवभावनाजाव सवभावना देखनहार । वेथमएएसधं । जिथे मु  
 भवे एयध । तवतावरहह्वकठेमल्लया । तुभारि तावत् पविसा मननेविदेहीव कौधा एहवा धवं कळो । वधोवपववाजामिच्छदया । वेमाटे सु जायसू ।  
 देवद्व । तएवसेवदए । तिचारि तेवद्व । कथाववसपाने । कात्तावमगाभीय । भगवंगोवम । भगवठ गौतम । एववयासी गरकाभांज गोयमा । एहवं  
 करणावया जादये पव्व वेगौतम । तवधम्मयारिय । तुभारा धर्मायाव प्रते । धम्मयएसव । धमना उपदेमाक प्रते । समवंमगवमहावीर वदानो वमसामो  
 वमव भगवंत थोमहावीरस्सामोप्रते पादेवे नमकठार करीये । जाव पज्जुयासामो । मावत् सेवाकरीये हसे वचन सुद्वव वथावका । पज्जासुहदेवाव  
 यिया । गौतम वाववा किम पुव्व छपव्वे तिमकरा हेदेवायुप्रिय तुम्हने । मापण्ठियधं । पच्चि विवसमगाववंयोसे सुंदएवकवायवसगोसे  
 थंवठि । तिचारि तेमयवंत गौतम वुंइव व्हात्तावन मावलोवथी ते सवतेकरो । व्हेरसमव्वेभगवमहावीरे । जिह्वां यमव्व भगवठ थोमहावीरस्सामोहं ।  
 तेववपवारे व्हामव्हाए तेवंकालेव तेवसमपव्वं । तिह्वां सक्कलकोपां जादवानेकाले तेव्हासनेविदे तेसमवनेविदे । समवेमगवंमहावीरे । यमव्वभगवंत थो  
 महावीरस्सामो । विवदमादेयविवाया । निव्वमावो प्रतिदिन भोक्कीवे । तएवसमव्वल्लमगवपामहावीरएव । तिचारि यमव्व भगवंत थोमहावीरस्सामो  
 ना । विवदमारयसुपीरएवराव सिपाए व्हाव्वं दिव धव्व मयव्व । निव्वभोजीनो पापीर वेव्हावे तेव्वेवे—प्रपान वविमव थोमहाव वेवव्हारो वपव्व



यत् २ मूर्धं मुख इत्यत्र ग्रीत्ता व्यावृत्तनीची प्रतिदिननीचीत्यर्थं ॥ शरान्तति ॥ प्रथम ॥ सिंगारति ॥ यद्गुरोरे ऽस्तुगुरोरादिकृता ग्रीत्ता तद्योगा  
 व्युत्पन्नार यद्गुरामिन्न यद्गुरार मतिव्यपयोनावादिस्वयं; कस्त्याच्च भेषः शिव मनुपद्वय अतुपद्वयहेतुर्वा; पन्थ परमं चमस्तुम् तद्यथा सायु लक्षा इति  
 मद्रुस्य मद्रुले वित्तायाप्रापके सायु मद्रुस्य अस्तुतु मुकुटादिति वित्तयित वस्त्रादिति स्त्रात्रियेया दमस्तुतावित्तुयित ॥ सप्यव्यवजगुयोवयेयति ॥  
 सवद्य भातीन्मत्तार्दि तत्र भात अस्तदोहमानता अस्तनूतुक्रिष्वापाहि मातव्याः पुरुषः प्रयदयते तत्प्रयोजेच य अस्त ततो नितस्वरति त वादि द्वी  
 अमान मयति तदा श्री मानोयेत उच्यते, अम्मानं स्वर्दानारमानता मातव्युरुकोहि तुलारोपिषी यद्यद्वारमाभीनवति तयो म्मानोयेतो सायुष्य  
 त, प्रमाद्य युनः स्यात्सुसेना शासरातुल्यतायुयता यदाह-अस्तदोहमद्वार समुहाइसभूसिधैवधोनवत् । भावीमात्रपमाद्य तिविहस्यशुलप्यथए  
 यं ॥ १ ॥ अथञ्जन मयतिलकादिक मयया सहस्य सद्यच्च यद्याद्गव अञ्जनमिति गुणाः सीताभ्योदयो सद्यव्याञ्जनाना वा ये मुक्ता सौ कय  
 यत य न तया उपपद्यद् इत्येतस्य स्थाने निरुच्छिद्यसा युपयत प्रवतीति ॥ सिरीएति ॥ सवत्या गोनयावा ॥ इतुतुचित्तमाद्यदिति ॥ इदम्

सिंगार कक्षाण सिध धन्त मगास्य स्थण्डिकियधिनूसिय लस्कणवजगुणोषयेय सिरीपु स्यतीथ स्यतीन त्रिव  
 सौत्रंमणो चिठइ, तण्ण सेखदए कञ्जायणसगोसिं समणस्सन्नगवठंमहावीरस्स विपहन्तीइस्स सरीरय उरा

परहित अथ हितपाति । अथवाक्किवभिभूसिध सस्यववजगुयावयेय । यामरखरहितयासै वखरहितयासै अथवमान उमानसहित मयतिल प्रसुख  
 गुणयोगायादिक निवेसहित । सिरीएपद्वय २ उदयोमेमाच २ विहर । योभायोक्ती चक्षु २ अस्तत उपयाभायमानवका रईहै । तएवसेखदए कथाय  
 चसगोते । निधारे तेखदक काल्यासन्नगोषनोषधी । समअस्यभगवथा महावीरस्य । यमच भयावत योमहावीरस्यामीना । विअइभोईयथसरीरयभारोअथ  
 निअभाओभा यरीरपते प्रथानपते । आअथईय २ उदयोमेमाच २ पासद २ ता । यावत् अत्यत २ धषु २ योभायमान २ देखे देखीने । इइगुइधित  
 माअदिए पोरमावे । इयपाप्या संतापपाप्या विअजेइना यामदितययी मनजेइतो प्रीतिवधीवे वेइना मननेविपै । परमसोमअधिए । परम उरखइ

पुसस्युठे तयताव रहस्सकन्हे ह्व मरकाणु, जठण सुह जाणामि खदया ! तणुणसे खदणु कञ्जायणसगीसि  
 नगाव गोयम पुधययासी, गच्छामीण गोयमा ! तवधम्मायारिय वम्मोवदंसय समण नगाव महावीर वदा  
 मो नमसामो जाव पज्जुवासामो, सुहासुह देवाणुण्यिया ! मापाणिवध, तणुण नगाव गोयमे खदणुण कञ्जाय  
 णसगोत्तेण सद्धि जेणेय समणे नगाव महावीरे तेणेय पहारेच्छुगमणाणु, तेणकालेण तेणसमणुण समणे न  
 गाव महावीरे यियहुन्नोजी याधिहोत्था, तणुण समणस्स नगावत्त महावीरस्स वियहुन्नोइस्स सरीरय उराल

७५ । यतोव बलमान यनापत एधिच्छिवात्तना विघासक काः । सवधु सधदरिसो । सवभावनात्ताव सवभावना देखनहार । खिसमएएसधु । किसे मु  
 भने एयय । तवतापरहण्यवजमक्याए । तुम्हारे तावत् पण्डिता मननेदिपेइोव कोधा एहवा थवं कप्यो । कथोचपहज्जावामिच्छदा । वेमाटे ह् खाब्दु ।  
 हेखरह । तएवहेसुदए । विघारे तेखरह । कथायवसगोत्ते । कात्त्यावनगावीव । भगवंमोदम । भगवत सीतम । एववधासी गच्छामोच कोयमा । एहवं  
 कवताप्रवा वारवे पव वेगीतम । तवधम्मायारिय । तुम्हारा धर्मायाव प्रते । भयावएसव । वसना उपदेयक प्रते । समर्थममवमहावीर वंशमो वमसामो  
 यमव भयवंत योमहावीरसामोप्रते वीदीवे नमस्कार करीवे । जाव पज्जुवासामो । यावत् सेवाकरोये हसे वचन सुदह कथावका । यथासुहदेवाणु  
 यियमा । गौतम वासया जिम युख उपवे विमकरा हेदेवाणुयिय तुम्हने । मापणिवधं । पण्डि विसवनाकरक्यो । तएवसेममवंगीवमे सुदएएवववावसगोत्ते  
 वंहहि । विघारे तेभयवंत गौतम वंरह कात्त्यावन गावनावची ते सघतेकरो । कवेवसमवेममवमहावीरे । जिहवा यमव भगवत योमहावीरसामोहे ।  
 तेववपहारिच्छममवाए तेवववतेव तेववमपवं । तिहवा सुखस्यकोपो वारवानेवावे तेवात्तनेविधे तेसमवमविधे । समवेमवममहावीरे । यमवभयमपत यो  
 मवापोरसामो । यियहमारंवादिजाना । निजमयो प्रतिदिन भोवीहे । तएवममवसुभगवधोमहावीरसु । तिहारे यमव भगवंत योमहावीरसामो  
 गा । विहवभारवसुवरोरववटाव सिघारं कथावं सिव वव मणव । निजमोन्नो मोरीर वेहवोहे तेववेहे—प्रधान पविमपय गोभावाव वेदववापो वपक

एते २ मूढ सुख हत्येव मीसा व्यावृत्ताधी प्रतिदिनधीवीत्यर्थ ॥ शंरासति ॥ प्रधान ॥ विधारति ॥ अङ्गारी उल्लङ्कारादकता शान्ता सधाया  
 कृष्णार अङ्गारानिव यङ्गार मतिशययोगावदित्यर्थः कस्याश्च भेषः शिव मनुष्यत्रय कनुषत्रयहेतुर्थाः अन्य पम्पधनसङ्घु सधयाः साधु सदा र्दति  
 मङ्गल्य मङ्गले दितायप्रायश्ने साधु मङ्गल्यं अलङ्कृत मुमुदादिभि विदूषित वर्यादिभि स्वखियेषा दूनलङ्कृतविदूषित ॥ सख्यव्ययव्यगुबोधयेयति ॥  
 लण्ड मानोम्मानादि तत्र मानं अस्तदोक्तमानता अलङ्कृतमुक्तिव्यापाहि मातव्यः पुरुषः प्रवेक्ष्यते तन्प्रयत्नेष य ज्वल ततो निस्सरति त यदि द्वी  
 धमान भयति तदा श्री मानोपेत वध्यते, जमान स्वर्दानरमानता मातव्यपुरुषोहि तुलासीपितो यथाङ्गारमानोन्नयति सद्यो म्मानोपेतो साधुष्य  
 त प्रयात् पुनः धारुसेना शोभारुसङ्घातोच्छ्रयता यदाह-अस्तदोक्तमदन्तार समुदाहसपुसिष्ठैवजोनवद । माधोभाषणपमाश्च तिविहृक्कनुसख्यव्य  
 यं ॥ १ ॥ ध्यन्तन भयतिलकादिक, भयथाः सख्य सशय पदाङ्गय व्यक्तनमिति, गुणा सीन्नायोदयो सख्यव्यक्तनाना धाः ये गुणा स्तै रूप  
 यत य त तमा वयधपद हत्येतस्य स्थाने निकछिवशा रुपयत नवतीति ॥ सिरीपति ॥ सख्या शोषयावा, ॥ इतुतुठचित्तमाहविरति ॥ इदं

सिंगार कक्षाणा सिव्यं धन्य मगास्य स्थणठिकपयिन्नसिय छस्कणवजणगुणोव्ययेय सिरीपु स्थुतीय स्थुतीय तेष  
 सोनेमाणो चिठइ, तण्ण सेसदपु कक्षायाणसगीसिं समणस्सन्नायत्तमहावीरस्स विचयट्ठोइस्स सरीरय उरा

अरहित भव्य हितमासि । अखलकिबहिसूसिय अलङ्कृतव्यवपुधावनेव । धानरवरहितयानै वधरहितयानै अथवमान उमानसहित नवविष प्रसुख  
 गुणयोगाभ्यादिव निवेषहित । सिरीएधर्न २ उभयोभेमाश्च २ चिद्ध । योभायेकरी घबू २ अलत वपयाभायमानवक्तो रईद्वै । तएचसीसुंए कयाव  
 वसमाने । तिभरि तेपुद्वक आख्यावभयोवनीषधी । समख्यमयावधा सहावीरव्य । यमव भगवंत श्रीमहावीरकामीना । विचयट्ठोइसखरीरयाधोरालव  
 निजभाषोभा यरीरपते प्रधानपते । आनधर्न २ उभयोभेमाश्च २ पाधर २ त्ता । यान् ए अलत २ घबू २ योभायमान २ देखे देखीने । इइतुइचित्त  
 माहविए दोरसाह । इयदाव्या संलाषयाव्या चिषवेइना यानदितययो मनवेइना प्रीतिवधीद्वै वेइना मननेदिपै । परससीमर्वासिए । परस उरकव

इ मत्स्यपंतुष्टं वृष्टं पाः विस्मितं तुष्टं च तोष्य विव्रं मनीषं च तत् वृष्टतुष्टविभ्रं यथाप्रवर्तते, एवं ज्ञानदित इव म्मुस्रसीभ्यतादिजावै ससु  
 त्ति मुपनतः ततएव न विदितं च न विदितं सौ रेव सधृष्टतरसा मुपनत न पीडमवेति न पीडितः पीडितं माप्यायन मनसि यस्य स तथा ॥ परम  
 सामकसिद्धिः न परमं सीमनस्यं सुमनस्कता सञ्जाल यस्य स परमसीमनस्वितः तद्वाः स्यादसीति परमसीमनस्विकः ॥ इति सवसविसधप्यभाष्ये  
 यत्पति न इववसान विसर्प्यं द्विसारं ब्रह्म इवय यस्य स तथा स्रक्वार्थिकानि ज्ञानानि प्रमोदप्रकर्यप्रतिपादनापार्थीति ॥ दक्षधृष्टं एगोसोएवस्यतेति ॥

। जाय श्रुतीय श्रुतीय उवसोर्नमाणा पासइ पासइता इठतुठविश्रमाणादिपु पीडमणे परमसोमणासिपु  
 - ,सुवसयिसधप्यभाणाहियपु ज्ञेयैव समणे जगव महावीरे तेषैव उवागाक्कुइ उवागाक्कुइज्ञा समण जगव  
 हायीर तिरकुसो श्यायाहिण पयाहिण करेइ जाय पञ्जुवासइ स्वंदयाइ, समणे जगव महावीरे स्वदय क  
 । स्वायणसगोष पृथययासी, से पूण तुम स्वदया सावत्यीपु णयरीपु पिगारुणण नियठेणं वेसात्तिसावपुण

समनस्कपया पाप्मा । इति सवसविसधप्यभाष्ये इति । इत्यनेन वसेवरी विद्यारपाप्माहै इत्येव जेइतो एववा स्वदक । ज्ञेयवसन्नेभगवमहावीरे । किञ्चा  
 नमव भयवत योमहावीरस्वामीहै । तेवैववयामक्कइ र ता । तिञ्चा भावै तिञ्चा पावीने । समजभगवमहावीरे । नमव भगवत योमहावीरे स्वामीप  
 ने । तिक्कतापायादिश्वययादिश्ववरे । योमवार जोमवा पासावी माही प्रदुचिवा करै । ज्ञावपञ्जुवासर स्वदयाइ । भावपु वाही नमस्कतरकरी से  
 शाकरै वेसुइइ इसे यामरसे । समनेभगवमहावीरे । यमव भयवत योमहावीरस्वामी । स्वदयकथापञ्जुवासर । स्वदकप्रते ज्ञात्तायनगोचरतावची प्रते ।  
 एववयाषी सेइवसंदया । इम जइताइया ते निये वेसुइइ । सावलीएवयरीए पिगसएवविचठेवं । यावत्यी नवरीये पिगसनासे निर्दोषसाधु । वेसा  
 तिरवावएव । योमहावीरना वचन सुचिवाणे रमिइ तिसे । इवमस्त्रेवपुचिइइ । इसे भावैये पूजा । मागवाकिंसधयतेसोए । वेसापथ । मगवइयनाग क  
 पना धूं सोइ यंतसदिताहै एववा प्रवतेसोए । श्वर रचितसोइहै । एवं तिसवोच भिदे । ज्ञावज्जेनेवममथतिए । यावत् चिञ्चा मावरी

इणमस्यैव , मागहा ! किसस्यतेओए स्युणतेओए एव तथैव जाव जेणेव ममस्यतिए तेणेव हह्यमागए , से  
 णुण खदया ! अठे समठे , हातास्यत्यि जेयिय ते खदया ! स्युयमेयाकवे स्युज्जत्यिए च्चितिए पत्यिए मणी  
 गए सकप्ये समुप्यज्जत्या , किसस्यतेओए स्युणतेओए तस्सयियण स्युयमठे , एवस्सलु मए खदया ! चउत्थिहे  
 खीए पयासे तजहा—दव्वत खेसत काठत नायत । दव्वतण एणेओए सस्यते १ खेत्ततण खीए स्युसखेज्जात  
 जोयणकोकाकीतं स्यायामविस्कनेण , स्युसखेज्जात जोयणकोकाकीतं परिस्येकेण पयासा , स्युत्यि पुण  
 से स्युतं , काठतण खीए नकयाहनस्युसि नकदाहनत्रयह नकदाहनत्रयस्सइ त्रयिसुय त्रयतिय त्रयिस्स

समीपहे । तेवदव्वस्यमागए । तिहा अतावहा थाया । सेवपयदरा । तेनिये खेखदव्व । यइसमइ । एपव समव सुज्जे खदव्वकइ । वतापत्थि । वता  
 भी सखधे । खेयियत्तेखदरा । त्रिकापत्थि यपुन ते तुभने खेखदव्व । ययमेवाकवे । एएतादयकपं । ययमत्थिए । थायवियय । च्चितिए यत्थिए । च्चितित  
 यभीट मावनाखप । मथागएवंकपेसुएपत्थिज्जत्या । मन सवधी मननेयिये गया संजय विचारखपयो । किसस्यतेओए । स्युं साकयतसत्थितहे । ययते  
 भाए तस्यवियवययमठे । साक यतरत्थित्थे तेवभापत्थि यपुन वं यत्थावमारे, एयवव्वे । एवखसुमएखदरा । वम तिये मी खेखदव्व । वत्थिविखेवापपस  
 सेतवव्व । वार भेद साक कया तेकईहे—दव्वया खुत्तया आसया भावयो । दव्वयो १ खेवधी २ कावधी ३ भावधी । दव्वयाखएमखोए ययते । दव्वयो  
 यथापिक्कायमय एव दव्वगतव्वधी खोव यंतसत्थितहे । खेतथायंसाएयसखेज्जाथायोयत्थावाकीयोथा । खेवथा साक नेवपर्यंतव्वयो ययंकाती खोवज  
 भी आतावात्थि वर वम च्चित्थिये यानयो वम खधीय्ये यथाय्ये तेयसक्याती ययंकाती खोवजनी कोजाकात्थि । यथायामवियक्यमेव यसखेज्जा  
 यानायवकावाकीयोपापरिक्खे वेव यत्तया यत्थियवसेयंत । यथायमदीवपचे विव्वमभियद्वारयव्वे ययक्याती खोवजनी कावाकोवाकीरोने कया साक  
 वे वयो तयावतापंत एतसे यतसत्थितहे । कावयायंसाएयकयादव्वसि । यत्थयो साक तहीकट्टेर मसुता एयावता यतीतकात्थि कट्टेर मसुता वम न

पञ्चाशिकापस्यैकद्रव्यत्वा प्रोक्तस्यथान्तो सौ ॥ आयागमविकसनेति ॥ आयागो दीप्यं, विक्रमो विस्तारः ॥ परिस्वेदेवंति ॥ परिचिन्ता ॥ द्रुवि  
 सुहति ॥ अमवत् इत्यादिनिय पदैः पूर्वोक्तपदानामेव तात्पर्य मुक्त ॥ पुर्वेति ॥ प्रुवोऽन्वयत्वात् स्या नियतरूपोपि स्या दत्तत्वात् ॥ चिद्यएति ॥  
 नियत एकस्वरूपत्वात् नियतरूप आर्वाचित्तोपि स्या दत्तत्वात् ॥ आसएति ॥ आसत्वात् प्रतिफलसद्भावात् सद्य नियतकालायेष्यपि स्या दित्य  
 तत्वात् ॥ अस्वएति ॥ अस्वयो द्यिमनागित्वात् अथ च अतुतरप्रदेशायेष्यपि स्या दित्यतया ॥ अथप्य स्तत्रप्रदेशाना मध्यपत्वात् अ  
 यत् इत्यतप्यपि स्या दित्यात् ॥ अथविति ॥ अथवित् पर्यायात्कामनत्वात् अथवित्वात् किमुक्त प्रथमिति नित्यइति ॥ वक्ष्यपञ्चवति ॥ अर्थाभिप्रेया  
 एकपञ्चकालस्याद्यः एवमन्येपि शुक्लपुपयवा स्तद्विधाया वाररस्कथाभा अशुक्लपुपयवा आभूमा सूक्ष्मस्कथाभा ममूर्तानात् ॥ नाद्यपञ्चवति ॥ आ  
 डय, ध्रुवे णिपाए सासए अस्करु अक्षरु अथठिणु णिसि णित्यपुण से स्यते ३ । नावर्तण छिणु अणतायस्य  
 पञ्चधा, गधरसफास । अणता सटाणपञ्चधा, अणता गुरुपलकायपञ्चधा, अणता अगुरुपलकायपञ्च  
 धा, नित्यपुण से स्यते ४ सेत्त खदया । दक्षत छिणु सस्यते, खेक्षत छिणु सस्यते, कालत छिणु अणते,

धा । अथकारमवद । तथा नदी अदरे रत्नानकासि नद्रे एतापताहै तथा । नक्षत्रारणमविसर । नदीकदरे यनागतकासि नदी कुले एतापता ।  
 ध्रुविसुदमवतिथ अविच्छतिव ध्रुवेचिरएसाद्य । यतीतकासेदुता यत्नमागतकासि कुले अथसायानी एक स्वरूपवी नित्यत यापता । अ  
 कार एष्यए अथठिर चिन्ते । दिनाराजरो अथमा प्रदेशायेष्यते चिन्तते नदी । अथचित्त एतदेनित्यहै । अथिशुक्लसेपते । नदी यती तदगो अत एतके  
 यपतहै । भावयाहलोए । भावयो साह । अथतावक्ष्यपञ्चधा । अतता यथना पर्याय एकगुणकासादिति । गधरसफास । गधरसफासना पवित्रकायना ।  
 अथताठठाअपञ्चधा । अतता सफासना पर्याय । अथतागुरुपलकायपञ्चधा । अतता आदरे अथने गुरुपलकायपञ्चधा । अथतागुरु  
 अथने तथा अमूर्ती अगुरुपलका पर्याय । अथिशुक्लसेपतेसुदरेया । नदी यती तदगो अत एतके भावयो पवित्र अतताहै ते एष्यद्वे । इत्यर्थोक्तोपपद्यते

अप्याया ज्ञानविज्ञानया मुक्तिकसाया विभक्तपरिच्छेदा अन्तःपुरस्यपुण्याया श्रीदारिकादिपरीरा स्यामित्य इतरेषु काम्यकारिद्वयाधि जीवस्यरूप  
वाचित्यति ॥ जीवपतयद्यागुच्छति ० एतेन समर्थ सिद्धिप्रससूत्र मुपसङ्गत्वा साधारणुभाषाय सूचित स्वच्छप्रमयेय ॥ अविपतेरुद्रपाइमेपाक

नायतं छांए सृणते, जीविय ते स्वदया ! जाव सस्यतेजीवे सृणतेजीवे तस्सविपण स्यममठे, पूवस्ससु जाव  
दसुतण एगेजीवे सस्यते, खेततण जीवे स्यसस्वेज्जपणसिण स्यसस्वेज्जपणसोगाठे, स्यात्सिपुणसे स्यते, का  
एतण जीवे नकदाहनस्यासि णिसि नत्सिपुण से स्यते, नायतण जीवे सृणतानाणपज्जवा, सृणता दस  
णपज्जवा, सृणताचरित्तपज्जवा, सृणता गुरुपलज्जपपज्जवा, सृणता स्यगुरुपलज्जपपज्जवा । नत्सिपुण

सुत्तपासोपसयते । द्रव्यही ज्ञान धर्मसहितहै, योग्यो लोकार्थि धर्मसहितहै । ज्ञानधर्मोर्थाएसयते । ज्ञानही लोक धर्मरहितहै । भावधर्मोपसयते ।  
भावधो पवि ज्ञान धर्मरहितहै । विदियवतेस्वदया । जेपवि धपुन दनी च वाक्कासंकारे, वेचद्व । जावसयतेजीवे स्यतेजीवे । जावप् धत सहितहै  
जाव धंत रचितहै जीव । तस्सविपणसयमी । तेजसो पवि धपुन धंवाक्कासंकारे, एपव ज्ञानधर्मो । एपससुजावद्वयधर्मो । इम निये यावत् द्रव्यही च वा  
क्कासकारे । एतेजीवेसयते । एकलोभ द्रव्य धर्मसहितहै । सुत्तधर्मोपधीवेधसुवेज्जपणसिए धसवेज्जपणसोगाठे । जेवयो च वाक्कासकारे, जीव धसं  
स्यात परेमाक्कासहै धसस्यातपरेय धरगाठहै । अत्थियवसेयते । हे वसो तेजना धत, धंतसहितहै । ज्ञानधर्मोर्थावे स्वयाराज्यासि । ज्ञानही च वाक्कासका  
रे जीव नदा क्कारे नदुता एतायता यतोतक्कासहैतं दसमानक्कासहै धनामठक्कासहै । चिच्छेत्सिपुणसेयते भावधर्मोपधीवे । नित्यहै नही वसो तेर  
ना धत एतसे धनतहै । भावधो च वाक्कासकारे, जीव । अथताधावपधवा धर्ताराधस्यपधवा । धमता धानना पर्याय धर्मता दर्शनता पर्या  
य । अथताचरित्तपधवा । धमता चरित्तना पर्याय । अथतागुरुपधपधवा । धमता गुरुधपु पर्याय ते श्रीदारिकापरीर धानवीने । अथता अगु  
रुपधपधवा चरित्तपधसेयते । धमताज्ञानस्वद्रव्य धमवा श्रीवस्वरूप धार्योने । नही वसो तेजनाधंत एतायता तेजना धतहै । सुत्तद्वयधर्मोर्थावेसयते ।

पञ्चाङ्गिकायमर्थकद्रव्यानां श्लोकस्य सान्त्वो वी ॥ प्रायामो वैतप्ये, विक्रमो विक्रारः ॥ परिच्छेयेच्छति ॥ परिधिना ॥ नूति  
 सुशति ॥ अथर्व इत्यादिभिद्य परैः पूर्वोक्तपरदानमेव सास्य मुक्त ॥ युवेति ॥ युवोऽथस्तत्वात्, सवा निपतरूपोपि स्या दत्तप्राह ॥ अथप्यसि ॥  
 नियत एकस्वरूपत्वात् नियतरूपः कादाचित्कोपि स्या दत्तप्राह ॥ सास्यति ॥ प्रायतः प्रतिशब्दसन्नायात् सध नियतकासापेक्षयापि स्या दित्य  
 त प्राह ॥ अथप्यसि ॥ अथपो दविमागित्वात् अयं च ध्युत्तरप्रदक्षापेक्षयापि स्या दित्यतयाह ॥ अथप्यसि ॥ अथय स्तरप्रदेशानां मध्यपत्वात्, अ  
 यश्च द्रव्यतयापि स्या दित्याह ॥ अथप्यसि ॥ अथस्थितः पर्यायाद्यामसन्ततया अथस्थितत्वात्, किमुक्त प्रापति नित्यवति ॥ अथप्यस्यति ॥ अथयिषीया  
 यस्कारुकासत्याहारः यथमर्थेति, पुरुसपुत्रयंवा काद्विषीया भारररक्त्यानां अणुपुत्रपुत्रया अणुमां सूक्ष्मरक्त्यानां समूर्तानाञ्च ॥ भावपञ्चवति ॥ अ

द्वय, धुवे णिपपु सासपु अरकपु अक्षपु अथठिपु णिसे णित्यपुण से अथते ३ । नाथनण छिपु अणतावया  
 पञ्चधा, गधरसफास । अणता सठाणपञ्चधा, अणता गुस्यलज्जयपञ्चधा, अणता अगुस्यलज्जयपञ्च  
 धा, नित्यपुण से अथते ४ सेत्त स्वदया । दक्षत छीगे सथते, सेत्तत छिपु सथते, कात्तत छिपु अणते,

वा । अथधारमभर । तथा नदी कथेर वत्तमात्रकासे अथे एतावताहै तथा । मन्वयारमभदियार । नदीकथेर पनायतकासे नदी दूखे एतावता ।  
 भुवि सुभमभतिव भदियतिव धुवे अथप्यस्यार । अतीतकासे इता अत्तमात्रकासेहै पनायतकासे दूखे अथप्यस्ययी एव स्रक्ययी नियत प्रासतो । अ  
 थार अथर अथठिर अथि । नित्यायनदी केवना प्रदेशापेक्षये अथठुं नदी । अथस्थित एतथेति अथै । अथिपु अथेपते । नयो वधी तेवनी अत एतसे  
 पथताठठा अथका । अतता अथानना पर्याय । अथतागु अथपुत्रपञ्चधा । अतता प्राथर अथने गुस्यलज्जयपञ्चधा । अततागु अथपुत्रपञ्चधा । अततागु  
 अथने तथा अथुमी अथपुत्रपु पर्याय । अथिपु अथेपते अथेपते । नयो वधी तेवना अत एतसे भावयो पञ्च अतसे ते एव अथ । अथयाका अथप्यते



नवपर्याया ज्ञानविक्षया सुदुर्लभाया विभागपरिच्छेदा धननाशपुंसपुनर्याया श्रीदारिकादिगरीरा स्यान्नित्य इतरैर्तु कामञ्जादिद्रव्याणि जीवसस्य  
 चाभित्यति ॥ अविपत्यययपुञ्जलि ॥ धनंन समर्थ सिद्धिमससुत्र मुपसञ्जलत्वा धीनरभूधास्य सूचित साधुद्रुपसप्येय ॥ अविपत्येखदपारमैपाक

नाथयं तेषु सृणते, ज्ञेयिप ते स्वदया ! जाय सस्यतेजीवि सृणतेजीवि तस्साविषण स्यममठे, एवस्वतु जाय  
 दस्रतण एगेजीवि सस्यते, स्वेत्ततण जीवि स्यसस्वेजापणसोगादे, स्यस्यिपुणसे स्यते, का  
 लतण जीवि नकदाहनस्यासि णिसि नस्यिपुण से स्यते, नाथतण जीवि सृणतानाणपज्जाया, सृणता दस  
 णपज्जाया, सृणताचारित्तपज्जाया, सृणता गुरुयलजायपज्जाया, सृणता स्यगुरुयलजायपज्जाया । नस्यिपुण

येनधासोवसयते । द्रव्यधी काञ्च धनसहित्तथै, वेनधी सोकपणि धनसहित्तथै । कासधो सोक धनरहित्तथै । भावधोसोपपचते ।  
 भावधो पणि साञ्च धनरहित्तथै । जेरिधसत्तथेदया । जेपणि धपुन नधी च वाक्कासंकारि, वेखदक । जावसधतेजीवि धस्यतेजीवि । मायप् धन सहित्तथै  
 जीव धन रहित्तथै जीव । तस्यहित्तथयमथे । तेदनी पणि धपुन धंवाक्कासंकारि, एवस जावथा । एवस्यतुजावदस्यधोच । इम निये यावत् द्रव्यधी च वा  
 स्यात्तकारि, । एतेधीवेसधते । एवजीव द्रव्य धनसहित्तथै । येनधास्यधीनेपसवेज्जपयसिए धसवेज्जपयसागाते । येनधी च वाक्कासंकारि, जीव धस  
 स्यात परिमासकथै धसस्यावपदेय धसमाठथै । धतियपचसेधते । धधी तेदनी धत, धनसहित्तथै । कासधोचधीने सक्कासंकारि । कासधी च वाक्कासंका  
 रे जीव नधी कथेर्न ननुता एतावता धनीतकातेदुता नतमानकालेधै धनमायदकासोदुस्ये । सिधेसत्तिपुससेधते भावधासधीने । निसस्ये नधी धधी तेद  
 ना धत एतथे धनतथै । भावधी च वाक्कासंकारि, जीव । धसताधास्यधया धधंतादस्यधयधया । धनता धानना पज्जाय धनंता दर्शनना पर्या  
 य । धसताधरित्तपज्जाया । धनता चात्तिभा पर्याय । धसतागुरुयलजायपज्जाया । धनता गुरुधमु पर्याय ते श्रीदारिकयरीर पावधीने । धसता धगु  
 रयलजायपज्जाया चात्तिपुससेधते । धनताकामस्यद्रव्य धधया धीवसकप्य धाधोने । नधी धधी तेदनीधत एतावता तेदनी धतथै । सेसदस्यधोचधीनेसधते ।

ते जाय किं सतासिद्धी अर्थात्सिद्धी तरसवियथवं अथमठेऽप्ययमुमएयदया अर्थात्सिद्धी पणता तंजहा दक्षुं येत्तुं कासुं जायतेति, दयतेषु य  
 पासिद्धिति ० इह सिद्धिं पद्यापि परमार्थतः सकलकर्मस्यप्रपा सिद्ध्यापारकाशादेवैकपाथाः । तथापि सिद्ध्यापारकाशादेवप्रत्यासक्त्ये न परमात्मा  
 रा पृथिवी सिद्धिं कृत्वा ० किञ्चिद्विषयसाक्षिप्यपरिच्छेदेर्वाति ॥ किञ्चिन्म्युमनस्युत्पत्त्याधिकं द्वे योश्चमयाते एकमपपञ्चाशदुत्तरे नयतइति ॥ यस्यममरुं  
 से ष्यते संस्र । दक्षुं जीवे सस्यते, संस्रतंजीवे सस्यते, कालतं जीवे ष्यणते, जायतं जीवं ष्यणते, जियिपण  
 से सवदया पुच्छा । ष्यतासिद्धी ष्यणतासिद्धि, तस्सावियपुण अयमठे, मणु चउत्तिहासिद्धी पयाप्ता तजहा  
 दक्षुं ४ दक्षुंण प्णासिद्धी सस्यता संस्रतण सिद्धी पणयालीसजोयणसयसहस्साइ अ्यायामविक्रनेण, पु  
 गाजोपणकोकीयायालीससयसहस्साइ तीसचसहस्साइ दीयायअ्युत्तणापयो जोयणसणु किञ्चियसेसाहिणु प  
 रिस्केयेण पयाप्ता, अ्युत्पुणसेष्यते, कालतंण सिद्धी नकदाइ नस्यसि, जायतंय जहा लीयस्स तहा

तरुं दक्षुंजी जाय अतसिद्धतरे । येनपासुयते । येनयो पच्चि अतसिद्धतरे । कासुपाप्पावे अयते । कासुयी पच्चिबीय अंतरेत्तिहते । भापयंपयत्ते । भाव  
 बी पच्चिबीय अतरत्तिहते । केचिदर्थस्यदयापुच्छा । येपच्चि अयन अं वाक्कासंकारु, वेत्तदक पूयां । सयंतासिद्धी । अंतसहित सिद्धिमिक्कात्ते अ  
 ववा अयंतासिद्धी पयच्चिअव । अंतरेत्त सिद्धिमिक्कात्ते तेजभा पच्चि अयुन । अयमठेइदया । एयर्थेइ वेत्तदक । मएयं अयुयस्यिद्धासिद्धीपयत्ता  
 तजहा मी रम विदे अंतरेत्ते सिद्धिमिक्का अवी तेकवेत्ते—एवंपोत्तंणसिद्धीसयंता । दस्ययी एव सिद्धिमिक्का तेजनी अतरे तेसाटे अंतसच्चि  
 ततरे । येनया अंसिद्धीपयत्तासीसजापयत्तससहस्साइ अयायामविक्रनेत्तं । येनयी सिद्धिमिक्का पैतलीससाख भाजन प्रमाअ पायान अीवी त्रिकमकजता  
 पाहसपवेत्ते । एया जापयत्तावी । एव जाजतनी काओ । वायालीसंसायसहस्साइ । अयासीसत्ताअ । तीसयसहस्साइ । तीसयसहस्साइ । वाकियपयत्तापयत्ते  
 भापयत्तए । दायसे अणुअपयत्तस थाअन । किञ्चिद्विषयसाक्षिप्यपरिच्छेदेव पयत्ता । कांरुएक पियेयाधिक एतसे अंरुएकअंवा धायभाप विदेयापिअ परि

नाणिपयसा । तस्यदक्षतं सिद्धीं सस्यता, स्वेतवीसिद्धी सस्यता, कालतं सिद्धीं स्युणता, नावतं सिद्धीं स्यु  
णता, जंविपतं स्वदया ! जाय किं स्युणते सिद्धे तथैव जाय दक्षतण एणिसिद्धे सस्यते, स्वेसतण सिद्धे स्यु  
सस्येज्यपुंसिपु स्युसस्येज्यपुसोगाते स्युत्थिपुणस्यते, कालतण सिद्धे सादीपुस्यपज्यवसिपु, नत्थिपुण सेस्यते,  
नायतण सिद्धे, स्युणता णाणपज्यवा स्युणता दसणपज्यवा, स्युणता स्युगुरयज्यपज्यवा, नत्थिपुणसेस्यते  
सेस । दक्षतंसिद्धे सस्यते, स्वेसतंसिद्धे सस्यते, कालतं सिद्धेस्युणते, नावतं सिद्धेस्युणते, जंविपतं स्वदया !  
इमेयारुये स्युस्युत्थिपु चित्तपु जाय समुप्याज्यत्या । केषुवा मरणेण मरमाणे जीवे वहुइववा हायइववा तस्स  
चियण स्युपमठे पुवससु स्वदया ! मपु दुविहे मरणे पयसि तजहा—यालमरणेय पाणियमरणेय, सेकित

पिहे । पालिपुरसेधते । यसा तसिदिनायव एतथे यतसहितहे जालवी च पाप्यासंकारे सिद्धिमिळा । नक्यादिनासिं ३ । नवी कदेर नदुर एतावता  
इदथे इत्थे । भावपायज्यवायापयसतज्यभाविबववा । भावयो यपन जिन सोकनेक्या मिन सिद्धिमिळाकववी । तस्यदवयोसिद्धीसयता । तिवा द्रव्यवी  
सिद्धिमिळा यत संहितह । सुेषयोसिद्धिसयता । सेवयो सिद्धिमिळा यतसंहितहे । काक्यासिद्धियनता । काकवी सिद्धिमिळा यतरहितहे । भावयो  
सिद्धीसयता । भावयो सिद्धिमिळा यतरहितहे । अविचय तेसुदया । सिद्धेपधि यपुन तेसुदक । इमेयारुये । एववा कपेवरी समुकथे । यथात्थिएत्थित  
ए । यथात्थियय थिताकय । ज्ञापयसुप्यथित्या । वावतु यज्यव यपयो । केववामरुवेवमरुमासेवीवेवइववाहायववा । किसे मरुथे मरुतीयकोवीव  
वथे वंसारना कथवावी कोववा वथवा ससारतीहातिसको वीवनीवानि । तस्यविययपयमठे । तेवने पधि यपुन च पाप्यासकारे, यथकथ्या । एवंसुव  
यदया । इम मिये देवुदव । मपुदुविपेवमरुथेपयता तजहा । मी वेपकार मरुवकथ्या तेकथे—यालमरुथेव । वावमरुथ १ यपुन । पडिबमरुथेव ।  
पडितमरुथ २ यपुन । सेकितंयासमरुथे २ दुवाससविपयवते तजहा । ते स्यु वासमरुथ ते वासमरुथ वारे मकारुनी कथ्या तेकथे—वसवमरुथे । मृ

ति ॥ वसतो बुभुक्षापरिगतस्तेन वसवसायमानस्य धयमद्यौ । व्यथ्यतो मरुश्च वसवस्मरुश्च तथा वसुं नोन्द्रियवशेन । व्यसस्य पीडितस्य रीपवृत्तिकाक  
पाशिसवसुषुः । शसतस्तेषु य मरुश्च तद्दशार्तमरुश्च तथा शन्तः । शसस्य द्रव्यतो ऽनुभूततोमरुदेर्भाषतः । सृतिशारस्य यन्मरुश्च तदन्त शस्यमरुश्च त  
या मस्ये षवपय मनुष्यादेः । सतो मनुष्यादावेव वदन्तुयो यन्मरुश्च तान्द्रव्य मरुश्च मिदं च मरुतिरक्षामेवेति ॥ सत्योवाकवेति ॥ शुक्ये च श्रुतिकदिना  
ववपाटन विदारश्च इहस्य यस्मि मरुश्चे तच्छक्यावपाटन ॥ विहावसति ॥ विहायस्याकाशे षव वृक्षशाखाशुद्ध्यनेन यत् किञ्चिदवस्था ईशानसम् ॥  
मनुष्येति ॥ यत्रैः पशिविद्यार्थे वृद्धैर्वा भाससुखी । श्यासादिभिः स्युष्टस्य विदारितस्य करिकरप्रसासजादिवशीरोरान्तर्गतत्वेन य मरुश्च तत् पूत्र  
स्युष्टवा यद्मरुष्टवा । यत्रैर्वा कश्चित्स्युष्टस्य य तत् पूत्रपुत्र ॥ दुवालसविश्वेवंवात्मरुष्टवेति ॥ षपसकालवा दस्या श्येमापि शसमरुश्चान्त याति

यालमरणे , वालमरणे दुनालसाविहे पशुस्ये तजहा—धलयमरणे वसदृमरणे श्रुतिसहमरणे तस्मैवमरणे नि  
रिपकणे तस्यकणे जलप्यवसे जलणप्यवसे विसन्नस्कणे सत्योवाकणे वैहाणसे गिरि पिठे , इच्छेण स्वदया !  
दुवालसाविहेण वालमरणेण मरमाणेजीवे श्रुणतोहि नेरह्यन्नयनाहणेहि श्रुष्याण सजोगुह , तिरियमणुदेव

ये विवदितलाटकरवा मरु, यववा यमंशो व्यटहाधमरु १ । वसदृमरुश्च २ । इन्द्रानेवसि यवी मरु २ । अतीसहमरुश्च ३ । शशयकोमरु इक्ष्मी तामरादिक्  
मावधी सानिधार ३ । तामरमरुश्च ४ । मनुष्य मरीमनुष्य शोच तिसंघमरी तिसवहाय ४ । मिरिपवृत्ते ५ । पवतवी पवी मरु ५ । तकपवृत्ते ६ । वृषयो प  
वोमरु ६ । जस्यवसे ६ । पाशोमाहि मनेयावपी मरु ७ । जस्यवप्यवसे ८ । अश्विमाहि मनेयावपी मरु ८ । विशमज्जवे ९ । विष भयवज्जरी मरु ९ । सत्वा  
यावृत्त १ । यत्र कुरी मसुखवी रेहीने विदारै विवमरुश्चमरे १ । वेहावसे ११ । षव शाखादिक् वी पाशीवाय मरुतेवेहावस मरु ११ । तिवापिठे १२ । सत्वा  
सतकमाहिपवीमरु १२ । इहोपवृत्तवालसाविहेव शसमरुश्चमरमावेवीवे । इत्यादि वारे मरु भावमरुश्च षपसवज्जवी नीकाइपवि वायमरुश्च निवेच  
री मरुतावकी वीव । यवतेविठेरुवमवप्यवृत्ति । अर्नतेवरी गारवी यवपवृत्तेवरी । यव्यावृत्तेवरी । यव्यावा वाजा वीवपते वीवे कवे । तिदि

ना मरुतेन प्रियमावहति ॥ कान्तं वाहति ॥ संसारवृत्तेन पुत्रं यद्विधीयते, इदं द्विचरं पुत्रावहति ॥ पादपस्येवो पगमन  
 मस्यं दत्तपापवत्यान, पादपोषणमपं इदं च बहुविधावारपरिवारविषयव्यय मयतीति ॥ नीहारिमेवति ॥ निर्गुणं यत्त निहारिम प्रतिभय  
 या विद्यत तस्ये तत् मरुतेवरस्य निर्हार्यात् कामिणीरिमंतु योवत्या विद्यतइति यथा म्यवेह स्थाने इक्षितमरुच मनिधीयते, मरुचकमत्यास्या

शुणाडयषण शुणयदगा दीहद्व वाउरतससारकतार शुणुपरियदइ, सेत वाउमरणेण मरुभाणे वहुइ वहुइ  
 संशयाउमरणे । सेकित पानियमरणे, पानियमरणेदुविहे पयात्ते तजहा — (अथसख्या १०००) पाठ्यगामणेय  
 नत्तपञ्चस्काणेय, सेकित पाठ्यगामणे पाठ्यगामणेदुविहे पयात्ते तजहा—नीहारिमेय शुनीहारिमेय नियमा  
 शुपानिक्रमे सेतं पाठ्यगामणे, सेकित नत्तपञ्चस्काणे, नत्तपञ्चस्काणेदुविहे पयात्ते तजहा — नीहारिमेय

यस्युद्धेदयसारय च यववयस्य दीहमथ । तिय च मरुच देवपतिवेषाने याम्नायाहे यादिमही अगुन याने धंतमही धोवधीया यदा भास । वाउरत  
 सधारकतारपञ्चपरिवार । अगानिसधारकय क्वातार सटवीमाहि परिव्यमयकुरै । सेतवाउमरुचोउमरुमावेउठरं २ । तिय वाउमरुचोउरी मरुतोमका  
 मोर सधारन यथयकरो ज्योययै । सेतवाउमरुचै । तिय वाउमरुचक्या । सेकि तं पविममरुच २ दुविहे पयात्ते तजहा [ य १०० ] ते शु पविम  
 मरुच ते पविम मरुच वेभेदे कथा निवर्द्धै—पाथावयमवेय १ । पादप कधीये उच तेजनीपर व्यभपये रज्जवा । भयपयक्यउचिव २ । यौवा भात पय  
 क्वा च दूय पविममरुच २ । सेकितापाथोयमवे २ दुविहे पयमं तजहा । ते कं पादपापगमन पविममरुच पादपापगमनपविममरुच तियेपकारतो  
 कथा तज्जैह—नीहारिमेय । मरुमाविमरे तेजना कसेरना नीहारयाथाय तेनीहार मरुचकधीये १ । यनीहारिमेय । पवतादिके मरे तेवमो नी  
 हारया नवाप २ । तियमापपविमसे । तिययो पविममवा मकरै वाव पय इसावैमवो । सेतपाथोयगमेय । ते पादपापगमन मरुच कथा । से  
 कितावयपयक्यावे दुविहे पयमं तजहा । २ । ते कं भयप्रत्याप्यान मरुच तेमभप्रत्याप्यान मरुच २ । वेमकारे कथा तेवर्द्धै—नीहारिमेय यनी

त्ति ॥ वसन्तो वृषुणापरिगतत्वेन वसवतापमानस्य वषमादा । व्यसन्तो मरुत्वं धसन्मरुत्वं तथा धसुं नोन्द्रियवशेन व्यतस्य पीकितस्य दीपकसिकाक  
 पाकिमशुषुः क्षतसस्वेव य मरुत्वं सद्दृष्टानामरुत्वं, तथा धसन्तः क्षुत्स्य द्रव्यतो ऽनुदृतलोमरादे र्मावतः सातिवारस्य यन्मरुत्वं सदनः शस्यमरुत्वं त  
 या तस्ये प्रवाप मनुष्यार्थे सतो मनुष्यादायैव दद्याद्युयो यमरुत्वं तातम्रय मरुत्वं मिदृश मरतिरस्यामेवेति ॥ सन्तोषाकवेति ॥ धृष्टेय शुभ्रिकादिना  
 व्यधपादन विदारत्वं दृश्यस यस्मि मरुत्वे तच्छब्दावपादनं ॥ विशाखसति ॥ विशापस्याकाशे अवं दृश्यशाखाद्युद्भवनेन यत्न विरुक्तवशा दुर्दानसम् ॥  
 पदुपठति ॥ यत्रैः पश्चिमिद्यै संदेवा माससुष्ये यथासादिभिः स्पृष्टस्य विदारितस्य कश्चिन्नरासनादिधारोरात्मनोत्त्वेन य मरुत्वं तस् यत्र  
 स्पृष्टवा यद्दृश्यात्वा यत्रैवां पश्चिमस्पृष्टस्य य तस् यत्रपुष्ट ॥ दुधाससविशेषवासमरुत्वेवति ॥ उपस्यत्वात्वा वस्या न्येनापि घासमरुत्वात्सापाति  
 घासमरणे , घासमरणे दुधाससविहे पशुत्ते तजहा—वल्यमरणे वसद्दृमरणे श्रुतोसस्रमरणे तल्लवमरणे नि  
 रिपकणे तस्यपकणे जलप्यवसे जलप्यवसे विसन्नस्कणे सत्योयाकणे वेहाणसे गिरु पिठे , इञ्जेण खदया !  
 दुधाससविहेण घासमरणेण मरमाणेजीवे श्रुणतोहि नेरुदयन्नयमाहणेहि श्रुष्याण सजोपुह , तिरियमणुदेव

ये त्रिकविधाठकरता मरु, यदवा यमंभो खडवायमरु १ । वसदमरुत्वे २ । इन्द्रानेवसि पशो मरु ३ । यतोसस्रमरुत्वे ४ । यथाधकोमरे द्रव्यो गोमरादिक्  
 भावही सातिवार ५ । ताम्रमरुत्वे ६ । मद्रुज मरीमद्रुज शोच त्रिनेत्रमरी विषयवशात् ७ । मिदिरपकवे ८ । पर्यंतो पशो मरु ९ । सत्यपकवे १० । उषयो य  
 दोमरे ११ । जलप्यवसे १२ । पाचोमादि प्रवेयवही मरु १३ । खडवायवसे १४ । यस्मिमादि प्रवेयवही मरु १५ । विसमकवे १६ । विषमकवे १७ । विष  
 यवत् १८ । यत्र कुटी प्रसुखको वृक्षीने त्रिदारै विषमरुत्वेमरे १९ । विशाखसे २० । तस्य याथादिक ही पाशोक्त्याय मरु तेनेविशाखस मरु २१ । निहपिठे २२ ।  
 सतजमादिपटीमरे २३ । इवेएशुवाखसविशेष वासमरुत्वेवमरमायेजीवे । इत्यादि मरु तेने वासमरुत्वे उपस्यत्वात्वी जीकार्पयिष वासमरुत्वे त्रिकवि  
 रो मरतायको जीव । यत्रतेत्रिकेरेद्रयममरुत्वेवि । यन्तेकटी गारकी भयत्रायेकटी । यथायसंजाएव । यायवा याका जीवपते जीवे क्वे । तिरि

भा मरुतेन प्रियमाहवति ॥ कण्डवकण्डवति ॥ सघारवर्षमेव नृणां वदतेजीव, इददि द्विर्वचनं नृणांयंइति ॥ पाठ्यपस्येवो वगमम  
 मरुदतपायस्थानं पादपोपगमन इदं च ऋगुविद्याशास्त्रपरिहारनिप्यकमय भवतीति ॥ नीहारिमेयति ॥ निर्द्वारेष निर्द्वारं यत् किहारिमेय प्रतिभये  
 यो विद्यत तस्ये तत् तत्कञ्जेवरस्य निर्द्वारत्वात् धानिर्द्वारिमत्तु योवया विद्यतइति यथा न्यत्रेह स्थाने इद्वितमरुच मनिधीयते, तद्गणमत्याख्या  
 स्थुणाहयचण स्थुणवदग दीहृद् वाउरतससारकतार स्थुणुपरियदइ, सेत वाछमरणेण मरुमाणे यहुइ यहुइ  
 सेषियाछमरणे । सेकित पाठियमरणे, पाठियमरणेदुविहे पस्यते तजहा — (प्रथसस्था १०००) पाठ्यवगमरणेय  
 नत्तपञ्चरकाणेय, सेकित पाठ्यवगमणे पाठ्यवगमणेदुविहे पस्यते तजहा—नीहारिमेय स्थुनीहारिमेय नियमा  
 स्थुपाठिक्रमे सेतं पाठ्यवगमणे, सेकित नत्तपञ्चरकाणे, नत्तपञ्चरकाणेदुविहे पस्यते तजहा — नीहारिमेय

यमणुपदेवपथादयचं यचनवच दीहमव । तिवच मरुच देवगतिवधाते याम्नात्वाहे यादिनही अणुन याने धतनही दोर्षंभावा यदा मात । धाउरत  
 सघारकतारयदुपरियदइ । ऋगुमतिसघाररुच क्तायार यदधीमाहि परिस्रमञ्चकरै । सेतवासमरुचेचमरुमायेकठईव २ । ते ए वासमरुचेकरे मरुतोवका  
 नोइ सघारन यचवेकरो खोवययै । सेतवासमरुचे । ते ए वासमरुचकाणा । सेकि न पठिवमरुचे २ इदिविहे पस्यते तजहा [ य १ ] ते स्तू पठित  
 मरुच ते पठित मरुच वेमेदे क्ताया तेकथैहै—याथावगममयेय १ । पादप च्चथीये एव तेजनोपरि क्त्वापये रहवा । भक्तपञ्चक्याचिये २ । वीर्का भात पच  
 कथा रूप पठितमरुच २ । सेकितपापोवममये २ इदिविहे पस्यते तजहा । ते स्तं पादपोपगमन पठितमरुच पादपापगमनपठितमरुच तेवीपञ्चारनां  
 कथा तेकथैहै—नीहारिमेय । मरुत्साधिमरे तेकना कसेवरना मीहारयोहाय तेमीहार मरुचकथीये १ । यनीहारिमेय । पवताद्विके मरे तेजनो नी  
 हारवा नवाय २ । विवमनापपठितमये । भियवयो पठितमया नकरै हाव या क्त्वावैमयो । सेतपाथावगमये । ते पादपोपगमन मरुच क्ताया । से  
 कितमनापयक्याहे इदिविहे पस्यते तजहा । २ । ते स्तो भक्तपञ्चाप्याग मरुच तेमत्तमत्त/द्वान मरुच २ । वेपकारे क्ताया तेकथैहै—नीहारिमेय यनी

मस्यैव विद्योपरति मेव तैरेव दासितामिति ॥ कस्मिन्कश्चाजान्निवदति ॥ साधैय-अव्यधीवावप्राती मुषती कश्यसकितिरसति । अहदुक्कवाक्यत करि  
तित्करूपपठिषथा ॥ १ ॥ अहनिपदिपिचिता अहवीवापुक्कसागरमुचिति । अथैरभासुवापा कस्मसुमुम्भपिधाकितीत्यादि ॥ २ ॥ इरव ॥ अहिनिय

शुनीहारिमेय , नियमा सपकिक्कमे सेतं न्तपञ्चस्काणे । इञ्जेतेण स्वदया ! दुविहेण पक्रियमरणेण मरमा  
गेजीवे शुणतेहि नेरइयन्नगगाहणेहि शुप्याण विसजोएइ जाय वीयीवियइ , सेत मरमाणे हायइ , सेत  
पक्रियमरणे । इञ्जेण स्वदया ! दुविहेण मरणेण मरमाणे जीवे वहइववा हायइववा , एरणसे स्वदए कञ्जाय  
णसगासे सुदुहे समणजगवमहावीर वदइ नमसइ , नमसइसा एव वयासी , इक्काणिण नते ! तुक्कशु

वारिमेय । उपायवमाहे रई तेवना यरीरना नीवारवाहाय अटवीमाहे रई तेवना यरीरना नीवारवाहाय । शिवमासुपदिहसे । नियय ए पदि  
कमथा अरे वाव पा दिवावे । सेतभत्तपयक्काव । भत्तप्रत्तासवान मरक्कहीवे । इवेतेवसुदया । इत्यादिक्क करी च वाक्कासुकारे, हेवदव । दुविहे  
एपदिमरक्कमरमावेजीवे । दुविचयकारेने पठितमरक्के पारावनादिक्करोकरी मरतावकोवीय । अचतेहिरेरइयभवप्यहरे शिवापाविसिवाणर । यनतेरे  
करी नारकोमा मरपइरीरी यत्तवा थात्तान विसुअाहे पदपोकरे एतावता अतपीतिचमक्कय सुधाराणी प्रापयोजीव पसगाकरे । अावयोइवयर ।  
वावए अमार अतकरे जीवक्कतवपकरी मावकाव । सेतमरमावेियायर २ । तिए पठितमरक्के मरदीवका सुधाराणीवानि करवापी जीववषु वामिपमि ।  
सत्तपदिममरक्के २ इवेतेवसुदवा । तिए पठितमरक्कको । एतके वेवदव । दुविहेयमरक्केमरमावेकीवे वहुदववाहावदवा । वेपकारने मरक्करी मर  
तावकाजीव सुधाराणा वववाकी जीवववे एने सुधाराणीवानिपी वीवनीवानिपीय । एक्कसेवदए । इवा एववे अक्का च वाक्कासुकारे, तेवदव । अ  
वाववममातेवदुहे । कात्तावननापीव समक्का इक्का तत्वनीवानावाजी । समच भगवमवावीर वदइ वमसइ २ । तिवारे यमच भगवत शिक्करीद्विरम  
योमवावीरवामिने पदि ममक्काकरे वीदीने नमक्कावदपीने । एववमासी । इम अवे । इक्काःमिचमतेदक्कपतिएक्कविन्यक्कवक्कपिवासीनय । वाव



द्विपात्रिंशति ष षासं नियतित चित ये स्ते तथा चार्ताहा अनिबलित चित ये स्ते चार्तं निवर्तितचिन्ताः ष सद्गुणानिति ष नियन्त्र प्रवचन म  
 स्तीति प्रतिपद्य ॥ पत्तियामिति ॥ प्रीति प्रत्यय वा सत्य मित् मित्यव रूप सव करोमी त्यर्थ ॥ ५ ॥ एमिति ष चिन्तीयामीत्यर्थः ॥ अद्गुठिमिति ॥  
 तिरु केयलिपक्ष षम्भ निसामिस्रु , अुहासुह देवाणुपिपया मापान्निधय , तणुणसमणेत्तगवमहावीरे स्वद्  
 यस्सकञ्जायणसगोत्तस्स तीसेयमहहमहालिपाणु पारिसाणु षम्भ पारिकहेइ , षम्भकहा ज्ञाणियज्ञा , तणुणस  
 खदणु कञ्जायणसगोसे समणस्स त्तगवत्त महावीरस्स अुतिणु षम्भ सोञ्जा निसम्भ हठतुठजाव हयाहियणु उ  
 णाणुउठेइ उठेइहा समणत्तगवमहावीर तिसुत्तो अुयायाहिणपयाहिण करेइ करेइहा एवययासी , सद्गुणानि

ष ष वाक्यासंकारे हेमगवन् । तुभारे समीपे केवसीये मञ्जोतकहा, जेधर्म ते सुचिन्तामञ्जो, अदक इसेकहा अका भगवतकहेइ—एहासुहदेवाणुपिप  
 या मापान्निधय । तिमससखदुवे हेदेवाणुपिप तिमकहा पारि विसवमा करको । तएवसमहेमगवमहावीरे । तिवारे यमञ्ज भगवत यीमहावीरक्षामो ।  
 यदयका । यदकमे । अयायवसमासका । कात्यायनयोथीयमे । तीसेसमहह मजाचिन्ताए परिसाण षम्भपरिकहेइ । तिसी मीटी चार्तसेकरोने मीटी  
 पतिपदामेदिये धमपते कहे । यथाअज्ञानावियथा । सधर यतिल्ल धने धमनिज्ज इत्यादि यमअथा ज्ञाचकी । तएवसेअदएवअथायवसगोसे । तिवारे ते  
 यदक कात्यायन गाथनाथो । समञ्जभगवधामहावीरका । यमञ्ज भगवत यीमहावीरक्षामोने । यतियथाअज्ञानाभिसथ्य । समीपे यमसोभका अका  
 अदयपारोने । अद्गुठिजावचियए अद्गु र ता । यपं सतीपयाप्या वावत् यपवी हीया विककां उठेठठीने । समञ्जभगवमहावीर तिकञ्जतोपायाचिन्तयवा  
 चियकरेकरेता । यमञ्ज भगवत यीमहावीरक्षामो प्रते तीजवार ज्योमथा पासाथी मटचिन्ताकरे करीने । एववदासी । इमकहे । अद्गुणानिसमनेचिन्त  
 यपावयव । अद्गुणं हेमगवन् । जे केवसाजानोभाया इयाकपनिपयना प्रवचममाता । पयकसमित्मसतेचिन्तयपावयव । प्रीतिप्रत यववा प्रत्ययमते ए सु  
 सके हेमगवन् । तियधरता प्रवचममाता । ताएमित्ममतेचिन्तयपावयव । वाखुं हेमगवन् । निर्दोषता प्रवचन वचके इल्लव । यद्गुठिमिसमनेचिन्तयपावयव

मस्यैव विशीयस्वति मद् दैवेन दक्षितमिति ॥ पत्न्यकदात्ताविधयति ॥ साधैयं-कण्ठीयायव्रती भुषती ब्रह्मपथकिनिरसति । अष्टदुष्प्रायश्चित्त करि  
 तिकेरेष्यद्विषय ॥ १ ॥ अहनिपदिपञ्चिता ब्रह्मयोग्यादुक्त्वसानरमुचिति । अष्टयेरनमुद्यमया कस्मसुभगापिषाकृतीत्यादि ॥ २ ॥ इदम् ॥ अहनिप  
 श्यनीहारिभेय , निपमा सपक्रिक्त्रिमे सेत्त नक्षपञ्चकाणे । इञ्चेतेण स्वदया ! दुयिहेण पक्रियमरणेण मरमा  
 णेजीवे श्यणतेहे नेरुदयन्नयगाहणेहि श्यप्याण विसजोपुइ जाय यीयीययइ , सेत मरमाणे हायइ , सेत  
 पक्रियमरणे । इञ्चेपुण स्वदया ! दुयिहेण मरणेण मरमाणे जीवे यहुइवा हायइवा , एत्यणसे स्वदए कञ्चाय  
 णसगोत्ते सयुद्धे समणन्नगधमहायीर वदइ नमसइ , नमसइहा एव ययासी , इच्छामिण जते ! तुज्जस्य

शारिसेव । अथाववमाहि रथै तेवना । यरोरना नौशारजाहाय यटथीमाहे रथै निवभा यरोरना नौशारजानहाय । विद्यमासपदिद्वसे । निपय ए पवि  
 वमया अरे हाय पत्र विभावे । सेतमत्तपयवक्त्वावे । भक्तप्रत्यापमान मरयववहीवे । इयेतेवयुरया । इत्यादिभ करी च वाक्यासकारे हेयुरव । दुनिहे  
 यपविमरवेवेमरमावेभोये । दुनिवपकारने पठितमरवे पाररायनादिकरयोक्ती मरतायकोभोय । ययतेविद्वदयभयव्याहरेण परयाचदिससोएव । यनतेरे  
 करी नारकोना भयपदहीकरे यापया याभ्यान विसभाहे यवमाकरे एतायता यतुगीतिश्रमवक्य संसारयो यापयोजीव यसगोकरे । जायवीरवयव ।  
 शारतु संभार यतकरे कोवकर्मवयकरेी मावजाव । सेतमरमाविवावर १ । तेए पठितमरवे मरतीयका संसारनीशानि करवापी योवययु शानियामे ।  
 सेतपठितमरवे १ इयेतेवयुरया । तेए पठितमरवकथा । एतये वेवेदव । दुनिहेमरवेवमरमावेकोवे यहुइरवाहायववा । वेदकारने मरवकरी मर  
 ताववाजीव संसारना यववावी जीवयये यने संसारनीशानियो जीवनीशानिवास । एत्यवसेवेदए । इती एवये कथा च वाक्यासकारे तेयदव । क  
 थावववमानेसुवे । कात्यायनमाजीव समभ्या इभ्या तस्यनौवातवावी । समय भावमहावीरं यद्व इवमंथर १ । तिवाते यमव भगवंत श्रियर्पादिभ  
 योमहावीरया।सोने वदि ममकावरकरे वादीने नमस्करवटीने । एवययापी । इम कथे । इत्यादिभसतेनुअवपमितएकवन्वियवत्तवपनिधामेनय । जाक

विपश्चिन्सति ॥ प्राप्त निवर्तित चित्तं ये स्ते तथा आर्त्ताहा क्षमिष्यन्ति चित्तं ये स्ते आर्त्तं निवर्तिसञ्चिताः ॥ सुदृष्टानिमिति ॥ निरुप्य प्रवचनं न  
 स्तानि प्रसिपद्य ॥ पत्तिपानिमिति ॥ प्रीति प्रत्यय वा सत्य निव मित्यत्र रूप सद्य करोमी त्यर्थं ॥ रोयमिति ॥ चिन्वीपारंसीत्यर्थः ॥ आदुर्धमिति ॥  
 तित् ए केचलिपवस धम्म निसामिसए , सुहासुह देवाणुपिपया मापान्तिवय , तणुणसमणेनगावमहावीरे स्वदं  
 यस्सकञ्चायणसगोत्तस्स तीसेयमहइमहालियाए परिसाए धम्म परिकेइइ , धम्मकहा ज्ञाणियञ्जा , तणुणसे  
 स्वदए कञ्चायणसगोसे समणस्स नगावते महवीरस्स सुतिए धम्म सोञ्जा निसम्म हठतुठजाव हयाहियए उ  
 णाएउठेइ उठेइसा समणनगावमहावीरे तिसुसो स्यायाहिणपयाहिण करेइ करेइसा एवययासी , सुदृष्टानि

ह वाक्कासकरि वेमगवन् । तुसरि समीये वेरवीये प्रथोतञ्जहा वेवर्मने सविवाभयो, सुद्वय रसेकहा वक्का भगवत्तकइहै—एहासुहदेवापुपि  
 वा मापविचय । मिसससुदुवे देदेवातुदिव तिसकरा पवि दिखरसा करणो । तएवसमवेमनसमहावीरे । तिवारे यमए भयवत योमहावीरक्कासी ।  
 एदयक । सुद्वयने । कयावसमाप्तक । कात्तामनयोनीयेने । तीसेयमहइ महालियाए परिसाए धम्पपरिकेइ । तिसी मोंटी चार्त्तियेकरीने मोंटी  
 परिपदनिदिपै धमप्रते कइ । धम्पकहामविचय्या । सुसार पदित्त्य पने धमनित्त्य रत्तादि धमकया ज्ञावो । तएयंसुद्वएकयावसगोसे । तिवारे ते  
 एरक कात्तायन माभनीपयो । समवक्यमयपयामहावीरक । यमए भगवत योमहावीरक्कासीने । एतिएधम्पसोचानिसक्य । समीये धमसाभक्का वक्का  
 इदयमारोने । इहउठेइहावियए उठेइ र ता । एय सतोपपाप्पो यावत् इयवी हीजा विक्कको उठेउठीने । समवभगवमहावीरे सिक्कतोपावाविचयपया  
 विचयदेइकरेता । यमए मयवत योमहावीरक्कासी प्रते गोमपार जोमहा पासावी प्रवविचकारे करीने । एवववासी । इमकइ । सइहामिचभतेविच्य  
 वपययव । सुद्वय वेमयवन् । वे वेरकहातोमया दयाकपतिपवना प्रवचनमाय । पपक्यमिचभतेविच्यवपययव । प्रीतिप्रत यववा प्रस्ययमते ए स  
 यइ वेमयवन् । निपवना प्रवचनमाय । एयमिचभतेविच्यवपययव । वाक्कइ वेमयवन् । मिर्धवना प्रवचन वचये इत्थं । एधुदुमिचभतेविच्यवपययव

एतदङ्गीकरीतीत्यथ षण्य श्रुत्याणांशुर्ब्रह्म दक्षयति, एव मेत शैर्गन्ध प्रथमत्त सामान्यत, षण्य यथै सद्युय वर्यथै तियोग ॥ तद्वमेयति ॥ तथै  
 वेतद्विद्योपलः ॥ अचित्तवमेयति ॥ सत्य मेतदित्यथ ॥ अथरङ्गमेयति ॥ सत्येद्व्यजितं मेतत् ॥ इच्छियमेयति ॥ इष्टमेतत् ॥ पञ्चिच्छियमेयति ॥ प्र  
 तीष्ठित प्राप्तुमिष्टं ॥ इच्छियपञ्चिच्छियति ॥ युज्यपदिच्छा प्रतीच्छाविययत्वात् ॥ तिस्रुष्टि ॥ इतिरत्वेति षण्यथा एव मय्य मते । इत्यादीनि य  
 णन्ते ! निगार्थपावयण, रोपुमिणन्ते ! निम्नाथपावयण, पश्चिमाभिणन्ते ! निगार्थ पावयण, स्युष्टुठे  
 मिण मते ! निगार्थ पावयण, पूर्वमेयन्ते ! तद्वमेयन्ते ! अचित्तहमेयन्ते ! असादिद्रुमेयन्ते ! इच्छिय  
 मेयन्ते ! पञ्चिच्छियमेयन्ते ! इच्छियपञ्चिच्छियमेयन्ते ! सेज्जिय तुज्जे यद्वहसिकद्व, समणान्नाय महार्थी  
 र यद्वह पमसह, यदित्ता णमसहसा उत्तरपुराच्छिमदिसानाय अथक्कमह अथक्कमहसा तित्दहं च कुञ्चियथ

व । उद्यमत्त वराह वैमसवन् । निर्द्वेष मन्वन्वपते एयमीत्तार कर इत्तव । एवमेवमते । इत्य एव वैमवन् ! किम तुम्वेषु । तद्वमेयते । तिमद्दो  
 व वैमसवन् । अचित्तवमेयते । इत्य एव वैमसवन् । इत्यथ । यद्यदिद्वमेयते । सद्येद्वरहित वैमवन् ! एव । इत्यियमेयते । इष्ट एव वैमवन् । एव इ  
 ष्चिन्त । पञ्चिच्छियमेयते । पायवान् एव प्रतीच्छित्त वैमवन् । । इत्यियपरिच्छियमेयते । समक्कात्ते इत्था यने प्रतीक्षा विषयवकी वैमवन् ! सेज्ज  
 यतुम्वेद्वरहितद्व । तेवसा तुज्जेज्जो तिमन्व इत्यद्वेते । समन्वम यवमन्वार्थीरत्तंरत्तंरत्तंरत्तं २ सा । यमथ भयवत् श्रीमन्वार्थीरत्तामी प्रते वीदे नमस्का  
 रत्तरे वीदिने नमस्कारत्तरेते । उत्तरपुराच्छिमदिसानाय अथक्कमह अथक्कमहसा तित्दहं च कुञ्चियथ ।  
 योन्वद्वहमहसु । आनन्वार्त्तात्तव । यावत् येरु रथा वत्तते । एततेद्वेद्वेतेद्वेत्ता । एकानि मूढे मूढीने । द्वेषसमक्षमयवमन्वार्थीरे । चित्तनी यमन्व म  
 न्यत श्रीमन्वार्थीरत्तामी । तेद्वेद्वेद्वेद्वेत्तात्तव २ सा । तिज्ञायते तिज्ञायानीने । समन्वमयवमन्वार्थीरे । यमन्व भयवत् श्रीमन्वार्थीरत्तामीप्रते । तिस्रुष्ट  
 यथादिद्वेद्वेद्वेत्तरे २ सा । योन्वार्त्तात्तव पासावी प्रद्विद्वेत्तरे वीदिने । आनन्वमिद्वेत्ता । यावत्तुम्वे वीदे नमस्कारत्तरे वीदिने नमस्कारत्तरे

इति मयायोग मन्त्राया मन्त्राद्वयप्रधानापी कानि ॥ कानितेजति ॥ कानिचितिना क्वसितः ॥ सोऽपि ॥ श्रीयसोक्तः ॥ पत्नितेजति ॥ प्रकथं च  
 इत्यतिः एव विषय यासौ काननदेनापि स्या दत्त उच्यते कानिप्रमदीयइति ॥ अरारामरवेक्यपति ॥ इह वक्रिमेति वाक्यदोषो ह्ययः ॥ किकपायमा  
 कसिति ॥ एमायमाने एमायतिनाः इत्यामान इत्यर्थः ॥ अथयारेति ॥ अथय तत्सार वेत्यन्यथार ॥ कानायापति ॥ कानासाग एकान्त विजन यान्त  
 पुनार्त् ॥ पञ्चापुरापति ॥ विवचितकालस्य यथा रपुर्वेच सवदेवत्यर्थं ॥ येक्येति ॥ स्वैर्यं चैयसिक्तो विद्यासप्रयोक्मत्स्यार्त्

ज्ञायथाउरशाउय एगतेपुनेह पुनेइक्षा जेणेव समणेजगव महावीरे तेणेव उथागच्छइ उथागच्छइसा समण  
 जगव महावीर तिसुत्तो स्यादाहिणपयाहिण करेइ करेइक्षा जाव नमसइक्षा एवययासी , स्यादिहेणनते !  
 छोए , जराए मरणेणय , सेजहानामए केइ गाहायई स्यागारसि जिजयायमाणसि जेसे तत्य नकनेयइ स्य  
 प्यनारे मासगुए तगहाय स्यायाए एगतमत स्यवक्तमइ , एसमेनित्यारिएसमाणे पच्छापुराए हिथाए सुहा

करोने । एथंनयासो । रसइ । यानितवमतेछाप । समस्तपय हेमयवन् क्वचितवदा साक एवसे कोदसाक । पत्तिसेचभतेछाप । प्रकथं क्वकान्नीव को  
 क हेमयवन् । पातिलपन्तिलभमतेछाप । पारीस प्रदीस यजथा पाठिस प्रसिस हेमयवन् ! साक । जराएमरवेइय । को करी जरा तथा मरवेकरोने ।  
 सेकहानामएकेमाहावर । ते यथा हटातनाम इति कोमसामेचइ, कोरंण्ड वइवतिसेठ वरकोवणे । यगारहिधियायमावसि । घर यन्तिकरो  
 सानावळा घर वसुता वळा इत्यव । जनेतस्यप्रडेनवर । जिक्क ते तिही भोडा पगरवइये । यथयारे । याडा तहीवधर प्रधान । माकगुएतयज्जाय ।  
 मास वथा एइथी वरनीवसु ते मते चहीने । यानाण एमतमतपवइमर । यान्नाये पांते एकांत मशुवरेहित भूभागनेदिये मैके । एसमेनित्यारिएसमाके ।  
 एमे सुभने वसुकाटीके से । पराहापुराए विजाए सुहाए । पथै पविथा हितनेकाणे सुखनेकाणे । यमाए विद्युयथाए पासुनामियताए भविष्ठाए ।  
 यमानेकाणे नित्येवस इतिरना नास यमुमासिपरे बुखे । एवासेवदेवाव्यिया । इसे हटति हेदेवायुसिध । मक्कमिथावाए । सुभने पविथ यान्नापोते ।

सम्मत कर्तृकृतकार्याणां सम्मतत्वात् ऋतुमती ऋतुशी पशुभ्यो वा न्यस्य सकाशात् ऋतुरिति वा मतीषुमत्तः, अतुमती तु विप्रियकरस्य प  
यादपि मती उतुमत्त न परबद्धरंगसमाश्चिति ॥ प्राशककरलक्ष सामरक्षमाक्षम सत्समान आदेयत्वादिति माणसीत भित्यादी मायादी नियेचार्य  
क्षमिति प्राश्यालङ्कारार्थ, इह इह रघुक्षत्विति यथायोग योजनीयं कथवा मायम मात्मान भित्तिव्यायय ॥ यालसिति ॥ व्यासा यापवृक्षगाः ॥  
भाष्यार्थपित्तियधित्तियस्यसिवाहयति ॥ इह प्रथमाशुवचनलोपो इदयाः ॥ रोमायकति ॥ रोगा कालसहा व्यापय आतका स्सय्य सद्य उप  
पातिमः ॥ परीसहायसम्भति ॥ अस्य भावमित्यनम सम्भत्यः स्यदातु ऋतुस्तु नवत्वित्यर्थः सिकहु इत्यादिस्तथाय य पालित इतिशेष , स किमि

ए खमाए निस्संयसाए श्याणुगामियसाए न्विस्सइ , एवामेव देवाणुपियया मज्जावि श्याया एगे दन्ति इठे  
कते पिए मणुसु मणामे पेजे विस्सासिए समए वड्डमए श्युणमए नरुकरुगसमाणे माणसीय माणउरइ  
माणस्कुइ माणपिवासा माणचोरा माणवाहा माणदसा माणमसया माणवाइयपिपिहियसानियसासिवाइय  
विधिहारोगायकापरीसहायसम्भापुसतुसिक्हु , एसानित्यारिएसमाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नो

एगमेहे इ इ कठे पिए मणुसु मणामेविधिसिधिसमएरुमएअसुमए । एकभाह इठ कात प्रीत मन्तंअ ममगसता धमसयोगपो धैयपखां सिहरपखी  
दिक्काशी पाश्याप्रकत कावता समतपयावी ऋतुमत अतुमत । भद्वररुगसमावे । भद्वररुग आभरय भावत ते समान चादेयपजावी । माणसीव मा  
खररइ माणवुहा । सयसे मायाद् निधेवावहे च इशोनाभाककारे पुसन्तु ए सववमत शीतमत उच्यमत सुधामत । भाणपिवासा माणचोरा । माणवा  
हा माणदसा माणमसया । पिपासा कथा करसामी चारकरसामी आह कापद शुभमम करसामी दसा करसामी मसा करसामी । माणवाइय वि  
दित्वा विमिय सञ्चिवाहय । वातिव करसामी पैचित्थ ससेयम सधियपत्तिव । भिन्निवारोगायकापरीसहायसम्भापुसतुसिक्हु । भिन्निवारोग आह व्याधि  
वागवपयि ते शीव धतावली वातकरै मरीसह खने उपसथ एवने माण इहपदसु सधैवकीव अमी रमभरीने पाका इतिशेष । एवमेवभातिरप्यवभाषी ।

त्याच ० एयमेवत्यादि ० तं दृष्ट्वास्मिन् ० स सस्या दिव्यासि ० सयमेवति ॥ स्वयमेव प्रपद्यतीत्यर्थ , प्रप्राञ्जित रत्नोद्धारत्वादिपदार्थेन प्राप्तान्त  
 भित्तित्यस्य तावदा क्तप्रत्यय स्तेन प्रप्राञ्जलमित्यय मुच्यते अितरोत्पुञ्जनेन ॥ सेवित प्रत्युपलब्धादिक्रियाकलापपारङ्गत  
 यिष्ठित भूषाद्यपारङ्गत स्वया आचार- भुक्तत्वाभाविष्यप मनुष्ठान काला व्ययमादि पाचरो भिषाटनं, एतयोः समारहारद्वय, एतत् स्वदास्या  
 न सिद्धान्तीति वीम स्वया विनयः प्रतीतो वैनीयत् सत्प्रस, क्तप्रत्ययान्तिरस्यं प्रातादिकरस्यं पितृकविभुषादि, याथा सयमयाथा, माथा  
 तद्वयमया चारमाथा ततो यिनयादीनां द्वय्य एतद्य विनयादीनां वृत्ति वर्तन यथा सौ विनयार्थमपि कश्चिद्व्ययथाभावावृत्तिको, उत स्व व

संसाणु श्राणुगामिपत्ताणु त्रिषिस्सह त इच्छामिण तेषाणुषिष्या ! सयमेव पश्याविय सयमेव मुक्ताविय सय  
 मेव संहविय सयमेव सिस्काविय सयमेव श्रायारगोयर विणयवैणयिय चरणकरणजायामायामाविय यमम  
 माहसिक्यं , तणुण समर्पनगवमहावीरे स्वदय कक्षायणसगोस सयमेव पश्यावेह जाव यमममाहस्काह , पुव

एव मुक्ते निष्कारणाम्ना एमाहरा पासा पशेवह पसेवहसू निष्कात्ता वृक्षा । परत्यायकविद्याण स्वमाए निरसेसाय पशुगामिपत्ताए भविकाह । परश्रीक  
 ने वितनकाव्य यमानेकाव्य मुनिवैश्वर्य यगुगामिपत्तये वृक्षे । तद्व्यक्तिसवदेवाद्युषियासयमेवपत्ताविय। ते कारय वीक्ष्णु वनाक्यासकारे, चरेवाशुपिय। पा  
 ने भगवत्कारत्राहरणादि वेपयनेकते वीवाभावा । सयमेवसुहाविय । भगवते पाते यिराणुपननवरा । सयमसोहाविय । पातैव याचारविद्याकलापयह  
 वयो । सयमवद्विकलाविय । पातैव मिषाकरे सुभाषयहवयो सयमवयाचारयोग्यरविषय वेवहय चरय चरय च। यामायामतिसवयममाहसिक्य । पातैव  
 याचारदुग्धानादिविषय यमुष्ठान कालाव्यवसादिगाचरो भिषाकिरव, विनय करवा केवना फल वनयवनेन चरणवतादिच करय पिडविद्ययादिच  
 सयमयाथा याचारनीमयाट गतिर्वा निवेगते धमरते तरेववा रसाह वीक्ष्णु । तएवसमवेभगवमहावीरे । तिवारे चमय भनवत यीमहावीरत्वात्तो ।  
 चरयव्ययापवमगात् । एवकपते कात्यायनसाधना पश्याते । सयमेवपत्तावेह । पातैवीवाद्ये । वावयममाहकाह । यावत् सर्व चिनयम करुप करै । एवदेवा

सभास्यता न निश्चित सिद्धान्ती तियोः ॥ एषदवाधुष्यिपागतक्षिति ॥ युगमात्रनूत्नसहादितेत्यथः ॥ यत्र चिद्विधिपद्यति ॥ निष्प्रप्रयथादि धात्मसं  
 स्थाने सयमप्रमप्रवचनभाषापरिहारयो इस्थाने न स्थानत्वं ॥ एव ॥ निसीदपद्यति ॥ निपसत्वं सुपथेष्टव्य सदृशकभूमिप्रमाजनादिन्या यनत्पथः ॥  
 एवमपद्यिपद्यति ॥ कथितव्य सामाधिकोद्यारकादिपूर्वक ॥ एवमनुविद्यद्यति ॥ भूमाङ्गारादिदोषवच्छमतः ॥ एवमनासिपद्यति ॥ मधुरादि पिकुपयथा  
 देवाणुष्यिया ! चिद्विद्यसि गतस्य । एव निसीदपद्यस्य , एव तुयद्विपद्यस्य , एव नुजियस्य , एव नासिपद्यस्य , एव  
 उठाय उठाय पाणोहि नूरोहि जीवेहि सत्तंहि सजमेणसजामिपद्यस्य , श्रुत्सिषधण श्रुते षोकिचिपमाडपद्यस्य ,  
 तपुण सेसदपु कञ्जायणसगोसं समणस्सजगवसं महावीरस्स डम एयाकव धम्मिय उधपुस समम सपण्ठियज्जा  
 इ तभाणापु तह गच्छइ , तह चिठइ , तह निसीपइ , तह तुयइइ , तहा नुजइ , तह नासइ , तह उठा

वृष्यिवागतव्य । इ म वेदेनानुप्रिय सुत्तव । जादवा नुय प्रमाज भूमिवाता । यवविद्विष्य । इम निमस प्रदेय वचितस्थानके भूमिपथीने कभारविधा । एव  
 निषोदयव्यरुवद्विष्य । इम भूमि पथीने वैदिषा, इम सामाधिकारि उद्यारव्य पूर्वक मूदया । एवमनुविष्य एवमासिपद्यस्य । इम सागानादि दीप्य वदि  
 त वीमया, वापवद्वित्तं वादिना । एवमनासिपद्यस्य । इम जठीने ३ प्रमाड निद्राने तद्विषयवरी जगोने २ । पादिधं भूण्णिवि धोवेदि सत्तंदि । पादिक्करीने भ  
 नेक्करीने जीवेक्करीने सत्तंक्करीने । सत्तंक्करीने सत्तंक्करीने । ते माकारिक्करीने विदे तेक्करी रथाक्करी तिवक्करीने यत्तक्करी । धम्मियपद्यस्य  
 एवनेविदे एपुण ए वाक्कावकारे यवनेविदे नही क्करी पदि प्रमाटक्करवा एतसं समयमाज प्रमाद्वरयोक्करी । तएक्करएक्करवायवसमात्त । विवारे क्क  
 व वाक्कावकमाथीव । सुनक्कयममक्कयामवावीरस्य । यमक्कना भगवंत योमक्कवावीरकामोना । इमएयाकव । एपूर्वकयो तेकप । धम्मियपद्यव्यसस्यपदि  
 वक्कइ । यमयते उपदेयापते मसोपरे पदिक्कव धूमोक्कारक्करी । तमावापतक्कवक्कइ । यत्तत्तेक्क क्करी ते वाया वादेमोक्करीने तिम इवीमिमते जाय  
 तवविद्वइ तवनिषीवइ तवपुवइ तवभुवइ तवभासइ । तिमज्ज क्कमारइ तिमज्ज निपयथासे वेसे तिमज्ज मूये तिमज्ज वापरविधित वावाक्करवा तिम



पयस्यतयेति यद उत्यापो त्याय प्रसादमिद्विधाख्यापोहेन विवृष्य २ प्राञ्चादिपु विषय यः सुयमो रक्षा तेन सुयतव्यं यतितव्य ॥ तमाञ्चाद्यति ॥  
 तदसन्तर भाञ्जया चादेक्षण ० इरियाद्यमिति ॥ इयाया यमने समित सम्भक् प्रयत्नः इयांसमितः सम्भक्प्रयत्नत्वत्परि समितत्व ॥ प्रायाञ्  
 नरुमनमिष्ययवासामिति ॥ प्राधानत यद्वेन सह मरुतमाथाया उपकरव्यपरिच्छदस्य या तिषोयवा न्यास इत्या सुयितो य स तथा ॥ उ  
 धारत्यादि ॥ इव ॥ अस्त्यसि ॥ अठमुषस्यमा सिद्धान्तव्य न्यासोकारोपमा ॥ मरुसमिति ॥ सङ्कतमनःप्रयत्तिकः ॥ मरुगुप्तति ॥ मन्तन्तिरो  
 ययान् ॥ गुप्तति ॥ मन्तमपुस्त्यादीना मितमन एतद्व चित्तोपेकाह ॥ पुनिरित्यति ॥ गुप्त प्रकृ गुप्तित्त्व प्रकृ चरति यः स त

एव उठाएइ तहपाणेहि त्रुएहि जीवेहि सत्तेहि सजमेण सजमेइ , झुसिचण झुठि णोपमायइ । तणुणसेस  
 दए कञ्जापणसगोहे झुणगारे जाण इरियासमिए तासासमिए पुसणासमिए झ्यायाणनरुमसुनिस्कयणास  
 मिए उञ्चारपासयणसवेठोसिवाणजसुपाठिठावणियासमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुहे ययगुहे

भावा समिते वाहे । तद्वद्वार १ । याञ्चिभूएसि जीवेहि सत्तेहि । मितम निद्रा प्रसादरहित छठीने २ प्राये करीने भूनेकरीने कानेकरीने सखेकरे  
 ने । सखमेवसजमर । यदमेकरी यत्नकरे तेवमो रयाकरै । यमिष्यव्यपहुषोपमायह । एवने, यपुन च वाक्यासकारे यदमेवियै प्रभाट नकरै । तएवस  
 एइए । निजारे तेसुद्व । कथायवसमात्ते । कात्यायनगाथोपमते । यजगारेकाले । यदकावासकोवो साधुवया । इरियासमिते । इयां सागतविदै भव  
 यकारे यदने ते इयांसमिते । भावा वाञ्चन् तिमिचारी वाहे । एसवासमिते । उपचर ४२ टायरहित यश्चर ४२ । यायाञ्चमरुमसमिते  
 यवासमिते । यदवेकरी भवमाच उपकरव्य परिच्छेदने मेसवे करी उपमायासहित । इयारपासव्यवेठव्यसिवाञ्चापाठिठावणियासमिते । यदोनीति ॥  
 गुनीन कदना सुखगायुस नाकनामव ते परठवता कववाकरै उपयामसहित प्रवर्त्ते । मरुसमिते वदसमिते कायसमिते । मन्तमपवत्त उपयोगसहित, य  
 वत नि याय मरुते, कायेकरी निःपाय प्रवर्त्ते । मरुगुहे ययगुहे कायगुहे । मन्तगापावै निरावकरै, यदन्तमानिरावकरै, कायानागिरावकरै । गुप्ते गुप्ति

वा ॥ वाहति ॥ सङ्ख्यायाम् ॥ सङ्ख्यति ॥ सप्तमवाम् रङ्गुरिय वा रङ्गु रथक्रयवहारः ॥ चर्यति ॥ धन्यो धन्यवानसहस्येत्यर्थः ॥ यतिस्वयमेति ॥  
 वात्या वमत न स्वयमपयंतया यो सौ वान्तिवम विनेन्त्रिय इन्द्रियविकारान्नावात् यथ मान् गुणेन्त्रियइत्युक्तं सादिन्द्रियविकारगोपनमात्रेणा  
 यि स्वादिति विशेषः ॥ सोहियति ॥ घोषितः घोमावाण् घोषितोवा निराकृतान्तिवारत्वात् सौहृद मंत्रो सयंप्राक्षिपु सद्योगा रसोहृदोवाऽ  
 धाह्यपाहति ॥ मार्थान्तरहितः ॥ अण्यस्तुयति ॥ अण्योस्तुस्वरस्वरारहितः ॥ अक्षरिहोत्सुति ॥ अक्षिप्रमाना धादि स्वपना इहिका द्वेषया मन्तो  
 यति यस्या वा धर्वाहिसंयः ॥ सुषामस्वरति ॥ घोषने समवासे रतः यतिप्रपनवा, सामयपरत ॥ दत्तति ॥ दान्त क्रोधादिदमभात्, द्याप्तो  
 धा राश्ट्रेपयो रन्तापमवृत्तत्वात् ॥ इहमेवति ॥ इहमेव मत्स्यं ॥ पुरतेकपठति ॥ अये विषाय मर्त्यान्मिष्टो मार्थंघमरमित्य पुरस्कृत्य धा; प्रधा

कायगुप्ति गुप्तिगुप्तिदिपु गुप्तिवन्धारी सौहृं लज्ज धन्ते स्वतिसकमे जिह्वादिपु सोहिपु शृणियाणि श्रुप्यस्तुपु श्रुव  
 हिसेरुसं सुसमस्वरुपं दत्ते ह्यणमेवानिगाय पावयण पुरनुं काउ विहरइ, तपुणसमणोन्नगायमहाधीरे कयगलानु  
 णयरानुं लसपलासयानुं वेह्ययानुं पाकिनस्कमइ पाकिनस्कमइसा द्यहिया जणययविहार विहरइ, तपुण

दिपु गुप्तिवन्धारी वाऽऽ लज्जामन पादिरेह पीपने, इहियगायने गुप्त, प्रह्यधारी प्रह्यय मत् धादरे समस्तगाहरे, संवमसव्यासहित ॥ अक्षेयतिपमे वि  
 तिदिप साहिते धादिवाचे यप्यसुप ॥ धममनसहित यमायेकरी वसे यधि असममपयेनही इन्द्रीविकाररहित जितेद्विध यतीवार सोला अथवा सौहृ  
 द नैसोभात सवपाथीनेरिये निरात प्रायनारहित ॥ अस्तुअपयारहित ॥ अक्षरिहोसे सुषामस्वरुप ॥ सममते तेलोयडा वाहिरिपमत्तंनही मर्तोडति खडने  
 मला अमअपये; तेहनदियै रयवै । इतेरवसेधविश्वदपाथयपुत्रयोकाहिवारर ॥ इत क्रोधादिक्कनादमवाधी एमलाय नियंज प्रवचन यतीकरीने मा  
 यना यवा/व मायना वीध मनख तेहनैपाने करीने विचरे तिस अंनख यधि विचरे, । तएवसमवेमगावमहाधीरे । तिपारे अमख मगावंत योमवाधीरख/  
 सो । अथपवाथापयरीपा । अथपवालाभसे मगारीवी । अथपवासायाचेरयाया । अथपवासावनामा सैलवळी । यकिदिक्कमर २ ता । योके वीजवीन ।

भीरुत्वविहर त्याकारति ॥ एककारस्य अगाह कश्चिज्जहति, इह कश्चि दाह । न न्यनेन स्कन्दकश्चित्ता त्प्रागेव एकदाद्याङ्गुनिष्यति रक्षणीपते, पञ्च  
 माङ्गुलानृतश्च स्कन्दकश्चित् मित् सुपलम्पते इति कथं न विरोध १ उच्यते श्रीमन्महावीरतीर्थ किल नव वाचना स्तत्रश्च संवाचनमासु स्कन्दकश्च  
 रित्ता त्पुत्रकाले ये स्कन्दकश्चित्ताजिनेया अर्था स्ते चरित्तान्तरद्वारंश्च प्रस्थाप्यन्त, स्कन्दकश्चित्तोत्पत्तीश्च सुप्रसन्नमिना अन्वुनामान् अस्मिन्पि न  
 श्रीकल्या चिक्रवायाचनाया मस्या स्कन्दकश्चित्तमेवा प्रित्य तदर्थंप्रकल्पकाकतेति न विरोधः ॥ अथवा, सातिवापत्तव इत्यथरात्वा मनागतकारनावि  
 चरित्तमित्यन्तम भद्रुष्टमिति, धर्मास्त्रिप्यसन्धानापेक्षया अतीतकासमिर्देशोपि न द्रुष्टइति ॥ मासपरिभ्रमत्वा ॥ त्रिकञ्चुपक्षिमिति ॥ सिद्धचित्त म

सेखदपु अणगारे समणस्स जगावत्तं महावीरस्स तद्दाकत्राण येराण अतिपु सामाहयमाह्वयाइ पुक्कारसअशुगाइ  
 अहिज्जाइ अहिज्जाइसा जणेव समणेजगावमहावीरे तेणेप उवागाक्कुइ उवागाक्कुइसा समण जगाव महावीर  
 वदइ नमसइ नमसइसा पुव चपासी, इच्छामिण जते ! तुज्जेहि अशुणुणापु समाणे मासिपानिस्कुपाणिम

महिवाज्जववविहारविहरत्त । वाहिदि देयमेविदे विहारकट्टे विचरे, विहारकट्टे इत्यथ । तण्णसुदएपणगारे । तिवारे तस्येदं च अणुत्तमाधु । समञ्च  
 एव भयवधानमहावीरस्य । यमञ्च भगवत्त योस्यहावीरस्सामोना । तद्वाक्यार्थं हेराञ्च यत्तिप । तद्वा अस्सणुक्खिवाजा करव्वहार तथा रूपेणे अविस्साध  
 तेइने समीपे पासे । अणुत्तवसावहार एकारस्यमाए अहिज्जइ २ सा । सामायिञ्च आदिदं उपायस्यञ्च एने अणुत्तवसावदिञ्च इत्यार एग तेइमत्तं भ  
 वे भयाने । अत्रेवसमसेभगतमहावीरे । जिज्जा यमञ्च भगवत्त योमहावीरस्सामो । तेवेवठवासावहार २ ता । तिज्जा पावे तिज्जां पावीने । समञ्चभगवमहा  
 वार वदइ वमनइ २ ता । यमञ्च भगवत्त योमहावीरस्सामो प्रते वादि नमस्कारकट्टे मादीने नमस्कार करीने । एववयासी । इमञ्चइ । इरकामित्यन्ते ।  
 वाह्वं च वाक्पासंकारे, वेभयवत् । तुक्कहिपप एवसाएसमावे । तन्ने अणुत्तवसावदिज्जा वक्का एतत्ते तत्तरो याथा जायता । मासिपानिस्सपडिम मासमी भि  
 वु अणुत्तवो पतिसा वित्त अविभणुविमेषे ते एवनाए अणुत्तवो गच्छन्तो गीज्जो एवमासमी अणुत्तवो पादरे, एव दत्तमोचन एने एवदत्तपावी गुह

निमग्नविषये एतत्स्वरूपम्—नन्वाविद्विस्वमिमां पठिवन्नास्मासिधंमहापठिस । दशैगनीयवत्सा पात्रस्सविष्टमन्नासासमित्यादि ॥ १ ॥ न न्ययमे  
 काश्चात्प्राची पठित प्रतिभाय विप्रिष्टमुत्तवानथ करोति यदाह—नन्वधिपञ्चिमान्नुं चात्पुष्टादशनेषयपुष्ठा । नवमस्सतद्वयवल्गुं शीरञ्जसोसु  
 पादिनसो ॥ १ ॥ इति कथं न विरोधः ? उच्यते पुरुषान्तरविषयो यंभूतनियम स्तस्यतु सवविदुपदेशीन प्रवृत्तत्वा क्त्वाप्यहति ॥ यदासुसति ॥ सा  
 साम्यभूतानतिक्रमेण ॥ यदाह—प्यति ॥ प्रतिभाकस्यासतिक्रमेण तत्कल्पवत्स्वमतिक्रमेण वा ॥ यदाह—मप्यति ॥ ज्ञानादिभोषमाणानतिक्रमेण छायोप  
 ज्ञानिक्रमावानतिक्रमेण वा । ३ यदाह—इति ३ यथातस्य तस्यामतिक्रमेण मासिधीनिशुप्रतिभेति, छायापान्तिसङ्गनेत्यर्थं ॥ यदाह—मप्यति ॥ यथासा

उवसपञ्जिज्ञाण विहरिसु, अष्टाशुहं देवाणुपिया ! मापन्वियथ । तपुण खदपु अणगारे समणेण न्गय  
 या महावीरेण अणुणुसापु समाणे हठतुठजाय नमसिसा मासिय निरुपान्निम उवसपञ्जज्ञाण विहरइ ,  
 तहण से खदपु अणगारे मासिय निरुपान्निम अष्टासुत्त अष्टाकप्य अष्टामग अष्टातञ्ज अष्टासम समम का

इम यावत् एवमावस्ये इम विद्यार मुत्तान्तरवी जाववा, इहां काहएक पूरुख खदकता इयार यंम भाव्याहै, यने प्रतिमाता विमिष्ट श्रुववत यार  
 रे तेमाटे इहां विराय शीसेहै ? तेजना उचर एदुत नियम पुर्यान्तरविषयेहै, तेखदके सवयने उवदेयेहरी प्रतिमावही, तिदेदोयनही, यीतराग तेजना  
 यवसक्य जावे, तेषजमासिख साधुनी प्रतिमा यारहीने विषक इसां खदक पूजायका भयवतकहीहै—यदाशुददेवाणुपिया मापञ्जिबध । किम सुखदु  
 वेदराजुप्रिब पञ्च दिवद मकरयो । तएखसेखदएयवगारे । निमारे तेखदकसाधु समस्ये भगावयामहावीरेण । यमथ भगावत योमहावीरेदेवे । यमथ  
 यएयमावे । यामाहीयावका । श्रुषावचमसिजामासियभिक्खयदिमठकसपञ्जिगाथविहरर । यथंयाव्यां यावत् नमस्कारकरोने मास प्रमाञ्च साधुनी  
 प्रतिमा यमिपञ्चविषये तेषादरीने विचरे प्रतिमावहै तपकरै इत्यह । तपखसेखदएयवगारे । निमारे तेखदक साधु । मासिधमिक्खयपिद । मास प्रमा  
 य साधुनी प्रतिमा यमिपञ्चविषये । यदाशुष यदाहप्य यदाभरम यदातत्त्वं यदास्य । किम भूत्तमिक्खि क्त्वा तिस यतिसभनही प्रतिमा यारार य

म्यं समन्नायामसिद्धयेषु ॥ काण्डकति ॥ न मनोरथमापिषु ॥ फासेइसि ॥ कथितकाले विचिता यइवात् ॥ पासेइसि ॥ यसकहुपयोगेन प्रतिजानर  
 वात् ॥ सोइइसि ॥ गानपयि पारकदिनेगुयादिइतायापनीजनकरवात् ॥ सोपयसिवा तिवारपकयामनात् ॥ तीरइसि ॥ पूर्वपि तदवपी स्त्री  
 ककालावस्थानात् ॥ पूरइसि ॥ तत्कल्पपरिसाणपूरवात् ॥ किइइसि ॥ कीलयति । पारककदिने इइ वेइ कीतस्या कल्प सइ मयाकत नित्येव की  
 तनात् ॥ यमुपालइति ॥ तस्यमापि तदनुमोदनात् ॥ किमुक जयतीत्याइ वाइया कारावयतीति यथेततः ससससमायाता स्तताएसी प्रथमा

एण फासंइ पासिइ सोनेइ तीरइ पूरेइ किइइ श्युणुपासिइ श्युणाए श्याराइइ, समं काणुण फासिहा जाय  
 श्याराइसा, जेणेव समणेनगव महार्थीरे तेणेव उवागच्छइ, उथागच्छिता समण जगव जाव नमसिहा एषव  
 यासी, इच्छामिण जंते ! तुज्जेहिं श्युणुणाए समाणे दीमासिय तिरकुपानिम उवसपाजित्ताण विहरिहए, श्यु  
 हासुहि देवाणुपियया । मापानियय । तत्थेव एव दीमासिय तिमासिय चाउत्तमासिय पचलसस, पढमससरा

तिअममही शानादिमाचमास जिमइ तिमठवनेनही तथा यथापयम माइयां समभावकरो यतिकमेनही । सयभाएण्यपासेइ पासेइ साभेइ तीरेइ पू  
 रेइ जिइ यमुपानेइ । मसैरकारे यथायकेकरी करसे विधिपइइ करो वरवार कपयागणे, पारयादिने मुइयो सभागकरी जीने, तथा यतीवार क्षापटा  
 से मपवासे पुरेइते किलता उवकाप पइइ, तेइना प्रमायपुराखरे पारयाणे दिने गइप्रमेकइ क्कारा पवक्याप पूराइसी यमुमादनपूरुइ पासी । याया  
 एयाराए सयभापययासिता जगयाराइता । यायायारासै भलोपरे क्कारायेकरी करसीन वावत् याराधीने । जेणेवसमभेभगावसजावीरे । जिही  
 यमव भमवत यामयापीरसासी । निसेठवगावइइ र ना । तिही यादे यावीने । समसंभगावसजावीरे । यमव भगावत योमहापोरपरे । वइइकावयससि  
 या । यदि जमक्कारकरे वायव वाया भमक्कारपरो । एववयासी । इमकइ । इइइमिपभते तज्जेहिं यमुकुकाएसमाने । वाइइ यथायथायकारे, येमग  
 वत् । तयारी यायापय्यावका । दामासिधमिभयपडिमठवसपयिजितायदिइरितए । हिमासयो सापुनी प्रतिसा यादरीने विवर एताम हिमासिककही

सप्तराशिद्विधा सप्तारोराश्रमाणा एव भवन्ती दक्षिणीयेति एता द्विस्त्रीषि षण्णयत्त्रकेमा पान्तकेमति उभानकटादिस्थानकतस्तु विधेय ॥ राहृदियति  
 राशिद्विधा एकादशी अश्वीराश्रपरिमाणा इयञ्च षट्पत्त्रकेन ॥ एगाराहृयति ७ एकराश्रिकी इयथाष्टमन भवतीति ॥ शुक्ररायसवच्छरति ॥ गुणाना  
 निम्नराशिगोपाणां रश्मं क्रूरञ्च सवत्सरञ्च सञ्चिनागवर्षञ्च यस्मिन्कपसि तदुत्तरञ्चनसवत्सर मुक्ताएव वा रत्नानि यत्र स तथा शुक्ररञ्च सवत्सरो  
 हृदिय , टीसु सत्तराहृदिय , तसु सप्ताराहृदिय , अहाराहृदिय , एगाराहृदिय । तएणसे स्वदए अणुगारे एगा  
 राहृ त्रिस्कुपानिम अह्रासुप्त जाव अरारहेसा जेणव समणत्तगव महावीरे तेषव उवागाच्छुह उवागाच्छुइसा  
 समणत्तगव महावीर जाय नमसिंसा एयवयासी , इच्छामिण नते ! तुज्जेहि अस्सणुणाएु समानी गुणरयण  
 सयच्छुेर तयोकम्म उवसपञ्जिज्ञाण विहरित्तए , अह्रासुहं देवाणुप्पिया ! मापान्निव । तएण से स्वदए अणु

य परत्तपञ्चान माञ्च एञ्चनञ्चहे इतिपट्ट । अह्रासुहदेवाप्पिया । किम सुख तिम देवेवागुमिय । मायञ्चिक्कवत्तसेव । पच्चि विस्सव नञ्चरणा पयेतिमञ्ज  
 तेवरे । एयतिमासिञ्च षाठ्ठयासिञ्च पञ्चमासिञ्च । इय त्रिमासिञ्च त्रिमासतय एञ्चमासनाञ्च ३ । चत्तमासिञ्चत्तमास चोकी प्रतिमा ४ । पञ्चमासिञ्चत्तमास पञ्चमी ५ ।  
 षष्ठासिञ्च सप्तमासिञ्च । इत्तमासिञ्चत्तमास सातमी ७ । षट्सप्तत्तराहृदिवं । अठ्ठया अठ्ठविचत्तर ४ इत्त ३ पाट्ठयाये पाठमी ८ । द्वाञ्चसप्त  
 राहृदिय । त्रयसो इत्तञ्च सात अश्वीराशिमी प्रतिमा षाञ्चवी ९ । तर्कसत्तराहृदिय । ध्यामी सात अश्वीराशिमी प्रतिमा १ । अश्वीराहृदिय । अहृत्तप अ  
 श्वीराशिक्काञ्चसय अहृत्तयात्तमी ११ । एगाराहृदिय । षण्णमतय एकराशिक्काञ्चसय अहृत्तयात्तमी प्रतिमा १२ । तएणसेचुवएयअथारे । तिचारेतेचुद्वअसायु । ए  
 नएएयमिचपुपञ्चिम । एकराशिक्काञ्चसयमी सायुमोप्रतिमा । अश्वीरासुत्त । किमसुत्तमाहृदिवी तिञ्चे प्रकारे । जाञ्च धाराहृत्ता । यापए धारायाधाराधीने ।  
 अश्वरवसमञ्चनत्तवमाञ्चवीरे । अश्वीरा अमञ्च मगार्तत मीमञ्चवीरत्तमासी । तेचिद्वअवागाच्छुेर २ ता । तिचारा थावे तिचाराथावीने । समञ्चमगवमञ्चवावीरे । अम  
 ष भयवत्त यामञ्चवापोरत्तमासीप्रते । अश्वीराशिक्का । वावए नमत्तयात्तरे अरुणे । एवअयावी । इत्तञ्चहे । इत्तमासिञ्चमतेगुचमहेचि ययणुयाएवमाञ्चे शुञ्चर

यत्र तत् गुणरत्नसमरसरे तप इह च तपोरसमासाः सप्तदशानिनात्रिका स्थायःकाल द्विसप्तसिद्ध दिनानि पारशुफनालइति, एव चाप-पसरसवीस  
 वदथा सुवेयवदवीसपसवीसाय । वदवीसएकत्रीशा वदवीसासप्तवीसाय ॥ १ ॥ तीसातेतीसात्रिप वदवीसद्वीसषाष्टवीसाय । तीसापनीसात्रिप सीस  
 सभासुसुतद्विद्यथा ॥ २ ॥ पसरसरेसठवप वदरपशुपतित्रिकितिकिति । पशुसुरोदोपतथा सीससमासेसुपारकणा ॥ ३ ॥ इह च यत्र मासे षष्ठ  
 पादितपसी पावन्ति दिमानि न पूयंते ताव न्ययतनमासा दाकप्य पूरवीपा न्यथिकानि चापंतनमासे हीसपानि ॥ षष्ठत्यवतत्येकति ॥ वरुपं  
 सप्त पाप नून न्यपते यत्र त वरुपं, मिय न्योपवासस्य सञ्जा एव पष्ठादिक सुपवाससुपादेरिति ॥ षड्विधिसिद्धेकति ॥ षड्विधिसिद्धेकति ॥ सिद्धासनीपवि  
 रिया द्वियवदस्यः ॥ षड्कुण्डलि ॥ स्थान मासस मुकुन्दक माचारे गुतासपनरूप यस्या सी स्थानोऽकुन्दक ॥ धीरासवेकति ॥ सिद्धासनीपवि

गारे समर्णेण नगायथा महावीरेण शृङ्गणुसाए समार्णे जाव नमासिसा गुणरयणसवच्छर तनोकम्म उवसपाजि  
 स्ताण पिहरइ, तजहा-पठममास वउत्सवउत्सेण स्थानिसिक्तेण तनोकम्मिण दिपाठाणुकुण्डर सुरानिमुहे स्था

वचसवदरतनाकषाडरसपिन्नितावीद्विरिताए । बीहू हू वनगावन् । तस्यारी पात्रापात्रावकी एवसे तनगारे पात्रावावती मुनिवरात्रियेय तेजने र  
 न तेजनाकरवा तेरेमास सगरेदिन तपकास यने ०१ दिन पारजाना एव मास १६ ते यस्वस्व सबच्छर तपकर्म किवा पादरीने दिवर् एतके तपक  
 र् इतिपय भमवत कहीहे-पहापुहरेपाशुत्रिया मापद्विदधं । किस सख जाय तिम हेदेवानुप्रिय । पवि प्रतिवध विसद सकरकी । तणवसेषदए ।  
 सवगारे । तिगारे ते सुदक धाणु । समसेसममयामहावीरेच । यमव भगवत श्रीमावावीरकामी । यथाशुष्यायसमासे । पात्रावीवावकी पदि । जापव  
 मीवला । वावर् भमवदरकरीने । गुणरववसवच्छरतनाकषाडरसपिन्नितावीद्विरिताए । मुनरववसवच्छरनाम तपकर्म, तपक्रिया, भगीकारकरीने वि  
 वरे एतसे यवदस सञ्छरतप धाडरे इत्यव । तपठममासं वउत्सवउत्सेव पवित्रिसिद्धतयोक्थेव । ते कहीहे-पवित्रिसिद्धे तपे एव सपवासने स  
 वा, इत्येव तप ते वेदपवास, इम याने पवि कववा, श्रीशामारद्विव धतपारहित तपकर्मकिवाकरै । दिपाठाणुकुण्डरुप । द्विसप्तनेविवै पासन कव

प्रायणन्मूर्तीं श्रापावेमाणे रासि वीरासणेण श्रुवाउठेणय दीञ्जमास ठठठठेण श्रुनिरिक्तेण दिया ठाणुक्कु  
 हुरु सूरान्निमुहे श्रापायणन्मूर्तीं श्रापावेमाणे रासि वीरासणेण श्रुवाउठेणय एव तञ्जमास श्रुठमश्रुठमण  
 चउल्यंमास दसमदसमेण पचममास धारसमधारसमेण ठठमास चोदसम चोदसमेण सहममास सोलसम सो  
 लसमेण श्रुठममास श्रुठारसम २ नवममास वीसडम २ दसममास धार्थासडमधावीसडमेण एक्कारसममास  
 चउवीसडम २ धारसम मास ठवीसडम ठवीसडमेण तेरसममास श्रुठावीसडम २ चोदसममासतीसडम २

ह वैसे सुहरदनालोपरै । सुरामिसुहे । सुयं साहनुं धमिसुख । धासावचन्मूमाएपावावेमाच रत्तिवीरासणेव धवाउठेवय । धातापनानी भर्मासि विजडां  
 रेतपरबले ते भूमिज्जानेविधे धातापनालताबजा राजिनेविधे वीरासने ते सिज्जासने मज्जुवसैसीने पग वेव धरतीरासु नोवाय सिज्जासन परही काठ  
 ते मज्जुव तिमहीव वैठीरई त वोरासनरई वखरहित उपवातो नभव रज्जव । धासमासखड्डेठेव धविक्खिसवयं । धोवा मासनेविधे कड्डेठे एतसे वेठप  
 वासि धारवाकरै धोवामारहित धनधारहित रज्जव । दिवाठाकुड्डुए । दिननेविधे अखड्डुपासन वैसे । सुरामिसुहे । सुय साहमी मुसुराखु । धाय  
 वखभूमीएपावावेमासे । धातापनानी भूमिज्जानेविधे धातापना खरवाबका । रत्तिवीरासणेव । राधीने वीरासने वैसे पूरेकडा तेरीते । धवाउठेवय ।  
 परिधाण वखदिना नरममासे । एवतवमास धड्डसपड्डमेवसम । रमाधीअक्खियाये जोजेमासे तीनउपवासे धारवाकरै एतसे निरकरै धड्डमकरै । चठरधमा  
 एतसम दसमेव । धोवेमासे धयमदयम एतसे चारे उपवास धारवाकरै । पचममासधारसमवाटसमेव । पावसे महीने धारसधारसमे धारवाकरै एत  
 से पाव उपवास निरकरैकरै । कड्डमासवखदसमेवउठसमेव । कड्डिमहीने खण्डए उपवासि निरकरै धारवा करै । सल्लममासं सोलसमसोखसमेव । धाय  
 मेमहीने धात उपवास धारवाकरै । धड्डममासपड्डारसमपड्डारसमव । धाठमेमहीने धाठपाठ उपवास धारवाकरै एतसे । नवममासवीसरदमधीसर  
 मव । नवममहीने धोवतिस खरती नववख उपवास धारवाकरै । दसममासधावीसतिसधावासतिसमेव । रमासे महीने अज्जत धयएव उपवास धार



पत्नरसममास यत्तीसहमर सोऽसममासच०हम चउत्तीसहमेण धुनिस्त्रिमेण तथोक्तमेण दिपा टाणुकुण्डु  
 सुरानिमुहे ध्यापायणान्मोपु ध्यापावेमाणे रसि वीरासर्णेण श्रुवाउक्तेण, तणुणसे खदणुधुणगारे गुणरयणस्य  
 च्छुर तयोक्तम श्रुहासुस श्रुहाकप्य जाव ध्याराहिज्ञा जेणेव समणेनगाव महावीरे तेणेव उवागाच्छुइ उवा  
 गाच्छुइज्ञा समणानगाव महावीर वदइ नमसइ, यद्गहि चउत्पलठठमदसमदुवालिसेहिं मासरुमासस्वमणेहिं

वाकरै । एकारसममास चउत्तीसहमेणसतिमेव । एकारमेमासे एकार एकार उपवासे पारवाकरै । वारसममासच्छवीसतिमेव । वार  
 मे महीमे वारिवारे उपवासे पारवाकरै । तेरसममासपशुमीसतिमेव । तेरमेमहीने तेरेरे उपवासे पारवाकरै । चउत्सममासतीसतिमे  
 तीसतिमेव । चउत्समेमहीने चउत्सहउद उपवासे पारवाकरै । पत्नरसममासतीसतिमेवतीसतिमेव । पत्नरमे महीने पत्नर पत्नर उपवासे पारवाकरै ।  
 शाजसममासचउत्तीसतिमेव चउत्तीसतिमेव । शाजमेमहीने शाज शाज उपवासे पारवाकरै । शक्तिमेव । वीजमे चतुरारहित द्वियामटासी । तव  
 कस्येव । तपकस किञ्चयेकरे । द्विसाठाच्छुकर । द्विससनेदियै ककसूपासनवेसे । चुरानिमुहे । सुव शाजमे मुखे रविणे । आयावचसुमीप । पाताप  
 ना करलासकी । रत्तिनीरासवेव । रत्तिनेदियै वीरासन पुनेकज्ञा तेराते । शवासवेव । पहिरव बस्य रहित नगनभावे । तएशसेखदएपच्यारै । ति  
 वारे तेपदक सापु । मुक्तरयचउत्सहउदमाकथपवासात । मुक्तरद संवच्छरनासि तपकसकिवा किससुभमाहेले सुवनी मयादसि । शवाकप्य । यथा सामा  
 यारसि पावारसहित । वावपाटाद्विजा । वावप पाटासीने । केवेकसमवेमगवमहावीरे । जिवा यमव भगावंत श्रीमहावीररामादीहे । तेवेचउवागव  
 र २ सा । तिवापावै तिवापावोने । समव भगावमहावीर । यमव भगावंत श्रीमहावीररामादीहे । वटव चमसर २ सा । पादे नमस्कारकरै वादीने  
 भनरवारवरीने । बहद्विपठनबहस । ववे चउत्स एकउपवास करे दाव उपवास यहुम तीन उपवास । उसमदुपाससेहि । एयम चार उपवास वाद  
 या पाव उपवास । सासकमाससमवेदिं विविसेहि । मास तीसदिम शर्दमास पत्नरदिन तिजेकरी विधिच नागा मकारना के । वनोक्तसेहि । तपकमे

इत्य नून्यसपादस्या पनीतर्षिणासमस्येव यदवस्थानं तद्वीरासन, तेन ॥ अवाचोहेवपि ॥ प्रावरजानावनेव ॥ उरासेवमित्यादि ॥ उरासेन वा  
 नासारहिततया प्रथमेन प्रथम वास्पमपि स्यादित्याह ॥ विपुसेन ॥ विसीर्षेण षडुदित्तत्वात् विपुलश्च गुरुमि रत्ननुष्ठातमपि स्या दप्रपथकस्त  
 वा स्यादतथाह ॥ पथसर्वाति ॥ मदीनेन अनुष्ठातेन गुरुतिः प्रपथेनवा प्रपथयता प्रमादरहितेनत्यर्थ, एवंविधमपि सामान्यतः प्रतिपद्य स्यादि  
 स्याह प्रपथीतन बहुभामप्रकर्षां दार्शितेन तथा कल्याणेन धीरीगताकारयेन धिमेन धिबहेतुना चन्येन धम्मचनसाधुना मङ्गल्येन दुरिततापशम  
 साधुया समीक्षेव सम्पत्पासना स्वकीयतम उदयवृत्तकतपर्यवसानेन उक्षरोत्तर दृष्टिमतेत्यथ उदात्तेन उद्यतनावयता ॥ उक्षमयति ॥ ऊह स  
 मथो उद्याता ए च तथा तन ज्ञानगुरुने त्वयः उक्षमगुरुपासवितत्वा द्वौ समेन उदात्तेव धीर्दार्यवता निःस्पृहत्वातिरेकात् महामुजायेन म  
 हाप्रजायेव ॥ सुकृति ॥ सुको भीरुशरीरत्वात् ॥ सुकसेति ॥ धुनुषावसेन कवीनूतत्वात्, अस्मीति अस्मावनूतानि यस्य सो स्थिबर्मायानु, कि

विचिसेहि तथोकम्मोहि क्षुप्याण जावेमाणे विहरइ, तणुणसेस्वदणु क्षुणगारे तेण उरासेण विउत्तेण पयत्ते  
 ण पग्गाहिणुण कक्षणेण सिवेण चत्तेण मग्गसेण सत्सिरीणुण उदग्गेण उदसेण उक्षमेण उदारेण मह्हाणुत्तगेण  
 तथोकम्मोण सुक्खे सुक्खे निम्मसे क्षुण्णिचम्मावणद्धे किण्णिकिण्णियन्तु किये धम्मणिसत्तणुजाणुयाविहोत्था, जी

क्रिया निवेदती । अथाचंभावेमावतिवरह । आभापते भाष्यमान तेवथ भागता विचरेव । तपससेवदणुपथकारे । तिभारे तेवइव साधु । तेवउरासे  
 च निवेदय पयत्तेव पयत्तिदेव कक्षणेव सिवेव चत्तेव । तिच पायासाकरी रक्षित विधानेकरी विस्तीच धर्मादिममाटे गुरुसमीचेयथा धनुषागारुणी  
 बह्मनातथा ग्यथा गौरापने कारवेकरी गिबहेतवेकरी धम्मचनेकरी । मग्गसेव सुक्खिएव उदग्गेव । दुरिव उपयमेकरी भयो परे खाडवाभी सम्यगेन  
 नेकरी दिग्भक्तिप्रते वपनोवहि । उदत्तेव उल्लसेव उदात्तेव महाधुभासेव । चउते परिजामेकरी ज्ञानगुरुविहारी उल्लम पक्षयेत्या धीकाररक्षित निस्वहप  
 धीवी महानप्रजा प्रमावह । तथोकसेव सुक्खेसुक्खेतिवसे । एवमेव तपकम क्रियावेकरी यरीरमुक्ता निरुसपथावी मूक्खेनेवही मथररहितवतया । अदिग्ग्याव

परस्मिन् ऽ सन्निरुत्पत्तेर्ह्यधीक्रियत नपेति सत्तेयना मय कस्या धीयथा सवा तथा शुष्टु सेवितो ऋषितीवा षपितो यः स तथा तस्य ऽ प्रतापाद्यप  
दियादिक्रियस्मिन् ऽ प्रत्यास्यात्तत्रकृपात्तस्य ऽ कासति ॥ मरुत् ॥ तिकु ॥ इति कत्या इदविषयार्कत्स्य ॥ एवसपदेहेतुलि ऽ एव मुक्तलक्ष्यमय सन्मेषत

यादृक्क्रियस्स पातृवगायस्स काल शृणयकंस्वमाणस्स विहरिसृष्टिसिकट एवसंपेहेह एवसपेहेहृता कक्षपाउप्यना  
याए रथणीए जाध जलत जेणेवसमणेनगावमहावीरे जाध पञ्जुयासह स्वदयादि, समणेनगावमहावीरे स्वदय  
शृणगार एव ययासी, संपूण तथ स्वदया पुष्टरसाधरत्त जाव जागरमाणस्स इमे यारुवे शृष्णित्यए जाव समु  
प्यजित्या, एवस्वष्टु शृह इमेण एयाकवेण उरालेण विउलेण तचेव जाध काल शृणयकस्वमाणस्स विहरित्त  
एतिसिद्ध, एव संपेहेह २ ता, कक्षपाउप्यनायाए जाध जलते जेणेव मम शृत्तिए तेषेय हृक्षमाणए, संपूण

चे ते सते व वा कश्चिन्न नन्य तेवनेसवा तिच सेव्या तेइने । भक्तपावपदियारक्षित्यस्य । भात पात्वा पचकीने । पाषाणयवस्य । पादपापगमने । का  
सपचकसमावृत्तिरिति चतु एवसंपेहेह २ ता । कासमरुत् यववाहनायका विचक इसोक्तीन इम समस्तपंचे यासांचे यासांचेन । कक्षपाउप्य  
भावाएरसथाए । यानामि प्रभातवमय प्रमटवसे वसे । जातववति यावत् जातव्वमान मूय जगतयेवके । वयवसन्नेभगवमहावीरे । अिर्वा यमच्च भगवत यी  
महाभोरेव्यामां तिर्वा याने । जातपयवमासेह । यावत् सेवाकरे तेतसे । खरयादि । वेसुइव । इत्यादिनाम पूवपरे समन्ने भगवमहावीरे । यमच्च भगवत यीम  
शशास्वामा । खरसंयवगार । खरुत् यवमारपत । एवयथासो । इमकथी । सेवुवववखदया । ते नियै तस्मने वेखरुत् । पुत्ररत्तावरत्त । मन्वरादिने । जाव  
जागरमावस्य । यावत् यमचिनाए जायतावकाने, इमेकाकवे यमशिष्टे । ए एतादृश इमकप । यासांचियय । जावसमुपपिच्छित्वा । यावत् सकस्य जयभा ।  
एव चतुपथ इमवरादाकवे उरालेव निउलेव । इम नियै च पचि एइवे क्यकरो उदरे प्रथामेकरी त्रिस्तोत्रेकरी । तचेवजावकास मन्ववक जमावृत्तिवदि  
शपदितिकर्तु । तिमज नियै यावत् जावमरुत्तने यववाहना वजाने विचक इसाकरोने । एव संपेहेह २ ता । इम समस्तपंचे यासांचेने । कक्षपाउप्य

त्रिक्रिटिका निर्मासात्त्रिसम्भवा । उपवेद्यमात्रिक्रियासमुत्पन्नं शब्दविशेषं स्यात् नूतः प्राप्ते यः स त्रिक्रिटिक्रिटिकावृत्तः, क्वचिदुपलब्धः, यमनीसन्ततो मा  
 त्रीव्यासो मासद्यत्तु हृदयमानानात्रीकत्वात् ॥ जीवजीवेषुति ॥ अनुस्यारस्या गमिकत्वात् जीववत्सेन गच्छति ॥ शरीरयत्सेनेत्यर्थः । ना  
 सभासितेत्यादौ कासत्रयसिद्धिः ॥ नित्याहति ॥ भवायति क्त्वानो भवतीति ॥ सेति श्वापार्थ ॥ यथेति दृष्टान्तापार्थं भासेति स  
 म्भावनायां श्रुतिव्याक्यातद्वारे ॥ कठसमिधयति ॥ काटपुला क्त्वानिष्ठा काटशकटिका ॥ पलायादिपञ्चभूता गत्री ॥ यत्तत्तिसम  
 क्त्वानुपदिशति ॥ पञ्चपुष्कतिलानां नाशकत्वात् सुन्तपन्नाशमाना नूता गत्री इत्यर्थः ॥ तिलसंठगसगदिशति ॥ क्वचित्पाठः प्रतीताशयः ॥ परककठ

य जीवेषु गच्छद्, जीवजीवेषु चिठद्, नासनासित्ता विगिलाह, नासनासमापोगिलाह, नासनासिस्सामी  
 तिगिलाह, सेजहानामपु कठसगानियाहवा पत्तसगानियाहवा पत्तितलनकगसगानियाहवा पुनककठसगानि  
 याहवा इगालसगानियाहवा उग्रहदियासुक्लासमापोगि ससद्गच्छद्, ससद्गच्छिठद्, पुवामेव स्वदगुञ्जणगारे सस

चद् । एतद् नामधीदे कर्तुं शीत्या एतत्सेवाह नामधीरही । क्वचित्त्रिक्रिटिकामूर् । मांस रक्षितवाह तेसाटि वैठता छठता क्रिटिक्रिटि गच्छद् । क्रिये । दूष  
 वाहता । यमश्चिंतनम् । मांसने चयेकरी नाहिनौकसे । जातेयाविजात्या । एववा च्छकसापु क्वोरवाह । जीवजीवेषुमच्छद् जीवजीवेषुचिद् । जीव  
 देतेजीवने क्वेकरी मांसं चार पश्चि यरीर पसेकरोनही जीवनेचयेकरी छभीरही । भासभासित्ताविगिलाहति । तीमक्वाह निर्देयाह यतीतक्वासे माया  
 वाया क्वानवाह । भासभासमाविगिलाहति । भायानौकलाक्वकी वसमानक्वासे क्वानवाय । भासभासिष्वासीतिगिलाहति । भाया यागाधिक्वासे वेत्तव्यं  
 ना पश्चि क्वानवाह । सेकशानामम् । ते यथा दृष्टानि गत्य रसे सुभाषनाये, ए द्रुतिव्याक्यातद्वारे । क्वचिन्गदियाहवा पत्तसमदिशवाहना । काटभरी गच्छ  
 टिका माहसी पक्वायादिपञ्चमरी माहसी । पत्ततिकर्मकसगदियाहवा । पान सचित्त तिलानां भाजा सुभय माखनयो भरी गाहकी । एतद्कठसमदिशवाह  
 वा । एतद्कठसमरी माहसी । एतावत्कठसमदिशवाहना । यगारसमरी गाहकी । उग्रहदिया सुक्लासमापोगि । एतेषु विधेयत्वात् काट पञ्चादिव जीवने यम

स्यान्निधिति ॥ एररुत्काष्टमयी एररुत्काष्टमुत्तावाः । नृकटिका, एररुत्काष्टपुष्पवत् तेषां मसारात्वेन तच्छकटिकायाः शुक्रायाः सत्या कतिशयेन गण  
 भारो श्यायुल्य स्यादिति शूद्रारुत्काष्टिका शूद्रारुत्ता गन्धी ॥ उरुवेदिस्याशुक्रासमाधीति ॥ विधेयपद्मय काष्टादीनां भाद्रोकासेव समवधीति, य  
 यासुत्सव मायोन्मसिति जुतासमवय मसाराक्षिप्रतिशब्दः ॥ तथेकतेत्युक्ति ॥ तयोस्तथेन तेजसा, अयमनिमायो यथा नसम्बन्धोनिर्धेद्विद्युत्सा  
 यत्रोरहितो जलावृत्त्यागु व्यवसिति, एव स्कन्दको प्यपचितमासुशोचितया दृष्टिर्निस्कीका कतस्यु शुभ्रप्यात्मसपसा क्यत्तीति उक्तमेवार्थमाह ॥ न  
 यतस्त्यादि ॥ शुभ्ररत्नावत्कालसमपयसिति ॥ पूर्वरात्रय रात्रः पूर्वोनागो उपरात्रय अयकटा रात्रिः पश्चिम सद्भागत्सर्वं सप्तमशो यः कालस  
 मयः कालात्मनः समयः स तथा सव अथवा पूर्वरात्रापरात्रयकालसमय इत्यत्र रेफसोपात् शुभ्ररत्नावत्कालसमपयसितिस्यात् चसंज्ञागरिका  
 हुंनच्छुद्धि, ससद्द्विचिठ्ठ, उवाचिते तथेण सुथचिपु मससोणिणुण ज्ञयासोणिविद्यनासरासिपानिच्छुसो तथेण  
 तणुण तवतेयासिरीणु सुतीय उयसोन्नेमाणे २ चिठ्ठ, तणकालेण तेणसमणुण रायगिहेनयरे समीसरण जाय  
 परिसा पानिगाया, तणुण तस्स स्वदपस्स सुणुणगारस्स सुणुणपाकयाद् शुभ्ररत्तावत्सकालसमपयसि धम्मजागारे

वे ते नीलायं भराहुती यादही यवे तावकीदीधी मूत्रोपको । ससदपस्स । शब्दसहित एतवे मोक्षतां याहे । ससद्विभु । शब्दसहित अमोरु । एवा  
 नेरसुदपस्सपारे ससदपस्स । तेगाहसाने इवति इमव सुदक पचि निरै पचगार साधु मोसरीहितमको जाहना शब्दसहित वासे एतवे  
 वासतां वाह माहामाहि वावेहे शब्दसमादीहे । अयचितेनवे । अयचितपुष्टययाहे अकरीने तयेकरीने । अयचितेमससिणुण तवेय । शेषप्याहे  
 यववाहीनययाहे अकरीने मोसवाहीकरीने तयेकरीने । शुवासुवेदिवभासराशिपचिच्छे तवेयं तेष । अयिण विम भयमना समहवी ठाकां तप  
 सयव तेजवरी ए भागार्थ विम रचाये ठाका पतिनवाहिर तेजसहितशुभ्र यतठते दीपे इम सुदक पचि एयरीनेविये मोसवाहीयववायाहे तेमाटे य  
 रोर वाहिर तेजसहितवे पयिसाहि शुभ्रप्यात्म तवेकरी दीपेहे यसोक्त्वा तेहीव सर्वं वहीहे — तपतेवधितोष्टततोष्टवसामेमाहे शिभु । तपतेवे मीम

जायतः कुर्वन् इत्यर्थः ॥ तं प्रतिगतमिति ॥ तदेवमपि कश्चिन्नाय भ्रम इत्यानादि न स्वयथा श्रीशक्तिनामः ॥ सत्रायतानेप्रतिष्ठा ॥ त इत्यन्त  
 पावत् तावति न्नापानान्ने मे ममास्ति ॥ तावति ॥ पायव ॥ सुवृत्तिरिति ॥ सुनार्थी प्रख्यात्प्रति सुवृत्तीनां पुरुषपरगत्यादसी एतव नगायत्सा  
 य आगारमाणस्स इमेयाकथे श्रुत्प्रतिपु चित्तपु जाय समुप्यज्जेल्या । एवस्वतु इहं इमेण एयाकथेण उराले  
 ण जाय किसे धमणिस्सपु जाय जीव जीवेण गच्छामि, जीव जीवेण चित्तमि, जाय गिजामि, जाय ए  
 यामेय इहपि ससद्गच्छामि, ससद्गच्छामि, त इत्यि तां उठाणे कस्मे वले वीरिपु पुरिसक्कारपरक्के  
 मे स जाय तामे इत्यिउठाणे कस्मे वले वीरिपु पुरिसक्कारपरक्केमे जाय यमेधम्मायारिपु धम्मोवदसपु सम

तावता ररे । तेवन्नासव तवमसएव । तन्नास्तेनिये तसमवनेनिये । समव भगवमहावीरे । असव भगवत योसव्वावीरस्सामी । तेवेवरायगिनेयपरस  
 मासएव । शिवा रात्रयइनासा तमरवे तेवनेनिये समासरा पायवा । आनपरिसा पटिमवा । यावत् पर्यटा वासवा यावोवती तेपाव्वागए । स० चतस्र ।  
 तिवारे तेवने । सुवृत्तपुपवपावस्य । सुवृत्तनामा साधुने । एवन्नासवाए । एकटा प्रस्तावे क्वथारेवै । पुष्वरसावराकाससमवसि । मन्वराणिक्कासस  
 मये प्रस्तावनेनिये एतव पावोराविनेनिये । प्रस्तावापरिस जायारमावस्य । प्रमभापरिसा धमचितता आत्तायक्काने एतवे धमचितता क्वरतापक्कानि । इमे  
 पावने । ए एववा एताइमकव । चस्रस्सिए । पावविपव प्रववसाय । चित्तिए । चित्तारूप मावनारूप । आवससुपाक्कित्ता । यावत् कपनो । एवसुपुपव ।  
 रस नित्तव । इमवएवाराव । एवे रसेरूपेकरी । उरालेव वाचकित्ते । पायासारचित तेवेकरी यावत् दुवसवयो । धमचित्ततएव्वाए । सीससयेकरी उर्या  
 गारिपिक्करित्तवावी नोववी । जीवजीवेवमव्वा । मि । जीव जीवने वलै व्वावत्तं । जीवजीवेवचित्तइमि । जीवजीवने यलै इ आभारंणं । आनतिक्का  
 मि । यावत् आनववा । आनएवामेव पावपिससवमव्वा । मि । यावत् काए वत माक्कटी माव्ववे इमव्वपचि मव्वसचित्तमाधं जाव्वत्तं । सुसवचित्तइमि ।  
 मव्वरचित्त आभारंणं । तं वचि । तापचित्ते धमेस । तासेठठावे । तावत् सुवने उर्याण । क्वमेवसेवोरिए सुचित्तवारापरक्कनेत्तावतासे । क्वम वव जीव

विप्रोऽनन्तमन्त्रिधि भङ्गाकृतो दधती त्पमिप्रायेष दगावक्रिवांशे शोऽङ्गुःसनात्म भापूय भए मित्यनिप्रायेक्षदा चिन्तित मनेनेति ॥ अङ्गमित्यादि ॥  
 कदाति ॥ यः, प्राङ्गुः प्राकारय तत प्रकाशप्रजाताया रजन्या पुष्पोत्पलकमलकोमलान्मीलिते पुष्प विवक्षित तत्र सगुत्पलष पुष्पोत्पल तत्र कम  
 लय हरिकविषयापः पुष्पोत्पलकमलतो तयोः कोमल मन्तरीर मुम्भोलित रसाला नयनयो योन्मीलन यस्मिं का तथा तस्मिन्, अथति रजनीविभा  
 लान्तरं पावङ्गुर प्रजाते रज्याशोक्रमकाशेभ किशुक्लस्य शुक्लमुक्लस्य मुष्काङ्गस्य रायेष सदृशो यः स तथा तस्मिन् तथा कमलाकरा इवावय स्ते  
 पु यकानि भलिनीयकानि तथा योषको यः स कमलाकरयकळयोषक स्तस्मि कृत्पिते अङ्गुद्वते कस्मि कित्याह ॥ धूर ॥ गुन किम्भूतइत्याह ॥ स

णं नगवमहावीर जिणं सुहृत्स्यो विहरइ, ताय सामे सेय कल्ल पाउप्पनायाए रयणीए पुहुप्पलकमलकोमलु  
 मित्थियामि अहपङ्गुरे पत्ताए रत्तासोगाप्यकासे कियुपसुयमुहगुज्जरगगसारिसे कमलानगरसकळयोहए उठियामि

पुनपाकार परात्म एतस्य जाजकमे ज्ञानागादि सर्वथा योश्चरथा नहै तेनाटि जासगे मुम्भने । अङ्गिच्छाये । है उत्थान । अथो पसे वीरिए पुरिसजा  
 रपरत्तमे । कम इत्त वीय पुनपाकार परात्म । आरवने चन्थायारिए अस्मावपसए समवेमभवमहावीरे । वावत् यगुन माह्वरा अर्माचार्य धर्मापरेयन्  
 धमावत्तक यमव भयवत् वीमहावीरजानी । विषेमुहत्वीविहरर तावतामेसेव । औत्तार्है रागवेध विषुं, सुभाहीहै भक्कपते, यथवा सुहृत्सीनीपरै वि  
 चरे तेतथाकावसगे मुम्भने अरमगसोक् । अहंयभाएररवणीए । थायामि प्रभात रात्रिनेविपै । कल्लयलकमलकामगुमिन्धियमि । विक्रियत उत्पलकसु  
 कमल हरिचर्नातेम कोमल यकठार कमसभा इत्त हरिचर्ना तद प्रियत्वात्ता ते उत्थोलितवया । अहपङ्गुरेत्यभाए । अथ वीङ्गुर प्रभातववा । रत्तासोगाय  
 मासे । रागा यथाव उचयना मुक्पतिवै प्रभा तिषेवरो । कियुपसुयमुहयकडरायसरिसे । केमूठानाफुल यववा युक्कनासुख अथवा चिरमोनाथवं तेजना  
 रागवरीकाले । कमलानगरवडवाए उठियमिमुरे । यमलनाथागार सरावर तेजनेविपै नसिनीयुक्क तेजने सिद्धाववधार तेजनेविपै अयतेवकके सुत्त । स  
 इत्त परिमिदिप्यरे तेवडा अथते । सइत्त चिरवसहित दिनकरसुव तेनेकरी जाल्प्यमान एवावता प्रभातसमये । समवमवमहावीरे । यमव भगवत

इतरसरिसमीत्यादि ॥ कथाश्चिदिति ॥ इह परीक्षदेया स्वदसमुदायो वृषय स्मृत कतपोष्ठादिभि रितिस्यात् सत्र कता योगा प्रत्युपेक्षकादिभ्या  
 पारा यथा सन्ति त कतपोष्ठाः कादिभ्यामिप्रपञ्चार्त्तां हृत्पञ्चार्त्तां इत्यादि यथास्तदिति ॥ विठन्वति ॥ विद्युत्तान्निधान ॥ मेघपथसांक्रगासति ॥  
 पतनेपथदशा सात्प्रभसरसमान कालक मित्यर्थः ॥ देवसक्रियवायति ॥ देवाना सक्रियता समागमो रमणीयत्वा यत्र स तथा ॥ तदुद्विचिसितापट्टय  
 ति ॥ पृथिवीशिलाख्यः पट्टक प्रासनविशेषः पृथिवीशिलापट्टकः काट्टविसार्पि शिला स्या दत काद्यवच्छेदाय पृथिवीपट्टक ॥ सत्तद्व्याभूतसंज्ञाभूतिसं  
 सुरे सट्टस्सरस्सिमिदिणपरं तयसाजलत समणतगाय महावीर अदिज्ञानमसिज्ञा जाव पङ्कान्नासेत्ता समर्पण  
 नगाथया महायारेण श्रुत्तुणासापु समाणं सयमेव पचमहस्रियाणि श्रारोहेता समणायसमणीनुय स्वाभेज्ञा त  
 ष्टाकवाहि येरहि ककार्हाहं सक्किं त्रिपुल पञ्चय सणिय सणिय दुक्कहिज्ञा मेहयणसनिगास देवसच्चिन्नाय पुढ  
 विसिटापट्टेय पानिहेहेसा दप्पसयारय सयारिज्ञा दप्पसयारीवगायस्स सल्लहणाणुसणाणुसियस्स नहपाणपानि

चांनरागेरआसापने । अणिता चमसिता । वादीने नमस्कारकरीने । आनयच्छुभासिता । वादत् पर्युपासना सेवाकरीने । समवेचमगावयानवावीरिप ।  
 यतर भगवत् योगेश्वरोरआमी । अष्टाव्याप्तसाहं । आया शौभायवर्त्ता । सयमेवपंचमहस्रयाचि पारावेत्ता । पातैव पचमहाप्रत सर्व प्राणानिपा  
 नवेरमवादिक्क वापोने । समवायसमवीधानकानेता । यमथ गीतमादिक्क तेवनेकावे यमवीसाहवी सदनवासा प्रसुख तेवनेकावे च्चमावीने । त  
 द। अरविचरेदि । तक्काय्य सवीरजट तिवेक्करो अदिरेक्करी । ककारश्चिधदि । कोथीयाम प्रलुपचवादिभ्यापार ते कतयायी तियेक्करी सञ्चित । विपुळ  
 पञ्चदशद्विदं २ पुक्कहिता । शिपसनाने पवत तिष्ठा वन्ने २ वठीने । नेहवचसच्चिन्नाय । चिन्नां व्याम नेव तिसी शिला निवडकालपर समान व्याम ।  
 पठवीशिकारदह । पृथिवी शिलाक्य प्रासनमित्येव । देवसक्रियत्वात् । देवसमानम रमणीयत्वात् । पच्छिक्कहिता । पच्छिक्करी वृकीने । इधपञ्चादिवं अत्र  
 रिता । काम अश्चियेपना सवापा तेपने पावरीने । इधसवादादमवयव । कामने सकारे अयनत् रद्याने । अल्लह व्याभूतसंज्ञाभूतिसंज्ञा । दूबन्ताकमकीने र



पयासाजयति सङ्गतासङ्गमार्जनस ॥ उद्यारपासवदभूमिपान्तिसेहेहसि ॥ वादपोपगमगा वारा दुधाराहे सास्य कतथात्ता दुधारादिभूमिप्रत्यु  
 स्वदया श्ठसमठे हताश्रित्यि , श्वासुहदेवाणुपिया मापानियथ , तरुणस स्वदणुश्रुणगार समणेणनगावया  
 महाधीरेण श्शुणुयाणु समाणे हठनुठजावहयाहियणु उठाणु उठेइ उठेइसा , समण नगाव महाधीर तिरकुसो  
 श्यापाहिणपयाहिण करेइ , जाव नमसित्ता समयेय पचमहस्रयाइ श्वासेहेइ श्वासेहेइसा समणायसमणीउय  
 सामेइ सामेइसा तहाकवेहिं येरोहि कनाडाहिं सदिं विपुलं पस्रय साणय साणय दुरुहेइ दुरुहेइत्ता मेहय  
 णसन्निगास देयसन्नित्राय पुढाधिसिंलायद्वयं पानिलेहेइ पानिलेहेइसा उच्चारपासवणनुमि पानिलेहेइ पानिले

भावाए जात्रजयत । पागागिमप्रभातधमय प्रगटवययावणु जाज्जवसमान जस्य । जेहेवमसपतिय । किंवां माजरा समीपवै । तेषेवज्जवसापए । तिंवां जताव  
 सो पाया । सवुखसुखइवा यहेमसो । तेनिये वेवद्वय ! एययं समस्यै सुखवै । जतापत्ति । वां कामोवै, तिंवारि मगावतकवुइ—यथासुखदेवाजपिया ।  
 मिससुख तिस वेदेवागुप्रिय पवि । मापदिद्वय । तिसर मज्जरणी । तणुससिंसाएयजगारे । तिंवारि ते सुद्वय साय । समजेषुभगवयामजावोरेव । यम  
 य भमयत योमहावारम्भासो । यथासुखाए समाये । याजादोधींजका । जहुगुडभाविजियए । इटवया सतोपपाया यावणु इद्वयजेवनां । उट्टाए उट्टे २ गा ।  
 कटे जठोने । समजमयव महावोरं तिकत्ता यावादिपयवादिज्जकरे । यमस्य भगवत योमहावीरकामोपते नीनवार कीसजापासाथी पद्विषयाक  
 रे । जावज्जमसित्ता । यावणु नमस्कारकरोने । सुवसेवपचमज्जययाए । पातैज यवमजाजतप्रते । यारुहेइ २ गा । थापै थापोने । समज्जाय समवीथांय ।  
 साधगातमाटिप्रते साधवी यद्वनवासाप्रसुख प्रते । यामोरे २ गा । यमाथीने । तज्जारेविषयेरेवि । तजा सर्वरज्जट अविरसाय । कजाइहिंसदिं । वेया  
 जलजारी ते सदाते । विपुखपचसंविचयं २ दुरुहेइ २ गा । विपयन पयत तेइप्रते इजव २ वटे जठोने । सेवषजसुखिगास । सकसमेव सरीखी काम । देव  
 सपिययाय । इासमागम रमज्जोक् यथाथी । पुठगिंसिन्नापइसंपदिनेसुर २ गा । एधियो मियाका काम पठिलेहेइ पठिलेहेइने । उद्यारपासवदभूमिपविचि

येष्वयं न निरपेक्ष ॥ सपत्नियकनिस्त्रेति ॥ पट्यासनीपथिष्ट ॥ सिरसाव्यसति ॥ शिरसा व्यसत मरुष्ट सपत्ना शिरसि व्यावर्तं प्रायुति रावत

हेइसा , दक्षसपारय सपरइ सपरइसा , पुरत्यानिमुहे सपत्नियकनिसके करयलपरिगाहिय दसनह सिरसा  
वच मत्यपु स्रजालिकहु एवययासी , नमोत्युण स्ररहसाण नगावताण जाय सपत्ताणं , नमोत्युण समणस्स  
नगावतं महावीरस्स जाय सपाथिउकामस्स वदामिण नगावत तत्थगाव इहगतं पासउमेसेनयव तत्थगाणु इह  
गाय तिसिकहु ववड णमसइ वदिसा णमासिसा एवययासी , पुसिपि मणुसमणस्स नगावतं महावीरस्स स्र  
तिणु सहे पाणाइयाणु पस्सरकाणु जायअजीयाणु जाय भिच्छादसणसहे पस्सरकाणु जायअजीयाणु , इयाणापियण

हेर २ ता रमावकारसवरर २ ता । वडोनीति भयुनीति भूमिप्रते पडिसेहे पडिसेहीने जाभदवधियथना सधारा पाथर पाथरीने । पुर्याभिसुहेसपदि  
यकडिखले । पूरुदिमि सामुशा पयेकामने हेसे थापटपावळा वासीने हेसे । करवसपरिखडियं । करतल वेवाय आठोने । दसनवसिरसावपनमत्वएषअसि  
कहु । वयानव थासुकीना मयुवनेदिये थावत परिभवमववरो एतसे वेवावळाव । एवययासी नमात्वय । इम करता कुवा नमकाररुप्या । यरुंताय ।  
नीग सुयननेविपे पूरवावाप्यनेकावे । जावसपत्ताव नमात्वय । यावत् सिवगतिकाग समानेकावे नमकाररुप्या । समवस्यभभवयोमवावीरस्य । य  
मव भनवद योमवावीरखामीने । जावसपत्तिवकासस्य । यावत् सिवगतिनामथोवकान पासवागा कामीने । यथासिच भगवत । नमकारकरुं भग  
वत योमवावीरखामी मते । तत्वमथ भयवत । तिवाटकावे । इवयवपासथामेसेभयवतत्वयणइवगाइयतिकहु । इ ववाटकावळा विपुजसिरिववतनेदिये  
देवी सुभने तेभगवत योमवावीरखामी तिवा रकावळा इवा दिपुजभिरका मां यद्वजनामिथ्यप्रते इमकरतीने । यद्वर वसंवर २ ता । वदि नम  
कार करे वीहीने नमकारकरतीने । एवववाची । इम करता कुवा । पुज्जियिमए । पडिन्ता पडिने । समवस्यभभवयो मवावीरस्य । यमव भनवत यो  
मवावीरखामीने । यतिए वनेपावाइयाए पवळाते । समीये सर्वं प्राजातिपाव विविधविदिववरो पवळा । जावयोवाए । जा वीवृताकने एयरोर



देवस्य न तिरस्कृतः ॥ सपत्नियं कति सखीति ॥ पद्यासतोपचिह्न ॥ सिरसा श्रमास मरुपुष्ट श्रमथा शिरसि श्रावर्तं प्रायुति रावस  
 हेइसा , दक्षस्यपारय सथरइ सथरइसा , पुरत्यानिमुहे सपत्नियकनिसद्वै करयत्परिगाहिपं दसनइ सिरसा  
 वसत मत्पुं श्रुंजलिकहु एवययासी , नमोत्युण श्रुहताण जगावताण जाय सपत्ताण , नमोत्युण समणस्स  
 जगावतं महावीरस्स जाय सपायिउकामस्स वदाभिण जगावत तत्थगास इहगतं पासउमेसेनयव तत्थगाणु इइ  
 गाय तिसिक्हु ववइ णमसइ वाटिसा णमसित्ता एववयासी , पुसिं पि मणुसमणस्स जगावतं महावीरस्स श्रु  
 तिए सहे पाणाइयाणु पञ्चस्काणु जावज्जीयाणु जाय निक्खुदसणसहे पञ्चस्काणु जावज्जीयाणु , इयाणापियण

हेइ २ ता रसथारासथर २ ता । वसोतोति मधुतोति भूमिपत्तं पडिद्वेहि पडिद्वेहीने जामावविमथना सजारा पावट पावरीने । पुरज्याभिसुहे सपत्नि  
 यवत्तियत्तवे । पूरुत्तियि मापुसा पयंजापने वैसे वापटपावटयो भावीने वैसे । करवसपरित्यक्तियं । करतन वेइयाव जाकोने । दसमहुंसिरसावज्जमत्थएयसिं  
 कहु । रगावव पाहुलोना मपुं कनेदियै पावत परित्थमववरो एतथे वेइयावभाओ । उववयासी जमाजयं । इम कथता इया जमक्खाररुप्यां । यरुं ताथ ।  
 तीज सुवतनेदियै पूरुथाशाथनेकाव । जावसपत्ताथ वमानुव । यापत् सिरयतिक्कत सपामनेकावे जमक्खाररुप्यां । समवक्खमगावपोमहावीरसु । य  
 मव मत्तवत सोमहावीरस्यामीने । जावसपादिक्कामस्य । यावत् सिउमतिणामथेयक्कान पाभवाभा जामीने । वेदाभिज भववत । जमक्खारकरुं भग  
 वत सोमहावीरस्यामी पत्ते । तत्तन्व भगवत । तिक्कत्तावे । इइयावपायपासिसेभववतत्तगपइमवदयतिक्कहु । इ इक्कारत्तावका विपुवयित्तिपवतनेदियै  
 देयो सुभने तेमववत सोमहावीरस्यामी तिक्का रत्तावका इया विपुवयित्तिक्का मा इइक्काममित्थपत्ते इमक्करीने । वेदइ जसमइ २ ता । वडिं जम  
 क्खार करे वदीने जमक्खारक्कीने । एइयावी । इम कथता इया । पुत्थित्तिसय । पडिन्ता पडिंमं । समवक्खमगावपा महावीरस्य । जमव भववत न्दी  
 महावीरस्यामीने । यत्तिए सपेपावाइयाए पवक्काते । समीदे सवं मावातिपात विविक्कित्तिवक्की पवक्का । जावज्जीयाणु । जा वीर्ज्जतावने एयासेर

समणस्स नगावत्तं महाधीरस्स स्थितिए सव्व पाणाइयाप पञ्चस्सकामि जावज्जीयाए जावमिच्छुदसणसन्न पञ्च रकामि जावज्जीयाए , सव्वस्यसणपाणस्साइमसाइम चउत्तिहिए आहार पञ्चस्सकामि जावज्जीयाए , जापिय इमसरि र ड्ठ कत्तं पिय जाव फुसत्तुमिक्कहुं प्यपिण चरिमेहि जसास नीसासेहि वोत्तिरामिक्कहुं , सल्ले हणाकुसणाकुसिए नसुपाणपाणिनाइस्सिए पात्तयणाए काले स्थणवकवमाणे विहरइ , तएणसेसव्वएण स्थणगारे समणस्स नगावत्तं महाधीरस्स तहाक्खवाण धेराण स्थितिए सामाइयमाइयाइ एक्कारसस्यगाइ स्थहिज्जिभा वक्का

ने जावता पयत । जावमिच्छाएसव्वसणेपयत्थाए जावज्जीयाए । यावप्प मिच्छाएगममज्जमसुखं यत्तर पापकानञ्च पयत्था जाव्जीवतासने । इया विपियञ्च । वनेवपि । समञ्चस्य भयवथामजावीरस्यपतिए । यमञ्च भगवत श्रीमहावीरस्यभीने समीपे । सव्व पाणादवार्थं पयत्थामि । सब माजातिपा न विविध विविधकारी पयत्तम् । जावज्जीयाए जाव मिच्छाएसव्वसन्नपयत्थामि । जा वीवुं तावमे वावप्प मिच्छाएयान शस्यमसुखं यत्तरपापकानञ्च प यत्तम् । जावज्जीयाए । जा वीवुं तावगे । सव्वसव्वपावावप्पाइमसाइम । सव्व ययान पाने स्थितिसंस्थामि । यत्तस्मिन्निपाजारापयत्थामि । चारेरदिधि मापाजारे पयत्तम् । जावज्जीयाए जावत्तमसरिरे । जा वीवुं तान्ते जेवपि एमारी । इत्थकत्तंपिसव्वआपकसंगत्तिज्जु । इत्थ क्कत्तं मित्र यावत् रोम पातञ्च पयम इत्थाइवे मफरता इमकारी । पत्तंपियवत्तिमेव । एत्थपि गरीर च पाक्कात्तंकारे, वेवसा । उच्छासनीमासेत्तिरोत्तिरात्तिज्जु । सापायासेकारी वासराइ रति इमकारेने । वसव्ववत्तमसुखंभूषिए । शरीर पुनञ्चकरोये तेवसेव्वजा तप तेवनी सेयापत्तिरा इत्तं भत्तपाञ्चपत्तिगाइत्तिए । भात पीवी तेवने पयत्तवीने एतत्ते जातिरावती । पापायमएक्कासएववत्तमसुखं चोवित्तर । पादपायगम यत्तयत्तको क्कालमत्तमत्तं यत्तयत्ततावको विधरे । मएव यत्तंएव यत्तयति । तिघारे तेवत्तकमापु । यमञ्चस्यममपामजावीरस्य । यमञ्च भगवत श्रीमहावीरदेवता । तत्तत्तवत्तं सेरावत्तिए । तत्तत्तवत्तं तेववा चत्तइ क्कविस्से समीपे । ससाइयसाइवाइ । यामात्तञ्च पात्तिइ । एत्तत्तसंसाइ यत्तिज्जिभा । एत्तत्तवत्तयत्तं यत्तं सुधर सुत्तय यत्ती भव्तीने । इत्थपत्ति

न परिचमन्न मस्य सौ, समस्यसोपा च्छिरस्यायत्नं सः ॥ सठिनासाइति ॥ प्रतिदिनं भोजनद्रुपस्य त्यागा चिथना दिने पट्टिन्नन्नाति त्यन्नानि  
 भवन्ति ॥ अन्नसखापत्ति ॥ प्राकलत्वा दनशनेन ॥ खेरत्ति ॥ चित्वा परित्यज्य ॥ आशोदयपकिक्तति ॥ आसोचित गुरुत्वा निवेदित य दलित्वा  
 रज्जात व रप्रतिज्ञान्न मकरश्चिपथीकृत येना सा आसोचितप्रतिक्रान्तो ऽथवा ॥ आशोदयपकिक्तति ॥ आसोचित यासा यासोचनादाना रप्र  
 तिज्ञान्नद्य मिथ्यागुक्तदाभा दासोचितप्रतिक्रान्तः ॥ परिचिथाश्चवत्तिपति ॥ परिनिर्वाण मरुत्वा तत्र यच्छरीरस्य परिष्ठापन सदपि परिनिर्वाणमेव

पाणिपुण्याइ दुयालसवासाइ सामस्यपरियाग पाउणिशा मासियाणु सलेहणाणु स्युहाण ज्कसिशा साठिन्नसाइ  
 स्युणसथाणु डेदिशा स्यालोहयपकिक्ताते समाहिपत्ते स्याणुपुक्षीणु काउगाणु, तणुणतयेरान्नागवतो स्वदयस्युण  
 गार काउगायं जाणिशा पारिनिस्त्रायसिय काउसग्गा करेइ, पक्षचीयराणिगिरहति, यिपुछानं पक्षुयातं सणि  
 यसाणिय पक्षोरहति पक्षोरहइशा जेणेवसमणेनगव महावीरे तेणेय उवागाच्छुइ उवागाच्छुइशा समणन्नगव

पथारं दुवाचवासाड । यच्चू मतिपूच पूरा पारैरसहमे । सामस्यपरियागपाशावत्ता । चारिच पर्याय एतसे शीषा पाथीने । मासियाणुसलेहणाए ।  
 एव मासनी सलेहणासि भनयने । पत्ताचयुसिना । आत्माने सेधीने पारैरीने । सडिभत्ताइ यच्चसवाइ छेदिता । छिन्नप्रति भोजने दायना त्यागावकी चीसे  
 दिने साठभात यनयने तथीने हेरीने गुधीदिने जेयतना यतीचारावत्ता । आकारयपकिक्तासमाहिपत्ते । ते गुरुने समसाधीने आसोहने तेवन्तो मिथ्या  
 दुष्कृतदेने समाधिपत्त्या मानसीपोहा रचितववा । पाच्छुषियपकाउयाए । यगुक्ते ज्ञासपहुती एतावता मरुत्वापत्त्या । तएवतेयेराभनवतो । तिथारे  
 ने क्कतिर भनवत । च्छुशयपचगारज्जावाककाश्चित्ता । सुद्वजसाधुपत्ते मरुत्वापत्त्या आशीने । परिनिष्ठाश्चरिपकाउसम्यक्करेति । मरुत्वावते तिथारं ज्ञेया  
 राटना परकरवाते पचि परनिर्वाणवोच तेनेणुके जेइनेते ज्ञाउसम्यक्करे एतसे यतजपरिरे वासराधीने । यलजोवराश्चिपिचवत्ति । पाचयवकी यज्ज यपय  
 रव पथी । दिपुशायापन्नवायाचन्दिने २ पचारवत्ति । दिपुननामा यवतज्जकी च्छुवे २ ज्जतरे ज्जतरीने । ज्जवेवसमेभनावस वतीरे । ज्जिवां च्छमच भन



न परिब्रजस्य यस्या श्रीं समस्यसौपा विद्वत्स्यावन्न सः न सठिन्नतादिति न प्रतिदिन भोजनमद्वयस्य त्यागा विद्यता दिने पट्टिन्नकानि त्यक्तानि  
 भवन्ति न अन्नसञ्जापति न प्राकृतत्वा वृत्तप्रानेन न वेदवति न सिद्ध्या परित्यज्य न आसौद्रयपरिकृतति ॥ आलाचित गुरूणा निवेदित य दतिश्वा  
 रजास न रप्रतिज्ञान् मन्त्ररविपयीकत मेना सा वासोचितप्रतिज्ञान्तो ऽपथा न आसौद्रयपरिकृतति न आसौचित दासा वात्ताचनादाना रप्र  
 तिज्ञान्तय निष्पानुकृतदाना दासोचितप्रतिज्ञान्त ॥ परिदिवाव्यवतिर्यति ॥ परिनिर्वाक मरुत् नत्र यच्छरीरस्य परिष्ठापन सदाय परिनिर्वाकमेव  
 पानिपुष्पाइ दुवालसवासाइ सामस्यपरियगा पाउणिशा मासियाणु सलेहणाणु स्युक्ष्णाण ज्कुसिस्ता सठिन्नसाइ  
 स्युषसप्पाणु ठेदिशा स्यालोडयपानिक्रते समाहिपत्से स्याणुपुक्षीणु कालगाणु , तणुणतेथेरान्नगवतो स्वदयस्युषा  
 गार कालजयं जाणिशा परिनिश्वायासिय कालसगा करेइ , पक्षचोयराणिगियहति , विपुलातं पक्षयानं सणि  
 यसणिय पक्षोवहति पक्षोवहइइसा जेणेवसमणेन्नगव महावीरे तेणेय उवागच्छइ उवागच्छइता समणन्नगव

यकार दुवावसवासाइ । पक्ष मतिपूत्र पूरा धारैररुत्तने । सामस्यपरिभागपठावता । चारिय पर्याय एतसे दीवा याहीने । मासियाएससेइवाए ।  
 एक भासनी संलेखवति यमयने । यताव्यर्थासिना । यामाने सेधीने यादरीने । सठिन्नताइ पक्षसञ्चार किरिना । द्विजप्रति भोजने दायगा त्यागापक्षी श्रीं  
 दिने वाठभात यमयने तकीने वेदीने शुभादिने जेपुतना यतीचारकथा । यार्थारयपठित्तसमाहितपत्ते । ते शुभने समसादीने यार्थाइने तेइयो निष्पा  
 दुक्तदरेने समाधिपान्ना भागसोपोडा रचितवना । पाण्डुपुत्रिएकावमए । यमुक्ते कावपहुतो एतावता मरुत्पाप्मा । तएवतेधेरान्नगवतो । तिभार  
 ते वारिर भयवंत । च्छंयंपक्षमारजाकालव्यवधिना । च्छंय्यथाशुभते मरुत्पाप्मा जाहीने । परिनिष्पान्तद्वारासस्यस्यकरेति । मरुत्तयेते तिजनी जेय  
 रोचना परकववति परि परिनिर्वाकरीक तेहेतुके जेइनेते कावसप्यकर एतसे यत्तकयरीर दासराहीने । यत्तजोवराणिगियहति । पाण्डपक्षी यत्त जपव  
 त्व यहै । दिपुष्पायापण्यवाधावधिरुत् २ यथाववति । दिपुष्पान्ना पयतवकी रुत्ते २ जतरे कानरान । जेयेवसमयेभयमववादीर । विजवा च्छंय्य मय



महावीर धदइ नमसइ धदिशा नमसित्ता एधवयासी , एधस्सु देवाणुप्पियाण सुतेवासी खदपुणामसुण  
 गारे पगइनइए पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायाल्लोने भित्तमइवसपसु सुक्षीणे नइए विणीए सेणद  
 धाणुप्पिएह सुसुणुणुणुसमाणे समयेवपचमइसुयाणि सुारहिशा समणाय समणीउय स्वामेसा सुन्होह सदि  
 विपुल पसुयं तचेव निरवसेस जाव सुाणुपुक्षीए कालाए , इमेयसे सुाधारनकए नतेत्ति , नयवगोयमे स  
 मणंनगव महावीर धदइ णमसइ धदिशा णमसिसा एधवयासी , एधस्सु देवाणुप्पियाण सुतेवासी खद

वत धामवागारयासाह । तेववडवायव्वत्ति र ता । विवत्तं धावै तिष्ठं धायोण । समत्तंभयवमहावीर धदइ वमसइ २ ता । यमव भगवत ओसहावीर  
 वामोपते वाहे नमस्कारवरै वदनाकरीने नमस्कारकरीने । एवववासी । इम ववताववा । एववसुदेवावुप्पियाव धतेवासी । इम निये वुदेवावुप्पिय ।  
 वमगवद् । तुस्साराप्पिय । सुइएववामपववगारेपगइमइ । सुइववमं साधु पवतेवरी भद्रव वुटवित्तारवित्त । पमवववसते । प्रवते वपयात्त वपायवव  
 न । पमवपववववाइसावमवववमं । समार पालमापयात्ता व्वाध मत्त माया वामविवे । भित्तमववसपव वववइ । सुइ माएव ववेकरी सपुव, वम वव  
 वरववात्ता नवो । भद्रवविवीय । एवववा माटव भद्रव भित्तववत तव । सेववेवावुप्पिएवइ । तेव वाववववववारे देवावुप्पिय । वमववववाएसमावे । धावावी  
 वाववव । सममेवववववववाए धारावववा । पातेव वव प्राववित्तयात्तादि पवमववववत मते धारावीने । समवाय । साधुववव गीठमादि मते । समवी  
 धावववमिणा । धाववी वदवववावापसुवने वमवीने । पत्तविवमवववववववव । वव सवते विपवववित्तनामा पवते वववादि सव । तवेवविवरवसेस ।  
 भित्तव विविगेवे वववा । धाववुवीएववववव । धावव ववववमे वववववव । इमेवसेवायावववववववववव । एव तेववना धाववत भववववववव  
 वववव वमववव । भगवगायमे । भमवत भोवम समववमवमववावीर यमव भगवत ओसहावीरवववववववव । वव ववववव २ ता । वादि नमस्कारवरै  
 वारीने नमस्कार करीने । एवववासी । इम वववववव । एवववववववववववववव । इमविये वुदेवावुप्पिय । तुस्सारा पिय । सुइएववामपव

सं परिच्यमन्व यस्या धीः, धर्मस्मत्तोषा विद्वरस्यावत् स्वं ॥ सठिजाताइति ॥ प्रतिदिनं भोजनमदृपस्य त्यागा विद्यता दिने पठिन्नकानि स्पर्शानि  
 भवन्ति ॥ यत्रसुखायति ॥ प्राकृतस्या दनमनेन ॥ वेदसति ॥ विद्या परित्यज्य ॥ आसोदयपपिक्रतेति ॥ आताचित गुह्यं निवेदित य दत्तित्वा  
 रजास त रप्रतिक्रान्त मकरविविपयिक्त येना सा वासोचितप्रतिक्रान्ते, उपया, ॥ आसोदयपपिक्रतेति ॥ आसोचित वासा यासाजनादाभा रप्र  
 तिजान्नाय निप्यादुक्तदासा दासोचितप्रतिक्रान्तः ॥ परिक्रियाववतिपीति ॥ परिक्रियां मरुत् तत्र पच्छरीरस्य परिष्ठापन तदपि परिक्रियां चमेव

पानिपुयाइ हुयाठसवासाइ सामयापरियाग पाउणिशा मासियाए सलेइगाए झुसाण ज्फुसिसा सठिनसाइ  
 झुणसणाए देदिसा झुलोइयपानिक्रते समाहिपत्ते झुणुपुष्टीए कालगाए, तणुणतेपेरानगायतो स्वदयझुण  
 गार कालगपं जाणिशा परिनियायासिय काउसगा करेइ, पसुचीयराणिगिरहति, विपुलाठं पसुयाठं साणि  
 यसाणिय पसुिहहति पसुिहइइशा जेणेयसमणेनगाव महाधीरे तेणे न उवागाच्छुइ उवागाच्छुइसा। सुमणजनाव

पुकारं दुवाजसवासाइ। पसू प्रतिपू पूरा भाररसवसे। सासवपरियागायासायथा। वात्ति पर्याय एतसे हीया पासोने। मासियाएसंसेइजाए।  
 एव सावनी संवेच्यवने यनयने। यलाज्युसिना। आमाने सेवीने यादरीने। सठिभलाइ यवसवार वेदिना। दिनपते भोजसि दायभा त्यामयकी पीसे  
 दिने साठभात यनयने तकीने सेवीने गुर्वाधिके जेवुनता यतीचारकजा। आकारयपठिक्रान्तसमाहिपत्ते। ते शुद्धने सुमसाधीने यासीइने तिहनी सिप्या  
 गुह्यतरेने धमाधिप्या मानसोपोडा रचितसवा। पाशुपुष्विण्णावगाए। यमुपसे आसपयुती एतायता मरुत्तयाम्ना। तएचंतेपेरानगायता। तिवादि  
 ने कतिर भगवत। अश्वपव्यादकारवमयवात्तिना। अद्वसामुपते मरुत्तयाम्ना आसीने। परिक्रियाववतिपवगायसमकटिति। मरुत्तयेकने तिहनी जेय  
 रोला परवज्जाने पति परिक्रियां चमेव तदेतसे आसवम्वर एतस्य एतकयरीर भासराधीने। यमसोदराधिभिवजति। यावयपपुते यथा जवग  
 रव पथै। विपुसायापव्ययायासिच्यं २ यथाइवति। विपुसनामा यथाजकी एतसे २ जतरे जतरोभ। अद्वसम्वमे। यमवादीइ। जवत अमव ॥

महावीर वदइ नमसइ वादिंसा नमसित्ता एववयासी , एवस्सलु देवाणुप्पियाण श्रुतेवासी स्वदणुणामश्रुण  
गारे पगाडनइए पगाइउवसते पगाइपपणुकोहभाणमायालीने मिउमद्वसपसो श्रुशीणे नइए विणीए सेणद  
याणुप्पिणुहिं श्रुसुणुणाएसमाणे सयमेवपचमइसुयाणि श्रारहिंसा समणाय समणीउय स्वामेसा श्रुन्होहिं सांछि  
विपुल पसुप तत्तेव निरवसेस जाव श्रुणुपुसीए कालाणु , इमेपसे श्रुयारनकणु जेतत्ति , जयवगोयमे स  
मणजगव महायार वदइ णमसइ वादिंसा णमसिसा एववयासी , एवस्सलु देवाणुप्पियाण श्रुतेवासी स्वद

वव जामवा शारवामोवे । तेवेउठवामव्वत्ति ३ ता । विहां कावे तिहां चावीण । समवमयवमवावीर वदइ वमसद २ ता । यमव भगवत श्रीमहावीर  
कामापरं वादे नमस्कारकरं वदताकरीने नमस्कारकरीने । एववयासी । एत वजनाइवा । एवउसुदेवाणुप्पियाण भतेवासी । एत नियो इदेवाणुप्रिय ।  
इमगावणु । एववाणुप्रिय । वदएवामपववयारेणगइमहे । वदवजगते साधु प्रकतेकरी भदव दुष्टधितारहित । पमरउवसते । प्रकते उपायांत कयापरहि  
त । पयएववसुवावसावमावकांमे । समाय पातलपाया काव मान मावा सोमविजे । मिठमद्वसपव पसादि । सुदु मादव वजकरी सपुं, वम रणे  
उरवाया नवी । भदवविशिये । एवसा नाट व भदव जिनवगत तव । सेवदेवाणुप्पियाण । तेव वाक्यामवारे, देवाणुप्रिय । पयवव्याएसमासे । यासादी  
यावकी । सयमेवपचमववयार वारवनेता । पातेव सव मायातिपातादि पचमवावुत मते वारपीने । समवाय । सापुवावे गोवसादि मते । समवी  
यावकतेता । सावरी वदतवासाप्रसुचने वमवीने । वसेदिसदिदिपुसंपवव । पसु सवाते विपवगिनिनामा पयते इत्यादि सर्व । तवेवविचरवसेस ।  
तिमव निविंये वववा । यावपुणीएवाउमए । यावत् पणुकेमे कावसरव पवता । इमेवसपायारमउपमतेति । एव तेवना यावार भोवठपवव  
देवावे देवगावव । भमववायमे । भमवत नीवम समवभगवमवावीर वमव मगावंत श्रीमहावीरस्वामीप्रते । वदइ वमसद ३ ता । वादे नमस्कारकर  
वादिने नमस्कार करेते । एववयासी । एत वजनाइवा । एवउसुदेवाणुप्पियाण भतेवासी । एत नियो इदेवाणुप्रिय । एववाणुप्रिय ।

सर्वेव मत्स्यो इतु संस्य स परिनिर्वाण्यस्यो न स्वं ॥ कश्चिद्यत्ति ॥ कस्या गती ॥ अपिउववसेति ॥ क्व देवलोकादाविति ॥ एतदप्यायति ॥ एकेपा

पूणाम स्थणगारे कालमासे कालकिञ्चा कहिंणए कहिंउववसे ? गोयमादि, समणेनगव महावीरे नगवगो यम एववयासी, एवसत्तु गोयमा ! मम श्रुतेवासी स्वदूणाम स्थणगारे पगाहनदुए जाय सेण मए सुभ्रणु थाए समाणे सयमेव पचमहवयाइ आसहेत्ता तचेव सव्व श्रवसेसय नेयव्व जाय थ्यालोइयपाणिक्कते सुभा हिपहे कालमासे कालकिञ्चा सुभ्रणुकप्ये देवथाए उववसे, तत्थण सुत्थेगाइयाण देवाण थावीससागरोयमा इ तिइ पसासा, तत्थण स्वदयस्सधि देयस्स थावीससागरोयमाइ तिइ पसासा, सेणनते ! खटए देवत्तानु

गार । अइवनाम सणु । कासमासकावकिञ्चा । कासने चरसरे कासकरान मरवपांमोने । कश्चिगएकटिउववसे । क्विसिगतिसिधे क्विसादेवकात्ता किञ्चनेधे कपमा इतिपय । आसमादि । भीतमादि इसे मभावन । समयेमयमइवापीरे । यमव मसवत यामइवापीरेकासो । भगवगोयम । भगवव गौव यमते । एववयासी । इम कइताइया । एवसत्तुगोयमाममयतेवासी । इम शिथे देगोतम । माइरा शिथ । यनएवामयववगारे । अइव इसेनासे सणु । पयएतए वावसेवमस । यावए तेवने धी यासादीयावका । मयमयपचमइवयाइ पाटोवेत्ता । थापवपैव पावमइवावृत्तपते थापोने थारापोने । तवेव सव्व थवसेधिसव्वेगव्व । तिमव शिथे सव्व धियोएरट्टित कइवा । वावथासाइवपट्टिकते समाधिपसे । यावए यासाइ पट्टिमोने निरावाथपय समाधि थासो । कासमासिकावकिञ्चा । कासन यवसरे कासपते कटोने । यवएकपेदेवताएउववसे । वासमा अचुत्तनामा देवलोक्कनेधिये देवपणे कपयो । तत्थए परमेवसावसेवाव । ते वासमा देवलोक्कनेधिये केवलाएव देवता पच्चि सगकांनोअदी । थावीससागरोवमाइतिपव्वत्ता थावीस सागरोयमनो क्विदि पावथाओ कइओ । एववकइयथाविदेवका । तिथी अइव पच्चि देवनी । थावीससागरोवमाइतिपव्वत्ता । थावीस सागरोयमनो क्विसिक्कदी थावथाओ विभावकत्ता । सेवमतेअइवताथादेवलोथाथा थावववएवं मवक्कएवं इतिव्वएव । तेवं थाव्वाकवदि, विभावएव । अइव देवतावी देवलोक्कदी थावववव



रिक्ततएव प्रवर्तीति वेदनाद्यनुभवप्रामेणं सर्वेऽपीनाथः अप्य प्रावत्येन पाता कथं ? मुख्यत यस्मा द्दृढनाटिसमुद्घातपरिक्रतो बहून् येदनीयादिक  
 म्यप्रदेगान् कासांतरासुभवयोण्या मुदीरकाकरकेना कथ्य उदये प्रविष्ट्या मुनूप निष्करयसि वास्यप्रदेसोः सव सिष्टान् शालपतीत्यथ कत प्राथ  
 स्थन पातादिति ॥ सप्तसमुत्पायायति ॥ यदनासमुद्घातात्तथाः एतव प्रज्ञापनाया मिव इष्टव्याः कतएवाह ॥ उडमत्सियदृत्यादि ॥ काठमत्सियसमुत्पाया  
 यत्कटि करकमत । काठमत्सियासमुत्पायापक्षसाहत्यादि सूत्रयत्किंत ॥ समुत्पायाययति ॥ प्रज्ञापनायाः पदत्रिधातमपद ममुद्घातार्थं मिव नेतव्य  
 तस्येय-इहव नस । समुत्पायाया पक्षता ? गोयमा । सप्तसमुत्पायाया पक्षता सप्रज्ञा-ययकासमुत्पायात् कसायसमुत्पायात् इत्यादि इहसयहगाथा-यैय  
 य १ कसाय २ मरवे ३ यडविय ४ तययय ५ धाहारे ६ । कयलित्पयवने वेद्यमहुस्साकसतव ७ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

सप्त समुत्पाया पक्षता, तजहा-यैयणासमुत्पाए एव समुत्पायायपय उडमत्सियसमुत्पायायवज्ज नाणियव्व जा  
 य येमाणियाण, कसायसमुत्पाया स्य्यायज्जय, स्युणागरस्सणन्ते ! नायियपपणो केवलीसमुत्पाय जाय सा  
 महात क्वोये यतिपव्वस्येयाय न समुत्पात क्वोये जन्विवा मत्तारिति ववनात् उसर । मायमा सजमसयाया पक्षता तजहा येयव्वसमववाए एवस  
 मुत्पायायपव्व क्वमत्सिययमवायापव्व मत्सिययववावदेमाधियाव । वेगोसम । सात समुत्पात क्वथा तेकईदे-वेदनाससुत्पात दस पक्षववानीपर देवुया  
 एतका माटैव कईदे-इहमत्सिय समुत्पायव ववति ॥ क्वथयन्ते समुत्पायाया पक्षता इत्यादि, सूत्रववति, समुत्पायायययति पक्षववानी क्वसिसोपद स  
 मुत्पात इवा साववा क्ववना न येयावी देवादि-क्वथं भते समुत्पायाया पक्षता सत समुत्पायाया पक्षता तजहा येयव्वसमुत्पायाए इत्यादि ॥ येयव १ क्वसा  
 व २ मरवे ३ वेवपियव ४ तियपव ५ धाहारे ६ । क्ववसिय ७ क्ववसये धीयमकुसाव्वसनेव ८ १ ॥ तिवा वेदना समुत्पाति क्वती येवमीय क्वसंशातनक्वरे १ प्पायाव  
 समुत्पातिकरी यपाय पक्कना मातनक्वरे २ मारत्वात्सिय समुत्पाति क्वती थायु क्वमपुक्कना मातनक्वरे ३ वैकियसमुत्पातिक्वरी क्वीवप्रदेनापते मरीएवकी  
 नाहिरकायी मरीएवियव्वय वाहव्वसमात् २ यमे पावामवी सक्केयायव्वन इववपत रवी ववा क्वूव वैकियमरीएनापुक्क पूरेवववा तेपते मातनक्वरे, तजहा

द्विपुत्र पयापामित्यस्य सप्त पेंदनासमुद्धानेन समुद्रत आत्मा वेदनीयकर्मपुद्गलानां ज्ञात करोति, कथायसमुद्धानेन कथायपुद्गलानां भारजानि कसमुद्घातत चापु कल्पपुद्गलानां पेंदुयिकसमुद्घातत समुद्रतो वीजप्रदेशान् क्षरीराद्विनिर्काश्य गरीरविकल्पवाहस्वमाद्य भाषागतस्य सङ्केययोक्तस्य नि दशनं निरुज्जति निरुत्पन्नं यथात्पूलाप् वेद्विषयक्षरीरनामकनपुद्गलान् प्राणशुण्णान् ज्ञातयति यथा सूक्ष्मा यादने यथोक्त-वेदवियसमुपायाय स यथोक्तवदना सद्यज्जार्हं ज्योत्स्नाह दंक्त निरिदरं आहवायाये पीतगले परिसाठेह कथासुसुप्तयोभसं आहयन्ति एव तैजसाहारकसमुद्घातावपि आस्यपी, कवासिसमुद्घाततनु समुद्रत- केवसी वेदनीयादिकल्पपुद्गलान् ज्ञातयतीति एतेषुच सर्वेषुपि समुद्घातेषु गरीराब्धीयप्रदेशानिर्ममोक्ति संप्रैवते यतमुद्गलमाना नवर केवसिक्तो ऽपुसामपिक्त एते वेद्विषयविकसेन्द्रियाणां माहित कथो, वायुनारकाणां जल्यारो, देवानां पञ्चेन्द्रिय तिरयाच पंच, भनुष्याजानुससं ॥ इतिद्वितीयकते द्वितीय षट्षः समाप्त ॥ २ ॥ अथ तृतीय आरभ्यते अस्य चाप मन्त्रिसम्बन्ध द्वितीयोद्देशके सपुद्रपाताः प्रकल्पिता सपुत्र भारजानिकसमुद्रपात स्तेनञ्च समवहताः केचि त्युपिधीषु स्थिता इती इ पृथिव्यः प्रतिपाद्यन्तइत्येव

सयमणागायत्रु चिदति, समुधायापय पंचस्र ॥ विद्वंसस्य दीनं उद्वेसो समस्तो ॥ २ ॥ कइ

सुत्पन्नस्य प्रतेषु ४ इम तैजस पाहारक समुद्रघात पञ्च ब्रह्मायना। कथसिसमदुघातेकरो केवसो वेदनीयादि कल्पपुद्गलाने ज्ञातनकर ५ एसबसमुद्रघात नैदये योरेवकी ज्योवप्रदेशाणां नियमके, यवलोमान् यंतमुद्गलनाके, यतसा द्विषेयके केवकी समदुघात जाठसमव पमाचके, ए समुद्रघात एकेन्द्रिय विक संद्रियन पद्रिसातीकपुत्रे, वायुकाय नारकीने पद्रिका आरपुत्रे, देवता यने पचेदीतिवेचने पचपुद्रे, मणुञ्च सधीने यने ज्योवप्रदेशात मसदुघात पुत्रे इम यादत् वैमनिक्तो इ कइका कपायसमुद्रघात यत्पद्रुलसते कइको। पञ्चयात्कथमतेभाविबपयथाकेवसिसमुद्रघाय। अजमारसाधु वैभयायन्। भाविवा ज्ञाने केवसि समदुघात। आबसासबसकाजबवविद्वि। यादत् प्रासता यनायतकास री। समदुघातपदेषिष्य। समुद्रघात पद पचब्रह्मणा कृतीसमी मयकइना। इतिलयसवश्वदिति। ए वीजा यतकना कीजा चइया चइयो विभ्यो ॥ २ ॥ पाविचे चइये समुद्रघात कथा तेहन

रिक्ततया व्यवसिति वेदात्प्राप्तवद्यानत एव शीतादाः, अप मायस्यैव धानाः कषः भुष्यत यथा। दुर्गाद्विगापुष्टानपरिक्ता अपुः । परमीपादिक  
वपद्रव्यान् कासातरामुभयपाया सुदीरकाकरत्वेन कष उदय परिध्या गुतूप निःकरवति कासाप्रदस्योः वा इतिगार् धानपनीत्यथाः । कासाः प्राव  
प्यन पातादिति न समसमुत्पादति न परन्तानुष्टानादयाः, एतन्व प्रजापमया तिव इडव्याः, अतएवाइह न कासात्थिपरत्यादि ॥ काउमलियपधुत्पापय  
व्यावृत्तिः कर्त्तव्ये । काउमलियपधुत्पापयव्यासाद्व्यादि गुणवन्ति न समुत्पापयपति न प्रजापयाः । पद्विद्यतमपदं वापुष्टानार्थं तिव सतम्य,  
तद्वेव-कर्वन् वत । समुत्पापय पञ्जातः नोपया । एतसमूपाया पणता, भजाडा-यपकापधुत्पाप क्वापयवमुत्पाप दत्यादि । दसपदवगाया यय  
न १ कसाय २ भरवे ३ यउयिय ४ तपपय ५ काकार द । कवनिजवगतय शीवमभुष्टयाकषतय ७ न १ ॥ जीवपदं समुत्पदन् वापयाः । गारका

सप्त समुत्पाया पयासा, तजडा--येयगासमुत्पाप एय समुत्पायपय लउमलियपसमुत्पाययथः नानियपय जा  
य यमाणिपाण, कसायसमुत्पाया सुप्यायक्यय, सुणगास्सगानत । तादियप्यणा केषलीसमुत्पाय जाय सा

सुगत कषीये चितवद्वनपाव नि मगुडान कषीये वन्विद्या ग्यादिति क्वनात् एतत् । भावसा भगममूपाया पञ्जाता तजडा नैयवद्वसपाप यय  
मुत्पायपय क्वमलियधमादावयय भावियवर्थाववेभावितात् । वेमीसा । भात समुडान कसा तैकषीये--वेयनाससुडान दम ययवद्वानोपदं येयवा  
एतत्ता माडैव कषीये-कर्वमलिय यमुत्पाय वज्जति न कर्वमभेने समुत्पाया पञ्जाता दत्यादि, सुवद्वर्त्तन्ति, समुत्पापयपति ययवद्वाना कषीयसापदं स  
मुडान दधा भावसा कर्ववा न सगसा येयवद्वे--कर्वमभेने समुत्पाया पञ्जाता भात यमुत्पायात यञ्जाता तैजडायेयवममूपाय दत्यादि न ययव द कषी  
य २ सत्वे ३ वेठयिय उतिवय ४ थावारि द । जेवनिप ० येवमने भावमज्जयावपनीय ७ १ इतिवावेदना यमुडानि क्वा यवनाय कर्म्मभानकर्वे २ क्वावा  
समुत्पातिवती कपाय पूववना मानकर्वे २ सत्वेवतिव यमुद्वाराी क्वा पात क्वापुववना मानकर्वे २ वैकियसमुत्पातक्वा क्वायवद्वानपति यवावयकी  
वादिक्वायो मरीरिक्वय वाववपसाय २ यने यासासयो येयववावत ववववने रथी, यथा य्मन् वैकियवद्वाराणापववन् यमुत्पाया तपत भातमक ० नमा



रिपुन् यथायीमनित्यथ सत्र येदमासमुद्घातेन समुद्रत वात्सा येदमीमकर्ममुद्रसानां धातु करोति, कपायसमुद्घातेन कपायपुद्रसाना भारजान्ति  
 कसमुद्घातत वायुःकस्सपुद्रसाना येदुक्तिकसमुद्घातत समुद्रुती बीजप्रदशान् प्ररीराद्द्विनिकाहय प्ररीरविककमवाहस्यमाथ भायामतस्य सद्रूपयेज्जला  
 मि द्यष्टं निरुज्जति निरुज्जय यथास्युसात् वैज्जिस्यारैरनामकमपुद्रसान् प्रायुषशुान् शातपति यथा पूरुमा यादते यथोक्त-वेठविपसमुद्रापाय  
 क समीहज्जद्दसा सधज्जद्दं ज्येज्जद्दं निसिरह वाधावापरे पीरगले परिसाळद्द वाहासुद्रुमेपोभासे वाहयति एव तैजसाधारकसमुद्घातावपि  
 धारयेपी कयतिसमुद्घातमनु धमुद्रुतः केवसी देवनीयादिकस्सपुद्रसान् शातपतीति, एतेषु च सर्वथपि समुद्घातेषु प्ररीराज्जीवप्रदेशानिजसोक्ति  
 सर्वथते कतमुद्रुज्जमाना मयर् केवसिकी उरुसामपिक एते वैकन्दित्र्यविकसेत्रियाका माहित कपा, वायुनारकाका ज्जत्तारो देवाना पञ्चेन्द्रिय  
 निरयाच पञ्च, मनुष्याजांतसत ॥ इतिद्वितीययाते द्वितीय ऋषिः समाप्तः ॥ २ ॥ ५ ॥ अथ तृतीय कारज्यते अस्य वाप मन्त्रिसम्बन्ध  
 द्वितीयोद्देश्ये धमुद्रुपाताः प्रकृतिता सपुञ्च भारजान्तिकसमुद्रुपात सानञ्च समवाहताः केचि रप्यथिपीपू स्यात इतीह पृथिव्य प्रतिपत्तात्मइत्येव

सयमणागायकृ च्चिठति, समुद्रायापय पोयसु ॥ थिर्हयसु यीत् उद्देशी समन्ती ॥ २ ॥ कद्

सुद्रपुद्रस प्रतेषु ५ इम तेजस याधारज समद्रुधात पञ्च यथाज्जना। अइमिममद्रुधातेकरा केवली वेदनीयादि कमापुद्रप्रते यातमज्जरे ५ एसञ्चसमुद्रुधात  
 नदिये यतीरज्जली जोषप्रदेयाना निमज्जते, सवलोमान धतमुद्रुसोक्ते, एतथा हिमोपह्वे केवली समद्रुधात धाठसमव प्रमाज्जते, ए समुद्रुधात एकैद्रिय विक  
 सेद्रिये पञ्चिकातीज्जुवे, वायुजाय गारकीने पञ्चिधा चारुवे, देवता यने यथेदीतिवेज्जने पञ्चुषे मनुष्य सप्रोते यने जोषपदे सात मनुद्रुधात इवे इस  
 ज्जत्तारैनातिज्जतां कइसा कपायसमुद्रुधात यत्ताइज्जस्ये कइसा। यथयारज्ज्जभतिभादियरपथाकेइसिसुन्रवाय। यज्जत्तारसानु जेभवावन्। भाविता  
 ज्जति केरसि समद्रुधात। जावसासदमथानयर्हिशुंति। यावत् गाजता यनामनकास रई। समुद्रायापयदेज्येज्ज। समुद्रुधात पद पयवज्जाना ज्जलीसमी  
 सवकइना। इतिरसवज्जतिथा। ए बीजा मलज्जना बीजा सरेया थयीती लिज्ज। ॥ २ ॥ पाञ्चिजे ज्जये समुद्रुधात कइसा तेज्ज

सम्बन्धस्था एव भार्गव्युष ३ कश्च एते । पुढवीष्टित्यादि ३ इह च कीर्तानियमभारकद्वितीयोद्देशके अथसपद्मगाथा-पुढवीष्टगाहिता निरयासठाल मेववाहस । विस्वप्रपरिस्वेषो यज्ञोत्थोपकाशोय ३ १ ३ भूपुरुकाकेपुष पूवाद्भवव सिद्धित शोपाका विवचितायांना यावच्छयन भूषितस्यादि ति नव ३ पुढविचि ५ पृथिव्यो वाच्या स्यादीव-कश्च एते । पुढवीष्ट पञ्चसाठे ? गायमा । सप्त सप्तह-रूपप्यनत्यादि । शृंगाहितानिर्यसि ५ पृथिवी भवगाप्य किमदूरे नरका इतिवाच्य तथा स्या रजप्रमाया अशीतिसहस्रोत्तरपोजनलश्याहस्याया मुपयक याम्नसहस्रमयगाद्यापाप्यक य अथित्वा विस्वप्रकलकादि एवन्ति एव अकराप्रमादिपु यथायाग वाच्य ५ सठालमेवसि ५ नरकसस्याम वाच्य सप्त ये अथलिकाप्रविष्टा स्ते यथा अथसा शतुरकाव इतरतु माभासस्थानाः ५ वाहसति ५ नरकाया वाहस्य वाच्य , तत्र योषिपोजनसहस्राणि कथं अथ एक भयं श्रुपिर

अनते ! पुढवीष्टं पञ्चत्तानं ? गीयमा ! जीयान्निगमो नैरह्याण जो ध्यातिच उद्देशो सो षेयसि , पुढवीष्टगा हिंसा निरयासठालमेववाहस । विस्वप्रपरिस्वेषो यज्ञोत्थोपकाशोय ॥ १ ॥ किं सप्तपाणा उवययापुष्टा ?

दिवे अह्यकलोभ भार्गवादिच समुद्रयात नरीने पृथिवीनेदिवे अथने तेजभवी पृथिवीना अथिकार कहै—कश्चभते पुढवाया पचताया कीर्त्तानिम मेवेरवाच कादिनिपाठेसावासेयथा । केतसी हेमभवन् । पृथिवी कही इतिप्रय, कीर्त्तानिममने नारक बीजाह्वयानेदिवे अथ सपद्मगाथा वि विही एक पुरुषभनेदिवे भावाना पूर्वाहणीक विष्णुहै शेष अथ यावत् यन्ते कहर्वां, तत्र पृथिवी कहयो, तेरस केतसी हेमभवन् । पृथिवीकही, गीती म यत्त पृथिवीकही, तेजही रजप्रमा रज्जादि । अथहितादिरयासठालमेववाहसविष्णुभयपरिस्वेषो इति । पृथिवी अथगाही केतसीदूर नरकावासाहै तिही एरजप्रमापृथिवीनेदिवे एकवाच्य अयोहकार वाहनतो पिरहसै, तेमहि अथरि एक सप्तस योजन अथमाही ये नीचे एकसप्तस योजन मंकायेतिविचिमा योमकाच नरकावासाहै रम य अरप्रमादिच पृथिवीनेदिवे यद्योयो कहता, । सठालमेवति । नरकना सठालकहवा तिही अथाविकता प्रिदणरकनावासाहै तेकलाच अंथ चकराहै, यने शोका नानाप्रकार सज्जानेहै । वाहसति । नरकना काहय वा कहवा विधिअहस्यवाजनहै तेकिम भीये एकसप्तसवाअनपथ

मेक मुपरिच सुगुणएक निरति ॥ विस्वमपरिचरुवेयोति ॥ यती वाच्यी, सत्र सुगुणविसृताभा सुगुणतपोजन आयासी विरिष्म परिच्छेपय इतरैप  
 स्वस्यपति, तथा वसाहया प्राणा संजा स्वता भनित्या, इत्यादि सुखकल्प याव दय मुद्देशान्ता यवुत ॥ किसवपाकाहत्यादि ॥ आस्यपंच प्र  
 योयः, आसा रजप्रभाया विष्णुकरकसवपु कि सर्व प्राकारय उत्पन्नपूर्वा आभोतर ॥ अचरति ॥ अचर रनेक्याः, इदं वेलादुपादायापिस्था दती  
 स्वन्वापुस्यप्रतिपादनापाह ॥ अदुवति ॥ अयावा ॥ अक्षंतसुसोति ॥ अमन्तकस्वो अन्तवारात् ॥ इतिद्वितीयप्रतयेतीय उद्देशः समाप्तः ॥ ३ ॥  
 यतीयोद्देशके भारका वला, सात्र पञ्चैश्रिया इती निर्यप्ररूपयाय अगुर्पाद्देशक, तस्य आदिसूत्र ॥ अहकसिस्थादि ॥ पठमिभोवदिपय्युनेपयोति ॥  
 प्रजापमाया निरिप्रपदानिचानस्य पञ्चदशपदस्य प्रथमवद्देशको उत्र जलको उच्येत्य, तत्रच इतरगाथा-संवाचंयाहस्र पोहसकइपयसुंभाह ।

इतागोपमा ! अ्सति अदुधा अ्णससुसो पुठवीउद्देशो ॥ चिह्नपसु तद्वत् उद्देशो सम्भसो ॥ ३ ॥

अह्णनंत ! इदिया पयसा ? गोयमा ! पच इदिया पयसा, तजहा—पठमिसो इदियउद्देशो णेयसो, सटा

प्रये एकसहस्रवाजन सदिरहै जपर एकमहस्रवाजन सकावहै, तथा निष्कथपरिचयेवा विष्कथ यने परिधि अहवा, तिर्वा संख्यात कोषनविद्यारहै  
 तसंख्यातवाजन वायासी यने विष्कथे यन परिधिहै यने कोजा पयसकाय वाजननाहै ते आयासी १ विष्कथे २ यने परिधि पयसकात योषमना कोषवा  
 तथा । अथापंधात्र पापाय १ विष्कथपायाउरववपाया इतापयइ अदुधा अक्षंतसुसा पुठवीउद्देशा । यर्वादिअ अहवा ते यक्षंत यमिअ इत्यादि ययो  
 यनप्यहै शारत् उपदेशना यतस्ये इत्यादि एहना समप्रयाम या रजप्रभा दुबिबीना योससाअ अरकायासानीयै अ समसा मीवी अयना पूह इति  
 यत्र उतर इं एकवार अही ययोतर अहवा यनकोवार अयना एदुबिबीना उद्देशोअया । विविचसयसतदयोउद्देशा । एवीजा यतअमी योकी  
 अयेया उज्यायोविद्या ॥ ३ ॥ योके अये नारकीअया ते नारकी पचदोखे इवा इतीना अधिकार अहैहै—अहभतीइदिया पय  
 ता आयमा पचइदिया पयसा तजहा पठमिहाइदियउद्देशोअया । केतसा अ वाका।अका, हेमगरत् । इन्द्रिसक्या इविप्रय हेमोवम । पाचइती क

कथ्यात्पुण्डपयि ढात्रिसपञ्चनारथाकारे ॥ १ ॥ इह च सूक्ष्मसूत्रेषु द्वारत्रयमेव लिखितं, शीयाकु तदथा पावच्छादेन सूचिता सत्र संस्थान योत्रा  
 दीन्द्रियाणां वाच्यं तत्रेदं-श्रीशत्रिय कर्मन्वपुष्यसंस्थित वसुदिन्द्रिय मसूरकञ्चन्द्रसंस्थित मसूरक मासनाविशेष यद्रः शशा अथवा मसूरकचन्द्रो वा  
 व्यधिषेपदसं प्राबोन्द्रिय मतिमुच्छकञ्चन्द्रसंस्थितं प्रतिमुच्छकञ्चन्द्रक पुष्यविशेषपक्ष रसनन्द्रिय सुरप्रसंस्थित रथशानन्द्रिय लानाकार ॥ याद्वदति ॥  
 शत्रियाणां वाच्यं तत्रेदं-सर्वास्त्रासुसासङ्गयनाथवाहत्यानि ॥ पोहसति ॥ पुष्यस्य तत्रेदं-श्रीशत्रुप्राधाना मसुन्नासङ्गयनाथा श्रुन्द्रिय  
 स्या सुसपथकां स्वयंभोन्द्रियस्य च शरीरमान ॥ कल्पयसति ॥ धानन्नाप्रदग्निप्याथानि पञ्चापि ॥ शृणादति ॥ अथसुपमदशावगादति ॥ अथ्या  
 वृत्ति ॥ रथसोक वसुरवगाहते ततः श्रीशत्रुशत्रुपुत्रमेव सङ्गालुक् सवा रसनन्द्रियमसङ्गपुत्र तस रथवान सङ्गपुत्रानित्यादि ॥ पुठपयिठ

वा तेष्वैव—एववाचना पनरसा इन्द्रियपदना पश्चिमा चरे या इहा कइवा । संठाच पाहस पाहस । तिहां दारगाथा संठाचपाहस पाहसकइयसपा  
 नाडे थापावपुण्डपयिठ विसयापञ्चनारथाकारे ॥ १ ॥ इहा सूत्रमाहे लीनहारसिध्या त्रिभोका । आशपनागाद न्यि सददेसी । रसनप्री यावत् याद्व-करा  
 वाचवा तिहां संस्थान आवादिहना कइवा, ते एव शोचो कदम्बफूलमे संस्थाने चसु-दन्त्री मसूरक यदनेथाकारे अमूर ते थासनविशेष गान्धमसूरियो  
 रतिसाकनाथा यद्र कइवा अमूमो अथवा मसूरकचन्द्रमेवा एक मान तेथाचविशेष तेजसो पदं तथा याचन्द्रिय चतिमञ्चयद्र ते क्लृप्त विशेषो एव तेजने  
 थाकारे सुरपनीथाकारे अमूमोन्द्रिय यनेव संस्थाने वाहकति । इन्द्रियनावाहस्य कइवा, ते सब मी यंपुसो पसव्यातमाभारा नाहन्वाहे । पाहन्वति  
 एवञ्च कइवा ते एव नाचन्वु प्राच ना थासनाथसंस्थानतमाभा रथसङ्ग, श्रिष्टेन्द्रिय शगुण एवञ्च, अमानेन्द्रिय मरीरपमाच्ये । कइयससति । पंचेदं अमतप्रदेयो  
 नीयनाहे । योगाठति । पसकरोपपदेयावनाहे सव । अथवृत्ति । सववाध् चसुमपनाहनाथो तिनारपकी शोच प्राच रसन अथुजसे संस्थानपुषी अमान  
 त्रिभ संस्थानपुषी पञ्चपाहनाथो । पुण्डपयिठति । श्रीशत्रुशत्रुपुत्रमेव सङ्गालुक् सवा रसनन्द्रियमसङ्गपुत्र तस रथवान सङ्गपुत्रानित्यादि ॥ पुठपयिठ

त्रि ॥ दाघादीनि यत्प्राद्वितानि स्पष्टमर्थं प्राकट्य धृष्टान्ति न विद्यथति ॥ सर्वथा व्यपन्यते कुलस्था, सङ्घुपन्नागो विषय, वरकपतस्तु शोभस्य द्वाद्दश  
 याजनाति बहुव सातिरेक सख श्रेयाणां नक्षत्रोक्ततामीति ॥ अङ्गगारेति ॥ अन्तर्गतस्य समुद्रपातगतस्य ये निष्काराणुदस्ता स्ता अ ह्यन्तस्यो मनुष्यः  
 पद्मतीति ॥ दाघारेति ॥ निष्काराणुदस्ता वारकारपो न आनक्ति अपरयन्ति, दाघारयन्ति च त्येवसादि स्रुयाच्च अथ किमन्नाय मुद्रेशक इत्या  
 व, याव दस्ताको ऽस्ताकमुप्रांत साधर-प्रसोगत्य धत्ते । किञ्चाकुले कश्चिंवा ! कायदि कुले ? गोपमा ! गोपम्यनिकायोय कुले जाव गो वागास  
 त्यिनायेव कुले वागासत्यिकायस्य देवेव कुले वागासत्यिकायस्य पर्यस्ये कुले गोपमिजायोय कुल जाव नामदुःसासएव कुले एते अथीयदवदेसे  
 स्रुतसस्रुए अथनदि स्रुतसस्रुयुषेदि स्रुते सधानासे अङ्गसनागुवेति ॥ भासोको यमीसिकापायेना पथिआदिकाये समर्थेनच स्पृष्टी ध्यास  
 सपां तथा सख्यात् वाकायासिकाकायैषादिनिय स्पष्ट सपां तत्र सख्यात्, एक यासावथीयव्रथ्यदेस वाकायाद्वथ्यवेद्याता तस्य ॥ इतिद्वितीयस्रुते  
 अतुप यद्वा सभास ॥ ४ ॥ अन्तर्गामिन्द्रिया स्रुजानि तद्वसाथ परिभारजास्यादिति तत्त्विकपथथाय पञ्चमीदेशकस्य र्भादि

ष दाहस पोहस जाय स्रुतोगो इदिपउवेसो ॥ विहंयसए चउत्यो उहंसो समभत्तो ॥ ४ ॥  
 स्रुयाउक्चियाण जत ! एव माहस्कति पथवेति परुवेति, एवसस्रु निपठ कालगणसमाणं देवस्रुएण स्रुप्या ॥

सोभाग विपन्नह उरुहउधो वाचना १२ साजन चसु साधिकमथयाजन गोपना २ साजन । अङ्गगारेति । अङ्गगार समद्वयागतता वेनिअरापुहस तख  
 सप्य सगुअनदेव । वाशारेति । निष्काराणुदसमते नारकादि नदेसु नक्षत्रे वाशारे इत्यादिक पञ्चकाशना ॥ इवे वेतस्ता सगे एउदेगा अङ्गवो ते अङ्गवे—  
 अङ्गवपनागा । वागत सन्नाहसूदना अत न देसा । असायेवभते किञ्चापुदे अरुचिवाकाएदिपुदेभायमा वाचयन्तिजाएरुपकवे इत्यादिकवर्वा । विविचसयसु अ  
 त्यउदेसा । योत्रायागकना आधा अद्वैतगानादिअरुचिनिस्त्वा ॥ ४ ॥ पादिते अद्वैतेये इन्द्रियकथा, तेवने विपै परिभारथा अङ्गवे—यस्य  
 अङ्गवपनागत एवसा, अइति भासति पञ्चवेति पञ्चवेति । अन्तर्गामिन्द्रिया वाकायाअशारे, वेभयायन् । इमकई सामाअथी भापे मत्रापै प्रकृते । एवंस्रुतिनियटे । इम

मूत्र ॥ अन्नत्रित्यहत्यादि ॥ देवस्रष्टति ॥ देवस्रष्टेन आत्मना कर्त्तव्यमन नीपत्तिरारयतीति योगः ॥ सेवति ॥ असीं िपिन्त्यरेय म्त्र दयमाक मा  
 नेव ॥ अकृति ॥ अत्थान् आत्मव्यतिरिक्ताय देवान् सुरान् मया ना अत्थया देवाना सयपित्री दुँधीः ॥ अतिशुद्धिपति ॥ अतिशुद्ध सगोक्त्य आ  
 सिध्य ना परितारयति परितुक्त ॥ कोचप्यविद्यियाशीति ॥ अत्मीया ॥ अत्थमासेयथाप्याह यितृद्विपति ॥ र्नीपुरुषरूपसया विरक्त्य यथस्विते ॥  
 यथेवियवमित्यादि ॥ परशुद्धिपत्तयथाप्युति ॥ एव वेय आत्मना ॥ अ ममय इत्थियेय वेय इ तसमय पुरिसवयवप इ अममय पुरिसयय वेय  
 इ तसमय इत्थियेयवेय इत्थियेयस ययवपाय पुरिसवेय य इ पुरिसवेयस वेयवपाय इत्थियेयवप इ ययनु यो विपक्षमित्यादि ॥ मिथ्यात्य

षेण सेपतत्य नो अष्टदेवं नो अष्टयोसि देयाण देवींश्च अतिशुद्धिय अतिशुद्धिय परियारंइ, गो अष्ट्याणिश्चि  
 यात देवींश्च अतिशुद्धिय अतिशुद्धिय परियारंइ, अष्ट्याणामेव अष्ट्याण यितृद्विप २ परियारंइ, एगोयिय  
 णजीवे एगोसमपुण देवेदं वेदेइ, तजहा—इत्थियेयच पुरिसवयच, एव अष्ट्यातृच्छिपवसह्वया णेयश्च जा  
 व इत्थियेयच पुरिसवेयच सेकहमेयन्तत । एव ? गोयमा । जयाते अष्ट्यातृच्छिपया एयमाहरकति जाय इत्थीवे

नदे निरुध धायु । आत्मरुधमात् । आत्न पठते इति । देवभूय । देवनाभय यक् । यमात्तव सजतत्याना यसवेने पक्षेसिदेवत्वा देवीया अतिशुद्धिय २ य  
 रिशक्ति । यत्नान्य अरुभूतवरापरितारका मरु इति याम ते निरुधसाथ इतत देवमाकनेदिपे भवो अष्ट्येवपते तत्ता वोत्रा देवसवभो देवोपते वसि करी  
 ने यत्तदा अति गीने भावने । वापयत्तिवायादेवीया अतिशुद्धिय २ परितारंइ । तत्रो यापसवयी देवीपतेवसि करी यथया यानिगी परितारका करे  
 भावने यापयवोप यामायो अो पुत्रव रूपपते विरुद्धिने २ परितारका मोगकरे इम रत्तावत्ता । यथेवियवत्तवोदे । एकपदि च अयुम न् च अत्थासकति, को  
 व । एगोसमपुण देवेदेदेइ तजहा । एव समये द्याव इ येदे ते कश्चि । इत्योत्थ । कोवेव अरको यने । परिसवेव २ । पुत्रप वेद । एवपरशुद्धिपत्तयथाप्य  
 वत्ता । इम परतोर्वा इम कश्चि ते वनी य अत्थना कोववो । आत्तवोवेद २ । यावत् कोवेव यपुन पुत्रसवेद । सेकहमेवपतेय ॥ कोवा अत्थनीर्वा इम कश्चि—

जेषा मयं स्त्रीरूपकराद्यपि तस्य देवस्य पुरुषतया स्वरूपवेदस्यै वैकल्य समये घटयो न स्त्रीयेदस्य वेदपरिरुत्यावा स्त्रीवेदस्यैव न पुरुषवेदस्यो दय  
 पररपरियेकद्वयत्वादिति ॥ देवत्वमपु मध्ये ॥ उच्यतेतारा प्रबन्धितिति ॥ प्राक्कालीत्या उच्यतेतारा न्यतीति इदंय ॥ महिम्नि ॥ इत्यत्र या  
 यत् करत्या विदग्धय-महानुभय महाबल महाबलसे महासौम्ये महाकुम्भाये वारधिराहयवत्ये कल्पयुद्धिययनियनुए ॥ इटिका वापुररिचिका ॥ य  
 गयकुशलमठमकल्पपीठधारी ॥ अङ्गुवाभि बाह्वाभरवाधिषोषान् कुशलानि कर्षाभरवाधिसोषान् सुष्टगकानि योद्धिकितकपोषानि कर्षपीठानि कर्षा  
 भरवाधिसोषान् धारयती त्येवधासा य सतया ॥ धिचित्तहत्यान्तरे विचित्तमासाभस्तिमठे ॥ धिचित्तमासाव कुसुमस्त्रम् सीतो मसाक मुकुटश्च य

यथ पुरिसयेयथ जंतेपयमाहसु भिच्छातोपयमाहसु, स्यहपुण गोयमा । एयमाहस्काभि जाव पक्षोभि, एव  
 स्वलुनियटे काटापुसमाणे स्यन्परसु देवलोपुसु देवताए उच्यन्तारो जयति महिद्विपुसु जाव महाणुजगोसु  
 भिक्त्तमर्क एव हेममयन् । इम तेजो । गायमा भक्षतेपक्षरिचिका एवमारस्यसुति । जेगीतम । जेमाटेपक्षगीर्षी इमकश्चि । कावहलोवेदव परिसवेदव जते  
 एवमाहम भिच्छतेपयमाहम । यावत् कोनेट यने पक्षवेद एवेक यद इयापकारे एकयोव एकसमय वेदेकै ते जेगीतम । इमकश्चि—त यन्वगीर्षी मिथ्या  
 भूट् कश्चि—तेजिम कोर्यकवेदो नापयि ते देवने पुरुषयजामाट पुरुष वेदनाज एकसमयनेवियै उदयकै पयि कोवेदना उदयमयी यववा वेदपाखटे  
 ना सोवेदनाज उदयकै पयि पुनयवेदना उदयमयी जीवामादि विकरमावयो । यदयव मायमा एवमारस्यत्तमि । इ यथी जेगीतम । इमन्न कश्चूँ सा।  
 माययजाययो । भावेमि यदवेमि पक्षेमि । वियेययो जेजुकरो भेदकश्चवायो । एवयस्यिययटेकाहमएवमाह । इम नियै निपय वाह्य यभ्यन्तर यन्त्र  
 इत कायगत एतसे मरवायाम्याहका । यन्त्रयेसु देवलोपुसु देवताएउच्यतेताराभस्ति । यन्त्रतर काहएक देवनाकनेवियै देवतापय उच्यते यवतरे । स  
 इरिपुए । मांटेकै अदि परिवार वेदने । कावमहाकुभगोसु । यावत्पाखटे माटा पक्षवत गतिवतनेवियै पतकासरो कश्चवा । दूरगर्भम् दूरठिर्दसु सेवत  
 त्दवेभयम् महिम्नि । वेगनीयतिने यवाए उच्यतेवकाकनेवियै यकोस्यितिकै यानुकमनी जिवा ते निपय च वाक्यास्यकारे, तिवा देवपयकुवे महापयि

स्य सततया इत्यादि यावत् चिद्विष्ये चुरत् पन्नाय् क्षायाय् षष्ठीय् तेषुच ससाय् दशदिशात् तन्कोष्माद्धंसि ॥ तत्र धाटुं परिवारादिका युति रि  
 धार्थसयोगः प्रजा यान्नादिशीति ष्वाया षोडशा षष्ठीः क्षरीरस्वरज्जादित्वात्वात्ता तच्चः क्षरीरराशिः सश्या दशयस्य एकधायाँवत्तं चट्टद्योतय उपका  
 ष्कारकत्व ॥ पन्नासेमाञ्जति ॥ प्रजासयम् षोडशपम् इह यावत्कारका दिग्दृश्य ॥ पाशादय ॥ द्रष्टृया धित्तप्रसादभक्तक ॥ दरसफिज्जये ॥ परस्यस्यु  
 नं साम्प्रति ॥ सायिकवे ॥ मनोवक्रयः ॥ पञ्चिकयेति ॥ द्रष्टार द्रष्टारं प्रतिक्रय यस्य स तथ्यति एकं नैकदा एकएव यदीयेद्यत्त इह कारक्यमाह ॥

दूरगतीसु चिराठितीसु सेणसत्य देवेनयइ महिद्विपु जाय दसादिसान् उज्जोषेमाणे पन्नासेमाणे जान् पञ्चिकवे  
 सेणतस्यस्युषेदेवे स्युसोसि देयाण देवीन् स्युनिज्जुजिय स्युनिज्जुजिय परियारेइ , स्युष्यणिच्चियात्तदेवीन् स्युनि  
 ज्जुजिय स्युनिज्जुजिय परियारेइ , नोस्युष्यणामेवस्युष्याण वेज्जुसिय परियारेइ ! पुगेधियण जीवे पुगेण समपु  
 ण पुगावेद वेदेइ , तज्जहा—इत्यिवेदया पुरिसवदथा , जसमय इत्यिवेद वेपुइ णोतसमय पुरिसवेद वेदेइ ,

धारणापथा । आरसदिधापाठज्जावमाह पमासेमाणे । यावत् माहे तासम कइवा द्यदिमिनेधिये देहकोक्कान्तिकरी तथा यामारयभा कान्तिकरीं च  
 धात कइतावन्ना तैककइतावन्ना । आपयणिकवे सेणतस्यस्युषेदेवे । यावत् पणिकय आहवायाय्य एतत्तास्यो कइवा, ते निर्धेव च याक्कासकारे, तिष्ठा  
 नीकाद्वेव । पञ्चसिदेवात्तदेवीयास्यभिष्णुजिय २ परिसारिह । पन्ना देवनी देवी तेहने फासिगोने तथा यमिक्करीसे परिसारत्ताकुरै यसवा । यप्यधिपिया  
 यादेनाथापमित्तिकिय २ परिसारिह । पापञ्चीहोक्क देवीहोवाव ते फासिमीने तथा यमिक्करीने परिसारत्ता भागाकुरै । याथायाज्जवेदयत्तयास्यद्विचधिय २ य  
 रिवादिह । पविनहो यापयणैदित्र फास्याने क्कात्तये दिक्कुर्वी भायवे, एतावतादिभता क्कोकयनया विक्कुर्वी भाग नकुरै इत्यस्य तेमाटि । एयेधियचञ्चोषेपगत्य  
 समएव एतवेद्वेदइ इत्तादिदवा । पञ्चजीव धयि निवै यपुन च्चं याक्कासकदि, जीव एव सप्यक्कासकदि ममयनेधिये एव वेदवेदे यभभवे भागवे तेकइक्के—  
 धावेद यदवा । पुदिउवेदवा । पुदय वेद ययया । कइमयदलोवेदेदे । छिसमयनेधिये क्कात्तवेदे भागये । यानममयपुदिउवचनेदेह । ते कसमयनेधिये च



इत्थी इत्थिवपुत्रमित्यादि ॥ परिचारकाया क्रितं गतः स्थादिति गणप्रकरश्च सत्य ॥ उदकगणेशे च कश्चिद्गणेशेति वृत्तयते तत्र उदकगणा कालान्त  
रश्च जसप्रलयपरतु सुतसपरिचाम तस्य ज्ञातव्यताम ज्ञापयतः सुमयः सुमपानन्तरमेव प्रथयन्तान् उरकपलसुं पश्मासान् पश्मासाना सुपरि वर्ध

जसमय पुरिसवेद वेदेह णीतसमय इत्यिवेप धेणुइ , इत्यिवेपस्स उदणुण नीपुरिसवेद वेदेइ , पुरिसवेपस्स  
उदणुण नोइइत्यिवेप धेणुइ , एयवसु पुणेजीवे पुणेण समणुण पुणवेद वेदेइ , तजहा—इत्यिवेदना पुरिसवेद  
वा , इत्या इत्यिवेणुण उदियेण पुरिस पत्येइ , पुरिसो पुरिसवेदेण उदियेण इत्यि पत्येइ , दीयेते सुया  
मया पत्येइ , तजहा—इत्थीया पुरिस पुरिसोवा इत्यि , उदगगणुणि सते ! उदगगणुणि कालेन केवाप्सर

इव वेदमते वेदेनही भायवेनही । जसमयपरिसवेदवेदे । जेसमयनेदिये पश्यवेदे वेदे भागवे । ज्ञातसमय इत्योवेदवेदे । नही तेसमयनेदिये ज्योवेदमते  
वेदे भागवे । इत्यावेवसाउदणु । ज्योवेदन उदये करीम । ज्ञापपरिसवेदवेदे । नही पुषयवेदमते वेदे भागवे, मांजामांइ विराधमकी । पुरिसवेवसाउदणु  
या इत्योवेदवेदे । पश्यवेदने उदवेकरीने नही ज्योवेदमते वेदे भागवे । एयवसु गीजीवे एयेजसमएव । इम निये एककीव एकैसमये । एगवेदं वेदे । ए  
ज्येवमते वेदे भागवे । इत्योवेदना पुरिसवेदना । त ज्येइ—ज्योवेदमते यज्जवा पुषयवेदमते उज्ज समये एकवीम वेदेवेदे इवां जारव ज्येइ—इत्थी  
त्योवेदव उदियेवं पुरिसयवेदे । ज्योक्ते ज्ञावेदने उदयज्जवा पुषयवेदमते मांवे वही । पुरिसोपुरिसवेदव उदियेवइतियपरवेदे । तथा पुषयवे ते पुषय  
वेदने उदयज्जवा ज्योवेदमते मांवे । वायेतेपश्मसयपरवति तज्जवा । एवेज मांजामांइ मांवेनाकरे तेज्ज्येइ—इत्थीयापुरिसं पुरिसायाइतियं । ज्योपुषय  
मते पश्यवणीमते मांवे, परिचारकाजोधाज्जवा गमइवे, तेमाटे गमयकरव ज्येइ—उदगगणेशेभतेउदमगणेशेति कासयावेवधिरावा । जिवां एक सवे द्यास  
मेष इदयापठ दीसेइ, तिवां उदममकरतां काकाकरे ज्जव परसवामोवेण पुदसपरिचाम ते उदममकासयको केतलाज्जव विररुइ इतिमन्नु उदर  
यापमाज्ज इयेपएउसमयउरकासेव ज्ञयासा । ज्योतम । उदयम ज्जव्याइको एक सुमयने यमकरेज परसे उज्जटवकीरुइ तो ज्जमहीनापवे परसे एवगा





स्य यत्कमवपश्यत् सद्यप्युपकं पुत्राणां भवतीति मनस्यपीनी पुमकस्यथा खपि धर्षवो मीनेष्यशनादिति इत्यीपपरिसरस्यपदस्येतस्य सेदुष्यसिष्प नाम  
 धर्षोणं धनुष्यन्वह इत्यनन धम्बन्तः कस्या मसा पुंस्यदात इत्याह ॥ कम्मककापभाषीएति ॥ नामकम्मनिवसिसाया धार्षी खपया कम्म भयना  
 दीयकोभापार सार्णस यस्या धा कम्मसंता ऽन सस्यं मैपुमस्य यतिः प्रयति यस्मि धर्षी मैपुनयुसिका सधुमया प्रत्यया इसु यस्मि यार्षी

सेण सयसहस्सपुहत्त जीनाण पुससाण इहममागच्छति । सेकेणठेण नते । एव धुञ्जइ जाय इहममागच्छइ ?  
 गोयमा । इत्थीपिय पुरिसस्सय कम्मककाण जीणीण मेज्जावत्तिणुनाम सजाण सुमुप्यज्जट , तं दुहत्तं सिणंइ चि

रत्नदत्ता यत् प्रदाहसंभ्राह् तिमन्पना गवा तिसंधना बोध धारमइस यानिभूतइव, निवार याधयमयने गतपुषट्ठ मवगय नापच्च धाअवाग्नि पविट  
 वीकडोबकडडोरे तिष्ठा तेराजना भमुत्तायनेविद्यै एकजोव ऊपखे ते कोव वीखस्य।सी मवनायो पुइइये तेमाटे कण्ठां धरकण्ठी नवसयनां पुपपकी इता  
 इवा अपयव इति । एयधोवखजमनेणमनरमइवेखेनइया जीवापु नसाणइइममागच्छति । एकजोवने च वासमानकारे धेमगवन् । एक भवने यइवेइरो के  
 तसाओप यपपये खतात्रवाथयै एतखे एकपिताभा केतनायवइये, इतिपय खसर । गायमा खइनेखरकाभाटावातिष्पिवाउट्टीसधसयसइइसापुइराओवा  
 खपलसाणइइवइममागच्छति । इमीतम । खपखे ठख खपवा टाय खपवा वीन धरकइयकी साख पुषट्ठ एतने नयनापयसाय यपपये खतात्रवाथयै अपखे  
 ते मारखदिखने ठखने सशसे पच्चि माइवोनी खानिनेविद्यै मवखायजोव यमपये ऊपखे यने नोपखे पच्चि तेमाटे एकनेभवपयइये नइसापुपुइपये भवे,  
 मधुव यानिने धना अपखे पच्चि धनाओपखेनइओ इतिभाप वकीवोतम पुइखे—सेकेपुइइमनेणवुइइ खानइइयसायागच्छति । तेकिसेपये किसे पर्याअने  
 रमवइइ सावत् भवनाखेखीय खताइसा यभमीइपयपये खपखे इतिपय खसर । गावमा इत्योपुत्तिसधयखस्यखसापभाषीए मैइइवणिणंजामसधभाएस  
 मय्यइइ तेपुइइ पाग्निनेइविइति । इमीतम । म्योपपयने खपन नाम खमनिवत्तिन यानिनेविद्यै खपवा मइयाइोपकस्यपापार तेकोया खइनेविधे तिक्का कम्म  
 खताशाति खओप ते व्यापारइइतीखन तेइने मैपुनवायति मवत्तिखे खइनेविद्ये ते मैपुनवत्तिखओये खपवा मैपुनवाइनेखे अइने तेमैपुन मवत्तिख इये

स्थायिक क्रमस्यै भेदप्रत्ययिक ॥ भावति ॥ नामनामवसो रत्नदीपधारा देतयामेत्यथाः सयोगः सम्पन्नं महति स्त्रीपुरुषौ ॥ दुरुच्यति ॥ तमप  
 तः एव रत प्राणितलसद्य सचिन्तुतः सद्यस्यसद्वति ॥ मनुष्यसिद्धमामसजोयति ॥ प्रागुक्त मथ मैयुगस्यै वासयमद्वैतान्द्रव्यसूत्र ॥ रूपमानि  
 संयति ॥ कृतकव्यांशविकार सङ्गता भासिका प्रापित्यभातिरूपा कृतमालिका ता मथमूरनालिकामपि मयद्वरं धनरपत्तिविधापायययविकाय ॥  
 णति, तत्पण जहन्नेण एकांथा दाया तिसिधया उक्तांसेण सयसहस्स पुहस जीवाण पुहस्ताण हस्रमागच्छति  
 सेतेणठेण जाय हस्रमागच्छइ । मेज्जणेणन्ते ! सेवभाणस्स केरिसेण्णसज्जमे कज्जाह ? गोयमा ! से जहानामणु  
 केइपुरिसं रुयनात्थियथा धूरनात्थियथा तमेण कण्णण समन्निधसेज्जा, पुरिसण्ण गोयमा । मेज्जण सेवमा

नामे सथाप मपन्न उपपन्नं सिद्धीपयय वेत्तवन्तो सेह शुद्ध चिदिरस्यस्य तेजप्रते चिदै एकवक्त्रे इत्यथ । तत्राथस्यस्यएवमादावातिचिदा उक्तासेवमथ  
 सङ्गस्यपुङ्गवोनामपणनाण्डवरासायच्छति । निष्ठा सद्यस्ययानेवियै च वाक्यासकारे, अवभाषकी एक धमवा दीव सद्यवा तौन जोवपचै गभमाहै ऊप  
 ये उरकद्वेषा गत सङ्गस्य एवमसङ्गाहै ते गवमास्य खोद च वाक्यासकारे पुत्रपथे सतावसा ऊपये थायै इत्यथ । सेतेवद्वैदसागज्जवमागच्छति । ते तेक  
 पथे विगतम । यावत् नवमास्यजोव गभनविपै पच पथे उदावसाथायै ऊपय ॥ धियै मैयुगना यधिकारवकी मैयनगोथ ससंयमपथा मरुपेहै । मैयुगे  
 वमंतेसेवमास्यस्यैरिसेपसंजमेवच्छर । मैयुग च वाक्यासकार, इभगपत् । सेवतायकाजोव केवदो सससमकरै इतिप्रय, उच्यत । गाथमा सेवज्जानामएके  
 रपत्तिस्स क्वनामिमाधूरतासिमा । विगतम । ते यथा दृष्टाने नाम इति आसमात्मनश्च कोरुपयव कपासमाविकार ते क्त कज्जोये ते भरी वसिनी भूय  
 भी यथथा यनस्यथा विसेयता यवस्य ते दूर कज्जोये तेष्म भरोवांसनी भूमज्जो भी । तस्यस्यकस्यस्य समन्निधसेज्जा । तम आख्यमान यच्चिकरी तपा  
 आ सीवना चोसा यमाका ते भयन्मोमाहे चपे तिवाट तेकत तदा दूर सब विषयपामै विनाप्रयामे इत्यथ । एत्तिमएच गाथमा मैयससे ज्जानामएवससज्जमे  
 वच्छर । एवथा च वाक्यासकारे विगतम । मैयुगसेवतायको वासिमाहैरिच्छाहै, जेकोव ते प्रते मङ्गनपुदपत्तिग तेथेकरी विनाय यमाथै वृथै एवथा यस

समामिषसेव्यति ॥ कृतादिषमिष्यंसना दिह वा यं पाप्मन्नेपो इदय एव मेधुम सेवसामो योनिगतसत्या न्महमेर्मा विष्यस्ये देतेष किल य  
 पाकारे पञ्चोन्नियथा भूयन्नाइति ॥ एरिसएवमित्यादिष ॥ नियममसमिति, पूर्वै तियद्भुभूप्यात्यति विचारिता ७य देयोत्यान्निषिचारत्वाया प्र  
 णस्स श्रुसजमे कञ्जइ, सेव जतेजते ! चि जाव विहरइ । तएण समणे नगाव महावीरं रायागेहाजं नयराजं  
 गुणासिलाजं चेइयाजं पाठिनिरुक्रमइ पाठिनिरुक्रमइसा दाहिया जणवयविहार धिहरइ, तेणकालेण तेणसमणु  
 ष तुंगियानाम नयरी होत्या, यसाजं, तीसेण तुंगियाणु नयरीणु दाहिया उत्तरपुराच्छुमेदिसीजाणु पुष्पवइ  
 पुनाम चेइणु होत्या, यसाजं, सत्याणतुंगियाणुनयरीणु दाहवेसमणोवासया परिषसति, श्रुहा दिहा विच्छिखु  
 वमरै । मेवमत र ति जावविहरइ । तइति हेमयवन् । पुष्पवइ ते सवसलवे यथायानइ । इमकरी यावत् नमकार करी सयमेतेषकरो पाकानेभारता  
 इका विपरै । तणपसमवे मयवंमहावीरै रावगिजापो वयरापा गुणसिद्धाया चेरयाथा । पइला तियंममपुष्य उत्पत्ति विचारवाकीपी । दिवे देव उत्पत्तिभा  
 विचारवाता प्रकाववी ए वई—तिवारे वमव मयवतकीमहावीरसाकी रावपुवनामा नगरवकी गुणसिद्धानाम चैत्यकी । पइविच्छुमइ रसा । नोकरे  
 नोकरेने । इदिनाजवदविचारविहरइ । वाडिर वनपददेयने विपे विहारेकरो विपरै । तेचंकासेष तेवसमएव । ते यवसपियवी बोया पाराकप कास  
 नेविपे सि समयनेविपे । तीनियानाम वयरीवात्तावथा । तुमीया इसैमाने नगरीबुवे, तेवनां यवंक उपार्इ उपार्थयी जाथयां । तीसेवतुंगियाएवयरीव ।  
 तेइव वाक्यावावारे तविधानाम नयरीनेविपे । इदिवाउलरपुरेच्छुमीदिसीमाए । वाडिर उलरपुरेदिपिमा विभागनेविपे एतसे इमानुवनेविपे । पुत्तव  
 इएवाम वेइएवत्ता वथापा । पुत्तवतो इसेतान चैत्य वथावतन इयो वथा कउवाइ उपार्थमाच्छिक्कां तिसकवयां । तत्यावतुंगियाएवयरीए । तिसी च वा  
 थ्य वावारे, तुंगीवानामे नगरोनेविपे । इइवेसमथायाविषयापरिवसति यउठा दिता । ववां यमवसायु तेवना उपामव सेवक एतके यामव वरीके ईके  
 इत्येव यम यामववरो परिपुष्य मविह तेया वववर । पिच्छिप्यिषयप्रवसयनासंख्खाववाववाववा । विद्याएवविगत यथायावाव यव्यंवादि सुरादि

सावनाये रमाह ॥ तदसंभवे रत्यादि ॥ कान्ति ॥ कात्या वनधाम्नादिदिः पारिपूर्णा ॥ विसानि ॥ दीक्षाः प्रसिद्धाः दुस्ताया दधिपता ॥ विच्छि  
 खविपुत्रनयसपकासुकाहवाहकाहवा ॥ विसीर्षानि विसारवन्ति विपुस्तानि प्रशुरादि प्रवक्तानि पुरादि सुपनासनपानवाहने राक्षीर्षानि ये  
 पं ते तथा अथवा विसीर्षानि विपुस्तानि प्रवक्तानिपेयं शयनासनपानवाहनातिवा श्रीर्षानि मुक्त्वति यथा त तथा तत्र यान शंभ्यादि वा  
 इन तथादि ॥ शुरुपथशुभ्यापकरपया ॥ शुरु प्रभुत एव गच्छिमादिक् तथा शुरुव कातरूप सुभक्त रत्नत व रूप्यं येपाते तथा ॥ कायगपुत्रेण  
 सपउता ॥ कायोगो द्विपुत्रादिव्या अपदान प्रयोगय कस्तात्तरी से स्ते तथा ॥ विच्छिन्निकपविठलननपाका ॥ विच्छ  
 दित यथिय मुक्तित यदुसोक्तनोवनत वच्छिवावयेपसभवात् विच्छिर्तवा विविधविच्छित्तिस द्विपुत्र नक्तव पानक च येपा ते तथा ॥ शुरुदा  
 सीराशगामदिसावेलाप्यनूपा ॥ बहवो शशीदासा येपा गोमदियगवेसकाय प्रभूता येपा ते तथा गवेसकातरकः ॥ शुरुककरसधपरिपूपा ॥ शरी  
 यिपुत्रनयणसपणासणजाणयाहणाहया धजायणयजाजायकरयया श्यातगपुत्रासपउत्ता यिच्छुन्नियवित्तल  
 नसपाणायजासीदासगोमाहिसगवेलजाप्यनूपा धजाजणस्सधुपरिन्नूपा श्युतिगयजीवाजीवा उवलधुपुसपावा  
 श्यासवसयरनिज्जरकिरियाहिनारणयधप्यमोरककु सलाशुसहेज्जादेयासुरनागसुययाजरकरकसाकिशुराकिपुत्रिसग

धारण गकट माहो प्रभुव यथादिक् तिवेकर थाकोव सामहे । यद्वरवा । यवा धन गवमादिक् । यद्वकायकरयया । धरी कातरूप सुपव स्वय रूपा  
 कदात्रे । थापान पयोगसपउता । दिगुवा यियवा यथारवा भवो देवा धमादिक् विम प्रभक्तवपाये विषयना पीवसवसेसू रसकधी धनदेवी ते थाको  
 गकवारे व्यापारादिक् तेषकरी सप्रभुससहित । विच्छिदियदियसमलपावा । धर्षासाक कोभयभी धर्षा यथादिक् भूठानाखिये एवना हे जेहनपतर ।  
 शुरुशासाकास नामदिसगवेसप्यनूपा । धर्षा दासीरासहे कइने माव मेस वकरा माकरयमक प्रभूत धर्षाहे जेहाने । शुरुकवकाधपरिभूपा । धर्षाका  
 काने परि धवि धनवतमाटै कुवधी धू परामका नकाय । धमिनववीवाकीवा । कासाहे कोव धनीयना करूप जरे । धनसहपुचपावा । कासया

लीकस्या परिश्रवनीयाः प्रासवत्यादी क्रियाः कायिकयादिका अचिकरश्च पश्रीपयक्रादि ॥ कुसलति ॥ प्राश्रवादीना संपापादेयतास्वरूपयेदिन ॥  
 अशरीरजत्यादि ॥ अविद्यमान साक्षात् परसाक्षात्पिच मत्पन्नसमपत्त्या ह्यथा से असाक्षात्प्या स्नेष ता दवादेयपति क्रमपारय अथवा व्यस्त से  
 धर् सेन असाक्षात्प्या सापद्यपि दवादिसाक्षात्पकापयथा अयस्त क्रमस्वयमय प्रोक्तय मित्यदानमनाशुसपहृत्यथः अथवा पारशक्ति प्रारब्धा  
 सम्यक्ताविवलनमति न परसाक्षात्पक मयेवत स्वयमव सतप्रतिपाससमर्थस्या जिानशासनान्त्यननायित्तत्वाथेति / तत्र दवा येमानिका न असुर  
 ति ० असुरकुमारा न नागति ॥ नागकुमारा न उन्नये व्यमी मत्वमपतिविशेषाः ॥ सुयस्यति न सद्गुणाः ज्योतिका यशराक्षसकिन्नरकिपुरुषपाब्धन्त  
 विशेषा ॥ यशसति न गकलव्यमाः सुयस्युमारा यवमपतिविशेषा यशवा मन्त्रेगाय ध्वन्तरविद्याया ॥ अद्यतिक्रमचिन्मसि ॥ अन्तिक्रमयोपा

रुडाधश्महरगादीपुहि देयगणोहि निगयात् पाययणान् शृणात्किन्मणिज्जा, निगये पाययणे निस्सकिया  
 निक्षुरिकया निक्षितिगिच्छा ल्थठा गहिथठा पुच्छियठा श्रुतिगयाठा येणिच्छियठा श्रुतिमिजयेभ्राणुराय

अने पूस कथप्रवृत्तिकय पायययुन प्रवृत्तिकय तदनाक्रम । पासकसवरविश्वरदिकरिवादिगद्वयवधमाका कुसली । यायनक्रम यावधानाभ्यामक  
 सवर ते कमदार राक्षसा कमगोखेरणाक्य कायिक्यादिक्रिया गाढीयथादिक यधप्रकृति यथादि चारभेद माय मयथा अयस्य पलसानेविध  
 पतिशाशास्त्रे । यशसेव्यदनासरे नाग सवच्च अस्त्य रक्षस किन्नर क्षिप्रिस गणुच यंधयव मन्त्रेरागादि एहि देवगणेषु विद्यधाया पायययाया य  
 वतिकमचिक्या । पापदाह्रासे पवि किन्नरो देवतामे सन्तेनरो यापयाकीधालम यापयमागयो एववो मन्त्रेणिहै वेदनी ययया पापुडो  
 ए प्रारभ्या समकितवहो यथावया तियारे कोखाना सहाय नवीके, एतच्छ योसैज तेदने अयावदेवने समक्यै एतायता जिनशासन यस्तल परिश्रव्या  
 है वेदने देवयैमानिच यसरकुमार नामकुमार एवेछ भवमपतीविशेष । सुयस्यति । मयस्यै ते ज्योतिषी यच्च राक्षस क्षिप्रर क्षिपयय ए व्यन्तरनिज्जाय  
 भा देवशाखा मरुट विरवहै वेदने पुत्रवा सुयस्यकुमारविशेष गधम मन्त्रारय एवव्यन्तर विशेषजायवा एपादिदर देवने नवीससुके सागुना मयस्यम सि



अथातनीयाः ॥ लट्ठति ॥ अथप्रवक्ष्यात् ॥ परिपठति ॥ अथावपारकात् ॥ पुच्छियठति ॥ साणयिकापप्रसकरकात् ॥ अग्निगपठति ॥ प्रसिन्नाथ  
 स्वातिगमनात् ॥ पिच्छिच्छिपठति ॥ इत्पर्यायस्यापलभात् ॥ अतएव ॥ अठिभिजपमाङ्कुरागरता ॥ अस्थानिच कीकसानि मिञ्जाव तन्मप्यधर्षी  
 धानु रस्त्रिमिञ्जा स्ता प्रभानुरागेव सायछप्रवचनमोतिरपुस्तुष्मादिरागेव रकाहव रका येपा से तथा अथवा ऽस्त्रिमिञ्जासु जिनश्चासनगत  
 प्रभानुरागव रका ये से तथा केनो प्रसेनस्याह ॥ अथमाठसोहत्यादि ॥ अथमिति प्राकृतत्या दिव ॥ आठसालि ॥ आयुष्यकिति पुत्राव रामव  
 य ॥ अस्ति ॥ अथेव शिष्यन्याप्रयवस्यतिरिक्तं यमथान्यपुत्रकसप्तसिधुप्रयवसमादिक्मिति ॥ अथिपकसिद्धति ॥ अश्चित्त मुक्तं स्वटिकमित्य स्वटिञ्च  
 शिन यदा न अश्चित्स्वटिका मोनीन्प्रवचनावसा परिशुष्टमानसाहस्य इतिष्टद्वयास्वा, अथ्यत्वाशुः, अश्चितो ऽसासास्थाना दपनीयो दौकतो

**रक्षा श्लेषमाउसा निगाये पापयणे श्रुते श्लेषपरमठे संसे श्रुणठे कसिथफलिष्टा श्लेषगुपदुवारा श्लेषसतेउर**

रक्षितको चानिकमाथी असकीच एतदे ते यावद निर्यवना प्रवचनवची एतथा येवना वसाया वसैतथी । निर्ययेपावयव । निर्ययेना प्रवचननिदिये ए  
 नाथना माप्रसदिये आधादितस्यद्वैकिना भवोहै । विश्विद्याया विश्विद्याविश्वितिगिञ्जा कथं। गश्चिद्युता पुच्छियद्वै । एवयो याका तित्वेकरी रक्षित निरस  
 कित र चान्दस्थानीयोवाहाते जाया तित्वेकरोरक्षित र शानादिक फलमासदेव तित्वेकरोरक्षित ते निश्चितिगिञ्जा कथोसे र सुवनाथी कथाहै अथ जेव  
 यवधारेवथो यथाहै यवनेने समवथो पुत्री सोधाहै यवनेवै । यमित्ताहा विश्विच्छिद्यवहा । प्रथना यव आथोसे चिरपरिचय कौथा यवनेवे नियवथो कौ  
 था नियवचरोन यवना यथाव । यश्चिप्रयेमाङ्कुरावरेता । जाहमिजा ते जाहमप्यधर्षी धानु ते सवय वचन प्रीतिकप कुसुभादिरागेकरी रथासीपर  
 रथाहै अङ्गना यवथा यश्चिमित्तानेरिये जिनयासनगत प्रेमाङ्कुरागरकाहै जिने । अथमाठसा विश्वयेपावययेथे । ए प्रस्यप पुषादिकना यामव  
 साधुना प्रवचनमाग ते प्रसात्रमहै एवोच सावसाधनहेतु परमायसे मोपकाकला । अथपरमठेसंसेपथे । अमथहै निग्मप्रवचनयो वीका धनघान्य पत्र  
 अन्थादिक अथावचनीदिक ते अन्व सावमानना रावकहै । अथिउकलिष्टा । भवाः श्वटिञ्च श्रिम निमसशिषित तथा दानदेवानेकाञ्च आगसदीयो

तिरवीन कपाटपश्चात् । रयमीन इत्यप परिचो भन्ना येनां त तन्विगपरिषा । अथवा तन्विगा यद्द्वारा रयमस परिषा यना ते तन्वि  
 तपरिषा श्रीरपरितिक्षया दलिक्षपरानदाधित्वम निगुभावा गृहप्रयथाय मनगतिनयद्द्वाराइत्यर्थ ॥ अथगुपद्वारंति ॥ अथायुतद्वारा कपाटा  
 दिनि रस्यनितयद्द्वाराइत्यथ सद्धानलानस म कुतोपि यास्यविक्रका द्वित्यति क्षोभमनापपरिषदवा द्वाटगिरस सिद्ध वा तिस्राय दसित्युद्व्या  
 वा अन्तल्याः तिस्रुक्यवेक्षार्थं सीदार्पा रस्यनितयद्द्वाराइत्यर्थ ॥ विषमतेरपरप्येसाविषमोति ॥ भाकाना म्भीतिकरुया स पुरया  
 पुरेवा प्रवेक्षो येनां ते तथा अतिथामिंकराया सववा नाथकुनीया स इत्यथाः अन्तल्याः ॥ विषमोति ॥ जादोतिद्वारा उक्त पुरयुदया प्रवेक्ष  
 सिद्धवत्प्रवेक्षन यथा त तथा अनीप्यांभुलाप्रतिपादनपर वेत्य विद्यापक्षमिति अथवा ॥ विषमोति ॥ त्पक्ष अन्त पुरगुदया परकोपयो  
 यथा अथवि रमवेक्षो ये स तथा ॥ अर्द्धावइत्यारि ॥ श्रीद्वारा म्भुद्रतामि गुवा गच्छतानि विरमकाति श्रीचित्तेन रागादिभियुत्तय  
 मत्यास्यामानि पीठ्यादीनि पीपथ म्यर्वादिनागुमान तथो पवासा यस्यान पीपयोपवास एतया दृष्टो उत सौ युक्ता इतिगम्य पीपयापवा  
 सइत्युक्तं पीपयत्वा परा यथाविषय त कुवन्तो विहरन्ति तद्दक्षयवा ॥ आठइसत्यादि ॥ इतो द्विः । अभावास्या ॥ पक्षिगुमपावइति ॥ आठ  
 परधरप्यवेसा यद्वाहि सीलक्ष्यगणवेरमणपञ्चकाणपोसहोयथासंहि वाउइसठमुद्विठपुष्पमासिणोसु पक्षिपुष्प  
 पोसइ सममणुपालेभाणा समणे निभायं फासुपुसणिज्जोण खुसणपाणसाइमसाक्ष्मेण वस्यपक्षिगहाहकन्तएपा

नवी । यथगुपद्वारा । अथावा ते वागा आरवाणा किमाह । विषमतेरपरपरप्यवेसा । पीठिकादिषा अथ पुरनेविषे तथा परधरनेविषे पंचय अइ  
 ता एतावता विषयवीने मने तेवना यविषयासमवी । यद्द्विषीक्ष्ययसुखस्यवेरमणपञ्चकाणपोसहोयथासंहि । अथा अपीसपुन यच्छन गुणभूत वेरमण  
 धरित तथे आनापकारे रानादिष अक्षो निद्रता पयलाय पीरपीपमूख पीपथ पक्षदिनागुमान तेइनेविषे अथवापरधरने निन्ने गदिनके एतावता गुण  
 सहित पोपधरता विररेते ते पीपधदिन अइवे — आठइसठमुद्विठपुष्पमासि पीपुपविषुपपोजवस्यवस्यपनिभावा । अथय पाठम र्वा अदिममने

राटिपरा शतुयिधमपि सवतः ॥ वल्यपक्रिताहकवसपापपुष्यवेकति ॥ इह एतदुपहः पात्र पाहमोहम रजोहरव पीठ मासन कनक सवपुम  
मकमन इप्यावसति इहरसकारक्रोधा सकारको सपुतर एवा समारारहन्तो न सम ॥ अथापाकिगाहिएहिति ॥ यथा प्रलियसो न पुन ह्रीं  
सकालः ॥ परति ॥ सुतपुत्राः ॥ कवसपकालि ॥ इह रूप सुविधितनपप्यथरीरसुदरतावाः ॥ तेन सप्यथा पुत्राः रूपसप्यथा ॥ सकलासापयसंपकति ॥

यपुहुणेण पीडफलमसेजासधारण तसहनेसजेणं पाकिशानेभाणा ख्वाहापरिगाहिएहि तवोकमभीहि क्षुप्या  
ण नायेभाणा पिहरति । तेणकारुणेण तेणसमपुण पासायसिज्जा थेरान्नायती जाहिसपय्या कुलसपय्या वलस

यमावासा तला पूनिम ए पवर्दिनेविपै पूराथाहार १ यरीर सकार २ नृजपयं ३ पल्यापार ४ ए चार सवली परिहारकरता पीपव यतुपासताबकाह  
। समक्ष । वमन नपयो । विषयवकायुमविस्त्रेयं यवयपावस्थाहमाधारमेव वल्यपविस्त्रेयकवसपासपंक्षेय पीठकलगासुध्यासकारुण श्रीसश्मिसेय पकि  
मामेमाका । निरीय बाह्याभ्यतर यन्वरेहितने भगवेषापुने फासू वकाहीस दूतवरेहित पकाल माला साल प्रमुख युवा ममावधामेसमवतेकासीपायी म  
य ईदुरसादि ते १ मेर एथा कपयमावे २ साकयो प्रमुख खाद्य ३ सुठ वरुहै पीपव व्यावयस प्रमुख ४ एचार थाहारैकरी वसी वल पडवीपाभा का  
वला रजाहरव थाथा पासन वदीपव वेदानपाटोया वसति यवया माटा सवता नारहासकारा तिक्करी वली श्रीपय मैवज नूनीटिक तिक्करी  
पतिभाभगा विहरावता वका प्रवसते । पाहापरिविष्टि तवोक्कीहि यथासंभावेमावाविहरति । केववा यादरा तेववा पास एववा विलपकर्म  
विवा तेवेकरी पाकाने सापययो एखव नुववम वज वस गौनतल यनमोटता वका दिवरेतेयावक । तवकासिख तेवसमण् । तेकासनेविपै ते समय  
नेविपै । पासावविष्ठा । पात्रनात्र सामीना यपल्यभगानिया प्रयिष्ठादिक् । देरामनवताकातिसपय्या कससपय्या वलसपय्या र्नुसंपय्या विववसपय्या ।  
दुतवव थागपियय माद्यपय तिक्करी गामना भला वलवा सवित पितापय तिक्करी गामन भला वनकट सवयव तिक्करी मुल गरीर सुदरपयो  
तेवे गामन भला सुववतन तमर् सुवाकरी तिक्करी गामन भला । वावसपय्या दधवसपय्या वरिससपय्या सज्जा/सपय्या खाद्यसपय्या । मलादिक्

सखा प्रसिद्धा समयोवा सापव दूकती उपोपदिस्य दावती नीरयत्याग भ शेषसीति भ शेषस्त्रिनी मानसावष्टम्भयुक्ता ॥ समयसीति ॥ तेन  
 स्थित शरीरप्रमायुक्ताः ॥ सखसीति ॥ सखस्त्रिनी विविष्टप्रमावोपता सखस्त्रिनीया विविष्टप्रबन्धयुक्ता ॥ अससीति ॥ स्यातिमन्ती नुस्वार द्यैतयु  
 प्राकतत्वात् ॥ जीवियासामरकप्रपविष्यमुक्ताति ॥ जीविताम्रपा मरकप्रपनधविप्रमुक्ता ये त तथा इह यायत्करया दिदं दूत्रय - तयप्यथाप्रायु  
 प्यथाका युवाय समयमुक्ता तयः समयपदइहइह तय समयो प्रधाननीकाङ्कतानिषामार्थं तथा करकप्यथाका चरकप्यथाका तय करयं  
 पिरकविमुखादि चरक प्रतप्रसकयर्थादि निम्नइप्यथाका नियरो उन्वायकारिका दयता निम्नप्यथाका निययो धर्यपूरकाज्युपगम सतय  
 निश्चयोवा मद्रवप्यथाका सखवप्यथाका मनु जितलोधादिस्य भाद्रुधादिप्रधानस्य सधनस्यतयैव ततिके भाद्रुवत्यादिना ? उच्यते तन्नो दययिक  
 सताका भाद्रुधादिप्रधानत्वैतू दयानावयवैति साधवप्यथाका सापव क्रियासु दखल्य सतिप्यथाकासुत्तिप्यथाकाएपाविविज्जामतवेययजनयनिय  
 मसखसोपप्राजाकारप्यका सत्प्रजाः सारी सुदिहगुत्वम घोषय सुइदावा मिथाचि कीदानामिति तय सधियाका सप्युस्सुया सयदि

पया कवसपयसा विणयसपयसा पाणसपयसा दसणसपयसा चरिहसपयसा लज्जालाधवसपयसा उंयसी तेषसी  
 धसुसी जससी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलान्ना जियनिहा जियइदिया जियपरसहा जीवियासा

यान तिबेवरो यामनगुह सखल तिबेवरो यामनगुह सामापियकादि सारिच तिबेवरो यामन भसा साकपसिह साख सयथा समय तेषेवरो गुह  
 दखसी सख उपविषया भावनी नीरयत्याग तेषेवरो ॥ सायसी तेषसी सखसी अससी । स्थित सखदससहित यारीरपभा सहित विप्रिष्ट सतिययसहि  
 न पाववा विप्रिष्ट सखदवचनसहित साकभावे असगत । शिबकाहा जियमाया जियमाया विवयाभा विवविष्वा । तत्प्राहे साधमाव्योने सयुभविजत गा  
 पका मान पदकार, वेरे विगिबोवोहे साका परदसना जिये कोका सखकोपति काम भाखय जिये कोनी सखकोवोहे निहापख जिये । शिवनिदि  
 या शिबपरीसहा । कोकाहे सयादिन पावदप्री जने कोकाह रावोस परीसइजने । कोविदायसत्त्वभयविद्यमुक्ता । कोविदसखनीका परकपना भ

ब्रह्म। सुशामभरया अचिद्ब्रुवसिद्धवामरुचति अचिद्ब्रुव स्वविरस्ताति निद्रुपधानिधा प्रसव्याकरुचामि यथा त तथा ॥ क्रुसिपायवदनुपति ॥ क्रुसिक  
 स्वगमपपातास्तस्यवद प्रुसिपय , तस्यभय वरत्वपि क्रुसिक तस्यभ्यादक प्रापयो हृद क्रुसिकापव सङ्गताः समीक्षितायसभ्यादतस्यभ्युक्तस्येन  
 सङ्कन्गुवापतात्येनजा ; तदुपमाः ॥ सदिदिति ॥ साह सहेत्यथः सभ्यरिवृताः सभ्यरूपरिधारिताः परिकरतावेन परिकरिताइत्यथः पथ्यमि

मरणान्नयसंक्रियेष्यमुक्ता यज्ञस्सुया यज्ञपरिवारा पचाहेष्ट्युणगारसगृहि सञ्चि सपरिदुका अष्टहाणुपुहि चर  
 माणा गामाणुगामदूहजामाणा सुहसुहंगा विहरमाणा जेणोय तुगिपानयरी जेणेन पुष्कवहपुत्रेष्टपु तेषोय उ  
 यागच्छति उयागच्छेष्टा अष्टापाक्रिय उयाह तुगिरिहेष्टा सजमेण तयसा अ्युप्याणनायेमाणा विहरति ,  
 तपुणा तुगियापु नयरीपु सिधाकगतिगधउक्काचस्ररधउम्मुहमहापहपहेसु जाव पुगादिसानिमुहा णिजायाति ,

य ए वेज्जकर रविगत पतसे सवप्रकारे समधिताय सुख । आधर्जातयावयमथा । यावत् स्वम मल्य पातास माहि खेभ्यु ते खिसे जाटे क्षामे ते अथिका  
 पव अद्योये भरोषा सपु सवसुव सङ्गुल्ल । पदुरमथा वदुपरिधारा । यथा दुतना धारक्यै यथा परिवारक्ये खेदाने । पथसिंभयगारसएष्टिसपरिव  
 हा । याचमे साय तेवेसहित परिवरात्तका भसै परिवारसञ्चित । यथाच्युपुसिधरमाया । यथा पूर्व यदुके जासतासका विवरतासका । गामासु  
 मामदुरव्यमाया । एकधामसो बीक्षपामे अतासका । सुहसुहेष्ट्यिवहरमाया । सखै सखेकरी विधरतासका सख्येये यप्रतिवध विधारी परवसैनही  
 अर्थवतागियायपरौ । अिदां तगिवात्तासेनपरौ । असेवपुपुद्वरतोएवेए । अिदां पण्यवतीनासे सैत्य यथायतनक्यै । तेवधसवागक्यतिउवागक्यदका । तिहा  
 यावै याशोभ । यदापदिदूषदव्यवठमिषिद्वताय । यथा मतिरूप यथा याप्य यनिपह यदाने । सजमथतयसायप्यायमायेमाया विधरति । यावताकम  
 वारोय ते सवस मूयमाकस निजतेये ते तपतेसयमेतयेकरी थाक्याने भावतायजा विचरैकै । तएवतुतिधाएवयरोए । तिवरि तेगिवात्तास मगरीनेविपै ।  
 तसध, टमतिपथदक्यथरमहापहेसु । सिधाका कसने अकारे क्कामक तोन यथीमिसे ते क्कामक चारतायो मिसे त सगक यथी गथीमिसे ते क्कामक रात्रमाग



स्यान्नोपायानि ॥ कथयन्ति कथयन्ति ॥ आत्मानवर्तं कृतं कथित्वात्मनः स्यात्कथयन्तानां ते तथा ॥ कथकोउपमं यत्प्रपायच्छित्तानि ॥ कृतानि क्रीतुकामानुस्त्वा  
 म्बन्व प्रायश्चित्तानि दुःश्रमादित्यिषावाद्यं मन्वयकस्त्रीपत्न्या द्वे स्त्री तथा आत्मोत्साहः ॥ पापच्छित्तानि ॥ पादंभ पादेवा कुप्ता यत्पुर्तपपरिवरा  
 राय पादच्छ्रुता कृतक्रीतुकामानुस्त्वा त पादच्छ्रुता यतियिषत् सत्र क्रीतुकामानि मयोतिलकादीनि मन्वयानि तु शिष्टाद्यकल्पयन्ततूर्पाङ्गुरादीनि  
 सुदृष्यान्वस्यन्ति ॥ सुदृश्यान्वो यथापि वेद्योचितानि अथवा; सुदृशिनश्च तानि प्रायेदृष्यानि च राकाविसनाप्रयेयोचितानि क्षुद्रप्रायेदृष्यानि ॥ य  
 न्नाहपवराहपरिधिषि ॥ कथित् रूयते कथिय ॥ कथ्याहपवराहपरिधिषि ॥ तत्र प्रथमपादो धातुः द्वितीयस्तु प्रवर्तं यथाजवती तत्र परि

ण देवाणुपिप्या धेरेनगवते यदामो णमसामो जाय पञ्जुवासामो , एयसुं इहन्वे परन्वे जाय श्याणुगा  
 मियहाणु त्रियस्सइ तिकहु श्रुयमसस्स स्यातिणु एयमठ पाकिसुणति , पाकिसुणित्ता जेणव सयाइ नेहाइ ते  
 णेव उवागाच्छुति उवागाच्छुत्ता सहाया कथवालिकम्मा कथकोउपमगालपायच्छित्ता सुदृष्यावेसाइ मगासइ

मर्था आदरे च वाञ्छात्कथयति, रमयन्मम । धीरुममर्धने यदासा जससासा । बल दूत तपैकौष्ठव ज्ञानवत मस्यैव नमानवैकरी बर्षा धंरकरश्च शुभ नम  
 र्कत्त करणे । आनयय्यदासासा । सावत् सेकाकरीदेनेरनाकम्मा, परिरहन प्रचीन भर्मादिद्विचार यगीकारकरै । एवञ्चो दृज्जमेववा परअवेवा। एव चाप  
 य दृज्जसावमेविये परकावमेविये । आत्तयानिबलाएवावभविस्सदस्सिक्कुरु । यदुपायोपचाने वावत् दुस्स दसा करीमे । यत्तमससुधर्तित् । एव एवमे पा  
 से । एवमसुधर्तिसुत्तित् । एवञ्चवा यत्तपुत्रे ययोव्वारकरै । ज्वरेव यथाइ सयाइ गिइत्त । जिइत्ता योप योपया यरत्तै । तेनेनठवागयत्तित्तवागयत्तत्ता । तित्ता  
 पावे तिइत्ता योदीने । यथाया । आनकीया । कथयच्छित्तया । भापयावत्तत्तदेवता ने कोवा कथित्तम वेव । कथकोउवमगासपायच्छित्तता । कोयोवे कातु  
 च च्चत्तत्तमाठै भगसोक्क यत्तत दध्यादिक्क प्रायश्चित्त तिसव्व वाटका वेवे केरं कर्हवे—यसुं योभरत्तादि पम ठामे पुत्तार् परिइत्ता किम वट्टि मत्ताये ।  
 सुदृष्यावेसाइ मगासइ कम्माइ पवराहपरिधिषा । राजवभाप्रवेय च्चित्त मगासोक्क वात्तावस्य प्रथाम परिइत्ता । यत्तमद्वयभाभरत्ताच्छिपसरोरा । भार्थो

विताः प्रवरपरिविताः ॥ पायविहारवारविति ॥ पादविहाररेव न यामविहाररेव य यारी गमन स तथा तेन ॥ अतिगमेवति ॥ प्रतिपत्था ए  
 निमन्वन्ति समीप गच्छन्ति ॥ सवितावति ॥ गुप्यताभ्युपगदीना ॥ विउसररवपायति ॥ व्यजसजानया त्यायन ॥ अविमेषावति ॥ वरुमुद्रिकादीना  
 अविउसररवपायति ॥ अत्यानेन ॥ एतवहारिएवति ॥ अतकोत्तरीयघाटकाना निवेपाय भुक्त ॥ उत्तरासगकरवेवति ॥ उत्तरासङ्ग उत्तरीयस्य दरे  
 प्पासविद्यप सङ्ग स्वर्ग दृष्टिपाय ॥ एगतिक्करववति ॥ अनेकत्वस्या मेकान्तमत्वस्य एकत्वकरव एकान्तमत्वकरव एकत्वोकरव तन ॥ सिद्धि

यथाह प्रवरपरिविपा श्युपमहग्धानरणात्मिकियसरीरा सण्णिह सण्णिह गेहेहितो पानिनिरकमति पानिनिरकमह  
 ता एगायतं मेलायति , पाययिहहारवारेण तुगियाण नयरीण मज्जमज्जण निगगच्छति , निगगच्छदसा जेणे  
 व पुष्पवर्षुपुनाम खंडुपु होत्या तंणेव उयागच्छति , उयागच्छदसा परेन्नगवते पचविहेण श्युत्तिगमंण श्युत्ति  
 गच्छति , सजहा—सचिसाण दक्षाण चिउसरगयाण , श्युत्तिसाण दक्षाण श्युत्तिसाणयाण , एगासाणिण उ

एका माहको मुहना एवमा अ पाभरव तन्वेकरो यामावमान वियाह गाररवव । सयुद्धि २ गेहविद्यापद्विचिक्कमति २ सा । पापया पापया वर  
 वकी जोवसे पापयावरवकी जोवकीने । एतवयामिसिजायति । एवव पक्कठा सवमिसै मिसोन । पायविहारवाररेव । यगावहार वासवैकरी एतवे य  
 यानि वाहन विमा । तमिवाएववरोएममममेवविचिक्कमति २ सा । तुगिबानाम अगरीयकी मध्ये मय्यमागेकरीने पयमार्गे नौसर नौसरने । जेवनेपु  
 एववतीउवेए । विवर्षा पुयवतीनाम वेवव । तेषेवववामववति २ सा । तिवाथायै तिवा पावीने । वेरेभयावतेपचविहेव अग्निगमिअग्निगववति । त  
 वहा, पव सुत तप वव अविरे जामवत सुवपकपव मते पयमकारने अग्निममेकरी तेपाये पायै ते अग्निगमककई—सवितावदरवविसररवपाय । त  
 पुव तद्वृथादिक् वेसवितावे इव तेवनी लववा वावना तिचेकरी १ । अवितावं रववाव अविउसररववए । एक मुद्रिकादिक् जे अवितावव तेवनी  
 वाववानवी तिचेकरी २ । एगावदिक् जेतारवपवद्विच । एगावचित एकपटावकवना जेतरीयने वेवीनेविदी व्यापविसेव ते करको २ । वकुपकावेवव



सुरासनाकरणेण , चरकुष्पासंभ्रुजाटिपगाहेण , मणासा पुगाशीकरणेण । जेणेच धेराजनावतो तेणेच उद्यागाच्छु  
 तिव उद्यागाच्छुद्धसा तिरकुक्षीं श्यायाहिणपयाहिण करेति जाव तिविहाण पञ्जुवासणाण पञ्जुवासति , तण्ण  
 तेपेरानगावतो तेसि समणोवासयाण तीसेयमहश्महालियाण पारिसाण चाउज्जाम धम्म पारिकहेति जहा के  
 सिंसामिस्स जाय समणोवासइत्ताण श्याणाण श्याराहण जवइ , जाव धम्मो कहित । तण्णतेसमणोवासया  
 येराण जगयंताण श्रुतिणु धम्म सोस्सा निसम्महठतुठ जाव हियया तिरकुक्षीं श्यायाहिणपयाहिण करेति ,

तिवयवेच । इटिवसे तिवारे जायजाओ मयुक्के थठारे थ । मयसाएगाकाकरवेच । यनजायवनी मनने एकवकरवा ठासेराय्या थ एमकरी । केवे  
 वसेराभवतता । तिवडां स्खित्तमवतवे । तेवेवववायक्कति २ गा । तिवडां थाने तिवडांथावीने । तिवज्जसोथायाशिवक्कति २ गा । तीमवार वीमव्वा  
 यामायी ज्ञानग्गम श्रित्तियदिने यणे वीण मइविवा करे करेने । वावतिविवाएपव्वदासवयाएपव्वुवासति । वावत् तिविच मन वचन व्वायावी से  
 वनाये वयो वरारै वनूमोइ एतीण भये सेवये वपासनाकरे । तएववेराभमवतो तेसिसमथीवासयावतीसेयमइतिसजावित्ताए । तिवारे ते स्खिर ज्ञान  
 वंन वियववंत ते तेइने यमवापासकीने यावकीने ते सर्वेकवड यगिसाटीकवा धमवर्षी तिवेकरी । वाउज्जामवक्कपरिव्वहेति । वार मइवावृत्तकपधमी  
 पार्थमयासा संतामियाहे तेमवी वही । ववावेवियवामिस्स । विम कोयीपुमार यनवे वज्जां तिसवही । जावसमथीवासरता । वावत् यमथोपासक वाव  
 वपवे पासी । वावाएपाराइएववर वावधक्कोकविसी । वावाये पारावक वुडे वसा यावत् धमंकावा यने यमवापासके धयीव्वारवीवी । तएवतेसम  
 वावामया । तिवारे ते यमवापासक वावक ते । वेरावभयवताथ धमिण । स्खित्तेने ज्ञानवतने समीये । यव्वासाथा । तिविधधम सीमव्वावका । विस  
 ववइइगाववियववा । यतियवे सम्यक प्रकारे वपयाव्वा वरुंइवननेविधे विव्वावसके वेवमा वल्लत सीमव्वावने पाक्खे वेवनां ते यावत् वइयनेविधे  
 साधु वपयेग सीमव्वावी याववया धम्ममानगावका । तिव्वासांथायाशिवपयाशिवकरेति २ गा । तीमवार वीमव्वापासावी मइविवाकरे वरीसे ।

प्रायः न पुंसत्ववर्ति न पूर्वतप सरानावस्वादावितपसा धीतरानावस्वावेक्षया सरानावस्वायाः पूर्वकासमावित्वात् , एयस्यमोपि , अयपाय्या  
 तथारिभित्थयैः तवस्य सरापकतेन सयमेन तपसाञ्च देवत्वावाप्तिः रागाशस्य क्षमसंबन्धेनृत्वात् ॥ कस्मिन्नायसि ॥ कम विद्यते यस्या सी कस्मी  
 तद्व्याव काला तथा कस्मिन्नाया कस्मन्नाया विकारः कस्मिन्नाया तथा कस्मीनेन कस्मन्मोयेच देवत्वावाप्ति रित्यर्थ ॥ सगियायसि न सङ्घो  
 तंसमर्णोवासापु एववयासी , पुंससजमेणस्यजो देवा देवलोपुसु उववज्जाति , तस्यण स्याणदरिक्कणामथरे तेस  
 मर्णोवासापु एववयासी कस्मिन्नायापु स्यजो ! देवा देवलोपुसु उववज्जाति , तस्यण कासवेनामथरे तेसमर्णोवासापु  
 एववयासी सगियापु स्यजो ! देवा देवलोपुसु उववज्जाति । पुंससजमेण कस्मिन्नायापु सगियापु स्य

तसमर्णोवासापु एववयासी । ते यमर्णोवासाञ्च यावकापते इम क्वता इवा । पुंससजमेणस्यजो देवा देवलोपुसु उववज्जाति । पूव तपेकरी यदोपायो । सापु  
 देवत्वाकरोविधे देवपदे अयमे पूर्वतप सरानाभावे तपकरे, पूर्वतप क्ता मन्वी ? केकारेवे वीतरानावस्वापेपाये सरामपन्वो तप यद्विष्ठा । तत्पयमेइतिशाम  
 ये । तिष्ठा साधुना समुद्रायमाहि मेइवतानमे क्वतिर श्रुतवड । ते समर्णोवासापुएयमयासी । ते यमर्णोवासाञ्च यावकोपते इम क्वताइवा । पुंससज  
 मेणस्यजो देवा देवलोपुसु उववज्जाति । पूव यममेकरी यदोपायो । सापु देवत्वाकरोविधे देवपदे अयमे एतसे सरानाकत सयमेकरी तथा तपेकरी देवपञ्च पा  
 ने, रानासने कम यवनाहेतुवकी एतसे क्ता क्तातही धामाविकादि यक्ताक्यातयादिइवही पूर्वहे । तत्त्वंपायादरिक्कित्तानामहेरे । ते साधुना समुद्राय  
 माहे यानदरिक्कित्तानाम क्वतिर । तेसमर्णोवासापु एववयासी । ते यमर्णोवासाञ्च यावकोपते इम क्वताइवा । कस्मिन्नायापुएयजो देवा देवलोपुसु उववज्जाति ।  
 कमपदे कस्मनेविकादि यदोपायो । सापु देवत्वाकरोविधे देवपदे एतसे समस्तकमयच कोधानकी कोरेएककम धीवरहाहे तिसेकरी देवपदे । तत्त्व  
 चक्रासएवामहेरे । तिष्ठा साधुना समुद्रायमाहि क्ताक्यतानमे क्वतिर । ते समर्णोवासाञ्च यावकोपते इम क्वताइवा । स  
 गियापु यक्तादेवापुसु उववज्जाति । सगोकरे यदोपायो । सापु देवत्वाकरोविधे देवपदे अयमे समुद्रादिक्रनेसने क्ताताना सरायापयना भवो इत्यादिविधे

वाएपञ्जुवाशवापुति ॥ इह पपुपासनाद्विष्यं भनोवाक्यापनेदादिति ॥ भावमहासिपापुति ॥ आत्मप्रत्ययस्य स्वार्थिकत्वात् महतिमहत्याः ॥  
 वाक्यरूपकस्ति ॥ न वाप्रवो ज्ञाप्रव इतिपाठोपि दृश्यते आनाययो नयकर्मार्जुपादात् फलमस्ये स्थनाप्रवकत्वं सयमः ॥ योदाहकसेति ॥ वा  
 पूतयने वायवाः देवप्रोचन इतिवचनात्, भावदान पूयकलकम्भयनपङ्कनस्य सयम प्राक्कलकम्भकथपुराणोचयया फल यस्य लब्धवदानफल तपश्च  
 ति ॥ क्वचित्पति ॥ क्व प्रत्ययः क्वच यत्र तत्किं भ्यत्यय निष्कारकमेव वेवा देवसाकेपू स्थान्यते ? तप्य सयमयो क्वचरीत्या तदकारत्वात् इत्यन्नि

। करेहसा एवययासी, सजमेण नती ! किफले, तथेण न्तं ! किफले ? तएण येरा नगावती तेसमणोवासया  
 एवययासी, सजमेणसुज्जी ! सुणरह्यफले, तएण तेसमणोवासया येरेनगावते एवययासी, जइणंनते !  
 सजमेसुणरह्यफले, तथेयोदाणफले, किपसियनते ! देवादेयलोएसु उवयज्जाति ? तस्यण कालियपुत्तेणाम  
 सुणणारयेरे तेसमणोवासए एवययासी, पुसुतवेण सुज्जी देया देयलोएसु उवयज्जाति, तस्यण माहेत्तेनामयेरे

एव यथासी । इम क्वचवाक्का । सजमेभमतेक्किफले । ययमना नैमगावन् । पुण्य सुप्रनृष । तथेकमतेक्किफले । अने तपयो नैमगावन् । क्व फलश्रुते इतिप्र  
 च । तएच तेयोराभमवती तेसमवासासए । तिचारे तेखविरे भमवत ज्ञानयत ते यगणापासक आचकाप्रते । एवययासी । इमकथि । सजमेसुष्यज्जास्य  
 ययपदे । सयमना यथा यार्था यनायवफस एतावता भवा यानताभम वारीये । तयेवाहाक्कसे । तयना पूवछतकमनो हेरेवा एतावता भूमयाक्कमं  
 चरे । तएचतेसमवासासया । तिचारे ते भमवापासककीधरा प्रयना एवगा यतर सीमसी । येरेमगावतेएवययासी । क्वविरे ते भमवतप्रते इम क्वचताह  
 या । क्वचंभतेसममेवंसुष्ययपदे । को च वाक्कासकारे, येमगावन् । सयमना यनायव क्वचती सयत्प्रच खेये पायताकर्म वारीये । तथेयोदाहकसे ।  
 तपना पूर सचित्तकम हेरेवा । क्वचित्तिवचभतेरेवादेववाएसुसुचवक्कति । किसेकारच खेयेवे हेमववन् । देवता देववाक्येनियै कपसे तपसवमने छल  
 सीते हेरेवा यकारत्वात् इत्यभिप्राय । तद्वचवासियपुत्तेणामययकारे । तिचारे ते साधुना ससुदायमाहे च वाक्कासकारे, क्वचित्कपुण इतेनासे साधु ।

पस्यासि स सुभी वद्गाव क्षाता तथा संनितया इत्यादिषु सत्सुभीदि सयमादिपुत्रोपि कर्मं यन्नाति तत्र सद्भितया देवत्यावाप्तिरिति आदृच-  
 पुत्रतवसवमोर्षो तिरुपिबोपिष्मिर्भाषरापत्स । राभोसभोवुषो, सगाकम्मनयोतेज ॥ १ ॥ सवेकभित्यादि ॥ सत्यापमयः कस्मा दित्याद्य ॥ नोच्य

ज्जो ! देवा देवलोपसु उच्यज्जति , सञ्जेण एसस्यठे नोचेयण स्यायनायवसव्वयाण । तण्ण तेसमणोवासया  
 येरेहि नगवतोहि क्षमाह पूयाकवाह यागरणाह यागरिया समाणा इठतुठा येरेनगवते वदति णमसति ,  
 वदइत्ता णमसइसा पासिणाह पुच्छति , स्यठाह उवाहिंयाव , उठाएउठेति , येरेनगवते तिसकुसो जाय वदति —  
 णमसति , वदइसा णमासिसा येराणनगवताण स्युतियाव पुक्कवईयाव चेइयाव पानिस्सकमति , पानिस्सक

समकारता सवमादिदुक्कवुगा कम्मदधि देवयो देवपुत्रे । पुत्रववेच पुत्रसवमेच कथायाण । इम सरानगपेकरी सरान सयमेवार्त्तिवकरी कम्मोपेकरी । स  
 विवाए । मनुष्य इत्यादि समेकरी । यथादेवारेवसापसुठववज्जति । यथाधार्मी । देवपथे देवसाकमेदिये अपणे । सवेचएसधु । सार्ध च वाक्यासंकारे,  
 एव एव एव एव एव एव एव । यानेववपावभाववववववव । मदां निए च वाक्यासंकारे यथाभावा वज्जयतायेकरी कथा, एतेने यापयो  
 कथनाये यथमाव बुदि यन्नेतयो कथा एवयव परमाययो कथाहे एवव । तएवतेसमवोवासया । निवारि ते यमयोपामव यावक । येरेहिभगवते  
 हि । क्वदिरे मनवते । इमार एपाकवार । एव एगइगवप । यानरवार यान्गिरियासमावा । मयनायव कथाकथा । इठतुठा । वदपाया । येरेभगाव  
 ती । क्वदिरे मनवतप्रते । यमसति वदंतिवदिता । वदि नमककारकरे वसिने । यमसिता । नमरकारकरेव । पसिचार पुच्छति २ यथा । मयपते पुत्रे मयपते  
 पूषेने । यथाह ववादिदति २ यथा । पूषीव यवयव चारे धारीने । इहाएउठे ति २ यथा येरेमयवते तिसकुसाणुंइति यमसति २ यथा । कठी कमाज्जाव कमाज  
 ने क्वदिरे मनवत तेजापते तीनवार वदि नमस्कारकरे वदीने नमरकारकरेने । येरावमववताव । क्वदिरेने मनवतने । यतियायो समोपयको । पुत्रव  
 वतीयापोवेरवाप्सो । पुत्रवती नाम वेकवको । पविष्मिन्ममति २ यथा । भोसरे भोसरीने । कासीवदिसिपावपुत्राया । क्विष्मिन्नी याव्यावता । नातेवदि

वभित्यादि ॥ नैया सनायवकथातया उपमयं ; कात्सनायवद्वे स्त्रामिप्रायण्य म वस्तुतत्त्वं वक्ष्यते धार्यते ऽप्रिभागा श्रेया ते कात्सनायवकथ्या

महेशा जामघदिस पाउष्ठ्रया तामेयादिस पाणिगाया । तणुण तेयेरा नगावती श्रुषयाकयाद् तुनिगयानं नयरी  
न पुष्कयहयानं वेइयानं पकिनिगाच्छ्रुति , पकिनिगाच्छ्रुति श्रुति जगवयविहार विहरति , तेणका  
लेण तेणसमणुण रायगिहेनाम नयरे जाय परिसापणिगाया , तेणकालेण तेणसमणुण समणस्सनागयानं महा  
धीरस्स जेठेश्रुतेयासी इदंनूहणाम श्रुणगारे जाय सारिकहाविउलतेउलस्से ठठठठेण श्रुनिस्कित्तेण तवोकममे  
ण सजमेण तवसा श्रुप्याण नावेमाणे पिहरइ , तणुण सेनागवगोयमे कठरकमणपारणयसि पठमाणु पोरे

सिपवियाया । न दिदिते मारिं पाकायया । तएवं तेयेरा । निगारे ते कविस्सायु । यथाकाकार । एवसा प्रसादे । तुनिगाया जयरीयां । तुमिया  
नाम भयरी यको । पुण्ड्रमतिदाया वेरयाया । पुण्ड्रवी नाम वैल्लको । पडिचिक्कमाति २ ता । नोसरे नीसरीने । जडियाज्जवयविहारं विहरति ।  
वाडिर जगपदं ययनेदिपै विहारिक्करी विहरै एतावता योके स्तानवेजाय । तेवकावेच तेवसमएण । ते कात्सनेविपै ते समसनेविपै । रायमिनेजामव  
सरहात्ता । रात्रयज्जनासे नगर झुवा, तिहा श्रीवज्जमान स्तामी समासया । जावपरिसापडियाया । यावत् पयदायावी धर्मज्जो परिददा पाळोगाइ इत्था  
दि यर्धकवया । तेव कासय । ते कात्सनेविपै । तेवसमएण । ते समसनेविपै । समससुममवधोमजाओरस । यमय भगवंत श्रीमहावीरस्सामीनो । कुं  
यतेवामो । वडायियय यथा । इदंभूतोवामंयवपारे । इदंभूतो इसेमानं सायुं इत्थादि । जावसथितविउलतेउलसेसु । यावत् सज्जेपोइ विपुष कोरावर  
तेकासेम्रा खेव । इड्डेयेय । पटपट तपे पाट्ठाकट्टे । पडिचिक्कतेचतयोक्कसेव । धतरारहित निरत्तर इत्सव, तपज्जमेक्करी । सज्जमेच तवसायप्याय भा  
वेमाथिविहरइ । सवम सत्तेमेद तप धरतेमेद ते सवमे तपैक्करी याक्कामत भावताक्का विधरेइ । तएण सेनायवगोयसे । तिहार तेभगवंत श्रीतम ।  
इड्डेसमवपारवगसि । इड्डेभजना पारवामिदिपै । पठमाएपरिसीए । दिवसगी पडिची पोरिसीनेविपै । सक्कायक्कट्टे । सक्कायक्कट्टे । वीयाएपारिसो



माय ॥ त्रिकल्पपापारिप्यति ॥ त्रिकाशमाधारिण ॥ युगतारपत्नीयव्यापति ॥ युगं युप क्षरप्रमात्र मन्तर सदेहदेहास्य दृष्टिपासदेहास्य च ध्यवधान  
 श्राहासुहृदेयाणुप्यिया मापन्निवध । तएण जगवगोयमे समर्पण जगवया महत्वीरेण श्रमणुयाणुसमार्ण सम  
 णस्स जगयत्त महत्वीरस्स श्रुतिपात्त गुणसिछात्त च्छेद्यात्त पन्निस्सकमह्, पन्निस्सकमह्सा श्रुतिरियमव  
 वल्लससन्नते जगमत्तरपत्नीयणाए दिठीए पुरजोरिय सोहेमाणे सोहेमाणे जेणव रायगिहेनयरे तेणव उद्याग  
 च्छेह उद्यागच्छेहसा रायगिहेनयरे उच्चनीयमज्जिमाह् कुलाह परधरसमुदाणस्स त्रिस्सकायरिय श्रुत्तह , तए  
 ण सेजगयगोयमे रायगिहेनयरे जाथ श्रुत्तमाणे यज्जजणसद् निसामिह् , 'एवखलु देवाणुप्यिया तुगियाए न  
 यरीए याहिया पुप्फयह्द्याए च्छेद्याए पासायाञ्जिजा धेराजगवत्तो समणीवासएहि ह्ममाह् एयासुद्याह् वागार

कर्त्तव्य—एवसावदेवाणुप्यियामापन्निवध । त्रिम सुखकल्पे तिमकरा देहेवागुमिय । काह्मा पतिवध मकरकां भाघात मकरकां । तएणमन्तरगोयमे ।  
 त्रिकारे भववद गौतम । समन्वेषमन्तरवामनव्यापीरेव । यमपुमयवत योमहावीरकासी । यमपुत्याएसमाहे । यात्रादीयावकां । समन्वेषमन्तरगोयमहा  
 गौरव । यमवत् योमहावीरकासीमा । पतियायो गुणसिखायो च्छेद्यायो । समीपवकी युष्पिसाजाम वैलवकी । पत्त्रिचिक्कमह् २ का । नीच  
 है नीचलोने । यत्तरत्तमवधससमते । कासायिकरी उतावदानही मनेकरी यवत्तमही पयभानि ज्ञान यका । युयत्तरपत्नीयव्याएदिठीएपुरयो रियसाहे  
 माये । भूसा निजप्रमाय धतर यापयायरीरे ह्ये यनेदृष्टिपाल देयमे यवधान देखे एववी दृष्टिकरी याने यर्वासमिति सावता पावतायका । वेहेव  
 रायगिहेनयरे । त्रिकरी राजयवनामा गयारहे । तेहेवधवायव्यह् २ का । त्रिकरी यावै त्रिकरी यावीने । रायगिहेनयरे । राजयवनामा नमन्तेदिये ।  
 जयवीयमन्त्रिमाहकुमार । जय नीच मन्त्रम कुसनेदिये । धरसमन्त्रावकासिक्कायरियवह् । धरनेदिये समुदाग भिषासेवानेपय घटे फिरै । तएण  
 सेमययायमे । त्रिकारे ते भववत गौतम । रायगिहेनयरे । राजयव नमन्तेदिये । यावत् फिरतावका । वहुव्यवसरिसासेह । च्छेदी

सेनाया भाव प्राप्तमावयककल्पता इहमानिता तथा नवय महमानितयेव द्रुमो पितृ परमाश्रयया य भवधिष इतिनायना ॥ अतुरियाति ॥ कायिक  
 स्वरारहित इन्द्रवसति इ मानसबापसरहित ॥ अर्धनतेति इ असज्जालाशामा ॥ परसमुदाशस्व ॥ यदपु समुदान ईष्व यदसमुत्तान सस्सै यदसमुदा  
 सीए सज्जाय करेइ , वीयाए पोरिसीए ज्जाण ज्जियाए , तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसन्नते मुहपो  
 सिष्य पाळिहेइइ , पाळिहेइइत्ता नायणाइ वत्याइ पाळिहेइइ , पाळिहेइइत्ता नायणाइ पमज्जाइ , पमज्जाइत्ता  
 नायणाइ उभाहिइ , उभाहिइत्ता जेणेष समणेनगव महावीरे तेणेष उवागाच्छइ , उवागाच्छइत्ता समण  
 नगव महावीर वदइ णमसइ , वदइत्ता णमसइत्ता एववयासी इच्छामिणत्तते ! तुज्जाहि अन्नणुयाए समाणे  
 ठठकमणपारणयासि सायगिहे नयरे उच्चनीयमज्जिमाइ कुलाइ वरसमुदाणस्स त्तिरकायारियाए अणित्तए ?

ए । बोधो पारिसोइ । अत्ताअिइशाए । ज्ञानत्थावे यवविचारे । तइयाएपारिसोए । बोधो पारिसो इर तिवारे । असुरिवमज्जवलमसभतेमइपात्तिय  
 डिसेइइ २ ता । ज्ञानाव करो उतावधानही मने यपसनही यसवाताशान इका एतसे यवत्ता पूर्वव इववै २ मुख वसिकापते पडिसेइ यडिखहीने ।  
 भावत्ताइर पडिसेइ २ ता । माजन तोनपाथा यव पडिसेइ पडिसेहीने । भावत्ताइर पमज्जाइ २ ता । भाजत पाथा प्रमाव पूजे प्रमाथीने । भाय  
 त्ताइर उभावेइ २ ता । मावत्तपाथा नई यहीने । अनेपसमवे मयदमहावीरे । जिहा यमत्त भगवत् वीमहावीरत्ताभी । तिवत्तवागाच्छइत्तयायत्ताइत्ता ।  
 तिहा पावै विहा पावीने । समत्त भगव महावीर । नमत्त भगवत् योमहावीरत्ताभी । तिवत्तवागाच्छइत्तयायत्ताइत्ता ।  
 र जरीने । इहववायी । इम कत्तात्ताया । इच्छामिभतेपुअदिपत्तएत्ताएत्ताये । वात्तुं । इमगवत्तु ! इने पाजादीयात्तकी णने त्तादीने अमरत्ता  
 शयता । इहत्तमत्तपात्तवयिये । पटभज्जना पात्तवयिये । तावमिहेत्तवे । तावत्तवत्ताये भयत्तेत्तवे । अत्तवीयमज्जिमाइ कुलाइ । जंष वीच मत्त  
 वत्तु म दिवत्त । पमत्तपुत्तायमिच्छावत्तियाए । पत्तेत्तवे अत्तुत्ताये त्तिपा त्तेत्तवे पत्तेत्तये पात्तात्तयेत्तवे त्तिज्जालित्तानेत्तवे पत्तुत्तवत्तु इत्तेत्तवत्तु मत्तवत्त



गिरहहस्ता रायगिरहात नयरात पठिनिरकमह स्युरिय जाव सोहेमाणे जेणेय गुणसिछए वेहए जेणेय सम  
 णे नगावमहाधीरे तेणेवउवागच्छह २ समणस्स नगावत महाधीरस्स स्यूरसामते गमणागमणाए पठिके  
 मह एसणमणेसण स्याछेएह, दासपाण पठिदसेह २ समण नगाव महाधीर जाव एववयासी, एवसल्लु जते!  
 स्यहंतुंनेहि स्यज्ञणुयाए समाणे रायगिहे नगरे उच्चनीयमच्छिमाणि कुछाणि घरसमुदाणस्स त्रिस्कायारिया  
 ए स्यक्रमणे धक्काजणसह निसामेह एवसल्लु देवाणुप्पिया तुंगेयाए नगरीए दाहिया पुप्फवईए वेहए पासा

वेहने । आरसमुपयच्छाउवणे । यावत् जपना ज्ञातुं च यत्पर च वेहने । यथापञ्चमसमुदायमेवह २ ता । यथा यथां एतत्ते मिथा याहार संपूष ते म  
 ते परं यहीने । रायगिरहायाववरायापठिचिस्सम २ सा यतुरियज्जावसीहेमावे । राज्जवमाना नसरवकी नोक्खसे नोक्खसीने कावकी उवावसानही  
 मजधी ज्जाववदानही यावत् र्दांसमिति साधत्तावक्का । जेहेयमुवसिहएवेए । जिहा मुवमिज्जाज्जाव र्दावेहे । जेहेवसमवेभगवंसहाधीरे । जिहा यम  
 च भयवत योमहाधीरस्सामीने । तेवेवरागयच्छ २ ता । तिहा यावे तिहा यावीने । समयस्यभयवयामहाधीरस्य । यमच भयवत योमहाधीरस्सामी  
 ने । परदासामते । यए वेगासानही यच्च उक्कवानही । समयायमसाएपठिज्जम २ ता । गमनागमन ज्ञानो याविपो याछीवे नियस वरने जेकीव वि  
 राधनायउव्वे, ते समारी पठिज्जसे पठिज्जसीने । एसजमवेसवयासीए । जे कांरिं याव यववा यवव वयो तीदुपच याछीं । भत्तयावपठिदंसेह । भा  
 त यावी निर्दोप विवराो तेदेवाहे देवाहीने । समसमसवमहाधीर । यमच भगवंत योमहाधीरस्सामीने वीटी । जावएवववासी । यावत् इम च्च  
 ताववा । एससुभतेयवउममेहि । इम निये वमवत्त । इ तुणे । यच्छयाएसमावे । यायादीयावका । रायगिहेववरे । राज्जवमाना मसरनेविपे ।  
 उयवीपमभिन्नासावि कुछावि । जव नीच सज्जमसुसनेविपे । घरसमुदायस्यभिन्नावदियाए यवमावे । घरसमुदाय भिन्ना याहारनेविपे च्चिरतावका ।  
 वरुमवसरमिचामेह । वरा मनुष्योनेसुखवी यवत् सोमजा । एवसल्लुदेवावुप्पिया । इम निये देवेनागुणिय देववत्तम २ तुंगियाएवयरीएपठिया । तुंगिया

प्रसीद्धयति यासा युगात्तरप्रसोक्तता तथा इत्या मरियति ॥ इर्यामन ॥ शेकहमेयमकेष्यवति ॥ अथ कथमेतम् स्थधिरवधन मन्ये इति वितर्कार्थी

णाह पुच्छिया , सज्जमेज्जति ! किफले तवे किफले ? सणुण तेपेरा ज्जावती समणीयासणु एव धयासी सज्ज मेणसुज्जो ! सुणएहयफले , तवे योदाणफले , तवेय जाय पुह्वतवेण पुह्वसज्जमेण कम्मियाणु सांगियाणु सु ज्जो ! देवा देवलीणुसु उववज्जति , ससुेण एसमडे णोवेवण सुायनाववसुह्वयाणु । सेकह मेय मन्ये एव ? सणुण ज्जावगोयमे इमीसेकहाणु सुसुठे समाणे जायसुहे जाय समुप्यन्नकोउहसुहे सुहापज्जस समुदाण गिराहइ

मद्वचना मज्जवी बचन र्थाभवे । एवमद्वेषवाङ्मिया । इम निचे वेदेनामुपिब । तुमिनाएवधरीय । तगिवाताम नगरीने । वडिवापुप्पवतीएवेहए । वाहिर पुष्पवतीनामा वेज्जनेदिवे । पासानविय्यायोरामनवती । पार्थनाज्जना संताग्गिवा प्रपियधिरिक्क कम्मिर भगवतप्रते । समवावासएहिं । यमयो पासवे वासवे । इमार एयाक्कवार नागरवारपुच्छिवा । एववा एताइयरूप यामे क्वसवे ते मयनाथय पूव्वा ते क्वहेडे—सज्जमेज्जति किफले । यममनो विमावत । क्व क्व । तवेकिफले । तपना क्व क्व ? तएववेरामयवंती । तिवारे ते यमव भगवत । ते समयोपासए । यमयोपासक वाव थापते । एवववासी । इम क्ववता क्ववा । सज्जमेज्जयन्ती । यममनो यहीपासी । यक्कववपसे तवेयोदाक्कफले । यनायवपक्क नया यावताकम्मं वारीये व पना मूनयाक्कववेरीये वे पक्क । तवेववावपुन्यतवेकपुन्यसज्जमेज्जकिय्याए । इम तिसहीक्क क्ववती, यावणु सरान तवेक्करी सरायवादिक्करी कम्मिया येव रज्जा तेवेक्करी । सगिवाएपज्जा । मनुष्य इथाने सवेक्करी यथापायी । इवाहिएवाएसुउववज्जति । देवपवे देवकीक्कनेदिवे क्वपवे । सवेएएसमडे । सज्ज ए एव सज्जवे परि । वाव र्थं पासमायवतव्यराए । नही निवे व वाक्कासवारि यापयो क्वपनये यक्कभावनुहि यमेज्जवी क्ववा एथव परमांथवी क्ववा हे—सेक्कहमेयमकेष्यएव । इदिवे किम ए क्वदिरता यवनमानीये एववो वितक्कपना इवेपकारे वपुज्जन वरुं मयुथाना वचन सीमव्या । एएववेभिगावगीय मे । तिवारे ते मयवव गीतम । इमीसेक्कयाएक्कवडे समवे वाववसुठे । एववो क्ववापासी तेवना यक्कवाथीक्कवा एतवे एयात सीमज्जने क्वपनी यवा याव्या

गिराहृष्टा रायगिरिहातं नपररातं पक्रिनिरकमहं स्युरिय जाव सोहेभाणे जेणेव गुणसिलपुं खेइपुं जेणेव सम  
 णं जगवमहाधारे तेणेवउवागाच्छहं २ समणस्स जगवतं महाधीरस्स स्यूरसामतं गमणागमणाए पक्रिक्षे  
 महं एसणमणेसण स्यालोएइ, जसपाण पक्रिदसेइ २ समण जगव महाधीर जाव एववयासी, एवखलु जते !  
 स्यहंतुसोहिं स्यस्यणुयाए समाणे रायगिरिहे नगरे उच्चनीयमक्रिमणि कुलाणि घरसमुदाणस्स तिरकायारिया  
 ए स्युठमाणे यक्रजणसहं निसामेइ एवखलु देवाणुपिया तुगियाए नगरीए धारिया पुप्फवईपुं खेइपुं पासा

निरने । जावसमुपण्यकाउवइ । यावत् जपनां चोतुव भवरत्तं जेवने । सहायज्जसमुदाणयोवइ २ ता । यथा पर्याप्त एतत्ते भिखा याहार यपूव ते म  
 ते पर्ये पदीने । रावधिवाथायवराथापविविस्समइ २ ता यतुरियजावसोहेमाचे । राज्जपुजनामा जयरत्तवी जोवइ जेवकीने जाववी उवावसाजवी  
 ममवी वतावसाजवी यावत् वकींमिवि साधतावजा । जेदेवपुपयिखएयेए । जिवा गुचयिखानाम वैलखे । जेदेवसमवेमयदंमहाधीरे । जिवा यम  
 व भगवत योमहाधीरसामोहे । तेयेववयामच्छर २ भा । तिवां यावै तिवां यावीने । समवसुभगवथामहाधीरसु । यमव भयवत योमहावीरसामो  
 ने । यदूरसामने । यवं देयसानवी यव् ठकडाजवी । गमवांसमवाएपविविस्समइ २ ता । यमनायमम जावा याविवो यावीने निवख बर्तने जेजीव वि  
 राधनावईववे, ते संभारो पविविस्समीने । एववसवेसयवालोएए । जे वही एव यववा यपुव ववो तीएएव यावीरे । भलपाथपविविस्सरे । भा  
 न पावी निर्देय विवयो ते देवाहे देवाहीने । समवभगवमहावीर । यमव भयवत योमहावीरसामोप्रते यदी । जावएवववासी । यावत् इम जाव  
 नाप्रपा । एवसुभनेयवगुयेवि । इम निवे हेमववन् । इ तुव । यज्जपुवाएसमाचे । यायावीयावजा । रायगिरिहेवरे । राज्जपुजनामा जयरत्तनिवे ।  
 उयवीसमिमाविजुलावि । जव नीव मज्जमज्जुत्तनेदिपे । घरसमुदाणसुभिसावदियाए यवमाचे । घरसमुदाव भिखा याहारनेदिपे पिरतावजा ।  
 इज्जवसवदिपिखामेइ । यवां मणुजनेमखवी यव् सोभजा । एवसुदेवाजुप्पिया । इम निवे इदेवानुपिय देवववम ? तुगियाएवयरोएयविवा । तुगिया

प्रसीदयति यासा मुनात्नरप्रतीकणा तथा वृक्षा ॥ रियति ॥ इयानमनं ॥ सेकहमीयमसेएवति ॥ अथ कथमेतत् स्थविरवधन मन्ये इति वितर्कायां

णाइ पुच्छिया , सजमेणन्ते ! किकले तवे किकले ? तएण तेपेरा नगावतो समणोयासए एव धयासी सजा मेणसुज्जो ! धुणयस्यफले , तवे योदाणफले , तवेव जाव पुह्वतवेण पुह्वसजमेण कामिमाए सगोयाए सुज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जाति , सर्वेण एसमडे णोचेवण स्यायनाववसहियाए । सेकह मेय भन्ते एव ? तएण नगावतोयमे इमीसेकहाए लुठ्ठे समाणे जायसहु जाव समुप्यन्तकोउहसि सुहापज्जास समुदाण गिरसहइ

मनुष्यता मखवो बखन सांभवे । एवसुहदनासुमिया । इम णिये देदेनासुमिय । तुमियाणानम नमरीने । वडियापुण्णवतीएवेरए । बाहिर पुष्यरतीनामा वेवनेविये । पासावधिज्जावेरामयवता । पाण्णनाबना सतामिया प्रणियादिह क्विर भयार्धवपते । समर्थोयासएदि । यमसो पासवे जाववे । इमार एवाकवार वासरवारपुच्छिया । एववा एताइयाक्य पागे क्वससे ते मखनाथय पूणा ते कइहे—सजमेवमते किकले । सवमनो हेमववव । सु फल । तवेकिफसे । तपना सुं फल ? तएवेदेरामगवतो । तिबारे ते यमव भगवत । ते समर्थोयासए । यमसोपासक याव जामते । एववयासी । इम क्वहता इवा । सजमेवपया । सवमनो मथोयासी । यववववफसे तवेयोदाकफसे । यनायवफस नवा भावठाकमं पारीये व पना मूवपाकमवेरीये दि फल । तवेवजापुण्यतवेपुण्यसजमेवकथियाए । इम तिमहीज क्ववो, भावव सराम तयेकरी सरामवारिनेकरी कर्मोय येव रजा तेवेकरी । समियाएपया । मनुष्य देव्याने समेकरी यवोयासी । देवादेवोएसुवववज्जाति । देवपवे देवकीकनेविये कपवे । सुवेयएसमडे । सज ए पव सजमेवपरि । बाववववावभाववतल्लराए । नइो निये य पाकाककारे यापयो क्वमनाये भवमावगुदि पवनेनवो क्वया एपवे परमावकी क्वया हे—सेकहमेवमसेएव । इवे दिम ए क्विरना बखनमानोये एववा वितकउपमा इयोपकारे बडुजन क्ववी मठुप्यो यवम सांभज्जा । तएवेसंभावयोय से । तिबारे ते भयवम गीतम । इमोसेकहाएएववेव समवेववावसठ्ठे । एववी क्ववायासी तेवना यवकायोवज्जा एतवे पजान योमकीने क्वपनी क्वरा पाकाः

उपयोग्यको ज्ञानिभद्रस्यः ज्ञानस्तीतिभावः ॥ पक्षिगण्डियसि ० परिसमन्तान् योपिजाः परिरुजानिभद्रस्यर्थाः, परिजानस्तीतिभावः, अन्तरान् स

उज्जियाण नते । तेयेरानगवती तसि समणोवासयाण इमाइ एयाकवाइ वागरणाइ वागरेसुए । उदाका ,  
 १) झुणाउज्जिया पलिउज्जियाण नते । येरानगवती तिसिसमणोवासयाण इमाइ एयाकवाइ वागरणाइ वा  
 गरेसुए । उदाका, झुपलिउज्जिया पुसुतवण झुज्जो । देवा देवलीएसु उवयज्जति, पुसुसजमेण कमिभयाए  
 सगियाए झुज्जो ! देवा देवलीएसु उवयज्जति, ससुेणं एसमठे णोषेवण झुयायनावयतसुयाए पन्नेण गीय  
 मा । तेयेरानगवती तिसिसमणोवासयाण इमाइ एयाकवाइ वागरणाइ वागरेसुए णोसुप्पन्नू तहचेव नेय

मते । उदाका उपयायन ज्ञानगुणत्वे ज्ञानेवै हेमयावन् । ते वेरानगवती । ते सुविट मयावत । तसिसमन्तानामयाण । ते यमसांपासकता । इमान् एवाक  
 वार । एववा एताइमकप । वायारवार वामरेसए । प्रथ मते ज्ञानवदेवाने । उदासुपवाठिज्जिया । यमवा उपयागवतनही ज्ञानेही । पलिउज्जियाया  
 भततेयेरानगवती । ज्ञानवकीको उदाका विम उदाका सय्यज्जानयावे एववी ज्ञाने समसुपयेकावे ज्ञमयावन् । ते सुविट भयावत । तिसिसमन्तोवासया  
 ण । ते यमसांपासकता । इमान् एवाकवाइ वागरवार वामरेसए । एववा एताइमकप प्रथ मते ज्ञानवदेवाने । उदासुपयसिउज्जिया । यमवा विदिपिये  
 यानवतनही । पुसुतवणयज्जिदेवादेवकीउसठवयज्जति । पवतेये एतसे सरयातये ज्ञानोपायो ! देव देवलीकजविने ऊपये । पवसकतेव । पूव सयने सरा  
 स सुयमे । ज्ञानिवाए सगियाए । योव ज्ञानोयेकरो मनुष्य उदाकादिसिगेकरो । यज्जिदेवादेवकीएसुठवयज्जति । ज्ञानोपायो । देव देवलीकजनेविने ऊपये  
 सयेवसमठे । सानू प यय । यानेवययायभावरत्तववाएपभूव वायमा । नही निसै व वाकासकारे, यान्भवाव यल्लयताये यववुविभावै एपयै कज्जा  
 व रतिप्रथ समयवै हुगीतम । ते सुविट भयावत । तिसिसमन्तानामयाण । इमान् एवाकवाइ वागरवार । एववा  
 एताइमकप प्रथ मते । वागरेसए । ज्ञानव देवती । योपयन्नु तहचेववेवय । नही पसमव इत्यादि, तिसहीव ज्ञानेवी । पवसेसिसकापमममिनेय



वपयोग्ययो धानिमरुत्यय ज्ञानस्वीतिमाहः ॥ पसिठविद्ययति ॥ परिसमत्तान् योगिकाः परिष्कान्निपरस्पर्यः परिकान्स्वीतिमाद्यः, अन्तर भ

उज्जियाण व्रते ! तेषेरान्नगवती तसि समणोवासयाण इमाइ पुयाकवाइ वागरणाइ वागरेसुए । उदाका ,  
॥ सुणाउज्जिया पाठिउज्जियाण व्रते ! येरान्नगवती तसिसमणोवासयाण इमाइ पुयाकवाइ वागरणाइ वा  
गरसुए । उदाका , सुपालिउज्जिया पुव्वितवण सुज्जो ! देया देवलोएसु उववज्जाति , पुव्वसज्जेण कम्मियाए  
सागियाए सुज्जो ! देया देवलोएसु उववज्जाति , सञ्जेण एसमठे णोचेवण सुयायन्नावयससुयाए पन्नेण गोय  
सा ! तेषेरान्नगवती तसिसमणोवासयाण इमाइ पुयाकवाइ वागरणाइ वागरेसुए णोसुप्पन्नू तहचेव नैय

भते । ०इवा वपवायवन्न ज्ञानवृत्तइ जावेइ वन्यावत् । ते येरान्नगवती । ते अविद भगवत् । तसिसमन्नावाययाए । ते यमन्नापासकन्ता । इमाइ एयाक  
वाइ । एइवा पत्ताइयकप । वापरवाइ वापरत्तए । मय मते अन्नाइदाने । उदासुपवाडिजिया । अन्ना वपयागवत्तमन्नी जावैनन्नी । पठिठविज्याव  
भततेयेरान्नगवती । जावपवायो इइवा विम इइवा सव्वकभावजावे एइवा जावे समसुपयेजावे जमगावत् । ते अविद भगवत् । तसिसमन्नावासया  
व । ते यमन्नापासकन्ता । इमाइ एयाकवाइ वापरत्तए । एइवा एत्ताइयकप मय मते अन्नाइदाने । उदावपपठिठविजिया । अन्ना विजियेप  
यान्नवत्तन्नी । पन्नत्तवपवाइवादेवकापसववज्जाति । पुव्वत्ते एत्तते सरानत्ते ज्ञोपायो । देव देवतोक्कमविये उवपवे । पन्नसज्जेण । पूव सयमे सरा  
य सयमे । ज्ञानियाए सनिवाए । येव जर्मयोवरी मनुज इवादिस्समेवरी । यन्नायेविदवाएनुठववज्जाति । ज्ञोपायो । देव देवकाक्कमविये उवपवे  
सवेएसमन्नी । सान्ण प चव । जावेववावभवावत्तववायपभूव गोवमा । नन्नी मिये च वाक्कासकान्ते, यावभाय वत्तवत्ताये अइवुविभावे एपव्वे कन्ना  
व इतिमय समसव्वे वेगोत्तम । तेषेरान्नगवती । ते अविद भगवत् । तसिसमन्नावासयाए । ते यमन्नापासकन्ता । इमाइ एयाकवाइ वागरणाइ । एइवा  
एत्ताइयकप मय मते । वापरत्तए । अन्ना देवाने । ज्ञोपपन्नू तहचेववेवव । नन्नी वसमयं इत्थादि, तिमन्नीव जावयो । अवेसिसिपवावपभूमनिय

निपातः । एव ममुना प्रकारेति, बहुवचनवचने ऽ पनुवति ॥ प्रमथः समर्थो वी ॥ समिपान्वति ॥ सम्पन्ति प्रदासार्था निपात संन सम्पत्ते व्या  
 क्तु सम्पत्ते व्रिपपरंसा सारत्पर्यं सम्पत्कीतिवा; सम्पत् सम्मितावा सम्पत् प्रदत्तयः सम्मितावा, व्यासयत् ऽ वातञ्जिपति ॥ प्रायोगिकाः  
 याञ्जिजा येरा नगवती समणोवासपुहिं इमाह् एयाकवाह् वागरणाह् पुच्छिया, सज्जेण नते ! किफले,  
 तवे कि फले ? तवेय जाध सञ्जेण एसमठे णोचेवण श्यायनावधसहियाए तपन्नुण नते ! तेषेरानगवती तिसि  
 समणोवासयाण इमाह् एयाकवाह् वागरणाह् वागरेत्तए । उदाजा, श्पुप्पन्नसमियाण नते ! तेषेरानगवती  
 तिसि समणोवासयाण इमाह् एयाकवाह् वागरणाह् वागरेत्तए । उदाजा, श्पुसमिया श्याउजियाण नते !  
 तेषेरानगवती तिसि समणोवासयाण इमाह् एयाकवाह् वागरणाह् वागरेत्तए । उदाजा, श्पुणाउजियापत्ति

नयतीमे शक्तिर । पुच्छरतीएत्तए । पच्छरतीनामा वेसनिये । यासावच्छिजा । पाञ्चनायना सताजिवा । वेरामभवता । क्विर भगवत् । समसावास  
 एहि । समसापासवे । इमाह् एयाकवाह् । यहन पवसचित्त ज्ञानीना वचनतत्त्व । पसिवाहपुच्छिवा । प्रथ वेव मेव उपदेशे वसु पूष् । संक्रमितेति  
 पत्ते । यवमयी वेमनवत् वेपुष् । ए फसवे ? तवेकिफले । तपना वृक्कवहे ? तवेवजावसहेत्तसमहे । तिसाहीक सर्वकवतो, यावत् एयाव सल्लहे सम  
 वहे पवि । वीचवपावमाववसवयाए । नही निये च याञ्जासंवाते, याञ्जगुहि करीने मवी कञ्जा एयाव । तपभूत्तमेवेरामभवती । से मवी प्रभू स  
 मवह वेमववत् । ते क्विर भववत् । तिसिसमयोवासवाच । ते यमसापासव वनस्यराह यावकना । इमाह् एयाकवाह् । ए सिवात्तोह ज्ञानी भापित  
 वप । वापरवाह् वागरेत्तए । प्रथ वनादेवति एतावता क्विर से यावकना सदेह टाजिवाते समसहे इत्तर्ष । उदाहवययभू । यववा वी समवतवी  
 यव कववाते । समिवाक्कमेवेरामभवती । मवीमोल यव्यासयत् वेमववत् । क्विर ज्ञानवर्ष । ते विसमयोवासवाच । तेवमवीपासवना । इमाह् ए  
 याकवाह् वापरवाह् वागरेत्तए । एववा एताहाक्य प्रथ ते पते वनादेवाने । उदाहवययमिजा । यववा यमापयत् अकपाने यमवर्षणे । याञ्जिजाव



धार्यादीसमुच्चये ॥ अथवा ; अमलः सानु परिहृतः प्रायस् ॥ सुवचकस्येति ॥ सिद्धान्तप्रवचकस्य ॥ नाशकस्येति ॥ श्रुतज्ञानफल भववादिश्रुतज्ञान-  
 फलं भववा दि श्रुतज्ञान भवाप्यते ॥ विशिष्टाव्यसति ॥ विशिष्टज्ञानफल श्रुतज्ञानां दि ह्योपादेयविवेककारिभिश्चान् श्रुतपद्यत एव ॥ पदशब्दाव्य-  
 सति ॥ यिनित्युक्तिफल विशिष्टज्ञानोहि पाप अत्याख्याति ॥ सयमकस्येति ॥ कृतप्रत्यास्यानस्याहि संयमो द्रवत्यव ॥ अकारहृत्पक्षसति ॥ अनाश्रवक-  
 सः सयमज्ञान् किस भव कर्म मो पाहते ॥ सवकस्येति ॥ अनाश्रवोहि सपुत्रकर्मत्या तपस्यतीति ॥ बोधावकस्येति ॥ अश्रवदानं कर्मनिवर्त्तरश्च तपसा

---

एसमठि षोचेषण श्यायनाथयस्तस्युपाए । तहाकवेण नते । समणवा पञ्जुवासमाणस्स किफला पञ्जुधासणा ?  
 गोयमा ! सवणफला , सेण नते ! सवणे किफले ? गाणफले । सेणनते ! नाणे किफले ? विद्याणफले ।  
 सेण नते ! विद्याणकिफले ? पञ्चरकाणफले , सेणनते ! पञ्चरकाणे किफले ? सजमफले । सेणनते ! सजमे  
 किफले ? श्यणरहयफले , एव श्यणरहए तवफले , तवे बोदाणफले , बोदाणे श्यकिरियाफले , सेणनते !

पणुणासनापयवणा । अं फलशुद्धवेवानो, एतस्यै साधुवेवा बोधा अं फल कथा । मोयमासवचकथा । हे नौतस । सिदात सर्गभक्तवानाशु । सेवमतेसवदि  
 किफले चानफले । ते च वाक्याशब्दार्, वैमयवन् । सिदात सर्गभक्तानो अं फल कथा ? सर्गभक्तावो श्रुतज्ञानपरिमदानो फल । सेवमतेचार्थकिफले । ते च  
 वाक्याशब्द, वैमयवन् । शान्ता पाप्मानो अं फलकथा । विशिष्टाव्यसते । शान्तवो श्रेय मोय उपारयेव विवेककारो विज्ञानफलशु । सेवमतेविद्यावकिफले ।  
 ते च वाक्याशब्दार्, वैमयवन् । विज्ञानवो अं फल पाप्मिये । पदशब्दाव्यसते । विद्याज्ञानपाप्मा पापानो पदशब्दाव्यकरै ते फलशु । सेवमतेपदशब्दाव्यकि  
 फले सयमफले । ते च वाक्याशब्दार्, वैमयवन् । पदशब्दापना अं फल कथा ? पदशब्दाव्यबोधा सयम पाप्मिये तेकलशुवे । सेवमतेसवमेकिफले । ते च वा  
 क्याशब्दार्, वैमयवन् । संवसना अं फलकथा ? पदशब्दाव्यसते । संवसना नवाक्यम उपारैतवो ही चकान्यवफल । एवपदशब्दयगतकफले । इम यनाथयवो न  
 पकस अशु कर्मवकी नपकायवशु । तवेवार्थाव्यसते । तवेवरो पुरातनकर्म निवर्त्तरैवे इत्यर्थं । बोधाव्येवशिष्टिरियाफले । पुरातन निवर्त्तरावो क्रियारहित

मन्त्रपुपासनासंविधानम् सूक्तं भयं सा यत्कला तद्दर्शनार्थमाह ॥ सहाकवमित्यादि ॥ तथा रूपं भूषितस्त्रनाथ कथ्यमपुत्रपं प्रमदधा, सपीयूक्त  
 मुपसवत्तया दस्ती तरपुत्रवन्मित्यर्थः ॥ भास्वना स्वयं वननिवृत्तया स्वरभ्रंति माहर्नति धादिन मुपसवत्तया रथ मूलगुणपुत्र नितिननाथ  
 सु, सुवसेस्य जाय पन्नसमिय स्याउज्जियपलिउज्जिय जाय सञ्जेण एसमठे णोचंवण स्यापनायवसञ्जयाए ।  
 सुहपिण गोयमा ! एवमाहस्काभि नासेमि पन्तवेमि परुवेमि, पुह्वतवेण देवा देवलोएसु उययज्जाति,  
 पुह्वसजमेण देवा देवलोएसु उययज्जाति, कम्मियाए देवा देवलोएसु उययज्जाति, सागियाए देवा देवलो  
 एसु उययज्जाति, पुह्वतवेण पुह्वसजमेण कम्मियाए सागियाए सुज्जो ! देवा देवलोएसु उययज्जाति । सञ्जेण

वाकनां सव पावत् समस्य पथ्यासवत । पाठस्त्रिय पलिठस्त्रिय । अपयोगवत समस्यपथं तपयोपसम । वावसेस्यएवमठे । वावत् साय एपथं । योचंवणपाय  
 भास्वनास्त्रियाए । नही नियै च यास्सासकारे, यास्साभास्व पथ्यासगतये पवहुविभासे एपसकथा । पवहपिथं गोयमा । इ पथि विसोत्तम । एवमाहस्काभि ।  
 रम वाह्व । भासाभि पवनेमि परुवेमि । भास्वत् विमयेकरी वाह्वत् परुपुह्व । पुह्वतवेसदेवादेवियाएसुत्रववज्जाति । पूवतये एतसे सरागासवमे देव  
 ना देवसाकनेविधे जपथे । पुष्यसजमेण देवादेवलोएसुत्रववज्जाति । पूर्वसयमे सरानसवमे देवसाकनेविधे देवपथे जपथे । कम्मियाएदेवादेवलोएसुत्रव  
 ज्जाति । येन कम्मयेकरी देवसाकनेविधे देवपथे जपथे । समियाएदेवादेवलोएसुत्रववज्जाति । सगुह्व इ प्यादिक्कमेसगे देवलोक्नेविधे देवपथे जपथे । पुह्वत  
 वेस्यसजमेण । पूवतये पर्यसवमे । कम्मियाए सगियाए । कम्मोय रज्जाहे तिसेकरी प्रथमपुष्पादि संयोकरी । पथ्यादेवादेवलोएसुत्रववज्जाति । पवहोपायो ।  
 एतसेवाहे देवना देवसाकनेविधे जपथे । सञ्जेणएवमठे । सायुह्वे एपथं । वाचिस्वपायमावसावसापथ्याहत्तवाक्कमेसंति समस्यंसाहवत्तं पवहुपासमाह्वत्तं । न  
 ही नियै एपथ यास्सासनाधी कथा परमाधी कथाहे पनन्तरे सापुसेवा करीकरी ॥ इति ते सुदानोपसव देवाकनानिकात्ते कथेहि—तथापुप यां  
 य्य स्यादावर्तत चयास्सासकारे, येभवत्तं । यमश्च तपपुत्र पाते चयवाधी निहतवत्तया यनेराने कथे कथोन्मत सिद्धयते क्षमतामि क्षिणा चर्यामि । विव्वज्जा

पाण्डुरीधनुष्ये ॥ शयनाः शयनः सायु मोक्षः प्रायकः ॥ सयत्नफलति ॥ सिद्धान्तभावप्रकला ॥ भावफलति ॥ भूतज्ञानफल सयत्नादिभूतज्ञान-  
 कस सयत्ना दि भूतज्ञान भवाप्यते ॥ विद्याफलसति ॥ विधिप्रज्ञामफलं भूतज्ञाना दि ह्योपादेयनिवेककारिद्विज्ञान भूतपदात् एव ॥ पञ्चकलाफल  
 सति ॥ विद्विद्वृत्तिकर्मं विधिप्रज्ञातोहि पाप भ्रान्तास्याति ॥ सयमकसेति ॥ क्ताप्रत्यास्यानस्यहि सयतो दवत्येव ॥ पञ्चकलाफलसति ॥ शान्ताशयक  
 सः सयमवान् द्विस भव कर्म नो पारते ॥ तवकसेति ॥ क्ताप्रयोहि सयुक्तसत्त्वा तपस्यसीति ॥ बोदायकसेति ॥ व्यवदान कर्मनिष्कररत्न तपसा

प्रसमते पीच्येयण श्यायन्नाथयत्तस्यपाण्डु । तद्वाक्येण नते ! समणथा पञ्चुवासमाणस्स किफला पञ्चुवासुणा ?  
 गोयमा ! सवणफला , सेण नते ! सवणे किफले ? णाणफले ! सेणनते ! नाणे किफले ? यिशाणफले !  
 सेण नते ! यिशाणोकिफले ? पञ्चस्काणफले , सेणनते ! पञ्चस्काणे किफले ? सजमफले ! सेणनते ! सजमे  
 किफले ? श्यणस्स्यफले , पूव श्यणस्स्येण तवफले , तवे बोदाणफले , बोदाणे श्यिकिरियाफले , सेणनते !

पञ्चदासशापयत्ता । पू पञ्चदशदिनातो, एतस्यै सापुत्रेवा बोधा पू फल कर्मा । मोक्षमासवप्रकला । हे मोक्ष ! सिर्वात सांभवाधानोभुर । सेवर्भतेसवर्भ  
 दिपुत्रे शापयते । ते य शाखासकारे हेभयान् । सिर्वात सांभवानो पू फल कर्मा ? सांभवाधो भूतज्ञानपापानो फल । सेवर्भतेशापेकिफले । ते य  
 शाखासकारे, हेभयान् । शाप पापाना पू फलकर्मा । विद्याफलते । ज्ञानधी हेव मेव उपदेय विवेककारी विज्ञानफलभुर । सेवर्भतेविद्यापेकिफले ।  
 ते य शाखासकारे, हेभयान् । विज्ञानधी पू फल पाप्मिने । पञ्चकलाफलते । विधिप्रज्ञामपापया पापानो पञ्चकलाफलते ते फलभुर । सेवर्भतेपञ्चकलापेकि  
 फले सयमफले । ते य शाखासकारे, हेभयान् । पञ्चकलापना पू फल कर्मा ? पञ्चकलापबोधा संयम पाप्मिणे तेफलभुरे । सेवर्भतेसंयमोकिफले । ते यशा  
 खासकारे, हेभयान् । सवमना पू फलकर्मा ? सववयफले । संवमवत नवाकस उपदेयैनी ते फलभयनफल । पञ्चपञ्चवयनफलते । रत यमासवमी त  
 पफल सयुक्तसयधी तपसायनभुर । तपेवते पुरातनकर्मं निवरेकेदे रत्न । बोदायैयकिरियाफले । पुरातन निषयाधी विद्यारहित

मन्त्रपुपासनासंविधानम् मुञ्च मय सा यत्कला तद्दर्शनार्थमाह ॥ तद्वाक्यमित्यादि ॥ तथाप्य मुञ्चितस्तत्राद्य कथमप्युक्तय समञ्जसा, तपोयुक्त  
 मुपासकत्वात्सी उत्तरुत्तरात्मिस्यर्ष ॥ माप्यनवा खय इतन्मिदुतात्वा त्यरक्षति माहर्नति यादिन मुपतलकत्वा देव मूसगुचयुक्त मितित्वाव  
 ह, अथसेसिय जाय पन्नूसामिय आउजिायपलिउजिाय जाय सञ्जेण एसमठि णीचंयण आयनाववह्वियाए ।  
 अह्मिण गोयमा ! एवमाहस्काभि नासेमि पन्तवेमि परुवेमि, पुह्वतवेण देया देयलोएसु उववज्जाति,  
 पुह्वसंजमेण देया देवलोएसु उववज्जाति, कामियाए देवा देयलोएसु उववज्जाति, सागियाए देया देयलो  
 एसु उववज्जाति, पुह्वतवेण पुह्वसंजमेण कामियाए सागियाए अज्जो ! देया देयलोएसु उववज्जाति । सञ्जेण

शाकना यत्र शाण् समस्य पन्नासयत । पाठस्त्रिय पलिठस्त्रिय । उपयोगार्थ समस्तपर्व उपवीपयत । आसस्येष्टएसमहे । यावत् साव् एषय । योचिदयथाय  
 भावयत्तस्यवाए । नही निवै य वाक्कासकारे, पात्मभाष मन्त्रयताये यत्रगुहिरिभावे एषयवज्जा । अह्मिण गोयमा । इ पदि हेमोतम । एवमाहस्काभि ।  
 एम अह्म । मासाभि पक्वरेमि परुवेमि । भासह् विपयेवरी अह्मह् मरुपह् । पुह्वतवेण देवा देयलाए सुठववज्जाति । पूरतये एतसे सरामसयमे देव  
 ना देवलाहनेविदे जयसे । पन्तवेणमेव देवादेवलापसुठववज्जाति । पूर्वसंयमे सरामसयमे देवलाहनेविदे देवपवे जयसे । अथियाए देवादेवलाए सुठववज्जाति । मनुज इ आदिहमेयगे देवलोहनेविदे देवपवे जयसे । पुह्वत  
 वेष्यसयसमेव । पूरतये पर्वसयमे । अथियाए यमियाए । असाय रक्षाहे तेवेवरी इन्द्रमनुजादि संसेवरी । अज्जो देवादेयलोएसुठववज्जाति । अज्जो यारी ।  
 एतसेवाहे देवता देवलाहनेविदे जयसे । सञ्जेण एसमठि । सावह् एषय । आचिदयथासमावकयत्तस्यवाएतवाक्येवर्ततेसमस्यर्षमाह्वयवा यज्जुयासमाह्वय । न  
 ही निवै एषय पात्मकथनायो ज्जो परमादीयो ज्जोहे यनन्ते सावुसेवा करीकरी इ हिदे ते सेवामोषय देवाह्वानीकाले अहीहे—तत्रादुप यो  
 य एभावरत अवाक्कासकारे, हेमसयव् । अमस्य तपयुज पाते यत्रवायो निहस्यववा यनोराने अही अजीयत सेवपते सेवतामि देवा अरयामि । हिउअवा

वाग्यद्वीसुमुद्यये ॥ अथवा ; अमरः सायु मर्दनाः प्रायश्च ॥ सदाव्यसति ॥ सिद्धाभ्यासव्यस्यसत ॥ नाव्यसति ॥ भुतज्ञानफलं अथवादिभुतज्ञानं  
 फलं अथवा दि भुतज्ञान अवाप्यते ॥ विद्याव्यसति ॥ विधिष्ठानामफलं भुतज्ञानां हि इयोपादेयविवेककारिविज्ञानं भुत्सदात एव ॥ पद्व्यसनाव्य  
 सति ॥ यिनिवृत्तिव्यस विधिष्ठानोहि पाप म्प्रात्याख्याति ॥ अथमफलंति ॥ क्तप्रत्याख्यामस्यहि संयमो प्रवत्येव ॥ अथव्यसति ॥ अनाभयफ  
 लः अथमथान् चित्त मवं अर्थं नो पाहते ॥ अथव्यसति ॥ अनाभयोहि सयुक्तमत्या सपस्यतीति ॥ बोदाव्यसति ॥ व्ययदानं क्तमनिव्यस्यसत सपसा  
 एसमठे णोच्येवण व्ययनाथयस्तस्युपायु । तहाक्येवण नते । समणवा पञ्जुवासभाणस्स किफला पञ्जुयासणा ?  
 गायमा ! अथणफला , सेण नते ! अथणे किफले ? णाणफले । सेणनते ! नाणे किफले ? यिस्याणफले ।  
 सेण नते ! यिस्याणकिफले ? पञ्चस्काणफले , सेणनते ! पञ्चस्काणे किंफले ? सजमफले । सेणनते ! सजमे  
 किफले ? व्युणस्यह्यफले , पूव व्युणस्यह्यु तवफले , तवे बोदाणफले , बोदाणे व्युकिरियाफले , सेणनते !

पञ्चदासथापयन्ता । स्यु फलवृद्धिवाप्नो, एतसै सापुसेवा बोधा स्यु फलं कथा । योवभासव्यस्यसा । हे गौतम ! चिदात साभयवातायु । सेवन्तिअवहि  
 किफले चापयसे । ते च वाक्याव्यसति, हेमथयन् । चिदात साभयानो स्यु फलं कथा ? साभयवादी युतज्ञानपरिभवानो फल । सेवन्तिचापकिंफले । ते च  
 वाक्याव्यसरे हेमथयन् । ज्ञान पापानो स्यु फलकथा । विद्याव्यसते । ज्ञानधी हेम गोप उपदेशे विवेककारी विज्ञानफलवु । सेवन्तिविद्याव्यसि  
 ते च वाक्याव्यसति, हेमथयन् । विज्ञानधी स्यु फलं यामिसे । पयस्यव्यसते । विगहज्ञानपापसा पापनी पयस्यव्यसते ते फलवु । सेवन्तिपयस्यव्यसि  
 पसे अथमफले । ते च वाक्याव्यसति, हेमथयन् । पयस्यव्यसना स्यु फलं कथा ? पयस्यव्यसिधोर्था संयमं यामिसे तेफलवुपे । सेवन्तिसंयमोकिफले । ते चंवा  
 क्याव्यसति, हेमथयन् । अथमना स्यु फलकथा ? अथव्यसते । संयमवत नवाअम उपयैतही ते अनाथयफल । एवपयस्यव्यसतवफले । एत अनाथयमो त  
 पफलं सयुक्तमथवी तपक्यावयवु । तवेवारी पुरातनकर्म निवरेहेहे इत्यथ । वायाव्यसिचिरियाफले । पुरातन निवराधी चिदाव्यसित

वि सुरात्म कर्म निष्करयति ॥ अकिरियाकसेति ॥ यीयनिरोषकाल कम्मनिष्करातीहि योनिनिरोष कुरुते ॥ सिद्धिपञ्चवसाहकसेति ॥ सिद्धिस  
 कस पर्यवसानफलं सङ्कलनसपर्यन्तवर्तिफलं यस्या सा तथा ॥ गार्हति ॥ सङ्कुरगाया एतन्मन्त्रं वैत द्विपमाश्वरपाद वेत्यादि अन्तःशास्त्रमसिद्धु  
 मिति तथा रूपस्यैव ग्रामवादेः पर्युपासना यथोक्तफला भवति भा तथारूपस्या सम्प्रभमापित्वा दित्य सम्प्रभमापितानेव कंपाच्च दृष्टयथाह ॥  
 कथञ्चिद्विद्यसादि ३ पञ्चमस्वप्नहेति ॥ कथंसा तस्योपरि पवतइत्यर्थः ॥ इत्यस्ति ॥ इदः ॥ अस्ति ३ कथाजिनाम शक्तिषु इत्यस्ति ' भद्रदयते '

श्युकिरिया किफला ? सिद्धिपञ्चवसाणफला पञ्चसा गीयमा ॥ गार्हा ॥ सवर्णेणापीयविक्षाणे पञ्चुरकाण्येय  
 सजने । श्युणसङ्गुतवच्येव बोधाणेभ्युकिरियासिद्धी ॥ १ ॥ श्युणउच्छ्रियाण जते ! एवमाहस्काते नासति प  
 ण्यति परुवति पुषसङ्गु रायगोहस्स नयरस्स वाहिया येनारस्स पञ्चयस्स श्युहे एत्थण मह एगोहरु श्युप्ये  
 पञ्चत्ते , श्युणोगाइजोयणाइ श्युयामाविस्कनेण नाणादुमस्सकनमकिउहेसे सत्तिसरीए जाव पाणिक्खे , तत्थण  
 यहवे उदारा यलाहिया ससेयति समुच्छ्रियाति वासाति सत्तितरिसेवियण सयासमिउ उस्सिणे श्याउकाए

पुर नामक ये । सेवभनेष्विद्विराकिफला । ते वेभगवन् । यान्तिरूपवती पञ्चकुर ? सिद्धिपञ्चवसाहकसापञ्चसा । सिद्धयपच समस्तफलमाहि हे  
 ला काला फल एतले समस्तकर्मव्यपुप सोचकमपामे । योवमा गाहा । हेनोतस । एवोच भवतो सपइयाथा कथंही—सवनेवाच्ययिधियावे पञ्चयस्य  
 वेपयमे पञ्चवसवनेवेव बोधाष्विद्विरासिद्धी ॥ १ ॥ सेवावो नववापस १ यववतो यानफल २ ज्ञानयी विज्ञानवियेपफल ३ निजानवती विरतिरूप  
 फल ४ पञ्चवसाचयी परमपफल ५ सवमयी यनाचरफल ६ यनाचरवती तपफल ७ तपयी अवरानफल ८ अवरानवती अक्षिरियासिद्धिफल । १ तज्जा  
 रूप यानुतोसेवावी ब्रह्माहकलकुवे, पवि सवपाएपी सेवावी जवी विपरीतमापनावती तेमाटे विपरीतमापी केरुपक हेवाउहे—पञ्चवच्छिन्नावाचमते एव  
 माइसवति भासेति पञ्चवेति पर्युतेति । पञ्चतीर्षी चं वाज्जाहकति, वेभगवन् । इत्यन्तै सानाच्यपवावी कथं वियेपयवावी कथं वेतुवरो कथं येव



षड्वन्तविक्रमस्था षाड्वन्तविक्रमस्तथैव प्रायो व्यथोपसम्भाषा वनस्तथं ॥ अदूरस्थामसीति ॥ मातितुरे भाष्यतिसमीपइत्यथः ॥ इत्यत्राति ॥ प्रजापकेनो  
 पदइयमाने ॥ महातयोवतीरप्यनवेनामंपासवकोति ॥ आतापइव आताप उभ्रता महायाथा आतापयेति महातपो महातपस्य व्यपसीर् सीरसमीये प्र  
 णयरस्स याहिया दीनारपक्ष्यपस्स अदूरस्थामते पूत्यण महातवोवतीरप्यन्नवे नाम पासवणे पस्यन्ते , पचधणु  
 सयाइ अ्यायामविक्रनेणं नाणादुमस्वन्नमन्नउइसें सस्सिरीए पासदीए दरिसणिज्जे अ्थिन्निक्रवे पन्निक्रवे , त  
 त्यण यइवे उस्सिणजोणिया जीयाय पीगगलाय उदगासाए यक्कमाति पिउक्कमाति व्ययति उवचयाति , सच्चति  
 रिसिदियण सयासामिय उस्सिणेउस्सिणे अ्थाउअ्थाए अ्थिन्निससयइ , एस्सण गोयमा ! महातवोवतीरप्यन्नवे पा

भाषुइ, रस प्रजापन कर्इ, रस प्रदूइ, एवंचसुतरायमिहसुखपरस्वपरिचया । रस निये राखयइजामा नमरन्तेवाहिर । वेभारस्वपचयसु । वेभार  
 जामा परंतसे । अदूरस्थामते एतन्नमरायवागतोरथामवेनामपासवकोपचयत्त । अतितूरनदी अतितूरज्जां परिमदी इदी च वाक्कासकारे, महातप सत्वंत उ  
 प्यकान्नन्न वेवसिपेपवे तेइया तीरमे समीये व्यपगणे ते महातपापतीरप्रमन्नमसे प्रयावन्न भन्नवोइ ते भन्नवो । पचधणुइसयाइ पायामविक्रवभेच ।  
 माइये अदुप पायाम आंनपवे पिइइपचवेइ । आशादुमन्नइमन्नइपचइसे । अनेन्नपाकारनाठय वनसुइयाभित प्रदेगवे । अस्सिरीए पासदीये दरसविये ।  
 यामावतवे प्रसवविसवाराइ इकावायाय । अमिइने परिइने नत्तवन्नववे । अतिसमोहर प्रतिकपवे देवता इति अ पासीये तिदी च वाक्कासकारे,  
 इतिवकाशिया जीवाद्योन्मन्नायउरयलाएववसीति । उच्यपानिया जीव अणुन पुइव उरन्नपवे पादीरूये व्यपवेइ । पिउक्कमाति व्ययति उवचयति । अ  
 ये रिचयवे वरवे पुइ पासेइ । वच्चतिरिसिदियवन्नसयासामियं । ते मदीने के पासी अथिकोवाय ते पासी सयावदीव समित । अिसवेपाठयाएअभिदि  
 चदीति एसवं ओयमा । आतापकावे अणुक्काय भन्नेइ । एव चवाक्कासकारे, वेदीतस । अथा यन्नमो निमम वहीइ—महातवोवतीरप्यन्नवेपासवकोपसवं  
 योयसा । ए अणुपुइवन्न अचित्त आपचन्न महातपोपीरप्रमन्न प्रयावन्न अदी के तथा एदीव अणुवन्तीन्न अथिव अाशिय एववादि, वेदीतस । महातप



एव कल्याणं यस्याः श्री महातपोपतीरप्रभवः प्रभवति परतीति प्रभवः प्रसन्नमहत्पथः ॥ अङ्कमति ॥ कल्याण्ये ॥ विठ्ठमसि ॥ एत  
 रत्न कल्याणमात्रं व्यक्तं कल्याणतत्त्वति उक्तमेवार्थं निगमयन्नाह ॥ एतच्छक्तित्यादि ॥ एषो मन्तरोक्तस्य एवमा अन्त्युपि कपरिष्कल्पिता प्यस्यञ्चो  
 महातपोपतीरप्रभवः प्रभवत्तु उच्यते तथा एव योय मन्तरोक्तः ॥ उचिच्छक्तिरित्यादि ॥ स महातपोपतीरप्रभवस्य प्रभवत्तस्या र्थो उचिच्छक्ति  
 व्यायः प्रभवः ॥ इति द्वितीयं प्रति पञ्चमं उच्यते ॥ ५ ॥ पञ्चमोद्वैक्यस्तीति अन्त्युपि कर्मिष्यात्तापिष उक्ताः अथ  
 एव प्रायास्वरूपं मुख्यं तत्र सूत्रं ॥ सुतुष्टं तर्कमासीति ॥ उच्यते उच्यते ॥ उच्यते उच्यते ॥ उच्यते उच्यते ॥ उच्यते उच्यते ॥ उच्यते उच्यते ॥  
 कर्ममर्दितुं इहा यथास्तु, एतच्छक्तिरित्यादि ॥ अन्त्युपि कर्मिष्यात्तापिष उक्ताः अथ  
 नाप्यतस्ति प्राया तद्वाप्यतया परिक्रामितिसिद्धं तिस्र्यन्तर्मात्रं यथैतदिति इत्यर्थः, एष पदार्थो, उच्यते पुन र्मात्रायाः, अथ एतन्नस्य भव मये  
 उच्यते पञ्चमपदार्थोनाप्यति, एव मनुनासूत्रक्रमेणमायापदं प्रजापताया मेकादशा नादिगव्य मिहस्याने, इहव प्रायाद्रूप्याप्रकाशनायोः सत्यादिभिष

सद्यणे, एसुण गोयमा । महातपोपतीरप्यन्नस्य पासवणास्स स्युठे पयसि, सेवन्तेजतं ! ति, नगाव गो  
 यमे समणनगाव महावीर वदइ नमसइ ॥ विहंयसणु पचमो उदुसो सस्यत्तो ॥ ५ ॥ संपुण

पादोत्पन्नमवस्थायासुवदुपयत्ते । महातपोपतीरप्रभवः प्रभवत्तु अन्त्युपि कर्मिष्यात्तापिष उक्ताः अथ  
 गद्यमायमे । भगवत मात्म । समस्य भगव महावीर वदइ नमसइ । यमस्य भगवत योमहावीरस्यासौ प्रते वादि नमस्कारकरै । पितियसयस्यपचमयो ।  
 ए योत्रा यतन्ना पोचमात्रेया पूरावया ॥ ५ ॥ पादिसि उच्यते मिष्यामात्रोक्ता, तेसाटि भापाकरूप अहंहे—सेवन्तेजते मयानो  
 तिष्यादिति भासा भासापद भाविष्यति नितियसपयस्युठो । ते नित्य सुभगवन् । इमन्नान् नूभोयए भापापचवध पौत्रभूत इत्यथ, अथयै अथवात्सी  
 भापा भापयि ते भापा अदीये इवेप्रकारे सृष्टादुभमे पचमयाना इत्यात्मा भापापदकरवा, इहाभापा द्रव्य अथ कास भाव इत्यादिक भेदे करी अन्ते

इन्द्राविविन्दुत्वाद्वावहारिक्यस्यैव प्रायो व्ययीपक्षभावात् वयन्तव्यं ॥ अदूरसामर्थेति ॥ मातिवृत्ते माप्यतिशयीपक्षस्य ॥ प्रज्ञापकेभ्यो  
 पक्षप्रथमाने ॥ महातयोवतीरप्यत्रयेनामपासवर्धेति ॥ आतपश्च आतप सफलता महासाक्षात् वातपद्येति महातपो महातपस्य उच्यतीर तीरसमीपे प्र  
 णपरस्स धाहिपा धेनारपक्ष्यस्स अदूरसामते प्ल्यण महातयोवतीरप्यत्रये नाम पासवर्णे पयत्ते, पचघणु  
 सयाङ्क्षु श्यायामधिकस्केनेण नाणादुमस्त्रकमन्त्रिउद्देशे सस्सरीप पासदीपु दारिसणिज्जे अन्निक्रये पानिक्रये, त  
 त्यण धर्षये उंसिणजोणिया कीधाय पोगालाय उदगसाणु वक्कमति विउक्कमति चयति उचचयति, तद्धति  
 रिशिवियण सयासामिय उंसिणेउंसिणे अ्याउअ्याणु अ्यनिनिस्सवद्द, पूसण गोयमा ! महातयोवतीरप्यत्रये पा

भाष्ये इम प्रज्ञापन अदूर इम प्रदूर इ । एवकण्टारयमिद्वयस्यवरस्यवर्धिया । इम नित्ये रात्र्यष्टवनामा नमरनेवाहिर । वेभारकषापव्ययम् । वेभार  
 नामा पर्यन्ते । अदूरसामते एवमवहारवतीरप्यमथेनामपासवर्धेपक्षत । अतिदूरनदी अतिठक्का पक्विकनदी इवां च वाक्यासकारे, महातप अत्यन्त उ  
 च्चकान्तव्येवधियेपक्षे तेवना तीरते समीपे अयनाज्जे ते महातपापतीरपमवनामे प्रयवव अहत्वाहे ते अहत्वा । पचघणुइसवाइ वायामविययुमेव ।  
 प्राचये अत्रय वायाम अत्रयपये पिपुसपयये । वावादुमस्त्रकमन्त्रिउददेशे । अनेकप्रकारमाहुच वनव्यवस्थाभित मदेमहे । सक्खिरीय पासदीये दूरसक्खि  
 यामावतवै प्रसक्खितवाव देवकानोच । अमिक्खे पक्खिक्खे तत्त्ववचवरे । अतिसमोदर प्रतिरूपये देवतां यमि न पातीये तिवां च वाक्यासकारे ।  
 उंसिणजोणिवा कीधायपोवत्वावत्तदनयाएववर्धन्ति । उच्यपानिया कीर अतुत पुवस वत्त्वपये पायीरुये अयवेवे । विउक्कमति अयति उचचयति । अ  
 ये विचयवेवे अवेवे पुटि पानेहे । यअतिरिस्सिविचयवयासमिय । ते मरीने ये पांथी अक्खिजोहाय ते पांथी सदावदीव अमित । अक्खिपाठवाएअमिक्खि  
 अयति एसव अोवमा । वापापक्काये अयुक्काय अरेवे । एव अवाक्कासंकारे, वेदीतस । अया अक्कमो निमस अक्खिहे—महातयोवतीरप्यमथेपासवर्धेपक्ष  
 योवमा । ए पचघणुइव अक्खित वापयव महातपोपतीरपमव प्रयवव अक्खी ये तया एवीव अन्तवत्तरेव अक्खिच अक्खिच एवमादि वेदीतस । महात

एव उत्याहृतं यस्याः श्रीं महान्तपोपतीरप्रभवः प्रभवति चरतीति प्रभवः प्रसङ्गमत्ययः ॥ अङ्कमति ॥ उत्पद्यन्ते ॥ विठङ्कमति ॥ विजयन्ति एव  
 दयं व्यत्ययमाह व्यत्यय उत्पद्यन्तव्येति उक्तमेवार्थं निगमयन्माह ॥ एतच्चमित्यादि ॥ एषो मन्तरोक्तरूप एषया कल्पयुक्तिपरिक्लिप्तात्प्रासङ्ग्यो  
 महान्तपोपतीरप्रभवः प्रभवत्कल्प्यते तथा एष योय मनन्तरोक्तः ॥ अस्मिन्नाहिएहत्यादि ॥ अ महान्तपोपतीरप्रभवस्य प्रभवत्कस्या र्थो ऽत्रिधाना  
 न्ययः प्रभवः ॥ इति द्वितीयं शते पञ्चमं श्लोकः समाप्तः ॥ ५ ॥ पञ्चमोद्देशकस्याभवे कल्पयुक्तिमिथ्यानायिच्च उक्त्वाः अप  
 यद्युक्त्वात्कल्पयुक्त्यत एव सूत्रं ॥ 'सुनूक्तमेतन्मन्त्रासीति ॥ शृङ्गारित्रीनासति ॥ सेवार्थे ऽप्यशब्दार्थं सच वाक्योपभासे' नूनं सुपमानावधारयते  
 कर्मप्रदित्तु इहा वयारत्वं नदन्तवति पुर्वानन्त्रत्वे मन्त्रे अत्रयुक्त्यति एष अत्रयार्थे अत्रयम्यते अन्त्रे 'त्येव चारत्वी अत्रयोपधीकपूर्वतत्पर्यं  
 नाप्यतइति नाया तद्योग्यतया परिष्कारितिसिद्धयतिनियन्मान्द्रव्यव्यतिरिति इदं, एष पदार्थो ऽयं तुन वीक्यायः अथ प्रदन्तएव मह मन्त्रे  
 ऽप्यत्रयमन्त्रारधीनायेति, एव मनुनासूत्रकमेवमापायत्, प्रजायमाया मेकादत्र जसितव्य निरस्त्याते, इह च नापाद्रव्यवैश्रकालनाथे सत्यादिमित्ये

सवर्णं, पुंसण गोयमा ! महान्तपोपतीरप्यन्वस्य पासवणस्स स्युठि पसाहे, सेवन्तेनतं ! त्ति, न्नाय गो  
 यमे समणन्नाय महानीर वदइ नमसइ ॥ विहंयसए पचमो उद्देशो समन्तो ॥ ५ ॥ 'सैणुण'

पावनात्पञ्चमश्लोकाद्यत्रयपद्युक्त्येति । महान्तपोपतीरप्रभव प्रत्यय अत्रयाना अत्रकाला । सेवन्ते र्त्ति । तर्जति हेमगवन् । तुम्ह कश्चु ते सत्यात् । अ  
 गवर्णयमे । भगवन् गान्तम । समस्य भगव महानीर वदइ इमपर । यमस्य भगवत योमहानीरकामी प्रते षोदि नमस्तकारकरै । विविचययस्यपचमयो ।  
 ए योवा गतकना योवमाद्येया पूरावया । ५ पाद्विचे उद्देशे मिथ्यामाद्योक्त्या, तेमाटे भाषास्वरूप कश्चिच्च—सेवन्ते नन्नामी  
 तिष्वाहृतिर्नो भासा भासापद् भाविचक्य विदितययस्यस्युक्तो । ते नित्य हेमगवन् । इमहमान्द्रव्योपभासे ए भाषापववाध वीक्यमत् इत्यथ, अत्रयमे अत्रयारत्वी  
 भाषा भाषयिणे ते भाषाव्यधीये इत्येवमिति सूत्रादुक्तमे पप्रववाजा इत्यात्मा भाषापद्कङ्कत्वा, इहाभाषा द्रव्य चैव कास भाव इत्यादिक सेदं करो अन्ते



अथरस्य शुभानिष्ठा विनाशेन क्षीयत्वस्यस्यं यत्रतता मन्त्रे अठइतरे क्षीयत्वस्यस्यस्यं सत्यत्वं भवत्ववासीत्वं देवात्वं सतामयत्वंकोशीष्टं पायत्तिरेव न  
 यत्रयास्यस्यस्यस्यं भवतीति मन्त्राय इत्यादि तद्गतमेवा निशेययिष्यप विक्षेपेव दक्षायति ॥ उच्यते ॥ अथप्राता न  
 धनयतिस्वस्थानामास्यामिमुखं तेन उच्यते माभित्येत्यथः सोक्तस्या सङ्केयत्वे प्रागे वक्तव्ये प्रवक्तव्यमित्येति ॥ एव सद्य माभियुति ॥ एव मु  
 क्षन्त्यायता न्यदपि प्रकृतत्वं तथैव—समुत्पाद्यत्वं क्षीयस्व अथयेवइत्यामे मारकात्मिकादिसमुद्घातवर्तिनी प्रवक्तव्यतयो सोक्तस्या सङ्केयत्वेप्रागे व  
 स्ते तथा ॥ अठइत्वं क्षीयस्व अथयत्वं भागे, स्वस्थानस्यो क्तवक्तव्यत्वात्वासातिरेककोटीसप्तकस्तथास्य सोक्तासङ्केयत्वात्वासातिरेकस्य अथ  
 रजुभाराया, एव तेषामेव दाक्षिणात्याना सीदीत्याना स्वनागकुमारारादिप्रवक्तव्यतीना यथो जित्येन व्यसाराका ज्योतिष्काणा दीमानिकात्वात् स्वा  
 नानि वाच्यानि क्षिप्युर् पाद्यदित्याह याद्यत्सिद्धुर्नरित्थनासिद्धुस्थानप्रतिपादनपर प्रकरत्वं सादीय ॥ अइत्वं प्रते । सिद्धुत्वं ठावा पक्षसा इत्या  
 दि इत्वं द्यस्यामाधिकार पत्सिद्धुर्नरित्थनासिद्धुत्वात् सात् स्थानाधिकारवत्सा दित्यवसय तथैव मपरमपि क्षीयात्प्रिणमप्रसिद्ध याव्य सथापा—क

यं सद्यं ज्ञानिपद्य, जाय सिद्धुर्नरित्थना सभ्रभा । कथाणपइठाण दाहसुस्रुत्तमेवसठाण ॥ जीवात्प्रिणमे जा

मये एवशाप यत्रातर सवस्य यावन पिबहे इवा भवनपती देवताना सातकाही नृपुतरथात्वं भवनत्वात्, यद्यो विरयेप अइत्वं—एववस्थाधीव भवन  
 यती अथत्वा थायो वाकने पसंख्यातमेभागे अथनाहे एम अन्नभावेकरी सवबीज् यपि अइत्वं, ते एम समुत्पाद्य सोसत्वं पसंखेज्जइभागे, मारथा  
 तिक्तसमुद्घात वर्त्ती भवनपतीवाकने पसंख्यातमेभागे वर्त्तते तथा समुद्घातवर्त्तसोसत्वं पसंखेज्जइभागे, अन्नान सातकोही नृपुतरथात्वं भवन कथा ते वा  
 कने यमव्यातमेभागे वर्त्तते एम यसुरजुमारता एम तेइनाइत्वं र्पिबन्ना अथरता एम नागकुमारारादिक भवनपतीना तथा अथरता तथा कथातिथी  
 ना तथा वैमानिकमा स्थानत्वं अइत्वा । जाद्यत्सिद्धुर्नरित्थनासथासा कथात्वं पटइत्वं । यावत् सिद्धिमाइत्थमि, सिद्धिम्बान प्रतिपाद्यक मन्त्ररथादीं कइयो,  
 ते एम किंवा इमयत्वं । सिद्धिमास्थानकथा इत्यादि, इवा देवस्थानाधिकारयथो सिद्धिमाइत्थकानाम ते स्थानत्वं ज्ञानया क्षीयात्प्रिणम सप्रागनी ए गावा

देयकः यमाराप्यते तस्यचैव सूत्र ३ कश्चमित्यादि ३ कश्चरति ॥ कति दया आत्मपेक्षये तिगम्य, कतिविधा देयाइति सूत्रय ॥ अथाटाप्यपयति ॥

यथा मत्प्रकारा यावृद्धी प्रजापत्याया द्वितीयेस्थानपदास्ते पदे देवामा यत्कथ्यता संति तथा प्रकारा नाथितथ्यति मवर ॥ भयपापयसासि ॥ ६

विदूषयते, तस्यच यत्न न सुभ्य गवगम्यते दयककथ्यताथैव ॥ इमीसे रयचप्यमाए पुढयीए असीवत्तत्त्वायथसयसदरसयाएक्ष्माय चवदि एग काय

नते ! मणामोति तंहारणीनासा , नासापद नाणियसु ॥ विद्वयसए लठीउदेसो समन्तो ॥ ६ ॥

कश्चिद्विहाणनते ! देवा पयसा ? गोयमा ! चउहिहा देवा पयासा तजहा—नवणयद्वेवाणमत्तर जोइसयेमा

पिया । कहिणनते ! नवणवासीण देवाण ठाणा पयसा ? गोयमा ! इमीसेरयणप्यनाए पुढयीए जहाटा

पपदे देवाण यसुस्यया सा नाणियसुा , नवर नवणा पयसा , उववाएण टायस्स सुसहेज्जाइनागे , ए

धवे पवविहरी विधातिवे ३ इति ए बीजा गतकना इडा उरुणो पूरोवसो ३ ६ ॥ भाया विधुदयी देवताहुये तेमाटे सातमा उइ

या देवता कश्चि—कश्चभतेदेवापयसा । केतसा हेममवन् । काति यपेयाये देवताकथा यथाए केतसेनेर् देवकथा इतिपय । गोयमा अचपिदादेवा

पयसा तजहा भयववर वाचमतर कारस येमाधिया । उगीतम । चारमेदे देयकथा ते कश्चि—अवमपती ६ वात्स्यंतर ७ व्यातिपी ३ वैमानिक ४ । क

विचमतेमववयासीच देवाए ठावा पयसा गावमा । विडा हेममवन् । अवमपती सूत्रमा आनक कथा इतिपय पुगीसम । इमीसेरयववभाएपुढयीए

अथाठावपदेदेवाइतस्ययासामाधियका अवरमवया पयसा उववाएवसायस असेउत्तरभागे एवयावभाधियार्थ । एवीज रत्नप्रभाताम पुविधीनेवि

ये इत्थादि अथा ठावपयेति यथा वेइवी पयवजाना बीजायान पदेनपिये देवतोमल्ललाइ, संति तेइवी कश्चनी अवर भववा पयसा ए पाठके ते

इनाएव मसीतरै न काधिये ते कथ्यन्ता इमहे पारत्नमभा पुविधीनेपिये एकसाए अयोसइमन् योजन एपर यवभाधिये उठे एकककसायाजन वयवीवि

रा ते नाडासंनियति कलायस्य मय मतिरिदमकार ॥ श्रीवाचिभमहस्यादि ॥ सुख विमानात्ता प्रमादवकप्रमाणं धादिप्रतिपादनायः ॥ इतिद्वितीय  
 इतिवचनमः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

य येमाणिउद्देशो ज्ञाणियधो ॥ विर्हयसपु सप्तमो उद्देशो सम्भत्तो ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

स्व स्युरिदस्व स्युरकुमाररथो सनासुहम्मा पसात्ता ? गोयमा ! जवुद्दीवेद्दीवे मदरस्व पशुयस्व दाहि  
 णेण तिरियमसखेऊस दीयसमुद् विर्हयइसा स्युरणवरदीवस्व वाहिरिसात वेइयतात स्युरणोदय समुद् वा  
 यातोस जोयणसहस्साइ रोगाहिता पुत्यण धमरस्व स्युरिदस्व स्युरररथो तिगोच्चिकुणेनाम उध्याय

इव सव विमानना प्रमाद वचनमा यथादिप्रतिपादक वैमानिक उद्देशो जाइया । विनिययपरसप्तमथा । एवीया यतकमा सातमा उद्देशो ट्यार  
 दो लिप्या । १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

सिद्धरस असरकुमाररजासभासुहसापसता । किञ्चा न पाश्यासकारे, जेभगवन् । यमरेड असरेद्रीो असरकुमार राजा यथिवतीहै असुरनिकाव  
 वने तेवना सभासुपमा कइो इतिप्रय वनर । गाथमा कइोवेदीवेमदरस्यपथ्यवसादाहिषेय । जेगोतम । अद्वीपनामा दीपनेविधै नेवनामा पवतने  
 इषिचनपासे । तिरियमसखेऊसदीवसमुद्दीवीतीवरता परबदीवसु । गोहा परसंख्याता दीप तथा समुद्रपते अतिप्रमीने सवीने परबदीपनी । भावि  
 भाया वेइयताथा । भावितनी वेदिक्वावी । परबदीवससु । परबदीवकमाना समुद्रनेविधै । भायाखोसआपससहसाइ उध्याहिसाए । यायाखोस स  
 वसयानन ययगाथोने उहवोने । एतव यमरस्य असुरिदस्य पसररथा । इवा नं पाश्यासकारे, यमरेद्रीना असरेद्रीना असुरकुमार राजानो । तेनिच्छि  
 वेयामउध्यापपथ्यवने । तेनिच्छिद्रीनामे तियथावे याइयाने किञ्चा यावीने वैकिञ्चयाररकरी कथो यावै ते कइो । ससरसएवनीसजापससएउहव

प्याहपरठान्, कल्पविमानानां माधारी धाव्यइत्यर्थः सर्वत्र सोहस्मीसाधेसुखं एते कल्पेसु विमाहपुत्रवी किं पद्विधा पञ्चता । गोपमा । प  
 षोपद्विपद्विधा पञ्चता इत्यादि आह-पञ्चवद्विपद्विधा सुरस्रवकाहोतिवोसुक्कल्पेसु । तिस्रुवातपद्विधा तदुनयसुपद्विधयतिसुय ॥ १ ॥ तस्य  
 परत्रवदिमया धानासतरपद्विधासर्वेति ॥ तथा ॥ आहोति ॥ विमानपुत्रियाः पिपहोवाच्यः सर्वत्र-सोहस्मीसाधेसुखं एते । कल्पसु विमाहपु  
 त्रवी केवद्वयं आहोत्रं पञ्चता ? गोपमा । सन्ता वीस गोपहसपाह इत्यादि ॥ आह-सन्तावीससपाह आहमकल्पसुपुत्रवियपाहस । एककहोत्रिसेसे  
 दुरुपपुत्रवकल्पे ॥ १ ॥ पौत्रेककेपु द्वाविधयति र्गजनामा यतानि, अनुसरेपु त्येकविधयतिरिति ॥ तद्वसनेवति ॥ कल्पविमानासुतय धाव्यं तथैय-  
 सोहस्मीसाधसुखं एते । कल्पेसु विमाहा केवद्वयं सप्तमेव पञ्चता ? गोपमा । पञ्चवीससपाह इत्यादि आह-पञ्चसठसुसुत्तं आहमकल्पेसुद्वीतिर  
 विमाहा । एककहोत्रिसेसे दुरुनेपुत्रेवकल्पे ॥ १ ॥ गोपेककेपु दशगोपनशातानि अनुसरेपुसु एकदशति ॥ सठासंति ॥ विमानसस्थान धाव्यं  
 तथैव-सोहस्मीसाधसुखं एते । कल्पेसु विमाहा किंसतिधा पञ्चता ? गोपमा । अथावसिया पविठा ते सटा तसा अत्रसा चे अथावसिया आदि

वकाशोमेव, कल्पविमानानां धाव्यारकहवा ते इम सोवम इयाननेविदै हेमभन । कल्पनेविदै विमानं पृथिवी संप्राधारत्वे हेगोतस । वनादधि प्रति  
 ष्ठावशी इत्यादि । आहोत्रकल्पेसठान् । विमानं पृथिवीनां पिच कल्पयो, ते इम हेमभन । सौधम इयान देवसोकोविदै विमानपृथिवी केतसे पाह  
 कल्पे कधी हेगोतस । सन्तावीससठ गोपन इत्यादि षषस कल्पया, सौधम इयान देवसावनेविदै विमानं सौतसा कल्पेकहवा, गोतस पञ्चसय गोपन  
 इत्यादि तथा सठासति विमानना सन्तान कल्पया ते इम सोवम इयानना विमानं संप्रयादरेवै गोतस चे प्यावसिजा पवित्रत्वे ते यथं अत्रस्य नाट  
 शास्त्रे चै प्यावसिजा आदिर ते नाता प्रकार संकानेवै । विदे कथा यथेना शेष देखावेवै-गोभाभिपयेकात्रेमाद्विपयत्रे वाभाविपयन्ना । काल विमा





वस्तोऽङ्गमनाय यथा गत्यो त्यसति स एतस्यासपर्वतवृत्ति ॥ गोपूजस्येत्यादि ॥ तत्र गोसुप्तौ सपञ्चसमुद्रमध्यं पूर्वस्या दिशि नागराज्यायासपवत स्त  
 स्यात्तादिमध्यासीत्यु विष्णुमप्रमाहसिद्ध—कमसाविष्णुमोसं दसधावीसाहजोयजसपाय १ । सप्तसपत्नीषीसं २ धारासिस्सपञ्चवतीसं ३ ॥ १ ॥ इदं यिधे  
 यमाह ॥ मवरसित्यादि ॥ तत्र इव मापस्य मूर्तेरसवावीस जापञ्चसपत्निस्यतत्र । मञ्जोषसाराश्चत यीसेतवसिस्सत्तायेयासं ॥ १ ॥ मूर्ते तित्थि औपय  
 सटस्साह दोत्थिय बलीसुत्तर औपञ्चसप द्विष्वित्तिसंमुखे परिस्येधेव मञ्जं एग जापञ्चसटस्स तित्थिय इगुयासं औपञ्चसप क्विचिचित्तिसंमुखे परिस्ये  
 पक्षेप पञ्चत्तं , सप्तसपत्निक्रीषीसे औपणसप उह उञ्चैषेण चक्षारितीसे औपणसप कोसच उञ्चैरेण गोपूज  
 स्स ध्यायासपक्षयस्स पमाणेण णेयसुं , नवर उवरिस्र पमाण मञ्जं नाणियसु , मुखे दसधावीसे औपण  
 सप यिस्सकनेण , मञ्जं चक्षारिश्चउञ्चिसे औपणसप विस्सकनेण , उवारिसत्ततेवीसे औपणसप यिस्सकनेण , मू  
 ले तित्थिजोयणसहस्साह , दोत्थियवहीसुत्तरे औपणसप क्विचिचित्तिसंमुखे परिस्येधेण , मञ्जं एग औपणस

वत्तं । धतरसै इक्ष्णोसयाजन्त १०२१ जथा अथपञ्चै । धत्तारितोसेजापञ्चसपत्नीसवत्तयेहय गापूजयायाशासपाम्यक्षपमांश्चैवत्तय ॥ धारिसै तीस  
 याजन्त इह एतौ एज्ज्जास धरतीमाहे अहा सनञ्चसमदनेविधे पूजविधि गायराजना याथासपवत तीहना प्रमापसरीषो औपया तेहजो प्रमाप यादि  
 एज्जसहस वापोसयाजन्त मध्ये सातसै षोषीस याजन्त अपर चारसै चतवीस योजन्त ते इहा पञ्च चान्वीसो । चवरसवरेणपमापमध्यं भाविष्यथ । एतत्तो  
 विधीय गोपमपर्वतनेविधे के मात ऊपरक्याहते ते मात गतिश्चिह्न उ पवतनविधे मध्यनागे कांजवा एहीज देखहिहै—मूर्तेदसधावीसेजापञ्चसपत्निसंभे ।  
 मूर्ते एज्जसहस वापोस याजन्त विष्टारहै १ २२ । मध्येवत्तारिचवठवोसेजापञ्चसपत्निसंभे । मध्यभासे चारसै चतवीस याजन्त विष्टारहै ४२४ । उवदि  
 सपत्नीसेजोपञ्चसपत्निसंभे । ऊपरि सातसै षोषीस ०२२ योजन्त विष्टारहै ३ विदे परदि चैवै—मूर्तेतित्थिजापञ्चसहसाह । मूर्ते तीनचहस्य जाज  
 न । द्वाविष्यहसोसुत्तरेजापञ्चसपत्नीस याजन्त । द्विष्वित्तिसंमुखेपरिस्येधेव मध्येएयंजोपञ्चसहस्य तित्थियदधयाहजापञ्चसपत्नीस । कांरज विधेजो



पञ्चसुखाय विस्वमेवं सध्वरयज्ञमर्हति सिंध्यगकूठवधिरितलपरिस्वीवसमापरिपन्नेव च सीसुष पठमपरवेद्याय इमेपास्तये पश्यायासे पशसे यस्य  
 व्यासो वसंक्षविकारः ध्वरामपातेमाहत्यादि ॥ मेमसि ॥ स्वानामा मूसपादा मयर यमयकवयक सत्यय—सुष यकसुहे देसुपाह देो ज्योपथाह चक  
 यान्नितस्वमत्र पठमद्वरवेद्यापरिस्वीवसम परिस्ववेव क्रिये क्रिश्वाजासे इत्यादि ॥ यदुसमरमन्त्रिजासि ॥ अत्यन्तसमा रमणीयतेत्यथ ॥ यस  
 रसि ॥ यस्य सस्य धायाः सथाय—से अहामामए क्षासिगुणस्वरहेद्या क्षासिपुण्णर मुरबसुख सध्वरसमदत्ययः मुद्गापुण्णरहेद्या सरतलहेद्या  
 करतलेद्या क्षापसमकसेद्या अदसंक्रसेहेत्येति ॥ पासायो ज्यातसकरय धासरकरय प्रथामत्सा प्रसादायसकः ॥ पासाय  
 स्तन्निगयसध्वरसमता सपरिरिकसे, पठमद्वरवेद्यापु वणस्त्रस्सयवयातं, तस्सण तिगिच्छिक्कूठस्स उप्पाय  
 पध्वयस्स जपि यज्ञसमरमणिज्जे नूमिनागो पयसि, वन्तं, तस्सण यज्ञसमरमणिज्जस्स यज्ञमकदेसनापु  
 प्लयण मह पूगे पासाययानिसुपु पयसि, स्युहाहज्जाह ज्योपणसयाह उहु उसुत्तेण, पणवीस ज्योपणसयाह वि

यनि वनखेडनी बबब अरवा, तिजां पध्वरवेद्या पाह यामन अचीपासै यनुय निष्कमेसवरसमयहेते वेद्या नातिगिच्छिक्कूट पवतना छपरसा वसो नेदने प  
 रिशिनोपरैरीठी रगोहे, ते पध्वरवेद्या पध्वीहे सेसपठमद्वरवेद्याए इमेरयाक्येवयायासे पयसि । बध्वकथास । वसंक्ष विकार । धरामपा नेमा  
 इत्यादि नेमा क्षामाजा मूनपाया यनसुह पबब ते वनसुह देये अथा द्योय बाधन बबवास विकसमे, पध्वरवेद्या वीठीरगोहे इत्यादि । तस्य अतिगिच्छिक्कूट  
 सध्वरपापपवसय अथि यदुसमरमन्त्रिज्जे भूमिमानेपयसेवययो । तेवने तिगिच्छिक्कूट परंतने छपर बध्व अकान्त यरीयो रमणीक मनाध्वरभूमिगतस अग्नो  
 तेवनी बबब इम अरवा, सेवजानामए यान्तिम पुण्णरहेद्या मुरबवास विगोय तेवना मुख यरीयो यम इत्यर्थ, इत्यादि बबब अरवा । तस्य बध्वसमरमन्त्रि  
 ज्जयभूमिमासक्य बधुसमद्वेधभाए । तेवने अथाकान्तकारि, यदुसम रमणीक भूमिमानेविदीयन् मन्त्रयथाभासनेविदी एतसे शिवासे इत्यर्थ । एतन्मन्त्रेयनापा  
 सायविधियपयसि । इहा अ थाकान्तकार, मोटा एव पाथादावतवक मासादमसि यथावयवाको मुकुटयरीयो पाथाहे । यद्द्वारक्यादयोपबबबाह

लक्ष्मीं चतुर्भुजां प्रमाद्यं श्रीपञ्चदशमिनिष्कविमानमाकारमासादसमादिशुभतममाहस्यता इ पीतव्या । तथाहि-श्रीपञ्चदशमिनिष्कानां विमानमाकारो  
 यात्रमाणा श्रीविष्णुता शुभलक्ष्मीं एतस्यास्तु सार्धं पातं तथा श्रीपञ्चदशमिनिष्कानां मूलमासादः पञ्चयोत्रमाणां सतानि तदभ्ये चत्वारः सत्यदिवार  
 नृताः सार्धं द्वे कृते प्रस्येकत्र तेषां चतुर्णां मध्यमे परिवारनृता सत्वारः सपादं कृतं एव मन्ये तत्परिवारनृताः सार्धं द्विपद्यि रत्र मन्थे सपादं  
 कविज्ञानं इहानु मूलमासादः सार्धं द्वे योजनस्यते एव मर्दुर्द्वीणा सादपर्ये पावदभिसाः पञ्चदशयोत्रतानि पञ्चत्र योजनस्या टासाः, एतदेव वा  
 चनाकारे वक्ष-जगति परिव्यापींशं पासापवक्रिचनार्थं चतुर्द्वीणाशतिः । एतेपात्र मासादाना जतसवपि परिव्याटियु श्रीविष्णुता ल्येकचत्वारिंशद

**पञ्चास जीपणसहस्साह पंचपससाणउप जीपणसपु किञ्चित्तिसेसुणे परिसकेवण , सहृण्यमाण वैमाणियस्स**

अथसां वट्टइइतेव । ते जारवा पट्ठाईसु माज्जन जवा ज्ञ चपवेह्ये । एतपञ्चवीसजापचसए १०४ विच्छ भेवं । एकसा पञ्चात्तर योजन विच्छथापवे १०५ ।  
 उदारिरेवसासजापचसइसांर पात्रामरिचसुभिवं । अरणा पीठ वंचसरीया १६ • सइसु योजन शीघपवे पिण्डुसपवेह्ये । पञ्चासजीपचसइसांर  
 पचससतावट्टकापचसए । पंचास सइसुजाज्जन पीचरी सताचने माज्जन । किञ्चित्तिसेसुपेरिससुवेवं । ज्ञाएक विपये क्व चो परिये ज्ञाचरो । सव्यपमा  
 वं । एतप वे ते राजपानीनेविपै प्राकाराएक प्रासादइर समारिइकसुह्ये, ते सवंगो उद्यादिक प्रमाच ते शीघर्मं वैमानिच प्राकार प्रासादादिज्जसां ख  
 प्रमाचकइसांर तेइवही पइसाचपा ते देसाइह्ये-श्रीचम वैमानिच चार विमानतो प्राकार तीमपु १०० माज्जन छ चपवेह्ये तेमाटि एवतो १५ , तथा श्री  
 चम वैमानिकने सूइपासाइ ५ • माज्जनता तेइवही योजा ४ तेइतो परिभूत २५ वाज्जन, ते चारिना प्रत्येक योजा चार २ विमान तेइना परिवारभूत  
 २६ वाज्जन इस योजा ते परिवारभूत साकोनासठमाज्जन इम योजा सपाइकपीस माज्जन इस विमान परिपाटी शीघर्मं देवसाकनेविपैह्ये, इवां सूइ प्रा  
 साइ २५ • पाज्जन तेइवही चव २ शीघ्न करतां इइसा पनरेसाज्जन चमै एइवोचनता चाठमाताकोह्ये एइवा पीचभागा प्रमाचह्ये, एहीच वाचनान्तरि जता  
 रि परिव्याटियापासापचइइससाप चतुर्द्वीणाशति । एइ पासाद्वी चार परिपाटीनेविपै तीससव इकताशोच पासाइइपु, १ २५ • को । ४ १२५ को •

वमस्यपत्नितिष्ठते । अथ सङ्गतवद्विक्रमम् । अथैवै जायपद्विक्रमे , पूर्वमियत्क सत्वेव-सरस्य पासायथाक्रियस्यस्यदुसमरमधिके पूर्वमिमाने पक्षसे संश्रया धा  
 लित्पुण्यस्वरैरेवंस्यादि । अथपरिवारति ॥ अमरसम्बन्धिपरवारतिंहासतोपेतं तथैव-सरस्य शीहास्यस्य अथउभारस्य अमरस्य अतारपुरद्विमेव सत्यस्य वम  
 रस्य अठवरीय साभाक्षिय साहस्वीर्षं अठवरी प्रद्वारावसाहस्वीर्षं पञ्चलाथं , एव पुरद्विमेव पञ्चरह अगामद्विस्वीय अथपरिवारस्य पञ्चनद्वारा  
 वं अथपरिवारस्य रात्रिपुनद्विमेव मन्त्रितरियाय परिवार्य अठवीसाय मयसाहस्वीय अठवीव प्रद्वारावसाहस्वीर्षं , एव द्वादिमेव मन्त्रिमाय अ  
 ठवीय प्रद्वारावसाहस्वीर्षं रात्रिपुनद्विमेव मन्त्रितरियाय मन्त्रिष पथद्विमेव सत्तरह मन्त्रियादिद्वयसं सप्तमद्वारावसाह अठद्विषि आप्यरकउदेवा  
 अ अतारि प्रद्वारावसाहस्वीय अठवरीर्षिति ॥ तेषीर्षं प्रोमति ॥ साधनान्तरे दूरयते , तत्र प्रोमति पिथिष्टस्थानानि , मगराकाराथीत्यन्ते ॥ अथदि  
 यतस्यवति ॥ अहस्य पीठवन्धकल्पे ॥ सद्यप्यमार्त्तं वेमात्रियपयमाहस्य अद् नैयद्विति ॥ अमरमर्षं यत्तस्यां राक्षयान्ता प्राकारप्रसाध्वसभादि वस्तु तस्य

त्साद् उभाहिंसा , तस्यण अमरस्य अस्तुरिदस्स अस्तुररयो अमरवचानाम रायहाणी पक्षसा , पूग जाय  
 पासयसहस्स अ्यायामविक्रनेण अयूद्धीयप्यमाणा उवारियतलेण सोलसजोयणसहस्साद् अ्यायामविक्रनेणं ,  
 अहिरवचयमायुठवीर । इठे एवमभा इद्विदीने । अयाथीयवजापञ्चसहसराहठवद्विजा । धाथीय अहसयाजन अहयाथीने । एतयवमरस्यअस्तुरिद  
 रस्यअस्तुररावमरवचानामरायहाथी पञ्चला । इहा सं भाव्यासंकारि, अमरैरुनी अयूरेरुनी अस्तुरराजानो अमरवचानाम राजधानी अथी । एताजोय  
 अठवसहसरावामविक्रनेण । एवजाय वीजन कांयपथे तदा पिदुसपथेहै । अयूरीवप्यमाणा । अठवीय जेपठे प्रमाथेहै । दिवठठवोपयस्यअठठठ  
 अलव । एवसापञ्चाथ बाजन रइ अथा अथपथेहै । मूलेपञ्चासनीयवारद्विस्वीमेव । मूलेने विदी पञ्चाथ मीपान पिदुथा । अथरिपञ्चनेरअथापञ्चाह अदि  
 थीयथा । अपरि साठीवारि बाजन काठीसा कांयदा । अठवीयव्यंथायामेव आसयविक्रनेणे । अठवीयव्यं पिञ्चपथे । इमूलेयपठठो  
 पथंअठठवपथे । दिने अथा अठवीयजन अथा अथपथेहै । एवमेवाएवाजापयपञ्चदारसया । एववी बाजा पाञ्चसेपाञ्चसे बाट्याहै । अठ्वारव्याहकीय

सुखस्यो ऋष्यादिप्रमाणं श्रीचक्रं वैश्वानरिभिरिमात्प्रमाणात्प्रासादसमादिब्रह्मसुखप्रमाणत्वात् ८ शैलस्यं तथादि-श्रीचक्रं वैश्वानरिभिरिमात्प्रमाणात् प्रिमानप्रमाणादी  
 यात्रनादां श्रीविद्यायां सुखस्यैव एतस्यास्तु सादृश्यात् तथा श्रीचक्रं वैश्वानरिभिरिमात्प्रमाणात् प्रासादात्पुं पञ्चसोपनासां जलानि तदस्ये जलान् कालपरिचयार  
 पूताः सादृं द्वे शते मत्स्येकत्र तेषां जलसुखां मत्स्यस्ये परिवारपूता जलान् सपत्तं जलं एव सन्त्ये कालपरिचयारपूताः सादृं द्विपत्ति रत्र मत्स्ये सुपादौ  
 कश्चिद्गत् इहस्तु मूसायासादः सादृं द्वे योजनस्यते एव मद्गुं द्वीना सादृपर्ये मायद्विभिराः पञ्चसुपोपनासि पञ्चत्र योजनस्यां शाशा एतदेव वा  
 जलान्तरं उक्तं-पञ्चानि परिपटाठीं पासापवद्विचगन्तं जगद्गुणीकस्यति । एतेपांच प्रासादानां जलस्यस्यपि परिपटाटिषु श्रीविद्यां जलान् स्येकजलान्तरिभ्यद्

पञ्चास ज्ञोपणसहस्साद् पचयसस्राणउप ज्ञोपणसपुं किञ्चिद्विसेसुणे परिसक्रेयण , सस्रुप्यमाण वैश्वानिपयस्स

चसुवार् उट्ट इहमेव । ते शारदा चटारसुं शान्न जथा ज्ञ जपञ्चैव । एतपञ्चवीसजोपचसपट १०४ विच्छ भेदं । एवसा पञ्चान्तर शोचन विच्छभ्यपञ्च १०४ ।  
 शकारित्युत्तेषां जलस्यपचसहस्रकारं यथाशक्तिप्रसुभेय । धरना पीठं चपत्तरीयो १६ • सङ्गसुं शान्न शीघ्रपञ्चं पिबुसपञ्चैव । पञ्चासजोपचसहस्रकार  
 पचयसलाचररजापचसपट । पञ्चास सङ्गसुं योजन पीचसुं सन्ताचनें शान्न । किञ्चिद्विसेसुं परिसक्रेयं । शारदा विसेये ज्ञ ज्ञो परिसे ज्ञाचर्वा । सव्यप्यमा  
 यं । एपच ज्ञे ते राजधानीनेदियै प्राकारसठ मासादपर समदिद्वयसुखे, ते जययो उद्याद्विज प्रसाच ते शीघ्रसं वैश्वानिज प्राकार प्रासादाद्विज्जो ज्ञे  
 प्रमाचक्याहै तेहयो पञ्चसाचना ते देवादेवै-शोषस वैश्वानिज चार विमानतो प्राकार तीमसुं ३० • शान्न ज्ञ जपञ्चैवै तेवाटे एज्जो १६ , तथा श्री  
 धस वैश्वानिजने मूलासाह ५ शान्नना तेहयो योवा ४ तेहयो परिभूत २५० • शान्न, ते धारिना प्रत्येक योवा चार २ विमान तेहना परिवारभूत  
 २६ • शान्न रय योवा ते परिवारभूत यावोभासठपाचन इम योवा सवारक्योस शान्न इस विमान परिपटाटी शोषसं उवशोचनेदियैवै, इवां मूख प्रा  
 साद २६० • शान्न तेहयो चार २ शीन करती देहवा पनरेवाचन यनै एवशोचनना याठनायकोवे एज्जवा पीषमाय प्रमाचक्यै, एहोच वाचनान्तरं ज्ञा  
 रि परिवाहीयापासाचवद्विचगन्तं चरुहरीवाचति । एव मासादनी चार परिपटाठीनेदियै तीनसस इकताशोस प्रासादसुं, १ २३० यो० । ४ १३६ यो

चिकानि मवन्ति, एतेषु प्रासादेषु उदरपूर्वस्था दिशि सभा सुषर्मा, सिद्धायतन सुषपातसभा, इदो उत्तियेकसभा, सङ्कारसभा व्ययसापसभा  
 वेति एतानिच सुषभसनादीनि सौषर्मावेमानिकसनादिभ्यः प्रमायतो ऽहमनायानि तत योष्युष इदेषा पद्विधाद्योजनानि पञ्चाश दायामो  
 चिकाम्ब पञ्चविंशतिरिति एतेषाञ्च विजयदेवसम्बन्धिनानिच, अण्णासतसपस्यिचिषा अङ्गुणपसुकपवहरवेदपाहत्सादि यष्टको याष्य सथा द्रा  
 राणा अण्णिवरवे अरठमपसनाकम्पा अनाहत्ता इत्यादि रसङ्कारय सनादीना वाच्य सर्वेषु कीयानिगमासु यिअपदेयसम्बन्धित्यमरस्य याष्य  
 याव सुषपातसनायां सङ्करय यानिनवोरपकस्य चि मम पूर्वे पयाशा कर्तुं शेष इत्यादिकय अतिथेक यानियकसनाया मद्दर्श्यां सामानिकादिदे  
 यकताः, विनूयशाच बज्जालङ्कारकता अस्तङ्कारसनाया व्ययसापय सनाया पुस्तकवाचनतो ऽचनिकाच सिद्धायतने सिद्धप्रतिमादीना सुष  
 भासनापमनञ्च सामानिकादिपरिवारोपेतस्य अमरस्य परिवारय सामानिकादि अट्टिभञ्जञ्च, एय मरिचिह्णइत्यादियवने याष्य मस्तति एतञ्च वा

१६ ६२॥ वा । ६७ ३१॥ वा । २३६ १५॥ ५ भाग सर्वं ३४१ अथा एह प्रासादयो इमान् क्वचि सुषर्मा सभा सिद्धायतन अयपातसभा अद्रपभियेकसभा  
 अष्टकारसभा अक्षसाहसभाश्चै, एषुषर्मासभा आदिह् सौषम वैमानिकसमादिक्रमा प्रमाञ्च अक्षप्रमाञ्च एवन्तो क्रीयवो तिक्कारे एवने अ वपये ३६ यो  
 यन ५ शोचन यावाये २३ योचन चिकाम्बे एवने विजयदेवसम्बन्धीनोपरे यनेच अमसययचिचिवा इत्यादि, यञ्च अक्षयो एषीवभिगानेकयो, चिक  
 यदेवसवदे विस इवां अमरने सवसे अक्षम् वावप् उदनायोसक्या इत्यादि । अयवापासक्या । देवता अयपात सथा अयपने कवच परिचयो अरयो अ  
 च पञ्चकारयो इत्यादि । यमिसेव चिमसुवायो वपसापो ययचिचिअसुवकास अमरपरिवारइतिअ आक्षविचर । यमिथेक कोवा देवते ठङ्कार इत्यादि  
 यञ्च अष्टकार परिचया सर्वकारसभा अक्षसाहसभा पञ्चकाराया चिदायतन प्रतिमादिक्रमो पूजाकोयो सुषमासमा अिवां परिचारिसने यामानि



जनाभार व्यक्तं प्रायोऽवलोक्ष्यत एवमिति द्वितीयस्यासमवेदेषाः ॥      ८      ॥      अमरकल्प्यासकाले चैव मरुतोदेवके चक्रे मय च  
 पाथिज्वारादय मयमे समयवेच भुज्यतइत्येवं सम्भुदुस्या स्वेह भूवं ॥ क्विमित्पादि ॥ तत्र समया आह कोमो पस्वचित् चैवं समयवेच कासोदि दिवमासा  
 दिरूपः सूपमतिशयतिक्वामो मनुष्यवेचएव न परतः परतोदि मादित्याः सञ्चारिष्यवइति ॥ एवं कीवातिगमवतद्वपानपवइति ॥ एया वैवं—एयं वा  
 यजसुपसइत प्रायामिक्वनेच मित्यादि ॥ कोहसपिइवइति ॥ तत्र अन्मुदीपादिमनुष्यवेचवकल्पतायां कीवातिगमोक्तायांयोतिक्वयकल्पता प्यक्ति,  
 तत कादिहीम यथा मय स्वेवं कीवातिगमकल्पता नेत्येति वाचनास्तेरु कोहसकठविइवइत्यादि यदुइइयते, तत्र—अपूदीवेच एते । इह च  
 दापनासिधुया इ कतिमूरिपातविधुया इ इहइकल्ताकोहकोहसुयेत्यादिकाणि मत्येक योतिक्वसूपाकि, तथा—सकेवठेवं एत । एय दुधइ अमुदीये  
 दीये गोयमा अयूदायवं दीये मइरस्व पवूपस्व एतएव सवकस्व दासिक्व जाय तत्स २ यइवे अगुरुकला अगुयवा जाय उयसोइमाका चिठति

पमाणस्स अइ नैयइ ॥ इइ यिइयसए अठमो उदेसो समसो ॥      ८      ॥      किमिदं जते !  
 समयस्कंतेति पवुसइ ? गोयमा ! अइहाइजा दीवा दीयसमुदा एसण पइएण समयस्तेति पवुसइ, तस्य

कादि परिभारसदिम यमर परिभार सामानिक अदिवत ए मदिह उए इत्यादि कइवा, यावपु विधरे । त्रितिवसुपइमयो । एवीजा गतकनो पाठमो  
 उइया पूराइया ।      ८      ॥      ते चैवना अतिज्वारो जयमे उइये समयसव अदिवइ—दिमिदमतेसमयकंतेतिपवसइ । क्वं विमगावम् !  
 समयवेच दसाकदीये इतिप्रच, एतए । गायमा अइहाइजादीवादायसमुता एसवएवइएसमयस्तेनेसिपनुचए । वे गीतम । अठइइंय विसमइ एयन  
 ममयवेच अदीये, समय कइतं काय तिव उपसचितकोधा वे चैवकाय ते दिम मासाठिरुप सूप गतिजरो अथिवे ते मनुष्यवेचनपियेअइ ते पादि  
 रतवा तेपरे पादिज्वादिवा सधारनचो जितामट । तत्रअययअदीये २ । तिवा चं पाक्यासकाले, एय अइदीपमासादीप । सप्यदीपसमहायसववषाते  
 एवजाव।मिममरदायवाचनया प्राय पथि।एपुअइरकोहसिइइव । सुवं दीप समुइने सुव यन्मएर माइवे इम कीवातिगमसूपाइ वकल्पता काथवो ते

सततवत्त्वं शोचमा ! एषु पुत्रेषु यदुद्गीयेदीय इत्यादीनि प्रत्येक मध्यसूत्रादिषु सन्ति तस्य द्योतद्विधीनं यथा तत्र त्वेय धीवान्निगमसकथ्यतया नेय  
 मस्या दृशकस्य सुब ॥ आह इत्यादिनाङ्गिति ॥ सद्यङ्गनाथा साव-अरहतसमयथापर विष्णुपवित्रपावसाङ्गाश्रयाणी आणरनिदिमहसवरा शनिष्णमेषुच्छिन्न  
 यवब ५ १ ॥ अस्या द्यार्थं स्थाया नेन सम्प्रयेमा यातो अन्मुद्गीयादीना मानुषोत्तराभ्याना मथानां यद्यकस्यात इदमुक्त-आयंयथ माणुसुत्तरपक्षेय  
 ताव चर्त् अस्मिन्लोपति पयुषुइ ॥ मनुष्यलोके उच्यतेइत्यर्थं स्थाया ॥ अरहति ॥ आह चय अरहता चक्यग्री णाय श्रायिपाठे मशुया पगाइतदुया  
 विधीया मयचच अरिसलोपति पयुषुइ समयति आर्थचय समयाइया आयतिपाइया आवलोपति पयुषुइ एव आय चय थापर विष्णुपार थापर  
 यच्छिपसद् आयचय सङ्गे उराला धलाइया संशेयति अमच्छिति आचयय थापर तउथाए आयचय आनराइया शिदीइया नइइया उयरागति यदो  
 बरापाइया सुरायेरानाइया सावचय अस्मिन्लोपति पयुषुइ उपरागोपइय ॥ निभगसे युच्छिन्नयययति ॥ याय अिगमादीना ययन प्रथापन सायन् मनु  
 ष्यलाइइति प्रकृत तत्र-आयचय अदिमसूरियाह आय ताराइयाय अइयमस्य निगमस्य युच्छिन्निच्छिन्नी थापयिचयइ ताययय अस्मिन्लोपति पयुषुइ  
 अतिगमन निशातरायच निर्णयन दच्छिन्नायनं यद्वि दिनस्य धदम निवृद्धि स्तस्यैव इति ॥ इति द्वितीयशतं मयमउइय ॥ ८

ण श्यय जयुद्गीयेदीये सवृटीयसमुद्घाण सवृच्छितरे पूव जीयानिगमयसवृया नेयश्वा, जाय श्यच्छितर पुस्क  
 रद् जीइसाधिज्ञा ५ इड विडयसण नयमो उद्वेसो सम्प्रत्तो ॥ ९ ॥ कइण जंतं ! श्यत्यि

इम-एयंशापचउरसइस थायामिच्छिमेव इला इ थावत् तासम कइया, जायगी यम्यभर प्रच्छराइ जोइस अइदीय याद्विदे इ मनुष्यस्यैव यल्लयता जीवा  
 निगमेकशो तेइमनिदे अय तियाजो यचि यल्लयताकजोही तेमाटे ते इवा अ्यातिप यल्लयता नइइवी वीजी जोवाभिगमोइ यल्लयता मथ कइयो । विचि  
 इरयनइमथा । इ वीजा यानयना भवमी अइयोपूराययो । ८ मइसे अइये चोचकथा ते यच्छिन्नाय ईयकयथीतेमाटे यच्छिन्नाय निरुप  
 य मयमाउइया कइइहे-अरहमते यच्छिन्नाया यल्लयता नाइमा यच्छिन्नाया यल्लयता नइइया । अउटी येमयवत् । यच्छिन्नायचय वनिमय उतर दे गिनम । यच



सतलसुखं भोयमा । एय सुहृद सधुक्षीयदीय वस्यदीनि प्रत्येक मधंसुभाविष सन्ति सभ दैतद्विधीनं पथा एव त्येव धीधात्रिगमवकष्यतया भेय  
 मस्या दृषकस्य सुभ ॥ जावदमगावति ॥ सपदगाथा साव-अरदतसमयवापर विष्णुपात्रिपावसावगाथगधी आगरनिदिनदवयरा गनिगमेषुन्दिष  
 यवव ॥ १ ॥ अस्या थायं क्षमा भेन सन्वेनेना यातो अम्सुक्षीपादीमा मानुपोतराभाभा सर्पाभा एवकस्यातं वरमुक्त-आववव माणुसुसरपधुप  
 ताववव अरिससोएति पयुधव ॥ समुपलोक वज्यासदस्यं क्षमा ॥ अरदतति ॥ जाववव अरदता अकजही जाय सापिपासुं मधुपा पगदन्दया  
 विधीया तयवव अरिससोएति पयुधव समयति जायंवव समपावया जायसिपावया जायसोएति पयुधव एव जायवव थापर विष्णुपार थापर  
 पविपसद जाववव वदवे अराला वसावया ससेपति अगयति जायवव थापर तसयाय जायवव आगरावया निदीवया मदवया उयरगति, यदी  
 यरावावया सुरावराभावाया ताववव अरिससोएति पयुधव उपरगोपवव ॥ निगमे धुन्दिपयवव अति ॥ पाव अिगमादीमा एवम प्रजापम तायन् मनु  
 पसाववति प्रकत तव-आववव अदिमसूरियाव जाव ताराकथाव अरममव निगमव धुन्दिनिधुन्दी थापविज्जद ताववव अरिससाएति पयुधव  
 अतिपमन निशातरायव निर्ममन इतिजापम एहि दिनस्य यदून नियुति वस्येव इतिः ॥ इति द्वितीयकते नवमवद्व्याः ॥ ८

ए ष्य जवक्षीवेधीवे सधुदीयसमुद्गाण सधुधितरे एव जीवात्रिगमवसवया नैयव्वा, जाव अुधितर पुरक  
 रदु जोडसविज्ञण ॥ इड विडपसपु नवमो उद्वेसो सप्ततो ॥ ९ कइण जते ! अुत्पि

रम-एयजापवधवसवस पायामविष्णुभेव ववा द, यावत् तासम कववा थापनी एममवर मव्वराव जोदव अदुदीप यादिरैर मगयवेव यववता जीवा  
 दिगमेकवो तेवनविदे अ तिथापो पवि अल अताकवोही तेमाटे ते ववा अ्यातिप यववता मवववो वीकी जावाभिगमोव यववता सव कववो । इति  
 वरवमवमथा । व वीजा यतकना भवमी ववेथापुत्रयो । १ २ ३ भवसे ववेयो वेवकवा ते पकिकवा व यववये तेमाटे पकिकवास निवप  
 व ममसाववेया कवेवे - कदवमते पकिकवाया पववता भावमा पवविज्जवाया पववता तवववा । कदवी वमववन् । पकिकवावववो इतिमय वता ववेगीतम । पव

गद्ये कइरसे कहफासे ? गीयमा ! स्थवन्ते जाय स्थरुधी जीवे सासए स्थघाठिए लीगादखे सेसमासठे पख  
 धिहे पणहे तजहा—दखठ जाय गुणठ, दखठण जीवात्थिकाए स्थणताई जीयदडाइ, खेसठ लीगाप्यमा  
 णमेसे, कारठ नकयाइनस्थसि जाय निसे, नावठ पुण स्थवन्ते स्थगधे स्थरसफासे, गुणठ उयठगगुणे,  
 पोगाठत्थिकाएण नते ! कइयथो कइगधरसफासे ? गीयमा पचवन्ते पधरसे दुगधे स्थठफासे रुधी स्थजीवे  
 सासए स्थघाठिए लीगादखे, से समासठे पचविहे पणहे तजहा—दखठ खेतठे कालठे नावठे गुणठे, दखठ

रूपसे । यावत् गुबधी जायधी जायादिजन पबजागहेरुहे । जीवत्थिकाएखभतेकरयथ । जीवात्थिकाय च बाकायकारे, हेमयवन् ! केतसावधं । अरु  
 दे कारसे जाफासे । केतसा मध केतसासर केतसा करस इतिप्रत्य उतर । मायमा पबकेजायधरुधो । हेमोतम । बखरहित यावत् धरुधो धमूज । जी  
 वेसामर पबहिए जागरुणे सेठमासधा पबदिहे पखते तजहा । केतखरुए सदा काशीम फिर निबल पवत्थित लोकरुख ते जीवात्थिकाय असेपधी  
 पोब भेरे ते कइहे—रुयधा जाबमुबधा दखपाबजीवत्थिकाय । द्रव्यधो यावत् मुबधी द्रव्यधो जीवात्थिकाय । पबताइ जीवदखार खेतपोलीगप्यमाच  
 सते । यतभा ! जीवद्रव्य सेवधी जीव साकप्रमाचमाचहे । जायधानब्याहनथासि । काखधी कसेट जीवद्रव्य नही रसनधी । जावत्थिसे मायधोपुब  
 पबसे । बखत् निबल भावधो बसेपधीवधी बखरहित । पगधे धरसे पफासे गुबधाबधयाधमुदे । माधरहित रसरहित करसरहित जायधी उपयोग  
 वेतथ्य धाकार यनाकार तद्रूपकीर । पायबत्थिकाएखभतेकरयसे । पुइसात्थिकाय च बाकायकारे, हेमगवन् ! केतसावध । केतसा  
 मध रस करसकजा इतिप्रत्य उतर । मायमा पबवसे । हेमोतम पतबबखहे । पंवरसे दुमधे पइथासे रूधी पकीवे सासए । पोब रसहे देसमधसे पाठ  
 करयहे रूपाइ वेगबदरहित यावताहे । पबहिए जापदसे सेसमासधापचविहे पखसे तजहा सुवध्या । पबत्थितहे साकरुखहे ते पुइकात्थिकाय  
 खदेपधी पोबभेरे ते कइहे—द्रव्यधो । खेतया कायपो भावधा गुबधी द्रव्यधोबधीवत्थिकाय । सेवधी काखधी भावधी गुबधी, द्रव्यधी पुइसात्थिकाय

पद्यत्वा वचनार्थसिद्ध्याय सातत्य तथापारत्वा द्वाकाद्यासिद्ध्याय स्वतोऽन्वयत्वाऽभूत्तत्त्वसाधनार्थं व्यभिचारात्सातत्यं सात सद्गुणदम्बकत्वात् पुद्गलसिद्धिका

दक्षतं स्वतन्त्रं कालत्रं नाथत्रं गुणत्रं, दक्षतंण धम्मालिकाए पुणेद्वि, स्वतन्त्रं लीगप्यमाणमेहि, कालत्रं नक  
याहनश्यासि नकयाहनस्य ज्ञाय निम्ब, नाथत्रं श्वयन्ते श्वाद्यं श्वरसे श्वफासे, गुणत्रं गमणगुणे । श्वह  
म्मालिकाएषि एषवेध, नथर, गुणत्रं ठाणगुणे । श्वागासालिकाएषि एषवेध, नथर स्वतन्त्रंण श्वागासाल्य  
काए लीयालीयप्यमाणमेहि श्वणतंवेध जाध गुणत्रं श्वगगाहगुणे । जीवालिकाएण तन्ते ! कहयस्ये कह

वर्षादि नशो तमाटे धरूपोद्धे चेतन्यगुणरहित द्रव्यतो यास्तताहे मद्रेशो धरसिद्धिहे, काकसि पंचासिद्धिकायाकास तेहना धंयभूत द्रव्यहे । सेसमासधोपव  
दित्ते पञ्चते तेषा । त वचनार्थसाध साधेपयो पञ्चमेरे कश्चो ते कश्चिहे—द्रव्यथा चेतनयो कासयो भावयो गुणयो । द्रव्ययो १ चेतनयो २ कासयो ३  
भावयो ४ वचनयो ५ । द्रव्यथावचनसिद्ध्याय एतेद्वेहे । द्रव्ययो धरनार्थिकायाय एकाद्रव्यहे । चेतनयोकायसे कदापि नभूतो दसनयो वचनमागकासेतहे श्वागासिद्धिकासेनभूतो  
तमासहे काकयो वचनार्थिकायाय ; काकाया नकायाऽनयासिनकवयाऽनस्यि । यतीतकासे कदापि नभूतो दसनयो वचनमागकासेतहे श्वागासिद्धिकासेनभूतो  
दसनयो । काकसिद्धि भावथा यवचे ययवे धरसे धफासे गुणयोगमकमुचे । यावत् निम्बहे, भावयो वचनार्थिकायाय पर्याययो यधरहित मधरहितहे रस  
रहितहे श्वागरहितहे मुचयो काकयो लीय पुनकते गति परित्तरने कतिउपद्रव्य हेतु विधम माकलीने जस तिस । धरव्यसिद्धिकाएषिण्यवेध । यधमासिद्धिका  
य पर्षि निरै दसन पचमकारे वचनार्थिकावचनो परे कश्चथा । यपर मुचधाठावमुचे । एतकाविधोप गुणयो कार्ययो लीयपुनकते सिद्धिपेरित्तने सिद्धित्त  
पद्रव्य चतु विध मरकते यक तिस । यागासिद्धिकाएषिण्यवेध । याकायासिद्धिकायाय परिय पञ्चमेरे दसन कश्चथा । यधरचित्तयो नयासासिद्धिकाएषिण्य  
कासयनासमते । एतकासिद्धिकायाय कश्चयो याकायासिद्धिकायाय काक तका यकाय एतेक मना नान कश्चयो । यकतेवेध । यनन्तहे निवेसे । काकगुणयो यधरा

गद्ये कइरसे कइफासे ? गोयमा ! सुयन्ते जाय सुकरो जीवे सासए सुयठिए खोगदखे सेसमासत पख  
 यिहे पखसे तजहा—दखत जाय गुणत, दखतण जीयत्थिकाए सुपताइ जीयदछाइ, खेसत खोगप्यमा  
 पमेसे, काठत नकपाइनसुसि जाय निसे, जावत पुण सुयन्ते सुगधे सुरसफासे, गुणत उयतंगणुणे,  
 पोन्गत्थिकाएण नते ! कइयणे कइगधरसफासे ? गोयमा पचवन्ते पखरसे तुगधे सुठफासे कयी सुजीवे  
 सासए सुयठिए खोगदखे, से समासत पचविहे पखसे तजहा—दखत खेतत काठत जायत गुणत, दखत

वगुणे । यावत् गुणधी जायथा जायदिकत पचकायहेगुणे । जीवत्थिकाएणतेकरवस । जीवत्थिकास च पाप्मासकारे, हेमगधन् । केतसावन् । कइर  
 से कइरसे जायथासे । केतसा यथ केतसारस केतसा करस इतिप्रय उचर । यावमा पचसेजावत्पूरो । हेमोतस । पखरहित यावत् पूरो यमूत् । खी  
 रेसासए पखदिए कावदखे सेसमासपा पखविहे पखसे तजहा । खेतखरूप सदा कासीन किर निवस पचकित खोकद्रस्य ते जीवत्थिकास भवेपधी  
 यो । भेरेके ते कइसे—रूपया जावत्पुपया दखयाचकीवत्थिकाए । द्रवयो यावत् नखधीद्रव्यधी जीवत्थिकास । पखतार जीवदखार खेतयोकीवपमाच  
 मत् । यमका कीवद्रव्य चेषधी जीव काकप्रमाचमाचहे । यासयामकवारनयासि । कासवी कदेर खीवद्रव्य नधी इमनधी । जावत्थिसे भावपीपुख  
 पचसे । यावत् निवसक भावधी वधीपधीवधी पखरहित । यगधे पखसे यकासे गुणपाचवयोयगुणे । यवरहित रसरहित करसरहित कासधी उपयोग  
 खेतस्य साकार यमाकार तद्रूपयोव । पाप्यसत्थिकाएणभतेकरवसे । पुदकात्थिकास च याक्मासकारे, हेमगधन् । केतसावच । कइतीवत्सकासे । केतसा  
 यद रस करसकया इतिप्रय उचर । भायमा पचवसे । हेमोतस योचवखहे । पंचरसे तुगधे पइकासे रूरी यकीरे सासए । पोच रसके दोयपचके पाठ  
 करसके रूरीके खेतयदहित याक्मासहे । पखदिए जायदखे सेसमासपापचविहे पखसे तजहा दखया । यवत्थितखे साकद्रस्यहे ते पुदकात्थिकास  
 उयेपयो योचवसेके ते कइसे—द्रवयो । खेतया काठया भावया गुणयो दपयोचपीवत्थिकाए । चेषधी कासधी भावधी गुणधी, द्रव्यधी पुदकात्थिकास

पद्यस्य इत्यन्तिक्याप सताय तदाधारत्वा दाक्षाष्टास्तिकाप्य सती उत्तमस्योत्तमस्यैषास्यर्था ष्ठीवास्तिकाप्य सत सतुपटमकत्वात् पुद्गलास्तिका

दक्षत स्वतत कालत नावत गुणत , दक्षतण यम्यस्तिकापु एगेदधि , रवेसत लोगप्यमाणमेहि , कालत नक  
याहनस्थासि नकयाहनस्तिय जाय निसु , नावत श्यवन्ते श्यगधं श्युरसे श्युफासे , गुणत गमणगुणे । श्युह  
मस्तिक्यापुषि पुषवेध , नवर , गुणत ठाणगुणे । श्यागास्तिक्यापुषि पुषवेध , नवर रवेसतण श्यागास्तिय  
कापु लोयालोपप्यमाणमेहि श्युणतेवेध जाय गुणत श्यवगाहगुणे । जीधस्तिक्यापुण नते ! कइवसु कइ

नर्षादि नडो तमाटे धरूपोदे चेतन्यपुद्धरहित द्रव्यतो सासताहे, मरुपडो धरुसिततई साकडे पंथास्तिकावाताकक तेहनो धयमूत द्रव्यहे । सेसमासथापय  
रित् यवते तंनरा । त वर्गीस्तिकावाय ससेपवी पञ्चमेहे कडो ते कइहे—रुपया चेतयो कावया भावयो मुखयो । द्रव्ययो १ चोववी २ कावयो ३  
भावयो ४ मुखयो ५ । रुक्मयावयवस्तिकावाए एयेरुवे । द्रव्यवी वर्गीस्तिकावाय एकद्रव्यहे । चेतयो कोगप्यमापयेते । चोवयो वर्गीस्तिकावाय यवट रावडोक  
पमावहे जाववी वर्गीस्तिकावाय । कावया नकडाराएपासिनकयाहनस्तिय । यतोतकासे कडोपि नडतो रुमनवी वरामामकासेतहे थायामिकासेनडुके  
रुमनडो । कावयिहे भावया यववे यमये धरुसे यकासे मुखयोमनवगुणे । यावपु निव्यहे भावयो वर्गीस्तिकावाय यवीययो वधरहित यधरहितहे रुस  
रहितहे स्यारहितहे गुणवी काववी चोप पुद्गलने मति धरित्तने यतिउपटभ डेगु जिम माकडोने जख तिम । यवव्यथिस्तिकाएरिउपवेध । यवमास्तिका  
य पयि नवे रुमज यवमकारे वर्गीस्तिकावावनी परे कडवा । यवर गुडयाडावमुणे । एतकोदियेप गववी कावयो चोवपडलने स्थितिपरित्तने स्थिति  
पटभ डुगु जिम मरुपने कड तिम । यानासस्तिकाएरिउपवेध । याकायास्तिकावाय यधि यथेमेहे रुमज कडवा । यवरचेतयोपयायासस्तिकाएरिउवा  
सापयनावसेते । एतकास्तिकावाय चोववी याकायास्तिकावाय काव तना यकाक एयेध ममा माय कडवी । यवतेवेध । यमन्यहे निवेसुं । कावगुणयोपयमा



गंधं कङ्करस्ये कङ्कफासे ? गोयमा ! स्यवन्ते जाय स्यरुधी जीधे सासणु स्यवठिणु लीगादध्वे सेसमाधतं पच  
 थिहे पयादे तजहा—दध्वतं जाय गुणतं , दध्वतंण जीधत्थिकाणु स्युणताह जीधदध्वाह , रयेहव लीगाप्पमा  
 णमेसे , फालतं नकपाहनस्यसि जाय निवे , दायतं पुण स्यवन्ते स्युगधे स्युरसफासे , गुणतं उयतंगणुणे ,  
 पांगालत्थिकाणुण नते ! कङ्कयणे कङ्कगधरसफासे ? गोयमा पचवन्ते पचरसे दुगधे स्युठफासे रुधी स्युजीव  
 सासणु स्युवठिणु लीगादध्वे , से समासतं पचधेहे पयासे तजहा—दध्वतं सेत्ततं कालतं दायतं गुणतं , दध्वतं

वगुदे । यावत्त गुयथा जाययो जागदिक्त पवकागवेणुदे । कावत्थिकाणुणभंतिकरवथ । जीवात्थिकाय थ पाप्पासकारे , हेमगपन् । केतसावधं । कइता  
 ये कररसे काकासे । केतसा गध केतसारस केतसा कररस इतिपय उजर । गावमा पवसेजायपरुणे । हेगीतम । पचरहितं मायणु परुधी यमूसं । जी  
 वेसासव पचद्विणु सागदध्वे सेसमासपा पचधित्थे पचसे तजहा । वेतस्यरुप यथा कासीम थिर नियास पवस्थितं सीकरदध्वं ते जीवात्थिकाय भवेपयो  
 पानु शेरुत्तं न कइहे—रुयथा जावगुयथा यथपायधोवत्थिकाय । दध्वयो यानत्तं गचधी दध्वयो जीवात्थिकाय । पचत्तार जीवदध्वार वेतसपाधीरप्यमाय  
 मत्त । यत्तन्ना कावदध्वं पचधी जीव साकममाचमावहे । कावत्थान्नाकवावत्तपासि । कावत्थो कट्टेण जीवदध्वं नधी इतनधी । जायत्थिये भाययोपुच  
 पचसे । यावत्तं निरदध्वं भाययो वधीपयापयो पचरथिम । पयोसे परसे यकासे गुयथायवपागुणे । गावद्वित्तं रथरहितं करररहितं कावधी उपयोग  
 वेतस्यं साकारं यत्तकारं तदुपयोव । पाम्मत्थिकाणुणभंतिकरवसे । पुदसात्थिकाय थ याप्पासकारे , हेमगपन् । केतसावधं । केतसा  
 मय रथ कररसकइता इतिपय उजर । भायसा पचरसे । हेगीतम पचरसे । पचरसे दुपधे यदुकासे रुधी यकीवे सासणु । पाच रसध्वे सेयमध्वे पाठ  
 कररसे रुवीक वेतस्यरहितं मायमाह्वं । पचद्विणु सागदध्वे सेसमासपापवधित्थे पचसे तजहा दध्वथा । पचत्थिकाणु साकरदध्वये ते पुदसात्थिकाय  
 सवंपयो पचवेहेहेते कइहे—दध्वयो । एत्तथा कावत्थान्ना भायथा गुयथा दध्वयोवत्थिकाय । पचधी कावत्थो भाययो गुयधी , दध्वधी पुदसात्थिकाय

पञ्चला वृषमीसिकाण्य सतय तदाधारत्वा दाकायासिक्काय, सतो उन्नतत्वाऽमुन्नतयथापभ्यां क्लीबीसिकाय, सत सतुपटम्बकत्वात् पुद्गलासिका

दक्षतं स्रेत्ततं कालतं त्रावतं गुणतं , दक्षतंण यस्मात्सिकाए पुणेदसि, स्रेत्ततं लीगप्यमाणमेसि, कालतं नक पाङ्गनश्यासि नकपाङ्गनस्य जाव निसि, त्रावतं श्यवन्ते श्यगधं श्यरसे श्यफासे , गुणतं गमणगुणे । श्यह म्मात्सिकाएषि एववेच , नवर , गुणतं टाणगुणे । श्यागासत्सिकाएषि एववेच , नवर स्रेत्ततंण श्यागासत्सि काए लोपालोपप्यमाणमेसि श्यपतंवेच जाव गुणतं श्यवगाहगुणे । जीयत्सिकाएण त्तते ! कइयथे कइ

वर्षादि वदो तमाटे परुपोसै, वेतन्वगुणरहित द्रव्यतो साकतासै, मरुगवो यवसिगतसै, साकमे पंथासिक्कायात्कत तेदन्तो यमभूत द्रव्यसै । सेसमासथापव निव पयत्तं तमदा । त यमीसिक्काव सलेपवो पविनेरे कवो ते कइसै—द्रव्यथा येतयो जासयो भावयो गुणयो । द्रव्ययो १ सवयो २ जासयो ३ भावयो ४ गवयो ५ । द्रव्यपावधसिक्काए एतेदसि । द्रव्यवो यमीसिक्काय एकद्रव्यसै । येतयोसोमप्यमावमेसि । सवयो यमीसिक्काय चउद ररकसोक तमावधे जाववो यमीसिक्काव । जावथा नकपाटनपसिसकयारनसि । यतीतकासे कदापि मरुता रमनवो वनमानकालेनसै यामासिक्कासेनहुंये रमनवो । यानसिदि भावथा सवसे यमसे यरसे यफासे मुषयोगमचगुणे । भावत् निससै भाववो यमीसिक्काय पर्याववो वरुंरहित यदरहितसै रस रहितसै यपरहितसै गुणवो काववो वीव पुहवने सति पदिसवने सतिरपद्रव्य वेतु विम भाववोसे कइ तिम । यवयसिक्काव जाव तया यकाव एवेक प्रभा -साव कइवो । यवतेवेन । यतलसै निसैसुं । यानमुषयोपवया व पवि निसै रमज पञ्चपकारे यमीसिक्काववो परे कइवो । यवर् मुषथाठावगुणे । एतथाविमयेप मुषयो जायंयो वीवपववने सिदितपदिसवने सिदितेच पद्रव्य चतु विम मरवने कइ तिम । यानासिक्कावपदिसवने । यानायासिक्काय पवि पविनेरे रमज कइवो । यवरेखेनथावथायासिक्कावकेया वावपयनावमेते । एतथाविमय यववो यानायासिक्काव जाव तया यकाव एवेक प्रभा -साव कइवो । यवतेवेन । यतलसै निसैसुं । यानमुषयोपवया

गधे कहरसे कहफासे ? गोयमा ! झुवन्ते जाय झुरुधी जीवे सासणु झुधाठिणु खोगदधे सेसमासतं पव  
 थिहे पयासे तजहा—दधुतं जाय गुणतं , दधुतंण जीयात्थिकाणु झुणताइ जीयदहाइ , खेसुतं खोगाप्यमा  
 णमेसे , फाउतं नफयाइनझ्यासे जाय निसें , दाधतं पुण झुवन्ते झुगधे झुरसफासे , गुणतं उचतंगगुणे ,  
 पोणगल्लत्थिकाणुण जते ! कहइयणे कहगधरसफासे ? गोयमा पधवन्ते पचरसे दुगधे झुठफासे रुयी झुजीवं  
 सासणु झुधाठिणु खोगदधे , से समासतं पचविहे पयासे तजहा—दधुतं खेततं कालतं जावतं गुणतं , दधुतं

वगुणे । यावत् गुयधा जावथी आवादिक्कन पवक्काणुहेतुहे । आवात्थिक्काणुधभंतेकरवध । जीयात्थिक्काणु य पाक्काणुधारे, हेभयवत् । केतलावधं । करत  
 ये करसे करफासे । केतला गध केतलारस केतला करस इतिपय उल्लर । यावमा पवसेजावधरुधी । हेगोतम । पचरहित यावत् परुपी यमूल । जी  
 वेसासणु यधइणु सायदन्ने सेसमासया पवन्तिहे पचसे तजहा । येतन्यरुप सदा काधीन किर निवस यवस्थित सोक्कदधुते ते जीयात्थिक्काणु भयेपधी  
 याव भेइते त कथेइ—दधुपा यावगुयधा उधयावजोवत्थिक्काणु । इत्यधी यावत् गुयधी इत्यधी जीयात्थिक्काणु । यवतार जीवदधुतार खेतयाधीगयमाव  
 मल । यतथा जीवदधु येवधी कीव साकप्रमायमावधे । कावधानकयादनथाधि । कासधी कट्टेर जीवदधु गधी इममधी । जावथिसे भावधीपुव  
 यवसे । यावत् निवधे भावधी वधीपवीयधी पचरहित । यगधे परसे यवधासे गुयधावधयोमनुसे । यवरहित रसरहित करसरहित कायधी उपयोय  
 येतन्य साकार यमाकार तदुपजोव । पाक्कपत्थिक्काणुधभंतेकरवधे । पुवक्कात्थिक्काणु य वाक्काणुधारे, हेभयवत् । केतलावध । करगीधरसफासे । केतला  
 यध रस करसकक्का इतिपय उल्लर । गायमा पचवसे । हेगोतम पावधरुधे । पचरसे दुगधे यइयासे रूयी यधीवे सासणु । पाव रसधे देयगधधे याठ  
 करसहे रूयीव येतन्यरहित मासमाधे । यधइणु कायदन्ने सेसमासयापवन्तिहे पचसे तजहा इत्यथा । यवस्थितहे साक्कदधुते ते पुवक्कात्थिक्काणु  
 यवेपधी पचिभेवधे ते कथेइ—इत्यधी । खेतया कावधया भावधा गुयधी इत्यधी उपयोयत्थिक्काणु । येवधी कावधी भावधी गुयधी, इत्यधी पुवक्कात्थिक्काणु

यदिति ॥ अथकेहस्मादि ॥ यतस्या यथादि रतयथा रूपी धर्मसुः ननु निःस्वभावो मथ पशुंदासवृत्तित्वात् शाश्वतो द्रव्यतो ऽथास्वत प्रदेशतः ॥ लोगत  
 दिति ॥ लोकस्य पञ्चाङ्गिकापात्मकस्यां क्षान्त द्रव्य लोकाद्रव्य भावतइति पर्यायत ॥ गुणवृत्ति ॥ कार्यतः ॥ गमणगुणोति ॥ बीजपुद्गलाभा गतिपरि  
 कृताणां नस्यपुद्गलहेतु मत्स्यानां वसतिमिति ॥ ठाणुवृत्ति ॥ जीवपुद्गलाभा स्थितिपरिचयतासा स्थित्युपपत्तहेतु मत्स्याना स्थानमिवाति ॥ यद्यथा  
 इवागुणोति ॥ जीवादीना मन्वाकाशहेतु बंदराणां कुंठमिव ॥ अकृतगुणोति ॥ अयोग्यवैतन्य साकारानाकारमत् ॥ यद्व्यगुणोति ॥ गुण्य परस्परव्य

य पीगाल्तिकापुं स्थणताइ दवाइ , खेसतुं शोयप्यमाणमेते , कालतुं नकयाहनस्थानि जाय निचे ,  
 नायतुं वक्ष्यमते गंधरसफासमते , गुणतुं गहणगुणे , पुगेनते । धम्माल्तिकायपदेसे धम्माल्तिकापुंति वसव सि  
 या ? गोयमा ! पीडणठेसमठे , एव दीनान्धि तिनान्धि चशारि पच ठ सतुं शूठ नव दस सखेजा शू  
 संखेजा नते ! धम्माल्तिकाय पदेसा धम्माल्तिकापुंति वसव सिंया ? गोयमा ! पीडणठे समठे , पुगपदे  
 सुणोचिपण धम्माल्तिकापुंति वसव सिंया ? पीड ० सेकेणठेण नते ! एव दुसइ , पुगे धम्माल्तिकाय पदेसे

यत्तत्ताइ इत्थाइ चत्तपीनापयमाचमते । पदस द्रव्य धनताइ चेतवी सोक्कप्रमाच माच एतसे चउए दाज प्रमाचइ । काशयानकायहनपासि । कासवी  
 कदेरन्थो रमनवी तीनेकावेइ । कावचिचि मानपेयपमते । यारत् निससइ भावयो वचसदित्तइ । यधमते रसमते प्रासमते गजपेयवचपुत्ते । गंधदीव  
 यदित्तइ रस पीचमदित्तइ परस पाठसदित्तइ काववी परसरा ययव कतरां कावे पीटारिकादि प्रकारे धमासिकावना यधित्थारपीज कदीइ — पुग  
 मतेधमासिकावयवहेसे यथासिकावेतिरत्तकसिधया । एव हेमनावन् । धमासिकाय प्रथम तेजमते धमासिकाय एवम् । कज्जवाय इतिप्रत्य उल्लर । गोयमा  
 चारउत्तेसमठे । जेगीतम । एवम समवमवी बुज्जमवी । एवरासित्तिसिचिसारात्पिचम नपुद्गलरसयवकेकायसकेकाभेतिधम्माल्ति काययपुत्ता । दम दीयापदेय  
 ने तीवरेयमे चारपदेयमे पाचपदेयमे चारदेयमे सातपदेयमे पाठपदेयमे नवपदेयमे संख्यातापदेयमे यसख्यातापदेयमे जेभनवन् । धमासिका

सम्पत्त्यं शीघ्रं माः शीघ्रादिभिरितिः प्रकाशयति ॥ एकचक्रैस्त्यादि ॥ यथा सुप्रथमं चक्रं न भवति ईदृशं चक्रं नित्यं सस्य व्यपदिश्यमानत्वात्  
 इतिपुं सकसमयं चक्रं चरं भवति एव धर्मास्त्रिकायाः प्रदेशानां धूमो न धर्मास्त्रिकायति धक्कः स्यात्तत्र निघण्टुपदज्ञानं, व्यञ्जकारभयमसन्तु  
 नोपभ्रमत्यकापेति धस्रुं सिया, जाय एगापदेसुणोविषणं धम्मत्सिकाए नोपभ्रमत्यकाएति वत्तस्रसिया ।  
 सेणुण गायमा । स्रुचक्रं सगाठेचक्रं ? नगाथ ! नोवन्चिकं सगाठेचक्रं । एव त्वे धम्मे वंठि दूसे स्यात्तद्वे

आवपश्य । धर्मास्त्रिकाएतिवत्तद्विद्या । धर्मास्त्रिकाय एव चक्रवत् इतिप्रथं चरत् । गावमा आदृशेसुमन् । विगतम । एष्व ससमन्तौ युक्तनदी ।  
 एगापदेसुंविद्यन्मतेपथस्त्रिकाए धर्मास्त्रिकांस्त्रिकायसिया । एक प्रये ज्ञा पिब चपन धं वाक्कास्रुत्तरे, वेभमवत् । धर्मास्त्रिकाय धर्मास्त्रिकाय  
 एसा चक्रवाय इतिप्रथं चरत् । गावमा आदृशेसुमन् । वेदीतम । ए चक्रसममन्तौ युक्तनदी, तिवारे मोतम कश्चि—संकेतु धर्मतेपथवत् । त स्म प्रयो  
 चने नैवगत् । एतच्छ्रु । एये धर्मास्त्रिकायपदेसुंविद्यन्मतेपथस्त्रिकाएतिवत्तद्विद्या । एव धर्मास्त्रिकायमा प्रदेशे तेवने धर्मास्त्रिकाय एवम् आवायमदौ इ  
 त्वादि । आशंसयदेसुंविद्यन्मतेपथस्त्रिकाए । यावत् एक प्रथं ज्ञा पिब, चपन धर्मास्त्रिकाय तैवने । धर्मास्त्रिकायस्त्रिकाएतिवत्तद्विद्या  
 धर्मास्त्रिकाय एवम् नश्चिये इतिप्रथं । सेणुण गायमा स्रुचक्रं सगाठेचक्रं । तेनिये वेगातम । चक्रनास्रुत्तरे चक्र कश्चोये, धाववा सगाथा चरने चक्र  
 कश्चोये चक्रवत्तौ तदना कठका एसा भवतेपुंया तिवारे मातम वाक्का । भयवत्तस्रुत्तरे चक्र ससमेवकेएव कसे धयोदेवे दूसे याठसे मायए । सेभगवत् ।  
 नदी चक्रनास्रुत्तरे चक्र कश्चोये सवने चक्र कश्चोये, एसा क्वत्ता चरने क्वत्तकश्चोये सवने चक्र कश्चोये, एसा धर्मना चरने चक्र कश्चोये दृ  
 तनकश्चोये धरना स्रुत्तरे चक्रवत्तकश्चोये चासुचक्रने चासुच क्रकश्चोये, माटकना स्रुत्तरे माटक नकश्चोये, एतावता सयचरने धर्म एसा दृढ वक्र  
 चायुध माटक सदनकश्चोये जमाटे वेगातम । जिन चक्रना स्रुत्तरे चक्र कश्चोये पवि तेवने चक्र नकश्चोये सगाथाकोज चक्र तेवने चक्रकश्चोये । तेच ध  
 च भगातम । एसा चक्र एव धर्मास्त्रिकाय प्रदेशे तेवने धर्मास्त्रिकाय नकश्चोये इत्यादि । चावएगापदेसुंविद्यन्मतेपथस्त्रिकाएतिवत्तद्विद्या ।

पद्वति ॥ अथशेहस्यादि ॥ यातयथा बर्णादि रतयथा रूपी अमूर्त्तं । तनु निःस्वभावा मत्र पपुदासद्युतित्वात् प्रायता द्रव्यतो ऽयस्थितः प्रदेक्षत ॥ स्तोत्रद  
 वति ॥ स्तोत्रस्य पञ्चाक्षिकायात्मकस्या क्षमूत्र द्रव्य स्तोत्रकद्रव्य प्रायतद्वति पर्यायतः ॥ शुक्लमिति ॥ कार्यतः ॥ ममशुक्लमिति ॥ श्रीबुद्धसामां गतिपरि  
 कृतानां कस्युपद्रुमहेतुं मरस्याना कलमिर्वेति ॥ ठाकशुक्लमिति ॥ श्रीबुद्धसामां स्थितिपरिचयताना स्थित्युपद्रुमहेतुं मरस्याना स्वसमिधति ॥ अथगा  
 रथापुञ्जिति ॥ श्रीबादीना मत्रकाशहेतुं बदराया श्रुंमिध ॥ अथशुक्लमिति ॥ अथशुक्लमिति ॥ अथशुक्लमिति ॥ अथशुक्लमिति ॥ अथशुक्लमिति ॥

ण पीगगाल्त्यिकाए सुणसाह वृष्टाह , खेसुव लोयप्यमाणमेत्ते , काखुव नकयाइनश्यासि जाय निञ्जे ,  
 नायव वसुपते गधरसफासमते , गुणव गहणगुणे , पुगेनते ! धम्मत्तिककायपदेसे धम्मत्तिककाएसि वसुह सि  
 या ? गोयमा ! णोइणठेसमठे , एव दीत्तिवि तित्तिवि अहारि पच व ससि सुठ नथ दस सस्सेजा सु  
 सस्सेजा नते ! धम्मत्तिककाय पदेसा धम्मत्तिककाएसि वसुह सिया ? गोयमा ! णोइणठे समठे , पुगापदे  
 सुणेविपण धम्मत्तिककाएसि वसुह सिया ? णोइ० सेकेणठेण नते ! एव वुञ्जइ , पुगे धम्मत्तिककाय पदेसे

पदवार दम्भार जलभाषायापयमाचमते । पुदस द्रव्य पतनाहे सेवधी शोचप्रमात्र गात्र एतसे अउर राख प्रमाचइ । कासयाभज्यायएनधासि । कासयो  
 कदेरेनयो रमनयो तीनेकाठेइ । कावसिसे भावपात्रवयमते । यावत् भिन्नकै भावयो वयसवित्तइ । यथमते रसमते प्रासमते गजयोगहवगुणे । गधदेय  
 सविवहै रव पात्रसवित्तइ फरस पाठववित्तइ काययो परधर सवय करयो काये दीयारिखादि प्रकारे धर्मास्थिकायभा यधिवकारयोअ अईइ — एग  
 भतेवधालिकायपदेसे यथास्थिकारोतिनकस्यधिसिजा । एक सेममवण । धर्मास्थिकाय प्रदग तेवमते धर्मास्थिकाय एवम् । कववाय इतिप्रय उन्नर । गोयमा  
 वारवु समडे । ज्योतमा । एवम समवतयो मुन्नरयो । एवदीयविधिजलादिपचम नपाइनकरससखेकायसखेकाभतेवधालिकायपदेसा । रस दीयपदेम  
 ने तीनरयेमे वारपदेयने पात्रपदेयने कादेयने सातपदेयने पाठपदेयने नत्रपदेयने द्यपदेयने कववाणापदेयने यधिवकारापदेयने केममवण । धर्मास्थि



यदिति ॥ अथशेइत्यादि ॥ यतएवा वक्षीति रतएवा कृपी धर्मसुः । ननु निःश्वमावो नञ् पर्युंदासयतित्वात् शायता द्रव्यतां उच्यसित् प्रदेयात् ॥ सोऽगद  
 धिति ॥ सोऽगस्य पञ्चास्तिकायास्तकस्या अतूत द्रव्य शोकेद्रव्य नापसदिति पर्यायतः ॥ गुणस्येति ॥ कायतः ॥ शमलगुणोति ॥ जीवशुद्धतामा गतिपरि  
 कृतातां नस्युपद्रव्यहेतुं मत्स्याणा कलमिर्धति ॥ टाकशुभेति ॥ जीवशुद्धतामा स्थितिपरिकृततामा स्थित्युपद्रव्यहेतुं मत्स्याणा स्वसतिवधति ॥ अथवा  
 दक्षानुवृत्ति ॥ जीवादीना मयक्यायेतुं धंरराया कृत्तमिव ॥ अथतगुणोति ॥ कथयोनार्थतन्व साकारताकारजद ॥ शद्व्यगुणोति ॥ यद्वच परस्पररेख

ण पीगाल्तिकाणु स्थणसाइ दक्षाइ , खेसवत लीयप्यमाणमेत्ते , कालत नकयाइनस्थासि जाय निसे ,  
 नायत वक्षमते गधरसफासमते , गुणत गहणगुणे , एगोत्रते । धम्मत्तिकायपदेसे धम्मत्तिकायपुत्ति वत्तह सि  
 या ? गोयमा ! गोइणठेसमठे , एव दीन्तियि तिन्तियि धम्मत्तिकायपदेसे धम्मत्तिकायपुत्ति वत्तह सि  
 ससेज्जा त्तत ! धम्मत्तिकायपदेसा धम्मत्तिकायपुत्ति वत्तह सिया ? गोयमा ! गोइणठे समठे , एगपदे  
 सूणेयियण धम्मत्तिकायपुत्ति वत्तह सिया ? गोइ ० सेकेणठेण त्तते ! एव वुत्तइ , एगे धम्मत्तिकायपदेसे

पञ्चाइ रम्भार जलधावापयमाजमते । पद्वत्त द्रव्य धनताइ केवपी साकप्रमाज माज एतसे चउए ताज प्रमाजइ । कासधानकायएतधासि । कासधी  
 अद्वेएतयो एतनयो तीनेकावेइ । कावद्विखे भावपरवप्यमते । यावत् निस्सवै भावयो वत्तधरित्तइ । गधमते रसमते धासमते गधधोगहवमुसे । गधद्विष  
 सवित्तइ रस पायसधित्तइ परस धाठसधित्तइ कायधी परसए सवत्त करयो कोये पीटारिक्कादि प्रकारे धर्मास्सिकावना धधिकाएकीज अईइ — एत  
 भतेपधधिकावपदेसे धम्मत्तिकायेनिवत्तवद्विधा । एक वेभगवन् । धर्मास्सिकास प्रदम तेजपते धर्मास्सिकाय एवइ । कवत्तयाय इतिप्रत्य उत्तर । गोयमा  
 शारइ समुहे । वेमीतस । एवध समत्तयो शुक्कयो । एवदास्सिधिविधिवत्तारिपवस नयइतवत्तससवेखायसवेज्जाभतेपधधिकावपयपसा । एत धायप्रदेम  
 ने तीनेरयेयने शारप्रदेयने पाञ्चप्रदेयने जग्गेयने सातप्रदेयने जग्गप्रदेयने नवप्रदेयने द्यमप्रदेयने जग्गतापदिमते पञ्चज्जातापदिमते वेभगवन् । धर्मास्सि



शार्दीया गुणः प्ररेषा धनन्ता वाच्या धनन्ताप्रदेभक्तत्वा व्यथाहानमपीति उपयोगगुणो जीवास्तिकात्वाः प्राग्दर्शितो ऽप्यतद्ग्रन्थो जीव इत्यानादि  
 शब्दरति दशापकाः ॥ जीवोक्तिमित्यादि ॥ इत्यत्र स्रष्टाहेत्यादीनि विद्येयवृत्तानि मुक्तमीदृशुदासापार्थिनि ॥ आत्मानावेव इत्यानश्रुप  
 मयमनमोक्षनादिरूपका स्यपरिहानमविद्यायेव ॥ जीवनावति ॥ जीवत्व चैतन्य मुपदप्रापति मस्याश्रुपति इतिवक्तव्यस्यात् विस्मिष्टस्यो त्यानाद् वि  
 काण्यि पृथक्चेव , नवर , तिस्रश्चिपि पपुसा श्रुणसा ज्ञाणियस्य । सेस तथैव । जीविण जते ! स्रष्टाणे स  
 कस्मि सयते सवीरिपु सपुरिसक्कारपरक्रमे श्यायनायेण जीवनाय उच्यते ईति वसस्यसिया ? इता गोयमा !  
 जीविण स्रष्टाणे जाय उच्यते ईति वसस्यसिया । सेकेणठेणजाय वसस्यसिया ? गोयमा ! जीविण श्याजिणि

जी प्रस्य पाशावायता तेवमे वर्मास्तिकात्वा नक्तवोये । एवमवकास्तिकात्वात् । इम वर्मास्तिकात्वाय परि वक्तव्यो । आनासस्तिकात्वा ।  
 पाशावास्तिकात्वाय परि । जीवस्तिकात्वाय । जीवास्तिकात्वाय । पाशवस्तिकात्वायपरिपरचेव । परसास्तिकात्वाय परि इ ए तीनेई इमहीव जीवता । अवरतिवस  
 पि पटेसापवताभाविपवता संसतयेव । एतका विद्येय धर्मास्तिकात्वाय २ पवर्मास्तिकात्वाय २ पवेवता मत्वेवे धसक्ततापठेश कथा यमै ए तीनता धन  
 ताप्रस्य अथवा, वाक्यते पर तिमल कथना । अत्रोक्तसंते स्रष्टाहेत्यक्तव्ये । याता गुण जीवास्तिकात्वाय पूर्वकथा ॥ इति तद्वैयभूत जीवने स्रष्टानादि मुच ते  
 द्रष्टाहर्दे—जीवोक्तिमगावत् । स्रष्टास्य जगोक्ताया ते स्रष्टित मसनादि जिवास्रष्टित ते सक्तस । सयते सवीरिए सपुरिसकारपरकत्ते । शरीरनी समयता  
 रसहित जीवना स्रष्टाव तिस्रहित पुरवना यभिमान ते स्रष्टित कामपरा जीवो । आश्रमावेव जीवभावेवस्रष्टतेतीतिवत्तवसिया । आश्रमाय स्रष्टान  
 शब्दत यमनादिरूप पाशवपरिहानम विद्येय तिस्रहेवरो जीवभावेव जीवयथा पतावता चैतन्यपयो द्रष्टाहे मत्कार्ये इतिपठना अथवाय इतिप्रत्य उच्यते । इता  
 गायमा । जी मौतम । जीवस्रष्टाहेत्यावस्रष्टतेतीतिवत्तवसिया । जीव स्रष्टान ययनादि पाशवपरिहानमविद्येय तेव यावत् जीवभावेव चैतन्यपयो द्र  
 ष्टाहर्दे—एवका कथना वृथे । सेकवद्वय काववत्तवसिया । ते से पाश वावत् चैतन्यपया द्रष्टाहेई इम कथना इतिप्रत्य उच्यते । गोयमा जीवेष पवता

एकदशे भोममपि वस्तु वस्त्येव यथा क्वचिदपि पटो पटएव सिक्ककर्मापि शाहीय तत्रतित्व-एकदेष्टापिकतमनन्यवदिति ॥ सेकिगप्राति ॥ अथ कि  
 पुनरित्यर्थः ॥ अथेति ॥ समस्ता क्षेत्रे देशापक्षपापि प्रवन्ति प्रकारकार्स्मर्यपि सवशात्प्रपृष्टे रित्यतश्चात्र ॥ कसिक्वन्ति ॥ करका नतु सदेकदेशापि  
 कथा सवदल्प क्षत्र स्वसमावर्हिता अपि प्रवन्तीत्यतश्चात्र प्रतिपूर्णां शासस्वक्षत्रेणा विकला क्षेत्रे प्रदेशान्तरापेक्षया स्थलमावन्तुनाथपि त  
 याव्यन्तश्चात्र ॥ विरवववति ॥ प्रदेशान्तरतोपि स्वसमावेना भूमाः तथा ॥ र्गणाद्वक्त्रमद्विपति ॥ एकग्रन्थे नैकशब्देन धर्मास्तिकापहत्येय  
 सख्येन पृथीता ये ते तथा एकशब्दन्तित्वेना हस्यं एकार्थां शैतेशब्दाः ॥ पयसाश्वकतानाविययति ॥ धर्मापमयो रसद्वया प्रदेशा सक्ता चाका  
 मोयत् । सैतेणठिण गोयमा ! एववुसुइइ एगोधम्मत्तिकायपदेसे णोधम्मत्तिकायपुसिचहसुसिया जाय पुआपदे  
 सुणोवियण धम्मत्तिकाय नोधम्मत्तिकायपुसि वनसुसिया । सेकिसाहणत्तत ! धम्मत्तिकायपुसि यत्तसुसिया ?  
 गोयमा ! सुत्तसुत्ता धम्मत्तिकायपुत्ता तेसुसि कसिणा पात्तिपुत्ता निरवसेसा एकागहणगाहिया पुत्तण  
 गोयमा ! धम्मत्तिकायपुसि यत्तसुसिया । एवसुत्तहम्मत्तिकायपुसि श्यागासत्तिकाय जीवत्तिकाय पोत्तात्तित्ति

वाक्त् पञ्च प्रदेशे च वा धर्मास्तिकाय नक्वचिदे, एभिरे सप्रश्नेमते कथा पन्नि सवद्वार नयनेमते पञ्च देशेकरी न्यून पन्नि वपु ते वपुहीच कश्चिदे कि  
 मथावा पन्नि वका चहाहीच कश्चिदे, कथा कानना पन्नि कृतरो कुरराहीच कश्चिदे इम श्याहापुदय इत्यादि साधवा । सेकियाएवधमतेधम्मत्तिक  
 एतित्तनत्तसिसिवा । ते कानने व्याति प्रसिद्धेने चोरे शुभयवत् । धर्मास्तिकाय इमां करवाय इतिप्रश्न उत्तर । गावमा यत्तसुत्तपाव्यत्तिकायपदेसानेधर्मी  
 कसिवापद्विपुत्ताविरवसवा । इमौतम यत्तकानता धर्मास्तिकावना प्रदेशे ते सर्वे समय प्रतिपुत्त यावत्तरूपे करो तिक्कममवौ ते पन्नि प्रदेशान्तरस्यकी  
 पन्नि स्वसमावेकरी क्यत नवी एतदे एव प्रदेशाना पन्नि यत्तनवी । पण्यवक्त्रमद्विपति । एव ग्रन्थे धर्मास्तिका एवमे सववेकरी के एसव मक्त् एकाएके ।  
 एसव गावमा क्क्यात्तिकापित्तवत्तपसिवा । एवने जगौतम । धर्मास्तिकाय कश्चिदे इवा यथापार्थ धर्मास्तिकायना यत्तकानता प्रदेशे तेमन्नि वा एव

भस्मरु बीजविभक्त्यासुत्र मुख्य मय तदाधारस्वेना काशीविभक्त्यासुत्राणि ॥ कतिनिवेदयन्ती । इत्यादीनि ॥ तत्र साक्षात्सोकाकाशयो सत्त्व मिद-यर्मा  
 दीनापुति इत्याकाशवतिपत्रतपुत्रेण । तत्रैकोःसहसोक्त सतिपरीतस्वामीकास्य निसि ॥ १ ॥ ॥ श्रीगणपतयेकमित्यादि पदप्रकाश सत्र सोकाकाशे ५  
 चिक्करु बीजति सम्पुञ्जानि बीजद्वयादि ॥ बीजस्यैव बुद्धिपरिक्रियता आदयो चिन्तागा ॥ ॥ बीजपुष्पसति ॥ तस्यैव बुद्धिकता एव  
 प्रकृष्टादकाः प्रकृष्टा निर्विजन्ताया नामा इत्यर्थः ॥ यदीजति ॥ यस्मात्तिकायादयः पशु सोकाकाशो बीजत यदीजत तेषुके सद्देसप्रवेसा स्वप्रोक्ता य

गोयमा ! जीव सउठाने जाव धसुहासिया । कश्चिद्वेणन्ते ! श्रुगासे पयस्ते ? गोयमा ! दुविहं श्रुगासे  
 प० त०—श्रुगागासेय श्रुलोयागासेय, श्रुलोयागासेयन्ते ! किजीया, जीवदेसा, जीवपुष्पा, श्रुजीया,  
 श्रुजीवदेसा, श्रुजीवपुष्पा ? गोयमा ! जीवायि जीवदेसावि जीवपदेसावि श्रुजीवावि श्रुजीवदेसावि

नोयमासुत्राणि ॥ इति तेषावना पाथार पाकायाचिन्तासुत्र कश्चि—कश्चिद्विषयमते यगासे पयस्ते सायागामेय यसायागासेय । केतसे प्रकृते वेमगवन् ।  
 यात्रायाकथा इतिपय वेगोतम । द्विदुभदे यात्राया कथो ते कश्चि—साकाकाय १ यथाकाकाय २ तिर्वा साकाकायार्ता एषज्ज यर्मास्त्रिकायादि  
 इत्य चिन्तासुत्रे ते साकाकाया ते कश्चो दिपरोत त यसाकाकाया कश्चिसे । सायायासुत्रमते किन्तोयाओनदेसाओपदेसा । साकाकायनेविय वैमगवन् ।  
 यन्तीव इत्यादि इमय तिर्वा साकाकाया यदिक्करवनेविय 'ओमति, सपुत्र ओवद्रथ ओपदय आशनोभवुदि कन प्रकट देय ते मदेयनिर्विभागा इत्य  
 य । यन्तीवा यन्तीवदेसा यन्तीवपदेसा । यन्तीव यर्मास्त्रिकावादिक्क ४ यथावदेसावादिक्क विभाग ५ यन्तीवनिर्विभागा ६ । यायमा ओवादि । सुमीत  
 म । ओव परिक्क १ । ओवदेसावि । ओव देयपरिक्क २ । ओवपदेसावि । ओवना मदेय परिक्क ३ । यन्तीवावि । यन्तीवपरिक्क ४ । यन्तीवदेसावि  
 यन्तीवनादिय परिक्क ५ । यन्तीवपदेसावि । यन्तीवना मदेय परिक्क ६ । यन्तीवातेनियमापरिक्किया । के कावहे नियै एक्केद्रीओव । वेरटिया तेर दि  
 वा यसरिदिया परिक्किया यन्तीवदिया यन्तीवदेसा । वे इत्योव ते इत्योव यसरिद्रीओव पचेद्रीओव सिरकोव के ओवना दिय । तेचिन्ताया एगोदिव

शिष्टचेतना पूर्वकस्यादिति ॥ सर्वतावमाभिधिवीथियेत्यादि ॥ पयवाग प्राणाहता प्रायिनगाः पतिच्छ्वरा, सेषा मन्ता प्रातिनियोधिकज्ञानस्या शी  
 उत्सामा मादितिवोधिकज्ञानपयवावां सम्यन्धिन मज्जामभितिवोधिकज्ञानपयवासासकमित्यर्थ, उपयोग चेतनायिषीय गच्छतीतियोगः उत्सानादा  
 याल्लनायेवसमान इतिवृत्तयसं यथ यशुत्सानाद्यास्सनावे वसमाना जीव प्राभितिवोधिकज्ञानाद्युपयोगं गच्छति सरिद्ध मंतावसेव जीवसाव भु  
 पद्वापतीति षष्ठाया स्या दित्यास्तुत्या ॥ सर्वयोगेत्यादि ॥ अत उपयोगस्तस्य जीयत्वाय मुत्सानाद्यास्समायतो पद्वापतीति षष्ठाया स्या द्येति, अ  
 धोदियनाणपञ्जायाण एव सुयनाणपञ्जायाण तृहिनानाणपञ्जायाण मणपञ्जावनाणपञ्जायाण केवलतनाणपञ्जायाण  
 महस्युक्तायुपञ्जायाण सुयस्युक्ताणपञ्जायाण विनगानाणपञ्जायाण अरकुदसणपञ्जायाण स्युचरकुदसणपञ्जायाण  
 तृहिसणपञ्जायाण केवलदसणपञ्जायाण उचरगगच्छद, उचरगगच्छकणं जीवे संपुण्ठिण एव वुच्छद,

वं प्राभिविवाधिरवापय्यवावं । जेगोतस । जीव अत्रता मठिवाभ यवसिवाभ्रकचै उपयाग अतता दियेव प्रते वाह, इतियाग, अलाभादिह्य अरकभभव  
 निवेपे पत्ते अहता दोषा भगा नद्योय ते पदीव अयोरे । एवंसुपराय पय्यवाव । इम अतता तुलजातना पयाय । प्रादिवावपय्यवावं । अतता अह  
 वि जानता पयाय । मरपय्यवावपय्यवावं । अतता मज्जयर्धव जानता पयाय । वेरसवावपय्यवावं । अतता वेरसजानता पयाय । मरपयावपय्य  
 वाव । अतता मठि अमानता पयाय । सुपयवावपय्यवावं । अतता तुल अमानता पयाय । विभगवावपय्यवाव । अतता विभगजानता पयाय ।  
 अरकसवपय्यवाव । अतता अरुदमज्जा पयाय । अरकससवपय्यवाव । अतता अरुदमज्जा पयाय । अतता अरुदमज्जा पयाय । अतता अरुदमज्जा  
 ना पयाय । अतता रसवपय्यवाव अरुदमज्जा पयाय । अतता वेरसजानता पयाय उपयाग अतता अतता अतता अतता अतता अतता अतता अतता अतता अतता अतता  
 न । अतता अरुदमज्जा पयाय । अतता अरुदमज्जा पयाय । अतता अरुदमज्जा पयाय । अतता अरुदमज्जा पयाय । अतता अरुदमज्जा पयाय । अतता अरुदमज्जा  
 नं भावता एवमुत्तर । ते तेव एव जीतस । इम अरु । गावमात्रावे अरुदमज्जा कावतअविधया । जेगोतस । जीव अतत्यान यावत् अरुदमज्जा

मन्तर जीवचिकित्सासूत्र मुख्य मध्य तदापारत्वेना काष्ठचिकित्सासूत्राच्च ॥ कतिविधैश्च पत्ते । इत्यादीनि ॥ तत्र लोकास्तीकाकाशयो संशय निवृ-धर्मा  
 दीनाद्यसि इत्याकाशततिपत्रतसूत्रेण । तैर्द्वैःसहस्रीक स्तद्विपरीतद्व्यसीकास्य मिति ॥ १ ॥ लोनागाशेकमित्यादि पदप्रभा सत्र सोकाकाशो ७  
 चिकित्से जीवति सम्भुक्तानि जीवद्वयानि ॥ जीवद्वयानि ॥ जीवस्यैव बुद्धिपरिकल्पिता आदयो चिदागाः ॥ जीवप्यस्यसि ॥ तस्यैव बुद्धिपत्ता एव  
 प्रकृष्टादशाः प्रकृष्टा निर्दिष्टाया ज्ञाना इत्यर्थं ॥ अतीक्षति ॥ धर्मास्तिक्कापादयः ननु सोकाकाशो जीवा अतीक्षा सेत्सुके तद्विद्यप्रदशा स्तधीक्षा ए

गोयमा ! जीवे सउठाने जाव धसुष्ठंसिया । कक्षयिहेणन्नते ! स्यागासे पस्यते ? गोयमा ! दुविहे स्यागासे  
 प० सं०—लोयागासेय स्यलोयागासेय, स्यलोयागासेपन्नते ! किजीवा, जीवदेसा, जीवपणसा, स्यजीवा,  
 स्यजीवदेसा, स्यजीवपणसा ? गोयमा ! जीवायि जीवदेसायि जीवपदेसायि स्यजीवायि स्यजीवदेसायि

तैश्चतस्रश्चक्राः ॥ द्विश्च तेषामना पाथार पाथान्यचित्तासूत्र कश्चैहै—अरुविशेषमते अत्मासेपयुते सायायामेव अज्ञानागासेय । केतसे प्रकृति हेमगावन् ।  
 पात्रायकशा इतिपय, हेमोतम । विदुमेदे पात्राय कष्टो ते कश्चैहै—साकाकाय १ अज्ञानाकाश २ तिष्ठा साकाकायभा एवमथ धर्मास्तिक्कावादि  
 इय विधासुदे ते साकाकाय, तेहवी दिपतेत त अज्ञानाकाय कश्चोते । साधामासुधमते किंभावोवदेसाकोपपदेया । साकाकायानेविप हेमगावन् ।  
 स्य जीव इत्यादि इमत्र तिष्ठा साकाकाय पविक्करवनेविप 'कोपयि, सपुत्र ओवद्रथ कोवदय आधनोक्तुदि छत्र प्रकट देय ते प्रदेयनिर्वैभाम इत्य  
 थ । अज्ञोवा अजीवदेसा अजीवपदेसा । अजीव धर्मास्तिक्कावादिथ ४ अथोवनिर्भाम ६ । गोयमा ओवादि । हेमोत  
 म । कोव पविक्के १ । ओवदेसादि । कोव देयपविक्के २ । ओवपदेयादि । ओवना प्रदेय पविक्के ३ । अज्ञोवायि । अजीवपविक्के ४ । अजीवदेसायि  
 अजीवनादेय पविक्के ६ । अजीवपदेसादि । अजीवना प्रदेय पविक्के ६ । अज्ञोवातेनिधमापयितिया । छि ओवहै नियै एकेद्रोषीव । वेद विद्या तेह दि  
 सा अथदिदिवा पविक्केवा अविक्केवा अजीवदेसा । वे हेद्रोकोव ते हेद्रोकोव अठदिद्रोकोव पञ्चेद्रोकोव सिद्धकोव छे जीवमा देय । तेषिधमा एतेदिद्व

शिष्टचेतना पूर्वकत्यादिति ३ अहंताहंमानिश्चिद्योदियेत्यादि ३ पयथाः प्रथाहंता अविज्ञाना पतिच्छदा, स्तेषा भक्ता आनिनिर्बोधिकज्ञानस्या सो  
 उत्कर्षात्ता मातिनिर्बोधिकज्ञानपयथाहा सम्बन्धिन् भगन्तानिनिर्बोधिकज्ञानपयथात्मकमित्यप, उपयाग जेतनाविशेष गच्छतीतिपाग उत्थानादा  
 धात्मत्वादेवतमाय इतिदृश्यस्य अथ यद्युत्थानाद्यात्मत्वादे धात्मतानो कीच आनिनिर्बोधिकज्ञानाद्युपयायं गच्छति तारिह सेतावर्तेव कीयमाव मु  
 पदसंपतीति वक्ष्य स्या रित्यासाङ्गुहा ३ उच्छेतेत्यादि ३ अत उपयोगतस्य कीयजाव मुत्थानाद्यात्ममाधनो पदसंपतीति वक्ष्य स्या दवति अ  
 योहियनाणपञ्जवाण एव सुयनाणपञ्जवाण त्रीहनाणपञ्जवाण मणपञ्जवनाणपञ्जवाण केवलनाणपञ्जवाण  
 महृष्यक्षासुपञ्जवाण सुयष्यक्षाणपञ्जवाण विज्ञानाणपञ्जवाण चरकुदसणपञ्जवाण स्यचरकुदसणपञ्जवाण  
 त्रीहदसणपञ्जवाण केवलदसणपञ्जवाण उयतमागच्छेद् , उयतमाउत्स्कण्णेण जीवे संपुण्ठिण एव धुच्छेद् ,

चं पाणिश्चिदाश्चिदावपञ्जवाचं । हेमोतस । कीद अर्थात्ता मादिज्ञान पर्यायात्मकह्यै उपयाम अतना विद्येय प्रते आह, इतिपाम, उत्थानादिह धात्ममाय  
 निर्वये अथ जेहना योका भाव जहोय ते पर्याय अहोये । इतंसपथाच पञ्जवाच । इत अतना युतज्ञानना पथाय । आदिथावपञ्जवाच । अतसा अह  
 दि ज्ञानना पर्याय । मन्वपञ्जवावपञ्जवाच । अतना मनपर्यय ज्ञानना पर्याय । जेहदाथावपञ्जवाच । अतना केवलज्ञानना पर्याय । महृष्यावपञ्ज  
 वाच । अतना मादि अज्ञानना पर्याय । सुपयथावपञ्जवाच । अतना युत अज्ञानना पथाय । विभगावावपञ्जवाच । अतना विभगाज्ञानना पर्याय ।  
 अहृदमन्वपञ्जवाच । अतना अहृदयानना पर्याय । अथच्छेदसहपञ्जवाच । अतना अथसुदयानना पर्याय । पाहिदंसहपञ्जवाच । अतना अथविद्येयान  
 ना पर्याय । अथथ अथपञ्जवाच अथधामपञ्जवाच । अतना केवलदयानना पथाय उपयाग अतथधाम प्रते आह उत्थानादि धात्ममाधने दिद्यै ज्ञानमा  
 न । अथधामपञ्जवाच ज्ये । उपयाग अथअजोव एतथाभाट उपयानासयच कीदप्रते उत्थानादिह धात्ममाधेकरी जेहानि एहय अहवाय । सेतेचह्ये  
 चं धादमा एवमुत्तर । ते तसे चर्ते जेतेतस । इत कस्यु । माहमात्रादि सुहृदाथ आहवतन्वमित्या । जेपालस । कीच अउत्थान वातत् अहवाय अतनरेकी



शिष्टवैतना पूर्वकत्वादिति । अहताहमानिबिबोदियेत्यादि । पयसाः प्रहाकता अविनागाः पतिष्वदा, सेना भन्ता आत्तिनिबोधिकज्ञानस्या सी  
 उत्पन्ना मात्तिनिबोधिकज्ञानपयसाहा सम्बन्धिन् भगन्तामिनिबोधिकज्ञानपयसात्मकमित्यप, उपयोग ज्ञानाविशेष शब्दसीतियाग उत्पानादा  
 वासनादेवतामात्र इतिङ्गपस्यं अथ पशुत्वाग्रासनात्तं ज्ञानमात्रे कीद आत्तिनिबोधिकज्ञानाद्युपयत्तं गच्छति तत्रिक सेतावर्तव वीयसाव मु  
 पदक्षयतीति वक्तव्य स्या रित्यादाद्वाह । वक्तव्येत्यादि । अत उपयोगसद्व्य वीयसाव मुत्वाभाद्यासमावर्तो पदक्षयतीति वक्तव्य स्या द्यवति अ

योहियनाणपञ्जाथाण एव सुयनाणपञ्जाथाण तीहिनानाणपञ्जाथाण मणपञ्जावनानाणपञ्जाथाण केवलनानाणपञ्जाथाण  
 महृष्यकाशुपञ्जाथाण सुयष्यकाणपञ्जाथाण विनानानाणपञ्जाथाण चरकुदसणपञ्जाथाण स्युचरकुदसणपञ्जाथाण  
 तीहिसणपञ्जाथाण केवलदसणपञ्जाथाण उधत्तगगच्छुद, उधत्तगलस्कणेण जीये संपुण्ठेण एव वुसुद,

च यामिबिबिवाहिरवाणपञ्जाथाण । वेतोत्तस । कीद अहता मात्तिज्ञान पर्यायात्मकत्वे उपयाय अतना विशेष मत्तं जाह, इतियाग, उत्पानादिह आत्ममात्र  
 निबिबे वत्तं अहता योका भाग जहाय ति पर्याय कश्चिदे । एवंसुयथाव पञ्जाथाण । इम अतन्ता मुत्तज्ञानना पर्याय । याहिवाणपञ्जाथाण । अतन्ता अह  
 दि ज्ञानना पर्याय । महृष्यकाशुपञ्जाथाण । अतन्ता मत्तपर्याय ज्ञानना पर्याय । केवलवाणपञ्जाथाण । अतन्ता केवलज्ञानना पर्याय । महृष्यकाशुपञ्जा  
 थाण । अतन्ता मादि अज्ञानना पर्याय । सुयष्यकाशुपञ्जाथाण । अतन्ता अत अज्ञानना पर्याय । विसगवाणपञ्जाथाण । अतन्ता विभयज्ञानना पर्याय ।  
 अहृदसणपञ्जाथाण । अतना अहृदसणना पर्याय । अहृदसणसद्व्यवथाण । अतना अहृदसणपञ्जाथाण । अतन्ता अहृदसणपञ्जाथाण । अतन्ता अहृदसणपञ्जाथाण ।  
 ना पर्याय । केवल इवणपञ्जाथाण उपयायपञ्जाथ । अतन्ता केवलसद्व्यवथाण पर्याय । अतन्ता अहृदसणपञ्जाथाण । अतन्ता अहृदसणपञ्जाथाण । अतन्ता अहृदसणपञ्जाथाण ।  
 न । अहृदसणपञ्जाथाण । अतन्ता अहृदसणपञ्जाथाण । अतन्ता अहृदसणपञ्जाथाण । अतन्ता अहृदसणपञ्जाथाण । अतन्ता अहृदसणपञ्जाथाण । अतन्ता अहृदसणपञ्जाथाण ।  
 च याममा एववुद । ते तत्रे पर्ये अपीत्तस । इम कञ्चु । मावमात्तात्तं अहृदसणपञ्जाथाण । अतन्ता अहृदसणपञ्जाथाण । अतन्ता अहृदसणपञ्जाथाण । अतन्ता अहृदसणपञ्जाथाण ।



तिव धर्मीयप्यस्यति, इत्येत द्वापत स्या दक्षुना स्वंपानात्वा बीधपद्वेन गृहणात् ॥ बीधरूपीतेष्वपिदेत्यादि ॥ धर्म्यभाष्यरूपिष्वो दक्षविषा उक्ता  
 सत्याया-धाकाशासिद्धाय सार्धेभ सारप्रदेष्य देत्येव धर्माधर्मासिद्धिकापी समपद्येति दश इहसु धनदस्या काशस्या पारत्येन विद्यच्छितात्वा तादात्त  
 याः सप्त दक्ष्या दाबन्ति नच तेन विवक्षिता दक्ष्यमात्रकारणा द्युपिविद्यिता क्रानाह पञ्चेति धर्ममित्याह ॥ धर्मतियकायत्त्यादि ॥ इह बी  
 दान्ता पुद्गलानात्र बहुत्वा हेकस्यापि बीधस्य पुद्गलस्यवा स्यात् सङ्कोचादितथाविषयविरुद्धानवभागा इहयो बीया पुद्गलाय तथा तद्विधा सारप्र  
 देष्याय सम्भवन्ती तिष्ठत्या बीधाय बीधप्रदेशात् तथा रूपिद्गन्थापेक्षया धर्मीयाया बीधप्रदेशाया बीधप्रदेशायेति सङ्गत मकशा प्याशये  
 नदवती दक्षुप्रपस्य सद्भावात् धर्मासिद्धिकापादीतु द्वितपमेव मुख्य यतो यदा धर्मपूर्वं यस्तु विवक्ष्यत तदा धर्मासिद्धिकापादी त्युच्यते तद्वशात्  
 धर्मापान्तु तत्प्रदशादिति तथा मवस्थितरूपत्वात् तद्विषयकत्वना स्वयुक्ता तेषा भनयस्थितरूपत्वादिति यद्यपिषा मवस्थितरूपस्य बीधावित्दशा  
 ना मप्यसिद्ध तथापि तेषा मकशा शये नदेन सम्भव प्ररूपत्वाकारण निरस्तु त यथासि धर्मासिद्धिकापादां रेकत्वा दसङ्कोचादि धर्मकत्वार्थेति, अत

धी तेष्वचिविहा पयासा, तजहा-धम्मत्तिकारु नोधम्मत्तिकारुससडेसे धम्मत्तिकारुससपदेसा । स्थधम्मत्तिकारु

व्यपदेसा । इहा बीधना पुद्गलना बहुल दक्षो एकश्रीपने तथा पुद्गलेन स्वानने संकाशादि तथादिष्व परिधामवभावन्ती यथाञ्चोव तथा पुद्गल तेजना  
 देय तेजनापदेय समवे दसकारोने चोव १ चोवदेय २ चोवप्रदेय ३ तथा रूपोद्गलानो यपयति, यकीव १ यकीवदेय २ यकीव प्रदेय ३ इवे, ते य्नाथ  
 धी एक यामयने भेदवत यद्यु तौनना सहायन्ती तिस धर्मासिद्धिकापादिकोविदै बहीज भेद युल केमाटे विचारि सपुद्गलस्य विवक्षिते नो धर्मासिद्धिकाय  
 एवम चोवे धर्म तेजना धयानी विवद्याकीचेती तेजना प्रदेय दस चोवे, तेजने यवस्थितरूप यथाधी तेजनीशानि छित्तही परि तेजना देयनी कस्य  
 ना यदुल ते देयने शानि छिदिपचावी यथापि धनदक्षितरूपयथा बीधादि देयने परिच्छे तथापि एकत्र धान्यये भेदकारी समवे प्ररूपयान् कारण तेइहा  
 मधी धर्मासिद्ध धर्मासिद्धासाद्विदने एवमपचावी यथाकोषादिपचावी एतत्तानाटिच धर्मासिद्धिकायादि देयनिपेधयानेकारणे कश्चिद-बोधधर्मतियकायस्युदे

य एवमित्थं श्रीधाराश्रितिरिच्छता द्वैधादीनां तथा श्रीधारीधरश्चे किं देशादिपदव्येमेति १ नैय निरवयवाधीधारादपरति मतव्ययव्येदापरत्या दस्येति  
 यत्रोत्तरं ३ योयमा । श्रीधारीत्यादि ३ एतेन धाराप्रसङ्गस्य निर्द्वयम मुक्तं यथां त्यस्य प्रसङ्गस्य नित्यवतनमाह ॥ वेधप्रतीयेत्यादि ३ कुर्यादिति ॥ नू  
 तः शुद्धता इत्ययः ३ अरुवोपति ३ अमूर्तां अर्थास्तिष्ठायादय इत्यर्थः ३ कुर्याति ॥ परमाधुप्रकपालकाः स्कथा स्कथदशा द्यादयो विनायाः स्क  
 थपरक्षा कास्यैव निरक्षा संज्ञाः परमाधुशुद्धताः स्कथनाव भनापका परमावयवइति तथा सोकाकायो कृपिद्रव्यायेषया , अजीयतिव अजीयदेसा  
 अजीयपदेसायि । जेजीया तेनियमा पुनिदिया येइदिया तेइदिया चउरिदिया पचिदिया अणिदिया ,  
 जेजीयदेसा तेनियमा पुनिदियदेसा जाय अणिदिपदेसा । जेअजीया ते दुविहा पणसा , तजहा—कुर्या  
 य अरुवयीय , जेकुर्या ते चउविहा पणसा , तजहा—स्वधा स्वयदेसा स्वयपदेसा परमाणुपीमाहा । जेअरु

देसा । ते नित्यै एवेदोबोयना देय इच्छादि । आरथयिदियदेसा । यावत् विवतनादेयकै । अश्रोवपदेसातनियमाएनिदियपदेसा । वे आयना प्रदेयहे ते  
 नित्यै एवेदोना प्रदेय । आरथयिदियपदेसा । यावत् अतिशोना प्रदेय सिवतना प्रदेयकै । वे यजोवा ते दुविहा पणसा तजहा रूढाय अरुवयीय । वे य  
 जोवकै तेवना तेनेव कथा तेकुर्येइ—रूपो यजोव परपो यजोव समन्ति धर्मादिइहादि इच्छा । वेरूपो तजउविहा पणसा तजहा । वेरूपो यजोव  
 ते पुइव तेवना चारभेइ कथा तेकुर्येइ—एषा स्वयदेसा स्वयपदेसा परमाणुपीमाया । परमाणु प्रथवरूप १ द्वादिक् विभाग २ तेवनाभिदिभाग यय  
 ३ च्छमात्र प्रते नपाया । ते परमाणु कुर्येवे ३ एतत्के भावावागमविदे रपो प्रवपायाने अशोयादि अशोवदेयावि अशोवपदेयावि एषय कुर्यो ययु  
 दे कथना स्वयने श्रीयपदेकरी यथा । वेरूपो तपयविहा पणसा तजहा अर्थास्तिष्ठाए । वे अरूपी ते पण प्रकारना कथा ते कुर्येइ—शोके स्थानके  
 परपो इयमाकारना कथा तेनियमा धावायासिष्ठाकाह १ तद्वेय २ तयदेय ३ एव धमना ४ अधमना ५ अजासमय ६ ते इहां तीजभेइ अहित याजाय  
 ने याधारपदे कथा तेवना ययिइ यान भेइ कथना ययि वे इहां नकथा कथमाव आरुवकुर्यो ते कुर्येवे एवेति । धावायासिष्ठाकाहने



एव यस्मात्किंवायावर्देवनिपथायाह ऽ नोयस्मत्सिद्धायास्वदेसे ऽ तथा ऽ नोयस्मत्सिद्धायास्वदेसेति ॥ इतिस्मिन्नारो व्याह अरुयिषो दद्या समुदय  
 सद्द्वं प्रकृति भीसेयापयसंहि वा भीसेयान्नवेद्या नो देसेह तस्व अरुवठियपमाहत्तयसं तेष नदसेह नितुसेो वापुबदेससद्द पयसु कष्ट सो सधि  
 सपापयववहारत्वं परद्वद्वसुसकादिभयववहारत्वात्ति ॥ तत्र कथियये पर्मासिद्धायादिवियय मो देशस्य व्यवहारो—यथा पर्मासिद्धायाः स्यादर्थो नो द्वं  
 सोकाकास्य व्यापरोत्ती त्यादि सारथ तथा परद्रष्टेह अहसोकाकाशाभादना यः स्यास्य स्वर्धनादिगतो व्यवहारो यथा कटुसोकाकाशोन पर्मासिद्धा  
 यस्य दय्य स्वययते इत्यादि सारर्थोभिति ऽ अगुतासमयति ॥ अगुताकाल स्तल्लक्ष्यः समयः कथो ऽहतासमयः सर्वैकयव क्षमामानव्यवसद्वयः अतीतामा  
 जतयो रसव्यादिति कत सोकाकाशयतप्रपद्रुस्य नियचन मया सोकाकाशांभतिप्रमय व्याह ॥ पुच्छातहवेवसि ॥ यथा सोकाकाशाप्रसे तयादि—  
 यस्मोकाकाशस्य प्रत । वि भीजा श्रीवदसा श्रीवप्यस्या प्रवीवा प्रसोषदसा प्रवीवप्यस्यति ऽ निर्वाचन स्येया पश्यामपि नियच स्तथा ॥ एतेप्रवीव  
 रद्वरसति ऽ यस्मोकाकाशस्य देष्टान्व सोकासोकरुपाकाशाद्व्यस्य प्रागकयत्वात् ॥ अगुरुभस्वरुपसि ऽ गुरुसपुस्थाभ्यपदयत्वात् ऽ अकतेहि अगुरुपयत

कापु नोश्च्यभ्रमत्सिकायस्वदेसे श्च्यभ्रमत्सिकायस्वपदेसा । श्च्युतासमपु । श्च्युतोयाकासेण व्रते ! किञ्जीवा ?  
 पुच्छा तहवेव , गोयमा ! नोञ्जीवा जाय नोश्च्यजीवप्यदेसा । एतेश्च्यजीवद्वदेसे श्च्यगुरुयलङ्गापु श्च्युतांताहे

से नो यथश्रद्धिभावयथदेसेति । ते देय माह पर्मासिद्धायादिक्वने अथा ते क्वदियगतत्वववहारनेभ्यं तथा परद्रष्ट्य अयनादिगतत्वववहारनेभ्यं ति  
 वा क्वदियतेष देयत्वववहार ते क्वदेवै—यिन पर्मासिद्धाया क्वदेयेकरी अरु सोकाकाशाप्रते व्यापै, तथा परद्रष्ट्य अयनादियगतत्वववहार क्वदेवै—किम  
 अरुताकाशायेवरो पर्मासिद्धायायनो येयस्यापि तेवने भव देयकथा । यथासमए पर्मायागाचैवभेति किञ्जीवापुच्छा तहवेव । कास ते स्यथव समय यव  
 ते यवहोह वतमान वयववपुदे यतीत यमापतनेविदे यसभयको जोकाकाशायतप्रयुजा अरु क्वथो ऽ इति यथांकाकाशाय प्रते पूछेवै—यथांकाकाशापने  
 विदे देयमवत् । अ जोह रक्तादि प्रय दिनप्रपुच्छा । गायमा जोकोवा व्याह भी यकोरपदेसा एतेप्रवीवद्वदेसे । हे भीतस । अयनो नियच अकतेो ना

इयमशुद्धिति ॥ अन्तर्त्तं स्वपर्यायपर्यायकत्वे नुंश्चै र्मुक्तसपुस्तनाये रित्यर्थे ॥ सद्वागनाये अर्थांतमागुंशेति ॥ लोकाकाशस्या लोकाकाशात्पंचायत उभ  
 नानागणक्यत्वादिति अथा भक्तरोकात् परमांसिकाकाशादी अप्नात्तसो निरूपयत्काह ॥ अन्तर्त्तित्वात् ॥ केनहासत्यसि ॥ सुप्तमाक्यत्वात्पत्वा किं  
 हास्य किं महत्त्वं पत्वा सी किमहत्त्वं ॥ लोकोति ॥ लोको लोकाप्रसितत्वात् लोकाक्यपरदेशा इव उच्यतेच ॥ पञ्चतिकापमहयलोयमित्यादि ॥ लोको  
 वासी अन्तर्त्त इत्था प्रसित मय्युक्त क्रियवृत्तित्वात् वाचापस्येति लोकाभाषो लोकापरिमात्रः सच किञ्चिन्न्यूनोपि अयत्वात्ततः स्या रित्यस्य काह ॥ लो  
 यथाभावात्तिलोकाप्रमाणा लोकाप्रदेशप्रमाणात्स्य तात्प्रदेशाना सञ्चा म्योन्यामुत्पद्येन स्थित इत्येतदेवाह ॥ लोयकुशेति ॥ लोकोन लोकाकाशात् सक्तस्य  
 प्रदेशैः स्फुटो लोकरूपेण स्यात् लोकाप्रदेश सक्तस्यप्रदेशो र्स्फुटतातिष्ठतीति, सुप्तसांसिकाया लोका र्स्फुटता तिष्ठती त्यन्तर सुक्त मिति स्वधनानधिक

श्वाक्यलक्षणगुणेहि सजुसे सद्वागासे अणतन्नागुणे । यन्मत्तिकापाण तते ! केनहाल्लु पयसि ? गोयमा !  
 लोए लोयमेसे लोयप्यमाणे लोयफुने लोयधेवफुसिस्ता पाञ्चिठइ , एवं सुहस्रमत्तिकाए लोयाकासे , जीव

लोका इत्यादि, तथा एक पक्षीव इत्यना देशै तेषाम अलोकाकाशानि देशपथा साक्षालोकरूप याक्षायाद्रक्तनामाना कपीहै । अगुश्य कुरुय अर्थात्  
 अगुश्य सङ्घय गुणैश्चि सज्जसे सद्वागागये अथतभाभूर्त्वं अर्थात्तिकाएवमते केनहाल्लए पञ्चने । गुह ससुपवादी अभावाद्यो अगुरुकसुहै अन्त स्वपर्यायरूप  
 अगुरुससु सभावेकरी अर्थात्तहै लोकाकाशाय अक्षाकाशाययो अपेक्षायै अन्ततभास रूपहै, तेषै अर्था अलोकाकाशायहै तेमयो अर्थात्तिकायानि अन्ततभिनाये अ  
 वा ॥ इति पर्यायिकाशायादिष्व प्रमाणाद्यो कर्तृहै—पर्यायिकायाय विभागन् । अंतर्त्तयो एकमांटा कर्त्तव्यो इतिप्रत्य उच्यते । गावसा लोच्य लोयमेसे लोयप्यमा  
 से । वेद्योतम । सावपथापिक्कायमनर तैतहाहै लोकाभावाहै अक्षाप्रदेश प्रमाणाहै । लोकाक्यरहायवेव फुसित्ताश्चिह्र । अन्तर्त्तिकायमनाप्रदेशे लोकाकाशाये अ  
 री सक्तस्य स्वप्रदेशे अक्षरहै तथा लोकाप्रदेशे समस्त स्वप्रदेशे अर्था र्स्फुटहै । एवमहत्त्वात्तिकाए । इम अन्तर्त्तिकायाय पञ्चि कर्त्तव्यो । लोकाभासे लोयवृत्तिकाप्र  
 पाञ्चल्लिकाह पञ्चनिएवाभिधावा । इमसाक्षात्पयपञ्चि लोकासिकाकाश सुहस्रासिकायाय एपाञ्चिरेना एकधरीया याक्षया कर्त्तव्या, सुहस्रासिकायाय लोका

एव यस्मात्स्तिज्ञायादिदेशनिर्देशाभाह ॥ नोयस्मत्स्तिज्ञायास्त्वदेशे ॥ तथा ॥ नोअस्मत्स्तिज्ञायास्त्वदेशेति ॥ बुद्धिकारो व्याह अरुविषो दद्या समुद्रय  
 सद्द्व दन्वति मीसेसापयसदि वा मीसेसान्नेका नो रसेव तस्य अन्वयविपयमाकलणं तेष भवसेव नितुंसे आपुन्द्रेससद्वा एरसु कष्टं सो सधि  
 सपगमववद्वारत्स परद्वभूसङ्गादिगयववद्वारत्सञ्चति ॥ सञ्च स्वधियसे यस्मात्स्तिज्ञायादिविपय यो देशस्य व्ययद्वारो—यथा यस्मात्स्तिज्ञायः स्याद्वेनेो ह  
 शोकाकाश व्याप्तोती न्यादि एदय तथा परद्रव्येव अहसोकाकाशादभा यः स्वस्य स्वर्णमादियतो व्यावद्वारो यथा ऊटुलोकाकाशो न यस्मात्स्तिज्ञा  
 यस्य देशेक एवयते इत्यादि सार्थमिति ॥ अद्वाकाल साक्षयः समयः एषो ऽद्वासमयः सर्वेकस्य सन्नमानस्यसकयः अतीताता  
 गतयो रसञ्चयदिति एव शोकाकाशमलमपद्रुस्य नित्यत्न मथा शोकाकाशमितिप्रमय व्याह ॥ पुञ्जातह्वयति ॥ यथा शोकाकाशमने तथादि—  
 अशोकाकाशञ्च दत्त । किं शीघ्रा धीवरेसा धीवप्यसा अशीघ्रा अशोवरेसा अशीघप्यसति ॥ निर्वचन त्येपा यस्यामपि निपय स्थाया ॥ एतेअशीघ  
 रद्वसति ॥ अशोकाकाशस्य दक्षत्यं शोकाशोक्करुपाकाशद्वयस्य नागरुपत्यात् ॥ अगुरुअसुयति ॥ मुक्तपुत्याव्यपदेशत्यात् ॥ अकतदि अगुरुपल

काए नोश्चधम्नात्सिकायस्त्वदेशे स्थधम्नात्सिकायस्त्वदेशेसा । अद्वासमए । अद्वायोकासेण नते । किञ्जीघा ?  
 पुञ्जा तह्वसेव , गोयमा ! नोञ्जीघा जाय नोश्चञ्जीघप्यदेशेसा । एनेश्चञ्जीघद्वदेशे अगुकयलङ्कारे अणतांहि

से नो यस्मत्स्तिज्ञायास्त्वदेशेति । ते देशे माह अर्नास्तिज्ञायादिकने अज्ञा ते अविपयसतस्यवधारनेष्यं तथा परद्रव्य अथातादिगतव्यवधारनेष्यं ति  
 वा अविपयसे प्रमथवधारने अर्हैव—विम अर्नास्तिज्ञाया अर्हयेकरी अरु शोकाकाशमपने व्यापे, तथा परद्रव्य अथातादिगतव्यवधारने अर्हैव—विम  
 अर्हैवाकाशयोक्तरो अर्नास्तिज्ञायासर्ना प्रमथमपि तेवने यत्र प्रमथो । अथासमए अर्हैवातायेवर्भतेकिञ्जीघापुञ्जा तह्वसेव । काह ते अथय समय यत्र  
 ते एकशोच दत्तमान अयययत्रे यतीत अनायतनेविषे यसस्यअर्हो शोकाकाशमपयप्रमथो अन्व अर्हो ॥ द्विदे अर्होकाकाशाय मने पूञ्जे—यशोकाकाशयने  
 द्विदे विमथन । अर्हो अर्हैव पत्र तिसत्रपुञ्जा । गायमा अर्होवा अन्व नो अर्होत्रपदेशे एतेयशोचअर्हैव । वे यीतस । अर्हो नित्येव अर्हो नो

शुभमुकुरिति ॥ वनकोकसपर्यापपरप्यायकरी बुद्धे रगुलशुभनाये रित्यर्थ ॥ सुशानाये अक्षतभायुकृति ॥ लोकाकाशस्य लोकाकाशापेक्षया ऽन  
 नानागणपत्यादिति कथा मन्मरोक्षाम् वमसीदिकायापी भ्रममाक्षरी निरूपयकाह ॥ वनमल्लिकार्जुनादि ॥ क्षुप्रभावप्रत्यपत्या किं  
 क्षस्य किं भद्रत्व यस्या सी किमद्वयः ॥ लोको लोकाप्रमितस्यात् लोकाक्षपदेना हा; उच्यते ॥ १ ॥ पयतिकायमद्वयसीपमित्यादि ॥ लोके  
 चासी यान्त इत्या प्रमित मप्युक्त सिध्यदितत्या दावायस्येति लोकमात्रो लोकापरिमाहः सुब किञ्चिन्म्युतोपि व्ययवततः स्या रित्यत आह ॥ लो  
 यप्यमाहसिलोकप्रमात्रो लोकप्रदेशप्रमात्रत्वा तत्रप्रदेशान्तं सुवा लोप्यानुबन्धेन स्थित इत्येतदेवाह ॥ लोप्युक्तोति ॥ लोकेन लोकाकाशाप सकसस्य  
 प्रदेशे स्पृष्टो लोकसपुष्ट स्थाया लोकमेवच सकसस्यप्रदेशीः स्पृष्टातिष्ठतीति शुभसादिकाया लोका स्पृष्टा तिष्ठती त्यन्तर मूक मिति स्पष्टानाधिके

सुगकपलक्यगुणोहि सजुहे सशानासे अणतत्रागुणे । धम्मल्लिकार्जुना नते ! केमहाल्लपु पसहे ? गोयमा !  
 छोए छोयमेत्ते छोयप्यमाणे छोयफुने छोयचेवफुसित्ता भाषिठइ , एव सुहम्मत्तिपकाए छोयाकासे , जीव

जोवा इत्यादि, तथा एक यजोव प्रथमा देपहे तेषिभ अलोकाकाशाने देपयथा लोकाशीकरूप याकायादक्षतमाना कपीहे । अगुहय सजुव अक्षते  
 अगुहव सजुव गुषधि सजुते सज्जागाये अक्षतमानूव यथाल्लिकार्जुनाते केमहाल्लए पक्षते । गुह सजुपक्षीही यमावकी अगुठसजुहे अमत सपर्यायरूप  
 अगुहसजुव अमावेकरी सजितहे लोकाकाशाय असाकाशायनी अपेक्षायै अगतमान रूपहे, तेषे अक्षी अलोकाकाशाहे तेमक्षी अर्थाकाशाने अन्तवक्षीभागे अ  
 वा । द्विमे धर्मास्तिकायादिक प्रमात्रयो कहेहे—धर्मास्तिकायाव तेमगावन् । अेतयो एकमाटा कक्षा इतिप्रत्य कन्तर । सोयमा लोका छोयमेत्ते लोकाप्यमा  
 वे । हेगीतम । काकपयास्तिकायमम तैतकाहे लोकाभाषहे साकप्रदेय प्रमात्रहे । लोयप्रवलोयचेव फुसित्तायचिद्वर । धर्मास्तिकायावनाप्रदेय लोकाकाशे अ  
 री अक्षय अमदेय अक्षहे तथा लोकाप्रते समस्त अमदेये असी रक्षीहे । एवयथास्तिकायाए । इम अमधर्मास्तिकाय पचि कक्षयो । लोपागासे जोवल्लिकार्  
 पाप्यल्लिकार्जुनाए पचचिएकाभिधाया । इमलोकाकाशापचि जोवस्तिकायाव मुदकास्तिकायाव एपाचेरना एकसरीया यासाया कक्षया, मुदकास्तिकायाव लोका

एव यस्मात्सिक्कापायवैशलिपेद्यापाह ॥ भीषन्सित्तिकायस्सदेसे ॥ तथा ॥ भीषन्सित्तिकायस्सदेसेति ॥ बुद्धिकारो व्याह्व आरुचिषो दद्यात् समुद्रय  
सदृशं प्रकृति भीषेसापयेति वा भीषेसाप्रकृतेया नो देसेह तस्स अह्वयतिपयमाहसकथं तेह मरसेह नित्तेसो ओपुहदेससदो एएसु कथं सो सधि  
सपायववहारत्वं परद्रव्यसुखादिगणयववहारत्वेति ॥ तत्र स्वविषये यस्मात्सिक्कापायवियपय यो देशस्य व्यावहारो—यथा यस्मात्सिक्काय एवद्वन्द्वो ह  
सोक्काकाश आप्रोती त्यादि सत्त्वं तथा परद्रव्येह अद्रसोक्काकाशादिना यः स्वस्य स्वर्धानादिगतो व्यावहारो यथा उदुसोक्काकाशेभ यस्मात्सिक्का  
यस्य द्रव्य एवयते इत्यादि सत्त्वंयति ॥ अद्रासमर्त्ति ॥ अद्राफाल सत्त्वसहः समयः अथो उद्रासमय सत्त्वेकएव धनमानसकणसत्त्व , अतीतामा  
यतयो रसव्यविति कत सोक्काकाशमतमप्रपद्रस्य नियजन मथा सोक्काकाशमर्त्तिप्रलय आह ॥ पुच्छातह्वयेति ॥ यथा सोक्काकाशमसो तथाहि—  
असोक्काकाशह प्रत । हि बीजा जीवसो जीवप्यएसा अवीजा अलोत्तरेसा अवीवप्यएसति ॥ निर्बन्त त्येषां यस्यामपि नियय सताया ॥ एगेअवीव  
हवरसति ॥ असाक्काकाशस्य इत्यात्वं सोक्कासोकरूपाकाशाद्रव्यस्य नागरूपत्वात् ॥ अगुरुप्रसरुपति ॥ गुरुप्रपुत्वाव्यापदेशत्वात् ॥ अशमहि अगुरुयस

काए नोस्थवभ्रात्सिकायस्सदेसे स्थवभ्रात्सिकायस्सपदेसा । स्थरासमए । स्थलोपाकासेण जते । किञ्जीवा ?  
पुच्छा तह्वयेव , गोयमा ! नोजीया जाव नोस्थजीवप्यदेसा । एगेस्थजीवदद्वेदेसे स्थगुकपलकाए स्थणत्तंहि

ये नो यवव्यक्तिकायस्सदेसेति । ते देय मए यस्मात्सिक्कापायविक्राने कथा, ते व्यदिपयमतत्त्वववहारनेषवे तथा परद्रव्य अयागादिगतव्यवहारनेषवे ति  
या व्यविषयेषे देयव्यवहार ते कथीह—किम यस्मात्सिक्काय एवदेसेकरी एव सोक्काकाशमर्त्ते व्यापे, तथा परद्रव्य अयागादिगतव्यवहार कथीह—किम  
असोक्काकाशमोहरो यस्मात्सिक्कायनो देयव्यमर्त्ते तेने पञ्च देयकथा । अथासमए यस्मात्सिक्कायसोभंतेतिञ्जीवापुच्छा तह्वयेव । आह ते अयव समय एव  
ते एवहीव यतमान अयवपुत्रे यतीत यमावतनेषिये यवसयको सोक्काकाशमयप्रयो अतर अहो ॥ हिने यस्मात्सिक्काकाय मर्त्ते पूजेह—असोक्काकाशने  
हिने देयमयन् । एव हीव इत्यादि मद्र विनम्रपुच्छा । यावसा जोकोवा आह नो यकोरपदेसा एगेवकीवह्वयेति । ये योतस । अयनो निनेव अह्वयो ना



सखेज्जज्ञानाग फुसइ , झुसखेज्जज्ञानाग फुसइ । णोसखेज्जेनाण फुसइ , णोसखेज्जेनाग फुसइ , नोसख  
 फुसइ । इमीसेण जते ! रयणप्पनाए पुठवीए वणोदही धम्मत्थिकायस्स कि सखेज्जज्ञानाग फुसइ ? गो  
 यमा ! जहा रयणप्पनाए सहा वणोदहीवणवायतणुवायावि । इमीसेण जते ! रयणप्पनाए पुठवीए उवा  
 सतरे धम्मत्थिकायस्स कि सखेज्जज्ञानाग फुसइ , झुसखेज्जज्ञानाग फुसइ पुच्छा ? गोयमा ! सखेज्जज्ञानाग  
 फुसइ णोसखेज्जज्ञानाग फुसइ नोसखेज्जे नोसख फुसइ । उवासतराह सझाह जहा रयण  
 प्पनाए पुठवीए वसइया जणिया एव जाव झुहे सत्तमाए जयूहीवाहयादीया ठयणसमुद्धाहया समुद्धा एव

पसखेज्जज्ञानागफुसइ । पसख्यातमा भागकरसे एकवाए अयासइय वाकन पिइ माटे । बोसखे बोसखे बोसखे बोसखे  
 नही पसख्यातमाभागेविधे सारोन्ही सब सारोन्ही वहीपूइहे—रसोसेज्जेतरवयपमाएपुठवीएवबोदही । एइ हे भगवन् ! रत्तमा पृथिवीना वनाद  
 दिहे । पसखिजायस खिसखेज्जेनागकर । धर्मादिजायने खू सख्यातमाभाग करसे एवपि । अहारयअपभातहावबोदहि वचवाय वज्जवावावि ।  
 जिन रत्तमा पृथिवीनिधे कज्जो तिम वनादहि १ वनवात २ ननुवाव ३ एतीन अइया, एतडे प्रभेके पसख्यातमेभासे करसे । इमीसेज्जेतरवयपमाएपु  
 ठवीएववातरे । एइ हेभगवन् ! रत्तमा पृथिवीना याकायातर ते । पसखिजायस खिसखेज्जज्ञानाग कर । धर्मादिजायने खू सख्यातमाभाग कर  
 से विवा । पसखेज्जज्ञानागकरएव्या । पसख्यातमी भाग करसे इत्यादि पूइ । भाइमा सखेज्जज्ञानाग फुसइ । हे गौतम ! सख्यातमे भागे करसे ए पस  
 ख्यात योज्जने तेसाटे । याअसखेज्जज्ञानागफुसइ । पसख्यातमी भाग करसेनही । यासखेज्जे याअसखेज्जे याअसखेज्जे याअसखेज्जे  
 पसख्यातमाभागेविधे करसेनही सब करसेनही । जनासतराहसखाइ । याकायातर सब । अहारयअपमाए पुठवीए वसअवा भाविवावा एवआवअहे  
 सत्तमाए । जिन रत्तमा पृथिवीना याकायातर कज्जा, विम सातेरे नरख पृथिवीना अइया, एतडे सख्यातमीभागे करसे इत्येव, इम यावन् नीचे सा

रा पृथोसोक्तादीना धर्मास्त्रिकायादिमता रथवाना द्वांसंप्रिदमाह ॥ अश्वेसोएजमिन्त्यादि ॥ सातिरेगमद्वति ॥ लोकाव्यापकत्वा दुष्मत्सिकायस्य सा  
तिरेकसप्तस्त्रुप्रमावत्वा धाथोसोक्तस्य ॥ असुक्तातयोजनप्रमावस्य धर्मास्त्रिकायस्या षादश्यावनसताप्रमाव स्तिर्यपत्ताको सुक्ता  
तजानावर्तति तस्या सा वसुधुपनायं स्पृशतीति ॥ देशोषकद्वति ॥ देशोषसप्तस्त्रुप्रमावत्वा द्दृशोक्तस्येति ॥ इमाश्च जस । इत्यादि ॥ इह प्रतिपृ  
त्यिकाए पोभास्त्यिकाए क्वाचिन्नाथा । अहोलीपुण नते । धम्मत्थिकायस्य केवहय फुसइ , गोयमा ! सा  
तिरेग अइ फुसइ । तिरियलीपुण नते ! पुच्छा ? गोयमा ! अस्सखेज्जाइनागफुसइ । उहुलीपुण नते !  
पुच्छा ? गोयमा ! देसूण अइ फुसइ । इभाण नते ! रयणप्पनाण पुढवी धम्मत्थिकायस्य किसखेज्जाइ नाग  
फुसइ , अस्सखेज्जाइनाग फुसइ , सखेज्जाइनाग फुसइ , सखुफुसइ ? गोयमा ! णो

पते धर्मीनेरइ एवयो धर्मत्तरे अहुं तेषाया ना विचारयो धधावावादिजने धर्मास्त्रिकायादिगत क्वाया ना देवादिदे—एवेषापचमतेअपत्थिकायस्यकेवहय  
कसति । धधावावा इभगवन् ! धर्मास्त्रिकायने जेतथ् अयं इतिप्रय जसए । गोयमा सातिरेगपथफुसइ । हेगोतम ! धर्मास्त्रिकाय लोकाव्यापकत्वे धने य  
धावाकसाधिइ धातराज प्रमावत्तै तेमथी साधिअ धधधायं । तिरियसोएजमते पुच्छा । तिरैत्थोक्क इभगवन् ! केवथो फरसे दसू प्पुष् । गोयमा अस्  
खेअभापपुसइ । हेगोतम ! धर्मास्त्रिकाय धसक्काता बोधन प्रमावत्तै धने थोत्थोक्क एत्त बोधनत्तै तिवारे धसक्कातसे भागे फरसे । उहवाएथ  
भतेपच्छा । उहवावा इभगवन् ! जेतवा फरसे दस पूज्जा । गोयमा हेसूअपथफुसइ । हेगोतम ! देपोअथा सातराजप्रमाव उहवाक्कत्तै तेमत्ति देयान य  
इधरसे । इमाअमत्तरअधधापापुठवीअस्त्रिकायत्थिकिसखेअइभगवत्तसइ । एह च याक्कात्थिकारे, रत्तप्रभाजाना धुविथी धर्मास्त्रिकायना क्खु सक्का तमा  
भाय फरसे । धसखेअइभगवत्तसइ सखेअभापेपुसइ । धधधा धसक्कातमाभाय फरसे धधधा संख्यावताभापभेविधै फरसे धधधा । धसखेअइभगवत्तसइ ।  
धसक्कातमा भायनेविधै फरसे धधधा । सधधपुसइ । सर्वं फरसे इतिप्रय जसए भायसा धासखेअइभगवत्तसइ । हेगोतम ! अथा अट्यातमाभाय फरसे ।

सखेज्जइनाग फुसइ , झुसखेज्जइनाग फुसइ । णोसखेज्जेनाग फुसइ , नोसख  
 फुसइ । इमीसेण नते ! रयणप्यनाए पुठवीए वणीवही धम्मत्थिकायस्स कि सखेज्जइनाग फुसइ ? गो  
 यमा ! जहा रयणप्यनाए तहा वणीवहीवणयायतणुवायावि । इमीसेण नते ! रयणप्यनाए पुठवीए उवा  
 सतरे धम्मत्थिकायस्स कि सखेज्जइनाग फुसइ , झुसखेज्जइनाग फुसइ पुक्का ? गोयमा ! सखेज्जइनाग  
 फुसइ णोसखेज्जइनाग फुसइ नोसखेज्जे नोसख फुसइ । उवासतराइ सवाइ जहा रयण  
 प्यनाए पुठवीए वसवया जणिया पुवं जाव झुहे सस्समाए जब्हुदीवाइयादीया छवणसमुदाइया समुदा पुव

धसखेज्जइनागफुसइ । धसज्जातमा मागफरसे एज्जलाय धयासइय वाज्ज निव माटे । बोसखे बोसखे बोसखे बोसखे फुसइ । सज्जातमाभागनेविदे धया  
 नही धसज्जातमाभागनेविदे धयांनही सब धयांनही वहीपुज्जे—इमीसेज्जइनागप्यमाएपुठवीएवबोदही । एइ हे भगवन् ! रत्तप्रभा एडिबीना वनीद  
 विव्हे । धधत्थिजायस्य खिसखेज्जेभोभोफसइ । धर्मात्थिजायने ध् सुज्जातमाभाग फरसे धपच्चि । ज्जइनागप्यमातज्जावबोदहि वववाय ववुवावावि ।  
 जिम रत्तप्रभा एडिबीनेविदे ज्जइनाग तिस वमादधि १ धनवात २ तनुवात ३ एतीन ज्जइवा, एतसे प्रखेजे धसज्जातमेभागे फरसे । इमीसेज्जइनागप्यमाएपु  
 ठवीएववासतरे । एइ इमववन् ! रत्तप्रभा एडिबीना धाज्जायातर ते । धधत्थिजायस्य खिसखेज्जेज्जइनाग फसइ । धर्मात्थिजायना ध् सुज्जातमाभाग फर  
 से जिना । धसखेज्जइनागफसइएववा । धसज्जातमा भाग फरसे रत्तदि पूज्ज् । गावमा सुखेज्जइनाग फुसइ । हे गीतम । सज्जातमे भागे फरसे ए धस  
 ज्जात धाज्जने तेमाटे । धापसखेज्जइनागफुसइ । धसज्जातमा भाग फरसेनही । धासखेज्जे बोसखेज्जे वासवपुसइ । सज्जातमाभागनेविदे फरसेनही  
 धससवावमाभागनेविदे फरसेनही सर्व फरसेनही । उवासतराइसव्याइ । धाज्जायातर सब । ज्जइनागप्यमाए पुठवीए वल्लवया भाच्चिववा एवजापध  
 सज्जमाए । जिम रत्तप्रभा एडिबीना धाज्जायातर ज्जइना, विम सातेई नरत्त एडिबीना ज्जइवा, एतसे सवयातमेभागे फरसे रत्तव, इम वावन् नीसे सा



सस्त्रेज्जहन्नाग फुसइ , स्यसस्त्रेज्जहन्नाग फुसइ । णोसस्त्रेज्जहन्नाग फुसइ , णोसस्त्रेज्जहन्नाग फुसइ , नोसस्त्रे  
 फुसइ । इमीसेण नत्ते ! रयणप्यन्नाए पुढवीए वणोदही धम्मत्थिकायस्स किं सस्त्रेज्जहन्नाग फुसइ ? गो  
 यमा ! जहा रयणप्यन्नाए तहा वणोदहीवणधायतणुधायानि । इमीसेण नत्ते ! रयणप्यन्नाए पुढवीए उधा  
 सत्ते धम्मत्थिकायस्स किं सस्त्रेज्जहन्नाग फुसइ , स्यसस्त्रेज्जहन्नाग फुसइ पुच्छा ? गोयमा ! सस्त्रेज्जहन्नाग  
 फुसइ णोस्यसस्त्रेज्जहन्नाग फुसइ नोसस्त्रेज्जो नोसस्त्रे फुसइ । उधासतराइ सहाइ जहा रयण  
 प्यन्नाए पुढवीए वसस्त्रिया नणिपा एवं जाव स्यहे सत्तमाए जयुहीवाइयादीया लवणसमुद्दाइया समुद्दा एव

पसस्त्रेज्जहन्नागफुसइ । पसस्त्रातमा भागपरसे एज्जवाए ययासइत्तं मावन् पिड मटि । चासस्त्रे चांपसस्त्रे चांसत्तवपुसइ । सस्त्रातमाभागेविधे स्यां  
 नही पसस्त्रातमाभागेविधे स्यांनही सब स्यांनही वहीपुसइ—इमीसेअत्तेरववप्यभाएपुठवीएववाइही । एव हे भगवन् ! रत्तमभा एविज्जवीनी वनीइ  
 थिइ । वसस्त्रिजायस्य ज्जिसंस्त्रेअभोअसइ । धर्मात्थिकायने स्युं सस्त्रातमाभाग परसे एवपि । ज्जहारववप्यभातहाववाइवि वववाय वणुवाववि ।  
 जिम रत्तमभा एविज्जवीनिविये ज्जहां तिम वनाइवि १ वनवात २ तनुवात ३ एतीन कइवा, एतसे प्रलेखे पसस्त्रातमेभाये परसे । इमीसेअत्तेरववप्यभाएपु  
 ठवीएववाइतरे । एव हे भगवन् ! रत्तमभा एविज्जवीना याक्कायात्तर ते । अस्त्रिज्जवावस्य जिंसस्यज्जहन्नाग फसइ । धर्मात्थिकायने स्युं सस्त्रातमाभाग पर  
 से जिवा । पसस्त्रेज्जहन्नागफुसइएववा । पसस्त्रातमी भाग परसे इज्जादि पूज्जुं । गावसा सस्त्रेज्जहन्नाग फुसइ । हे गोतम ! सस्त्रातमे भागे परसे ए पस  
 स्त्रात वीज्जवी तेमटि । चापसस्त्रेज्जहन्नागफुसइ । पसस्त्रातमी भाग परसेनही । चासस्त्रेज्जो चांपसस्त्रेज्जो चासथ्यपुसइ । सस्त्रातमाभागेविधे परसेनही  
 पसस्त्रातमाभागेविधे परसेनही सव परसेनही । उधासतराइसस्त्रा । याक्कायात्तर सव । ज्जहारववप्यभाए पुढवीए वलत्तया भाविज्जवा एवज्जवाथे  
 सत्तमाए । जिम रत्तमभा एविज्जवीना याक्कायात्तर ज्जहा, तिम सत्तेरं नत्तए एविज्जवीना कइवा, एतसे सवसातमीभाग परसे इज्जव, इम यावन् गोसे सा









